एक्सप्लोर करना

यूहन्ना रचित सुसमाचार

Dr. John Phillips

JOHN PHILLIPS MINISTRIES International

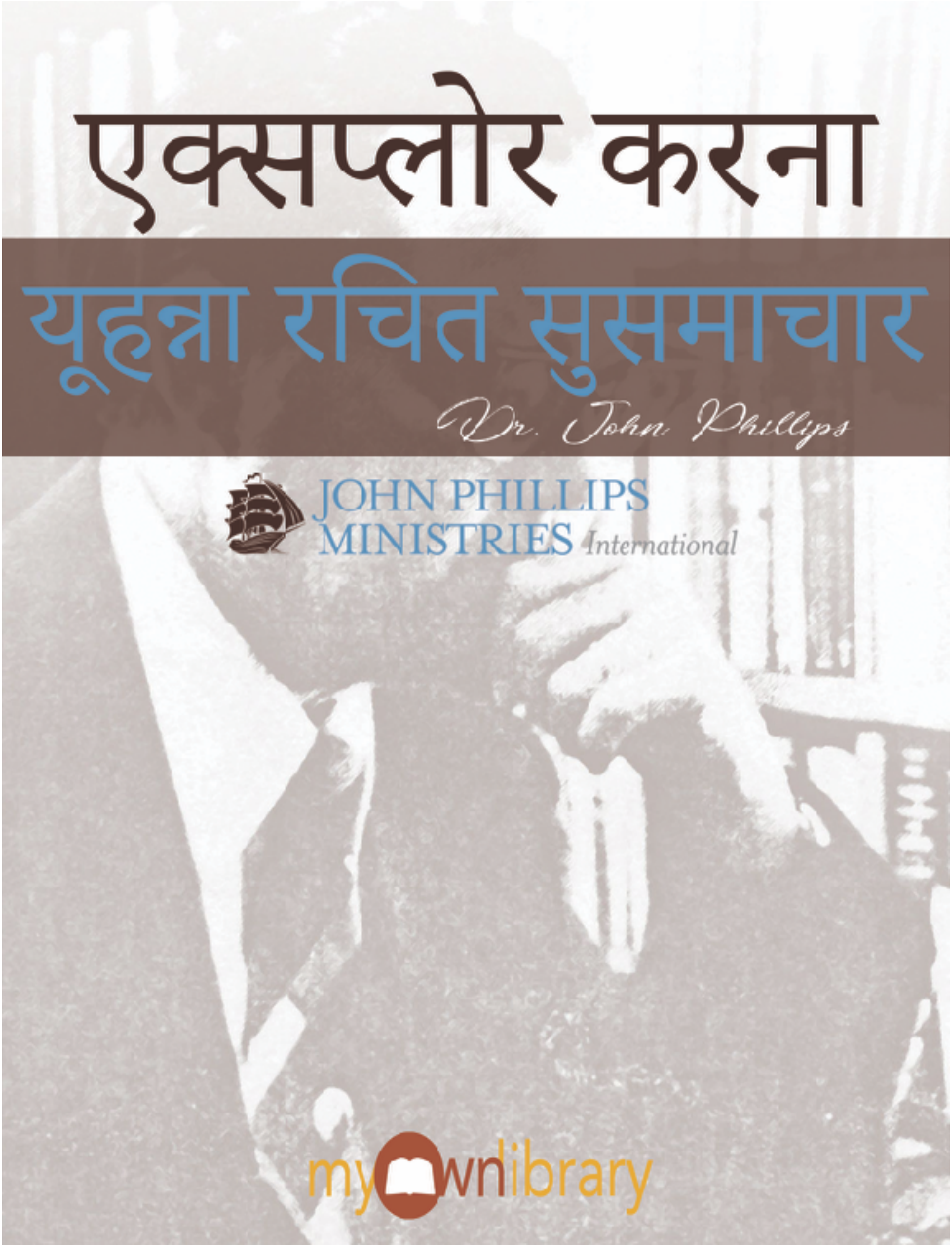

myownlibrary

EXPLORING

GOSPEL OF JOHN

Dr. John Phillips

JOHN PHILLIPS MINISTRIES International

myownlibrary

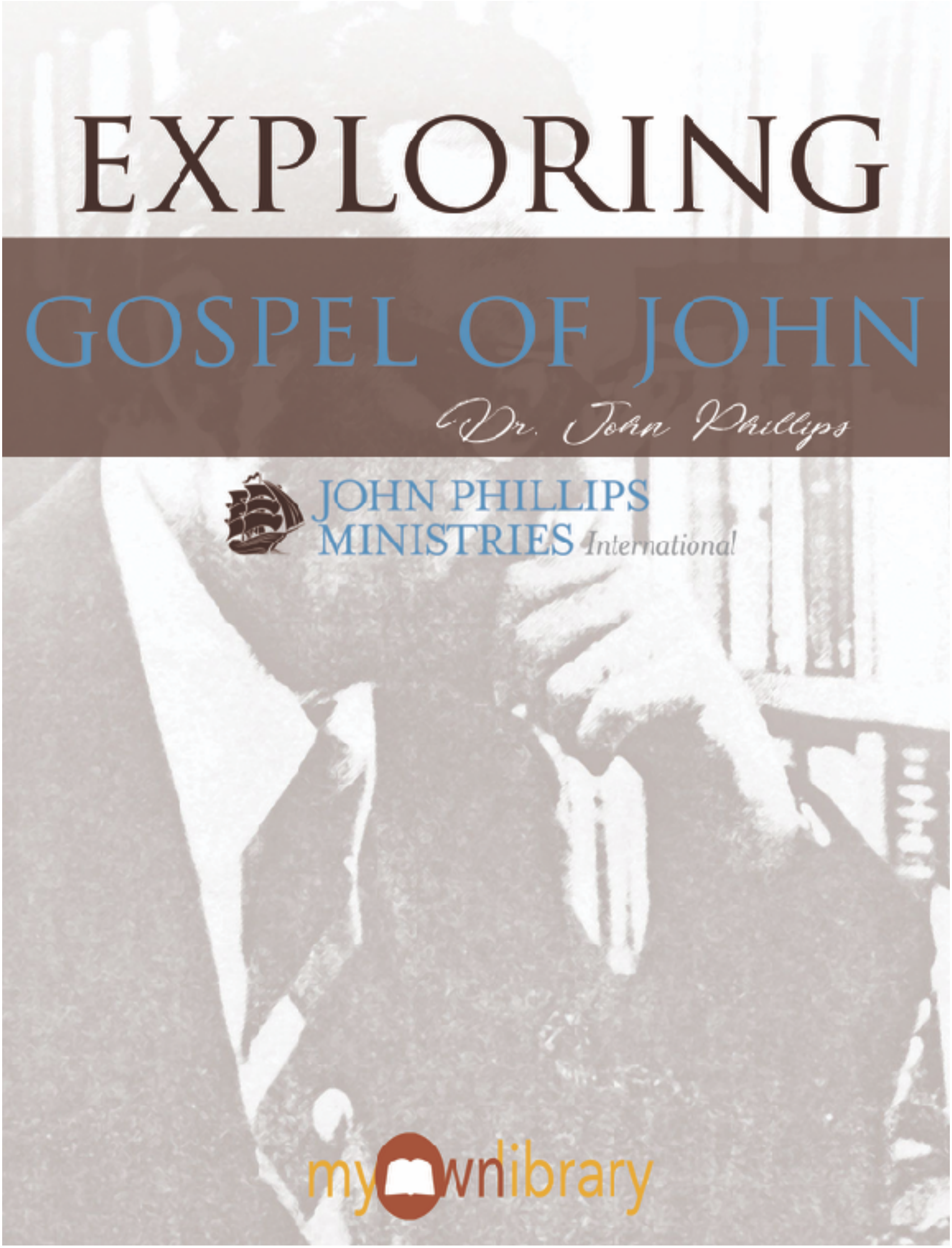

प्रस्तावना

उसका भाई याकूब मर चुका था। यहूदियों का प्रमुख प्रेरित पतरस मर चुका था। अन्यजाति जगत का निडर प्रेरित पौलुस मर चुका था। एक को छोड़कर—थोमा, अन्द्रियास, फिलिप्पुस, नतनएल, सभी प्रेरित मर चुके थे। इफिसुस में एक अकेला बूढ़ा मनुष्य रहता था, जो प्रेरितों में पहला और अन्तिम, कलीसिया का महान प्रेरित था। उसका नाम यूहन्ना था। उसका जीवन अद्भुत समय से होकर गुजरा था। उसके दिनों में परमेश्वर का पुत्र मनुष्य का पुत्र हो चुका था। उसका जन्म बैतलहम में हुआ, यरदन में बपतिस्मा लिया, जंगल में बिना दया के परीक्षा की गई और वह परीक्षा में स्थिर रहा। उसने बीमारों को चंगा किया, कोढ़ियो को शुद्ध किया, मरे हुओं को जिलाया। उसके आश्चर्यकर्म से अंधे देखने, बहरे सुनने, गूंगे बोलने और लंगड़े चलने लगे। उसने पानी को दाखरस में बदल दिया, पानी पर चला, पाँच रोटी से भीड़ को खाना खिलाया। उसने परमेश्वर की सच्चाई को प्रखर, यादगार तरीके से सिखाया था। वह प्रेम का स्वरूप, परमेश्वर था जो शरीर में होकर आया। उसके साथ विश्वासघात किया गया, झूठा आरोप लगाया गया, दुर्व्यवहार किया गया, उसे कुचला गया, क्रूस पर चढ़ाया गया। उसे गाड़ा गया, परन्तु वह कब्र से जय पाकर जी उठा। वह स्वर्ग पर चढ़ गया था, और यूहन्ना के पास इसके बारे में निश्चित शब्द थे कि वह वापस आएगा।

ये सारी यादें यूहन्ना के मन में, इस बहुत बूढ़े व्यक्ति के अन्तरतम विचारों में बनी रहीं। यूहन्ना यीशु का मौसेरा भाई था और लगभग साढ़े तीन वर्ष तक उसका सबसे अच्छा मित्र था। यूहन्ना प्रभु यीशु मसीह के बारे में जैसा सत्य जानता था वैसा पृथ्वी पर कोई दूसरा व्यक्ति नहीं जानता था।

अद्भुत भारी परिवर्तन हुए थे। रोम के साथ भयानक यहूदी युद्ध ने यरूशलेम को यहूदी राजधानी के रूप में समाप्त कर दिया था। मन्दिर को जलाना और यहूदियों के लिये एक और लम्बे निर्वासन की शुरुआत ने एक नई व्यवस्था की शुरुआत की। निडर, और अभी भी अपने अस्वीकृत मसीह के प्रति कटु शत्रुतापूर्ण, यहूदियों ने यह सब अपनी सहजता से लिया था। इसलिये कैसर के अलावा कोई मन्दिर, कोई बलिदान, कोई राजधानी, कोई गृहनगर, कोई राजा नहीं होना था। पराए लोगों की भूमि में निर्वासित और परदेशी, यहूदी फिर भी, शताब्दी दर शताब्दी यीशु का इनकार करते हुए, आनेवाले समय में अपने पैतृक घर में लौटने और यरूशलेम में मन्दिर का पुनर्निर्माण करने की आशा में जीवित रहे।

पृथ्वी पर नई इकाई, मसीही कलीसिया का उदय हुआ। इसका जन्म यहूदियों के वार्षिक त्योहार पिन्तेकुस्त पर यीशु के स्वर्ग में शारीरिक रूप से आरोहण के ठीक दस दिन बाद यरूशलेम के एक भीड़ भरे ऊपरी कमरे में हुआ था। यूहन्ना वहाँ उपस्थित था। पवित्र आत्मा प्रचण्ड, तेज हवा की तरह, आग की फटी हुई जीभों की तरह आया था। चेलों को एक देह, एक रहस्यमय देह, कलीसिया जो मसीह की देह है में बपतिस्मा दिया गया था।

यूहन्ना सारे प्रेरितों, सारे चेलों, कलीसिया के सारे प्रारम्भिक सदस्यों को जानता था। वह एक विशेषाधिकार रखनेवाला सदस्य था, जो अब आखिरी सदस्य रह गया था। उसने कलीसिया को एक ही दिन में 120 से 3,000 से अधिक संख्या में बढ़ते देखा। उसने इसे जड़ पकड़ते और फैलते देखा, अब तक, पहली शताब्दी के अन्त के आसपास, इसकी शाखाएँ पूरे संसार में पहुँच चुकी थीं। कोई भी जीवित व्यक्ति उस कहानी को उससे बढ़कर नहीं जानता था।

नए नियम की सारी पुस्तकें उसके अपने सुसमाचार के विवरण, तीन छोटी पत्रियों और एक उल्लेखनीय भविष की घटनाओं की पुस्तक को छोड़कर लिखी गईं। तीन सुसमाचार के विवरण, प्रेरितों के कार्य, पौलुस की पत्रियाँ, और सामान्य इब्रानी पत्रियाँ सब प्रचलन में थे। निस्संदेह यूहन्ना उन सब में घर पर था।

तो दूसरी सुसमाचार की पत्री क्यों लिखे? उसके मित्र और सहकर्मी मत्ती ने ऐसी उत्कृष्ट कृति लिखी थी। यूहन्ना मरकुस—वह उसे अच्छी तरह से जानता था—उसने पतरस के उपदेश का सटीक विवरण दिया था। लूका ने एक उत्कृष्ट मसीही लेख लिखा था। तो पवित्र आत्मा उसे लिखने के लिये क्यों आग्रह कर रहा था? क्योंकि बहुत कुछ अभी भी अनकहा था। अन्य सुसमाचार के विवरण मुख्य रूप से गलील से सम्बन्धित हैं। परन्तु यहूदिया में मसीह के कार्य किससे सम्बन्धित है? अन्य सुसमाचार के विवरणों ने अपने सुननेवालों को स्वर्ग के राज्य के लिये तैयार किया, परन्तु उन गहरे रहस्यों के बारे में क्या जो मसीह ने सिखाए थे? वास्तव में, उनमें से कई रहस्य बाद में पौलुस के सामने प्रकट हो गए थे। परन्तु मसीह की शिक्षा में उनकी उत्पत्ति के बारे में क्या कहा गया है?

मत्ती ने मुख्य रूप से यहूदियों के लिये, मरकुस ने रोमियों के लिये और लूका ने यूनानियों के लिये लिखा था। एक और सुसमाचार अभिलेख की अत्यन्त आवश्यकता थी। किसी को कलीसिया के लिये लिखने की आवश्यकता थी।

अब यह तीसरी पीढ़ी थी। कलीसिया में आने वाले विरोध के बारे में पौलुस, पतरस और यहूदा की, "फाड़नेवाले भेडिए तुम में आएँगे जो झुण्ड को न छोड़ेंगे" के बारे में गम्भीर चेतावनियाँ, केवल चिन्ताजनक बातें नहीं थीं। तीसरी पीढ़ी तक आते-आते हर प्रकार की झूठी शिक्षा फैल रही थी।

तीसरी पीढ़ी हमेशा किसी आन्दोलन के लिये विशेष समस्याएँ लेकर आती है। पहली पीढ़ी में एक कथित सत्य एक दृढ़ विश्वास है; दूसरी पीढ़ी में यह एक विश्वास में बदल जाता है; तीसरी पीढ़ी में यह केवल एक सुझाव बनकर रह जाती है। यूहन्ना इस गिरावट को स्पष्ट रूप से देख सकता था। यह हर तरह से स्पष्ट था।

सब प्रकार की झूठी शिक्षाएँ या तो पहले से ही फल-फूल रही थीं या जल्द ही फलने-फूलने वाली थीं। जल्द ही उनके साथ नाम जुड़ गए और उन्हें कलीसिया के इतिहास की पुस्तकों में लिखा गया:

—अपोलिनेरियावाद: वचन "देहधारी" हुआ, न कि कोई शरीर या उसके जैसा कुछ;

—ज्ञानवाद: प्रभु ने केवल कुछ समय के लिये किसी ऐसी वस्तु का रूप धारण किया जो वास्तव में उसके लिये बिल्कुल अलग थी; उसके बपतिस्मा के समय ईश्वरीय लोगोस (वचन) मनुष्य यीशु के साथ एक हो गया था;

—यूटिशियनवाद : यदि प्रभु के मनुष्य होने का कोई वास्तविक अस्तित्व था, तो ऐसा इसलिये था क्योंकि देहधारण का परिणाम एक तीसरी प्रकृति थी;

—नेस्टोरियनवाद: प्रभु के पास ईश्वरीय और मानवीय दोनों व्यक्तित्व थे, और उसके जीवन के सभी पहलुओं को उनमें से किसी एक या दूसरे से संदर्भित किया जाना चाहिए;

—एबिओनवाद: यीशु मसीह को पवित्र आत्मा सबसे पहले उसके बपतिस्मा के समय दिया गया था।

हाँ, चौथे सुसमाचार के विवरण, तीन और पत्रियों और भविष्यद्वाणियों की पुस्तक को लिखे जाने की आवश्यकता थी। केवल यूहन्ना के पास उन्हें लिखने के लिये ज्ञान, अनुभव और प्रेरिताई पाई जाती थी। और इस अवसर पर अद्भुत रीति से आगे बढ़ते हुए उसने वैसा ही किया। उसने सुसमाचार के विवरण को अपने व्यक्तिगत अनुभव से, पवित्र आत्मा द्वारा ताजा की गई स्मृति और बिना किसी त्रुटि के लिखा। परिणामस्वरूप हमारे हाथों में "यूहन्ना

रचित सुसमाचार," एक अमूल्य दस्तावेज है, जो "इसलिये लिखा गया, कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ" (20:31)।

परिचय

जिस क्षण हम सुसमाचार के यूहन्ना के विवरण को पढ़ते हैं, हमें पता चलता है कि यह दूसरों से भिन्न है। कोई वंशावली नहीं है, चरनी, बचपन, बपतिस्मा, परीक्षा, रूपान्तरण के पहाड़ और गतसमनी जैसे दृश्यों का कोई वर्णन नहीं है। यूहन्ना द्वारा "चिह्नों" के रूप में चुने गए केवल कुछ विशेष आश्चर्यकर्म हैं। हमारे पास यीशु का प्रसिद्ध **मैं हूँ** कथन और कई उपदेश हैं जो कहीं और नहीं पाए जाते। यहाँ शास्त्रियों, कोढ़ के रोगियों, चुंगी लेनेवालों, और दुष्टात्माओं का वर्णन नहीं किया गया है। दृष्टान्तों का वर्णन नहीं मिलता है। कुल मिलाकर यह लगता है, जैसा कि दूसरों ने बताया है, कि यूहन्ना सुसमाचार के लूका के विवरण की एक प्रति अपने सामने खोलकर बैठा है, जानबूझकर उन बातों को छोड़ रहा है जो लूका कहता है और उन बातों को लिख रहा है जिन्हें लूका ने छोड़ दिया है (डब्ल्यू. ग्राहम स्क्रोगी, अ गाइड टू द गॉस्पल्स, लंदन: पिकरिंग और इंगलिस, 1962)। लूका ने यह बताने के लिये लिखा था कि यीशु मनुष्य का पुत्र है; जबकि यूहन्ना यह बताने के लिये लिख रहा है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है।

यूहन्ना की भाषा यूनानी है परन्तु उसके विचार इब्रानी हैं। उसकी भाषा सरल और शब्दावली छोटी है। यूहन्ना की शब्दावली में लगभग छः सौ शब्द हैं। यह सात वर्ष के बच्चे की शब्दावली है (एक बच्चा हर वर्ष अपनी शब्दावली में लगभग एक सौ शब्द जोड़ता है)। परन्तु यदि यूहन्ना के "सिक्के" कम हैं, तो उनका मूल्य बड़ा है; वे सुनहरे सिक्के हैं, जिस पर महान राजा की छाप है, जो किसी धनी मनुष्य के बटुए में पाया जाता है। यूहन्ना जिस शब्द का सबसे अधिक उपयोग करता है वह है पिता (121 बार) और साथी अभिव्यक्ति मेरा पिता (35 बार)। उसे शब्द विश्वास करना (99 बार) बहुत पसन्द है। अन्य सामान्य शब्द हैं संसार (79 बार), यहूदी (71 बार), जानो (ओइदा 61 बार और गिनोस्को 56 बार), बने रहो (41 बार), जीवन (36 बार), ज्योति (23 बार), प्रेम (अपने विभिन्न और समान रूपों में, 57 बार), सत्य (और उसके समान, 66 बार)।

सुसमाचार का यूहन्ना का विवरण प्रस्तावना (1:1-18) के साथ शुरू होता है, प्रभु यीशु के तीन पहलुओं से होकर गुजरता है—आश्चर्यकर्म (1:19-12:50), भविष्य की घटनाएँ (13:1-17:26), और परमेश्वर के पुत्र का दुःख उठाना (18:1-20:31)—और उपसंहार (21:1-25) के साथ समाप्त होता है। मूल संरचना सरल है, परन्तु यूहन्ना हमें अचम्भित करता है। वह सबसे सरल बातें कहता है, सबसे सरल शब्दों का उपयोग करता है, सबसे सरल वाक्यांशों और वाक्यों को एक साथ रखता है—और तुरन्त हमें रहस्यमय, अनोखे, दिमाग को चौंका देने वाले विचारों में डुबो देता है।

प्रस्तावना को यूहन्ना के तीन चुनिन्दा शब्दों के आस-पास पाए जाने पर तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। हमारे पास सार रूप में ईश्वरीय जीवन (1:1-5), गवाही में ईश्वरीय ज्योति (1:6-13), और अनुभव में ईश्वरीय प्रेम (1:14-18) है। हम इनमें से पहले परिच्छेद से शुरुआत करते हैं। तुरन्त यूहन्ना हमें अनन्त युगों में ले जाता है ताकि हम उस व्यक्ति को देख सकें जो अनादि से अनन्त, सदाकाल का, अविनाशी, अदृश्य, सर्व बुद्धिमान परमेश्वर, हमारा प्रभु और उद्धारकर्ता, यीशु मसीह था।

भाग 1
प्रस्तावना

यूहन्ना 1:1-18

आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ, और जो कुछ उत्पन्न हुआ है उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई। उसमें जीवन था और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति था। ज्योति अन्धकार में चमकती है, और अन्धकार ने उसे ग्रहण न किया" (1:1-5)।

I. सार रूप में ईश्वरीय जीवन (1:1-5)

यूहन्ना ज्ञानवाद विचारधारा और अन्य विधर्मियों के साथ वाद-विवाद करने में अपना समय बर्बाद नहीं करता है। बल्कि, वह कुछ ऐसे तथ्य बताता है जिनके बारे में वह जानता है जो सारे सन्देह से परे सत्य है। उन्हें अटकलें लगाने दीजिए; वह जानता है।

वह इस बात के साथ शुरु करता है:

A. प्रभु का अवर्णनीय व्यक्तित्व (1:1-2)

यूहन्ना तीन व्यापक कथन लिखता है जो एक बार और सब के लिये उस ईश्वर की पुष्टि करता है जिसे वह अच्छी तरह से जानता था। हालाँकि वह तब तक उसका चेला नहीं बना जब तक उसने अपने आप को प्रकट नहीं किया कि वह किसके लिये है, यूहन्ना लगभग निश्चित रूप से "यीशु नासरी" को तब से जानता था जब वह एक छोटा बालक था। वह प्रभु का मौसेरा भाई था। उसकी माता, सलोमी कुँआरी मरियम की बहन थी। मत्ती और लूका द्वारा वर्णित यीशु के जन्म के आसपास की रहस्यमय परिस्थितियाँ पारिवारिक दायरे में कोई रहस्य नहीं थीं। हम उचित रूप से यह मान सकते हैं कि प्रभु यीशु, अपने बालकपन और शुरुआती किशोरावस्था के दिनों में, अपने भाइयों और बहनों के साथ, झील के किनारे रहनेवाले रिश्तेदारों के साथ सामान्य सम्पर्क रखते थे। नासरत गलील के झील से अधिक दूर नहीं था। पर्वों के लिये यरूशलेम की वार्षिक पर्वयात्रा हमेशा सामाजिक अवसर होती थी जब परिवार और मित्र यात्रा के लिये समूह में एक साथ शामिल होते थे।

प्रभु के चेलों में से एक बनने के बाद, यूहन्ना को पता चला कि यीशु नासरी परमेश्वर है। वह बस वही बताता है जो वह जानता है। पहली शताब्दी का कोई भी उदारवादी या पंथवादी यूहन्ना द्वारा अपने शुरुआती वाक्यों में दिए गए विशेष कथनों का इनकार करने का साहस नहीं कर पाता था। यूहन्ना को केवल सत्य की गवाही देनी है। वह सब अनियमितताओं और विभिन्न प्रकार की त्रुटियों का सामना करने के लिये चिन्तित नहीं था। वह जानता था कि सत्य क्या था और वह उसी से सन्तुष्ट था।

1. यीशु अनन्त काल का परमेश्वर है (1:1क)

यीशु की तुलना परमेश्वर से करना एक ऐसा प्रस्ताव था जिसे हल्के में नहीं लिया गया। यूहन्ना एक पलिश्तीनी यहूदी था, ऐसे व्यक्ति पर परमेश्वर की निन्दा करने का कितना भय रहा होगा। वह कोई दार्शनिक नहीं था, न ही

धर्मशास्त्री था। वह एक ऐसा व्यक्ति था जिसने यीशु की संगति में असाधारण साढ़े तीन वर्ष बिताए थे। आधी शताब्दी से भी अधिक समय उसने बातों पर विचार करने में लगा दिया था। यह अब भी उसका दृढ़ विश्वास था, जैसा कि तब उसका दृढ़ विश्वास था, कि नासरत का यीशु कोई साधारण मनुष्य नहीं था। वह परमेश्वर था—और —है।

यूहन्ना एक दृढ़ वचन के साथ शुरु करता है, "आदि में वचन था," जो किसी शुरुआत को संदर्भित नहीं करता है, बल्कि एक अनन्त अवस्था को संदर्भित करता है।

यूहन्ना द्वारा प्रयुक्त यूनानी शब्द लोगोस है। यह यूनानी दार्शनिकों से परिचित शब्द था और यहूदी दार्शनिक फिलो द्वारा अपने उद्देश्यों के लिये अपनाया गया शब्द था। यूनानियों के लिये, इस शब्द का संदर्भ उस भावपूर्ण अवधारणा से था जो हर ठोस बात के पीछे निहित है—आदर्श के लिये, जिसे हम शायद बुद्धि कह सकते हैं।

परन्तु यूहन्ना को यीशु के बारे में अपने विचार यूनानी दर्शनशास्त्र या फिलो की अटकलों से नहीं मिले। यूहन्ना ने यूनानी शब्द उधार लिया था परन्तु उसने इसे एक नए अर्थ में, अधिक इब्रानी अर्थ में उपयोग किया। जब समय और अर्थ की संसार के पीछे छिपी अनन्त सत्यता की बात आई तो इब्रानियों ने यूनानियों को बहुत पीछे छोड़ दिया। एक इब्रानी विचार से विचारक तक, "बुद्धि" से परमेश्वर तक तर्क वितर्क कर सकता था। यूनानी यह नहीं कर पाए। इस प्रकार, जब यूहन्ना यीशु को "वचन," लोगोस कहता है, तो वह उसे विचारक, निर्मित सृष्टि के पीछे सर्वज्ञ प्रतिभा रखनेवाले के रूप में संदर्भित करता है।

हालाँकि, यह कथन, "आदि में वचन था" का अन्त यहीं नहीं होता है। हमें क्रिया को भी देखना चाहिए। यूनानी में प्रयुक्त अपूर्ण काल एक सतत अवस्था को व्यक्त करता है, पूर्ण अतीत को नहीं। यह "पूर्ण, अतिस्थाई अस्तित्व" के विचार का सुझाव देता है। दूसरे शब्दों में, प्रभु यीशु सृष्टि की रचना के पहले से है (पद 3 के पहले तक इसका उल्लेख नहीं किया गया)। "आदि में वचन *था*, और वचन परमेश्वर के साथ *था*, और वचन परमेश्वर *था*" (इतालवी में लिखा गया); हर बार अपूर्ण काल का प्रयोग किया गया। अंग्रेजी में यह उतना प्रभावशाली नहीं है जितना मूल में है। प्रत्येक मामले में यह पाठक के सामने कोई अतीत, या वर्तमान, या भविष्य नहीं, बल्कि क्रिया के चलते रहने को सामने रखता है। यह अस्तित्व के एक ऐसे रूप को संदर्भित करता है जो समय से परे है। समय सीमित प्राणियों को उनके अस्तित्व के तरीके से सम्बन्धित करने में सहायता करने का एक उपकरण है। यूहन्ना जिस क्रिया का उपयोग करता है वह हमें असीमित समय क्षेत्र में ले जाती है। दूसरे शब्दों में, जिसे यूहन्ना "वचन" कहता है वह उस क्षेत्र से सम्बन्धित है जहाँ समय कोई मायने नहीं रखता। इस वचन की कोई शुरुआत नहीं है। वह वचन जिसका कभी अन्त नहीं होगा। यह वचन अनन्त काल का है।

यह अपने आप में कुछ लोगों के लिये परेशान करने वाला कथन है। हम अपने दिमाग में बहुत आसानी से एक या दो शताब्दी, यहाँ तक कि एक या दो सहस्त्राब्दी भी पीछे जा सकते हैं। खगोलशास्त्री स्वयं को अरबों वर्षों के संदर्भ में सोचने के आदी हो गए हैं। परन्तु आदि से परे वापस जाना, जहाँ कोई शुरुआत ही नहीं है—यह व्याकुल करने वाली बात है।

परन्तु, यूहन्ना कहता है, जब हम यीशु के बारे में सोचते हैं, तो हमें वहीं से शुरुआत करनी चाहिए। हमें समय से पहले के समय में, तिथिहीन अतीत में वापस जाना चाहिए। हमें यीशु के बारे में यह सोचना चाहिए कि समय के साथ उसकी शुरुआत हुई ही नहीं है। वह अनन्त काल का परमेश्वर है।

2. यीशु समान रूप से परमेश्वर है (1:1ख)

"आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था।" दूसरे शब्दों में, ईश्वरत्व के भीतर एक से अधिक व्यक्ति हैं, और यीशु उन व्यक्तियों में से एक है।

पुराने नियम के लेखकों ने इसकी झलक देखी। व्यवस्थाविवरण 6:4 में पाए गए महान यहूदी मत के कथन में, इब्रानियों ने परमेश्वर की एकता व्यक्त की: "हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है।" परन्तु बाइबल के पहले वाक्य में ईश्वरत्व में बहुलता का विचार व्यक्त किया गया: "आदि में परमेश्वर [एलोहिम, बहुवचन संज्ञा] ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की [एकवचन क्रिया]।" यह प्रयोग पूरे पुराने नियम में देखा जाता है; परमेश्वर का उल्लेख एकवचन क्रिया के साथ बहुवचन रूप में किया जाता है। इस प्रकार, पुराने नियम में त्रिएकता का विचार अन्तर्निहित है: एक परमेश्वर, तीन व्यक्ति। गणितीय रूप से व्यक्त किया जाए तो यह 1 + 1 + 1 (जिसका योग तीन है) नहीं होगा, बल्कि 1 x 1 x 1 (जिसका योग एक है) होगा। पुराने और नए दोनों नियमों से हम परमेश्वर की अवधारणा पर पहुँचते हैं जो तीन व्यक्तियों (पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा) के रूप में विद्यमान है। तीन व्यक्ति, एक परमेश्वर।

इस अवधारणा को समझना जितना कठिन है, हम समय और अर्थ की संसार में चित्रण के बिना नहीं बचे हैं। हमारी सृष्टि एक त्रिगुणात्मक सृष्टि है : स्थान, पदार्थ, समय। स्थान (अन्तरिक्ष) त्रिगुणात्मक है : लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई। पदार्थ त्रिगुणात्मक है : ऊर्जा, गति, परिघटना; समय त्रिगुणात्मक है: भूत, वर्तमान, भविष्य। नेथन वुड ने बताया कि ये सारे सम्बन्ध ईश्वरत्व के भीतर के सम्बन्धों को, दूसरों की तुलना में कुछ अधिक दर्शाते हैं। जब समय के दायरे में भूत, वर्तमान और भविष्य के सम्बन्धों की बात आती है, तो वह तथ्यों की एक चौंकाने वाली श्रृंखला तैयार करता है। वह एक के बाद एक अनुच्छेद लिखता है और फिर समय शब्द के स्थान पर परमेश्वर शब्द, भविष्य शब्द के स्थान पर पिता शब्द, वर्तमान शब्द के स्थान पर पुत्र, और भूत शब्द के स्थान पर पवित्र आत्मा शब्द का प्रयोग करता है। फिर वह आदान-प्रदान किए गए शब्दों को सम्मिलित करते हुए अनुच्छेद को फिर से लिखता है। इसका परिणाम परमेश्वर के तीन व्यक्तियों के एक दूसरे के साथ सम्बन्धों का एक आदर्श वर्णन है। यह त्रैकता का एक अद्भुत प्रमाण है (एन. वुड, द सीक्रेट ऑफ द यूनिवर्स, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: एर्डमैन्स)।

इसलिये, जब यूहन्ना यीशु के बारे में कहता है, "वचन परमेश्वर के साथ था," तो वह एक उत्कृष्ट सत्य बताता है। यीशु पिता और पवित्र आत्मा के साथ समान रूप से परमेश्वर है। वह परमेश्वर का पुत्र है, ईश्वरत्व का दूसरा व्यक्ति है।

3. यीशु मूलतः परमेश्वर है (1:1स-2)

"और वचन परमेश्वर था।" अर्थात्, उसके सारतत्व में, वह जो वास्तव में है, उसके स्वभाव, व्यक्ति और व्यक्तित्व में, उसके गुणों और चरित्र में, यीशु ही वह सब कुछ है जो परमेश्वर है। परमेश्वर के सारे आवश्यक गुण उसी के हैं। वह सारी सृष्टि से अपने ही अधिकार, स्वतंत्रता में विद्यमान है। क्या परमेश्वर के पास करोड़ों आकाशमण्डल बनाने और अकल्पनीय पथों पर विशाल वेग से, निश्चित नियमों के अनुसार, अत्यधिक मात्रा में ऊर्जा खर्च करते और स्थान में चक्कर लगाते हुए उन्हें स्थापित करने की बुद्धि और शक्ति है? यीशु भी यही करता है। ऐसा है प्रभु का अवर्णनीय व्यक्तित्व।

B. प्रभु का अनन्त सामर्थ्य (1:3-5)

निम्न बातों में यीशु के जैसा कोई नहीं है :

1. सृष्टि की रचना की उसकी सामर्थ्य (1:3)

"सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ, और जो कुछ उत्पन्न हुआ है उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई।" सब कुछ। यूनानी शब्द पान्टा सब बातों को व्यक्तिगत रूप से, सब बातों को अलग-अलग संदर्भित करता है। यह सृष्टि के अनन्त विस्तार का संदर्भ है। वैज्ञानिक अपनी दूरबीन लेता है और उसे अन्तरिक्ष की पहुँच पर केन्द्रित करता है। वहाँ दूरियाँ इतनी विशाल हैं कि उन अवधारणाओं को व्यक्त करने के लिये माप की एक विशेष इकाई की आवश्यकता होती है। खगोलशास्त्री का पैमाना एक प्रकाश वर्ष है: प्रकाश एक वर्ष में (186,273 मील प्रति सेकण्ड की गति से—पृथ्वी को भूमध्य रेखा पर साढ़े सात बार घेरने के बराबर) जितनी दूरी तय करता है। पूर्ण संख्या में, यह लगभग छः खरब मील है। उस पैमाने के अनुसार हमारा सूर्य आठ प्रकाश मिनट दूर है। परन्तु स्थान में सूर्य और तारे अरबों प्रकाश वर्ष दूर माने जाते हैं। न तो हम तारों की गिनती कर सकते हैं और न ही अनुमान लगा सकते हैं कि वे कितने अरब हैं।

कुछ सितारे इतने बड़े हैं कि सारी सोच से परे है। उदाहरण के लिये, तारा एन्टारेस हमारे सूर्य के आकार के छः करोड़ चालीस लाख सूर्यों को अपने भीतर रख सकता है। तारामण्डल में हरक्यूलिस एक तारा है जिसमें एन्टारेस के आकार के दस करोड़ तारे समा सकते हैं। हमारे आकाशमण्डल, मिल्की वे का व्यास 100,000 प्रकाश वर्ष है। यह दो सौ मील प्रति घंटे की रफ्तार से घूम रहा है। इसे अपनी धुरी पर एक चक्कर पूरा करने में 20 लाख वर्ष लगते हैं।

हम न केवल स्थान के आकार और उस विलक्षणता से आश्चर्यचकित हैं जिसके साथ सृष्टिकर्ता ने इसे तारों के साथ ढाला है, बल्कि हम उस सटीकता से भी असामंजस्य में हैं जिसके साथ ये सारे विशाल गोले अपने निर्धारित पथों का अनुसरण करते हैं। उदाहरण के लिये, हमारा ग्रह वास्तविक वृत्त में भ्रमण नहीं करता है। यह एक ही समय में तीन दिशाओं में यात्रा करता है। यह अपनी धुरी पर घूमता है, यह सूर्य के चारों ओर घूमता है, और इसका मार्ग अन्य ग्रहों द्वारा विक्षेपित होता है। फिर भी यह हर सौ वर्षों में एक सेकण्ड के सौवें हिस्से से अधिक समय नहीं खोता है।

आइए हम असीम रूप से वृहत के संसार से असीम रूप से सूक्ष्म के संसार की ओर मुड़ें। सृष्टि का निर्माण तथ्य परमाणु है, एक इकाई जो इतनी छोटी है कि प्रत्येक का व्यास एक इंच के पन्द्रह करोड़वे हिस्से से भी कम है। यदि पानी की एक बूंद के अणुओं को रेत के कणों में परिवर्तित किया जाए, तो न्यूयॉर्क से सैन फ्रांसिस्को तक आधा मील चौड़ा और एक फुट मोटा कंक्रीट राजमार्ग बनाने के लिये पर्याप्त रेत होगी।

वह तो निर्जीव वस्तुओं का संसार है। जब हम जीवित प्राणियों की ओर मुड़ते हैं तो हर तरफ जो जटिलताएँ हमारे सामने आती हैं वे अविश्वसनीय होती हैं। जीवित प्राणी की प्रत्येक कोशिका में दो सौ अरब परमाणु के अणु होते हैं। एक कोशिका (जटिल जीवन कारखाना) का केन्द्रक व्यास में एक इंच के चार दसवें हिस्से से कम होता है। कोशिका के घटक भागों को घेरने वाली झिल्ली उसका केवल आधा हिस्सा या एक इंच का दस लाखवें हिस्से के बराबर मोटी होती है।

यीशु ने यह सब बनाया। प्रेरित हुए प्रेरित के द्वारा पवित्र आत्मा कहता है, "उसके बिना," "जो कुछ उत्पन्न हुआ है उसमें से कोई भी वस्तु उत्पन्न नहीं हुई।" यूनानी में पाठ का रूप और भी अधिक प्रबल है: "एक भी वस्तु नहीं।"

2. सम्प्रेषण की उसकी सामर्थ्य (1:4-5)

यूहन्ना ने कहा है कि प्रभु के पास जीवन की बातें करने (1:4) और ज्योति की बातें करने (1:5) की सामर्थ्य है। "उसमें जीवन था और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति था। ज्योति अन्धकार में चमकती है, और अन्धकार ने उसे ग्रहण न किया।"

जगत की ज्योति होने के लिये देहधारी होकर जगत में आने से पहले ही, (8:12; 9:5) उसने सृष्टि के द्वारा परमेश्वर का ज्ञात कराया, जिसमें जीवन स्वयं सबसे अद्भुत रहस्य और सबसे ऊँची वाणी है। हम जीवन के बारे में जितना अधिक जानते हैं, यह उतना ही अधिक जटिल और भ्रमित करनेवाला प्रमाणित होता है। जीवन, असंख्य रूपों में धूल से उठता हुआ, हमें इशारा करते हुए कहता है, "यह तो परमेश्वर के हाथ का काम है" (निर्गमन 8:19 से तुलना करें)। हर कोशिका, हर झिल्ली, हर जटिल अणु, डीएनए का हर कण ऊँचे स्वर में कहता है: "जिस हाथ ने हमें बनाया वह परमेश्वर का हाथ है।"

परन्तु अब अन्धकार ने पतित आदम के घराने के बच्चों को घेर लिया है। यह धार्मिक मन का अन्धकार है, जो कि बुद्धिमान लोगों को अंधविश्वास को बढ़ावा देने या सब प्रकार की बड़ी-बड़ी डींगे मारने और व्यर्थ बातें करने के लिये प्रेरित करता है। यह दार्शनिक मन का अन्धकार है, जो चीजों की अन्तिम प्रकृति के बारे में व्यर्थ अटकलें लगाता है। यह दैहिक मन का अन्धकार है, जो परमेश्वर के प्रति शत्रुता में डूबा हुआ है और हजारों हानिकारक और विनाशकारी लालसाओं को पूरा करने के लिये तैयार है। यह वैज्ञानिक मन का अन्धकार है, जो एक साँस में कहता है कि जीवन अपनी जटिलता में भ्रमित करनेवाला है और अगली साँस में कहता है कि "जीवन केवल रसायनिक उत्पत्ति है" और इसलिये परमेश्वर पर विश्वास करने का कोई कारण नहीं है।

अन्धकार का होना स्पष्ट है। इसका लक्ष्य पृथ्वी को पूरी तरह से घेरना और ज्योति को मनुष्य की आत्माओं में प्रवेश करने से रोकना है। हालाँकि, यह अन्धकार की शक्ति से परे है। "अन्धेरा उसको नहीं घेर पाता।" एक छोटी सी मोमबत्ती अन्धकार को दूर कर सकती है। जब ज्योति अपनी पूरी शक्ति से चमकती है, तो अन्धकार दूर हो जाता है। प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में परमेश्वर की और सही-गलत की पहचान होती है। उस ज्योति को कभी बुझाया नहीं जाता। न ही ईश्वर पर अविश्वास और मानवतावाद का सबसे उत्तम प्रचार इसे खत्म कर सकता है। कलवरी में जब ज्योति बुझ गई तो अन्धकार की शक्ति की अनिश्चित जीत की घड़ी आ चुकी थी। परन्तु पुनरुत्थान की सुबह यह फिर से चमक उठी, हमेशा के लिये विजयी हुई। शीघ्र ही "चमकती हुई ज्योति" प्रकट होगी (नीतिवचन 4:18)।

II. प्रमाण में ईश्वरीय ज्योति (1:6-13)

यूहन्ना अपने अगले परिचयात्मक विषय ज्योति की ओर आसानी से आगे बढ़ता है। उन शुरुआती दिनों को देखते हुए जब प्रभु यीशु ने पहली बार अपने आप को प्रकट किया, प्रेरित यूहन्ना अब बपतिस्मा देनेवाले यूहन्ना की सेवकाई को स्मरण करता है और उस गति से अचम्भित होता है जिसके साथ इस्राएल के आनेवाले मसीह को ग्रहण न करना विकसित हुआ था। इस सुसमाचार के विवरण में विश्वास और अविश्वास को साथ-साथ विकसित होते दिखाना उसकी प्रमुख चिन्ताओं में से एक था। उसकी प्रस्तावना से हमें इसकी प्रारम्भिक झलक मिलती है।

A. गवाही और ज्योति (1:6-8)

1. परमेश्वर की ओर से भेजा गया मनुष्य (1:6)

निश्चित रूप से, पद 7 में गवाह, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला, दूत, “एक मनुष्य परमेश्वर की ओर से आ उपस्थित हुआ” (1:6)। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला याजक और नाज़ीर दोनों था। बाइबल में केवल तीन लोगों का उल्लेख है जो जीवन भर नाज़ीर रहे : शमूएल, शिमशोन, और यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला। एक नाज़ीर को किसी मृत शरीर को छूने और दाख के फल के किसी भी सम्पर्क से दूर रहना होता था। वह अपने बाल भी हमेशा लम्बा रखता था। यहाँ तक कि अपने सबसे निकट और प्रिय रिश्तेदार के शव को भी छूने से मना किया गया था, वह संसार के सामने घोषणा करता था कि उसका स्नेह वेदी पर है। परमेश्वर के प्रति उसका प्रेम थोड़े से प्रेम को भी ग्रहण कर लेता था। दाखमधु से परहेज करते हुए, वह संसार के सामने घोषणा करता था कि उसकी सेवा वेदी पर है। वह अपने शरीर को अधीनता में रखता था। अपने बालों को लम्बा रखते हुए, वह संसार को बताता था कि उसका बाहरी रूप भी सब कुछ वेदी को समर्पित था।

यह समर्पण का एक उच्च मानक था, जो कि परमेश्वर के प्रति सामान्य भक्ति की तुलना में कहीं अधिक किया जाने वाला था। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि पन्द्रह सौ वर्षों के निरन्तर इब्रानी इतिहास में हमने केवल तीन लोगों के बारे में पढ़ा है जिन्हें इस प्रकार परमेश्वर के लिये अलग किया गया था। उनमें से एक, शिमशोन, निराशाजनक रूप से विफल रहा। अन्य दो, शमूएल और यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला इब्रानी भविष्यद्वक्ता थे—शमूएल उनमें से पहला और यूहन्ना अन्तिम था।

यूहन्ना एक भविष्यद्वक्ता बल्कि “भविष्यद्वक्ता से भी बड़ा” था (लूका 7:26)। वह एक याजक भी था। एक भविष्यद्वक्ता मनुष्य के लिये परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करता है; एक याजक परमेश्वर के सामने मनुष्य का प्रतिनिधित्व करता है। यूहन्ना एक याजक था बल्कि एक याजक से भी बढ़कर—वह एक नाज़ीर याजक था। एक याजक सेवा कार्य के लिये पवित्र किए जाने का सुझाव देता है; एक नाज़ीर व्यक्तिगत पवित्रीकरण का सुझाव देता है।

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को अचानक सुसमाचार कथा में शामिल किया गया है। प्रेरित यूहन्ना “जीवन” और “ज्योति” के बारे में बात करता था, जो किसी व्यक्ति के विश्वास और व्यवहार के दो सामान्य संकेत चिह्न हैं। (“ज्योति” का सम्बन्ध जानने से है; “जीवन” का सम्बन्ध दिखाने से है।) प्रेरित के मन में “एक मनुष्य परमेश्वर की ओर से आ उपस्थित हुआ” के दर्शन की चमक, जिसने मानवीय स्तर पर ज्योति और जीवन दोनों का प्रतीक दिया। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने अपनी बुलाहट और दृढ़ विश्वास के प्रति इतना सच्चा जीवन जीया कि उसे प्रभु की प्रशंसा प्राप्त हुई: “जो स्त्रियों से जन्मे हैं, उनमें से यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से बड़ा कोई नहीं।” उसे लगभग चार सौ मौन वर्षों के अन्धकार के बाद यीशु मसीह के आगमन पर इस्राएल राष्ट्र में नई ज्योति लाने के लिये परमेश्वर की ओर से भेजा गया था। उसने समय पर सच्चाई और आशा की ज्योति जलाई, जिसे निन्दा से परे जीवन के अधिकार का समर्थन प्राप्त था।

वह “परमेश्वर की ओर से भेजा गया” था। कोई भी व्यक्ति परमेश्वर की ओर से नहीं भेजा जा सकता जो पहले परमेश्वर के साथ न रहा हो। प्रेरित यूहन्ना का मानना है, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला सीधे परमेश्वर की उपस्थिति से आया था। जिसने उसे अधिकार और सामर्थ्य प्रदान की थी।

2. उद्देश्य (1:7)

यूहन्ना के पास अपने कार्यों का एक उद्देश्य, एक कारण था। वह “गवाही देने आया कि ज्योति की गवाही दे, ताकि सब उसके द्वारा विश्वास लाएँ” (1:7)। गवाह पक्षकार के समान नहीं होता है। एक वकील उसके मामले पर बहस

करता है, किसी बात को प्रमाणित करने का प्रयास करता है, वांछित निर्णय लेने के लिये लोगों को प्रभावित करने का प्रयास करता है। एक गवाह को केवल सच, पूरा सच, और सच के अलावा कुछ नहीं बताने के लिये बुलाया जाता है। गवाहों को जो वे जानते हैं उसकी गवाही देने के लिये बुलाया जाता है। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला जानता था कि यीशु ज्योति है और उसने इस बात की गवाही दी।

3. विधि (1:8)

“वह आप तो वह ज्योति न था, परन्तु उस ज्योति की गवाही देने के लिये आया था” (1:8)। प्रकृति में एक अच्छा उदाहरण चंद्रमा और सूर्य के बीच का सम्बन्ध है, जो पृथ्वी पर ज्योति लाता है। चंद्रमा अन्तरिक्ष में एक मृत संसार है, निर्जीव चट्टान का एक विशाल टुकड़ा है। इसमें आग की कोई चिंगारी नहीं है, प्रकाश की उसकी कोई किरण नहीं है। चंद्रमा का काम आकाश में एक विशाल परावर्तक बनना, सूर्य के प्रकाश को ग्रहण करना और उस प्रकाश को पृथ्वी पर बिखेरना है। चंद्रमा ज्योति नहीं है। यह अन्तरिक्ष में ज्योति का गवाह बनने के लिये बनाया गया है। संसार और रात के अन्धकार सूर्य के साथ नहीं है। सूर्य जलते हुए गैस का एक विशाल गोला है, एक प्रकार का नाभिकीय भट्टी है, जो धधकती रहती है, ज्योति की निरन्तर धारा बहती रहती है। चंद्रमा का काम केवल अस्थाई है, क्योंकि दिन निकल आता है। सूर्य का प्रकाश सीधे पृथ्वी पर पड़ता है, इसके अंधेरे को इस तरह से दूर करता है जो चंद्रमा नहीं कर सकता।

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला ऐसा ही था। वह आप तो वह ज्योति न था, परन्तु उस ज्योति की गवाही देने के लिये आया था।

B. जगत और ज्योति (1:9-13)

1. ज्योति प्रकट हुई (1:9)

प्रेरित यूहन्ना के विचार यीशु की ओर वापस आते हैं। “वह सच्ची ज्योति जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है, जगत में आनेवाली थी।” हर एक मनुष्य को। हर एक व्यक्ति को। सब को बिना किसी भेदभाव के। सब में कुछ न कुछ ज्योति है। जिन लोगों को लिखित प्रकाशन प्राप्त नहीं हुआ है उनके पास सृष्टि के निर्माण और विवेक की ज्योति है। परमेश्वर ने यहूदियों को वाचा और आज्ञा की अतिरिक्त ज्योति दी। अब परमेश्वर ने जगत को मसीह की ज्योति दी है। कोई भी परमेश्वर द्वारा दी गई ज्योति के एक या दूसरे स्रोत से बच नहीं पाता। पवित्र आत्मा उसे देखता है। परमेश्वर लोगों को ज्योति के लिये जो उनके पास है जिम्मेदार मानता है। उन जगहों में, जिन्होंने मसीह की ज्योति की पूर्ण चमक को जान लिया है, उन लोगों के पास कोई बहाना नहीं है।

2. ज्योति का विरोध (1:10-11)

यूहन्ना को यीशु के विरोध से अधिक आश्चर्यचकित करने वाली कोई बात नहीं लगी। बातों की शुरुआत में पीछे मुड़कर देखने पर, यूहन्ना अभी भी आश्चर्यचकित था कि लोग, यहूदी और अन्यजाति दोनों कितनी जल्दी और कैसे पूरी तरह से ज्योति से दूर हो गए।

प्रभु ने देखा कि ज्योति का विरोध उसके अपने बनाए लोगों द्वारा किया जा रहा है (1:10)। “वह जगत में था, और जगत उसके द्वारा उत्पन्न हुआ, और जगत ने उसे नहीं पहिचाना।” उसने बाड़े में चलते हुए घास का एक तिनका तोड़ लिया। उसने इसे बनाया था; वह इसकी संरचना के बारे में, प्रकाश संश्लेषण के बारे में, पौधे के परागण और अंकुरण के रहस्य और इसके सभी जटिल रसायन विज्ञान के बारे में जानता था। वह गलील की झील के किनारे

चला; वह उस झील की स्थलाकृति, हर गहरी और उथली जगह, तल पर हर कंकड़, उसकी लहरों में छटपटाती हर मछली को जानता था। जगत उसके द्वारा उत्पन्न हुआ; वह खगोल विज्ञान और रसायन विज्ञान, भौतिकी और जीव विज्ञान, गणित और चिकित्सा के बारे में सब कुछ जानता था। वह हर उस कानून को जानता था जिसे अब विज्ञान जानता है और हर उस कानून को भी जिसे विज्ञान नहीं जानता, इसलिये नहीं कि उसने उनका अध्ययन किया था बल्कि इसलिये क्योंकि वह उन सब का कर्ता था। उसने जगत को एक मनुष्य की दृष्टि से देखा परन्तु किसी तरह, अपने अस्तित्व के रहस्य में, उसे सब बातों की असीमित समझ थी।

सृष्टिकर्ता गलील के खेतों से होकर गया और यरूशलेम की सड़कों पर चला। बुद्धि, प्रेम और शक्ति उसकी आँखों में दिखाई देती थी, और उसके हाथों के स्पर्श से महसूस की जाती थी। वह जगत में था, और जगत उसके द्वारा उत्पन्न हुआ, और जगत ने उसे नहीं पहिचाना। यूहन्ना के लिये, वह एक सबसे बड़ी त्रासदी और विडम्बना थी। लोग परमेश्वर के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलते थे, फिर भी देख पाने में बिल्कुल अंधे थे।

प्रभु का विरोध न केवल उसके अपने लोगों द्वारा किया गया; बल्कि इससे भी बुरा, उसके अपने ही देशवासियों ने उसका विरोध किया (1:11)। "वह अपने घर आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया।" अर्थात्, वह यहूदी लोगों के बीच आया, और उनका उसके लिये कोई प्रयोजन नहीं था। वह सदियों से अपने आगमन के लिये उन्हें तैयार कर रहा था। भविष्यद्वक्ताओं ने इसकी भविष्यद्वाणी की थी। बेबीलोन के निर्वासन से प्रतिज्ञा की भूमि पर उनके पुनः एकत्रित होने से इसकी शुरुआत हुई थी। उनके मत का ठण्डा, मृत होना और औपचारिकता ने एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता को प्रतिध्वनित किया जो मृत हड्डियों में जीवन फूँक सकता है। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने उसके शीघ्र आने की घोषणा करने का प्रचार किया। परन्तु यीशु उस तरह का मसीह नहीं था जैसा वे चाहते थे।

बाइबल का अनोखा चित्रण यूसुफ का है, जो पिता का सबसे प्रिय पुत्र था, जो बूढ़े याकूब का प्रिय "पहिलौठा पुत्र" था। यूसुफ को उसके रिश्तेदारों, इस्राएल के बच्चों से अलग किया गया था, परिवार में उसे विशेष स्थान प्राप्त था, जैसा कि उसके कई रंगों के अंगरखे से स्पष्ट था। उसे जानबूझकर उसके रिश्तेदारों के विपरीत खड़ा किया गया, उसकी अच्छाई और आज्ञाकारिता दूसरों की बुराई और दुष्टता के प्रति पूरी तरह से शान्ति देती थी। जिसके कारण वे उससे बैर रखते थे, विशेषकर उसके दर्शनों के कारण, जो उसकी श्रेष्ठता और उसके भविष्य की महिमा के बारे में स्पष्ट रूप से बताते थे। पुराने नियम के इतिहासकार बताते हैं कि वे उससे डाह रखते थे और उससे प्रेम से बात नहीं करते थे। अन्ततः उन्होंने उसके विरुद्ध षड्यन्त्र किया,—उसे एक दास की कीमत पर बेच दिया, और उसे अन्यजातियों के हाथों में सौंप दिया, अपने पिता से तुरन्त भेंट करने के पश्चात् वह उनके पास आया था।

इसी प्रकार प्रभु यीशु भी अपने घर आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया।

3. ज्योति को ग्रहण किया गया (1:12-13)

हालाँकि, ज्योति को केवल प्रकट और उसका विरोध नहीं किया गया। उसे ग्रहण भी किया गया। इसके बाद यूहन्ना उन अद्भुत सुसमाचार के विवरणों में से एक देता है जो उसके लेखन की एक उल्लेखनीय विशेषता है, ऐसे लेख जो मानव जाति के लिये परमेश्वर की उद्धार की योजना के सार को शुद्ध रूप से केन्द्रित करते हैं। जैसा कि यूहन्ना ने दर्ज किया है, वे उद्धार की आगे की यात्रा में स्वाभाविक रूप से रुकने वाले स्थान हैं।

"परन्तु..." बाइबल के वे परन्तु जो रहस्य को प्रकट करते हैं। वे छोटे बंधन हैं जिन पर महान सत्य और उनके प्रतिफल टिके हुए हैं। "वह अपने घर आया, और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया। परन्तु..." परमेश्वर का

धन्यवाद हो, यह पूरी कहानी नहीं है। यूहन्ना के बूढ़े होने तक उद्धार पानेवालों की संख्या पहले से ही जगत के हर एक छोर में बढ़ रही थी। लाखों लोगों का दोबारा जन्म हुआ था। यहाँ यूहन्ना हमें वह बताता है जिसे हम नए जन्म का सूत्र कह सकते हैं। वह परमेश्वर की सन्तान का आत्मिक जन्म का वर्णन करता है (1:12)।

"परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर के पुत्र [सन्तान] होने का अधिकार [अवसर, सौभाग्य] दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।" हमें तीन क्रियाओं पर ध्यान देना चाहिए: विश्वास रखना, ग्रहण करना, होना—उन्हें उनके क्रमानुसार रखना। मनुष्य के जन्म के मामले में, जीवन के समीकरण में दो कारक: मनुष्य और परमेश्वर परस्पर क्रिया करते हैं। मनुष्य अपना काम करता है, और फिर परमेश्वर आश्चर्यकर्म करता है और गर्भ में जीवन का निर्माण होता है। एक बच्चे का जन्म होता है। जैसा प्राकृतिक जन्म में होता है, वैसा ही नया जन्म में भी होता है। हम अपना काम करते हैं, परमेश्वर आश्चर्यकर्म करता है, और जीवन—आत्मिक जीवन, ईश्वरीय जीवन, अनन्त जीवन की शुरुआत होती है। परमेश्वर के परिवार में एक नए बच्चे का जन्म होता है। यह प्रक्रिया उन तीन क्रियाओं के चारों ओर घूमत्ती रहती है।

सबसे पहले हमें विश्वास रखना चाहिए, उसके नाम पर विश्वास रखना चाहिए। यहाँ नाम का उल्लेख नहीं किया गया है परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं है कि वह नाम किसका है: यीशु, वह नाम जिसे यूहन्ना किसी अन्य की तुलना में सबसे अधिक उपयोग करता है। मत्ती इस नाम का उपयोग 151 बार, मरकुस 13 बार, लूका 88 बार, परन्तु यूहन्ना, 247 बार से कम नहीं करता। यूहन्ना, अन्य सुसमाचार प्रचारकों की तुलना में, हमें प्रभु की ईश्वरीयता से अवगत कराता है, फिर भी आरम्भ से अन्त तक उसके मनुष्य होने को हमारे सामने रखता है। परन्तु, हमें बार-बार यीशु के मनुष्य होने का स्मरण कराते हुए, यूहन्ना हमें यह कभी नहीं भूलने देता कि वह मनुष्य से बढ़कर था।

इसलिये, हमें "उसके नाम पर विश्वास रखना" है। उसके नाम पर क्यों? क्योंकि, उसका नाम ही हमारे उद्धार की कुंजी है। जब उसका जन्म होने वाला था, तो परमेश्वर ने यूसुफ के पास एक दूत को सन्देश के साथ भेजा, "तू उसका नाम यीशु रखना: क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा" (मत्ती 1:21)। उसके नाम पर विश्वास रखना उसके नाम के अर्थ पर विश्वास रखना है; यह विश्वास रखना है कि यीशु मुझे मेरे पापों से उद्धार देता है। और इसका तात्पर्य यह है कि मैं स्वयं को एक पापी के रूप में जानता हूँ जिसे एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है।

यह उस बिन्दु पर पहुँचने के लिये एक बड़ा कदम है जहाँ मैं उसके नाम पर विश्वास रखता हूँ। परन्तु यह अपने आप में मुझे परमेश्वर के परिवार में नहीं रखता। समीकरण का दूसरा भाग (इसके प्राथमिक महत्व के कारण पहले कहा गया है) "उसे ग्रहण करना" है। "जितनों ने उसे ग्रहण किया" उन्हें वह नया जीवन देता है। यह विश्वास करना पर्याप्त नहीं है कि यीशु एक उद्धारकर्ता है, यह विश्वास करना भी पर्याप्त नहीं है कि वह ही उद्धारकर्ता है। उसे मेरा उद्धारकर्ता अवश्य होना चाहिए। मेरे लिये ऐसा होने का एकमात्र तरीका यह है कि मैं उसे ग्रहण करूँ। ऐसा करने के लिये केवल यीशु को, जो लोगों का उनके पापों से उद्धार करता है, अपने हृदय और जीवन में उद्धारकर्ता और परमेश्वर के रूप में आने, अपने अन्तरमन में वास करने और उस पर राज करने के लिये आमन्त्रित करना है।

विश्वास रखना और ग्रहण करना किसी को परमेश्वर की सन्तान कैसे बनाता है? वैसे, यह हमारा भाग है। जब हम अपना काम करते हैं, तो परमेश्वर आश्चर्यकर्म करता है। वह कहता है, "हो जा!" और हम परमेश्वर की सन्तान हो जाते हैं। वह नया जीवन देता है। पवित्र आत्मा आता है और मनुष्य की आत्मा में वास करता है, और अपने साथ परमेश्वर का जीवन लाता है। परमेश्वर की जीवन देनेवाली शक्ति प्रवाहित होती है और हम मनुष्यों की आत्माओं

को पुनर्जीवित करती है। हमें स्वर्गीय जीवन मिलता है। हम ईश्वरीय स्वभाव को साझा करते हैं। हम परमेश्वर की सन्तान हो जाते हैं।

तुलना और विरोधाभास के माध्यम से, यूहन्ना आगे परमेश्वर के मसीह के अलौकिक जन्म का वर्णन करता है। अधिकृत संस्करण में लिखा है: "वे [जो] न तो लहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं।" यदि वह पाठ सही है, तो यह पद पिछली पद के कथन को बढ़ाती है। जो यह दर्शाता है कि किसी व्यक्ति का नया जन्म मनुष्य के वंश से नहीं है (1:13क)। यह "लहू से नहीं है।" सिर्फ इसलिये कि मेरे माता-पिता परमेश्वर की सन्तान हैं, इससे मैं परमेश्वर की सन्तान में से एक नहीं हो जाता।

यह मनुष्य की इच्छा से नहीं है (1:13ख)। यह "शरीर की इच्छा से" नहीं है। किसी भी इच्छापूर्ण सोच से मैं परमेश्वर की सन्तान नहीं हो जाता। मैं शायद चाह सकता हूँ कि मैं एक करोड़पति का बेटा होता, परन्तु इससे मैं करोड़पति नहीं हो जाता। मैं एक काल्पनिक संसार में भी जी सकता हूँ जहाँ मैं अपने आप को समझाता हूँ कि मैं एक करोड़पति का बेटा हूँ, परन्तु ऐसा करना मुर्खता है।

यह मनुष्य की रीति से नहीं है (1:13ग)। यह "मनुष्य की इच्छा से" नहीं है। माता-पिता या व्यक्तिगत कोई भी संकल्प से मैं परमेश्वर की सन्तान नहीं हो सकता। हो सकता है कि मेरे माता-पिता ने मुझे बचपन में बपतिस्मा दिलवाया हो, परन्तु इससे मैं परमेश्वर की सन्तान नहीं हो जाता; वह केवल "मनुष्य की इच्छा" है। मैं एक अच्छा जीवन जीने, धार्मिक कर्तव्यों का पालन करने, आत्मिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये अपने चरित्र की सारी शक्ति का उपयोग कर सकता हूँ, परन्तु ये बातें नया जीवन नहीं देंगी। यह एक जन्म है। पद 12 में दिए गए तीन आत्मिक नियमों के अनुसार, हम "परमेश्वर से उत्पन्न हुए" हैं।

परन्तु इस पद का एक और दृष्टिकोण भी है। ऐसे लोग हैं जो तर्क देते हैं कि वाक्यांश "वे उत्पन्न हुए" को "वह उत्पन्न हुआ" पढ़ा जाना चाहिए जो पूरी तरह से अर्थ बदल देता है। इस मामले में यह प्रभु यीशु को संदर्भित करता है, जिसके उद्धार करने वाले नाम पर हमें विश्वास करना है, जो स्वयं "न लहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुआ था" यदि ऐसा है, तो यह मसीह के कुँआरी से जन्म की यूहन्ना की परिभाषा है और यह हमें अगली पद में कथन के लिये तैयार करती है।

III. अनुभव में ईश्वरीय प्रेम (1:14-18)

"और वचन देहधारी हुआ, और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, (और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा)" (1:14)।

यूहन्ना की प्रस्तावना में तीन निर्णायक मोड़ हैं, जो वास्तव में, उसके सुसमाचार के विवरण का सारांश है। पहला मुख्य कथन पद 1 में पाया जाता है, जहाँ यूहन्ना स्पष्ट रूप से मसीह के अनन्त और महत्वपूर्ण ईश्वरीय तत्व को बताता है। दूसरा मुख्य कथन पद 14 में है, जहाँ यूहन्ना देहधारण के रहस्य पर जोर देता है—तथ्य यह है कि वचन ने अब अस्तित्व का एक नया रूप धारण कर लिया है। देहधारण से पहले और बाद में परमेश्वर के व्यक्तित्व में एकता थी। उसके देहधारण के समय परमेश्वरत्व का दूसरा व्यक्ति, परमेश्वर पुत्र, या उसके परमेश्वर होने में कोई कमी नहीं थी; परन्तु साथ ही उसका मनुष्य होना वास्तविक और पूर्ण दोनों था। वह पहले जैसा ही व्यक्ति बना रहा, परन्तु "वह देहधारी हुआ।" प्रभु यीशु का मनुष्य होना कोई ऐसी बात नहीं थी जिसे अस्थाई रूप से मान लिया

जाए और फिर बाद में त्याग दिया जाए। इसने अस्तित्व के नये रूप को व्यक्त किया, नये अस्तित्व को नहीं। इस सारांश में तीसरा मुख्य कथन पद 18 में पाया जाता है, जिससे प्रस्तावना का अन्त होता है।

A. देहधारण (1:14)

यूहन्ना ने मत्ती और लूका द्वारा बताई गई प्रभु के जन्म की सारी अद्भुत कहानियों को अनदेखा कर दिया। इसके बदले, वह हमें यीशु मसीह के जन्म के रहस्यमय महत्व के बारे में बताता है। वह कहता है, "वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में डेरा किया।"

प्रभु यीशु का जन्म अनोखा था। जब कोई अन्य बच्चा इस संसार में जन्म लेता है, तो एक नए व्यक्तित्व का निर्माण होता है। एक नए जीवन की सृष्टि होती है, जो पहले कभी अस्तित्व में नहीं था। परन्तु जब यीशु का जन्म हुआ, तो यह बिल्कुल भी एक नए व्यक्तित्व का निर्माण नहीं था। यह एक ऐसे व्यक्ति का इस संसार में आगमन था जो अनन्त काल से अस्तित्व में था। सृष्टि के इतिहास में यह कुछ नया था। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि स्वर्गदूतों ने उस रात अपने स्तुतिगान से यहूदी पहाड़ियों की सोई हुई गूँज को जगाया।

यूहन्ना कहता है, "वचन," "देहधारी हुआ।" इस प्रकार उसने लूका द्वारा प्रयुक्त 2,500 शब्दों के विपरीत चार शब्दों का उपयोग करते हुए देहधारण का वर्णन किया। यूहन्ना कहता है, वह "हमारे बीच डेरा किया।" यह शब्द एस्केनोसेन है, जो तम्बू गाड़ने के विचार को दर्शाता है। "वह हमारे बीच में डेरा किया" इसे कहने का एक और तरीका है। कुछ लोगों ने देहधारण का वर्णन करने के लिये यूहन्ना द्वारा इस शब्द के उपयोग को बहुत महत्व दिया है। उन्होंने इसे एक तिथि चिह्न के रूप में देखा है। यह विचार व्यक्त किया जाता है कि प्रभु यीशु का जन्म वास्तव में तम्बुओं के उस आनन्दमय वार्षिक यहूदी पर्व के पहले दिन हुआ था (तीसरी का 15वाँ दिन; अर्थात् आधुनिक गणना के अनुसार 4 ई.पू. के 29 सितम्बर को)। यदि ऐसी बात थी, तो उसका खतना, जो आठवें दिन हुआ था, बाद में यूहन्ना द्वारा उल्लेखित "पर्व के महान दिन" (__यूहन्ना__7:37) में हुआ होगा। यह एक आकर्षक विचार है।

परन्तु यूहन्ना द्वारा वाक्यांश डेरा किया का उपयोग, पुराने नियम के निवासस्थान की विकसित मूल व्याख्या से सम्बन्धित कई अन्य विचारों को जन्म देता है।

वह निवासस्थान "पूरी तरह महिमा से परिपूर्ण" था, परन्तु उसकी महिमा छिपी हुई महिमा थी। निवासस्थान के बाहरी स्वरूप में कोई विशेष सुन्दरता नहीं थी। बाहरी आँगन का सारा फर्नीचर साधारण पीतल (ताँबे) का बना था। बाहरी आँगन के परदे धूप से उजले हुए, बिना सजे हुए सनी के कपड़े के थे। रंग की एकमात्र चमक द्वार पर थी, जो ताम्बे की वेदी तक दिखाई देती थी और भीतर छिपी सुन्दरता का संकेत देती थी।

इस प्रकार, प्रभु यीशु की महिमा भी एक छिपी हुई महिमा थी। जब वह हमारे बीच "अपना तम्बू खड़ा करने" आया तो उसने अपने ईश्वरत्व को अलग नहीं रखा, बल्कि उसने अपनी महिमा पर पर्दा डाल दिया।

निवासस्थान के भीतर, जिसे केवल याजक ही देखते थे, महिमामय था। भीतर के पर्दे नीले, बैंजनी और लाल रंग के, और बढ़िया सनी के कपड़े के थे। भीतर का सारा फर्नीचर सोने का या सोने से मढ़ा हुआ था। वह रहस्यमय शेकीना बादल, जिसने इस्राएल के शिविर को ढक लिया था, परमपवित्र स्थान में दया के आसन पर विश्राम करने लगा, जहाँ वह दूसरे संसार की ज्योति और महिमा से नहाया हुआ था।

यूहन्ना कहता है, "अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण "हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी," जैसी पिता के एकलौते की महिमा।" हमारे विचार सहज रूप से उस शेकीना महिमा की ओर जाते हैं जो तम्बू में भरी हुई थी।

ग्रेट ब्रिटेन के शासक के पास कई घर हैं: बकिंघम पैलेस, विन्डसर कैसल, सैन्ड्रिंघम, बाल्मोरल कैसल। जिस स्थान पर सम्राट वर्तमान में निवास कर रहा है, उसे हमेशा राज घराने के मानक ध्वज स्तंभ को ऊपर उठाकर इंगित किया जाता है। ठीक इसी प्रकार शेकीना की महिमा जो परमपवित्र स्थान से भरी हुई थी, ने संकेत दिया कि परमेश्वर का निवास उसमें था। प्रभु यीशु के पास यह आन्तरिक महिमा थी। ऐसा कहा जा सकता है, परमेश्वर उसमें स्थाई रूप से निवास करता था। यह वह आन्तरिक महिमा थी जिसे यूहन्ना ने, जो उसे बहुत करीब से जानता था, प्रभु यीशु मसीह में देखा। उसने मसीह में परमेश्वर को देखा, "अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण पिता के एकलौते की महिमा।"

विद्वान मूल में निश्चित लेख (definite article) के आभाव और इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं कि अनुपस्थिति महत्वपूर्ण है—जिसका उद्देश्य संज्ञाओं में जो निर्दिष्ट है उस पर जोर देना है। यूहन्ना उन दिनों को स्मरण कर रहा था जो उसने इस महिमा से व्याप्त व्यक्ति की संगति में बिताए थे। वह कहता है, "हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी।" यह शब्द एथिआसामेथा है, जो अपने साथ दर्शक होने का विचार रखता है परन्तु देखनेवाले पर जोर देता है; इस शब्द का प्रयोग किसी उद्देश्य से देखने, प्रशंसा के साथ सम्मान करने के लिये किया जाता है। "हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी," जिस प्रकार की महिमा एकलौते पुत्र को अपने पिता से मिलती है। यूहन्ना कहता है कि, परमेश्वर के देहधारी पुत्र को देखकर, उन्होंने उसे देखा जो "अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण" था—ईश्वरीय प्रकाशन की सम्पूर्णता के लिये एक इब्रानीवाद। अनुग्रह प्रेम के रूप में ईश्वरीय प्रकाशन से मेल खाता है; सत्य ज्योति के रूप में परमेश्वर के प्रकाशन से मेल खाता है।

B. पहचान (1:15)

यूहन्ना अब बपतिस्मा देनेवाले यूहन्ना के पास वापस आता है जिसने सबसे पहले प्रभु यीशु की पहचान की कि वह कौन था।

1. उसका व्यक्तित्व (1:15क)

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने प्रभु के व्यक्तित्व की गवाही दी: "यूहन्ना ने उसके विषय में गवाही दी, और पुकारकर कहा, [जोर से पुकारकर] कहा, यह वही है, जिसका मैं ने वर्णन किया था।"

2. उसकी श्रेष्ठता (1:15ख)

यूहन्ना ने प्रभु की श्रेष्ठता की गवाही दी: "जो मेरे बाद आ रहा है, वह मुझ से बढ़कर है।"

3. उसका पूर्व-अस्तित्व (1:15ग)

यूहन्ना ने प्रभु के पहले से होने की गवाही दी: "क्योंकि वह मुझसे पहले था।"

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने पुराने क्रम के अन्तिम भविष्यद्वक्ता के रूप में बात की। वह आनेवाले मसीह के बारे में दो बातें जानता था। पहला, परमेश्वर को गरिमा और श्रेष्ठता में पूर्ण प्राथमिकता थी। जैसा कि यूहन्ना ने स्वयं कहा था, वह उसकी जूती का बन्ध खोलने के योग्य नहीं था। दूसरा, उसके अनन्त पूर्व-अस्तित्व के कारण परमेश्वर को पूर्ण प्राथमिकता प्राप्त थी। उस दूसरे "पहले" (प्रोटोस) के महत्व को बताया गया है। इसमें समय का संदर्भ है

—न केवल जन्म की प्राथमिकता का, बल्कि समय के मामले में विशिष्टता का भी। प्रभु यीशु ने समय के साथ अपने आप को किसी भी अन्य मनुष्य से बिल्कुल अलग तरीके से सम्बन्धित किया। वह समय के साथ अनन्त काल से आनेवाले व्यक्ति के रूप में सम्बन्धित था। अपनी माता की तरह, वह बैतलहम में एक बालक के रूप में उत्पन्न हुआ था; जहाँ तक उसके पिता की बात है, वह "आदि से" था।

C. प्रशंसनीय दावा (1:16)

यूहन्ना प्रेरित अब प्रस्तावना को पूरा करते हुए अपनी टिप्पणी जोड़ता है। इस प्रकार यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला (1:15), अग्रदूत, इब्रानी वंशावली का अन्तिम सन्देशवाहक और प्रेरित यूहन्ना (1:16-18), प्रेरितों में अन्तिम, नई वंशावली का दूत कहता है।

"क्योंकि उसकी परिपूर्णता (प्लेरोमा) में से हम सब ने प्राप्त किया अर्थात् अनुग्रह पर अनुग्रह।" वह शब्द प्लेरोमातोस अज्ञेयवादियों का पसंदीदा था, परन्तु प्रेरित पौलुस द्वारा उनसे ले लिया गया और नए और उच्च अर्थ के साथ दिया गया (कुलुस्सियों 1:19; 2:9; इफिसियों 1:23; 3:19; 4:13)। नए नियम में प्रयुक्त यह शब्द परमेश्वर के गुणों और शक्तियों की परिपूर्णता की बात करता है। उस असीमित आपूर्ति में से प्रत्येक विश्वासी को वह सब दिया जाता है जिसकी उसे आवश्यकता है। (1:16) यूहन्ना कहता है, "और अनुग्रह पर अनुग्रह": नया अनुग्रह, निरन्तर अनुग्रह, बिना किसी बाधा के अनुग्रह। पौलुस ने इफिसियों की पत्री में जितनी भी अपरम्पार आशिषों का वर्णन किया है, मसीह में वह सब हमारा है। हमारे द्वारा उपयुक्त प्रत्येक आत्मिक आशीष महान आशीष की नींव बन जाती है। परमेश्वर का अनुग्रह शक्तिशाली नियाग्रा (जलप्रपात) की तरह है, जो अनन्त काल से हमारे हृदयों में गरज रही है। यह कुछ ऐसा है जिसकी किसी पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता ने कभी कल्पना भी नहीं की।

D. अनुप्रयोग (1:17)

यूहन्ना कहता है, "इसलिये कि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई, परन्तु अनुग्रह और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुँची।" व्यवस्था दी गई*;* अनुग्रह और सच्चाई पहुँची। व्यवस्था अवैयक्तिक थी, भयावह भव्यता के दृश्यों के बीच सीनै पर्वत से प्राप्त हुई, पत्थर की निर्जीव पट्टियों पर उकेरा गया और स्वर्गदूतों की मध्यस्थता से मूसा को दी गई। अनुग्रह और सच्चाई जीवित, जीवन्त मानव शरीर में लिपटा हुआ और यीशु (मनुष्य) ख्रीस्त (मसीह) द्वारा इस संसार में लाया गया था। "वह भलाई करता रहा" यह पतरस का सारांश—हमारे प्रभु के अनुग्रह पर जोर देने के लिये किसी तरह का अनोखा कथन था। एक बार उसे पकड़ने के लिये भेजे गए लोगों ने कहा, "कोई भी मनुष्य इस मनुष्य के समान बातें नहीं करता"—हमारे प्रभु के अनुग्रह पर जोर देने के लिये किसी तरह का अनोखा कथन था। सच्चाई की कीमत पर अनुग्रह नहीं, अनुग्रह की कीमत पर सच्चाई नहीं, बल्कि अनुग्रह और सच्चाई सही अनुपात में—पृथ्वी पर रहनेवाले सबसे सन्तुलित व्यक्ति के चरित्र, आचरण और बातचीत में प्रदर्शित होता है। सैकड़ों सम्भावित चित्रणों में यूहन्ना कुछ का चयन करता है और उनके चारों ओर सुसमाचार का अपना विवरण तैयार करता है: उदाहरण के लिये, नीकुदेमुस का रात में भेंट करना; कुएँ पर स्त्री से बातचीत; व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री और उस पर आरोप लगानेवालों के साथ उसकी बातचीत। इस प्रकार, मूसा की व्यवस्था में—तीक्ष्ण, माँग करने वाली, प्रभावकारी सच्चाई शामिल थी —जो दस आज्ञा में सन्निहित था, व्यवस्था की लगभग 613 शिलालेखों में विस्तारित हुआ। मूसा की व्यवस्था अनुग्रह का प्रतीक थी। नैतिक व्यवस्था को बनाए रखने में मानवीय विफलता के कारण औपचारिक व्यवस्था देना जरूरी हो गया ताकि अपराध को तब तक छुपाया जा सके जब तक कि

कलवारी में इसे मिटाया न जाए। परन्तु यीशु के आने तक ऐसा नहीं था कि व्यवस्था में निहित सच्चाई और अनुग्रह को एक अद्वितीय मानव जीवन में पूरी तरह से लागू किया जा सके और इस तरह एक ऐसी भाषा में अनुवाद किया जा सके जिसे सब समझ सकें।

E. प्रकाशन (1:18)

पुराने नियम के समय में परमेश्वर लोगों को दर्शन में बातें करता, दिखाई देता, और स्वर्गदूतों को उनसे भेंट करने को भेजा करता था। परन्तु सब परमेश्वर को परमेश्वर के रूप में प्रत्यक्ष रूप से देखने में विफल रहे। अब्राहम और याकूब, मूसा और मानोह, दाऊद और दानिय्येल, यशायाह और यहेजकेल जैसे मनुष्यों ने परमेश्वर से दर्शन में बातें कीं। "प्रभु की महिमा," "प्रभु का दूत," "प्रभु का वचन" पुराने समय के कुलपतियों और भविष्यद्वक्ता के पास आया, परन्तु उनमें से किसी ने भी परमेश्वर को परमेश्वर के रूप में नहीं देखा।

यूहन्ना बार-बार मसीह के ईश्वरत्व के तथ्य पर जोर देता है, इस तथ्य पर कि यीशु परमेश्वर है। और यहाँ भी वह उतना ही जोर देते हुए कहता है कि "परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा।" हम ईश्वरत्व में पिता के साथ यीशु की निर्विवाद समानता में विश्वास करते हैं। हम विश्वास करते हैं कि यीशु परमेश्वर है। फिर यूहन्ना यहाँ कैसे कह सकता है कि "परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा" (या, अधिक शाब्दिक रूप से, "किसी ने अब तक परमेश्वर को नहीं देखा")? तथ्य यह है कि यूहन्ना ने माना कि यद्यपि यीशु परमेश्वर है, जब वह पृथ्वी पर आया, तो उसने जानबूझकर अपने ईश्वरत्व को नहीं, बल्कि ईश्वरत्व के उन गुणों को अलग रखा जो सच में मनुष्य रूप के साथ मेल नहीं खाते थे। उदाहरण के लिये, परमेश्वर अगम्य ज्योति में रहता है (1 तीमुथियुस 6:16)। यदि यीशु न केवल परमेश्वर होने के लिये बल्कि परमेश्वर के रूप में व्यवहार करने के लिये भी संसार में आया होता, तो कोई भी उसके पास नहीं आता। तथ्य यह है कि यद्यपि वह अभी भी परमेश्वर ही था, परन्तु वह इस धरती पर ऐसे चला जैसे कि वह मनुष्य से अधिक कुछ नहीं था, एक तथ्य जो प्रभु यीशु मसीह के विषय में यूहन्ना के बाद के कई कथनों की व्याख्या करता है। परमेश्वर होते हुए भी उसे मनुष्य के रूप में देखा जाता था।

कुछ वर्ष पहले मूडी बाइबल इंस्टीट्यूट केसविक कॉन्फरेन्स में दिए गए एक सन्देश में, मेजर इयान थोमस ने इसे इस तरह कहा था: "वह जो था वैसा होने के लिये उसे वैसे ही आना था जैसे वह आया; उसने जो किया उसे करने के लिये उसे वही बनना था जो वह था।" उसे वह करना था जो उसने किया ताकि हमारे पास वह हो जो उसके पास है; वह जैसा था वैसा होने के लिये हमें वह पाना होगा जो उसके पास है।" मेजर इयान थोमस इस चतुराई की परिभाषा में बहुत अच्छे हैं। इसका उसने विस्तृत रूप दिया है। "वह जो था (परमेश्वर होते हुए भी एक पूर्ण मनुष्य) वैसा होने के लिये उसे वैसे ही आना (कुँआरी से उत्पन्न होकर) था। उसने जो किया (हमें छुड़ाने के लिये मरना) उसे करने के लिये उसे वही बनना था जो वह था। उसे वह करना था जो उसने किया ताकि हमें वह मिल सके जो उसके पास है (उसका जीवन, वह सब कुछ जो हमने आदम में खोया था)। वह जो था वैसा बनने के लिये हमें वह सब पाना होगा जो उसके पास है (पूर्ण: मनुष्य जिसमें परमेश्वर विद्यमान है)। यूहन्ना रचित सुसमाचार इसी के बारे में है।

इसलिये प्रभु यीशु को परमेश्वर होते हुए भी एक मनुष्य के रूप में देखा गया। हालाँकि, "एकलौता पुत्र, जो पिता की गोद में है, उसी ने उसे प्रकट किया।" यह अक्सर कहा जाता है कि शब्द प्रकट किया (एक्सेगिओमाई) वह है जिससे हमें अपना अंग्रेजी शब्द एक्सेजीजिस मिलता है। इसका अर्थ है "व्याख्या करते हुए ज्ञात कराना।" जो व्यक्ति वचनों की व्याख्या या वर्णन करता है, वह उन बातों को सामने लाता है जिन्हें लोग हर समय देख रहे होते

थे, परन्तु वे बातें जिन्हें तब तक अनदेखा किया जाता है जब तक कि उन्हें इस प्रकार सामने नहीं लाया जाता। यीशु परमेश्वर के देहधारण की व्याख्या है। उसने परमेश्वर को सामने लाया, उसे हमारे सामने पूरी तरह से, सही रूप में प्रकट किया। वह जो है, जो उसने कहा है, जो उसने किया है, उसमें उसने उसकी आधिकारिक रूप से "व्याख्या" की है। यद्यपि यीशु मनुष्य था, तो शब्द के हर अर्थ में वह परमेश्वर के सभी आयामों में परमेश्वर भी था।

यूहन्ना कहता है, जो इस प्रकार परमेश्वर की व्याख्या करता है, वह वही है, जो "पिता की गोद में है।" यह वाक्यांश बताता है कि जो "उसमें है।" यह समय से परे अवस्था, एक अनन्त स्थिति का वर्णन करता है। यह पूर्ण घनिष्ठ सम्बन्ध, असीम प्रेम, अथाह स्नेह की स्थिति को संदर्भित करता है। यह अनन्त ईश्वरत्व में पिता और पुत्र के पारस्परिक प्रेम का वर्णन करता है, और यह पुष्टि करता है कि यह रिश्ता देहधारण द्वारा अटूट बना रहा। यह हमें बताता है कि यीशु जिस परमेश्वर के प्रकाशन को प्रकट करने आया था वह परमेश्वर के हृदय का प्रकाशन था।

यही यूहन्ना का परिचयात्मक कथन है। यदि उसने और कुछ नहीं लिखा, तो उसने वह सब कुछ कह दिया जिसे हमें जानने की आवश्यकता है। इस प्रकार उसकी प्रस्तावना उन सभी दार्शनिक अटकलों और झूठी शिक्षाओं पर विराम लगाती है, जो उसके और हमारे समय में, यीशु मसीह के व्यक्तित्व पर उसके परमेश्वर या मनुष्य होने के संदर्भ में विरोध करने में अभिव्यक्ति पाते हैं।

भाग 2. परमेश्वर के पुत्र के चिह्न

यूहन्ना 1:19-10:42

जंगल से आत्मिक बातों से भरपूर एक मनुष्य कदम बढ़ाते हुए आया। उसके वस्त्र, भोजन, स्वभाव और उसकी अपेक्षाओं से उसके सुननेवाले सोचने लगे कि वह एलिय्याह है। वह लोगों को तब तक पुकारता रहता जब तक हर किसी की आत्मा में अन्तरमन की आवाज़ सुनाई नहीं देती। उसकी आँखें बिजली की तरह चमक उठतीं, मानो सबके मन की बात पढ़ रही हों। बहुत से लोगों ने इस नये भविष्यद्वक्ता के बारे में सुना और उसे सुनने के लिये उमड़ पड़े। धार्मिक अगुवों ने उसकी जाँच की, उसे नापसंद किया, उसे डराया, उसका इनकार किया और उसकी निन्दा की। हेरोदेस अपने सिंहासन पर बैठा हुआ उससे डरता था। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला उसका नाम था—एक याजक का बेटा, जिसका विवाह एक याजक की बेटी से हुआ था। उसके जन्म की भविष्यद्वाणी की गई थी। याजक होने की दृष्टि से उसका पालन-पोषण सख़्ती से किया गया था। भविष्यद्वक्ता होने की दृष्टि से उसका पालन-पोषण एक नाज़ीर के रूप में भी किया गया था। हारून के क्रम के बाद पर्याप्त और अतिरिक्त याजक पहले से ही मौजूद थे। एलिय्याह के क्रम के बाद बहुत कम और दूर-दूर के भविष्यद्वक्ता हुए। इस्राएल को किसी अन्य याजक की आवश्यकता नहीं थी। इस्राएल को एक भविष्यद्वक्ता की आवश्यकता थी। यूहन्ना को जन्म, प्रशिक्षण, स्वभाव, दृढ़ विश्वास और चुनाव के आधार पर परमेश्वर ने एक लम्बे, प्रतिष्ठित वंश के अन्तिम भविष्यद्वक्ता के रूप में खड़ा किया था।

खंड 1. उसका ईश्वरत्व प्रकट हुआ (1:19-4:54)

उसके सन्देश : “मसीह आनेवाला है! पश्चाताप करो! स्वर्ग का राज्य निकट है!” ने राष्ट्र को प्रेरित किया, हजारों लोग उसे सुनने आए, और अपने पश्चाताप के प्रतीक के रूप में उससे बपतिस्मा लिया।

प्रेरित यूहन्ना हमें इन सबके बारे में बहुत कम बताता है। वह यह मान लेता है कि अन्य सुसमाचार के विवरणों के ये तथ्य सामान्य ज्ञान हैं।

प्रेरित यूहन्ना ने सुसमाचार के अपने विवरण का पहला प्रमुख खण्ड की शुरुआत यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की गवाही और उस गवाही की विश्वसनीयता के संदर्भ के साथ किया।

I. यूहन्ना की गवाही (1:19-51)

A. उसकी गवाही की विश्वासयोग्यता (1:19-34)

ऐसा प्रतीत होता है कि पद 19 यीशु के बपतिस्मा और उसके बाद की परीक्षा के बाद शुरू होता है। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की गवाही प्रेरित यूहन्ना के लिये सुसमाचार के अपने विवरण शुरू करने के लिये एक तार्किक स्थान थी, क्योंकि उसके समग्र उद्देश्यों में से एक यीशु मसीह के समय पलिश्तीन में रहने वाले यहूदी लोगों के बीच विश्वास और अविश्वास के समानान्तर उत्पन्न होने का पता लगाना था।

1. प्रश्न पूछे गए (1:19-28)

यूहन्ना की शुरुआत यहूदियों द्वारा यूहन्ना से पूछे गए प्रश्नों से होती है। दो मुख्य प्रश्न थे। पहला प्रश्न यूहन्ना की पहचान के बारे में पूछा गया है (1:19-23)।

हम धर्म के अगुवों से शुरू करते हैं (1:19)। हम पढ़ते हैं, “यहूदियों ने” यरूशलेम से याजकों और लेवियों को उससे यह पूछने के लिये भेजा, “तू कौन है?” यूहन्ना पहली शताब्दी के अन्त के दृष्टिकोण से लिख रहा था। यीशु मसीह को यहूदियों का ग्रहण न किया जाना एक स्थिर रवैये में बदल गई थी। यरूशलेम के पतन से ठीक पहले रब्बी ज़क्कई ने पलिश्तीन में यहूदी अध्ययन के लिये एक विशेष अकादमी स्थापित करने के लिये वेस्पासियन से अनुमति प्राप्त की थी। चालाक रब्बी दीवार पर यरूशलेम, मन्दिर और मातृभूमि के लिये लिखा देख सकता था। उसे चिन्ता थी कि यहूदी धर्म और यहूदी लोग यहूदियों के सम्पूर्ण विनाश और फैलाव से बच सकते हैं। जब यरूशलेम का पतन हुआ, तो वेस्पासियन की गिरफ़्तारी के साथ उसने सफलतापूर्वक अपने केन्द्र की स्थापना यरूशलेम के ठीक उत्तर में, यबनेन में की। उसने यहूदी दुविधा के उत्तर के रूप में यीशु को ग्रहण नहीं किया। उसने आने वाली शताब्दियों में यहूदी अस्तित्व के लिये मौखिक परम्पराओं और टीकाओं (जो बाद में ताल्मुद बना) को पद्धति बनाना शुरू किया। वहाँ यहूदियों की न कोई निज भूमि होगी, न कोई राजधानी, न मन्दिर, न वेदी, न बलिदान या याजक होगा। जिससे कि यहूदी उनके रब्बियों के संचित ज्ञान में, शत्रुतापूर्ण अन्यजातियों की भूमि में अपना घर, अपनी पूर्ति, अपने राष्ट्रीय अस्तित्व के साधन ढूँढ़ पाएँ। इस कारण वे व्यवस्था और परम्पराएँ, ज्ञान और मूर्खता का एक विचित्र मिश्रण, यहूदी जीवन का केन्द्र बन गया। (देखें जॉन फिलिप्स, एक्सप्लोरिंग द वर्ल्ड ऑफ द ज्यू, शिकागो: मूडी प्रेस, 1981, पृ. 65-66.) रब्बी ज़क्कई ने भटकते इब्रानी लोगों पर यहूदी परम्परावाद और विशिष्टतावाद का सीमेंट डाला, और यह यीशु को इस्राएल का मसीह और उद्धारकर्ता के रूप में सदियों की अस्वीकृति में कठोर हो गया।

यूहन्ना के लिखे जाने तक यह सब पहले से ही प्रक्रिया में था। इसलिये वह परमेश्वर के प्राचीन लोगों को "यहूदी" कहता है। इस सुसमाचार के विवरण में उनके लिये यह उसका विशिष्ट शब्द है। वह इस अभिव्यक्ति का प्रयोग सत्तर बार करता है। यह शब्द इब्रानी लोगों की लो-अम्मी स्थिति पर जोर देता है, जिसके परिणामस्वरूप सुसमाचार के विवरणों और प्रेरितों की पुस्तक में शामिल अवधि दोनों में यीशु मसीह का इनकार किया गया है (होशे 1:9; लो-अम्मी नाम का अर्थ है "मेरी प्रजा नहीं हो")। अनुग्रह के इस युग में इब्रानी लोगों को बाइबल के दृष्टिकोण से "इस्राएल" के रूप में नहीं बल्कि "यहूदी" के रूप में माना जाता है। यूहन्ना ने अन्यजातियों द्वारा उन्हें दिया गया नाम अपनाया।

यूहन्ना कहता है, यहूदियों ने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के पास अपने लोगों को भेजा। बाद में उसने यहूदी शब्द को विशेष रूप से फरीसियों (1:24) के संदर्भ में परिभाषित किया, जो यीशु मसीह के शत्रु के रूप में सुसमाचार के विरोध में बाते करने लगे। भेजे गए लोग सम्भवतः महासभा द्वारा भेजे गए थे। "याजकों" और "लेवियों" ने विशेष रूप से, राष्ट्र में कलीसिया सम्बन्धी बातों का प्रतिनिधित्व किया। इन प्रतिनिधि करनेवालों को भेजते समय उन्होंने यूहन्ना को एक याजक और लेवी के साथ-साथ एक यहूदी के रूप में पहचाना। बाद में, उन्होंने यीशु को एक गलीली और बढ़ई के रूप में देखा।

"तू कौन है?" यह ज्वलंत प्रश्न था। यूहन्ना के उपदेश ने मन को छू लिया था। यूहन्ना की गवाही के परिणामस्वरूप राष्ट्र को उत्साहित करने वाली नवीकृत मसीह के आने की आशा के कम्पन तारों को महासभा भी अनदेखा नहीं कर सकी। "तू कौन है?" वे यही जानना चाहते थे।

यूहन्ना एक लम्बे समय से सेवकाई कर रहा था। यहाँ तक कि हेरोदेस ने भी इस गतिशील उपदेशक के साथ बातचीत करना अपना विचार बना लिया था। ऐसा प्रतीत होता है कि महासभा में कुछ लोग इस बारे में अटकलें लगा रहे थे कि यूहन्ना स्वयं मसीह था या नहीं। (स्मरण रहे, इस समय प्रेरित यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले यूहन्ना का चेला था।)

इसके बाद, हम इनकार को देखते हैं (1:20-21)। "उसने यह मान लिया और इनकार नहीं किया, परन्तु मान लिया।" बातों को दोहराना यूहन्ना के उस सम्मान को स्वीकार न करने के संकल्प को दर्शाता है जो उसका था ही नहीं। प्रश्न उन लोगों द्वारा पूछे गए थे जो शास्त्र को जानते थे। उनका उत्तर स्पष्ट था: "मैं मसीह नहीं हूँ।" "क्या तू एलिय्याह है?" वे मलाकी से वचन कहने लगे। पुराने नियम के अन्तिम लेखन भविष्यद्वक्ताओं ने भविष्यद्वाणी की थी कि, यीशु मसीह के आने से पहले, एलिय्याह आएगा। "क्या तू एलिय्याह है?" यूहन्ना का उत्तर स्पष्ट था। "मैं नहीं हूँ।" यहूदियों का यीशु का इनकार करने का कारण यीशु के दूसरे आगमन की आवश्यकता होगी। उसके आने से पहले, एलिय्याह आएगा (देखें प्रकाशितवाक्य 11)। प्रश्न करनेवाले और भी पीछे, अब वापस मूसा के पास (व्यवस्थाविवरण 18:15) चले गए। उन्हें स्मरण आया कि मूसा ने भविष्यद्वाणी की थी कि एक दिन परमेश्वर उसके समान एक नबी को उत्पन्न करेगा। "क्या तू वह भविष्यद्वक्ता हैं?" यूहन्ना का उत्तर फिर वही था "नहीं।" हर लगाए गए अनुमान के साथ उसका उत्तर छोटा होता गया: "मैं (मैं प्रभाव डालता है) मसीह नहीं हूँ। मैं नहीं हूँ। नहीं।"

फिर उत्तर की माँग की गई (1:22-23)। उनका विशेष प्रश्न—अच्छा तो, फिर तू कौन है? हमें उन लोगों को उत्तर देने की आवश्यकता है जिन्होंने हमें भेजा है—इसके बाद एक वचन का उद्धरण दिया गया। यूहन्ना उन्हें यशायाह 40:3 पर वापस ले गया। उसने कहा, "मैं केवल एक आवाज़ हूँ." "मैं जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द हूँ कि

तुम प्रभु का मार्ग सीधा करो।" वह प्रभु का दूत था। यह सम्भव है (1:26 से) कि यूहन्ना जानता था कि यीशु इस बातचीत की पृष्ठभूमि में खड़ा था—खड़ा होकर अपने विश्वासयोग्य राजदूत को देखकर मुस्कुरा रहा था, उसके शब्दों की स्वीकृति में अपना सिर हिला रहा था। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि इन प्रश्न पूछनेवालों को यूहन्ना द्वारा दिए गए उत्तर संक्षिप्त और स्पष्ट होते गए।

यूहन्ना ने यूहन्ना की विचारधारा के बारे में प्रश्न जारी रखा (1:24-28)। इसके बाद कुछ देर तक तर्क वितर्क चलता रहा। हम उसके बपतिस्मा पर फरीसियों के हमले पर ध्यान देते हैं (1:24-25)। यूहन्ना की विचारधारा के बारे में प्रश्न उनके प्रश्न करनेवालों ने किया था जिनकी पहचान अब हो चुकी है। वे यहूदियों के बीच धार्मिक दल थे जो विशेष रूप से धार्मिक संस्कारों और समारोहों से जुड़े हुए थे। उन्होंने कहा, "ठीक है," "तू मसीह नहीं हैं," तेरे पास मलाकी या मूसा की ओर से कोई आज्ञा नहीं है। तू किस आधार पर एक नए धार्मिक संस्कार, बपतिस्मा को शुरू करने की जिम्मेदारी लेता है जिसकी आज्ञा व्यवस्था द्वारा नहीं दी गई है? (दूसरों के मन परिवर्तन के लिये बपतिस्मा का अभ्यास यहूदियों द्वारा किया जाता था, हालाँकि यह निश्चित नहीं है। परन्तु मन परिवर्तन करनेवालों ने स्वयं बपतिस्मा लिया और ये वे अन्यजाति लोग थे जो इस्राएल में प्रवेश करना चाहते थे। यूहन्ना का यहूदियों को बपतिस्मा देना उसके स्वयं के द्वारा शुरू किया गया था।) फरीसियों ने यूहन्ना के बपतिस्मा पर कड़ी आपत्ति जताई। यदि मन परिवर्तन करनेवालों को इस समय बपतिस्मा दिया जाता है तो निश्चित रूप से वे एक ऐसे रीति से नाराज होंगे जो यहूदियों के साथ ऐसा व्यवहार करता है जैसे कि वे परदेशी थे। इसके अलावा, यूहन्ना का बपतिस्मा पश्चाताप का बपतिस्मा था। फरीसी किसी भी सुझाव पर क्रोधित थे कि उन्हें यरदन में पश्चाताप और धार्मिक शुद्धिकरण की आवश्यकता थी।

यूहन्ना ने उनके प्रश्नों का उत्तर देने में अधिक समय बर्बाद नहीं किया। वह फरीसियों या महासभा के प्रति जवाबदेह नहीं था। उसने अपना अधिकार एक उच्च स्रोत से प्राप्त किया था। इसलिये उसने उनके क्षेत्र में कार्य किया। हम उनके अंधेपन पर यूहन्ना के हमले पर ध्यान देते हैं (1:26-28)। उसे बपतिस्मा देने का अधिकार किसने दिया? हम उत्तर जानते हैं। उसका अधिकार उनके बीच में खड़े एक व्यक्ति से आया, जिसे वे अपने अंधेपन के कारण नहीं देख सकते थे। इस्राएल का मसीह, परमेश्वर का मसीह, हर विश्वासयोग्य इब्रानी के हृदय की आशा, वहीं था, और वे इसे नहीं जानते थे।

यूहन्ना ने कहा, "जिसकी जूती का बन्ध मैं खोलने के योग्य नहीं।" इस निम्न कार्य को धार्मिक यहूदी अधिकारियों द्वारा एक दास द्वारा किया जानेवाला काम माना जाता था, जो केवल एक दास के लिये ही उपयुक्त होता था। इस प्रकार यूहन्ना, सारे भविष्यद्वक्ताओं में सबसे महान, ने स्वयं को अपने प्रभु की उपस्थिति में रखा।

इस बिन्दु पर प्रेरित यूहन्ना ने घटना के बारे में अपने व्यक्तिगत ज्ञान से एक फ़ुटनोट जोड़ा है। वह कहता है कि ये बातें "यरदन के पार बैतनिय्याह में हुईं, जहाँ यूहन्ना बपतिस्मा देता था।" नाम का अर्थ है "नौका का घर।" पारम्परिक स्थल मृतसागर से कुछ मील उत्तर में यरीहो का किला है। एक अन्य दृष्टिकोण यह है कि जिस स्थान का उल्लेख किया गया है वह यरीहो के किले से पचास मील उत्तर में है, जो बाशान की भूमि में एक स्थान है, जो गलील झील से दस मील दक्षिण में और काना से लगभग बाईस मील दूर है।

2. प्रश्नों के उत्तर दिए गए (1:29-34)

लगभग छः सप्ताह पहले, यीशु को यरदन में यूहन्ना द्वारा बपतिस्मा दिया गया था। ठीक इसके बाद, वह जंगल में चला गया जहाँ उसकी परीक्षा हुई। यूहन्ना इसका कोई उल्लेख नहीं करता। परीक्षा की अवधि चालीस दिन, छः

सप्ताह से कुछ कम थी। शैतान को हराने और अपनी लंबे उपवास को खत्म करने के बाद, यीशु अब यरदन में लौट आया। जिस दिन प्रतिनिधि करनेवाले आए, यूहन्ना ने भीड़ में उसे देखकर पहचान लिया। उसके दूसरे दिन यीशु वहाँ आया (1:29क)।

यूहन्ना ने यीशु को अपनी ओर आते देखा। इस सुसमाचार के विवरण में यह प्रभु की पहली उपस्थिति है। वह राष्ट्र के लिये अपने दूत द्वारा सार्वजनिक रूप से प्रकट किए जाने के लिये आया था। एक दिन पहले, महासभा द्वारा भेजे गए लोगों ने यूहन्ना से प्रश्न किया था कि क्या वह स्वयं मसीह है या नहीं। सारे सन्देह को दूर करने का समय आ गया था। यूहन्ना के बार-बार इनकार करने और अपने आप को एक "पुकारनेवाले का शब्द" से अधिक पहचानने से इनकार करने से अधिकारियों और साधारण लोगों दोनों के बीच गरमागरम चर्चा हुई होगी। प्रेरित यूहन्ना, जो इन बातों का आँखों देखा गवाह था, निस्संदेह यह सब कुछ ऐसे स्मरण कर सकता था जैसे कि यह कल की बात हो।

यीशु का आगमन सम्भावनाओं से भरा एक क्षण था। फसह का पर्व निकट आ रहा था, एक पर्व जो मिस्र से इस्राएल के निकल आने, इब्रानी राष्ट्र के जन्म और मेम्ने के लहू से उद्धार के प्रदर्शन का स्मरण कराता था। हम निश्चिंत हो सकते हैं कि यीशु ने अपने अब तक प्रसिद्ध दूत द्वारा राष्ट्र के सामने अपनी औपचारिक प्रस्तुति के लिये इस क्षण को बिना किसी त्रुटि के चुना। यूहन्ना के पहले शब्दों से हम देख सकते हैं कि उसके मन में निकट आने वाला फसह था। हमने यीशु के आगमन को देखा है और अब हम यूहन्ना की घोषणा सुनते हैं (1:29ब-34)।

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की घोषणा प्रचार और समस्या के आस-पास दिखाई देती थी। पहला, हमारे पास एक प्रचार है (1:29ब-30)। "देखो," यह परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत का पाप उठा ले जाता है। यह वही है जिसके विषय में मैं ने कहा था, 'एक पुरुष मेरे पीछे आता है जो मुझ से श्रेष्ठ है, क्योंकि वह मुझ से पहले था।"

यूहन्ना ने राष्ट्र को यीशु का परिचय न तो परमेश्वर के पुत्र के रूप में दिया, न ही परमेश्वर के पवित्र जन, न ही परमेश्वर के मसीह और न ही परमेश्वर के वचन के रूप में दिया। उसने सीधा इस्राएल के हृदय की आवश्यकता, सारे जगत की आवश्यकता पर ध्यान केन्द्रित किया। उसने उसे परमेश्वर का मेम्ना कहा है। हालाँकि यूहन्ना के बपतिस्मा ने लोगों को पश्चाताप की आवश्यकता से अवगत कराया था, परन्तु उन्हें पश्चाताप से कहीं अधिक की आवश्यकता थी। उन्हें उद्धार की आवश्यकता थी। पानी की कोई भी मात्रा पाप के दाग को नहीं मिटा सकती; उसके लिये लहू की आवश्यकता थी। और वह न बैल और बकरे का लहू, (इब्रानियों 10:1-4), और न साधारण मेम्ने का लहू था जो किसी के पाप मिटा सकता था। परमेश्वर के मेम्ने के "बहुमूल्य लहू" बहाए जाने के द्वारा उद्धार के सम्भव होने का आह्वान किया गया।

प्रभु के लिये यह एक विशेष शीर्षक है। उसे स्पष्ट रूप से पुराने नियम में केवल दो बार, सुसमाचार के विवरणों में केवल दो बार, प्रेरितों के काम में केवल एक बार, और पत्रियों में केवल एक बार मेम्ना कहा गया है। जबकि, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में उसे अट्ठाईस बार मेम्ना कहा गया है; यह विशेष रूप से उसके भविष्य की घटनाओं का शीर्षक है।

पुराने नियम में इसहाक ने मोरिय्याह पहाड़ की ओर जाते समय एक बड़ा प्रश्न उठाया था: "मेम्ना कहाँ है?" (उत्पत्ति 22:7)। अब्राहम का उत्तर भी उतना ही अनोखा था: "परमेश्वर होमबलि की भेड़ का उपाय आप ही करेगा।" अब वह पुराने नियम का महान प्रश्न नए नियम के और भी महान उत्तर से मेल खाता है: "देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत का पाप उठा ले जाता है।" जैसा कि यूहन्ना ने कहा था, यह सम्भव है कि भेड़–

बकरियों का मिमियाना सुन सकते और लोग फसह के पर्व की तैयारी के लिये झुण्डों को यरूशलेम की ओर ले जाते हुए देख सकते थे। यूहन्ना ने उनका ध्यान यीशु की ओर आकर्षित किया, जो सच्चा फसह का मेम्ना था, जिसका बलिदान सारे मानव जाति के लिये अनन्त उद्धार को लाएगा और यहूदियों के वार्षिक फसह का मनाना जाता रहेगा।

पहचान पूरी करने के लिये, यूहन्ना ने ये शब्द जोड़े: "यह वही है जिसके विषय में मैं ने कहा था, 'एक पुरुष मेरे पीछे आता है जो मुझ से श्रेष्ठ है।" यूहन्ना यीशु से छः महीने बड़ा था। गर्भ में रहते हुए, यूहन्ना ने आने वाले मसीह की श्रेष्ठता को स्वीकार कर लिया था (लूका 1:41)। अब उसने उसके अनादि काल से होने को स्वीकार किया।

परन्तु यूहन्ना को एक समस्या थी (1:31-34)। हालाँकि उसे इस्राएल में आने वाले मसीह की घोषणा करने के लिये बुलाया गया था, परन्तु वह नहीं जानता था कि वह कौन था। पहले हम बताई गई समस्या को देखते हैं (1:31) : वह कहता है, "मैं तो उसे पहिचानता न था।" एक दिन पहले, उसने महासभा द्वारा भेजे गए लोगों और आसपास खड़े लोगों से कहा था कि मसीह वहीं, उनके बीच में खड़ा था, "जिसे तुम नहीं जानते" (1:26)। दोनों ही मामलों में उसने उनकी और अपनी अज्ञानता का वर्णन करने के लिये एक ही मूल शब्द का उपयोग किया। यह शब्द ओइदा है, जिसका अर्थ है "बिना प्रयास के सहजता से जानना।" ज्ञान प्राप्त करने से पहले वह मसीह के ज्ञान से उतना ही वंचित था जितना कि वे थे। वह अवश्य जानता होगा कि यीशु कौन था, क्योंकि यीशु उसका मौसेरा भाई (लूका 1:36), या कम से कम एक रिश्तेदार था। अपने और यीशु के जन्म के आसपास की परिस्थितियाँ निश्चित रूप से यूहन्ना को ज्ञात रही होंगी। हालाँकि, सम्भावना यह है कि वे कभी मिले नहीं थे या वे कई वर्षों से नहीं मिले थे। अपनी सेवकाई के लिये अपने आप को तैयार करने के लिये यूहन्ना का जंगल में जीवन बिताना इसका कारण हो सकता है। किसी भी मामले में, उसके शब्द हमें बताते हैं कि उसे कोई समस्या थी। जब उसने मसीह को देखा तो वह उसे पहचान नहीं सका। उसे यह दिखाने के लिये परमेश्वर से विशेष प्रकाशन की आवश्यकता थी कि वह कौन था, सच्चा मसीह कौन था। हालाँकि, उसे यह आश्वासन मिला था कि "वह इस्राएल पर प्रकट हो जाए" (1:31)। इस आश्वासन के बल पर वह अपने मिशन: राष्ट्र को पश्चाताप के लिये बुलाने और यरदन में अपने पापों से मन फिराए लोगों को बपतिस्मा देने के साथ आगे बढ़ा।

समय आने पर हम समस्या का समाधान (1:32-34) देखते हैं। जब यीशु लगभग छः सप्ताह पहले बपतिस्मा लेने आया, तो परमेश्वर ने यूहन्ना को लम्बे समय से प्रतीक्षा का चिह्न दिया था (1:32-33)। यूहन्ना को यह बताया गया था कि वह पवित्र आत्मा को उसके ऊपर उतरते और उस पर ठहरते देख मसीह को पहचान लेगा। पवित्र आत्मा किस रूप में आएगा यह देखना अभी बाकी था। परन्तु जैसे ही यीशु अपने बपतिस्मा के बाद पानी से ऊपर आया, यूहन्ना का सन्देह दूर हो गया: "मैं ने आत्मा को कबूतर के समान आकाश से उतरते देखा है, और वह उस पर ठहर गया" (1:32)।

हमारे विचार नूह और जल-प्रलय की कहानी पर वापस जाते हैं। आँधियाँ थम चुकी थीं, लहरें कम हो गई थीं और जहाज जल पर टिक गया था। नूह ने जहाज की खिड़की को खोलकर एक कबूतरी को बाहर उड़ा दिया। वह कबूतर, परमेश्वर के आत्मा की तरह, जिसने सृष्टि की सुबह गहरे सागर के ऊपर विचार किया था, उसे अपने पैर टेकने के लिये कोई आधार न मिला। अन्ततः वह जहाज में लौट आई।

आदम के पाप में गिरने के बाद से परमेश्वर का आत्मा, एक पतित जाति पर विचार करते हुए, एक ऐसे व्यक्ति की खोज में जिस पर वह ठहर सके, पानी के ऊपर चला गया। युग बीतते गए; राज्य बढ़े और घटे; पीढ़ी से पीढ़ी आती

और जाती रही, और आदम के घराने में से एक भी ऐसा सन्तान नहीं मिला जिस पर आत्मा ठहर सके। फिर यीशु आया। तीस वर्ष तक पवित्र आत्मा उसके साथ रहा। फिर, उसके बपतिस्मा पर, पिता का आशीष मिला: "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त बहुत प्रसन्न हूँ।" इसके साथ ही परमेश्वर का पवित्र कबूतर उतर आया और वह उस पर ठहर गया। अन्ततः उसे कोई मिल ही गया जिस पर वह ठहर सकता था।

शब्द ठहर गया अपने साथ "विश्राम पाने" का विचार रखता है। पवित्र आत्मा पुराने नियम के समय में व्यक्तियों को ज्ञानवान या बलवन्त बनाने के लिये आता था। वह आया और चला गया। उसका काम रुक-रुक कर होता था। वह प्रभु यीशु पर ठहर जाने के लिये आया था।

तुरन्त यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को बिना किसी सन्देह के पता चल गया कि यीशु नासरी ही वह व्यक्ति था जिसके आगमन की घोषणा करने के लिये उसे बुलाया गया था। "जिस ने मुझे जल से बपतिस्मा देने को भेजा, उसी ने मुझ से कहा, जिस पर तू आत्मा को उतरते और ठहरते देखे, वही पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देनेवाला है" (1:34)। यूहन्ना द्वारा पश्चाताप करनेवाले पापियों को दिए जानेवाले जल के बपतिस्मा को यीशु द्वारा पुनर्जीवित सन्तों को दिए गए आत्मा के बपतिस्मा से जोड़ने पर, नीकुदेमुस के साथ प्रभु की देर रात तक चलनेवाली बातचीत की तैयारी पर ध्यान दिया जाना चाहिए (1:35)।

आत्मा के बपतिस्मा का उल्लेख सभी सुसमाचार प्रचारकों द्वारा किया गया है। यह पिन्तेकुस्त के दिन घटित हुआ। यह पवित्र आत्मा का वह कार्य है जो मसीह पर विश्वास करनेवाले एक व्यक्ति को लेता है और उसे मसीह के रहस्यमय देह, कलीसिया का सदस्य बनाता है (1 कुरिन्थियों 12:13)। इसे किसी पौराणिक "अनुग्रह के दूसरे कार्य" या किसी परमानन्द अनुभव के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए जो लोगों को अन्य अन्य भाषाओं में बोलने में सक्षम बनाता है। जिन लोगों ने उन विचारों को अपनाया, वे पवित्रशास्त्र के पाठ के प्रति हिंसात्मक रवैया अपनाते हैं; वे बाइबल की शब्दावली के साथ छेड़छाड़ करते हैं और स्वयं पवित्र आत्मा द्वारा परिभाषित आत्मा के बपतिस्मा की गलत व्याख्या करते हैं। इस बपतिस्मा का एकमात्र प्रत्यक्ष शिक्षा का संदर्भ 1 कुरिन्थियों 12:13 में है, जहाँ इसकी सर्व-समावेशिता स्पष्ट रूप से सिखाई गई है और इसका एकमात्र उद्देश्य समझाया गया है। बपतिस्मा की इस पवित्र आत्मा-प्रेरित परिभाषा में किसी भी तरह से "अन्य भाषा" का कोई उल्लेख नहीं मिलता है। (इस विषय के आगे के अध्ययन और प्रेरितों के काम में पवित्र आत्मा और "अन्य भाषाओं" के सभी प्रासंगिक उल्लेखों के लिये, देखें John Phillips, *Exploring Acts,* Chicago: Moody Press, 1986.)

लोगों को चिह्न के बारे में बताने के बाद, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला साहसपूर्वक अपने सुननेवालों को पुत्र से परिचित कराता है (1:34)। "और मैं ने देखा, और गवाही दी है कि यही परमेश्वर का पुत्र है।"

यहूदी मसीह की खोज में थे, परन्तु उन्हें लगा कि कोई मनुष्य ही वह मसीह हो सकता है। वास्तव में, मसीह, "अभिषिक्त जन" था। पुराने नियम में भविष्यद्वक्ताओं, याजकों और राजाओं का तेल से अभिषेक किया जाता था। यीशु का पवित्र आत्मा से अभिषेक किया गया था।

यहूदी एक दूत, एक और मूसा या एलिय्याह की खोज में थे, जो दाऊद या दानिय्येल की परम्परा में आएगा, जो इन लोगों के बाद आएगा, सारे भविष्यद्वक्ताओं का अन्त करनेवाला भविष्यद्वक्ता। यीशु केवल वह व्यक्ति नहीं था जो इन लोगों के बाद आया था; वह उनसे पहले था।

यहूदी एक राजा की खोज में थे। वे एक सैन्य बलों वाला अगुवा चाहते थे, जो रोम की शक्ति को तोड़ दे और यरूशलेम से शासित साम्राज्य का निर्माण करे। यीशु सिर्फ एक शासक नहीं था; वह एक छुटकारा देनेवाला था। वह न केवल लोगों को दासत्व से बल्कि पाप से छुटकारा देने के लिये आया था।

यूहन्ना ने यीशु को परमेश्वर का मेम्ना और परमेश्वर का पुत्र कहा। उसने विचारशील लोगों के विचारों को उनकी कल्पना से कहीं अधिक ऊँचे स्तर पर पहुँचा दिया। यीशु पूर्ण अर्थों में परमेश्वर का पुत्र है जो किसी अन्य मनुष्य के लिये सच नहीं है। उसका पुत्र होना, जैसा कि विशेष रूप से इस सुसमाचार के विवरण में बताया गया है, उसके अनन्त पुत्रत्व में निहित है। दूसरे शब्दों में, जिसे यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने परमेश्वर का पुत्र कहा था, वही है जिसे हम परमेश्वर, पुत्र, परमेश्वरत्व का दूसरा व्यक्ति होने की घोषणा करते हैं।

B. उसकी गवाही की फलदायकता (1:35-51)

प्रेरित यूहन्ना अब बपतिस्मा देनेवाले यूहन्ना की गवाही की विश्वसनीयता से हटकर उस गवाही के प्रतिफल पर विचार करता है। प्रभु के कुछ प्रथम चेले पहले यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के चेले थे। प्रेरित यूहन्ना इनमें से एक था। यूहन्ना की फल लाने की महानता दो वाक्यांशों में देखी जाती है, “वे उसकी [यूहन्ना] सुनकर” “यीशु के पीछे हो लिए” (1:37)। यह प्रत्येक प्रचारक, आत्मा-जीतनेवाला, पासवान, सिखानेवाला, सहायक और प्राचीन का प्राथमिक उद्देश्य होना चाहिए। जब लोग हमारी बातें सुनते हैं, तो उन्हें यीशु के पीछे चलना चाहिए।

1. यूहन्ना के चेलों पर नजर (1:35-39)

हम पहले, यूहन्ना के इन चेलों पर और वे प्रभु से कैसे मिले पर विचार करते हैं (1:35-37)। प्रेरित यूहन्ना, जो अब अपनी जन्मभूमि से बहुत दूर रहता था, अपनी युवावस्था के उस यादगार समय के बारे में सोचता है।

वह “दूसरा दिन” था, फसह से कुछ समय पहले के दिनों के क्रम में तीसरा दिन। इस क्रम के पहले दिन हमारे पास कुछ भेजे गए लोग हैं, महासभा के प्रतिनिधि, जो यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से पूछताछ करते हैं और उसे चुनौती देते हैं। दूसरे दिन हमारे पास एक घोषणा है, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने औपचारिक रूप से यीशु को परमेश्वर के मेम्ने और परमेश्वर के पुत्र के रूप में प्रस्तुत किया। अब इस तीसरे दिन हमारे सामने एक निर्णय है। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के दो चेलों ने यीशु के चेले होने के लिये उसे छोड़ दिया। यह यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला था जिसने इस कदम को बढ़ावा दिया। उसने यीशु को पास ही चलते हुए देखा। यीशु पर “दृष्टि करके” के लिये शब्द एमब्लेपो है, जिसका अर्थ है “किसी की ओर टकटकी लगाना” या “एक टक देखना।” सुसमाचार के विवरण में दूसरी बार यह शब्द पद 42 में आता है, जहाँ कहा जाता है कि प्रभु यीशु ने उसी प्रकार शमौन पर दृष्टि की। जहाँ तक हम जानते हैं, यह अन्तिम बार था जब यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने यीशु को देखा था। यूहन्ना की दृष्टि एक विस्मयादिबोधक भाव के साथ थी : “देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है!” यही बात थी। बीते दिन की सार्वजनिक घोषणा अब उसके चेलों के लिये एक व्यक्तिगत निर्देश बन चुकी थी। उनमें से दो ने तुरन्त अपनी निष्ठा यीशु के प्रति दिखाई (1:37), महत्वपूर्ण रूप से, उसके ईश्वरत्व की घोषणा से नहीं, बल्कि उसकी मृत्यु और प्रायश्चित बलिदान की घोषणा से उसके पीछे हो लिए।

आगे, हम ध्यान देते हैं कि वे किस प्रकार प्रभु के पीछे चलने लगे (1:38-39)। दोनों में से एक की पहचान अन्द्रियास के रूप में हुई। दूसरे का नाम अज्ञात है, हालाँकि इसमें थोड़ा सन्देह हो सकता है कि यह यूहन्ना ही था, जो इस सुसमाचार का लेखक है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अलावा वह कभी भी अपना नाम नहीं बताता। कथा में उस व्यक्ति की छाप है जो वहाँ था और जिसकी हर छोटी-छोटी बात अभी भी उसकी स्मृति में जीवित है।

इस समय से सुसमाचार के विवरण में, यूहन्ना एक प्रत्यक्षदर्शी के रूप में बोलता है, हालाँकि वह अपना नाम छुपाता है (1:40; 13:23, 25; 19:26, 35; 20:2, 4, 8; 21:7, 20, 24)।

उनको अपने पीछे आते हुए जानकर, प्रभु, पीछे मुड़े और उन दोनों से बातें की। उनसे कहा, "तुम किसकी खोज में हो?" इस सुसमाचार में ये उसके पहले शब्द हैं। सम्भवतः वे दोनों व्यक्ति यह सोच कर इतने चकित थे कि यह वास्तव में कौन है, कि वे उससे सीधे बात करने की हिम्मत नहीं कर पाए। यदि ऐसा था, तो उसने उनके लिये दरवाजा खोल दिया। निस्संदेह, यूहन्ना जानता था कि यीशु विशुद्ध मानवीय स्तर पर कौन था। परन्तु यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की बातों ने यीशु को उससे अलग कर दिया था। अन्द्रियास भी शायद उसे जानता था या कम से कम उसके बारे में जानता था। वह और उसका भाई शमौन यूहन्ना और उसके भाई याकूब के व्यापार में भागीदार थे। अब यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की बातों ने, यीशु को परमेश्वर के मेम्ने और परमेश्वर के पुत्र के रूप में पहचाना, जिससे इन दोनों के मन में भय उत्पन्न हो गया।

अन्द्रियास ने उन दोनों के लिये बात की; उसने यीशु को "हे रब्बी" (हे गुरु) कहकर सम्बोधित किया। "तू कहाँ रहता है?" स्पष्ट रूप से अन्द्रियास को लगा कि अब जिन मुद्दों का सामना किया जा रहा है, लोगों के बीच उनकी चर्चा करना बहुत महत्वपूर्ण है। वह अधिक से अधिक व्यक्तिगत और निजी परिवेश चाहता था। उसे यह अद्भुत मसीह फिर कहाँ मिल सकता था? उसके मन में पहले से ही कोई था जिसे वह यीशु के पास लाना चाहता था।

प्रभु ने निमन्त्रण के साथ उत्तर दिया: "चलो, तो देख लोगे" (1:39) या "चलकर तुम स्वयं देख लो।" दोनों ने एक साथ उत्तर दिया। यह यूहन्ना का आत्मिक जन्मदिन था और अपने दिनों के अन्त तक उसे सही समय, "दसवें घंटे" स्मरण था। हम निश्चित नहीं कह सकते कि यूहन्ना इब्रानी समय का उपयोग कर रहा था या रोमी समय का। यदि यह इब्रानी समय होता तो शाम के चार बज रहे होते; यदि रोमी समय होता तो सुबह के दस बजे होते, सम्भावना यह है कि यह रोमी समय था। किसी भी स्थिति में उन्होंने बाकी दिन यीशु के साथ बिताया और दूसरों को मसीह के पास लाने में कोई समय बर्बाद न करने का निश्चय किया।

2. यीशु के चेलों पर नजर (1:40-51)

हम पहले यह देखते हैं कि पतरस यीशु की ओर कैसे आकर्षित हुआ (1:40-42)। कोई अन्द्रियास और यूहन्ना को इस महत्वपूर्ण भेंट के बाद शीघ्रता से भागते हुए देख सकता है। अन्द्रियास कहता है, "मुझे शमौन को बताना होगा।" तो यूहन्ना कहता है, "मैं याकूब को लेने जा रहा हूँ।" यह अगली पद में निहित है: "उसने [अन्द्रियास] पहले अपने सगे भाई शमौन से मिलकर उस से कहा, "हम को ख्रिस्त, अर्थात् मसीह, मिल गया" (1:41)। अब वह वाक्यांश, "अन्द्रियास पहले अपने सगे भाई शमौन से मिला" को उचित रूप से दोबारा लिखा जा सकता है, "अन्द्रियास अपने सगे भाई शमौन से पहले मिला।" तात्पर्य यह नहीं है कि कुछ और करने से पहले उसे अपना भाई मिल गया या वह किसी और के पीछे चला गया। निहितार्थ यह है कि अन्द्रियास अपने भाई से पहले मिला, अर्थात् यूहन्ना को उसका भाई मिलने से पहले। यह पाठ के अर्थ के अनुरूप है कि अन्द्रियास और यूहन्ना दोनों अपने अपने भाई को यीशु के पास लाए, परन्तु अन्द्रियास ऐसा करने वाला पहला व्यक्ति था।

यूहन्ना कहता है, "और वह उसे यीशु के पास लाया," जो विशेष रूप से हमें उसके स्वयं के बजाय अन्द्रियास के मन परिवर्तन के विषय में बताता है। अन्द्रियास का मन परिवर्तन कलीसिया का पहला दूत बन गया; यूहन्ना का मन परिवर्तन प्रेरितों में पहला शहीद बन गया।

इसमें कोई सन्देह नहीं हो सकता कि पतरस के मन परिवर्तन का दिन स्वर्ग में एक उल्लेखनीय दिन—लगभग पौलुस के मन परिवर्तन के दिन के समान ही उल्लेखनीय था। शमौन के लिये पतरस ने उस प्रसिद्ध पिन्तेकुस्त धर्मोपदेश का प्रचार किया जिसने एक ही दिन में तीन हजार लोगों को मसीह की ओर आकर्षित किया और शिशु कलीसिया को सदस्यों की पहली बड़ी संख्या प्रदान की।

प्रभु ने अन्द्रियास के बड़े कठोर भाई की ओर खोजपूर्ण दृष्टि से देखा। उसने उसे तुरन्त पहचान लिया और फिर उसे एक नया नाम दिया जिसने पुराने नाम को पूरी तरह से खत्म कर दिया: "तू योना [यूहन्ना नाम का एक अरामी रूप]; का पुत्र शमौन है : तू कैफा [पतरस नाम का अरामी रूप] कहलाएगा।" "पतरस" शब्द पेतरोस से आया है जिसका अर्थ है एक चलायमान पत्थर, न कि चट्टान (पेतरा)। यह इस बात का संकेत था कि मसीह आवेगी, आसानी से प्रभावित होने वाले शमौन के लिये क्या करने का इरादा रखता था। वह उसे एक चट्टान के समान चरित्र देने जा रहा था।

इस महत्वपूर्ण दिन में तीन (या सम्भवतः चार) व्यक्ति यीशु से जुड़ चुके थे। उनमें से तीन (पतरस, याकूब और यूहन्ना) उसके सबसे करीबी चेले बन गए। यह प्रभु की सार्वजनिक सेवकाई का पहला दिन था। इस समय परमेश्वर ने इन लोगों के साथ एक व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित किया। बाद में, जैसा कि सुसमाचार के समान विवरण करनेवाले लेखक दर्ज करते हैं, उसने उन्हें पूर्णकालिक सेवा के लिये बुलाया (मत्ती 4:18-22; मरकुस 1:16-20; लूका 5:1-11)।

आगे हम देखते हैं कि फिलिप्पुस की खोज यीशु ने कैसे की (1:43-51)। हम फिलिप्पुस की बुलाहट देखते हैं (1:43-44)। अगले दिन (क्रम में चौथा दिन और प्रभु की सेवकाई का दूसरा दिन) प्रभु स्वयं आत्मा पर विजय प्राप्त करने के लिये निकले। प्रभु ने यहूदिया छोड़कर गलील जाने का मन बना लिया। इस निर्णय के साथ प्रभु का फिलिप्पुस के प्रति दृष्टिकोण जुड़ा था, हालाँकि हमें यह नहीं बताया गया है कि यह बैठक कहाँ हुई थी। हमें बस इतना बताया गया है: "दूसरे दिन यीशु ने गलील को जाना चाहा। वह फिलिप्पुस से मिला और कहा, "मेरे पीछे हो ले।" (1:43)। यूहन्ना यह जानकारी जोड़ता है कि फिलिप्पुस "अन्द्रियास और पतरस के नगर बैतसैदा का निवासी था" (1:44)। शायद उन्होंने पहले ही जगह को तैयार कर लिया था। बैतसैदा एक नगर था जो उस स्थान से अधिक दूर नहीं था जहाँ यरदन नदी झील में गिरती है। यह स्पष्ट रूप से एक दुष्ट स्थान था और यीशु द्वारा उसे और उसकी सड़कों पर किए गए "सामर्थ्य के कामों" को स्वीकार न करने के लिये उसकी निन्दा की गई थी। उसने कहा कि, ईश्वरीय भ्रमण के ऐसे प्रमाणों को देखते हुए, सूर और सैदा के दुष्ट सुरूफिनी नगर टाट ओढ़कर, और राख में बैठकर मन फिरा लेते (मत्ती 11:21)। बात यह है कि बैतसैदा कफरनहूम का मछली पकड़ने वाला उपनगर था। यहाँ बैतसैदा को "अन्द्रियास और पतरस का नगर" कहा जाता है। मरकुस 1:29 में यह निहित है कि जब तक प्रभु ने अपनी गलीली सेवकाई शुरू की, तब तक पतरस और अन्द्रियास अपने कफरनहूम के घर में ही रहा करते थे।

हम फिलिप्पुस की चिन्ता को देखते हैं (1:45-51)। फिलिप्पुस के लिये प्रभु के निमन्त्रण को सभी शब्दों से अलग कर दिया गया था: "मेरे पीछे हो ले" या "आओ, मेरे साथ चलो" जैसा कि कुछ लोगों ने इसे वाक्यांशबद्ध करने का सुझाव दिया है। हम प्रभु की आवाज़ के स्वर में गर्मजोशी, उसके साथ आने वाली मुस्कुराहट और शायद कंधे पर मित्रतापूर्ण हाथ की कल्पना कर सकते हैं। उस क्षण से फिलिप्पुस उसका जन था, और उसकी पहली चिन्ता उसके मित्र नतनएल के लिये थी।

नतनएल के मन परिवर्तन की कहानी तीन भागों में है। हम उस तरीके से शुरू करते हैं जिसमें नतनएल का परिचय यीशु से कराया गया (1:45-46)। “फिलिप्पुस नतनएल से मिला।” इस बात पर कुछ सन्देह है कि नतनएल कौन था क्योंकि किसी भी अन्य नए नियम के लेखक द्वारा उस नाम से उसका उल्लेख नहीं किया गया है। हालाँकि, सामान्य रूप से यह माना जाता है कि वह प्रभु का चेला है जिसे नए नियम में अन्य जगहों पर बरतुल्मै कहा जाता है।

“जिस का वर्णन मूसा ने व्यवस्था में और भविष्यद्वक्ताओं ने किया है, वह हम को मिल गया;” आगे की पहचान के लिये जोड़ते हुए: फिलिप्पुस ने कहा, “वह यूसुफ का पुत्र, यीशु नासरी है।” हम ध्यान दें कि उसने यीशु का वर्णन ऐसे व्यक्ति के रूप में करना शुरू किया जिसने मसीह के लिये शास्त्र की सारी आवश्यक बातों को पूरा किया। नतनएल स्पष्ट रूप से एक ऐसा व्यक्ति था जो इब्रानी शास्त्र जानता था। यह सम्भव है कि फिलिप्पुस और नतनएल ने अक्सर एक साथ भविष्यद्वाणी के पन्नों पर गौर किया हो। वे जानते थे कि मसीह को दाऊद के राज घराने का वंश होना था, जैसा कि उसका जन्म बेतलहम में, एक कुँआरी से होना था, उसे कम से कम कुछ समय के लिये मिस्र में प्रवासी होकर रहना था और यह कि उसकी पहचान प्रतिज्ञा के देश के उत्तरी भाग से की जानी थी। ये सारे विवरण यीशु नासरी में पूरे हुए।

फिर भी, नतनएल यह सुनकर चौंक गया कि उसके मित्र ने इस नए मिले मसीह का वर्णन “यीशु नासरी” के रूप में किया और आगे पहचान के विवरण में, “यूसुफ का पुत्र” कहा (सामान्यतः जो माना जाता था)। नतनएल गलील के काना से आया था (21:2), जो नासरत से पाँच मील से भी कम दूरी पर था। हम निश्चित हो सकते हैं कि देश के उस हिस्से में यीशु की प्रतिष्ठा भलाई के कामों के कारण पहले से ही थी, भले ही उसे साधारण रूप से एक स्थानीय किसान के रूप में देखा जाता था और बढ़ई के रूप में जाना जाता था। यीशु मसीह का कुँआरी से जन्म के रहस्य के बारे में शायद बहुत ही कम लोग जानते रहे होंगे। जबकि, हर कोई ईमानदारी और सत्यनिष्ठा, सहानुभूति और दयालुता, ज्ञान और बुद्धिमत्ता, सहायता और उदारता, विद्वता और धर्मनिष्ठा के लिये उसकी उल्लेखनीय प्रतिष्ठा के बारे में जानता होगा। परन्तु मसीह? नासरत से? असम्भव। “क्या कोई अच्छी वस्तु भी नासरत से निकल सकती है?” यही नतनएल की प्रतिक्रिया थी।

अन्यजाति नगरों से इसकी निकटता और अन्यजाति आबादी के मिश्रण, इसके पिछड़े शिष्टाचार, सामान्य बाइबल निरक्षरता और उच्च स्तर की कमी, और इसकी बोली की असभ्यता के कारण, यहूदिया के लोग गलील को कम सम्मान देते थे। नतनएल, एक गलीली, ने नासरत के प्रति इस स्थानीय पूर्वाग्रह का प्रदर्शन किया, जिसकी प्रतिष्ठा ख़राब थी। क्या नतनएल शायद समय से बच रहा था? यीशु, मसीह? यूसुफ का पुत्र? नहीं हो सकता। नासरत से? असम्भव है। नासरत, सुसमाचार के विवरणों में अपनी दशा पर खरा उतरा। यह यीशु के दावों का हिंसा के साथ स्वागत करने वाला पहला नगर था, और उसकी शिक्षाओं के केवल एक दिन के प्रदर्शन के बल पर उसे मार डालने के लिये तैयार था। नगर द्वारा उसके दावों को तिरस्कृत रूप से अस्वीकार करने के कारण उसे वहाँ सेवकाई में सक्रिय रूप से बाधा पहुँचाई गई।

फिलिप्पुस ने नासरत की दशा पर चर्चा करने में कोई समय बर्बाद नहीं किया। उसने एक अचूक तर्क का प्रयोग किया है। “उसने कहा, “चलकर देख ले।”

हम आगे देखते हैं कि कैसे नतनएल की यीशु में रुचि थी (1:47-48)। प्रभु नतनएल की मन को पढ़ सकता था। उसने नतनएल से नहीं, परन्तु दूसरों से कहा, “देखो, यह सचमुच इस्राएली है : इसमें कपट नहीं।” अक्सर यह

बताया जाता है कि इन शब्दों को ऐसे समझा जा सकता है, “देखो, यह सचमुच इस्राएली है : इसमें याकूब नहीं।” याकूब अपने प्रारम्भिक वर्षों में कपटी और धोखेबाज व्यक्ति था, जब तक कि परमेश्वर ने उसे यब्बोक में तोड़ नहीं दिया और उसे इस्राएल में बदल नहीं दिया। यीशु ने नतनएल में एक निष्पाप स्वभाव का व्यक्ति देखा, एक ऐसा व्यक्ति जिसमें याकूब की आत्मा को इस्राएल की आत्मा द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया था।

नतनएल की प्रतिक्रिया आश्चर्य से भरी थी। उसने पूछा, “तू मुझे कैसे जानता है?” एक कम परिष्कृत प्रतिक्रिया की कल्पना करना कठिन होगा। अधिकांश लोग, जब ऐसी प्रशंसा का सामना करते हैं, तो टाल-मटोल करते हैं और इस कथन से इनकार करते हैं: “मुझमें? कपट नहीं।? तू मुझे नहीं जानता!” नतनएल ऐसा नहीं था। उसने प्रभु के चरित्र के मूल्यांकन को सत्य मान लिया। उसकी समस्या उसके अपने स्वभाव से नहीं बल्कि प्रभु की समझ से थी। यह मनुष्य उसे कैसे जान सकता था?

यीशु और भी आगे बढ़ गया। उसने नतनएल को दिखाया कि फिलिप्पुस के उसे मिलने से पहले ही वह उसे मिल चुका था। वह न केवल जानता था कि नतनएल कैसा था, बल्कि वह यह भी जानता था कि वह उस दिन के पहले कहाँ था: “इस से पहले कि फिलिप्पुस ने तुझे बुलाया, जब तू अंजीर के पेड़ के तले था, तब मैंने तुझे देखा था।” वाक्य के स्वरूप से ऐसा प्रतीत होता है, कि नतनएल वास्तव में इस समय अंजीर के पेड़ के ठीक नीचे, पत्ते में था, सम्भवतः एकान्त की तलाश में था जिसमें विचार किया जा सके और प्रार्थना की जा सके। प्रभु के बाद के शब्दों का अर्थ है कि नतनएल वास्तव में याकूब और “याकूब की सीढ़ी” की उत्पत्ति की कहानी के बारे में सोच रहा था (उत्पत्ति 28:12), याकूब के मन परिवर्तन की रात के बारे में सोच रहा था। प्रभु ने इस विचारशील व्यक्ति नतनएल को किसी व्यक्ति के मन और विचारों को पढ़ने की अपनी अचूक क्षमता के साथ-साथ उसे दूर से और उस स्थान पर देखने की उसकी क्षमता के बारे में बताया जहाँ उसने अकेले रहने के लिये अपने आप को एकान्त में रखा था।

अन्त में, हम देखते हैं कि कैसे नतनएल यीशु से प्रेरित था (1:49-51)। नतनएल का आश्चर्य शब्दों में फूट पड़ा। “हे रब्बी, तू परमेश्वर का पुत्र है; तू इस्राएल का महाराजा है।” परमेश्वर का पुत्र, सृष्टि के सिंहासन पर विराजमन। इस्राएल का महाराजा, जगत के सिंहासन पर विराजमन। परमेश्वर का पुत्र—उसने अपने परमेश्वर को पहचान लिया। इस्राएल का महाराजा—उसने अपनी नियति को स्वीकार किया। नतनएल ने उसे अपने निर्माता, इस्राएल के महाराजा के रूप में ग्रहण किया। नतनएल ने उसे अपने मसीह, दाऊद के पुत्र के रूप में ग्रहण किया। नतनएल ने सर्वज्ञाता के सामने समर्पण कर दिया; मसीह के विषय में उसका अंगीकार ऐसा था (1:49)।

प्रभु ने तुरन्त नतनएल के सम्मान को स्वीकार किया। उसने उससे मसीह के विषय में उसकी समझ के बारे में बात की (1:50-51)। नथनेल ने वह उपलब्धि हासिल की थी जिसे आधुनिक भौतिकशास्त्री परिमाण छलांग कहेंगे। प्रकाशन के एक धमाके में उसने नासरत के इस व्यक्ति को परमेश्वर के रूप में शरीर में प्रकट होते देखा था। जब पतरस ने बहुत बाद में रूपान्तरण के पहाड़ पर इसी तरह का अंगीकार किया, तो प्रभु ने उसे बताया कि ऐसी अन्तर्दृष्टि मांस और लहू की नहीं थी, बल्कि स्वर्ग में उसके पिता की ओर से प्रत्यक्ष प्रकाशन था।

परन्तु नतनएल ने केवल मसीह के वस्त्र की छोर को ही छुआ था। उस समय सत्य की उसकी समझ सीमित थी। “यीशु ने उस को उत्तर दिया, मैं ने जो तुझ से कहा कि मैं ने तुझे अंजीर के पेड़ के तले देखा, क्या तू इसी लिये विश्वास करता है? तू इससे भी बड़े–बड़े काम देखेगा” (1:50)। अंजीर के पेड़ के तले नतनएल का चित्र अपने आप में प्रतीकात्मक थी। अंजीर का पेड़ उन तीन पेड़ों में से एक था जिनका उपयोग पवित्रशास्त्र में इस्राएल राष्ट्र के प्रतीक के रूप में किया गया था; इसका उपयोग हमेशा राष्ट्र को उसके अविश्वास, पुरानी वाचा के तहत

निष्फल, परमेश्वर की अप्रसन्नता और अनुशासन की अधीनता को चित्रित करने के लिये किया जाता है। नतनएल ने राष्ट्र में ईश्वरीय पवित्र बातों का प्रतिनिधित्व किया जो मसीह में विश्वास के द्वारा नई वाचा के आशीष में आता है।

आने वाले दिन में नतनएल की सत्य की समझ लगभग असीमित होगी: "मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि तुम स्वर्ग को खुला हुआ, और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को मनुष्य के पुत्र के ऊपर उतरते और ऊपर जाते देखोगे" (1:51)। "मनुष्य का पुत्र" परमेश्वर की मानवीय और सहस्त्राब्दी शीर्षक है। यीशु ने कहा, "सच सच," "आमीन, आमीन," या "सचमुच, वास्तव में।" आमीन शब्द एक इब्रानी शब्द है जिसकी जड़ें सामान्य इब्रानी में विश्वास, विश्वासयोग्यता और सच्चाई के लिये है। यह भजन संहिता की पहली पुस्तक की समाप्ति पर पाया जाता है: "आमीन, फिर आमीन" (भजन 41:13), दो बार आमीन का उपयोग गम्भीर जोर देने के लिये किया जाता है, यह आश्वासन व्यक्त करने के लिये कि इस स्तुतिगान भजन में सन्निहित प्रार्थना का उत्तर दिया जाएगा। वही "आमीन, फिर आमीन" भजन संहिता की दूसरी पुस्तक (__भजन __72:19) और तीसरी पुस्तक (भजन 89:52) की समाप्ति पर भी पाया जाता है। चौथी पुस्तक एक "आमीन!" और फिर, "याह की स्तुति करो" (__भजन__106:48) के साथ समाप्त होती है। भजन संहिता की अन्तिम पुस्तक पाँच भजनों के साथ समाप्त होती है, प्रत्येक की शुरुआत और अन्त एक और बड़े इब्रानी शब्द, हल्लेलुयाह से होता है। "याह की स्तुति करो।"

प्रभु ने बार-बार शब्द सच,सच का प्रयोग किया। हमारे पास मत्ती में एक "सच" तीस बार, मरकुस में चौदह बार, और लूका में सात बार है। अकेले यूहन्ना ने दोहरा "सच,सच" दर्ज किया है और यह सुसमाचार के उसके विवरण में पच्चीस बार आता है। दोहरे "सच,सच" का उपयोग परमेश्वर के ईश्वरीय अधिकार पर जोर देने के लिये, वह जो कहने वाला हो उसके महत्व को चिह्नित करने के लिये और उसके द्वारा घोषित सत्य की निश्चितता की पुष्टि करने के लिये किया जाता है।

यह रोचक बात है कि यूहन्ना ने भविष्यद्वाणी की पुस्तक में शब्द आमीन को मसीह के नाम के रूप में दर्ज किया है (प्रकाशितवाक्य 1:18; 3:14)। यह वह नाम है जिसके द्वारा उसने स्वयं को गुनगुना, अन्तिम समय, लौदीकिया की कलीसिया को सम्बोधित किया था। आमीन शब्द बाइबल का अन्तिम शब्द भी है। अन्तिम बात जो परमेश्वर को हमसे कहनी है वह यह है कि हमें उस शब्द पर विचार करने के लिये छोड़ दें जो उसके प्रिय पुत्र के लिये एक नाम है: "प्रभु यीशु का अनुग्रह पवित्र लोगों के साथ रहे। आमीन" (प्रकाशितवाक्य 22:21)। इस प्रकार अनुग्रह और सत्य वास्तव में यीशु मसीह के द्वारा आया और, इसकी पुष्टि करने के बाद, परमेश्वर के पास कहने के लिये और कुछ नहीं है।

अब हम नतनएल पर वापस आते हैं। प्रभु ने अपने पहले दोहरे आमीन से उसका ध्यान आकर्षित किया। वह उसे याकूब के परिवर्तन की रात के विचारों में वापस ले गया और उसे याकूब की सीढ़ी का स्मरण कराया और कैसे याकूब ने परमेश्वर के स्वर्गदूतों को उस स्वर्गीय सीढ़ी पर चढ़ते और उतरते देखा था जो पृथ्वी और स्वर्ग को जोड़ती थी। "मैं वह सीढ़ी हूँ," यीशु ने नतनएल से प्रभावी ढंग से कहा। तूने मुझे "परमेश्वर का पुत्र" कहा है, और मैं वही हूँ। मैं परमेश्वर पर अपना हाथ रखता हूँ, अपने परमेश्वर होने के कारण मैं ऐसा कहता हूँ। तूने मुझे "इस्त्राएल का महाराजा", महान दाऊद का महान पुत्र कहा है, और मैं वही हूँ। मैं मनुष्य पर अपना हाथ रखता हूँ, अपने मनुष्य होने के कारण मैं ऐसा कहता हूँ। मैं परमेश्वर और मनुष्य, स्वर्ग और पृथ्वी को जोड़ता हूँ। मैं परमेश्वर और मनुष्य

के बीच एकमात्र मध्यस्थता करनेवाला हूँ, स्वर्ग और पृथ्वी के बीच एकमात्र कड़ी हूँ। स्वर्गदूत मेरे कारण ऊपर चढ़ते और उतरते हैं।

यहाँ बहुत सच्चाई है। उदाहरण के लिये, स्वर्गदूतों के विषय में कथन “उतरते और ऊपर जाते” पर ध्यान दें। यह दूसरा तरीका नहीं है, जैसा कि हम सोचते हैं। स्वर्गदूत उस संसार से इस संसार में नहीं आते और फिर वापस वहीं नहीं जाते। बिल्कुल इसके विपरीत है। वे पहले से ही यहाँ हैं। वे यहाँ नीचे हैं और उन्हें पृथ्वी से स्वर्ग तक जाते और फिर वापस पृथ्वी पर आते हुए देखा जाता है।

यह महत्वपूर्ण है। परमेश्वर ने पहले ही इस विद्रोही ग्रह को अपने रखने की चौकी बनाया है। ऐसा कहा जा सकता है कि परमेश्वर के पास पहले से ही अपने स्वर्गदूत हैं, जो स्थाई रूप से शत्रु के इलाके में स्थित हैं। न ही शैतान उन्हें निकाल सकता है। वे कई कारणों से यहाँ हैं और उनका स्वर्ग के साथ निरन्तर आवागमन बना रहता है।

ऐसे स्वर्गदूत हैं जो बच्चों की निगरानी करते हैं, और स्वर्ग में इन नन्हें बच्चों के पिता का चेहरा “हमेशा देखते रहते हैं”। कितनी बार उन स्वर्गदूतों को उन लोगों की विरुद्ध दर्ज शिकायतों के साथ उस चमकदार सीढ़ी पर चढ़ना पड़ता है जो बाल दुर्व्यवहार, बच्चों की उपेक्षा करते हैं, जो इन छोटे बच्चों का विश्वास चुराते हैं, जो उन्हें झूठ से धोखा देते हैं और उनसे परमेश्वर की सच्चाई को छिपाते हैं। वे प्रत्येक मामले को परमेश्वर के सिंहासन पर प्रस्तुत करने के लिये, उस लम्बी सीढ़ी से ऊपर जाते हैं। फिर वे उनके आरोपों पर अनदेखी निगरानी के लिये नए निर्देश लेकर नीचे आते हैं।

ऐसे स्वर्गदूत हैं जो इस शत्रुतापूर्ण संसार में परमेश्वर के अपने लोगों पर दृष्टि रखते हैं, वे स्वर्गदूत “जो उद्धार पानेवालों के लिये सेवा करने को भेजी जाती हैं” (इब्रानियों 1:14)। मसीही विसंगतियों, पूरी तरह से सांसारिकता, शरीर की अभिलाषाओं (यहाँ तक कि घोर पाप), विचित्र मान्यताओं, टूटे हुए रिश्तों, दुःख से भरा जीवन, अनुचित व्यवहार के बारे में उन्हें बताना कितनी भयावह बात है। निस्संदेह कुछ के पास दिखाने के लिये जीत की, पवित्रता का प्रदर्शन, जीवन में बदलाव, घरों को पुनः जोड़ने की अच्छी और आशा उत्पन्न करनेवाली बातों का विवरण दर्ज हों।

ऐसे स्वर्गदूत हैं जिन्हें कलीसियाओं को सौंपा गया है। उनमें से बहुतों को कितनी दुःखद रिपोर्ट देनी पड़ती है। जब वे ऊपर की ओर जाने वाली सीढ़ियाँ चढ़ रहे होते होंगे तो उनके मन में क्या विचार आते होंगे। कालीन के रंग को लेकर कलीसिया विभाजित हो गई, पासवान प्रतिशोधी सहायकों द्वारा चले गए, उपदेशक पाप में उलझ गए, सांसारिक शिक्षाओं ने मनोरंजन किया और फिर परमेश्वर के परिवार में सम्मानजनक दर्जा दिया गया। फिर भी अन्य लोगों में जागृति लाने, आत्माओं के बचाए जाने, नए मिशन के शुरू होने, पवित्र आत्मा को पूर्ण प्रभुता की अनुमति मिलने की सुखद खबरें हैं।

राष्ट्रों के स्वर्गदूत हैं, जिनकी झलक एक बार दानिय्येल ने देखी थी, वे “सिंहासन और प्रभुता”, जो शैतान के “दूतों और शक्तियों, इस संसार के अंधेरे के उसके शासकों, निकट स्थानों में उसके दुष्ट आत्माओं” का मुकाबला करते हैं। उन स्वर्गदूतों के पास साम्यवादी रूस, विश्वास न करनेवाले चीन, मूर्तिपूजक भारत, विश्वास का त्याग करनेवाले ब्रिटेन और अमेरिका के बारे में क्या रिपोर्ट होंगी। युद्ध की कहानियाँ और युद्ध की अफ़वाहें, भूकम्प और महामारी, अकाल और अभाव, सताव और लूट-पाट, नारकीय दर्शन विज्ञान, लालच और षड्यंत्र, टूटी हुई संधियाँ, और भय के कारण मनुष्यों के हृदय उन्हें विफल कर रहे हैं। उस सीढ़ी पर उनके कदम सचमुच भारी रहते होंगे।

वे ऊपर जाते हैं। परमेश्वर अभी भी सिंहासन पर है। समय का छोटा सा दिन तेजी से खत्म हो जाता है। एक नए दिन की सुबह बस क्षितिज पर है। स्थान और समय के सभी कारक, मनुष्य के मन के दायरे और दायरे से परे, स्वर्गदूत की बुद्धि की समझ से परे, सब को सर्वज्ञानी प्रतिभा के तराजू में तौला जाता है और सर्वशक्तिमान के सामर्थ्य और देहधारण के प्रेम द्वारा एक साथ काम करने का आदेश दिया जाता है, उसकी अनन्त महिमा के लिये जो सिंहासन पर विराजमान है। इस प्रकार वे, ज्ञान के साथ, प्रोत्साहित, ऊर्जावान होकर, पृथ्वी ग्रह पर अपने गुप्त मिशन को शुरू करने के लिये फिर से उस सीढ़ी से उतरते हैं।

यीशु ने नतनएल से कहा, "तू देखेगा।" इसमें कोई सन्देह नहीं कि प्रभु न केवल स्वयं को मध्यस्थ कह रहा था बल्कि सहस्राब्दी की ओर भी इशारा कर रहा था। जब मनुष्य के पुत्र के रूप में परमेश्वर का पुत्र इस्राएल के महाराजा के रूप में बैठेगा, तो सांसारिक यरूशलेम और स्वर्गीय यरूशलेम के बीच खुला संचार होगा। निस्संदेह, जब प्रभु अपनी महिमा प्रकट करेगा, तो पृथ्वी और स्वर्ग के बीच पूर्ण आवागमन स्वाभाविक रूप से देखा जाएगा। इस प्रकार प्रभु नतनएल के विचारों को राज्य की संकीर्ण और सीमित अवधारणाओं के बीच की तुलना में ऊँचे स्तर और ऊँचे क्षेत्र में ले जाना चाहता था।

इस प्रकार प्रभु की सार्वजनिक सेवकाई के पहले दो दिन समाप्त हो गए। इस कम समय में उसने अपने बारह चेलों में से छः को सूचीबद्ध किया है, जिनमें वे भी शामिल हैं जिन्हें मुख्य प्रेरितों के रूप में गिना जाता है।

II. यीशु का विजयी होना (2:1-4:54)

यह बहुत रुचिपूर्ण और महत्वपूर्ण है कि, जहाँ तक प्रभु के सार्वजनिक सेवकाई का सम्बन्ध है, जैसा कि यूहन्ना ने दर्ज किया है, पहला आश्चर्यकर्म एक विवाह में था, और अन्तिम मृत्यु संस्कार में था (अध्याय 11)। पहला जीवन की सबसे सुखद घड़ी से जुड़ा था; अन्तिम जीवन की सबसे दुःखद घड़ी से जुड़ा था। एक रोचक बात यह भी है कि मूसा के पहले आश्चर्यकर्म ("व्यवस्था मूसा के द्वारा दी गई") ने पानी को लहू में बदल दिया; यीशु के पहले आश्चर्यकर्म ("अनुग्रह और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुँची") ने पानी को दाखरस में बदल दिया।

A. विवाह में दाखरस (2:1-12)

जीवन में अचानक आई निराशाओं पर जय पाना

अब हम यूहन्ना के पहले "आश्चर्यकर्मों" पर आते हैं। जिसे हम आश्चर्यकर्म, ईश्वरीय प्रमाण कहते हैं उसका वर्णन करने के लिये नए नियम में तीन शब्दों का उपयोग किया गया है। पतरस ने पिन्तेकुस्त के दिन इन तीनों का उपयोग किया जब उसने यहूदियों को यीशु की अद्भुत सेवकाई का स्मरण कराया (प्रेरितों 2:22)। वह "एक मनुष्य था जिसका परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ्य के कामों [डुनामिस] और आश्चर्य के कामों [तेरस] और चिह्नों [सेमिइओन] से प्रकट है।" डुनामिस का अर्थ है "शक्तियाँ" या "पराक्रम के काम"; इस शब्द का प्रयोग सुसमाचार के यूहन्ना के विवरण में बिल्कुल भी नहीं किया गया है। तेरस का अर्थ है "आश्चर्य के काम" और यूहन्ना द्वारा इसका उपयोग केवल एक बार, 4:48 में किया गया है। सेमिइओन का अर्थ है "चिह्न" और इसका उपयोग यूहन्ना द्वारा सत्रह बार किया गया है, परन्तु किंग जेम्स वर्जन में तेरह बार उनका अनुवाद "आश्चर्यकर्म" गलत तरीके से किया गया है। डुनामिस शब्द का प्रयोग आश्चर्यकर्मों के वरदान का वर्णन करने के लिये भी किया जाता है (1 कुरिन्थियों 12:10, 28)। सभी तीन यूनानी शब्दों का उपयोग मसीह-विरोधी की शैतानी शक्ति और चिह्नों और झूठे आश्चर्यकर्मों का वर्णन करने के लिये किया जाता है (2 थिस्सलुनीकियों 2:9)। शब्द सामर्थ्य

के काम सामर्थ्य की अभिव्यक्ति को स्पष्ट दर्शाता है; शब्द आश्चर्यकर्म उन लोगों पर उत्पन्न प्रभाव को रेखांकित करता है जो अद्भुत कामों के साक्षी हैं; चिह्न अद्भुत कामों के मूल्य या महत्व पर जोर देते हैं। प्रभु यीशु द्वारा किए गए सभी आश्चर्यकर्मों में से, यूहन्ना केवल आठ को दर्ज करता है और वे सभी चिह्न हैं।

जैसा कि यूहन्ना द्वारा दर्ज किया गया है, आश्चर्यकर्म के विभिन्न जोड़ों के बीच एक आश्चर्यजनक भाषाई संरचना देखी जा सकती है। इसे द कम्पेनियन बाइबल (परिशिष्ट 176, पृष्ठ 194) में स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है। पहला आश्चर्यकर्म काना में विवाह के समय का था (2:1-11) और पृष्ठभूमि नतनएल के विश्वास की थी; आठवाँ आश्चर्यकर्म मछलियों से भरा हुआ जाल का था (21:1-14) और पृष्ठभूमि थोमा का अविश्वास था। दूसरा आश्चर्यकर्म (4:46-50) उस राजकर्मचारी के पुत्र को चंगा करने का था जो मरने पर था; सातवाँ आश्चर्यकर्म (अन्तिम से दूसरा) बहनों के भाई, लाज़र (11:1-44) का **जिलाया जाना** था, जो पहले ही मर चुका था। तीसरा आश्चर्यकर्म बीमारी में पड़े मनुष्य का चंगा होना था (5:1-47) और छठा आश्चर्यकर्म (अन्तिम से तीसरा) जन्म से अन्धे को दृष्टिदान मिलना था (9:1-41); ये दोनों आश्चर्यकर्म सब्त के दिन यरूशलेम में किए गए और इन दोनों के कारण अगुवे क्रोधित हुए। चौथा आश्चर्यकर्म (6:1-14) पाँच हज़ार पुरुषों को खिलाना था और पाँचवाँ आश्चर्यकर्म (अन्तिम से चौथा) पानी पर चलना था (6:15-21); ये दोनों आश्चर्यकर्म ही सभी चार सुसमाचार के विवरणों में दर्ज हैं। प्रत्येक जोड़ी के साथ तुलना और विरोधाभास के कई अन्य बिन्दु भी जुड़े हुए हैं।

1. यीशु और विवाह (2:1-2)

तो फिर, हम यूहन्ना द्वारा दर्ज किए गए पहले आश्चर्यकर्म से शुरुआत करते हैं। यह आश्चर्यकर्म "तीसरे दिन" किया गया था, हालाँकि इस बात पर कोई सहमति नहीं है कि यह फिलिप्पुस के बुलाए जाने के तीसरे दिन था (1:43) या गलील में प्रभु के आगमन का तीसरा दिन था। यदि यह इनमें से पहला था, तो हमारे पास प्रभु की सेवकाई के पहले सप्ताह का प्रमाण है। पहला दिन 1:19-28 में, दूसरा दिन 1:29-34 में, तीसरा दिन 1:35-42 में और चौथा दिन 1:43-51 में दर्ज किया गया है। "तीसरा दिन" (2:1) हमें सप्ताह और विवाह के अन्त की ओर ले चलता है। यह उससे मेल खाता है जो हमें उत्पत्ति में मिलता है जहाँ सृष्टि के छः दिनों के बाद विवाह होता है। यह सम्भव है कि यूहन्ना चाहता है कि हम इस पहले सप्ताह की तुलना और विरोध प्रभु की सेवकाई के अन्तिम सप्ताह से करें (12:1)।

प्रभु और उसके चेलों को नतनएल के गृहनगर काना में एक विवाह में आमन्त्रित किया गया था। काना का स्थल विवादित है। पारम्परिक स्थल नासरत से पाँच मील से भी कम की दूरी पर है। इस अज्ञात जोड़े का प्रभु और उसके पीछे चलनेवाले को इस अवसर पर आने के लिये आमन्त्रित करने के बारे में बहुत सुन्दर बात कही गई है।

प्रत्येक विवाह में प्रभु को आमन्त्रित करना चाहिए। विवाह सबसे पहले परमेश्वर का विचार था। यदि प्रत्येक जोड़ा विवाह के ईश्वरीय महत्व को पहचाने और सक्रिय रूप से प्रभु की उपस्थिति की इच्छा रखे और अपने एक होने की उसकी सामर्थ्य और समर्थन का अनुभव करे तो बहुत कम विवाह टूटेंगे।

2. यीशु और उसकी माता (2:3-5)

हमें बताया गया है, "यीशु की माता भी वहाँ थी।" यूहन्ना ने कभी भी यीशु की माता का नाम लेकर उल्लेख नहीं किया, जबकि वह यूसुफ का नाम लेता है (6:42)। यूहन्ना द्वारा मरियम का नाम न लेना शायद उसकी ईश्वरीय प्रेरणा का हिस्सा रहा होगा। विभिन्न ज्ञानवादी और पन्थीय त्रुटियाँ पहले से ही कलीसिया में गहरी जड़ें जमा चुकी थीं। वह दिन आएगा जब रोमन कैथोलिक चर्च मरियम को मूल पाप से मुक्त, निष्कलंक रूप से गर्भवती होने का

प्रचार करेगा। जहाँ मनुष्यों की व्यर्थ कल्पनाओं में और कलीसिया की झूठे मत के द्वारा उसे शारीरिक रूप से स्वर्ग तक पहुँचाया जाएगा, और भक्तों को वहाँ उसकी शारीरिक उपस्थिति पर विश्वास करने के लिये कहा जाएगा। उसे "स्वर्ग की रानी" की पुरानी बेबीलोनियाई उपाधि दी जाएगी। उसे "परमेश्वर की माता" कहा जाएगा। उसे सह-उद्धारक घोषित किया जाएगा। भक्त को उससे प्रार्थना करने के लिये आग्रह किया जाएगा (इस धारणा पर कि वह सर्वज्ञानी की ईश्वरीय विशेषता से युक्त थी—क्योंकि ऐसी विशेषता वाला केवल एक ही व्यक्ति हर एक दिन संसार के सभी हिस्सों से हजारों भाषाओं में उसे सम्बोधित लाखों प्रार्थनाओं को सुन सकता है, अलग कर सकता है और समझ सकता है और उनका मूल्यांकन कर सकता है)। आश्चर्यकर्मों का श्रेय भी उसे ही दिया जाता था। भक्तों को उससे प्रार्थना करना सिखाया जाता था क्योंकि वह परमेश्वर की माता थी और उसका उस पर प्रभाव था और वह उससे जो चाहती करवा सकती थी। पोप, याजक और साधारण लोग उसके लिये मोमबत्तियाँ जलाते थे, उससे प्रार्थना करते थे, उसकी छवियों के सामने झुकते थे और कुछ अर्थों में उसकी पूजा करते थे। जो कोई भी कैथोलिक कलीसिया में रहा है, उसने पोप की गतिविधियों की वर्तमान समाचार रिपोर्ट देखी है, कैथोलिक मसीही मत के सिद्धान्तों का प्रश्नोत्तर के रूप में निर्देशों का अध्ययन किया है, या कलीसिया का इतिहास पढ़ा है, वह जानता है कि मरियम को कितनी ऊँचाइयों तक पहुँचाया गया है। कई कैथोलिक अभी भी अपने मोतियों को गिनते हैं और कहते हैं मरियम की जय हो। कई लोग अभी भी सेंट बर्नार्ड की उक्ति को मानते हैं: उसने कहा, "यह परमेश्वर की इच्छा है, कि हम मरियम के द्वारा सारी आशिषों को प्राप्त करें।" कई देशों में पर्व के दिनों में मरियम की छवि को मौज-मस्ती और उन्माद के दृश्यों के बीच सड़कों पर घुमाया जाता है।

यूहन्ना यह नहीं जानता था। यीशु जनता था। इसलिये इस अवसर पर अपनी माता और अन्य लोगों के साथ उसका व्यवहार।

मानवजाति की समस्या पर ध्यान दिए हमें बहुत समय नहीं हुआ था (2:3क) : "यीशु की माता ने उस से कहा, उन के पास दाखरस नहीं रहा।" दाखरस खत्म हो चुका था। पूर्वी देशों के विवाह में इससे अधिक दुर्भाग्य कुछ नहीं हो सकता था। किसी सार्वजनिक अवसर पर खाने-पीने की वस्तुओं का खत्म हो जाना हमेशा लज्जा की बात होती है। यहाँ, एक विवाह में यह समस्या आ पड़ी।

दाखरस तो दाखमधु था। प्रयुक्त शब्द ओइनोस है, जो नए नियम में दाखरस के लिये एकमात्र शब्द है। सेप्टुआजेंट में इसका उपयोग इब्रानी शब्दों यायिन और टिरोश का अनुवाद करने के लिये किया जाता है। शब्द यायिन मूल शब्द यायान से बना है जिसका अर्थ है "किण्वन करना।" शब्द यायिन पुराने नियम में 142 बार आया है और इसमें सभी प्रकार के किण्वन किए गए दाखरस शामिल हैं। इस शब्द का पहला प्रयोग नूह के मतवाले होने के सम्बन्ध में है (उत्पत्ति 9:21)। इसका उपयोग मलिकिसिदक द्वारा अब्राहम के लिये लाई गई दाखमधु से की जाती है (उत्पत्ति 14:18)। इसी शब्द का प्रयोग नाबाल और उसके नशे में अति चूर होने के सम्बन्ध में किया गया है (1 शमूएल 25:36-37)। इसका उपयोग यहोवा के लिये पर्वों को मानने में किया जाता था (व्यवस्थाविवरण 14:23-26) और यह अर्घ के लिये डाला गया दाखमधु होता था (निर्गमन 29:40; लैव्यव्यवस्था 23:13; गिनती 15:5)।

शब्द टिरोश मूल शब्द याराश से आया है, ("नियन्त्रण करना"), स्पष्ट रूप में दाखमधु का किसी मनुष्य के मस्तिष्क पर नियन्त्रण करने की शक्ति के कारण। यह शब्द पुराने नियम में चौंतीस बार आता है।

इसमें कोई सन्देह नहीं हो सकता कि विवाह में दाखमधु पिलाई गई थी, दाख का रस नहीं। और उनका दाखमधु समाप्त हो गया था। पवित्रशास्त्र के प्रतीकवाद में, दाखमधु आनन्द की बात समझी जाती है। यह जीवन के उल्लासपूर्ण क्षणों का सुझाव देता है। इसी क्षेत्र में जीवन सबसे पहले निराशा में डूब जाता है। परिस्थिति विपरीत हो जाती है और जीवन से आनन्द चला जाता है। अक्सर, इस दुःखी संसार में, विवाह की खुशियाँ बहुत जल्द छीन जाती हैं। "अच्छे दिन समाप्त हो जाते हैं।" ऐसा अक्सर होता है यह एक प्रसिद्ध कहावत बन गई है।

फिर मरियम का प्रस्ताव आया (2:3ख) : "यीशु की माता ने उस से कहा, उन के पास दाखरस नहीं रहा।" यह सुझाव दिया जाता है कि मरियम इस परिवार की करीबी मित्र थी, शायद घटी की आपूर्ति के लिये उसकी कुछ ज़िम्मेदारी थी। ऐसा निश्चित रूप से प्रतीत होता है कि मरियम ने इस तथ्य पर ध्यान दिया था कि यीशु ने चेलों का ध्यान खींचना शुरु कर दिया था। यरुशलेम में उसके वर्तमान गतिविधियों की खबरें निस्संदेह गलील में पहले से ही पहुँच चुकी थीं। यीशु के जन्म से जुड़ी परिस्थितियों के कारण इस स्त्री को अपने पूरे जीवन में सन्देह की दृष्टि से देखा जाता रहा। उसके कुँवारी जन्म की कहानी का कई लोग हँसी उड़ाते थे। जबकि, सच्चाई यह है कि उसे सामान्यतः "यूसुफ के पुत्र" के रूप में जाना जाता था (1:45) जो निस्संदेह सामान्य धारणा को व्यक्त करता है।

धीरे से उसने उस को कुछ कर दिखाने के लिये जोर देने का प्रयास किया। परन्तु वह वैसा नहीं कर सकता था और न ही उसकी अनुमति दे सकता है। वह जानता था कि आने वाले युगों में उसकी मूर्ति पूजक दशा बन जाएगी। सत्य की ऐसी विकृतियों के लिये कभी भी रत्ती भर समर्थन नहीं दिया जाना चाहिए। वह उसकी माता थी, परन्तु किसी भी तरह से उसे उसके उद्धार कार्य में कुछ कहने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। उसे कोमलता से परन्तु मजबूती से उसकी जगह पर रखा जाना चाहिए। माता और मसीह, स्वामी, एक मध्यस्थ के बीच एक बड़ी खाई तय होनी चाहिए।

तो हमारे पास मसीह का विशेषाधिकार है (2:4-5) : "यीशु ने उससे कहा, हे महिला, मुझे तुझ से क्या काम? अभी मेरा समय नहीं आया" (2:4)। यहाँ प्रभु उसके साथ अपना एक नया रिश्ता स्थापित करता है। सभी अधिकारिक क्षेत्र हमें स्मरण दिलाते हैं कि महिला शब्द में कोई असभ्यता, कोई कठोरता नहीं है।

वह कहता रहा, "मुझे तुझ से क्या काम?" इसे विभिन्न प्रकार से दोहराया गया है: "तुझे मुझसे क्या प्रयोजन?" या, कठोर शाब्दिक अर्थ के साथ, "मेरा और तुम्हारा आपस में क्या काम?" या, जैसा कि इसकी व्याख्या की गई है, "मुझे मेरा काम करने दो।"

इस पर इन शब्दों से जोर दिया गया है, "अभी मेरा समय नहीं आया।" इसके बाद, प्रभु ने बार-बार इस रहस्यमय और महत्वपूर्ण समय के बारे में बात की। अध्याय 7 में उसने कहा, "मेरा समय अभी तक नहीं आया," जब उसके अविश्वासी भाइयों ने भी उसे एक कदम उठाने के लिये उकसाना चाहा (7:6)। जब वह मन्दिर में उपदेश दे रहा था, यद्यपि विरोध बढ़ रहा था, "किसी ने उसे न पकड़ा, क्योंकि उसका समय अब तक नहीं आया था" (8:20)। जब यूनानी आए, जो अन्यजातियों के संसार में आने वाली फसल का समाचार देनेवाले थे, तो उसने फिर से अपने समय के बारे में बात की: "वह समय आ गया है, कि मनुष्य के पुत्र की महिमा हो" (12:23)। ऊपरी कोठरी में हमें फिर से है यह बताया गया है: "यीशु ने जान लिया कि उसकी वह घड़ी आ पहुँची है कि जगत छोड़कर पिता के पास जाए" (13:1)। फिर भी बाद में, ऊपरी कोठरी में, उसकी महायाजकीय प्रार्थना में और यूहन्ना के विवरण में दर्ज हम इसे एक बार और, अन्तिम बार देखते हैं। अपनी प्रार्थना प्रारम्भ करते हुए उसने कहा, "हे पिता, वह घड़ी

आ पहुँची है" (17:1)। हम देखते हैं कि उसकी "घड़ी" का पहला संदर्भ उसकी माता के लिये और अन्तिम उसके पिता के लिये था।

उसने जो कुछ भी किया उसका सम्बन्ध इस घड़ी से था। मरियम अपने जीवन में परमेश्वर के समय को नहीं जान सकी। वह उस घड़ी के बारे में अभी तक कुछ भी नहीं जानती थी जब वह अपनी महिमा या सारी बातें अपने क्रूस के द्वारा प्रदर्शित करेगा।

मरियम ने उसकी बात मान ली; उसकी समझ बुद्धि से परिपूर्ण थी, उसका विश्वास अटल था। वह उन सेवकों की ओर मुड़ी जो घबराए हुए खड़े थे और उन्हें सबसे अच्छी सलाह दी "जो कुछ वह तुम से कहे, वही करना" जो कोई भी मनुष्य किसी दूसरे को दे सकता है।

3. यीशु और आश्चर्यकर्म (2:6-11)

यीशु का पहला "आश्चर्यकर्म" और उसका प्रारम्भिक उद्देश्य (2:6-10) इस आपात स्थिति का सामना करना और उस विवाह में आनन्द लाना था जहाँ घटती और निराशा परिधि पर थी। प्रभु ने जो उपलब्ध साधन था उसका उपयोग किया, जैसा कि वह हमेशा करता है। (उसने मूसा से कहा, "तेरे हाथ में वह क्या है?" [निर्गमन 4:2]। वह केवल एक लाठी थी, परन्तु सब कुछ समाप्त होने से पहले यह फ़िरौन और उसके लोगों के लिये ईश्वरीय शक्ति का प्रतीक बन गया।)

उनके पास छ: पानी के मटके थे, जिनमें से प्रत्येक में लगभग नौ गैलन पानी भरने की क्षमता थी (कुछ कार्यक्षेत्र में बीस गैलन पानी के मटके रखते थे)। इन पत्थर के मटकों में पानी विवाह में शामिल अतिथियों की औपचारिक शुद्धि के लिये था। यहूदी धर्म व्यक्तिगत स्वच्छता पर पूरा ध्यान देने की माँग करता था। "शुद्ध करने की रीति" में अतिथियों की सेवा में उपयोग किए जाने वाले हाथों और बर्तनों को धोना शामिल था (मरकुस 7:3-4)। कोई भी शुद्ध करने की रीति उस सामाजिक आपदा की भरपाई नहीं कर सकता जो अब नव-विवाहितों पर भारी पड़ने वाला था। प्रभु ने आज्ञा दी कि इन मटकों को पानी से भर दिया जाए। स्पष्ट है कि उनका पेय पदार्थ समाप्त हो चुका था। सेवकों ने आज्ञा का पालन किया और मटकों को "मुँहामुँह भर दिया।" अवश्य ही कि उन मटकों में पानी के अलावा कुछ भी नहीं था। अब तक तो सब ठीक था।

परन्तु अब सेवकों के विश्वास की परख की एक चुनौती थी: "अब निकालकर भोज के प्रधान के पास ले जाओ" (2:8), वह मनुष्य जिसे हम समारोहों का प्रधान कह सकते हैं। कोई झिझक नहीं की गई। उन्होंने वैसा ही किया जैसा उनसे कहा गया था।

यह सोचकर कई मसीही लोग परेशान हो जाते हैं कि यीशु ने वास्तव में पानी को दाखरस में बदल दिया था। कुछ लोगों ने दावा किया है कि यह वास्तव में वह दाखमधु नहीं बल्कि दाख का रस था—दाखरस के लिये इस्तेमाल किए गए शब्द और भोज के प्रधान की प्रतिक्रिया, जो निश्चित रूप से इसे दाखरस मानता था, और उस पर असाधारण रूप से अच्छा दाखरस, दोनों को ध्यान में रखते हुए इसका बचाव करना कठिन है। उसने दूल्हे से कहा, "हर एक मनुष्य पहले अच्छा दाखरस [ओइनोस] देता है, और जब लोग पीकर छक जाते हैं, तब मध्यम [फीका] देता है; परन्तु तू ने अच्छा दाखरस अब तक रख छोड़ा है" (2:10)।

"अच्छा दाखरस"! कुछ लोग कहेंगे कि कोई दाखरस अच्छा नहीं है। फिर भी वर्ष-दर-वर्ष सृष्टिकर्ता एक प्राकृतिक प्रक्रिया द्वारा पानी को दाखरस में बदल देता है। उस पौधे के सभी रहस्यों को कौन समझा सकता है जो मिट्टी से

पानी और खनिज, सूर्य से ऊर्जा, अपने पर्यावरण से वह सब कुछ लेने में सक्षम होता है जो उसे चाहिए और उन्हें दाखरस से भरे दाख में बदल देता है? सृष्टिकर्ता के रूप में यीशु ने जो किया वह एक अन्तर के साथ—पूरी प्रक्रिया को छोटा कर देने वाला था। यह अच्छा दाखरस था। मध्यम से अच्छा ही नहीं, बल्कि बहुत अच्छा दाखरस। एक व्यक्ति इसे कई गैलन तक पी सकता है और जिसका कभी कोई हानिकारक प्रभाव नहीं हो सकता। यीशु द्वारा बनाए गए दाखरस से कोई भी अपने आप को नशे में महसूस नहीं कर सकता था। (रोमियों 14 में पौलुस द्वारा सुझाए गए आधारों को छोड़कर इससे पूरी तरह से परहेज़ का मामला बाइबल से देना कठिन है।)

इसका एक प्रतीकात्मक अर्थ था। मटकों को मुँहामुँह भर देना, वे मटके जिनका उपयोग "यहूदियों की रीति के अनुसार" शुद्धिकरण के लिये पानी रखने के लिये किया जाता था, जो अपने रीति-रिवाजों के साथ यहूदी धर्म का प्रतीक था, जिसने अब अपना उद्देश्य पूरा कर लिया था। नई दाखरस एक नई सृष्टि, मसीहीयत का प्रतीक है, जो "अकथनीय आनन्द से भरपूर", समृद्ध और महिमा से भरपूर है।

इसके प्राथमिक उद्देश्य (2:11) के अनुसार, आश्चर्यकर्म एक चिह्न था, "चिह्नों की यह शुरुआत" परमेश्वर की महिमा को प्रदर्शित करने और उसके चेलों को यह विश्वास दिलाने के लिये तैयार की गई थी कि वह वही है जो उसने होने का दावा किया था। यूहन्ना अब एक बूढ़े मनुष्य के रूप में उस घटना को स्मरण करते हुए कहता है, "उसके चेलों ने उस पर विश्वास किया।" वाक्यांश, "पर विश्वास करना," यूहन्ना की विशेषता है और केवल एक बार सहदर्शी सुसमाचार विवरणों (मत्ती 18:6 और इसके समानान्तर, मरकुस 9:42) में पाया जाता है और केवल कभी-कभी पौलुस के लेखन (रोमियों 10:14; गलातियों 2: 16; फिलिप्पियों 1:29) में पाया जाता है। इस वाक्यांश के पीछे आवश्यक विचार अपने आप से किसी और तक विश्वास को भली-भाँति पहुँचाना है।

4. यीशु और उसका आगे बढ़ना (2:12)

अन्तिम बात हमारा ध्यान यीशु द्वारा उठाए गए कदम की ओर आकर्षित करता है। "इसके बाद वह और उसकी माता और उसके भाई और उसके चेले कफरनहूम को गए और वहाँ कुछ दिन रहे।" भाषा का अलंकार (पॉलीसिन्डेटोन के रूप में जाना जाता है), शब्द और के जानबूझकर और बार-बार उपयोग से पता चलता है इसका उद्देश्य समारोह के प्रत्येक सदस्य की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करना है। रोमन कैथोलिक चर्च ने उद्धार में मरियम की भूमिका को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करते हुए उसके अनन्त कुँवारीपन का दावा किया है। यह तर्क देता है कि यहाँ उल्लेखित प्रभु के "भाई" या तो पिछली विवाह से यूसुफ के बेटे थे या फिर वे चचेरे भाई थे। नए नियम में प्रभु के भाइयों का नौ बार उल्लेख किया गया है। उनमें से तीन उसके साथ उनके सच्चे रिश्ते पर कोई प्रकाश नहीं डालता (यूहन्ना 7:3-5; 1 कुरिन्थियों 9:5; गलातियों 1:19) परन्तु शेष छः अधिक निश्चित हैं। वे सब उसकी माता के सम्बन्ध में उसके भाइयों के बारे में बताते हैं (मत्ती 12:46; 13:55; मरकुस 3:32; 6:3; लूका 8:19-20; यूहन्ना 2:12)। यह अन्तिम संदर्भ, जिस पर हम यहाँ विचार कर रहे हैं, मरियम के साथ सम्बन्ध पर जोर देता है। पॉलीसिन्डेटोन का उपयोग इस ओर ध्यान आकर्षित करता है: "वह और उसकी माता और उसके भाई और उसके चेले।" क्योंकि इन "भाइयों" को अक्सर मरियम के साथ देखा जाता है, स्पष्ट निष्कर्ष यह है कि वे उसके बच्चे थे।

ऐसा प्रतीत होता है कि यूसुफ की मृत्यु के बाद पूरा परिवार कफरनहूम चला गया। इस समय तक या कुछ ही समय बाद प्रभु वहाँ का निवासी बन गया, और वह झील के किनारे का नगर उसकी गलीली सेवकाई का मुख्यालय बन गया। हालाँकि इस अवसर पर वह कुछ समय ही नगर में ठहरा। यरूशलेम और वार्षिक फसह का पर्व उसके वहाँ जाने का संकेत दे रहे थे।

प्रभु अब पूरे राष्ट्र को एक अलग तरह का संकेत देनेवाला था, इस बार कोई आश्चर्यकर्म नहीं, बल्कि सर्वश्रेष्ठ मसीह के योग्य कार्य का।

सुसमाचार के यूहन्ना के विवरण से हम प्रभु के सार्वजनिक सेवकाई के कालक्रम का, विशेष रूप से यूहन्ना के यहूदियों के विभिन्न पर्वों के संदर्भ और मुख्यतः तीन फसह के संदर्भ से पुनर्निर्माण करने में सक्षम हैं। यूहन्ना में पर्व इस प्रकार हैं:

1. फसह का पर्व (2:12-13)
2. अन्य पर्व (5:1)
3. दूसरा फसह (6:4) (यीशु नहीं गया)
4. झोपड़ियों का पर्व (7:2)
5. स्थापन पर्व (10:22)
6. तीसरा फसह (12:1)

अब हम तथ्यों को इकट्ठा कर सकते हैं क्योंकि वे प्रभु के सार्वजनिक सेवकाई से सम्बन्धित हैं। (कुछ अनुमानित तिथियाँ हैं। देखें ग्राहम स्क्रॉगी, अ गाइड टू द गॉस्पल्स, लंदन: पिकरिंग एण्ड इंगलिस, 1948, 409-411.)।

1. प्रभु के बपतिस्मा (जनवरी 27 ईस्वी) से प्रथम फसह तक (अप्रैल 11-18, 27 ईस्वी)
    1. फरवरी 27 ईस्वी (1:19-51)
    2. मार्च 27 ईस्वी (2:1-12), लगभग तीन महीने की अवधि
2. पहले फसह से गलील को जाने तक (दिसम्बर 27 ईस्वी)
    1. अप्रैल 27 ईस्वी (2:13-3:21)
    2. मई 27 ईस्वी (3:22-24)
    3. अगस्त 27 ईस्वी (3:25-36)
    4. नवम्बर 27 ईस्वी (4:1-3)
    5. दिसम्बर 27 ईस्वी (4:4-42), लगभग आठ महीने की अवधि
3. गलील को जाने से मई 28 ईस्वी तक
    1. दिसम्बर 27 ईस्वी (4:43-45)
    2. जनवरी 28 ईस्वी (4:46-54)
    3. मई 28 ईस्वी (5:1-47), लगभग पाँच महीने की अवधि
4. मई 28 ईस्वी से उत्तरी गलील में सेवकाई तक (नवम्बर 29 ईस्वी)
    1. मार्च 29 ईस्वी (6:1-15)
    2. अप्रैल 29 ईस्वी (6:16-71), लगभग बारह महीने की अवधि

5. मई 29 ईस्वी से गलील से अन्तिम बार विदाई तक (नवम्बर 29 ईस्वी)
    1. सितम्बर 29 ईस्वी (7:1-8:11)
    2. अक्टूबर 29 ईस्वी (8:12-59), लगभग छः महीने की अवधि
6. नवम्बर 29 ईस्वी से विजयी प्रवेश तक (रविवार, अप्रैल 2, 30 ईस्वी)
    1. अक्टूबर 29 ईस्वी (9:1-41)
    2. नवम्बर 29 ईस्वी (10:1-42)
    3. जनवरी 30 ईस्वी (11:1-54)
    4. अप्रैल 30 ईस्वी (11:55-12:11), लगभग पाँच महीने की अवधि
7. रविवार, अप्रैल 2, 30 ईस्वी से पुनरुत्थान तक (रविवार, अप्रैल 9 30 ईस्वी)
    1. अप्रैल 2 (रविवार) ईस्वी (12:12-19)
    2. अप्रैल 4 (मंगलवार) 30 ईस्वी (12:20-50)
    3. अप्रैल 6 (गुरुवार) 30 ईस्वी (13:1-18:12)
    4. अप्रैल 7 (शुक्रवार) 30 ईस्वी (18:13-19:42), आठ दिनों की अवधि
8. रविवार, अप्रैल 9, 30 ईस्वी से मई 18, 30 ईस्वी तक
    1. अप्रैल 9, 30 ईस्वी (20:1-25)
    2. अप्रैल 9-मई 18, 30 ईस्वी (20:26-21:25), चालीस दिनों की अवधि

यह महत्वपूर्ण है कि यूहन्ना ने अपने सुसमाचार के विवरण का आधे से अधिक भाग पृथ्वी पर प्रभु के अन्तिम सप्ताह से सम्बन्धित घटनाओं को, अर्थात्, उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान तक की घटनाओं को समर्पित किया है। प्रभु का जीवन कितना महत्वपूर्ण और आवश्यक था, परन्तु यह उसकी मृत्यु ही है जो हमारे उद्धार को सम्भव बनाती है।

B. मन्दिर और वहाँ की भीड़ (2:13-25)

सांसारिक मूल्यों की गिरावट पर जीत

हम यूहन्ना की विशेषता वाले उन कालक्रम टिप्पणियों में से एक से शुरुआत करते हैं: “यहूदियों का फसह का पर्व निकट था, और यीशु यरूशलेम को गया” (2:13)।

वार्षिक फसह पर्व जो मिस्र की बन्धुआई से इस्राएलियों के निकल आने पर मनाया जाता था। यह उसी घटना के वर्षगाँठ के रूप में निसान के चौदहवें दिन (मार्च-अप्रैल पूर्णिमा के समय) मनाया जाता था। इसके तुरन्त बाद अखमीरी रोटी का पर्व होता था, जो एक सप्ताह (15-22 निसान) तक चलता था। इस महान राष्ट्रीय पर्व के लिये सारे जगहों से प्रवासी (अर्थात् पलिश्तीन के बाहर फैले हुए यहूदी) बड़ी संख्या में इकट्ठे होते थे।

फसह की पूर्व संध्या पर प्रत्येक घर का मुखिया सावधानीपूर्वक घर का सारा खमीर इकट्ठा करता था और उसे हटा देता था, जिससे घर की अच्छी साफ-सफाई हो जाती थी, जैसा कि हम आज कह सकते हैं। फिर भी कोई भी

परमेश्वर के घर को शुद्ध करने के बारे में नहीं सोचता था। याजक और लोगों की आत्मिक स्थिति इतनी दयनीय थी कि यूहन्ना आदतन इस पर्व को “यहूदियों का फसह” कहकर संदर्भित करता है (6:4; 11:55 भी देखें; और 5:1; 7:2 से तुलना करें) बजाय इसके कि इसे “यहोवा का पर्व” होना था।

1. यीशु और भवन (2:13-17)

यह उचित है कि प्रभु की सार्वजनिक सेवकाई यहूदिया में, यरूशलेम में और मन्दिर में शुरू होना चाहिए। प्रभु ने सीधे मन की बात सुनी। अब उसने देश की राजधानी में अपने आप को मसीह के रूप में प्रकट किया और ग्रहण न किए जाने पर वहाँ से निकलकर गलील में अपने आप को भविष्यद्वक्ता के रूप में प्रकट किया। वह अपने अन्तिम प्रवेश तक यरूशलेम में फिर से मसीह के रूप में अपने आप को खुले रूप में प्रकट नहीं करेगा।

अचानक मन्दिर में आकर (जैसा कि भविष्यद्वाणी की गई थी, मलाकी 3:1-3) प्रभु की दृष्टि ने एक ही बार में उस पवित्र स्थान की अपवित्रता को देख लिया। “मन्दिर” का अनुवाद दो शब्दों से किया गया है। पहला शब्द हिरोन है, जिसका (यहाँ की तरह) पूरा क्षेत्र पवित्र बाड़े, आँगन, बरामदा होता है और शब्द नाओस जो अपने आप में पवित्र संरचना के लिये ही आरक्षित है, जिसमें पवित्र स्थान और अति पवित्र स्थान शामिल हैं। बाद वाला शब्द प्रभु की देह और उसके रहस्यमय देह का निर्माण करनेवाले विश्वासियों के लिये प्रतीकात्मक रूप से उपयोग किया जाता है। यहाँ यूहन्ना पूरे क्षेत्र (लगभग उन्नीस एकड़) का वर्णन कर रहा है। क्षेत्र को चार आँगनों में बाँटा गया था। पूर्व से आते हुए और पवित्रस्थान की ओर बढ़ते हुए, वहाँ आनेवाला क्रमिक रूप से अन्यजातियों के आँगन, स्त्रियों के आँगन, इस्राएल के आँगन और याजकों के आँगन से होकर गुजरता था। यहूदियों ने सभी अन्यजातियों के प्रति अपने सामान्य तिरस्कार के कारण अपने आँगन को व्यापार करने के लिये एक उपयुक्त स्थान के रूप में नामित किया था।

बैल, भेड़ और कबूतर ऐसे प्राणी थे जिनका उपयोग सामान्यतः बलि चढ़ाने में किया जाता था। वहाँ के अधिकारियों ने निर्णय लिया था कि वेदी के निकट एक मवेशी बाजार बनाना सुविधाजनक होगा, और अन्यजातियों के आँगन का उपयोग स्वीकृत जानवरों की बिक्री के लिये किया जाएगा। निस्संदेह अधिकारियों को लाभ का एक प्रतिशत प्राप्त होता था।

फिर भी, कई यहूदियों ने मन्दिर के रखरखाव के लिये संसार भर के बीस वर्ष और उससे अधिक उम्र के सभी यहूदी पुरुषों से वसूले जाने वाले वार्षिक आधे शेकेल का भुगतान करने के लिये यरूशलेम के इस पवित्र स्थल का लाभ उठाया। स्पष्ट है कि सम्राट या किसी अन्य विधर्मी की छवि वाले किसी भी सिक्के का भुगतान मन्दिर के खजाने में नहीं किया जा सकता था। धन सम्बन्धी सारे भेंट का भुगतान यहूदी सिक्कों में करना होता था। इन सब में सर्राफों के लिये एक बड़ा और लाभदायक व्यवसाय रहा होगा। फिर, अन्यजातियों के आँगन को इस व्यवसाय को चलाने की अनुमति देने के लिये एक उपयुक्त स्थान के रूप में नामित किया गया था। लालच और धोखाधड़ी की कल्पना करने के लिये किसी को मानवीय स्वभाव का छात्र होने की आवश्यकता नहीं है (मत्ती 21:13)। मन्दिर में इन सभी व्यापारिक गतिविधियों को देखकर प्रभु का हृदय द्रवित हो गया। सारी जाति के लिये प्रार्थना का यह स्थान खलिहान की गंध से भरा हुआ था, मवेशी बाजार की तरह लग रहा था, शोर और कोलाहल से भरा हुआ था, कई ठगी करनेवाले देखे जा सकते थे। भविष्यद्वक्ता जकर्याह ने भविष्यद्वाणी की थी, “सेनाओं के यहोवा के भवन में फिर कोई व्यापारी [खरीदी-बिक्री करनेवाला] न पाया जाएगा” (जकर्याह 14:21)। प्रभु ने अपने पिता के घर की इस अपवित्रता को पवित्र करने का निर्णय लिया।

उसने बैलों को हाँकने के लिये छोटी-छोटी रस्सियों का कोड़ा बनाया। उसने सर्राफों के पीढ़ों को अपने नियन्त्रण में लेते हुए ज़ोरदार झटके से उलट दिया। हम सिक्कों के बिखरने के बाद होने वाली हाथापाई की कल्पना कर सकते हैं! और, उस गरिमा और संयम के साथ जो उसके हर प्रतिक्रिया को दर्शाता था, उसने कबूतर बेचनेवालों को उनके सामान हटाने का आदेश दिया—इस प्रकार धीरे-धीरे निर्बोध पक्षियों की रक्षा की गई। कुछ ही मिनटों में वह जगह साफ-सुथरी हो गई। नीचे भूमि की सफाई और कूड़ा-कचरा उठाना ही बाकी रह गया था।

"व्यापार के केन्द्र" पर इस साहसिक हमले ने, सम्भवतः सबसे प्रामाणिक तरीके से यीशु को मसीह घोषित कर दिया। अकेले और अकेले ही उसने सत्ता प्रतिष्ठान पर नियन्त्रण कर लिया था, जिसमें महासभा और शक्तिशाली सदूकियों का दल भी शामिल था, जो प्रायोजित और निस्संदेह इस व्यापर से लाभ कमा रहे थे। उसने सार्वजनिक लाभ के रूप में प्रस्तुत बुराई की एक मजबूत व्यवस्था को उखाड़ फेका था। ऐसा करके, उसने अपने आप को अपने पिता का पुत्र घोषित किया था, जिसके घर को ये बरबस घुस आए अशुद्ध लोग अपवित्र कर रहे थे। फसह के पर्व को ध्यान में रखते हुए उसने उस घर को अधर्म के उस खमीर से छुटकारा दिलाया था जिसने उसे लम्बे समय से भ्रष्ट कर रखा था। (जब प्रभु ने अन्तिम बार उस मन्दिर को छोड़ा तो उसने इसे "तेरा घर" कहा, परन्तु तब तक उसने भविष्यद्वाणी के अनुसार इसे न्याय के हाथों सौंप दिया था; देखें मत्ती 23:38)।

इस घटना ने उसके चेलों पर प्रभाव डाला, उन्होंने भजन 69:9 को स्मरण किया। "तेरे घर की धुन मुझे खा जाएगी।" उस प्रभावशाली मसीहीयाई भजन संहिता की एक पद प्रभु की निडर प्रतिक्रिया पर एक उपयुक्त टिप्पणी थी।

2. यीशु और उसकी देह (2:18-22)

यहूदी अधिकारियों को प्रतिक्रिया देने में देर नहीं लगी। उन्होंने तुरन्त स्पष्टीकरण की माँग की। मन्दिर के संरक्षक और यहूदी विश्वास के संरक्षक के रूप में उनके अधिकारों और विशेषाधिकारों में हस्तक्षेप करने की उसकी साहस कैसे हुई? उत्तर हमारे ध्यान को यीशु और उसकी देह की ओर खींचता है। यहूदियों ने एक चिह्न की माँग की। यदि वे इसे देख पाते तो क्या जिस तरह से उसने मन्दिर को शुद्ध किया था वह पर्याप्त चिह्न नहीं था? परन्तु वे और अधिक चाहते थे। बाद में, पौलुस ने अविश्वासी लोगों की विशेषता के रूप में यहूदियों की इस माँग को रेखांकित किया (1 कुरिन्थियों 1:22)।

प्रभु ने तुरन्त उन्हें एक चिह्न दिया परन्तु यह वह चिह्न था जिसे वे न तो चाहते थे और न ही समझते थे। उसने कहा, "इस मन्दिर को ढा दो, और मैं इसे तीन दिन में खड़ा कर दूँगा" (2:19)। बाद के दो अवसरों (मत्ती 26:61 और प्रेरितों 7:14) पर उस गूढ़ कथन को आरोप के आधार के रूप में इस्तेमाल किया गया और दोनों ही मामलों में इसे गलत तरीके से उद्धृत किया गया। प्रभु इस तथ्य का उल्लेख कर रहा था कि उसकी देह (मन्दिर, नाओस) को "ढा देने" के लिये उन्हें सौंप दिया जाएगा और, जब ऐसा होगा, तो वह "इसे जी उठा" लेगा। उसने जिस शब्द का प्रयोग किया वह एगेइरो था, जिसका वास्तविक अर्थ है "नींद से जागना।" यह 141 बार आता है, जिनमें से 70 बार में पुनरुत्थान का उल्लेख है।

यहूदी प्रभु के रूपक को समझने में विफल रहे और उसकी बातों का विरोध किया। वे आश्चर्य से बोले, "इस मन्दिर को बनने में छियालीस वर्ष लगे हैं, और क्या तू उसे तीन दिन में खड़ा कर देगा?" (2:20)। एक शौकीन गृह निर्माता, हेरोदेस महान ने 20 ई.पू. में यहूदी मन्दिर का नवीनीकरण शुरू किया था। जोसेफस का कहना है कि उस कार्य में लगभग अठारह हजार कर्मचारी कार्यरत थे। यह कार्य 64 ई.पू. तक समाप्त नहीं हुआ था। तीन वर्ष बाद,

67 ईस्वी में रोम के साथ यहूदी युद्ध छिड़ गया और मन्दिर के द्वार को मुहरबन्द कर दिया गया। 70 ई.पू. में इस युद्ध के अन्त में यह आग की लपटों से घिर गया। यहूदियों ने मसीह को ग्रहण न करने और अपनी हठधर्मिता से सचमुच "इस मन्दिर को ढा दिया," वास्तविक मन्दिर को। प्रभु ने उस मन्दिर को खड़ा नहीं किया।

यूहन्ना टिप्पणी करता है, "उसने अपनी देह के मन्दिर के विषय में कहा था" (2:21)। प्रभु के चेलों को यह बात समझने में तीन वर्ष लगे। हालाँकि, उसकी बातों का उन्हें स्मरण था, और उसके पुनरुत्थान के बाद उन्होंने न केवल इसे स्मरण किया बल्कि इसके महत्व को समझा—कि यहाँ प्रभु ने, यहूदी आधिकारिकता के साथ अपनी पहली सार्वजनिक भेंट में, वास्तव में उनके सामने अपनी मृत्यु की भविष्यद्वाणी की थी।

3. यीशु और विश्वास करनेवाले (2:23-25)

इन सब ने नगर में काफी अटकलें लगाईं, यह नगर संसार भर से आए यहूदी मत के लोगों से पूरी तरह भरा हुआ था। यूहन्ना अपने द्वारा दर्ज किए बातों के इस भाग को यीशु और विश्वासियों के संदर्भ के साथ समाप्त करता है। वह पहले उन लोगों के विश्वास की नींव (2:23) को संदर्भित करता है जिनके बारे में कहा जाता है कि उन्होंने "उसके नाम पर विश्वास किया" (2:23)। उन्होंने उसके "आश्चर्यकर्मों" के कारण विश्वास किया। हमें स्मरण रखना चाहिए कि यूहन्ना किसी भी तरह से उन सारे "चिह्नों" या आश्चर्यकर्मों को दर्ज नहीं करता है, जो यीशु ने किए थे। वास्तव में, सुसमाचारों के विवरणों में आश्चर्यकर्मों को दर्ज करने का आभाव पाया जाता है। कई सारांश कथनों के साथ कुल मिलाकर केवल छत्तीस (साढ़े तीन वर्ष की सेवकाई के प्रकाश में देखा जाए तो औसतन एक महीने में एक से भी कम) दर्ज किए गए हैं।

जो विश्वास आश्चर्यकर्मों पर टिकी है वह बहुत सन्तोषजनक या ठोस विश्वास नहीं है। ऐसा विश्वास हमेशा अधिक की माँग करता है। यदि यह अधिक हो जाता है, तो यह भूखा हो जाता है और इसकी भूख कम हो जाती है। हमें आज मसीही जगत में उन लोगों से सावधान रहने की जरूरत है जो आश्चर्यकर्म करने की शक्ति होने का दावा करते हैं और उन लोगों से भी जो उन पर विश्वास करते हैं।

यूहन्ना उन लोगों के विश्वास में दोष दर्ज करता है (2:24-25) जिनके बारे में वह कहता है कि उन्होंने विश्वास किया। हालाँकि, प्रभु ने अपने आप को उनके भरोसे पर नहीं "छोड़ा"। शब्द भरोसे छोड़ा वही है जो पद 23 में विश्वास किया है, परन्तु काल बदल गया है। "आश्चर्यकर्मों पर प्रतिक्रिया देनेवालों का विश्वास एक पूर्ण कार्य को दर्शाता है; "यीशु का विश्वास एक आदतन, निरन्तर कार्य के चलते रहने को इंगित करता है। उन्होंने उस पर विश्वास किया; उसे उन पर कोई सतत विश्वास नहीं था। यूहन्ना इसका कारण बताता है: "क्योंकि वह सब को जानता था; और उसे आवश्यकता न थी कि मनुष्य के विषय में कोई गवाही दे, क्योंकि वह आप ही जानता था कि मनुष्य के मन में क्या है" (2:24ब-25)। किसी व्यक्ति के अन्तरतम हृदय, स्थिति और चरित्र को जानने का यह गुण परमेश्वर का गुण है (यिर्मयाह 17:10; 20:12)। यहाँ परमेश्वर के सर्वज्ञानी होने को स्पष्ट रूप से बताया गया है। यह सार्वभौमिक ("वह सब को जानता था") और व्यक्ति विशेष ("वह आप ही जानता था कि मनुष्य में मन में क्या") था। उसे इसकी कोई आवश्यकता नहीं थी कि लोग अपने विचारों और भावनाओं को उसके सामने व्यक्त करें। उसके बिना भी वह उनके मन की बात बिना किसी चूक के पढ़ सकता था।

सम्पूर्ण घटना प्रभु के ज्ञान को दर्शाती है कि लोग कैसे हैं—मन्दिर को अपवित्र करनेवालों का लालच और धोखाधड़ी, यहूदी अगुवों का विरोध और क्रोध, "आश्चर्यकर्मों" के आधार पर विश्वास करनेवालों की अविश्वसनीयता को दर्शाती है। प्रभु उन सब के मन की बातों को जानता था।

C. नीकुदेमुस के साथ रात को भेंट (3:1-21)

जीवन के आत्मिक अविश्वास पर जय पाना

मन्दिर की शुद्धि का प्रभाव शासित महासभा के एक सदस्य पर पड़ा। नीकुदेमुस राष्ट्र के बुद्धिजीवियों और ऊँचे वर्ग के कुछ विचारशील लोगों के प्रतिनिधि के रूप में मसीह के पास आया। इस्राएल की पुनर्स्थापना और राज्य के शीघ्र उद्घाटन के लिये उसकी आशा मसीह की आधिकारिक प्रतिक्रिया से जागृत हो गई थी। उसने सोचा, मसीह को इसी तरह कार्य करना चाहिए। अब नासरत के इस उल्लेखनीय भविष्यद्वक्ता द्वारा किए जा रहे आश्चर्यकर्मों से नीकुदेमुस के मन में यह पुष्टि हो गई कि हो सकता है कि यीशु वास्तव में मसीह था।

नीकुदेमुस धनी, सम्मानित और धार्मिक था। वह एक सरदार था। परन्तु किसी तरह इनमें से कोई भी बात वह शान्ति और आनन्द नहीं ला सकी जिसकी वह चाह रखता था। शायद इस नये भविष्यद्वक्ता के पास इसी प्रकार की कुछ अंतर्दृष्टियाँ थीं।

तो ऐसा हुआ कि नीकुदेमुस, वास्तविक मनुष्य का एक अच्छा नमूना जिसे हम ढूँढ़ना चाहते हैं, ने अपना गौरव एक किनारे रख दिया और युवा उपदेशक के साथ एक निजी साक्षात्कार की माँग की।

1. संसार की सबसे बड़ी त्रासदी (3:1-10)

नीकुदेमुस की कहानी अपने व्यापक संदर्भ में संसार की सबसे बड़ी त्रासदी (3:1-10), संसार की सबसे बड़ी सच्चाई (3:11-15), संसार का सबसे बड़ा पाठ (3:16), और संसार की सबसे बड़ी परख (3:17-21) को हमारे सामने रखती है।

हम नीकुदेमुस और उसके विश्वास (3:1-2) के बारे में दो बातों पर ध्यान देते हुए शुरू करते हैं। वह "फरीसियों में का मनुष्य" और "यहूदियों का सरदार" था। फरीसी नाम उन्हें धार्मिक बहिष्कार, विश्वास और व्यवहार से अलगाववादियों के रूप में पहचानता है। वे व्यवस्था के पालन से सम्बन्धित: सब्त, दशमांश, खतना, औपचारिक शुद्धि, कुछ ही खाद्य पदार्थों का सेवन, उपवास, पवित्र दिनों को मानना जैसे सारे मामलों में सख्त थे। उन्होंने कहा कि मौखिक व्यवस्था उतना ही आवश्यक और उपयोगी था जितना कि लिखित व्यवस्था और वे इस प्रकार मसीह द्वारा निन्दा की गई उन "प्राचीनों की परम्पराओं" के पालन करनेवाले थे। जैसा कि कहा गया है, नीकुदेमुस एक फरीसी, एक विकसित धार्मिक विवेक वाला धर्मी मनुष्य था। वह यहूदियों का सरदार था, अर्थात् महासभा का सदस्य था। शीर्षक सरदार का प्रयोग रब्बी साहित्य में "महान व्यक्ति" या "राजकुमार" के लिये किया जाता है। रब्बियों की परम्परा नीकुदेमुस को यरूशलेम के तीन सबसे धनी मनुष्यों में से एक बनाती है।

वह अपने विश्वास के साथ यीशु के पास आया: "हम जानते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आया है, क्योंकि कोई इन चिह्नों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो तो नहीं दिखा सकता" (2:2)। इसमें नीकुदेमुस की गलती दिखाई देती है। उसने यीशु को एक उपदेशक के रूप में देखा। उसने जिस शब्द का इस्तेमाल किया वह डिडास्कलोस था। यह शब्द अपने साथ "रब्बी" का विचार रखता है। नीकुदेमुस (शायद शब्द हम का प्रयोग अपने आप को बहुत अधिक प्रतिबद्ध करने से बचने के लिये कर रहा था; सावधानी उसकी विशेषताओं में से एक रही है) जानता था कि यीशु ने किसी भी रब्बी स्कूल से शिक्षा प्राप्त नहीं की थी, परन्तु उसने विनम्रतापूर्वक उसे "हे रब्बी" कहा और परमेश्वर के साथ उसकी शक्ति को सावधानी से स्वीकार किया। इस प्रकार उसने किसी

भी दूसरे गुरु की तरह, यीशु को एक गुरु के रूप में स्वीकार किया, हालाँकि उसमें असाधारण शक्ति थी। जबकि, प्रभु ने उस प्रशंसा को स्वीकार नहीं किया, जिसमें तथ्यों की बहुत कमी थी।

प्रभु का उत्तर हमें नीकुदेमुस और उसके अंधेपन को दिखाता है (3:3-8)। अपने उत्तर में प्रभु ने इस बहुत अच्छे व्यक्ति, इस अत्यन्त धार्मिक अगुवे को बताया कि वह परमेश्वर के राज्य से कितना दूर था। हम ध्यान देते हैं कि उस पर नए जन्म की आवश्यकता कैसे व्यक्त की गई (3:3-5)। अपनी प्राकृतिक अवस्था में नीकुदेमुस न तो परमेश्वर के राज्य की कल्पना कर सकता था और न ही उसमें प्रवेश कर सकता था। यीशु ने कहा, "मैं तुम से सच सच कहता हूँ, यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता" (3:3)।

नीकुदेमुस उच्च्य गुणों वाला व्यक्ति था जिसे धर्म, शिक्षा और संस्कृति उत्पन्न कर सकते थे। पर उसका जीवन निराशाजनक था। इस प्रकार, एक बार फिर से उन लोगों के जीवन में कोई आधार नहीं बचता है जो सोचते हैं कि जन्म और प्रजनन, नैतिक शुद्धता और धार्मिक प्रशिक्षण, बाइबल की सच्चाइयों का ज्ञान और धार्मिक कर्तव्यों के प्रति समयबद्ध उपस्थिति, किसी मनुष्य को स्वर्ग में प्रवेश दिला सकती है। यहाँ यदि आवश्यकता है तो वह नए जन्म की है।

एक राजा के दो सलाहकार के बारे में एक पुरानी कहानी है, जिन्होंने अपने राजा को अपने निरन्तर तर्कों से थका दिया था कि किसी मनुष्य को एक सज्जन व्यक्ति के रूप में जन्म लेना चाहिए या नहीं, या क्या वह प्रशिक्षण, अनुशासन और अच्छी आदत से एक सज्जन बन सकता है। इसलिये राजा ने उन्हें महल से निकाल दिया और उन्हें संसार में जाकर अपने दावों के लिये निर्णायक प्रमाण खोजने का आदेश दिया। एक वर्ष बाद, उन दोनों को अपना प्रमाण प्रस्तुत करना था और अपने तर्क से उसे हमेशा के लिये सुलझाना था।

एक वर्ष बीत गया। वह सलाहकार जिसने कहा था कि कोई मनुष्य सज्जन व्यक्ति बन सकता है, वह बहुत दूर तक यात्रा कर चुका था। वह दूर देश में था और अभी तक उसे उसका प्रमाण नहीं मिला था। परन्तु एक दिन, वह एक सराय के किनारे उदास बैठा हुआ था और अचानक चौक उठा। उसने एक कप चॉकलेट मँगवाया था, और उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उसे सराय के मालिक की बिल्ली उसके पास ला रही थी। परन्तु ये कोई साधारण बिल्ली नहीं थी। इस बिल्ली को उसके पिछले पैरों पर खड़े होने के लिये प्रशिक्षित किया गया था। इसे एक छोटी सी वर्दी पहनाई गई थी और इसने अपने अगले पंजों में एक ट्रे को सन्तुलित करना सीख लिया था। सलाहकार ने मंत्रमुग्ध होकर देखा कि प्रकृति के विपरीत, चॉकलेट के कप के साथ ट्रे को सन्तुलित करते हुए बिल्ली धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ रही थी।

उसने तुरन्त ही बात में छिपे अर्थ को देख लिया। यदि एक बिल्ली को ऐसा काम करने के लिये प्रशिक्षित किया जा सकता है, तो एक मनुष्य को सज्जन बनने के लिये प्रशिक्षित क्यों नहीं किया जा सकता? इससे उसकी बात प्रमाणित हो गई। उसने एक बड़ी रकम खर्च की और अनोखे बिल्ली के बच्चे को खरीदकर अपने पास रख लिया और घर की ओर चल पड़ा।

बिल्ली की खबर फैल गई और उधर सलाहकार का प्रतिद्वंद्वी निराशा में डूब गया। वह भी दूर तक यात्रा कर चुका था परन्तु खाली हाथ घर लौट रहा था। उसे लग रहा था कि वह हार गया है। परन्तु फिर, राजा के सामने उपस्थित होने की निर्धारित तिथि से ठीक एक या दो दिन पहले, उसने एक दुकान की खिड़की में कुछ देखा जिससे उसके होठों पर मुस्कुराहट आ गई। उसने खरीदारी तो की परन्तु उसे किसी के देखने से छिपाकर रखा।

न्याय किए जाने के दिन पहले सलाहकार ने राजा के सामने प्रमाण के रूप में बिल्ली को प्रस्तुत किया कि एक व्यक्ति को इतना प्रशिक्षित किया जा सकता है कि वह सारे प्राकृतिक बाधाओं को पार कर सकता है और सभ्य व्यक्तियों में सबसे निपुण, एक सज्जन व्यक्ति बन सकता है। जैसे ही राजा अपने सिंहासन पर बैठा, छोटी दरबारी पोशाक पहने हुए, असाधारण बिल्ली अपने पिछले पैरों पर सावधानी से चलती हुई, राजा के पास चॉकलेट का एक ट्रे लेकर लाल कालीन पर धीरे-धीरे चलते हुए आई। प्रांगण तालियों से गूँज उठा। सब ने बिल्ली को प्रशंसा की दृष्टि से देखा और दूसरे सलाहकार की ओर दया की दृष्टि से देखा, जिसने कहा था कि मनुष्य को सज्जन व्यक्ति के रूप में जन्म लेना चाहिए।

परन्तु वह व्यक्ति तैयार था। राजा को प्रणाम देने के लिये उसने वह बक्सा खोला जिसमें उसके प्रमाण थे। सलाहकार ने आधा दर्जन सफेद चूहों को छोड़ दिया और बिल्ली तुरन्त अपना प्रशिक्षण और शिक्षा, अपना अनुशासन और आदत भूल गई। उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति सामने आ गई और, एक झटके में, भागते हुए चूहों के पीछे चली गई। चर्चा हमेशा के लिये सुलझ गई। कई घंटों बाद बिल्ली जोर-जोर से म्याऊँ म्याऊँ करते हुए वापस आई और उसकी दरबारी पोशाक अस्त-व्यस्त हो चुकी थी।

नीकुदेमुस में हम देखते हैं कि संस्कृति, धार्मिक शिक्षा और नैतिक प्रशिक्षण क्या कर सकते हैं। परन्तु पाप में डूबा मनुष्य अभी भी पाप में डूबा हुआ मनुष्य होता है, पाप की गिरी हुई प्रवृत्ति का शिकार है, जो उचित समय, स्थान, परिस्थिति और अवसर मिलने पर उस आवरण को उखाड़ फेंकता है जिसके साथ धर्म, संस्कृति, शिक्षा और नैतिक विवेक पुराने, गिरा हुए अड़ियल स्वभाव को ढके हुए होते हैं।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि यीशु ने नीकुदेमुस से कहा, “यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।” हम पहली बार पापी स्वभाव के साथ उत्पन्न हुए थे, परमेश्वर से विमुख होकर उत्पन्न हुए थे, पाप में उत्पन्न हुए थे और अधर्म में ढले थे, भटके हुए उत्पन्न हुए थे और खोए हुए अनन्त काल की ओर जा रहे थे, परदेशी और परमेश्वर के बैरी, बुरी इच्छाओं, बुरे कर्मों के शिकार, और एक बुरे स्वभाव के थे। हमें नये सिरे से जन्म लेने की आवश्यकता है।

एक बार एक व्यक्ति जॉर्ज व्हाइटफ़ील्ड के पास आया और पूछा, “आप हमेशा यह उपदेश क्यों देते हैं कि हमें फिर से जन्म लेना चाहिए?” उन्होंने उत्तर दिया, “क्योंकि,” “हमें नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है।”

यदि यहूदियों में से किसी ने सोचा कि वह स्वर्ग के राज्य का भागी है, तो वह व्यक्ति नीकुदेमुस रहा होगा। चुनी हुई जाति में जन्मा, इस्राएल के राष्ट्रमण्डल का सदस्य, आठवें दिन खतना किया हुआ, इब्रानियों का इब्रानी; व्यवस्था का माननेवाला, एक फरीसी; सच्चे भक्त के विषय में वह जो पुदीना, सौंफ और जीरा का दशमांश देता था; उस धार्मिकता को पूरा करना जो व्यवस्था में है, निर्दोष; और वास्तव में, वह जो गलील के एक भविष्यद्वक्ता की बात निष्पक्ष रूप से सुनने को तैयार है। एकमात्र व्यक्ति जो इस तरह के प्रतिष्ठा का दावा कर सकता था वह तरसुस का शाऊल था (फिलिप्पियों 3:4-6)। परन्तु मसीह के पास आने के बाद पौलुस ने उन सभी बातों का मूल्यांकन “शरीर पर भरोसा रखने” के रूप में किया (फिलिप्पियों 3:4)।

नीकुदेमुस को प्रभु का उत्तर समझ नहीं आया। उसने कहा, “मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो कैसे जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है?” (3:4)।

नीकुदेमुस के लिये यह कहा जाना चाहिए: जब प्रभु ने उसे नए जन्म की आवश्यकता के बारे में बताया तो उसने यह नहीं पूछा कि क्यों। उसने पूछा कैसे। कहीं न कहीं उसकी आत्मा की गहराई में प्रभु ने एक ऐसा राग छेड़ा था

जिससे गहरी इच्छाओं की गूँज जाग उठी जिसे कोई भी धर्म या नैतिक संहिता सन्तुष्ट नहीं कर सकती थी। नीकुदेमुस ने प्रभु को तर्कपूर्ण क्यों के साथ नहीं बल्कि आश्चर्यचकित कैसे के साथ प्रस्तुत किया।

प्रभु का उत्तर सरल और गहरा दोनों था: "मैं तुझ से सच सच कहता हूँ, जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता" (3:5)। उसके कथन का दुरुपयोग उन लोगों द्वारा किया गया है जो शिशु बपतिस्मा में विश्वास करते हैं और जो सोचते हैं कि फिर से जन्म के लिये मसीही बपतिस्मा आवश्यक है।

जल और आत्मा। ये शब्द हमें मूल सृष्टि (उत्पत्ति 1:2) में, सृष्टि के मूल रूप में, उस समय में वापस ले जाते हैं जब परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डराता था

जल और आत्मा। शब्दों का और जो भी अर्थ हो, उनका एक अर्थ था जिसकी नीकुदेमुस प्रशंसा कर सकता था, उसे समझ सकता था और उपयुक्त बना सकता था। प्रभु रहस्यमय तरीके से बातें और मूर्ख बनाने का प्रयास नहीं कर रहा था। वह नीकुदेमुस को नए जन्म के अनुभव में ले जाने का प्रयत्न कर रहा था। प्रभु प्रश्न कैसे का उत्तर दे रहा था। वह सत्य को छुपा नहीं बल्कि सत्य को प्रकट कर रहा था।

प्रभु के अर्थ को सुनिश्चित करने के प्रयास में हमें ऐतिहासिक औचित्य के नियम का पालन करना चाहिए। हमें अपने आप से पूछना चाहिए, "नीकुदेमुस को इन शब्दों से क्या समझना चाहिए था?" स्पष्टतः वह उनमें मसीही बपतिस्मा नहीं कहेगा क्योंकि प्रभु ने अभी तक वह आज्ञा स्थापित नहीं किया था और न ही वह कई वर्षों तक ऐसा करेगा। जल और आत्मा। कौन उन्हीं दो शब्दों का उपयोग करके लोगों को राजा और राज्य के आगमन के लिये तैयार करने के प्रयत्न में इस्राएल की अन्तरात्मा पर प्रहार कर रहा था? निस्संदेह, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला। नीकुदेमुस ने तुरन्त यूहन्ना के शब्दों के बारे में सोचा, "मैं तो जल से बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु मेरे बाद एक आनेवाला है, जो तुम्हें आत्मा से बपतिस्मा देगा।" यही इस प्रकार के गूढ़ कथन की कुंजी है।

यूहन्ना की सेवकाई की प्रमुख घटना उसका बपतिस्मा था, जो अनिवार्य रूप से मन फिराने का बपतिस्मा था। उसने घोषणा की, "मन फिराओ! राजा आनेवाला है।" हजारों लोगों ने प्रतिक्रिया दी थी। हालाँकि, धार्मिक अगुवों ने, जिनमें से नीकुदेमुस एक प्रतिनिधि था, यूहन्ना की सेवकाई और बपतिस्मा को अस्वीकार कर दिया था। उन्हें मन फिराने की कोई आवश्यकता नहीं दिखी। प्रभु ने नीकुदेमुस को यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के सन्देश की ओर वापस लाया, "जल" की आवश्यकता की ओर, जो कि यूहन्ना के बपतिस्मा का प्रतीक था।

वास्तव में वह नीकुदेमुस से यह कह रहा था: सिवाय इसके कि आप उस बात पर प्रतिक्रिया दें, कि यूहन्ना के बपतिस्मा का अर्थ मन फिराना था; सिवाय इसके कि आप, ऐसा कहें, "जल से उत्पन्न हुआ" है; सिवाय इसके कि तुम मन फिराके आओ; सिवाय इसके कि तुम यह प्रतिक्रिया दो कि मैं नए सिरे से जन्म लेने पर विश्वास करता हूँ; जब तक तुम वास्तव में "आत्मा से जन्मे" नहीं हो, तुम परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते। चुनौती यही थी —न यूहन्ना, न यीशु। मन फिराना और फिर से जन्म का अर्थ नए सिरे से जन्म लेना नहीं है, और नए सिरे से जन्म के बिना स्वर्ग का राज्य तुम्हारे लिये बन्द है।

प्रभु ने नीकुदेमुस पर नये जन्म की आवश्यकता व्यक्त की थी। अब, उसे नये जन्म की आवश्यकता समझाई गई (3:6-8)। उसने ऐसा उसे दो दृष्टान्त देकर किया। पहला दृष्टान्त अलग-अलग संसार से सम्बन्धित है (3:6-7) : "जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है। अचम्भा न कर कि मैं ने तुझ से कहा, 'तुझे नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है" (3:6-7)। नीकुदेमुस ने एक शारीरिक जन्म का अनुभव किया था

जिसने उसे इस संसार में लाया। उसे उस संसार का उत्तराधिकारी होने के लिये आत्मिक जन्म की आवश्यकता थी। यह प्रकृति और अनुग्रह का मौलिक नियम है। उत्पत्ति 1 का एक महान उपदेश है "जाति जाति के अनुसार।" कोई भी एक जाति किसी दूसरी जाति में विकसित नहीं हो सकती। बिल्लियाँ कुत्ते नहीं बनतीं, बन्दर मनुष्य नहीं बनते। प्रत्येक प्राणी अपनी प्रजाति के अनुसार प्रजनन करता है। इस प्रकार आदम अपनी पतित अवस्था में केवल अपनी तरह का ही प्रजनन कर सकता था। पापी मनुष्य केवल पापी मनुष्य को ही उत्पन्न कर सकते हैं। हमें अपने माता-पिता से जो विरासत में मिलता है वह पाप का एक स्वभाव है। हम अपने बच्चों को जो देते हैं वह पाप का स्वभाव है। हम अपने समान जाति को उत्पन्न करते हैं। जो शरीर से उत्पन्न होता है वह शरीर है; यह कभी भी किसी उच्च प्रकार के जीवन में विकसित नहीं हो सकता। शारीरिक जीवन कभी भी आत्मिक जीवन उत्पन्न नहीं कर सकता। वह एक अलग तरह का जीवन है।

यदि हमें आत्मिक जीवन पाना है तो हमें "आत्मा से जन्म लेना चाहिए।" पवित्र आत्मा को यह जीवन हमारी आत्माओं को प्रदान करना चाहिए। वह जो जीवन प्रदान करता है वह परमेश्वर का जीवन है। परमेश्वर ने मनुष्य को परमेश्वर में वास करने के लिये बनाया है। मनुष्य की आत्मा में पवित्र आत्मा का वास होना था। जब पाप आया, तो आत्मा बाहर चला गया। नए जन्म के आश्चर्यकर्म के द्वारा, पाप धुल हो जाता है, पवित्र आत्मा मनुष्य आत्मा में वास करने के लिये लौट आता है, और आत्मिक जीवन शुरू होता है।

यह एक आश्चर्यकर्म है। जो एक नया संसार खोलता है। एक सेवक मरते हुए डॉक्टर के हृदय तक पहुँचने का प्रयत्न कर रहा था। सेवक ने उससे मन परिवर्तन, क्षमा, उद्धार-मसीही सुसमाचार के केन्द्र में सभी विषयों के बारे में बात की। मरते हुए व्यक्ति पर उसकी बातों का कुछ भी असर नहीं हो रहा था। फिर उसने उससे नए जन्म के बारे में, नए जन्म की आवश्यकता के विषय में बात की और इससे आत्मज्ञान प्राप्त हुआ। कई वर्षों में डॉक्टर अनगिनत जन्म करवाने में भागी था। "एक नया जन्म!" उसने कहा, "क्यों, मुझे यही चाहिए। एक बच्चे का कोई अतीत नहीं होता—केवल भविष्य होता है। मुझे यही चाहिए।" और हम सब भी ऐसा ही करते हैं। "जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है" और शरीर के अलावा और कुछ नहीं हो सकता। "जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है," परमेश्वर के अपने अद्भुत संसार में परमेश्वर की सन्तान के रूप में अनन्त भविष्य से उज्ज्वल, परमेश्वर से जन्मा है।

प्रभु का दूसरा उदाहरण विभिन्न हवाओं से सम्बन्धित है (3:8)। "हवा जिधर चाहती है उधर चलती है और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता कि वह कहाँ से आती और किधर को जाती है? जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।" हवा के अपने नियम हैं। यह मनुष्य की माँगों और आदेशों के प्रति उत्तरदेह नहीं है। इसके मार्ग रहस्य से भरे हैं, इसके दिशा की बिना सूचना के बदलने की सम्भावना है।

यह कोई संयोग नहीं है कि यूनानी और इब्रानी में हवा और आत्मा के लिये शब्द समान हैं। आत्मा के मार्ग और हवा के मार्ग की प्रभु की तुलना उपयुक्त थी। दोनों के नियम बहुत कम मात्रा में ही ज्ञात हैं। दोनों अदृश्य हैं। दोनों को महसूस किया जा सकता है, और दोनों की उपस्थिति उनके प्रभावों में प्रकट होती है। पापी और पवित्र मनुष्य की आत्मा पर आत्मा की प्रतिक्रिया प्राकृतिक संसार में हवा की प्रतिक्रिया के समान है। जिस प्रकार एक पेड़ की शाखाएँ हवा के आने-जाने का संकेत देती हैं, उसी प्रकार किसी मनुष्य के विचार, शब्द और कर्म यह दर्शाते हैं कि किसी अदृश्य शक्ति ने उसे प्रभावित किया है। हवा धीरे-धीरे या तूफानी बल के साथ चल सकती है। यह वर्षा, आँधी और तूफान ला सकता है, या यह बादलों को दूर बहा ले जा सकता है।

उस रात नीकुदेमुस की आत्मा में आत्मा की हवा बह रही थी, परन्तु यह उसकी आज्ञा और आह्वान पर नहीं थी। इससे सबसे अच्छा होगा कि वह इसके कोमल प्रभाव के आगे झुक जाए, इससे पहले कि वह हमेशा के लिये चला जाए। यह जरूरी है कि जब पवित्र आत्मा किसी आत्मा का दौरा कर रहा हो; तो उसे दोषी ठहराने, परिवर्तित करने, नया जन्म लेने और शक्ति को नवीनीकृत करने के लिये आत्मा प्रतिक्रिया दे जब तक वह कर सके।

नीकुदेमुस क्रोध करनेवाला नहीं था, बल्कि केवल घबराया हुआ था। ऐसे व्यक्ति के साथ परमेश्वर बहुत धीरज धर सकता है। हम आगे नीकुदेमुस और उसकी घबराहट पर ध्यान देते हैं (3:9-10)। उसने कहा, “ये बातें कैसे हो सकती हैं?” नीकुदेमुस ने स्वीकार किया कि वह उसकी गहराई को समझ नहीं पा रहा है। वह मनुष्य व्यवस्था का सिखानेवाला था। वास्तव में, प्रभु ने उस से वही शब्द बोला जो उसने अपनी चर्चा के आरम्भ में इस्तेमाल किया था (डिडास्कलोस), अब थोड़ी विडम्बना के साथ: “तू इस्राएलियों का गुरु होकर भी क्या इन बातों को नहीं समझता?” (3:10)। इसमें कोई सन्देह नहीं कि नीकुदेमुस, जिसकी स्पष्ट रूप से एक गुरु के रूप में प्रतिष्ठा थी, ने फरीसी कानून सम्बन्धी कई सूक्ष्म बातें सिखाई थी। अब, दुःख की बात उसकी धार्मिक शिक्षा के लिये थी जिसने उसे बुनियादी सच्चाई से वंचित कर दिया था! प्रभु ने उसे यह बताकर शुरुआत की थी कि, नये सिरे से जन्म लिए बिना कोई परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता। व्यवस्था के इस प्रतिष्ठित गुरु की दो बार दोहराई गई बात से पता चला कि यह कितना सच था। परन्तु प्रभु अब तक उसके साथ नहीं था। इस आत्मिक त्रासदी का सामना करते हुए, प्रभु धीरज धरे हुए था।

2. संसार की सबसे महान सच्चाई (3:11-15)

प्रभु ने नीकुदेमुस के साथ अपनी चर्चा जारी रखी। उसने उसके सामने उद्धार का रहस्य रखा (3:11-12)। इस संक्षिप्त बातचीत में तीसरी बार प्रभु ने बल देते हुए “सच सच” कहा। महान सत्य प्रकट किए गए (3:11) : “मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि हम जो जानते हैं वह कहते हैं, और जिसे हम ने देखा है उसकी गवाही देते हैं, और तुम हमारी गवाही ग्रहण नहीं करते।” प्रभु ने रेत में मानो एक रेखा खींच दी हो। उस रेखा के एक ओर उसने हम शब्द लिखा। और दूसरी ओर उसने तुम शब्द लिखा। नीकुदेमुस अभी भी गलत लोगों का पक्ष ले रहा था। ऐसा प्रतीत होता है कि हम में प्रभु और उसके चेले शामिल हैं, जिन्होंने उसका निर्देश प्राप्त किया था। ऐसा लगता है कि तुम नीकुदेमुस और “अंधों के अंधे अगुवे” शामिल हैं, वे रब्बी जो परम्परा के सारे भार को उठाए हुए थे और आत्मिक सत्य से अज्ञान थे, जिनमें से वह वर्तमान प्रतिनिधि था।

यीशु ने कहा, “हम जानते हैं।” “हम ने देखा है।” नीकुदेमुस ने इस बातचीत की शुरुआत “हम जानते हैं” शब्दों के साथ की थी। उसने कहा था, “हम जानते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आया है” (3:1)। प्रभु ने अभी-अभी इस विद्वान अगुवे को बताया था कि उसे उन बातों की समझ नहीं है जो वास्तव में महत्व रखती हैं। नीकुदेमुस की बातचीत सर्वज्ञानी विद्वता, देहधारी बुद्धि—सत्य, पवित्र, सरल और ईश्वरीय व्यक्तित्व से आमने-सामने था। यीशु ने नीकुदेमुस के सामने अनन्त सत्य, अटूट निश्चितता, समझौता न करने वाला आश्वासन रखा। “हम जानते हैं।” “हम ने देखा है।” “देखा है” के लिये शब्द होराओ है, जिसका सामान्य रूप में अर्थ “आँखों से अनुभव करना” होता है। प्रभु नीकुदेमुस के सामने कोई बड़े दर्शन की बात, तर्क-वितर्क और ऊँची-ऊँची अटकलों का फल नहीं रख रहा था। वह उसके सामने कठिन सत्य रख रहा था, जिस तरह के सत्य एक प्रत्यक्षदर्शी न्यायपालिका में रखता है।

महान विश्वास की आवश्यकता है (3:12)। “जब मैं ने तुम से पृथ्वी की बातें कहीं और तुम विश्वास नहीं करते, तो यदि मैं तुम से स्वर्ग की बातें कहूँ तो फिर कैसे विश्वास करोगे?” परमेश्वर की बातें दो क्षेत्रों को समाहित करती हैं। “पृथ्वी की बातें” हैं, ऐसी बातें जिनका क्षेत्र पृथ्वी पर है। इस अर्थ में, जन्म लेना एक सांसारिक बात है। यह कुछ ऐसा है जिसे हम पृथ्वी पर अनुभव करते हैं। इसकी उत्पत्ति स्वर्गीय है परन्तु इसकी अभिव्यक्ति सांसारिक है। “स्वर्ग की बातें” भी हैं। परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु का प्रकाशन एक स्वर्गीय बात है। सहस्त्राब्दी राज्य की आशा एक सांसारिक बात है; परमेश्वर के राज्य का रहस्य एक स्वर्गीय बात है।

इन बातों के आत्मिक पक्ष को समझने के लिये विश्वास की आवश्यकता है। यदि नीकुदेमुस को पृथ्वी की सच्चाइयों को समझने में समस्या हो रही थी, तो उसका विश्वास स्वर्गीय सच्चाइयों को समझने के लिये कैसे बढ़ सकता था?

इसके बाद उद्धार का स्त्रोत आता है (3:13)। "कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, केवल वही जो स्वर्ग से उतरा, अर्थात् मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है" (3:13)। सम्भवतः इस अत्यधिक विवादित कथन को देखने का सबसे अच्छा तरीका इसे यूहन्ना की एक व्याख्यात्मक टिप्पणी के रूप में मानना है। यदि हम आज यह लिख रहे होते तो हम इसे कोष्ठक में या फुटनोट की जगह पर रखते। पिन्तेकुस्त में पवित्र आत्मा के आगमन ने बहुत कुछ स्पष्ट कर दिया जो चेलों के साथ-साथ नीकुदेमुस के लिये भी चकित और भ्रमित करने वाली घटना थी। बाद की घटनाओं के प्रकाश में, यूहन्ना नीकुदेमुस को कहे प्रभु के शब्दों पर यह प्रकाश डाल सका। प्रभु यीशु, उद्धार का स्त्रोत, स्वर्ग से आया था और इसलिये स्वर्ग की बातें जानता था, अपने जी उठे शरीर में, वह वापस स्वर्ग में चढ़ गया था जहाँ से वह आया था। दूसरे शब्दों में, प्रभु यीशु स्वर्ग की बातों पर इतने अधिकार के साथ बोल सकता था क्योंकि स्वर्ग उसका घर था। वह उसके बारे में सब जानता था।

कुछ निश्चित ज्ञान तक पहुँच पाना कितना सन्तोषजनक है। यह अटकलों और धार्मिक स्वप्न देखने वालों की निराधार दर्शन की बातों, मनोविज्ञानियों और भूतसिद्धि करनेवालों के धोखे, उन लोगों के भ्रम से कितना अच्छा है जिनकी आशा शैतानी स्त्रोतों से उत्पन्न होती हैं।

नीकुदेमुस के साथ यह साक्षात्कार उद्धार की सरलता के बारे में एक कथन के साथ समाप्त होता है (3:14-15)। प्रभु के पास इस मनुष्य के लिये एक और उदाहरण था जिसके लिये उसका प्राण निकल गया। “और जिस रीति से मूसा ने जंगल में साँप को ऊँचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए” (3:14)। इसका पूरा सच शायद नीकुदेमुस के मन में तब तक नहीं आया जब तक यीशु मसीह को क्रूस पर नहीं चढ़ाया गया—शायद तभी उसने अपने सन्देह और कठिनाइयों को एक ओर रख दिया और प्रभु के साथ अपना भाग्य जोड़ने लगा।

जैसा कि वह अक्सर करता था, प्रभु ने नीकुदेमुस को वापस पवित्रशास्त्र की ओर निर्देशित किया। रब्बी स्कूलों की व्यर्थ अटकलों और परम्पराओं की ओर नहीं, बल्कि गिनती 21:4-9 की ओर। उन्होंने इस इब्रानी विद्वान को पुराने नियम की वास्तविक व्याख्या का मूल्य सिखाया। "जिस रीति से... उसी रीति से..." पवित्रशास्त्र में ये शब्द अक्सर एक समानता का संकेत देते हैं।

प्रभु नीकुदेमुस को प्रतिज्ञा के देश की सीमाओं पर, मूसा के अन्तिम आश्चर्यकर्म के बारे में बता रहा था। पापी लोगों को उग्र साँपों ने डस लिया था। वे बिना आशा के मर रहे थे। मूसा को आज्ञा दी गई कि वह एक पीतल का साँप बनाए और उसे एक खम्भे पर लटकाए। उसे इस प्रकार “ऊँचे पर चढ़ाया” गया था जहाँ से सब देख सकते थे।

उद्धार प्राप्त करने के लिये साँप के डसे हुए इस्राएली लोगों को केवल उसकी ओर देखना था जिससे वे जीवित बच जाते (गिन. 21:8-9)। पीड़ित की नसों में बहते साँप के विष का समाधान तर्क के लिये मूर्खतापूर्ण था, परन्तु विश्वास के लिये जीवन था।

समानता स्पष्ट है। यीशु मसीह को कलवरी के क्रूस पर "चढ़ाया" गया था। इसलिये, सब नाश हो रहे पापियों के लिये, जो अपनी आवश्यकता को जानते हैं, व्यर्थ मानवीय उपचारों को त्यागने को तैयार हैं, विश्वास पर सब कुछ करने का साहस करते हैं, "ताकि क्रूस पर चढ़ाए गए को देखकर जीवन पाएँ।"

इन बातों के बारे में नीकुदेमुस से बात करने और उसके सामने एक रेखा चित्रण रखने में, प्रभु ने अपनी प्रबल "आवश्यकताओं" में से एक का उपयोग किया। "तुझे नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है," उसने नीकुदेमुस पर उसकी प्रबल आवश्यकता का दबाव डालते हुए कहा था। उसने उपाय की ओर इशारा करते हुए कहा, "उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए।"

उसने एक और व्याख्यात्मक बात कही। "अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए; ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह अनन्त जीवन पाए" (3:15)।

3. संसार का सबसे महान पद (3:16)

नीकुदेमुस के साथ प्रभु की बातचीत पद 15 में दिए गए कथन के साथ समाप्त होती प्रतीत होती है, इसलिये यहाँ से हमें यह यूहन्ना की प्रेरित टीका प्रतीत होती है, जो वहीं से शुरू होती है जहाँ से यीशु ने समान शब्दों के साथ उसे छोड़ी थी।

अब हम सुसमाचार सत्य के महान महानगर में आ गए हैं। बाइबल में कोई अन्य एकल कथन मनुष्य जाति के लिये मसीह में परमेश्वर के उद्धार के उद्देश्य को इतने उपयुक्त ढंग से प्रस्तुत नहीं करता है। इस पर बहुत सी पुस्तकें लिखी गई हैं। इसके प्रत्येक शब्द को तौला और परखा गया है और इस पर आश्चर्य किया और उपदेश दिया गया है। मसीह के न्याय आसन तक कौन जान पाएगा कि यूहन्ना 3:16 की खोज से आदम की नाश हुई जाति के कितने लाखों लोगों को स्वर्ग का मार्ग मिल गया है?

पद स्वयं दस शब्दों के आस-पास घूमता है: परमेश्वर, जगत, प्रेम रखा, पुत्र, दे दिया, जो कोई, विश्वास करे, नष्ट न हो, जीवन, पाए। ये दस शब्द ईश्वरीय प्रकाशन के गगन में "उद्धारक का चमकता तारामण्डल" बनाते हैं। उत्पत्ति 1 ("और परमेश्वर ने कहा") में परमेश्वर के रचनात्मक कार्य को दस आज्ञाओं में संक्षेपित किया गया है। परमेश्वर के छुटकारे के कार्य को निर्गमन 20 में दस आज्ञाओं में संक्षेपित किया गया है। परमेश्वर के उद्धार के कार्य को यहाँ यूहन्ना 3:16 में दस शब्दों में संक्षेपित किया गया है।

इन शब्दों को पाँच जोड़ियों में व्यवस्थित किया जा सकता है। हम देखते हैं (1) "परमेश्वर" और "पुत्र", देनेवाला और वरदान; उद्धार का कर्ता और सिद्ध करनेवाला; दो अनन्त, स्व-विद्यमान, परमेश्वरत्व के सदस्य जिसकी कोई सृष्टि नहीं है। हम देखते हैं (2) "प्रेम रखा" और "दे दिया", परमेश्वर की उदारता का दोहरा प्रकाशन; प्रेम, ऐसे वरदान की शर्त है, और वरदान, ऐसे प्रेम का प्रमाण है। हम देखते हैं (3) "जगत" और "जो कोई", सब लोग सार्वभौमिक रूप से, बिना किसी भेदभाव या अपवाद के; और प्रत्येक मनुष्य व्यक्तिगत रूप से, जैसे कि वह मनुष्य संसार में एकमात्र मनुष्य है। हम देखते हैं (4) "विश्वास करे" और "पाए" विश्वास का हाथ देनेवाले की ओर विश्वास के साथ बढ़ाया गया है, और विश्वास का हाथ वरदान, भरोसा और पूर्ण बदलाव से सन्तुष्ट होकर वापस

खींचा गया है। हम देखते हैं (5) “नाश” और “जीवन,” जो अपने पापों में मरनेवालों की अवर्णनीय हानि और उद्धारकर्ता में मरनेवालों का अन्त हीन जीवन है; दो अनन्त नियति नरक और स्वर्ग, दण्ड और आनन्द के बीच एक बड़ी खाई, भय और खुशी की चरम सीमा, दो मार्गों का अन्त: चौड़ा मार्ग जो विनाश की ओर ले जाता है और सकरा मार्ग जो अनन्त जीवन की ओर ले जाता है।

पद को ध्यानपूर्वक दस बार पढ़ना चाहिए, हर बार एक अलग शब्द पर जोर देना चाहिए। “क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।” फिर: “क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।” “परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया...” इत्यादि। अगला: परिणाम दस सार्थक मनन होंगे; उपदेशक के लिये दस महान उपदेश तैयार होंगे। पद अनन्त सत्य है। ईश्वरीय सत्य के सारे राजमार्ग इसी महानगर में मिलते हैं। यह समस्त प्रकट किए गए सत्य का केन्द्र है।

उदाहरण के लिये, हम सोचते हैं कि वह कौन है जो इस खोई हुई दुःखी संसार से प्रेम करता है। वह परमेश्वर है, अनन्त, स्व-विद्यमान, सृजा न गया, जिसे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है। वह, सर्वज्ञानी, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी परमेश्वर है। यह परमेश्वर, एलोहीम, यहोवा, अडोनाई, वह परमेश्वर है जिसने स्वयं को कई नामों से प्रकट किया है, जो अब अपने आप को शरीर में होकर आए प्रेम के रूप में प्रकट करता है। वह परमेश्वर है, जो ऊँचे पर विराजमान और ऊँचे पर उठाया गया है, जिसकी आराधना भव्य स्वर्गदूत, करूब और साराप करते थे, और जिसकी उपस्थिति में वे अपने पंखों से अपने मुँह को ढाँपे रहते और पुकार पुकारकर कहते हैं, “सेनाओं का यहोवा पवित्र, पवित्र, पवित्र है।” वह परमेश्वर, सृष्टि का निर्माता और पालनकर्ता है, जो तारकीय साम्राज्यों पर, आकाशमण्डल के बाद आकाशमण्डल पर, अन्तरिक्ष में घूमनेवाले शक्तिशाली जलते हुए गोले पर अपनी दृष्टि रखता है जो उसके द्वारा निर्धारित नियमों का पालन करते हैं। वह परमेश्वर ही है जो पहल करता है, परमेश्वर जो प्रेम करनेवाला और देनेवाला है। यूहन्ना 3:16, उत्पत्ति 1:1 और निर्गमन 20:1 की तरह, परमेश्वर से शुरू होता है। हम कुँवारी मरियम के लिये उस उत्साह से भयभीत हैं जिसके कारण अल्फोंसो मरिया देई लिगओरी ने अपनी पुस्तक, द ग्लोरीज़ ऑफ मेरी (1750) में लिखा: “मरियम ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया।” (टी. सी. हैमण्ड द्वारा उद्धृत, *The One Hundred Texts, London: The Society for Irish Church Missions, 1939, p. 18.*)। परन्तु, वास्तव में नहीं। वह परमेश्वर ही है जिसने जगत से इस प्रकार प्रेम रखा।

यह पद हमारे सामने परमेश्वर के हृदय की एक झलक प्रस्तुत करती है। “क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया...” यह ऐसा प्रेम है जो मृत्यु से भी अधिक प्रबल है, वह प्रेम जो मुझे स्थिर रखेगा, वह प्रेम जिसे बहुत सी जलधाराएँ भी नहीं बुझा सकतीं, वह प्रेम जो सबकुछ सह लेता है और दयावन्त है, वह प्रेम जो कभी टलता नहीं, वह प्रेम जो ज्ञान से भी बढ़कर होता है।

जब डी. एल. मूडी अपने एक क्रुसेड के समय इंग्लैंड में थे तो उनकी भेंट हेनरी मोरहाउस नाम के एक युवक से हुई। यह अंग्रेज इस अमेरिकी के प्रति बहुत आकर्षित था। कहानी यह है कि हेनरी मोरहाउस ने मिस्टर मूडी से पूछा कि यदि वह शिकागो आए तो क्या वह उसे अपनी कलीसिया में प्रचार करने का अवसर देंगे। इस सुसमाचार प्रचारक

ने काफी हल्के ढंग से सुझाव पर सहमति व्यक्त की, उसने कभी नहीं सोचा था कि उसे अपनी प्रतिज्ञा पूरी करनी होगी।

परन्तु उचित समय पर हेनरी मोरहाउस प्रतिज्ञा की जाँच के लिये मूडी के दरवाजे पर पहुँचे। न चाहते हुए भी मूडी ने अपने सहयोगियों को आश्वासन देते हुए अपना मंच सौंप दिया कि युवक एक रात में किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचा सकता और वह स्वयं मंच पर उसके पीछे होगा और स्थिति को सम्भाल लेगा।

उस रात हेनरी मोरहाउस ने यूहन्ना 3:16 को अपने प्रचार के रूप में लिया और परमेश्वर के प्रेम पर इतनी लगन और शक्ति के साथ उपदेश दिया कि आश्चर्यचकित मूडी ने उसे अगली रात फिर से बोलने के लिये आमन्त्रित किया। यह एक सप्ताह तक चलता रहा, प्रत्येक रात युवा अंग्रेज एक ही पद से बोलता रहा। मूडी अभिभूत था। वास्तव में तब हेनरी मोरहाउस को उस व्यक्ति के रूप में जाना जाने लगा जिसने लाखों लोगों को प्रेरित किया।

अपनी कड़ी की अन्तिम रात में, हेनरी मोरहाउस ने लोगों से कहा: "मैं आपको यह बताने का प्रयत्न कर रहा हूँ कि परमेश्वर आपसे कितना प्रेम करता है। काश ऐसा होता कि मैं याकूब की सीढ़ी उधार ले सकता। काश ऐसा होता कि मैं उस चमकती सीढ़ी से ऊपर चढ़ पाता जब तक कि मेरे पैर परमेश्वर के नगर के आँगन के नीले फर्श पर नहीं पड़ जाते। काश ऐसा होता कि मैं जिब्राईल, परमेश्वर के सन्देशवाहक को ढूँढ़ सकता, जो परमेश्वर की उपस्थिति में खड़ा रहता है। काश ऐसा होता कि मैं कह सकता, 'जिब्राईल, मुझे बताओ कि परमेश्वर जगत से कितना प्रेम करता है?' मैं जानता हूँ वह क्या कहेगा। वह कहेगा, 'हेनरी मोरहाउस, परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर जगत से इतना प्रेम रखता है।"

यह पद हमें परमेश्वर के मन का प्रकाशन भी देती है, विशेषकर दो पंक्तियों में। हमारे पास उसके पुत्र के सम्बन्ध में परमेश्वर का विचार है। निस्संदेह, यह कुछ मायनों में अनुवाद की एक घटना है, परन्तु यह आनन्ददायक है। ऐसा होता है कि हमारे पसंदीदा किंग जेम्स वर्जन में इस पद में पच्चीस शब्द हैं और मुख्य शब्द पुत्र है। अवश्य ही, यह बिल्कुल वैसा ही है जैसा इसे होना चाहिए।

परमेश्वर की सोच में, सब कुछ उसके पुत्र पर केन्द्रित है। परमेश्वर के पास इस संसार या किसी अन्य के लिये कोई योजना, कोई कार्यक्रम नहीं है, सृष्टि में या समय या अनन्त काल में कोई उद्देश्य नहीं है, जो उसके पुत्र में केन्द्रित न हो। कोई भी माप जिसमें हमारी सोच मसीह में केन्द्रित होती है वह वह माप है जिसमें हमारी सोच परमेश्वर के मन के अनुरूप होती है। कोई भी सोच जो मसीह-केन्द्रित नहीं है, वह अपने माप में परमेश्वर के मन के साथ सामंजस्य से बाहर है। हमारी योजनाओं और उद्देश्यों का पूरा होना केवल इस अनुपात में ही सफल हो सकते हैं कि वे परमेश्वर के पुत्र में केन्द्रित हैं या नहीं।

यहाँ भी, हमारे उद्धार के सम्बन्ध में परमेश्वर का विचार है: "जो कोई उस पर विश्वास करे..." फिर से हमें यीशु के पास वापस लाता है। वह वह है जो लोगों को उनके पापों से उद्धार देता है, जीवन की अनन्त पुस्तक में उनका नाम लिखता है, उनके लिये परमेश्वर के परिवार में जगह और स्वर्ग में घर सुरक्षित करता है।

शब्द जो इसे सक्रिय करता है वह शब्द विश्वास है। केवल और केवल, परमेश्वर हमें उसके पुत्र पर भरोसा करने के लिये कहता है। और, क्योंकि वह योग्य है "उन लोगों का पूरी रीति से उद्धार करने के लिये जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं," ऐसा करना कोई व्यर्थ बात नहीं है। सबसे घिनौने पाप, भयंकर पाप जिसे परमेश्वर क्षमा नहीं करेगा, वह उसके पुत्र पर विश्वास करने से इनकार करने का पाप है। मौखिक रूप से या फिर उसे यह

कहना कि, “मैं तुझ पर विश्वास नहीं करता,” यह सबसे बड़ा निरादर है जिसे कोई प्रभु के विरोध में करता है। जब किसी अवसर पर डी. एल. मूडी के पास कोई यह बहाना लेकर आया, “मैं विश्वास नहीं करता,” तब मूडी ने पूछा, “आप किस पर विश्वास नहीं करते?”

यह पद हमें परमेश्वर की इच्छा का प्रकाशन भी देती है। परमेश्वर “नहीं चाहता कि कोई नष्ट हो” (2 पतरस 3:9); यह एक महान प्रकट सत्य है। हमें यह पद कहती है कि जो कोई उस पर विश्वास करता है, वह “नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।” यह आदम के सब सन्तानों के लिये परमेश्वर की मन की इच्छा है। एक सीमित प्रायश्चित का विचार, कि परमेश्वर ने मानव जाति के कुछ चुने हुए समुदाय को, अलग किए लोगों को चुना और मसीह केवल चुने हुए लोगों के लिये मरा, परमेश्वर के प्रेम का निन्दा करना है। वह “सारे जगत के पापों के लिये” मरा (1 यूहन्ना 2:2)। सुसमाचार का प्रचार सब को किया जाता है। यह तब होता है जब कोई मनुष्य व्यक्तिगत पहलू देखता है कि उद्धार के आश्चर्यकर्म के होने के लिये मंच तैयार हो जाता है। लोगों के साथ व्यवहार करते समय कभी-कभी यह एक अच्छा विचार आता है कि उनसे पद में उनका नाम लिखवाया जाए जहाँ अधिक सामान्य शब्द आते हैं: “क्योंकि परमेश्वर ने जगत से (जॉन ब्राउन से) ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई (जॉन ब्राउन) उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।”

नष्ट हो। यह पापी को कंपा देने वाला शब्द है। यह परमेश्वर के चरित्र के दूसरे पक्ष का प्रकाशन है। वह न केवल अथाह प्रेम का परमेश्वर है, वह अनन्त पवित्रता का भी परमेश्वर है। परन्तु इसका अर्थ क्या है? एक बार एक मनुष्य इस पद के साथ अपनी समस्या के साथ सी. एच. स्पर्जन के पास आया और उससे पूछा कि क्या वह जानता है कि इसका क्या अर्थ है। उसने कहा, “हाँ, मैं निश्चय जानता हूँ।” “इसका अर्थ वही है जो यह कहता है।” शब्द नष्ट हो (अपोलेटाई) का अर्थ वही है जो यह कहता है। हम इसका प्रयोग चेलों को आँधी से घिरे झील में अपने डर की चरम सीमा के दौरान करते हुए पाते हैं, जब उन्होंने प्रभु को जगाया और कहा, “हे प्रभु, हमें बचा, हम नष्ट हुए जाते हैं” (मत्ती 8:25)। इस शब्द का अनुवाद यूसुफ को यीशु और मरियम को सुरक्षित मार्ग से मिस्र ले जाने के तत्काल आदेश में “मरवा डालना” है, “क्योंकि हेरोदेस इस बालक को ढूँढ़ने पर है कि उसे मरवा डाले” (मत्ती 2:13)। हम सभी ने लोगों को दाखरस और नशीले पदार्थों से, अनैतिक यौन सम्बन्ध और उससे होने वाली बीमारियों की घातक परिणाम से अपने शरीर को नष्ट करते देखा है। परन्तु परमेश्वर आत्मा को नष्ट करके पाप को कब्र से दूर अपना काम पूरा करने की अनुमति देने की चेतावनी देता है। आत्मा शरीर की तरह नष्ट नहीं होता; आत्मा अमर है। पापी अपने साथ अनन्त काल तक न बुझने वाली प्यास, बुरी लालसा और भूख, उन्मत्त लालसा और ज्वलन्त इच्छा, व्यर्थ अभिलाषा और उग्र बैरभाव, वासना और घृणा, छुपा हुआ-गर्म स्वभाव और मन को व्याकुल करने वाला डर लेकर आते हैं। वे विनाशकारी चरित्र लक्षण आत्मा को नष्ट करते रहते हैं और कभी भी सन्तुष्ट या शान्त नहीं होते हैं। शब्द नष्ट हो आत्मा की अन्तिम स्थिति को दर्शाता है, उन लोगों की भयानक स्थिति जो परमेश्वर की दृष्टि में “मलिन हैं, और मलिन बने रहते” हैं (प्रकाशितवाक्य 22:11)।

परन्तु यह वह नहीं है जो परमेश्वर हमारे लिये चाहता है। परमेश्वर चाहता है सब पश्चाताप करें। इसीलिये यूहन्ना 3:16 का निमन्त्रण सार्वभौमिक है, जो उस पर विश्वास करने पर निर्भर है। जो लोग ऐसा करते हैं, वे “अनन्त [सदाकाल के] जीवन” के उत्तराधिकारी बन जाते हैं। शब्द आइनिओस सुसमाचार के यूहन्ना के विवरण में सत्रह बार, उसकी पहली पत्री में छः बार और सहदर्शी सुसमाचारों के विवरणों में आठ बार पाया जाता है। हम अनन्त काल की सामग्री से निर्मित हैं। अनन्त जीवन। स्वयं परमेश्वर का जीवन। इस प्रकार यह महान वाक्य, जो सम्पूर्ण

सुसमाचार कहानी का सारांश देता है, परमेश्वर से शुरू होता है और अनन्त जीवन के साथ समाप्त होता है। इसका आरम्भ उससे होता है जिसका कोई आरम्भ नहीं था। इसका अन्त उसी से होता है जिसका कोई अन्त नहीं है।

4. संसार की सबसे बड़ी परख (3:17-21)

सच्चाई यह है कि यीशु मसीह संसार में आया, सारे लोगों को विश्वास करने या विश्वास न करने की अन्तिम परख में डालता है, यह चुनने के लिये कि क्या उन्हें पाप करते रहना है और निश्चित रूप से नष्ट हो जाना है या क्या उस पर विश्वास करना है और मृत्यु से जीवन में प्रवेश करना है। इस संसार में यीशु मसीह का आगमन सब के लिये अनन्त नियति का निर्णायक मोड़ है।

पहले, हम सोचते हैं यीशु क्यों आया (3:17)। "परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।" यूहन्ना 3:16-17 को समग्र रूप से देखने पर हम पाते हैं कि एक वाक्यांश "जगत... जगत... जगत बार-बार उभरकर आता है।" इस संसार की कुछ बातें परमेश्वर के प्रेम और करुणा को प्रकट करती हैं। यह पृथ्वी एक बलवा करनेवाला ग्रह है, जो अपने मार्ग से भटक गया है। यह परमेश्वर के चरित्र, उसकी पवित्रता, उसके प्रेम के लिये एक चुनौती है।

जब परमेश्वर का पुत्र पहली बार सृष्टि के सिंहासन से उतरकर पृथ्वी पर आया, तो यह परमेश्वर का प्रेम था जिसे वह प्रकट करने आया था। वह दण्ड की आज्ञा देने नहीं आया; परन्तु उद्धार देने आया था। अनुग्रह, "पाप पर परम अनुग्रह" का विषय था। परन्तु अनुग्रह की आत्मा के बावजूद कोई ऐसा न करे। जब अगली बार वह सृष्टि के सिंहासन से उतरकर पृथ्वी पर आएगा, तो यह परमेश्वर का क्रोध होगा जिसे वह प्रकट करेगा।

यहाँ शब्द "भेजा गया" अपोस्टेलो का अनुवाद है, वह शब्द जिससे हम अपना प्रेरित शब्द प्राप्त करते हैं। यह किसी को किसी मिशन पर दूत के रूप में भेजने का विचार रखता है। यह एक निश्चित मिशन के विचार और दूत में एक प्रतिनिधि चरित्र का भी सुझाव देता है। यीशु, स्वर्ग से इस संसार में भेजा गया राजदूत, परमेश्वर के सिंहासन का कोई सामान्य प्रतिनिधि नहीं था। यह प्रकट करने के लिये कि वह कितना आदर्श प्रतिनिधि था, सभी इक्कीस पत्रियों में इसके उल्लेख के अलावा, चारों सुसमाचार के विवरणों में इसका वर्णन मिलता है।

फिर हम सोचते हैं कि यीशु किसको दण्ड की आज्ञा देगा (3:18-19)। हालाँकि यह सच है कि पहली बार मसीह का मिशन दण्ड की आज्ञा देना नहीं था, मसीह की अभिव्यक्ति न्याय की एक प्रक्रिया और उन लोगों पर दण्ड की आज्ञा दोनों थी जिन्होंने उसे ग्रहण नहीं किया। उसके आने का उद्देश्य मेल, प्रेम, आनन्द और परमेश्वर के अनुग्रह की भलाई और महिमा प्रदान करना था। परन्तु जिन लोगों ने यह सब ठुकरा दिया, उनके लिये उसके आगमन का परिणाम अनिवार्य रूप से न्याय था।

"जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती [न्याय नहीं किया जाता]"; यह लोगों का एक वर्ग है। "जो विश्वास नहीं करता, उस पर दण्ड की आज्ञा पहले ही आ चुकी है [उसका पहले ही न्याय किया जा चुका है];" वह लोगों का दूसरा वर्ग है। यह कोई मन चाहे दण्ड की आज्ञा नहीं है, बल्कि यीशु मसीह को ग्रहण न करनेवाले मनुष्य के जीवन में पूर्ण व्यवस्था का अनिवार्य पालन है। एक मनुष्य जिसे ऐसी बीमारी है जिसे कुछ दवाई से ठीक किया जा सकता है, परन्तु जब वह दवाई लेने से इनकार कर देता है और परिणामस्वरूप अपनी बीमारी से मर जाता है, उसके लिये दोषी कोई और नहीं बल्कि वह स्वयं है। उसने उस उपाय को ठुकरा दिया। उसके जीवन में जो कुछ हुआ वह व्यवस्था, कारण और प्रभाव का निश्चित परिणाम था। पापियों के लिये भी यही

सच है। मसीह को ग्रहण न करके वे जो दण्ड पाते हैं, इसके जिम्मेदार वे स्वयं होते हैं। मसीह अनन्त जीवन देने आया। उन्होंने मृत्यु को चुना।

"और दण्ड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उनके काम बुरे थे" (3:19)। वे अब भी जानते हैं, और उनके काम अब भी बुरे हैं। अपने आप में यह एक बहुत ही महान पद है। कुछ लोगों की महानता शायद ही कभी पहचानी जाती है क्योंकि उनके ऊपर किसी करीबी का प्रभाव होता है। जिस प्रकार इसहाक की महानता उसके पिता अब्राहम और उसके पुत्र याकूब की महानता से ढकी हुई है। बरनबास की महानता पौलुस के प्रभाव से कम हो गई है। यही बात पद पर भी लागू होती है। सुसमाचार के यूहन्ना के विवरण की यह पद अकेले, सीधे और ऊँचे, अपने बल पर टिके रहने का जोखिम उठा सकती है। ऐसा शायद ही कभी होता है क्योंकि यह एक ही मोड़ पर तीन विशाल दरवाजों से ढका हुआ है—यूहन्ना 3:16। हर कोई यूहन्ना 3:16 पर प्रचार करता है, परन्तु यूहन्ना 3:19 पर कौन प्रचार करता है?

यह एक उत्तम क्रिसमस पद है। "ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उनके काम बुरे थे।" बैतलहम में, ज्योति ने इस अंधेरे जगत पर प्रवेश किया। ज्योति के बदले अन्धकार को अधिक प्रिय जानने वाले लोगों का एक उत्कृष्ट उदाहरण राजा हेरोदेस में देखा जाता है, जिसके कार्य वास्तव में बुरे थे। हेरोदेस—जिसने अपनी पत्नी के भाई, अपनी प्रिय पत्नी और अपने दोनों बेटों की हत्या करवा दी। हेरोदेस—जिसने हस्मोनियों के साधारण लोगों की मरवा डाला, जिसका प्रमुख खेल मदिरा पीते हुए उन कई सौ लोगों को अपने सामने क्रूस पर चढ़ाते हुए देखना था, जो उसकी प्रजा के लोग थे, जिसने अपने क्षेत्र के प्रत्येक प्रमुख नागरिक को अपनी मृत्यु से कुछ दिन पहले ही पकड़वाकर बन्दी बना लिया और निर्देश दिया कि, उसकी मृत्यु की खबर मिलते ही, उनमें से प्रत्येक की हत्या कर दी जाए। यदि कभी किसी मनुष्य के कर्म बुरे थे, तो वह हेरोदेस के थे। यदि कभी किसी मनुष्य ने ज्योति से अधिक अन्धकार को प्रिय जाना, तो वह हेरोदेस था। और जब ज्योति जगत में आई और उसने इसके बारे में सुना, तो उसने "अन्धकार की शक्ति" से ज्योति पर जय पाने के प्रयास में अपने लोगों को भेजकर बैतलहम के शिशुओं को मरवा डाला।

ज्योति जो प्रकट करती है उस कारण लोग इसे प्रिय नहीं जानते। यह हमें दिखाती है कि हम कहाँ हैं और क्या हैं। यह हमें दिखाती है कि संसार कितना अन्धकार का जगह है। यह मनुष्यों को दिखाती है कि वे कितना अन्धकार में जीते और बुरे हैं। और इसलिये हम ध्यान देते हैं कि यीशु इसकी तुलना किससे करता है (3:20-21) : वे जो ज्योति से बैर रखते हैं (3:20—"क्योंकि जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए") और जो ज्योति से प्रेम रखते हैं (3:21—" परन्तु जो सत्य पर चलता है, वह ज्योति के निकट आता है, ताकि उसके काम प्रकट हों कि वह परमेश्वर की ओर से किए गए हैं")।

D. यहूदी और यूहन्ना (3:22-36)

जीवन में दुःख से उत्पन्न चिन्तओं पर जीत

इस अध्याय के अन्तिम पद प्रभु की यरूशलेम यात्रा की अगली कड़ी हैं। वह पवित्र नगर में आया और मन्दिर की सराहनीय शुद्धिकरण करके अपने आप को मसीह के रूप में प्रकट किया। उस नाटकीय चिह्न को या तो अनदेखा कर दिया गया या उसकी गलत व्याख्या की गई। इसके बाद उसने नगर छोड़ दिया और यहूदिया के अधिक

ग्रामीण क्षेत्रों में चला गया। उसने स्पष्ट रूप से इस क्षेत्र में लाज़र और उसकी बहनों सहित, शमौन और यहूदा इस्करियोती को चेले बनाया।

1. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की गवाही (3:22-30)

इन अन्तिम आयतों को प्रभु के जीवन के उन दो व्यक्तियों के आस-पास समूहीकृत किया जा सकता है जिनका नाम यूहन्ना था। हम यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की गवाही से इसकी शुरुआत करते हैं (3:22-30)। हमारा ध्यान पहले यूहन्ना और उसके बपतिस्मा की ओर चला जाता है (3:22-27)। जिस स्थान के बारे में बताया गया है वह सुसमाचार के यूहन्ना के विवरण में समान महत्वपूर्ण टिप्पणी में से एक है। इन स्थानों को व्यवस्थित करना सहायक होगा।

27 ईस्वी यहूदिया शान्त वर्ष (1:1-42)

गलील (1:43-2:12)

यहूदिया (2:13-3:36)

सामरिया (4:1-42)

गलील (4:43-54)

28-29 ईस्वी यहूदिया का भीड़भाड़ वाला वर्ष (5:1-47)

गलील (6:1-7:9)

यहूदिया (7:10-10:21)

गलील (10:21-22 के बीच)

यहूदिया (10:22-39)

पीरिया (10:40-11:16)

30 ईस्वी यहूदिया का समापन वर्ष (11:17-20:31)

यहूदिया (21:1-25)

इन अवधियों के एक सामान्य सर्वेक्षण से पता चलता है कि पहली अवधि तुलनात्मक रूप से शान्त थी और एक वर्ष तक चली, प्रभु ने बारी-बारी से यहूदिया और गलील के बीच अपनी सेवकाई की। जब हेरोदेस अंतिपस ने बपतिस्मा देनेवाले यूहन्ना को बन्दी बना लिया (मत्ती 4:12; मरकुस 1:14; लूका 3:19-20; यूहन्ना 4:1-4), तो प्रभु गलील चला गया जहाँ उसने स्वयं को एक राजा के रूप में नहीं बल्कि भविष्यद्वक्ता के रूप में प्रकट किया। उसकी सेवकाई लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिये तैयार किया गया था। सुसमाचार के यूहन्ना के विवरण के पहले पाँच अध्याय तुलनात्मक शान्ति और शान्ति के इस वर्ष से सम्बन्धित हैं। इन अध्यायों के अलावा हम प्रभु के बपतिस्मा और यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के कारावास के बीच के वर्ष के बारे में बहुत कम जानते हैं।

बपतिस्मा देनेवाले यूहन्ना को शान्त रहने को कहना प्रभु का बपतिस्मा देनेवाले के सन्देश को दोहराते हुए उपदेश शुरू करने का संकेत था, "मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है" (मत्ती 4:12-17)। हालाँकि अगले दो वर्ष भीड़-भाड़ वाले वर्ष थे, यूहन्ना का सुसमाचार व्यावहारिक रूप से उन्हें अनदेखा करता है। अध्याय 6 एकमात्र स्थान है जहाँ यूहन्ना इस अवधि का उल्लेख करता है।

अगला संकट तब आया जब कैसरिया फिलिप्पी में शमौन पतरस ने अपना मसीहीयाई अंगीकार किया (6:68-69) और प्रभु ने अपने चेलों को बताना शुरू किया कि वह क्रूस पर चढ़ाया जानेवाला था (मत्ती 16:13-20)। प्रभु के जीवन के अन्तिम छः महीने क्रूस की छाया से अन्धकारमय हो गए थे। इस व्यस्त समय का अधिकांश समय पीरिया में बीता। सुसमाचार के यूहन्ना के विवरण में अध्याय 7-21 कैसरिया फिलिप्पी के बाद की घटनाओं से सम्बन्धित है।

प्रभु के जीवन में ये सामान्य गतिविधियाँ केवल सामान्य तरीके से चित्रित की गई हैं, परन्तु वे हमें यह महसूस करने में सहायता करती हैं कि क्या चल रहा था।

जैसे ही हम अपने सामने वाले आयतों पर लौटते हैं, यूहन्ना द्वारा दो अलग-अलग बपतिस्मा का उल्लेख किया गया है। यीशु का बपतिस्मा (3:22), हालाँकि 4:2 में कहा गया है कि बपतिस्मा वास्तव में प्रभु के चेलों द्वारा दिया जा रहा था। ऐसा प्रतीत होता है कि यह बपतिस्मा यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के बपतिस्मा के समान था, जो राज्य की तैयारी थी। हमें किसी भी बपतिस्मा को मसीही बपतिस्मा के साथ भ्रमित नहीं करना चाहिए, जो मसीह की मृत्यु का बपतिस्मा है (रोमियों 6:3) और जिसे प्रभु की मृत्यु के कुछ समय तक स्थापित नहीं की गई थी (मत्ती 28:19)।

यूहन्ना का बपतिस्मा (3:23-24) भी वहाँ ऐनोन ("जहाँ बहुत जल था") नामक स्थान पर दिया जाता था, जिसके बारे में कहा जाता है कि वह "शालेम के निकट" था। यह स्थान का कुछ लोगों द्वारा विवाद किया गया है, परन्तु स्पष्ट रूप से प्रेरित इसके बारे में अच्छी तरह से जानता था। दमिश्क मार्ग को उत्तर की ओर एबाल पहाड़ की तलहटी में सूखार से लगभग सात मील तक वादी फराह की सुन्दर घाटी तक ले जाना और फिर सात मील तक पूर्व की ओर घाटी से बहने वाली धारा का अनुसरण करते हुए, यात्री को हर मार्ग पर एक और घाटी का पता चलता है जो यूहन्ना की बपतिस्मा की सेवकाई के लिये उपयुक्त था। घाटी इतनी बड़ी है कि वहाँ लोगों की भीड़ रहती थी: यरूशलेम के रब्बी और शासक, चुंगी लेनेवाले और किसान, सामान्य लोग, यहाँ तक कि रोमी सैनिक भी अब भी यूहन्ना की सभाओं में आते थे। एक बारहमासी जलधारा और कई झरने जलाशय प्रदान करते हैं। यह यूहन्ना के प्रचार और बपतिस्मा के लिये एक आदर्श स्थान था। प्रेरित उन शुरुआती दिनों को स्मरण करते हुए कहता है, "यूहन्ना उस समय तक जेलखाने में नहीं डाला गया था।"

बूढ़ा प्रेरित अब उस बोझ से चिन्तित है जो प्रभु के राजदूत पर पड़ा था (3:25-27)। इसकी शुरुआत यूहन्ना के कुछ चेलों और "यहूदियों" (कुछ अनुवादों में "यहूदी") के बीच "शुद्धिकरण" के बारे में या जैसा कि हम मान सकते हैं, बपतिस्मा के महत्व जैसा कि यूहन्ना का था के बारे में वाद-विवाद से हुई, जिसका पुराने नियम में कोई आधार नहीं था। किसी भी मामले में, इस बात पर ध्यान दिया गया कि यीशु भी लोगों को बपतिस्मा दे रहा था और उसकी सफलता अब यूहन्ना से अधिक देखी जा रही थी। उन्होंने कहा, "सब उसके पास आते हैं।" स्पष्ट है, यूहन्ना के चेलों ने यीशु को एक ऐसे मनुष्य के रूप में देखा जिसकी सफलता का श्रेय बपतिस्मा देनेवाले की गवाही को

जाता है। उन्होंने यीशु की गतिविधियों को अपने स्वामी के विशेषाधिकारों पर आक्रमण के रूप में देखा जिसके परिणामस्वरूप उनके मन में उसके प्रति शत्रुता उत्पन्न हो गई।

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला ऐसी संकीर्णता और साम्प्रदायिक भावना से ऊपर था। उसने कहा, "जब तक मनुष्य को स्वर्ग से न दिया जाए, तब तक वह कुछ नहीं पा सकता" (3:27)। यूहन्ना की ज़िम्मेदारी परमेश्वर द्वारा मसीह के अग्रदूत बनने के लिये उसे सौंपी गई ईश्वरीय आज्ञा का निर्वहन करना था; जहाँ तक यीशु की बात है, उसकी सफलता के लिये परमेश्वर को धन्यवाद दें! मसीह के रूप में, वह भी स्वर्ग में उसके लिये निर्धारित मार्ग पर प्रवेश कर रहा था। तो फिर, उसकी सफलता पर अप्रसन्न होना कितना मूर्खतापूर्ण है; यह आनन्द मनाने का विषय था, अप्रसन्नता का नहीं। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला आदतन जलन करने की उस बुरी भावना से मुक्त था जो कुछ प्रचारकों की मनसा को तब पकड़ लेती है जब वे सेवकाई में किसी ऐसे मनुष्य के बारे में सोचते हैं जो उनसे अधिक सफल होता हुआ दिखाई देता है।

फिर हमारा ध्यान यूहन्ना और दूल्हे की ओर आकर्षित होता है (3:28-30)। पहले यूहन्ना का सकारात्मक इनकार आता है (3:28)। "तुम तो आप ही मेरे गवाह हो कि मैं ने कहा, 'मैं मसीह नहीं, परन्तु उसके आगे भेजा गया हूँ" (3:28)। यूहन्ना अपने चेलों की नीरसता पर आश्चर्यचकित और निराश था। इसके बाद यूहन्ना की व्यक्तिगत प्रसन्नता आती है (3:29)। "दूल्हे के मित्र" के रूप में उसका काम दुलहिन का हाथ माँगना, विवाह की प्रारम्भिक व्यवस्था करना और दूल्हा और दुलहिन के स्वागत की देखरेख करना था। उसने यही किया था। उसके हर्ष का प्याला छलक उठा क्योंकि अब हर कोई अपने शब्द के बदले दूल्हे के शब्द सुन सकता था। इसके बाद यूहन्ना की प्रमुख इच्छा (3:30) आती है, जिसने उसे वास्तव में एक महान व्यक्ति के रूप में चिह्नित किया। वह जानता था कि उसका काम लगभग समाप्त हो चुका है। उसने कहा, "अवश्य है कि वह बढ़े और मैं घटूँ।" वह अब अधिकाधिक अपने कार्य को समाप्त करने पर था। पकड़वाया जाना और जेल में डाले जाने से पहले इस महान और साहसी व्यक्ति के दर्ज किए गए ये अन्तिम शब्द हैं। बाद में एक बार वह जेल से अपनी बात कहता है। जो रहस्य है, वह शहीद हो गया और उसका जीवन समाप्त हो गया।

2. प्रिय यूहन्ना की गवाही (3:31-36)

अब हमारे पास नई गतिविधियों की शुरुआती दिनों से जुड़ी इन घटनाओं पर बूढ़े प्रेरित के विचार हैं, जिसका वह अन्तिम जीवित गवाह है।

वह पहले परमेश्वर की गवाही के विषय में कहता है (3:31-33)। इस गवाही को पर्याप्त रूप से बताया गया है (3:31) : "जो ऊपर से आता है वह सर्वोत्तम है; जो पृथ्वी से आता है वह पृथ्वी का है, और पृथ्वी की ही बातें कहता है : जो स्वर्ग से आता है, वह सब के ऊपर है।" वाक्यांश "पृथ्वी का" तीन बार दोहराया गया है। यह सब पृथ्वी के दूतों की सीमाओं को व्यक्त करता है, तब भी जब उन्हें ईश्वरीय सन्देश सौंपा गया हो। यहाँ तक कि उसके शब्द भी "पृथ्वी की" हैं। उसके पास पृथ्वी की बातों का खजाना है। यह यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के लिये भी सच था, जिसे यीशु ने जो स्त्रियों से जन्मे हैं उससे कोई बड़ा नहीं हुआ कहा था (मत्ती 11:11; लूका 7:28)। पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता—मूसा और मलाकी, दाऊद और दानिय्येल, योना और यिर्मयाह जैसे मनुष्य—"पृथ्वी के" थे। उनकी मानवीय सीमाएँ थीं। परन्तु इसके विपरीत, "जो ऊपर से आता है वह सर्वोत्तम है... जो स्वर्ग से आता है, वह सब के ऊपर है।" तीन बार दोहराया गया शब्द ऊपर तीन बार दोहराए गए वाक्यांश "पृथ्वी का" के विपरीत है।

प्रभु यीशु सामान्य मानव दूतों द्वारा महसूस की जाने वाली सीमाओं से मुक्त था। वह स्वर्ग से था। उसे स्वर्गीय बातों का, परमेश्वर के अनन्त सलाह का पूरा ज्ञान था। इस प्रकार हम इब्रानियों के उस उत्कृष्ट आरम्भिक कथन में पढ़ते हैं: "पूर्व युग में परमेश्वर ने बापदादों से थोड़ा थोड़ा करके और भाँति–भाँति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कर, इन अन्तिम दिनों में हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं" (इब्रानियों 1:1-2)। यह भाषान्तरण करनेवाले के द्वारा सुननेवालों से बात करने और उनसे उनकी अपनी भाषा में बात करने के बीच के अन्तर जैसा है।

उसकी गवाही पर वास्तव में विश्वास नहीं किया गया है (3:32) : "जो कुछ उस ने देखा और सुना है, उसी की गवाही देता है; और कोई उसकी गवाही ग्रहण नहीं करता।" कितने आश्चर्य की बात है। यह सिर्फ आत्मा द्वारा प्रेरित भविष्यद्वक्ता नहीं था, और जबकि परमेश्वर की उपस्थिति से आया स्वर्गदूत भी नहीं था, बल्कि स्वयं परमेश्वर था जो आया। और लोगों ने सचमुच उस पर विश्वास नहीं किया—और अब भी नहीं करते।

"जो कुछ उसने देखा और सुना है।" ये एक निर्दोष गवाह की पहचान हैं। समय शुरु होने से बहुत पहले, एक स्वर्गदूत के पंख की सरसराहट ने अनन्त काल की चुप्पी को भंग कर दिया, तब परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र, और परमेश्वर पवित्र आत्मा ने सृष्टि पर कार्य करने का निर्णय लिया। उन्होंने इस सम्भावना को स्वीकार किया कि यदि उन्होंने सृष्टि पर कार्य किया और एक प्राणी—मनुष्य बनाया—और उसे बुद्धि, भावनाएँ और इच्छाशक्ति प्रदान करते हैं, तो उन्हें उद्धार पर भी कार्य करना होगा। यीशु वहाँ था। इसलिये जब सुसमाचार के यूहन्ना के विवरण में हम बार-बार उसे अपने पिता के साथ अन्तरंग और अन्य—आयामी, अलौकिक पूर्वकालानुक्रमिक बातचीत के विषय में बात करते हुए पढ़ते हैं तो हम उसके शब्दों पर विश्वास कर सकते हैं। वह उन बातों के विषय में बात कर रहा है जो उसने देखा और सुना है।

जब हमने उसे आदम और हव्वा तथा अदन के बगीचे के संदर्भ में विवाह के विषय में बात करते हुए सुना, तो वह वहीं था। यह कुछ ऐसा था जिसे उसने देखा और सुना था। जब उसने नूह, जहाज़ और जलप्रलय के विषय में बात की, तो वही हुआ। यह कुछ ऐसा था जिसे उसने देखा और सुना था। जब उसने अब्राहम या नूह या यशायाह या दाऊद या दानिय्येल के विषय में बात की, तो ये वे लोग थे जिन्हें उसने देखा और सुना था। जब उसने सदोम और अमोरा को नष्ट करने के विषय में बात की, तो वह वहाँ था। उसने देखा और सुना था। लूत से कहीं अधिक, उसका धर्मी मन "अधर्मियों के अशुद्ध चालचलन से बहुत दु:खी था" (2 पतरस 2:7-8), जिसे वह जानता था।

जब उसने "एक भारी गड़हा ठहराया गया है" के विषय में बात की और नरक में आत्मा की पीड़ा का वर्णन किया, तो उसने यह देखा और सुना था। जब वह अपने पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं के विषय में बात कर रहा था तो वह उन बातों के विषय में बात कर रहा था जो उसने देखी और सुनी थी। जब उसने भविष्य के विषय में, कलीसिया के निर्माण के, इस्राएल राज्य के अन्तिम नए जन्म और भविष्य के मन्दिर की अपवित्रता और आने वाले महान क्लेश के विषय में बात की, तो वह ऐसे व्यक्ति के रूप में बात कर रहा था जो हमारे स्थान—एक निश्चित वर्तमान काल में समय आयामी सीमाओं के बाहर खड़ा था और जिसे देखा और सुना था। वह "स्वर्ग से" आए व्यक्ति के रूप में बातें कह रहा था। यूहन्ना कहता है, "और कोई उसकी गवाही ग्रहण नहीं करता।" सत्य जो देहधारी हुआ ने बातों को कहा, पर उसकी बात पर वास्तव में विश्वास नहीं किया गया।

परन्तु उसकी गवाही सचमुच मानने योग्य है (3:33) : "जिसने उसकी गवाही ग्रहण कर ली उसने इस बात पर छाप लगा दी है कि परमेश्वर सच्चा है।" इस कथन के पीछे का विचार किसी कानूनी दस्तावेज़ पर आधिकारिक मुहर लगाकर उसकी पुष्टि करना है। यीशु परमेश्वर का आदर्श गवाह है। उसकी बातों का तात्पर्य सम्बन्धित होना नहीं

है, बल्कि वास्तविक अर्थ में सत्य है। जब वह बातें करता है, तो परमेश्वर ही बातें करता है। इसलिये, जो लोग यीशु की गवाही ग्रहण करते हैं वे परमेश्वर की सत्यता को प्रमाणित करते हैं।

इस प्रकार परमेश्वर की गवाही की पुष्टि करने के बाद, यूहन्ना ने परमेश्वर की सच्चाई के विषय में एक और कथन के साथ इस खण्ड को समाप्त किया (3:34-36)। प्रत्येक शब्द अर्थपूर्ण है। यहाँ परमेश्वर के आत्मा (3:34) का एक संदर्भ है: "क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बातें कहता है; क्योंकि वह आत्मा नाप नापकर नहीं देता।" हमारे प्रभु का मनुष्य होना किसी भी तरह से उसके लिये परमेश्वर की बातें कहने से रुकावट नहीं बना। माध्यम जिसके द्वारा वह परमेश्वर का पुत्र, मनुष्य के रूप में परमेश्वर की बातें कहता था, वह परमेश्वर का आत्मा था। निस्संदेह, पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के पास परमेश्वर का आत्मा का था जो उन्हें परमेश्वर की बातों को कहने में सक्षम बनाता था ताकि हम पवित्रशास्त्र की पूर्ण, मौखिक प्रेरणा की पुष्टि विश्वास के साथ कर सकें। परन्तु इन लोगों के साथ आत्मा का वरदान आंशिक और रुक-रुक कर था (1 पतरस 1:11; इब्रानियों 1:1)। परन्तु यीशु को पवित्र आत्मा इस प्रकार नहीं दिया गया था। उसकी कल्पना पवित्र आत्मा से की गई थी, वह पवित्र आत्मा के द्वारा वास करता था, अपनी पहली श्वास से ही पवित्र आत्मा से भरा हुआ था और अपनी बपतिस्मा के समय से पूरी तरह से आत्मा द्वारा अभिषिक्त किया गया था। "परमेश्वर आत्मा नाप नापकर नहीं देता।" उसमें "ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है" (कुलुस्सियों 2:9)। शब्द देता है वर्तमान काल में है, जो उसके जीवन में आत्मा के निरन्तर और बिना रुके प्रवाह का संकेत देता है।

यहाँ परमेश्वर के पुत्र (3:35) का एक संदर्भ है: "पिता पुत्र से प्रेम रखता है (अगापाओ), और उसने सब वस्तुएँ उसके हाथ में दे दी हैं।" प्रेम का पैमाना उसके देने की प्रकृति से पता चलता है।

अन्त में, परमेश्वर के उद्धार का एक संदर्भ है (3:36) : "जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।" एक बात जिसे परमेश्वर क्षमा नहीं करेगा वह है उसके पुत्र का इनकार, उस पर अविश्वास या उसके साथ उदासीनता का व्यवहार करना। जो लोग ऐसे अपमानजनक काम करते हैं उनकी आत्मा की दशा इतनी भयावह होती है कि उन पर न केवल परमेश्वर का क्रोध भड़कता है: बल्कि वास्तव में यह उन पर बना रहता है। वाक्यांश "परमेश्वर का क्रोध" का उपयोग परमेश्वर के धर्मी न्याय की एक विशिष्ट अभिव्यक्ति को दर्शाने के लिये किया जाता है (रोमियों 1:18)। इसका उपयोग विशेष रूप से परमेश्वर के आने वाले क्रोध के लिये किया जाता है, जैसा कि अन्त समय की घटनाओं मसीह को ग्रहण न करने पर, परमेश्वर से बैर रखने पर, संसार की बातों को प्रिय जानने पर (1 थिस्सलुनीकियों 2:16; प्रकाशितवाक्य 11:18; 16: 19; 19:15) वर्णित है।

E. कुएँ पर स्त्री (4:1-42)

जीवन के घृणित पापों पर जय पाना

नीकुदेमुस और कुएँ पर आई स्त्री के बीच देखे गए विरोधाभास से अधिक शायद ही कोई दूसरा हो सकता है। एक पुरुष था, दूसरी स्त्री; एक यहूदी था, दूसरी सामरी; एक सम्मानित सरदार था, दूसरा सामाजिक बहिष्कृत; एक को नैतिक पुरुष के रूप में देखा जाता था, दूसरे को अनैतिक स्त्री के रूप में; एक रात को यीशु के पास आया, और दूसरा दोपहर को; एक के पास कोई तर्क नहीं था, केवल आश्चर्य था कि कैसे, दूसरा प्रश्नों और तर्क-वितर्क से भरा; एक सतर्क था, दूसरा साहसी; ऐसा प्रतीत होता है कि एक को पता नहीं था कि वह क्या चाहता है, दूसरा बातों का बहुत ज्ञान रखता था; एक बिना ध्यान दिए कहानी से गायब हो जाता है, दूसरा अपनी भीड़ में वापस

जाकर उन सब को यीशु के पास ले आता है; एक वह जिसके बारे में हम फिर से सुनते हैं (7:50; 19:39), दूसरा पितृसत्ता के समाज में स्त्रियों की सामान्य अदृश्यता में खो जाता है।

हम कुएँ पर स्त्री की कहानी को तीन भागों में देखेंगे। हम यहाँ शुरुआत मार्ग से होकर जाने से करते हैं (4:1-8), हम चर्चा को देखेंगे, जो अब तक का सबसे लम्बा खण्ड है (4:9-30) और हम चेलों के साथ समाप्त करेंगे (4:31-42)।

1. मार्ग से होकर जाना (4:1-8)

मार्ग से होकर जाना एक आवश्यक मार्ग (4:1-6) के संदर्भ से शुरू होता है। प्रभु को "सामरिया से होकर जाना अवश्य था।" यह सब एक योजना का हिस्सा था। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रभु ने समय से पहले फरीसियों के साथ एक दूसरे के सामने आने से बचने के लिये उस क्षेत्र को छोड़ दिया जहाँ उसके चेले बपतिस्मा देते थे। शायद उसके चेले इस खबर पर यूहन्ना के पीछे चलनेवालों के बीच बढ़ते विवाद में हस्तक्षेप करने के लिये बहुत उत्सुक थे कि यीशु उनके गुरु की तुलना में अधिक लोगों को बपतिस्मा दे रहा था—जबकि बपतिस्मा की संख्या गिनने और परिणामी संख्याओं पर प्रतिस्पर्धी भावना रखने का सत्य से कोई लेना-देना नहीं था। प्रभु ऐसा कुछ नहीं चाहता था। जैसा कि हमने देखा, यूहन्ना भी नहीं चाहता था। यूहन्ना ने अपने चेलों को डाँटा; यीशु वहाँ से चला गया।

यह शायद महत्वपूर्ण है कि फरीसी यूहन्ना और यीशु के चेलों के बीच विवाद उत्पन्न करने के लिये उत्सुक थे। ये फरीसी ही थे जिन्होंने प्रभु के अधिकांश सेवकाई में सबसे अधिक विरोध में बोलकर अविश्वासी राष्ट्र का प्रतिनिधित्व किया। लाज़र के जिलाए जाने के बाद तक सदूकियों ने विपक्ष के शासन पर नियन्त्रण नहीं किया और उसके बाद राष्ट्र को कलवरी के अपराध की ओर धकेल दिया। परन्तु यूहन्ना ने कभी भी इस उच्च वर्गीय और धर्म के ज्ञाता के रूप से उदार दल का नाम लेकर उल्लेख नहीं किया।

यूहन्ना कहता है, "तब वह यहूदिया को छोड़कर फिर गलील को चला" (4:3)। "छोड़कर" के लिये शब्द एथेकेन है, और नए नियम में इस शब्द के उपयोग का कोई सटीक समानान्तर नहीं है। यह शब्द जो विचार व्यक्त करता है वह यह है कि किसी बात को उस पर, उसके भाग्य पर छोड़ देना, किसी को उसके हाल पर छोड़ देना, जो भी नियन्त्रण शक्ति पहले प्रयोग की गई थी उसे वापस ले लेना। यह एक महत्वपूर्ण शब्द है। अब से यीशु की अधिकांश सेवकाई गलील और अन्य जगहों पर होगी। वह यरूशलेम और यहूदिया को उनके हाल पर छोड़ देगा। वास्तव में, प्रतीकात्मक अर्थ से भरे निर्णय में, ऐसा लगता है कि उसने जानबूझकर सामरिया के तिरस्कृत जिले से होकर गलील की यात्रा करने का मन बना लिया था। अपने नियमों अनुसार चलनेवाले यहूदी हमेशा सामरिया से दूर रहते थे। वे सामरी लोगों के साथ किसी भी सम्पर्क से अपने आप को दूषित होने से बचाने के लिये यरदन को पार करते थे और एक लम्बी दूरी तय करते थे।

इस योजना का अनुसरण करते हुए, प्रभु अन्त में "सूखार नामक सामरिया के एक नगर तक आया, जो उस भूमि के पास है जिसे याकूब ने अपने पुत्र यूसुफ को दिया था।" याकूब का कुआँ वहीं था और यीशु "मार्ग का थका हुआ उस कुएँ पर योंही बैठ गया" (4:6)। हमारे प्रभु की स्थिति थी; थका हुआ, गर्मी से चूर, शायद आराम करने के लिये लम्बी लम्बी श्वास लेता हुआ।

कुछ लोगों ने यूहन्ना द्वारा यहाँ बताए गए नगर की पहचान नब्लुस (प्राचीन शकेम) से की है, जो याकूब के कुएँ से लगभग डेढ़ मील पश्चिम में है। ऐसा लगता है कि वास्तविक सूखार अस्कार है, जो कुएँ से मुश्किल से आधा मील उत्तर में है। यह उन छोटी दीवारों वाले गाँवों में से एक था जो पलिश्तीन की हर छोटी पहाड़ी पर स्थित था।

कुछ लोगों ने सोचा है कि सूखार नाम का अर्थ "कब्र का नगर" है, जो इस बात का संदर्भ है कि यूसुफ की कब्र वहाँ थी।

याकूब का कुआँ पवित्र भूमि के उन कुछ स्थानों में से एक है जिसके बारे में कोई विवाद नहीं है। कुआँ मूल रूप से बहुत गहरा था (वर्ष 1697 में 105 फूट मापा गया था)। इसका व्यास साढ़े सात फूट था और इसे दस फूट की गहराई तक चिनाई के साथ बनाया गया था, जिसके नीचे वास्तव में इसे ठोस चट्टान से काटा गया था। यूसुफ की कब्र कुएँ से केवल चार सौ गज उत्तर में है।

इसलिये, जैसे ही यीशु "छठे घण्टे" (यहूदी समय गणना के अनुसार दोपहर) में थककर कुएँ पर बैठ गया, धूप तेज होने लगी। थका हुआ यात्री पानी पीना चाहता था। एक महत्वपूर्ण बातचीत का अब समय आ चुका था। "जाना अवश्य था" (4:4) के पीछे का कारण हम जानने वाले हैं। प्रभु अपने चारों ओर हर जगह इब्रानी लोगों के पवित्र इतिहास के निशान देख सकता था: याकूब का कुआँ, यूसुफ की कब्र, गरिज्जीम पर्वत के पास जहाँ आधी जातियाँ मूसा की व्यवस्था में निहित आशीष को पाने के लिये इकट्ठी हुई थीं। तो थके और प्यासे शरीर के साथ, बाइबल की बातों से भरा मन, अपने पिता के साथ पल-पल सम्पर्क में रहनेवाला आत्मा, अकेले (चेले भोजन की तलाश में गए थे), प्रभु दिन की गर्मी में वहाँ बैठा था और उस स्त्री की प्रतीक्षा कर रहा था जिसे वह जानता था कि जल्द ही वह कुएँ पर आएगी।

तब एक स्त्री अपनी आवश्यकता के साथ आती है (4:7-8) वह किस तरह की स्त्री थी? उसके वैवाहिक और विवाह के बाहर सम्बन्धों से यह प्रतीत होता है कि वह नैतिक प्रतिबन्धों के बोझ तले दबी हुई नहीं थी। हमें यह जानने में देर नहीं लगी कि उसकी बुद्धि तेज और वह बातें करने में चपल थी। उसमें स्थानीय धार्मिक भावनाओं का भण्डार था, पाप और सत्य का एक अनोखा मिश्रण था। प्रभु को उससे बात करने में लगभग उतना ही आनन्द आया होगा जितना उसे उनकी बातचीत के परिणाम से आया था।

उसके आते ही उसने बातचीत शुरू कर दी। जल भरने आने का दिन का एक असामान्य समय था, ठीक उस समय जब सूरज सिर के ऊपर था। परन्तु फिर, इस स्त्री को शायद दिन के ठण्डे समय में वहाँ इकट्ठा होनेवाली दूसरी स्त्रियों के उपहास और तिरस्कारपूर्ण व्यवहार का सामना करना नहीं चाहती थी। निस्संदेह उसकी जीवनशैली ने नगर की गपशप के लिये प्रचुर सामग्री उपलब्ध कराई थी।

"यीशु ने उस से कहा, मुझे पानी पिला।" नील नदी और मिसिसिपी का निर्माता, विशाल झीलों को जल मग्न करनेवाला और नियाग्रा जलप्रपात को बनानेवाला—वह प्यासा था। वहाँ कुआँ था; उसके पास बाल्टी थी; उसने उसे पानी पिलाने को कहा। यदि वह चाहता तो उस गहरे, अदृश्य, जल से भरे झरने को नियन्त्रित कर सकता था, वह सोता जो कुएँ को पानी देता था जो तुरन्त कुएँ को ऊपर तक भर देता और पानी उसके पैरों तक बहके चला जाता! सदियों पहले, उसने मूसा के लिये चकमक चट्टान से पानी निकाला था। थोड़ी देर पहले उसने पानी को दाखरस में बदला था। शैतान ने उसे चुनौती दी थी कि वह पत्थरों को रोटी बनने को कहे। परन्तु यीशु ने कभी भी अपने लिये कोई आश्चर्यकर्म नहीं किया। अन्त में, वह जीवन का पूरा फल पाने के लिये यहाँ आया था। और सामान्य मानवीय शर्तों पर जीवन का हिस्सा भूखा और प्यासा रहना है और यदि रोटी और जल प्राप्त करने के सामान्य साधन आसपास नहीं हैं तो भूखे और प्यासे रहना पड़ता है।

स्त्री अपनी आवश्यकता के साथ*!* ऊपर से देखने पर यह अपनी आवश्यकता के साथ पुरुष जैसा लग रहा था। परन्तु फिर, यीशु के साथ बातें करना हमेशा वैसी नहीं होती जैसी वे दिखती हैं। उसने "देखा और सुना था।" वह अपनी आवश्यकता के साथ इस स्त्री को उससे भी अच्छे से जानता था जितना कि वह अपने आप को जानती थी।

2. चर्चा (4:9-30)

हर कदम पर स्त्री की बातों का उत्तर देते हुए उसके साथ यीशु की एक उल्लेखनीय बातचीत होती है। हम सात बार "स्त्री ने कहा" या इसी के समान पढ़ते हैं (9, 11, 15, 17, 19, 25, 28)।

हम क्रोध की बात से शुरू करते हैं (4:9-10) : "तू यहूदी होकर मुझ सामरी स्त्री से पानी क्यों माँगता है?" वह जातीय पूर्व सोच के प्रश्न से शुरू करती है; बाद में वह धार्मिक पूर्व सोच का मुद्दा सामने लाती है (4:20)। उसने कहा, "यहूदी सामरियों के साथ किसी प्रकार का व्यवहार नहीं रखते।"

जातीय मुद्दा बहुत पुराना है। जब उत्तरी दस जातियों को अश्शूरियों ने बन्दी बना लिया, तो विजेता (जनसंख्या पुनर्वितरण की अपनी सामान्य नीति का पालन करते हुए) परदेशी निवासियों को क्षेत्र में ले आए। शीघ्र ही इन नवागंतुकों ने यहूदी धर्म का घटिया रूप अपना लिया। यहूदिया के यहूदियों ने उपनिवेशवादियों और यहूदी धर्म की नकल करने के उनके मूर्खतापूर्ण प्रयासों को निष्फल कर दिया, उनके साथ कुछ भी करने से इनकार कर दिया। बाद में, जब यहूदी स्वयं बेबीलोन की बन्धुवाई से पीड़ित होकर अपनी पैतृक भूमि पर दोबारा नियन्त्रण करने के लिये वापस लौटे, तो उन्होंने पाया कि सामरी लोग अभी भी देश में बसे हुए हैं।

जब यहूदियों ने यरुशलेम में अपने मन्दिर का पुनर्निर्माण करना शुरू किया, हालाँकि सामरी लोग सहायता करना चाहते थे, परन्तु उनके प्रस्तावों को निरस्त कर दिया गया। परिणामी शत्रुता को दोनों पक्षों में बढ़ावा मिला और जैसे-जैसे वर्ष बीतते गए, कड़वाहट बढ़ती गई (2 राजा 17:24-29; एज्रा 4:1-5; नहेम्याह 2:10, 19; 4:1-3)।

यहूदी मन्दिर के प्रति सामरी लोगों का उत्तर गरिज्जीम पर्वत पर अपने लिये एक प्रतिद्वंद्वी मन्दिर बनाना था। हस्मोनियाई शासक जॉन हिरकानस (लगभग 108 ई.पू.) द्वारा इस मन्दिर के विनाश ने पूरी तरह से सामरी शत्रुता को बढ़ाया। अधिकतर यहूदी औपचारिक रूप से अपवित्र हो जाने के डर से किसी सामरी से कोई समर्थन माँगने के बारे में नहीं सोचते थे; वास्तव में, कई यहूदियों ने यह मान लिया था कि सभी सामरी स्त्रियाँ औपचारिक अशुद्धता की निरन्तर दशा में थीं। सामरिया की स्त्री से जल माँगकर, यीशु ने ऐसे जातीय और लिंग आधारित पूर्व धारणाओं को दूर किया।

प्रभु ने स्त्री के प्रश्न का सीधा उत्तर नहीं दिया। बल्कि, उसने उसका ध्यान परमेश्वर की ओर आकर्षित किया: "यदि तू परमेश्वर के वरदान को जानती, और यह भी जानती कि वह कौन है जो तुझसे कहता है, 'मुझे पानी पिला,' तो तू उससे माँगती, और वह तुझे जीवन का जल देता" (4:10)। उसने कहा था, "मुझे पानी पिला।" अब वह कहता है, "यदि तू उससे माँगती, और वह तुझे जीवन का जल देता... ।"

यहाँ दो चकित करनेवाली बातें थीं। पहला यह कि उसने, एक यहूदी ने उस से पानी माँगा था। दूसरा यह था कि उसने दावा किया था कि उसके पास "जीवन का जल" है, जिसे वह उसे देना चाहता था। इस कथन में यीशु ने उसे वह सब बताया जो उसके उद्धार पाने के लिये आवश्यक था: यह क्या था ("जीवन का जल"); इसे कौन देता है (वह देता है); इसे कैसे प्राप्त करें ("उस से माँगे" और इसे "परमेश्वर के वरदान" के रूप में प्राप्त करें) (रोमियों 6:23 से तुलना करें)।

इसके बाद बातचीत समझ से परे लगती है (4:11-14)। हम तुरन्त स्त्री की सहज विचारशीलता पर ध्यान देते हैं (4:11-12)। यह यहूदी पहले ही उसके अनुमान से ऊपर जा चुका है। वह अब उसे "हे प्रभु" कहती है। परन्तु वह उलझन में थी। वह अभी भी कुएँ के पानी के बारे में सोच रही थी। वह बहुत गहरा था; कई वर्षों से उसके वहाँ पर आने से यह अच्छी तरह से जानती थी। उसके विचार इब्री मूलपुरुष याकूब के पास गए जिसने ठोस चट्टान पर वह कुआँ खुदवाया था—जो कोई छोटी उपलब्धि नहीं थी। वह याकूब को "हमारा पिता याकूब" होने का दावा करती है, यह एक झूठा दावा है क्योंकि याकूब परदेशी सामरियों का पिता नहीं था। परन्तु प्रभु ने इस बारे में कोई शिकायत नहीं की। वह जल्द ही उसे अपने पिता से मिलवाने वाला था, जो सचमुच में उसका पिता बन सकता था।

प्रभु ने उसके सामने एक बार फिर कभी प्यास न लगने का आकर्षक प्रस्ताव रखा, जो स्त्री की आन्तरिक प्यास को आकर्षित करता है (4:13-14)। "जो कोई यह जल पीएगा वह फिर प्यासा होगा, परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूँगा, वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा न होगा; वरन् जो जल मैं उसे दूँगा, वह उसमें एक सोता बन जाएगा 'जो अनन्त जीवन के लिये उमड़ता रहेगा।'" (4:14)। वह सचमुच उनके अर्थों के बारे में सोच रही थी; वह उससे अलंकारों में बात कर रहा था। भौतिक अर्थ का उपयोग आत्मिक अर्थ के चित्रण के रूप में किया गया था। जिसे स्त्री अभी तक समझ नहीं पाई थी। वह अभी भी पानी के किसी जादुई कुएँ के बारे में सोच रही थी, जैसा कि उसकी अगली बातों से पता चलता है।

अब जानने योग्य एक बात आती है (4:15)। स्त्री इस रहस्यमय जल की माँग करती है जिसके मिल जाने से प्रतिदिन उसे कुएँ तक जाने की आवश्यकता नहीं होगी। वह बातों को प्रतीकात्मक रूप से समझ नहीं सकती थी परन्तु वह अपनी बड़ी आवश्यकता को समझ सकती थी; वह उस जीवन के जल को माँग सकती थी यह अपरिचित मनुष्य जिसके बारे में बात कर रहा था। और उसने उसे माँगा। अब वह उससे जल माँग रही थी, जैसे पहले उसने उससे जल माँगा था। यह उसकी आत्मिक यात्रा में एक बड़ा कदम था।

परन्तु प्रभु पहले पाप के प्रश्न को पूरा किए बिना अनन्त जीवन का वरदान नहीं देता। जैसे ही स्त्री ने जीवन के जल के वरदान को ग्रहण करने की अपनी इच्छा प्रकट की, प्रभु ने उस बात पर अँगुली रखी जो उसकी तृप्त न होनेवाली प्यास का कारण बन रही थी: पाप।

तुरन्त जोखिम उठाने की बात आती है (4:16-18), जैसे ही स्त्री सहज रूप से संवेदनशील मुद्दे से पीछे हट गई, अपने आप को जोखिम से बचाने का प्रयत्न कर रही थी। पहले एक परेशान करने वाला दृश्य सामने आ गया (4:16)। वास्तव में, यीशु ने कहा—"क्या तुम इस जीवन के जल से पीना चाहती हो? तब मुझे, एक चिकित्सक की तरह, सबसे पहले तुम्हारे जीवन में पाप की उस घातक वृद्धि पर अपना हाथ रखना होगा जो अनन्त जीवन से दूर ले जाता है; यह तुम्हारे जीवन में मृत्यु दण्ड है मुझे पहले उसे हटाना होगा।" अपनी स्थिति के बारे में इस अवांछित परन्तु अचूक ज्ञान के पहले संकेत पर वह पीछे हट गई। यह एक दुःख की बात थी और वह यह जानती थी। हो सकता है कि वह वर्षों से अपने आप से कहती रही हो कि कुछ भी गलत नहीं है, यह सब ठीक है—जबकि वह हर समय जानती थी कि यह सब बहुत गलत था।

परेशान करने वाला दृश्य, कि जीवन का यह जल केवल कुछ निश्चित, व्यक्तिगत और विचित्र पूर्व शर्तों के अधीन ही प्राप्त किया जा सकता है, एक रक्षात्मक प्रतिक्रिया का कारण बना (4:17क)। "स्त्री ने उत्तर देते हुए कहा, "मैं बिना पति की हूँ।" वह इसके बारे में बताने के लिये संकोच कर रही थी, शायद विषय के अचानक परिवर्तन से

परेशान थी। फिर भी, उसने मन ही मन सोचा होगा, यह घुमने फिरनेवाला यहूदी सम्भवतः उसके जीवन की कहानी नहीं जान सकता; उसे टालकर खत्म किया जा सकता है। इसलिये उसने वास्तविक स्थिति को छिपाते हुए बस अपनी वर्तमान वैवाहिक स्थिति बताई।

इससे एक हानिकारक प्रकाशन प्राप्त हुआ (4:17ख-18)। "तू ठीक कहती है, 'मैं बिना पति की हूँ।' क्योंकि तू पाँच पति कर चुकी है, और जिसके पास तू अब है वह भी तेरा पति नहीं। यह तू ने सच ही कहा है।" उसके अब तक के जीवन में लगातार पाँच पतियों में कम से कम कुछ हद तक सम्मान की बात थी। हमें यह नहीं बताया गया कि ये विवाह कैसे और क्यों टूट गए, मृत्यु से या तलाक से। परन्तु कारण जो भी हो, गड़े मुर्दे उखाड़ना प्रभु के उद्देश्य का हिस्सा नहीं था। उसकी वर्तमान अपमानजनक स्थिति में काफी दुविधा थी। परमेश्वर सदैव एक आदर्श सज्जन, उत्तम आचरण वाला व्यक्ति था। वह केवल उस घाव को उजागर करना चाहता था, न कि उसके जीवन के सभी विवरणों को कुरेदना और ताक-झाँक करना चाहता था। "प्रेम अनेक पापों को ढाँप देता है" (1 पतरस 4:8)।

इन सब से प्रेरणा का एक भाव मिला (4:19-24)। सबसे पहले एक उल्लेखनीय सम्मान दिया गया (4:19-20)। उसने उसे "यहूदी" कहकर शुरुआत की थी और वह आगे बढ़ते हुए उसे "हे प्रभु" कहने लगी थी। अब, उसकी अन्तर्दृष्टि से आश्चर्यचकित होकर, उसने उसे "भविष्यद्वकता" कहा। और, कई अन्य लोगों की तरह, जब आत्मा-जीतनेवाला अपने जीवन में पाप के प्रश्न पर पहुँचता है, तो इस स्त्री ने एक साहसिक मोड़ का सहारा लिया। उसने एक धार्मिक प्रश्न उठाया, जो चर्चा को उस क्षेत्र से दूर ले जाता है। यह हर समय होता है, जैसा कि कोई भी अनुभवी आत्मा-जीतनेवाला जानता है। जब मुद्दे स्पष्ट और व्यक्तिगत होने लगे, तो तुरन्त प्रश्न उठाया जाता है: "कैन को उसकी पत्नी कहाँ से मिली?" या "क्या विधर्मी जाते रहे?" या ऐसा ही कोई अप्रासंगिक धार्मिक मुद्दा।

उसने कहा, "हमारे बापदादों ने इसी पहाड़ पर आराधना की, और तुम कहते हो कि वह जगह जहाँ आराधना करनी चाहिए यरूशलेम में है" (4:20)।

यरूशलेम में सुलैमान के भव्य मन्दिर के विनाश ने "आराधना के लिये विशेष स्थान" के रूप में इसकी श्रेष्ठता को निराशाजनक रूप से धूमिल कर दिया; पुनर्निर्मित मन्दिर में मूल जैसी पूर्व भव्यता नहीं थी। इसके पुनर्निर्माण के कुछ ही समय बाद, महायाजक योयादा के पुत्र और महायाजक योनातान के भाई मनश्शे ने सामरिया के फारसी हाकिम सम्बल्लत की बेटी से विवाह की (नहेम्याह 12:10-11; 13:28)। यरूशलेम के हाकिम ने उसे इस विवाह को खत्म करने का आदेश दिया जिसमें एक असमान जुए के सारे चिह्न थे, परन्तु मनश्शे ने ऐसा करने से इनकार कर दिया। उसके बाद उसे उस निर्भीक सुधारक नहेम्याह द्वारा यरूशलेम से बाहर निकाल दिया गया। परन्तु वह कहानी का अन्त नहीं था। उसके ससुर, सम्बल्लत ने मनश्शे को सामरियों का महायाजक बनाया और गिरिज्जीम पर्वत पर उसके लिये एक मन्दिर बनाने की व्यवस्था की। मनश्शे ने 332 ई.पू. के आसपास यरूशलेम छोड़ दिया था। गिरिज्जीम पर्वत पर लगभग दो शताब्दियों तक मन्दिर वहीं रहा।

स्थान के धार्मिक हित के बारे में कोई सन्देह नहीं था। गिरिज्जीम पर्वत और उसके मुख्य पड़ोसी नगर, शकेम का उल्लेख अक्सर पुराने नियम के इतिहास में मिलता है। यह अब्राहम (उत्पत्ति 12:6-7), याकूब, (उत्पत्ति 33:18), और यूसुफ (उत्पत्ति 37:12-13) से जुड़ा था। यह परदेशियों के रहने लिये नगरों में से एक नगर था (यहोशू 20:7-9)। यहाँ इस्राएल के बच्चों ने प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करने के तुरन्त बाद आशीष और शाप की व्यवस्था का अभ्यास किया (यहोशू 8:33)। यहाँ यहोशू ने सब गोत्रों को अपना अन्तिम सम्बोधन दिया था (यहोशू 24:1-31)। इसके अलावा, यह स्थान उस समय महत्वपूर्ण था जब इस्राएल ने अपने प्रतिद्वंद्वी राज्य की स्थापना

की थी (1 राजाओं 12:1, 25)। इन सबके साथ, सामरी लोगों ने इस स्थान के लिये अन्य सभी प्रकार के विशेष (अत्यधिक काल्पनिक) दावे जोड़ दिए: कि अदन की वाटिका ने गिरिज्जीम पर्वत को ताज पहनाया, कि यह गिरिज्जीम की धूल थी जिससे आदम बनाया गया था, कि गिरिज्जीम पर्वत पर वाचा का सन्दूक विश्राम करने आया था, और इसी स्थान पर नूह ने जल-प्रलय के बाद पहला बलिदान दिया था। वे यह भी कहते थे, कि यहीं अब्राहम इसहाक का बलिदान चढ़ाने आया था और यहीं उसकी भेंट मलिकिसिदक से हुई। और यही वह सच्ची जगह थी जहाँ याकूब ने धरती से स्वर्ग तक पहुँचने वाली सीढ़ी का स्वप्न देखा था। बड़े-बड़े दावे थे!

परन्तु यदि कुएँ पर आई स्त्री ने सोचा कि वह प्रभु को ऐसे विवरणों की चर्चा में भटका सकती है, तो वह गलत थी। प्रभु ने उसकी युक्ति को अनदेखा कर दिया और उसके बदले एक उल्लेखनीय सत्य को सामने रखा (4:21-24)।

उसने भविष्य के बारे में एक बात से शुरुआत की (4:21)। "वह समय आता है कि तुम न तो इस पहाड़ पर पिता की आराधना करोगे, न यरूशलेम में।" इस स्त्री के गर्व के विपरीत, "हमारे पिता," प्रभु ने "पिता" को स्थान दिया। उसने उसके विचारों को किसी भी सांसारिक मन्दिर से ऊपर उठाया। वह जानता था कि एक पीढ़ी के भीतर यरूशलेम का मन्दिर उतना ही विलुप्त हो जाएगा जितना वह मन्दिर जो कभी गिरिज्जीम पर खड़ा था। हाथ से बनाए गए मन्दिरों की नये युग की शुरुआत में कोई प्रासंगिकता नहीं रह गई है।

वह विश्वास के विषय में एक बात कहता रहा (4:22) और गिरिज्जीम पर्वत की पवित्रता के बारे में स्त्री के प्रश्न की कोई परवाह नहीं की। उसने ऐसा इसलिये नहीं किया क्योंकि वह यहूदी था, बल्कि इसलिये किया क्योंकि वह यीशु था, सत्य जो देहधारी हुआ था। उसने कहा, "तुम जिसे नहीं जानते, उसकी आराधना करते हो; और हम जिसे जानते हैं उसकी आराधना करते हैं; क्योंकि उद्धार यहूदियों में से है।" दोनों ही मामलों में सर्वनाम मूल में प्रबल है। देखा जाए तो, आराधना का सामरी रूप अधूरा था, इसकी उत्पत्ति से दूषित था, यहूदियों को दिए गए बाद के सारी भविष्यद्वाणियों के प्रकाशन से अनभिज्ञ था। सच है, सामरी लोगों के पास उनकी पाँच पुस्तके थीं, परन्तु उनकी आराधना सत्य और त्रुटि का एक कच्चा मिश्रण था और किसी भी मामले में वे परमेश्वर का उन पर प्रकट होने की प्रक्रिया और छुटकारे के उद्देश्य की मुख्यधारा से बाहर थे। "उद्धार यहूदियों में से था।" यह वंश या अब्राहम का, यहूदा के गोत्र का, दाऊद के घराने का, बैतलहम नगर का—यहूदियों का था कि संसार का उद्धारकर्ता आने वाला था। परमेश्वर ने इस उद्देश्य के लिये इन लोगों को चुना था, न ही यहूदी लोगों की सारी गलतियाँ और असफलताएँ ईश्वरीय उद्देश्य को बदल या निष्फल कर सकती थीं।

उसने पिता के विषय में एक बात के साथ समापन किया (4:23-24), और यह एक अद्भुत बात है। यह कितना उल्लेखनीय है कि आराधना की यह उच्च अवधारणा विद्वान नीकुदेमुस पर नहीं, बल्कि इस स्वच्छंद स्त्री, यहूदी विश्वास के उस कुलीन वंश पर नहीं, परन्तु इस उत्सुक सामरी साधक पर प्रकट होनी चाहिए थी। परमेश्वर मनुष्यों का आदर नहीं करता; परमेश्वर हृदय की सच्चाई को देखता है। प्रभु ने नीकुदेमुस के हृदय को जाँचा था और पाया कि वह स्वयं को पुराने नियम के बातों के चित्रण में वापस जाने, ईश्वरीय प्रकाशन के प्रारम्भिक चरण में वापस जाने और खम्भे पर साँप के बारे में उससे बात करने के लिये इच्छुक था—वह इतना निराश था कि उसकी आत्मिक समझ, इसलिये परम्परा, सावधानी और मानसिक आरक्षण से घिरी हुई थी। उसने इस उज्ज्वल और विचारशील स्त्री की प्यासी, खाली हृदय को देखा और सच्चाई और पवित्रता के लिये उसकी लालसा देखी। इसलिये उसने उसे परमेश्वर के विषय में अपने सबसे महान प्रकाशनों में से एक को दिया।

उसने उससे पिता के विषय में, अपने उत्साह के विषय में बात की (4:23) : "वह समय आता है, वरन् अब भी है, जिसमें सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही आराधकों को ढूँढ़ता है।" उसने उसके मन को स्थान से हटाकर व्यक्ति की ओर आकर्षित किया। पुराने नियम में परमेश्वर का वर्णन पिता के रूप में बहुत कम किया गया है। परन्तु उसके लिये परमेश्वर का यह विशेष नाम था। (कोई आश्चर्य की बात नहीं, वह उसका पुत्र था।)

सच्ची आराधना "आत्मा से" होनी चाहिए। यहूदी धर्म वृहत रूप में आत्मा से के बदले लिखित बातों से आराधना करता था। इसका सम्बन्ध रीतियों और विधियों, रूपों और समारोहों, बलिदानों और भेटों, पर्व के दिनों और उपवास के दिनों, खतनों और विश्रामदिनों से था। इन सब को आत्मा से आराधना करने की भावना से अलग रखा जाना था।

वास्तविक आराधना "सच्चाई से" होनी चाहिए। सामरीवाद मुख्यतः सच्चाई से आराधना के बदले असत्य की आराधना थी। इसका सम्बन्ध धार्मिक विचारों की बढ़ोत्तरी से था। यह अत्यन्त बनावटी, निर्जीव, मृत और झूठी बात थी।

प्रभु ने उसके विचारों को एक जीवित, प्रेम करनेवाले पिता की ओर उठाया, जो किसी यहूदी या सामरी की आराधना के लिये तरसता था, जो आत्मा और सच्चाई से उसकी आराधना करे। निस्संदेह, इसके लिये जिस बात की आवश्यकता थी, वह परमेश्वर के आत्मा का नए सिरे से जन्म, ताकि वह आत्मा से आराधना कर सके और परमेश्वर के पुत्र का पूर्ण प्रकाशन, ताकि वह सच्चाई से आराधना कर सके।

प्रभु उसे और भी समझाने लगा, वह उससे पिता के विषय में, उसके व्यक्तित्व के विषय में बात करने लगा (4:24) : "परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करनेवाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें"—आत्मा से वह जो है उस कारण से; सच्चाई से हम जो हैं उस कारण से।

स्त्री कुछ समझ नहीं पा रही थी। अब उपदेश की बात आती है (4:25-27)। स्पष्ट रूप से स्त्री ने मसीह के विषय में सच्चाई की प्रतिध्वनि समझ ली थी। इसमें कोई सन्देह नहीं कि उस समय सामरिया में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के उपदेश और इस्राएल में मसीहीयाई आशाओं की चर्चा चल रही थी। उसे इन बातों के बारे में कम से कम कुछ समझ तो थी। उसने वह बताया जो वह जानती और विश्वास करती थी: उसने कहा, "मैं जानती हूँ" (और यह 3:2 में नीकुदेमुस के आडम्बरपूर्ण "हम जानते हैं" के विपरीत है), "कि मसीह जो ख्रिस्त कहलाता है, आनेवाला है; जब वह आएगा, तो हमें सब बातें बता देगा" (4:25)। सर्वनाम वह पर बल दिया गया है।

अब अन्तिम प्रकाशन आता है: "यीशु ने उस से कहा, मैं जो तुझ से बोल रहा हूँ वह वही हूँ" (4:26)। यह इस स्त्री को कहे प्रभु के सात कथनों में से अन्तिम था: "मुझे पिला" (4:7), "यदि तू जानती" (4:10), "मैं दूँगा" (4:14), "जा, बुला ला" (4:16), "ठीक कहती है" (4:17), "मेरी बात का विश्वास कर" (4:21), और "मैं...वही हूँ" (4:26)।

यह महत्वपूर्ण क्षण था। और जैसा कि अक्सर होता है, इसमें रूकावट आई। फिर, हर कोई जिसने किसी आत्मा को मसीह की ओर ले जाना चाहा है, महत्वपूर्ण क्षण में इस रुकावट से परिचित है। आप किसी व्यक्ति को सीधे उस बिन्दु पर ले आते हैं जहाँ निर्णय होने वाला होता है—और समस्या उठ खड़ी होती है। परन्तु कोई बात नहीं। पवित्र आत्मा को किसी रुकावट द्वारा अपना कार्य करने से नहीं रोका जा सकता। इस मामले में यह चेलों की वापसी थी जो रुकावट का कारण बनी (4:27)।

वे अवाक थे कि प्रभु को एक स्त्री से, और उस पर एक सामरी स्त्री से बात करनी चाहिए। यह यहूदी नियमों के विरुद्ध था। इन पुरुषों को फिर से देखो। भोजन-वस्तु लाने के लिये गाँव में जाते समय और कुएँ की ओर जाते समय उनकी भेंट पानी के घड़े के साथ इस स्त्री से हुई होगी। शायद वे बिना किसी मित्रतापूर्ण अभिवादन के उसके दूसरी ओर से चले गए हों।

"तब स्त्री अपना घड़ा छोड़कर नगर में चली गई।" उसने इसे क्यों छोड़ा? क्या इसे यीशु के उपयोग के लिये छोड़ना धन्यवाद और प्रशंसा का कार्य था? क्या उसका हृदय जीवन के जल से इतना भर गया था कि यह उसके भीतर के नये जीवन का एक अवचेतन, प्रतीकात्मक गवाही थी? क्या वह पहले से ही जानती थी कि वह थोड़ी देर में लौट आएगी?

वह फुर्ती से घर की ओर गई। लोगों ने उसे घेर लिया। वे कौन थे? क्या वे पुरुष थे जिनसे उसका कभी विवाह हुआ था? क्या वे गाँव के मुखिया थे? प्रयुक्त शब्द एन्थ्रोपोस है, जो मनुष्य के लिये नए नियम का सामान्य शब्द है। कुछ ने इसका अनुवाद "वह लोगों से कहने लगी" किया है। किसी भी मामले में उसकी गवाही स्पष्ट थी, प्रतिक्रिया के लिये एक आह्वान: "आओ, एक मनुष्य को देखो, जिसने सब कुछ जो मैं ने किया मुझे बता दिया। कहीं यही तो मसीह नहीं है?" उसकी गवाही सरल थी; यह सफल भी थी। "अत: वे नगर से निकलकर उसके पास आने लगे" (4:30)। इस प्रकार इस उल्लेखनीय भेंट के बारे में सुसमाचार प्रचारक का वर्णन समाप्त होता है।

3. चेले (4:31-42)

कोई भी महिला जिसने रसोई के चूल्हे पर आग जलाया, स्वादिष्ट भोजन तैयार किया और अपने पति को आकर खाने के लिये बुलाया हो—केवल यह बताने के लिये कि वह भूखा नहीं है—इस समय चेलों के साथ सहानुभूति रख सकती है। परन्तु प्रभु ने कभी कठोर व्यवहार नहीं किया, दूसरों के बारे में उसके विचार कभी खत्म नहीं हुए। कहानी में इस बिन्दु पर उसका व्यवहार इस संसार में उसके ईश्वरीय उद्देश्य के साथ जुड़ा हुआ है। सामरी स्त्री की आत्मा की अधिक प्यास में वह अपनी शारीरिक प्यास भूल गया था। अब वह किसी खोए हुए लोगों के बीच पहुँचने की भूख में अपनी शारीरिक भूख भूल चुका था।

फिर, यह खण्ड चेलों और उनके भोजन से शुरू होता है (4:31-34)। वे भोजन-वस्तु लाने के लिये सामरी नगर में गए थे। यह अपने आप में कोई ऐसा कार्य नहीं था जिसे उनमें से किसी को भी पसन्द आया होगा। वे सामरियों के साथ कम से कम व्यवहार रखना चाहते थे। हम बातों से जान सकते हैं। उन सब को इतने छोटे मिशन पर क्यों जाना पड़ा? हम कल्पना कर सकते हैं कि क्या हुआ होगा। "ठीक है, सबसे अच्छा होगा कि तुम चले जाओ, यहूदा। क्योंकि, पैसों का थैला तुम्हारे पास है।" यहूदा क्रोध दिखाते हुए मना कर देगा—वह एक यहूदी है, इससे कम नहीं! निश्चित रूप से वह नहीं जाता। वे पतरस की ओर देखेंगे। "तुम्हें अगुवाई करना पसन्द है, पतरस। तुम जाओ। इसमें अगुवाई करो।" और यहूदा की तरह पतरस की भी इच्छा नहीं होगी। फिलिप्पुस शायद नतनएल से मुँह बनाते हुए, शायद कह सकता है: "यह तुम्हारे लिये अवसर है, नतनएल। तुमने सोचा था कि नासरत से कोई अच्छी वस्तु नहीं निकल सकती। जाओ और देखो कि सूखार से कौन सी अच्छी बात निकल सकती है।" इसलिये अन्त में वे सब चले गए।

और यह गर्मी से चूर, थका देनेवाला काम था। परन्तु अब वे वापस आ गए थे। उन्होंने कुएँ से पानी निकाला। उन्होंने अपना सामान कुएँ की दीवार पर फैला दिया था। वे भूखे थे। उन्होंने आशीष के लिये प्रभु की ओर

प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा। परन्तु उसका मन और हृदय उससे बहुत दूर था। वह उस स्त्री के साथ था और अब भी उसके सु-सन्देश को लेकर नगर में घुस रहा था। उन्होंने कहा, “हे रब्बी, कुछ खा ले” (4:31)।

उसने उनसे कहा, “मेरे पास खाने के लिये ऐसा भोजन है जिसे तुम नहीं जानते।” चेले आश्चर्य से एक दूसरे की ओर देखने लगे। “क्या कोई उसके लिये कुछ खाने को लाया है?” वे उसके द्वारा प्रयुक्त रूपकों को समझने में उतने ही असमर्थ थे जितने यरूशलेम के फरीसी, नीकुदेमुस, या सूखार की स्त्री थी।

प्रभु ने उन्हें समझाते हुए स्पष्ट किया; “मेरा भोजन यह है कि अपने भेजनेवाले की इच्छा के अनुसार चलूँ और उसका काम पूरा करूँ” (4:34)। जब शैतान ने, कुछ समय पहले, उसे पत्थरों को रोटी बनाने और अपनी भूख मिटाने के लिये प्रलोभित किया था, तो यीशु ने तब परमेश्वर के वचन की ओर संकेत किया था: “मनुष्य केवल रोटी से नहीं जीवित रहता, परन्तु जो जो वचन यहोवा के मुँह से निकलते हैं।” वह यह उद्धरण व्यवस्थाविवरण 8:3 से दे रहा था। यही वह सिद्धान्त था जिससे वह जीवित रहा। वह इस संसार में अपने पिता की इच्छा को पूरा करने और अपने काम को पूरा करने (टेलीइऊ, “पूरा करना,” “पूरा अन्त तक करना”) के लिये सबसे अधिक भूखा था (4:34)। उसने सामरी स्त्री के परिवर्तन में उस काम के एक भाग को इतने सटीक अन्त तक पहुँचाया था। जो सन्तुष्टि उसे मिली वह किसी भी सामान्य भोजन से अधिक वास्तविक थी।

इसने स्वाभाविक रूप से चेलों और उनके मिशन (4:35-42) की चर्चा का मार्ग प्रशस्त किया। प्रभु ने उनका ध्यान फसल के खेत की ओर लगाया, जिसका अभी-अभी उसने कटनी की पहली उपज का प्रतीक दिया।

उसने पहले कटनी के समय के विषय में बात की (4:35-38)। “क्या तुम यह नहीं कहते, ‘कटनी होने में अब भी चार महीने पड़े हैं?’ देखो, मैं तुम से कहता हूँ, अपनी आँखें उठाकर खेतों पर दृष्टि डालो कि वे कटनी के लिये पक चुके हैं” (4:35)। इस बात पर काफी चर्चा हुई है कि प्रभु का इस अभिव्यक्ति से क्या अर्थ है, “क्या तुम नहीं कहते, ‘कटनी होने में अब भी चार महीने पड़े हैं?” कुछ लोग इसका अर्थ यह निकालते हैं कि मोरेह के खेत के अनाज उगते हुए अनाज के समान हरे थे इसलिये उन्हें लगा कि फसल काटने में चार महीने लगेंगे (लगभग अप्रैल के मध्य में) क्योंकि तब समय (अनाज पिछली गणना के अनुसार) दिसम्बर के मध्य के आसपास का था। हालाँकि, इस समय के लिये कोई सामान्य सहमति नहीं है।

दूसरा दृष्टिकोण यह है कि यह कहावत प्रचलित थी, क्योंकि यूनानी में शब्दों में एक लय होती है। इस मामले में इसका अर्थ यह होगा कि बीज बोने से लेकर फसल काटने तक धीरज धरना अवश्य है, परन्तु अनुचित रीति से नहीं।

किसी भी स्थिति में, प्रभु ने चेलों के विचारों को अनाज के खेतों से हटाकर दूसरी फसल की ओर निर्देशित किया जिसके बारे में वह बात कर रहा था। शायद उसकी दृष्टि सूखार की ओर से आती स्त्री के हौसले और उसके साथ आ रही भीड़ पर पड़ चुकी थी। वह कहने लगा, “देखो!” “अभी कुछ देर पहले मैंने बीज बोया था और कटनी आ पहुँची!”

और, सामरियों की इस भीड़ के आने की प्रतीक्षा करते हुए, उसने अपने चेलों से संसार के क्षेत्र में बोने और काटने के आनन्द और पुरस्कारों के बारे में बात की। उसने पहले काटनेवाले की आवश्यकता के बारे में बात की (4:35)। “अपनी आँखें उठाकर खेतों पर दृष्टि डालो कि वे कटनी के लिये पक चुके हैं।” यदि वे तब पक चुके थे, तो क्या अब वे पक चुके होंगे, जब हम अनुग्रह की लम्बी व्यवस्था की दूसरी छोर पर खड़े हैं? आकाश में सूर्यास्त की लालिमा फैली हुई है। लाखों लोग, जो अब तक कुछ नहीं कह पाए, अपनी पीड़ा भरी आवाजें आकाश तक उठाते

हैं। कलीसिया ने प्रकृति के अन्धकार में नाश होने वाली आत्मा की बुरी दशा के बारे में चिन्ता न करते हुए, अधिकांश भाग के लिये महान आदेश के साथ ढिलाई बरती है। "न मुझ को कोई पूछता है" (भजन संहिता 142:4), एक बड़ी चिल्लाहट, अन्तिम न्याय के समय करोड़ों आवाजों द्वारा उठाया जाएगा। हम अपनी आलस्य और उपेक्षा को कैसे समझाएँगे जब हमारी ही पीढ़ी के अरबों लोग हम पर दोष लगाएँगे, जो परमेश्वर से कहेंगे, "मैं कभी जान ही नहीं पाया कि आपका एक पुत्र था"? क्या हम उन पहले चेलों से कम दोषी हैं जिन्होंने सामरिया की स्त्री को एक मिशन क्षेत्र नहीं बल्कि एक ऐसी स्त्री के रूप में देखा जिसका वे तिरस्कार कर रहे थे?

यीशु ने उनसे परिश्रम के फल के बारे में बहुत धैर्यपूर्वक बात की (4:36-38)। "समय-समय पर आने वाले मुकुट के दिन" में काटनेवाला और बोनेवाला एक साथ आनन्द मनाएँगे। अक्सर काटनेवाला, सुसमाचार प्रचारक को यहाँ महिमा मिलती है—वह जो आत्माओं को राज्य में लाता है। मसीह के न्याय आसन पर ऐसा कोई भेद नहीं होगा। पौलुस लगाता, अपुल्लोस सींचता, परन्तु परमेश्वर बढ़ाता है (1 कुरिन्थियों 3:6)। अक्सर कोई अपरिचित मसीही बीज बोता है, उसे प्रार्थनाओं और आँसुओं से सींचता है, और कभी कटनी को नहीं देखता है। "मैं ने तुम्हें वह खेत काटने के लिये भेजा जिसमें तुमने परिश्रम नहीं किया : दूसरों ने परिश्रम किया और तुम उनके परिश्रम के फल में भागी हुए" (4:38)। जो हर एक आत्मा के आत्मिक इतिहास को जानता है, उसकी सर्व-दृष्टि से न्याय आसन पर ऐसे सभी भेदों को दूर कर दिया जाएगा।

मुख्य बात यह है कि अब बोने और कटनी का समय आ गया है। जब भी सम्भव हो हमें अपने अवसरों का लाभ उठाना है।

प्रभु कटनी का फल देखता है (4:39-42)। सामरियों की भीड़ उत्सुकता से भरे, स्वागत करनेवाले लोगों के बीच पहुँची। वे और अधिक जानना चाहते थे। उन्होंने इस अपरिचित यहूदी से, जिसने उनके नगर में आने और उनसे मिलने के लिये पहले ही अपने आप को जातीय भेदभाव से पूरी तरह मुक्त दिखाया था। वह प्रसन्नता से सहमत हुआ और दो दिन तक वहाँ रहा, न जाने कितने यहूदी व्यवहारिक मतों को तोड़ा, उनके घरों में गया, उनके साथ भोजन किया, उनके बिस्तरों पर सोया, उन्हें परमेश्वर का वचन सिखाया। आत्मिक जागृति लाया। "उसके वचन के कारण और भी बहुत से लोगों ने विश्वास किया" (4:41)। यहूदियों के विपरीत, सामरियों ने कोई चिह्न नहीं माँगा। प्रभु ने उनके बीच कोई आश्चर्यकर्म नहीं किया। वे बिरीया के लोगों के समान थे, जो "थिस्सलुनीके के यहूदियों से भले थे" (प्रेरितों 17:11), इन तिरस्कृत सामरियों ने मन की तत्परता से वचन को ग्रहण किया। उनका विश्वास किसी और की गवाही से अधिक ठोस बात पर टिका हुआ था। उन्होंने स्त्री से कहा: "अब हम तेरे कहने ही से विश्वास नहीं करते; क्योंकि हम ने आप ही सुन लिया, और जानते हैं कि यही सचमुच में जगत का उद्धारकर्ता है" (4:42)। महत्वपूर्ण यह है कि प्रभु यीशु के लिये यह सुन्दर शीर्षक, 1 यूहन्ना 4:14 में भी पाया जाता है, इस महान विचार को सबसे पहले सामरी लोगों द्वारा व्यक्त किया गया था। यीशु ने कुएँ के पास स्त्री से कहा था, "उद्धार यहूदियों में से है।" इन सामरियों ने कहा, "और ऐसा ही है! हमने न केवल उद्धार पाया है, वरन् उद्धारकर्ता पाया है, और न केवल यहूदियों का उद्धारकर्ता, वरन् जगत का उद्धारकर्ता पाया है।"

F. पिता का विश्वास (4:43-54)

जीवन की दुःखद घटनाओं पर जय पाना

सामरिया के दो सेवकाई पूर्ण दिन समाप्त हो गए और यीशु गलील की ओर अपने मार्ग पर चला गया। उसने एक कहावत उद्धृत की। "भविष्यद्वक्ता का अपने देश और अपने घर को छोड़ और कहीं निरादर नहीं होता।" हम तीनों

सहदर्शी सुसमाचारों के विवरणों से सीखते हैं कि उसने अपने गृह नगर नासरत के सम्बन्ध में एक अन्य अवसर पर इस कहावत को फिर से उद्धृत किया (मत्ती 13:57)। यहाँ उद्धरण यहूदिया की ओर निर्देशित प्रतीत होता है। यहूदिया भी "उसका अपना देश" था; उसका जन्म वहीं हुआ था। सामरिया में प्रभु का जो स्वागत किया गया, वह यहूदिया में किए गए स्वागत से बहुत अलग था। यरूशलेम में उसे कोई आदर नहीं मिला, और उसके मसीहीयाई दावे का स्वागत नहीं किया गया। उसे वहाँ के यहूदियों पर भरोसा नहीं था। सच है, कई लोग उसके पीछे चलने लगे, परन्तु उनका विश्वास आश्चर्यकर्मों पर आधारित था। इसी कारण उसके मुँह से एक घरेलू कहावत निकली।

यदि यहूदिया में उनका स्वागत पहली बार अच्छा रहा होता, तो अगली बार यह बहुत खराब होता। तब वह कह रहा होता, "मैं अपने पिता के नाम से आया हूँ, और तुम मुझे ग्रहण नहीं करते" (5:43)। जल्द ही, यूहन्ना भी इसे दर्ज करेगा कि यद्यपि प्रभु ने "उनके सामने इतने चिह्न दिखाए, तौभी उन्होंने उस पर विश्वास न किया" (12:37)।

1. काना में लौट आया (4:43-46क)

प्रभु ने पाया कि गलील में बड़े उत्साह से उसका स्वागत किया जा रहा है। हालाँकि यरूशलेम में उसके कार्यों ने उस क्षेत्र में कोई स्थाई प्रभाव नहीं डाला, पर ऐसा प्रतीत होता है कि उसने वहाँ मौजूद गलीलियों को प्रभावित किया था। यह सम्भावना है कि लौटने वाले गलीली भक्तों को उन कई लोगों में गिना जाना चाहिए जिन्होंने फसह में मसीह पर विश्वास किया (2:23)। प्रभु ने देखा कि गलील में उसके स्वागत की प्रतीक्षा की जा रही थी।

जब वह गलील में वापस आया, तो प्रभु काना की ओर चला गया जहाँ उसने अपना पहला आश्चर्यकर्म किया।

2. कफरनहूम से आई विनती (4:46ख-54)

परन्तु प्रभु काना में पहुँचा ही था कि उसके पास कफरनहूम से एक विनती आई। हम सबसे पहले उसकी दुर्दशा पर ध्यान देते हैं (4:46ख)। विनती "किसी राजकर्मी" की ओर से आया था। राजकर्मी के लिये शब्द बासिलिकोस है और इसका वास्तविक अर्थ है "राजा का कर्मचारी।" सम्भावना यह है कि यह राजकर्मी गलील के शासक हेरोदेस अन्तिपास का एक अधिकारी था, जो लोकप्रिय रूप से "राजा" के नाम से जाना जाता था (मत्ती 14:9)। उस मनुष्य का बेटा पास के नगर कफरनहूम में बीमार था।

इसके बाद उसकी विनती आती है (4:47-49)। राजकर्मी ने अपना समय बर्बाद नहीं किया। जैसे ही उसने सुना कि यीशु निकट है, उसने अवसर का लाभ उठाया। वह यीशु से विनती करने के लिये काना को गया "कि चलकर मेरे पुत्र को चंगा कर दे : क्योंकि वह मरने पर था" (4:47)। उसने उसकी विनती का तुरन्त उत्तर नहीं दिया। यीशु ने उस व्यक्ति की ओर देखा, उसके विनती को अनदेखा कर दिया और उसके विश्वास के आधार को चुनौती दी। उसने कहा, "जब तक तुम चिह्न और अद्भुत काम न देखोगे तब तक कदापि विश्वास न करोगे।" यह बातें आसपास खड़े लोगों के लिये भी था। शब्द तुम बहुवचन में है। शब्द चिह्न और अद्भुत काम आश्चर्यकर्म के दो मुख्य पहलुओं को रेखांकित करते हैं। वे "चिह्न" थे। इससे आश्चर्यकर्मों के आत्मिक पहलू का पता चलता है, यह तथ्य कि आश्चर्यकर्मों का उद्देश्य कुछ गहरी सच्चाई बताना था, जिससे यह प्रमाणित हुआ कि जिसने यह किया वह परमेश्वर के प्रत्यक्ष अधिकार के अधीन कर रहा था। वे "अद्भुत काम" थे। इसने आश्चर्यकर्मों के बाहरी पहलू की ओर ध्यान आकर्षित किया। वे अपनी विशिष्टता से लोगों को आश्चर्यचकित करने के लिये, ध्यान आकर्षित करने के लिये तैयार किए गए थे। यीशु ने उस राजकर्मी को ऐसे लोगों के प्रतिनिधि के रूप में देखा था जिनके विश्वास को लगातार आश्चर्यकर्मों से मजबूत करना पड़ता है; यह उन सामरियों के विपरीत है जिन्होंने इस रीति से अपने विश्वास को आगे बढ़ाए बिना विश्वास किया।

राजकर्मी को विश्वास की बारीकियों की चर्चा अनावश्यक लगने से वह स्पष्ट रूप से इस बात से चिढ़ गया था। उसका पुत्र मरने पर था, वास्तव में वह पहले से ही मृत्यु के निकट था जब वह समय के साथ एक निराशाजनक स्थिति में घर से बाहर निकला और उसे लगा कि वह एकमात्र व्यक्ति है जो उसकी सहायता कर सकता है। उस एक शुरुआत को उसके और आसपास खड़े लोगों के लिये एक चुनौती के रूप में बदलना कि वे आश्चर्यकर्मों के बिना उस पर विश्वास करेंगे या नहीं, हताश करनेवाली बात थी। कोई भी उसकी आवाज़ में दर्द के साथ-साथ निराशा भी सुन सकता है, जब उसने कहा, "हे प्रभु, मेरे बालक की मृत्यु होने से पहले चल" (4:49)। अपनी पहली विनती में उसने पुत्र शब्द का इस्तेमाल किया था; अब वह निर्बोध भाव का प्रयोग करता है। शब्द है पाइडिओन, "मेरा बालक," मेरी आँखों का तारा। शायद एक छोटे बच्चे का चेहरा इस उपदेशक के हृदय को छू जाएगी।

सच्चे विश्वास का उसको मार्ग दिखाते हुए यीशु ने उससे कहा, "जा" "तेरा पुत्र जीवित है" (4:50)। वास्तव में यीशु ने उससे कहा: "ठीक है, आओ हम पता लगाएँ कि तू बिना देखे विश्वास करता या नहीं। तू चाहता है कि मैं कफरनहूम आऊँ। वैसे, मैं नहीं आ रहा हूँ। मेरा आना बिल्कुल भी जरूरी नहीं है। किसी बीमार बच्चे की मृत्यु के समय उसे चंगा करने के लिये मुझे शारीरिक रूप से वहाँ उपस्थित होने की आवश्यकता नहीं है। मैं यहीं रहूँगा और उसे चंगा करूँगा। तू घर जा। तेरा पुत्र जीवित है। मैंने मृत्यु को उसे छोड़ देने की आज्ञा दे दी है।" उसमें हमारे लिये भी आश्वासन का एक शब्द है। कुछ करने के लिये प्रभु को हमारी ओर से शारीरिक रूप से उपस्थित होने की आवश्यकता नहीं है; दूरी उसके लिये कोई रुकावट नहीं है।

बहुत समय नहीं हुआ था जब राजकर्मी को इसका प्रमाण मिला (4:51-54) कि प्रभु उसके भरोसे में खरा उतरा था। वह घर जा रहा था जब उसने देखा कि उसके कुछ सेवक उसकी ओर तेजी से आ रहे हैं। स्पष्ट है उन्हें खबर थी। क्या उसकी आत्मा में सन्देह की किरण उभरने से उसका हृदय तेजी से धड़कने लगा था? जैसे ही विश्वास की जीत हुई, क्या उसका हृदय उसके भीतर उछल पड़ा? इस अच्छी खबर के अलावा और क्या खबर हो सकती है! और निश्चित रूप से, वही हुआ। सेवकों ने उससे यीशु के समान शब्दों के साथ भेंट की: "तेरा पुत्र जीवित है।"

अब, रोचक बात यह है कि राजकर्मचारी ने बातों की तुलना अपने दासों से की। यह स्मरण करते हुए कि वह उसे मरने की स्थिति में छोड़ आया था, उसने कहा, "किस घड़ी वह अच्छा होने लगा?" "जब उन्होंने कहा कल सातवें घण्टे था—दोपहर के एक बजे, ठीक उसी समय जब यीशु ने उससे कहा था, "तेरा पुत्र जीवित है।"

काना से कफरनहूम तक की दूरी लगभग बाईस मील थी। पिता उसी दिन घर आया होगा। हालाँकि, प्रभु पर उसका भरोसा इतना सुरक्षित प्रतीत होता है कि उसने कोई जल्दी नहीं की। शायद वह थका हुआ और भूखा था। शायद वह आराम और ताजगी के लिये रुका था। जल्दी करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। सब कुछ ठीक था।

अब उसे इस बात की पूरी पुष्टि हो गई थी कि यीशु वास्तव में परमेश्वर का पुत्र, इस्राएल का मसीह था। यूहन्ना ने ध्यान दिया कि राजकर्मी ने "और उसके सारे घराने ने विश्वास किया।" पहले उसने प्रभु की प्रतिज्ञा की हुई बातों की प्रतीति की (4:50); अब उसने प्रभु के व्यक्तित्व पर विश्वास किया।

इस आश्चर्यकर्म के विवरण को समाप्त करते हुए, यूहन्ना इसे कहता है "यह दूसरा आश्चर्यकर्म [चिह्न] था जो यीशु ने यहूदिया से गलील में आकर दिखाया।" निस्संदेह, यह यीशु द्वारा किया गया दूसरा आश्चर्यकर्म नहीं था। यह यूहन्ना के चयनित आश्चर्यकर्मों में से दूसरा था जो पहले आश्चर्यकर्म की तरह गलील के काना में किया गया था।

खंड 2. उसके परमेश्वरत्व पर विवाद (5:1-10:42)

I. उसके जीवन का प्रभाव (5:1-6:71)

प्रभु ने मिश्रित स्वागत के साथ यरूशलेम, यहूदिया, सामरिया और गलील में इब्रानी राष्ट्र के प्रतिनिधियों के सामने अपने आप को मसीह के रूप में प्रकट किया।

A. यरूशलेम का शहरी क्षेत्र (5:1-47)

यूहन्ना अब उस संघर्ष की ओर मुड़ता है जो यरूशलेम में शुरू होता है और तब तक समाप्त नहीं होता जब तक कि अंधे राष्ट्र ने अपने मसीह को मरवा नहीं डाला।

1. बीमार मनुष्य को चुनौती (5:1-15)

अब प्रभु ने एक ऐसे मनुष्य को ढूँढ़ा जिसे वह चंगा करना चाहता था, और जानबूझकर सब्त के दिन उसे **चंगा** किया। यह यहूदी पारम्परिक धर्म के लिये एक स्पष्ट चुनौती थी, और इसलिये यहूदियों द्वारा उसके जीवन और शिक्षा के अधिक आत्मिक पहलुओं को स्वीकार करने में एक बाधा थी।

अध्याय 5 में संघर्ष शहरी यरूशलेम में केन्द्रित है; अध्याय 6 में संघर्ष गलील के ग्रामीण क्षेत्र में केन्द्रित है। अध्याय 5 में संघर्ष दो चुनौतियों के आस-पास केन्द्रित है: बीमार मनुष्य को प्रभु की चुनौती (5:1-15) जिसके बाद प्रभु की उन अयोग्य मनुष्यों को चुनौती (5:16-47) जिन्होंने उसके ऐसा करने के अधिकार पर प्रश्न उठाया क्योंकि सब्त के दिन उसने ऐसा किया था।

पहले, हम भीड़ को देखते हैं (5:1-4)। यूहन्ना का कहना है कि यह विशेष आश्चर्यकर्म "यहूदियों के पर्व" के समय हुआ था। किस पर्व की बात की जा रही है, इस पर कई तरह के विचार हैं। कुछ लोगों का विचार है कि यह पुरीम (मार्च) या फसह (अप्रैल) या पिन्तेकुस्त का पर्व था। एक आकर्षक दृश्य यह है कि यह पर्व तुरही (सितम्बर की अमावस्या) का पर्व है, जिससे नए वर्ष की शुरुआत होती है। यहूदियों का मानना था कि इसी दिन यहोवा परमेश्वर ने मूसा को व्यवस्था दी थी, इसी दिन उसने जगत की सृष्टि की थी।

आश्चर्यकर्म का स्थान "भेड़ बाज़ार" या भेड़–फाटक के होने की अधिक सम्भावना है। निस्संदेह, यूहन्ना के लिखे जाने तक यरूशलेम शायद पहले से ही खण्डहर हो चुका था, परन्तु उसने उस दृश्य की कल्पना की और उसे यह अच्छे से स्मरण था। भेड़–फाटक यरूशलेम की उत्तरी दीवार के पूर्वोत्तर कोने से अधिक दूर नहीं था (नहेम्याह 3:1, 32; 12:39)।

यहाँ निकट ही एक कुण्ड था जो बैतहसदा कहलाता था। इस नाम का विभिन्न अनुवाद "दया का घर," "द्वारमण्डप का घर," "जैतून का घर," और "उण्डेले जाने का घर" के रूप में किया गया है। ऐसा लगता है कि दो कुण्ड आपस में जुड़े थे और उन्हें घेरने वाले क्षेत्र को चार ढके हुए स्तम्भों द्वारा चिह्नित किया गया था, जिसमें से एक स्तम्भ दो कुण्डों के बीच केन्द्रित था। इनसे कुण्ड के चारों ओर ओसारे या ढकी हुई कोठरियाँ बन गईं, जिनके ओसारे में बड़ी संख्या में बीमार लोग पड़े रहते थे। क्षेत्र का दौरा करनेवाले कुछ लोगों ने बताया कि, सम्भवतः लोहे या अन्य रसायनों के जमाव के कारण पानी का रंग लाल था। इस कुण्ड की प्रतिष्ठा उन दिनों चंगा करनेवाले खनिज स्त्रोत से जुड़ी हुई थी।

समय-समय पर पानी "हिलाया जाता" था (5:4)। इस पद की मान्यता के बारे में कुछ सन्देह है। शायद यह पानी के नियुक्त समय पर हिलाए जाने के लिये समय की लोकप्रिय व्याख्या को दर्शाता है। समय-समय पर कुछ घटित

होता था, इसका प्रमाण इस तथ्य से मिलता है कि सब प्रकार के बीमार लोग घटना के पहले संकेत की प्रतीक्षा में कुण्ड के पास प्रतीक्षा करते रहते थे। लोकप्रिय धारणा यह थी कि जो कोई कुण्ड में हलचल होने पर पहले उतरने में सफल हो जाता था, उसे चाहे जो भी बीमारी हो, वह चंगा हो जाता था।

दोनों कुण्ड एक बड़े जलाशय प्रणाली के हिस्सा थे। बैतलहम के दक्षिण-पश्चिम में स्थित “सुलैमान के कुण्ड” से कुण्डों में पानी पहुँचाया जाता था। जबकि पानी, सम्भवतः कुण्डों में किसी अन्य प्राकृतिक झरने से भी रुक-रुक कर आता था।

यीशु इस जगह के बारे में और आसपास इकट्ठा होने वाले लोगों के बारे में सब कुछ जानता था। वह कुण्ड से जुड़ी लोकप्रिय दन्तकथाओं, वहाँ मौजूद प्रत्येक व्यक्ति, और उनकी सभी आशाओं, निराशाओं, असफलताओं और उनकी पूर्व मान्यताओं को जानता था।

वह भीड़ मानवजाति का प्रतिनिधित्व करती थी। वहाँ वे प्रतीक्षा करते हुए, विश्वास करते हुए, निराशा के साथ अपनी बीमारी में पड़े रहते थे। उन्हें वहाँ लाया जाता था, उन्हें वहाँ छोड़ दिया जाता था—ऐसा कहा जा सकता है—आशा के विरुद्ध आशा करते हुए, याजक और लोगों द्वारा समान रूप से पारित किए गए धार्मिक विश्वासों को बढ़ावा देते हुए, किसी प्रकार के आश्चर्यकर्म की लालसा करते हुए, शायद कहीं ऐसा न हो कि धर्म उनकी सबसे बड़ी आवश्यकता को पूरा करने में शक्तिहीन साबित हो जाए के भय में जीते हुए, एक मृत धर्म के द्वार पर पड़े रहते थे।

अब हमें उस मनुष्य को देखना चाहिए (5:5)। वह वहाँ बहुत लम्बे समय से था। यूहन्ना का कहना है कि यह अड़तीस वर्ष, आधा जीवनकाल था। हो सकता है कि उसे किशोरावस्था में वहाँ लाया गया हो और सब कुछ ठीक होने के लिये वहाँ छोड़ दिया गया हो। हम कल्पना कर सकते हैं कि कैसे आशा में देरी ने उसके हृदय को बीमार कर दिया था, कैसे कुण्ड पर अपने शुरुआती महीनों के दौरान उसकी आशाओं को निराशा में बदल दिया और फिर उसके भाग्य की स्वीकृति को सुस्त कर दिया था। वर्ष बीतते-बीतते एक-एक करके उसके मित्रों ने उसका साथ छोड़ दिया। उसे छोड़ दिया गया था, स्पष्ट रूप से अब उसे लकवा मार गया था। हिलने-डुलने में असमर्थ होने के कारण वह एक अचल प्राणी बन गया था। दिन आए और चले गए; दिन महीने बन गए; महीने वर्ष बन गए। अन्य लोग, जो उससे अधिक बलशाली और अधिक फुर्तीले थे, जब भी पानी “हिलाया जाता” था, तो वे हमेशा उससे आगे रहते थे। फिर भी वह कुण्ड के चंगा करने की शक्ति में अपने दयनीय विश्वास पर अड़ा रहा।

परन्तु यह उसके लिये नहीं था। जहाँ तक इस विचार की बात है कि कोई याजक या भविष्यद्वक्ता उसे कुण्ड में उतरने में सहायता करे—वैसे, वह अब तक संगठित धर्म के बारे में इतना जान चुका था कि इसके अपने रूप और विधियाँ हैं, सहायक, सेवक और भक्त हैं। परन्तु उसे करने के लिये बहुत कुछ अच्छा होने की सम्भावना थी।

हम इस मनुष्य के दुःख को कैसे माप सकते हैं? उसका कोई मित्र नहीं, कोई परिवार नहीं था। उसके साथ रहनेवाले: अंधे, लंगड़े और सूखे अंगवाले लोगों का जीवन पीड़ा से भरा था। उनकी सारी आशा दूसरों को पीछे कर देने और कुण्ड में पहले उतरने के अवसर सिमट कर रह गई थी। पहले स्थान के लिये सामान्यतः होड़ मची रही होगी, पूरी तीव्रता के साथ लोग अपनी शारीरिक स्थिति और चंगा होने की दयनीय आशा से ग्रस्त रहे होंगे; यह दृश्य, इसकी दुर्गंध, अवश्य ही निराशाजनक रही होगी। यहाँ भारी संख्या में लोग दुर्दशा में पड़े हुए थे, लाचारी का कोई अन्त नहीं था। क्योंकि यह मनुष्य काम नहीं कर सकता था, निस्संदेह उसके मन में सन्देह ने जड़ पकड़ ली थी। उसने आशा लगभग छोड़ ही दी थी। वह नए आनेवाले लोगों को देखता था, देखता था कि दूसरे लोग उसे

किस तरह से देखते हैं, जिससे निश्चित था कि उन्हें पीछे धकेल दिया जाता था या यदि कोई अभी भी हिम्मत करता था, तो वे उस व्यक्ति को घृणा की दृष्टि से देखते थे और उसे एक प्रतिद्वंद्वी के रूप में कोसते थे।

क्या इस मनुष्य ने यीशु के बारे में सुना था? क्या नासरत से चंगा करनेवाले की खबर इस दुर्दशा के घेरे में आ गई थी? अवश्य ही ऐसा हुआ था। परन्तु, यदि यह यीशु इतना ही महान चंगा करनेवाला था, तो उसने यहाँ आकर उन सब को चंगा क्यों नहीं किया?

फिर एक दिन यीशु आया। हम अपना ध्यान गुरु की ओर (5:6-15) और स्थिति की ओर (5:6-9क) केन्द्रित करते हैं। प्रभु ने उसे वहाँ पड़े हुए "देखा", और उसके विषय में सब कुछ जान लिया। वह जानता था कि वह वहाँ कितने समय से था। उसे पूछने की आवश्यकता नहीं थी—जैसे वह नतनएल और कुएँ पर आई स्त्री के विषय में सब कुछ जानता था। उस मनुष्य का हृदय, चरित्र और इतिहास उसके सामने खुला था।

तब यीशु ने उससे महत्वपूर्ण प्रश्न पूछा: "क्या तू चंगा होना चाहता है?" मनुष्य के उद्धार में परमेश्वर की सर्वश्रेष्ठता के बारे में जो कुछ भी कहा जाए या न कहा जाए, एक बात निश्चित है। मनुष्य की इच्छा अपना काम करती है। ईश्वरीय सर्वशक्तिमानता कभी भी उस इच्छा की पवित्रता का उल्लंघन नहीं करती। परमेश्वर दुःख नहीं पहुँचाता; वह प्रीति रखता है। प्रभु लोगों को उनकी इच्छा के विरुद्ध न तो चंगा करता है और न ही उनका उद्धार करता है। और इसलिये यह प्रश्न उस व्यक्ति से पूछा गया। यह अच्छी तरह से हो सकता है कि, उस स्थिति में इतने लम्बे समय तक रहने के बाद, वह इससे सहमत हो गया था, इससे इतना परिचित हो गया था कि वह अब सामान्य जीवन की चुनौती और प्रतिस्पर्धा का सामना नहीं करना चाहता था। शायद, अब तक बैतहसदा के कुण्ड के पास उसका स्थान उसके जीवन का केन्द्र बिन्दु बन गया था कि उसे बदलने की कोई इच्छा नहीं थी।

उस मनुष्य के उत्तर से तुरन्त पता चला कि उसके ठीक होने में हुई देरी में उसकी कोई गलती नहीं थी। उसने कुण्ड में पहले उतरने की आशा छोड़ दी थी, परन्तु यदि उसकी सहायता करनेवाला कोई होता, तो उसकी आशा जल्द ही पुनर्जीवित हो जाती। यह अवसर की कमी थी, इच्छाशक्ति की कमी नहीं, जिसने उसे वहीं रोके रखा जहाँ वह था। ऐसे कई लोग हैं, जिन्हें उद्धार की बड़ी आवश्यकता है, वे फिर भी अपने पाप में बने रहने से सन्तुष्ट हैं। तो प्रश्न आता है: "क्या तू चंगा होना चाहता है?"

हालाँकि, परमेश्वर के पास ऐसे इलाज पर आकस्मिक निर्भरता से अधिक अच्छा उत्तर था जो आधा मिथ और संदिग्ध रूप से विश्वसनीय था। उसने कहा "उठ, अपनी खाट उठा, और चल फिर।" उस मनुष्य का "खाट" एक हल्का गद्दा या सूती की रजाई था जिसे आसानी से लपेटकर ले जाया जा सकता था।

प्रभु ने ईश्वरीय अधिकार और सामर्थ्य के साथ सीधे इस मनुष्य की इच्छा के बारे में बात की। उसके मन में यह कभी नहीं आया कि वह उस आज्ञा को न माने, जो विचार करने पर एक असम्भव आज्ञा प्रतीत होता हो। उसकी आत्मा में विश्वास उमड़ पड़ा, प्रतिक्रिया करने की क्षमता उसके लकवाग्रस्त अंगों में भर गई। उसने वही किया जो उससे कहा गया और वह तुरन्त "चंगा हो गया, और अपनी खाट उठाकर चलने फिरने लगा" (5:9)। "चल फिर" के लिये प्रभु का शब्द पेरिपाटिओ था, जिसका वास्तविक अर्थ है "चलने लग।" प्रत्यक्ष रूप से प्रभु चाहता था कि लोग इस मनुष्य को देखें। उसका चंगा होना एक चिह्न था। यह आश्चर्य की बात है कि दूसरे सभी बीमार लोगों ने यीशु के पास आने में तत्काल भगदड़ नहीं मचाई।

यूहन्ना आगे कहता है, “वह सब्त का दिन था।” ऐसा कोई कारण नहीं था कि प्रभु इस मनुष्य को एक दिन पहले या उसके अगले दिन चंगा नहीं कर सकता था। उसने यह सब्त के दिन करने का निर्णय किया और फिर सब्त का दिन होने के बावजूद उस मनुष्य से कहा अपनी खाट उठाकर “चल फिर।”

इस प्रकार हमारा ध्यान स्थिति से हटकर सब्त के दिन की ओर केन्द्रित हो जाता है (5:9ख-15)। हम उस मनुष्य की बुद्धिमानी पर ध्यान देते हैं (5:9ख-11)। अधिक समय नहीं लगा जब “यहूदियों” (यहूदी अधिकारियों) ने आक्रोशपूर्वक उसे चुनौती दी। “आज तो सब्त का दिन है, तुझे खाट उठाना उचित नहीं” (5:10)। प्रभु ने इस मनुष्य को सब्त को तोड़ने के लिये नहीं, सिर्फ सब्त के दिन के बारे में पारम्परिक धार्मिक अनुशासन का उल्लंघन करने के लिये कहा था।

रब्बियों ने सब्त के दिन के लिये दर्जनों नियमों और अधिनियमों को बना रखा था। उन्होंने विश्राम दिन के पालन को कामकाज में बदल दिया था। जिसे परमेश्वर ने एक आशीष माना था, उसे उन्होंने बोझ में बदल दिया था। नियम क्रमांक उनतीस में एक घर से दूसरे घर तक सामग्री ले जाने पर रोक लगाई गई थी। उनके अनुसार, उस मनुष्य को या तो सब्त के दिन को खत्म होने तक वहीं रुकना चाहिए था (जैसे कि वह मनुष्य उस जगह से मन से बीमार नहीं था) या फिर खाट की चोरी होने का जिम्मेदारी लेते हुए अपनी खाट वहीं छोड़ देना चाहिए था (जो कि ऐसे लाचार मनुष्य के लिये अकल्पनीय था)। यीशु में अधिक समझ और अधिक सहानुभूति थी। वह जानता था कि अभी-अभी चंगा हुआ यह मनुष्य अपने पैरों पर खड़े होने के लिये बहुत उत्सुक है और वह चलना चाहता है। उसने स्पष्ट समाधान का आदेश दिया: “अपनी खाट उठा, और चल फिर!” शायद उसने यह भी कहा होगा “और सब्त के दिन की चिन्ता न कर।” “विश्राम का दिन का विचार मेरा था, उनका नहीं।”

जब धार्मिक अगुवों द्वारा चुनौती दी गई, तो चंगे हुए मनुष्य ने अपनी बुद्धिमानी दिखाई: “जिसने मुझे चंगा किया, उसी ने मुझ से कहा, ‘अपनी खाट उठा, और चल फिर’।” जो उसके लिये यह स्पष्ट था, उनके लिये नहीं, बल्कि जिसने उसे चंगा किया था उसका अधिकार उनसे श्रेष्ठ था। निश्चित रूप से जो मनुष्य एक वाक्यांश से चंगा कर सकता है, उसके पास परमेश्वर के साथ किसी प्रकार की समझ होनी चाहिए, जो यरूशलेम में धार्मिक अगुवों के पास नहीं थी। यह मनुष्य अड़तीस वर्ष तक पड़ा रहा और उन्होंने उसके लिये कुछ नहीं—कुछ भी नहीं किया। निश्चित रूप से उन्होंने उस पर उस प्रकार की करुणा या अधिकार नहीं दिखाया था जो इस अपरिचित चंगा करनेवाले ने दिखाया था।

हम उस मनुष्य की अज्ञानता पर भी ध्यान देते हैं (5:12-13)। वह नहीं जानता था कि उसका भला चाहनेवाला कौन है। और जब यहूदियों ने उसे चुनौती दी तो उसने ऐसा कहा भी। अगुवे अपना क्रोध उस मनुष्य पर दिखाना चाहते थे जिसने ऐसी आज्ञा देने की साहस की थी। न ही चंगा हुआ मनुष्य अपने चंगा करनेवाले की ओर इशारा कर सकता था, “क्योंकि उस जगह में भीड़ होने के कारण यीशु वहाँ से हट गया था” (5:13)। प्रभु का इस मनुष्य को कठिनाई में छोड़ने का कोई इरादा नहीं था। वह केवल प्रचार से बचने की अपनी सामान्य नीति का पालन कर रहा था। वह मनुष्य अधिक समय तक अनजान बना नहीं रहा।

हम उस मनुष्य के भोलेपन को देखते हैं (5:14-15)। बाद में प्रभु उसे मन्दिर में मिला, यह अपने आप में एक अच्छा संकेत था, और उसने उसका अपराध क्षमा किया। वह मनुष्य नहीं जानता था कि यीशु कहाँ मिल सकता है, परन्तु वह जानता था कि परमेश्वर को कहाँ ढूँढ़ा जाए। वह मनुष्य अपनी चंगाई के लिये धन्यवाद देने परमेश्वर के भवन में गया, या ऐसा प्रतीत होता है।

यदि वह मनुष्य नहीं भी जानता था कि यीशु कहाँ मिल सकता है, परन्तु प्रभु जानता था कि वह कहाँ मिलेगा। उसने उसको ढूँढ़ा। उसे उससे कुछ कहना था जो वह कहना चाहता था। इस मनुष्य की बीमारी और उसके पाप के बीच कुछ छिपा हुआ सम्बन्ध था। प्रभु के पास एक के लिये चंगाई और दूसरे के लिये क्षमा थी। परन्तु प्रभु ने पाप को कभी जाने नहीं दिया। उसने चेतावनी दी: "देख, तू चंगा हो गया है : फिर से पाप मत करना, ऐसा न हो कि इससे कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े" (5:14)। यह समझना अवश्य है कि पाप उस स्थिति से भी भयंकर स्थिति उत्पन्न कर सकता है जो इस मनुष्य पर पहले ही आ पड़ी थी। चाहे जो भी हो, उसका पाप युवावस्था में ही उस पर आ पड़ी थी। जिसने उसके जीवन के सर्वोत्तम वर्षों को छीन लिया और मध्य आयु के अन्त में उसे बीमार बना दिया था।

कई मानवीय संकट पाप के प्रत्यक्ष परिणाम हैं। हमारे समय में भयानक बीमारियाँ व्यभिचार और बुरी संगति में पाए जानेवाले मनुष्य के ताक में छिपी रहती हैं। यदि हमारे पास सभी तथ्य हों तो हो सकता है कि कई अन्य बुराइयों का सीधा सम्बन्ध पाप से हो।

यीशु ने उस मनुष्य को उसके अतीत के पाप को क्षमा करते हुए और फिर से निर्दोषता में उसके उज्ज्वल भविष्य जो उसकी प्रतीक्षा कर रहा था के साथ छोड़ दिया। उसने बिना अपराध के और बिना किसी कपट के नए सिरे से जीवन शुरु किया।

प्रभु ने उस मनुष्य से उसके पाप के विषय में बात की क्योंकि पहले कभी किसी ने उससे इस विषय में बात नहीं की थी। ज्योति आई। वह मनुष्य यीशु था! बिना किसी कपट के वह मनुष्य यहूदियों के पास वापस गया और उन्हें बताया कि वह यीशु ही था जिसने उसे चंगा किया था (5:15)। उसने यह नहीं कहा कि यह यीशु ही था जिसने उसे सब्त के दिन अपनी खाट उठाने के लिये कहा था। उसने उन्हें बताया कि यीशु ने उसे चंगा किया था, उसने अपने नये पाए प्रभु को आदर दिया। शायद उसने सोचा था कि यीशु का नाम ही उसके आलोचकों को चुप कराने के लिये काफी होगा। वह गलत था। परन्तु हम उसे ईमानदारी से गलत होने का श्रेय देते हैं।

2. दोष लगानेवालों को चुनौती (5:16-47)

सब्त के दिन बीमार मनुष्य की चंगाई और उसके बाद उसका यीशु को अपने चंगा करनेवाले के रूप में पहचान करने से अगुवों का ध्यान क्रोध के साथ यीशु की ओर हो गया। यीशु ने जिसके होने की बात कही थी वही हुआ। वह रब्बी परम्पराओं को चुनौती देने वाला था और जल्द ही उसने वैसा ही किया। उस पर उनका क्रोध उनकी निर्दयता को खुली चुनौती देने का आधार बन गया।

इसे तीन खण्डों में बाँटा गया है। हम देखते हैं, यीशु के विरुद्ध लगाए गए दोष (5:16), फिर उसका खण्डन किया गया (5:17-38), और फिर उलट दिया गया (5:39-47)।

यीशु के विरुद्ध लगाया गया दोष (5:16) बस इतना था कि, सब्त के दिन बीमार मनुष्य को चंगा करके, उसने सब्त के दिन को अपवित्र किया था। इसके अलावा, उस मनुष्य को अपनी खाट उठाकर चलने फिरने के लिये कहकर, उसने सब्त के दिन के प्रति अपना अपराध बढ़ा लिया था। प्रभु ने दस्ताना नीचे फेंक दिया था। उन्होंने उसे उठाया और उसके चेहरे पर फेंक दिया। यूहन्ना कहता है, वे यीशु को "सताने लगे" और उसे मार डालने का प्रयत्न किया। यह उस युद्ध में शुरुआती रुकावट थी जो लगभग डेढ़ वर्ष बाद क्रूस पर चढ़ाए जाने तक समाप्त नहीं होगी।

आगे दोष का खण्डन किया गया (5:17-38)। प्रभु ने इस बात से इनकार किया कि उसने सब्त के नियम को तोड़ा है। यह दोष और प्रतिवाद के उन लम्बे, जटिल आदान-प्रदानों में से एक का पालन करता है जो सुसमाचार के यूहन्ना के विवरण की विशेषता है। प्रभु ने उसके विरुद्ध लगाए गए दोष की निर्दोषिता के लिये तीन गवाह प्रस्तुत किए: उसके पिता की गवाही (5:17-32), उसके अग्रदूत की गवाही (5:33-35), और उसके पीछे चलनेवाले लोगों की गवाही (5:36-38)। यहाँ हम इनमें से पहले से शुरुआत करते हैं। अपने व्यवहार के प्रति प्रभु के बचाव में अन्तर्निहित विचार यह है कि उसने सब्त के दिन का निरादर नहीं किया था। बल्कि, उन्होंने स्वयं सब्त के दिन को बिगाड़ दिया था। गलती उनकी मान्यताओं में थी, न कि उसके व्यवहार में। उसने अपने पिता को गवाही देने के लिये स्मरण किया।

प्रभु ने पहले पिता और विश्रामदिन के विषय में बात की (5:17-18)। यह सुनकर यहूदी भीतर तक हिल गए कि इस व्यक्ति ने अत्यन्त निकटता और निरपेक्ष शब्दों में परमेश्वर को अपने पिता के रूप में संदर्भित किया है। उसने कहा, “मेरा पिता अब तक काम करता है, और मैं भी काम करता हूँ,” उसने अपनी गतिविधि को परमेश्वर की गतिविधि के बराबर रखते हुए कहा (5:17)। यहूदी सब्त विश्राम का एक ईश्वरीय और लाभकारी प्रावधान था, जो दस आज्ञाओं (निर्गमन 20:8-11) में दिया गया था, जो परमेश्वर की सृष्टि से विश्राम पर आधारित था (उत्पत्ति 2:1-3) और इसका उद्देश्य परमेश्वर के लोगों को विश्राम और आराम के लिये एक दिन देना था। जहाँ तक परमेश्वर के सब्त के विश्राम का सम्बन्ध है, वह विश्राम निष्क्रियता का विश्राम नहीं था, बल्कि अच्छी तरह से किए गए काम में ईश्वरीय सन्तुष्टि का विश्राम था। इस संसार में पाप के आ जाने के कारण परमेश्वर का सब्त जल्द ही टूट गया। इस प्रकार परमेश्वर की सृष्टि के विश्राम में बाधा उत्पन्न होने के बाद, उसने एक नया काम शुरू किया, छुटकारा देने का काम। वह काम अभी भी चल रहा था, और यीशु उसका एक हिस्सा था। बैतहसदा के कुण्ड के किनारे का वह दुःखी मनुष्य उस बर्बादी का एक प्रमुख प्रदर्शन था जो पाप ने संसार में लाया था। सब्त के दिन उस मनुष्य की चंगाई इस संसार में परमेश्वर के काम का हिस्सा था।

यहूदियों ने परमेश्वर के काम करने के भाग को अनदेखा कर दिया और इस तथ्य को पकड़ लिया कि प्रभु ने स्पष्ट रूप से अपने आप को परमेश्वर के तुल्य भी ठहराता था (5:18)। “इस कारण यहूदी और भी अधिक उसके मार डालने का प्रयत्न करने लगे, क्योंकि वह न केवल सब्त के दिन की विधि को तोड़ता, परन्तु परमेश्वर को अपना पिता कह कर अपने आप को परमेश्वर के तुल्य भी ठहराता था।” यहूदियों ने प्रभु के दावों को सही से पढ़ा। उसने दावा किया कि उसे सब्त की व्यवस्था को समाप्त करने का अधिकार है क्योंकि वह परमपिता परमेश्वर के तुल्य होने के कारण, इस संसार में उसका सहकर्मी था। इन यहूदियों के दृष्टिकोण से, इससे अधिक निन्दापूर्ण दावा नहीं किया जा सकता था। वे उसे मार डालने के लिये पहले से भी अधिक इरादा रखते थे। उसे मार डालने का प्रयास तीन बार किया गया था (यूहन्ना 5:17; 8:58-59; 10:30-31) और अन्ततः वे सफल रहे (मरकुस 14:61-64)। इसका आधार केवल यह था कि यीशु ने परमेश्वर होने का दावा किया था, जिस पर यहूदियों ने विश्वास नहीं किया और यूहन्ना अपने सुसमाचार के विवरण में कुछ ऐसा दिखाने का विचार कर चुका है।

प्रभु ने आगे पिता और पुत्र के विषय में बात की (5:19-24)। परमेश्वर के तुल्य होने के उसके दावे पर यहूदियों के क्रोध ने प्रभु को नहीं रोका। वह “सत्य” था और उस सत्य की घोषणा करने से पीछे नहीं हटा। उसने अब पिता के साथ अपने अनोखे रिश्ते के विषय में बात की। उदाहरण के लिये, प्रभु के अधिकार क्षेत्र का मामला था (5:19-21), अधिकार का विशेष क्षेत्र जिसमें वह काम करता था। इस क्षेत्र में कुछ बातें थीं जो वह कर सकता

था और कुछ बातें जो वह नहीं कर सकता था। सब कुछ परमेश्वरत्व के भीतर तीन व्यक्तियों के सम्बन्ध की विशिष्टता से नियन्त्रित होता था।

उदाहरण के लिये, पुत्र के रूप में, परमेश्वरत्व के भीतर उसकी विश्वासयोग्यता का प्रश्न था (5:19), पिता के प्रति पुत्र की विश्वासयोग्यता (5:19)। उसने कहा, "मैं तुम से सच सच [हमें इस गम्भीर वचन पर ध्यान देना चाहिए], कहता हूँ, पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है; क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है।" परमेश्वरत्व के सदस्यों के बीच कोई स्वतंत्रता नहीं थी, कोई टकराव नहीं था। परन्तु इसमें इससे भी अधिक कुछ था। परमेश्वर का पुत्र मनुष्य का पुत्र बन चुका था। और, मनुष्य के रूप में, यद्यपि उसके पास अभी भी ईश्वरत्व के सारे अधिकार और गुण थे, उसने पिता की आज्ञा के बिना उनका उपयोग नहीं किया। इस कथन का यही अर्थ है, "पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता।" परमेश्वर की स्वतंत्रता में कार्य करने का विचार एक अन्यजाति विचार, एक पापपूर्ण विचार, एक शैतानी विचार—पाप के केन्द्र में विचार था। शैतान ने इस विचार का उपयोग आदम और हव्वा की परीक्षा और जंगल में प्रभु की परीक्षा दोनों में किया था।

प्रभु इसे इस प्रकार कह सकता था: "जबकि मैं, परमेश्वर के रूप में, कभी भी परमेश्वर से कम नहीं हूँ, इसलिये, मनुष्य के रूप में, मैं कभी भी मनुष्य से अधिक कुछ नहीं हूँ।" वह यहाँ मनुष्य के रूप में वह सब कुछ उपलब्ध कराने के लिये आया था जो पिता परमेश्वर के रूप में था, ताकि वह सब जो पिता परमेश्वर के रूप में था वह उन सब के लिये उपलब्ध हो सके जो वह मनुष्य के रूप में था। स्वतंत्रता सम्भव नहीं थी। पूर्ण मनुष्यत्व में पूर्ण ईश्वरत्व प्रतिष्ठित था। यह कुछ ऐसी बात थी जिसे यीशु के विरोधियों ने कभी नहीं समझा।

आइए हम इस पद में हमारे प्रभु द्वारा किए गए अद्भुत दावों के बारे में और सोचें। उसने कहा कि उसने वही किया जो उसने पिता को करते देखा था: "क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है" (5:19)।

इसका अर्थ यह है कि सृष्टि की सबसे दूरस्थ सीमा तक, परमेश्वरत्व के सबसे दूर और गुप्त संचालन और सभाओं में, पुत्र जानता है कि परमेश्वरत्व क्या कर रहा है। वह इसे जानता है, इसलिये नहीं कि यह ज्ञान उसे बताया गया गया है, बल्कि इसलिये कि उसके पास इसके बारे में एक सहज चेतना है। पिता पुत्र को सब कुछ दिखाता है—इसलिये जो दिखाया जा रहा है उसे समझने के लिये पुत्र का मन है परमेश्वर के मन के, सर्वज्ञाता होने का मन के अनुरूप है।

शायद एक उदाहरण से सहायता मिलेगी। ऐसा कहा जाता है कि आइंस्टीन के सापेक्षता का सिद्धान्त का गणित इतना कठिन है कि इसे बहुत कम वैज्ञानिक ही समझ पाते हैं। जब किसी ने परमाणु भौतिक विज्ञानी सर आर्थर एडिंगटन से पूछा कि क्या यह सच है कि वास्तव में केवल तीन लोग ही इस विषय को समझते हैं, तो प्रसिद्ध वैज्ञानिक ने उत्तर दिया, "मैं यह सोचने का प्रयत्न कर रहा हूँ कि तीसरा व्यक्ति कौन हो सकता है!" परन्तु, यीशु जानता था। उसने उन गणित और उनमें शामिल सब विचारों का आविष्कार किया है।

इस पृथ्वी पर रहते हुए भी प्रभु सब कुछ जानता था।

प्रश्न न केवल परमेश्वरत्व के भीतर विश्वासयोग्यता का था, बल्कि प्रश्न उसके प्रेम का भी था (5:20) : "क्योंकि पिता पुत्र से प्रीति रखता है और जो जो काम वह आप करता है, वह सब उसे दिखाता है; और वह इनसे भी बड़े काम उसे दिखाएगा, ताकि तुम अचम्भा करो।" परमेश्वरत्व के भीतर की एकता पूर्ण प्रेम की एकता है। "प्रीति

रखना" के लिये शब्द फिलियो है, सामान्य प्रेम के लिये शब्द, वह शब्द जो व्यक्तिगत स्नेह, भाईचारे के प्रेम, प्रतिदिन के, व्यावहारिक प्रेम, घरेलू प्रेम को दर्शाता है।

इस प्रेम ने पिता को पुत्र को वे बातें दिखाने में सक्षम बनाया जो वह किसी और को नहीं दिखा सकता था, और इसने पुत्र को वह बातें देखने में सक्षम बनाया जो कोई और नहीं देख सकता था। उदाहरण के लिये, उसने बैतहसदा के कुण्ड पर उस मनुष्य को देखा, और फिर उसने पिता की ओर देखा। पिता ने पुत्र की ओर देखा, और फिर मनुष्य की ओर। इसलिये, विश्रामदिन हो या न हो, पुत्र ने पिता की स्वीकृति पाकर उस मनुष्य को चंगा किया। क्या इस चंगाई ने यहूदियों को चकित कर दिया? वे जल्द ही इससे भी बड़े आश्चर्यकर्म देखेंगे।

वहाँ केवल विश्वासयोग्यता और प्रेम ही नहीं था—उसके जीवन का प्रश्न भी था (5:21)। "जैसा पिता मरे हुओं को उठाता और जिलाता है, वैसा ही पुत्र भी जिन्हें चाहता है उन्हें जिलाता है।" प्रभु ने मरे हुओं पर पूर्ण सामर्थ्य का दावा किया। उसने तीन लोगों को मरे हुओं में से जिलाकर प्रमाणित कर दिया कि उसके पास ऐसी सामर्थ्य है। प्रभु ने केवल मरे हुओं को जिलाने के लिये परमेश्वर का साधन होने का दावा नहीं किया, उदाहरण के लिये, एलिय्याह और एलीशा। उसने मरे हुओं का सचमुच प्रभु होने का दावा किया, उसे न केवल भौतिक जीवन, बल्कि अनन्त जीवन तक जिलाने का अधिकार था। यह देखना कठिन है कि कोई कैसे यह कह सकता है कि यीशु ने परमेश्वर होने का दावा नहीं किया। उसने किया।

तो फिर, यह प्रभु का अधिकार क्षेत्र था। उसकी सामर्थ्य और अधिकार पिता के समान और व्यापक थे। परन्तु इन सब से आगे प्रभु के न्याय का विषय था (5:22-24)।

सबसे पहले, न्याय के मामले में पुत्र को पूर्ण एकाधिकार दिया गया है (5:22-23)। प्रभु के पास जीवन और मृत्यु की पूर्ण सामर्थ्य है : "क्योंकि पिता किसी का न्याय नहीं करता, परन्तु न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया है, कि सब लोग जैसे पिता का आदर करते हैं वैसे ही पुत्र का भी आदर करें।"

बात यह है कि प्रभु यीशु सारी सृष्टि का न्याय करनेवाला हैं, इसका अर्थ है कि उसे इतिहास के सभी युगों के सारे अनगिनत मनुष्यों का व्यक्तिगत ज्ञान है। प्रत्येक व्यक्ति की परिस्थितियों की अनन्त विविधता से उसका विस्तृत परिचय है। वह हम में से प्रत्येक के चरित्र को जानता है। वह हमारे उद्देश्यों, अवसरों, छिपे हुए उत्साह, मानसिक क्षमता, विचारों, इच्छाओं, शब्दों और कामों को जानता है। वह जानता है कि हमारे हर कार्य और रूप का अच्छा या बुरा स्थाई प्रभाव पड़ता है। इसके अलावा, उसके पास परमेश्वर के सभी नियमों की पूरी समझ है जिसके द्वारा वह संसार का न्याय कर सकता है। और उसे बिना किसी न्यायालय में याचना के और बिना किसी मामले की सुनवाई के अनन्त काल का दण्ड सुनाने का पूर्ण अधिकार है। दूसरे शब्दों में, प्रभु बिना किसी अनिश्चित शब्दों के सबके ऊपर परमेश्वर होने का दावा कर रहा था।

इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सब लोग पुत्र का उसी रीति से आदर करें जैसे वे पिता का करते हैं। यहूदियों ने सोचा कि वे परमेश्वर का आदर करते हैं, परन्तु उन्होंने मसीह का आदर नहीं किया। प्रभु ने उनके स्वयं को धोखा देने के झूठ को बताया: "जो पुत्र का आदर नहीं करता, वह पिता का जिसने उसे भेजा है, आदर नहीं करता।"

हालाँकि, न्याय पर प्रभु के पूर्ण एकाधिकार के साथ-साथ, न्याय में प्रभु की अत्यन्त दया भी है (5:24)। यहाँ हम उन महान सुसमाचार के विवरणों में से एक को देखते हैं जो यूहन्ना की विशेषता है: "मैं तुम से सच सच कहता हूँ,

जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।"

हम जो प्रभु यीशु पर विश्वास करते हैं, उन्हें तब तक प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है जब तक कि हम मर न जाएँ और सृष्टि के सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत न किए जाएँ, ताकि यह पता चल सके कि न्याय का होना क्या होगा। अभी इसका पता लगाने के लिये हमें केवल अपने हृदय और इस पद से परामर्श करने की आवश्यकता है। यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि हमने मसीह का वचन सुना है या नहीं और उस पर भरोसा रखा है या नहीं।

प्रभु अभी भी इस दोष का खण्डन कर रहा है कि उसने सब्त के दिन जो काम किया वैसा करने का कोई उसे अधिकार नहीं था, और वह अभी भी अपने पिता को गवाह कहता है। उसने पिता और विश्रामदिन, और पिता और पुत्र के विषय में बात की। अब वह पिता और कब्र के विषय में बात करता है (5:25-32)। क्योंकि, मानव जाति के सामने आने वाली सभी मुद्दों में से कोई भी मृत्यु के मुद्दे से अधिक प्रासंगिक, अधिक दबाव वाला और अधिक भयावह नहीं है।

प्रभु हमारा ध्यान दो क्षेत्रों की ओर आकर्षित करता है (5:25-26)। पहले, वह कब्र पर पुत्र के अंतर्निहित अधिकार होने की ओर इशारा करता है (5:25) : "मैं तुम से सच सच कहता हूँ वह समय आता है, और अब है, जिसमें मृतक परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे, और जो सुनेंगे वे जीएँगे।"

अपने पुनरुत्थान से पहले भी प्रभु यीशु ने दावा किया था कि उसके पास मरे हुओं को जिलाने की सामर्थ्य है। यह किसी चमकीली आँखों वाले धार्मिक उत्साही मनुष्य का कोई शानदार दावा नहीं था। यह उस व्यक्ति का गम्भीर कथन था जो शरीर में होकर आया परमेश्वर था, जो जो कहता था उसे पूरा करने की अपनी क्षमता को प्रदर्शित करता था। जब उसने ये शब्द कहे, तो शायद वहाँ कोई सन्देह दिखाई दे रहा होगा—शायद अधिक नहीं, क्योंकि यीशु पहले ही कई उल्लेखनीय आश्चर्यकर्म कर चुका था। उसने पानी को दाखरस में बदल दिया था (2:1-11) और उसने राजकर्मचारी के पुत्र को चंगा किया था (4:46-54)। उस ने कफरनहूम के आराधनालय में अशुद्ध आत्मा से ग्रसित मनुष्य को चंगा किया था; उसने पतरस की सास और अन्य लोगों को चंगा किया था (लूका 4:31-41)। उसने कोढ़ी को शुद्ध किया था और लकवे के रोगी को चंगा किया था (लूका 5:12-26)। और उसने अभी-अभी उस मनुष्य को चंगा किया था जो अड़तीस वर्षों से निराशा में डूबा हुआ था, जो अपने आप में सामर्थ्य का एक अद्भुत काम था।

ये आश्चर्यकर्म हैं जो दर्ज किए गए हैं। इनके अलावा और भी किए गए थे। परन्तु उसने अब तक मरे हुओं को जिलाया नहीं था। इसलिये, शायद, हम यहूदियों को भौंहें चढ़ाते हुए देखते हैं जब यीशु ने दावा किया था कि उसके पास सारी सामर्थ्य में सबसे बड़ी सामर्थ्य मरे हुओं को जिलाने की है। जब कुछ महीनों के भीतर उसने विधवा के बेटे को जिलाया (लूका 7:11-17) तब उनका दोष लगाना थोड़ा कम हो गया और जब लगभग छः महीने बाद उसने याईर की बेटी को जिलाया (लूका 8:41-56) तब और भी कम हो गया और लाज़र के जिलाए जाने के बाद कुछ भी नहीं रहा (यूहन्ना 11)।

हालाँकि, प्रभु का दावा कहीं अधिक व्यापक था। शब्द "समय" का सबसे अच्छा अनुवाद "घड़ी" है। हमारे पास भाषा का एक अलंकार (सिनेकडोखे) है जिसके द्वारा किसी भाग को सम्पूर्ण होने के लिये रखा जाता है (उदाहरण के लिये, मत्ती 27:4 में जहाँ यहूदा ने कहा, "मैं ने निर्दोष को घात के लिये पकड़वाकर पाप किया है," "निर्दोष"

जिसका अर्थ है सम्पूर्ण व्यक्ति)। यहाँ, वाक्यांश “वह समय आता है, और अब है, जिसमें मृतक परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे, और जो सुनेंगे वे जीएँगे,” एक निश्चित और विशेष घड़ी को इंगित करता है। पुनरुत्थान के इस निश्चित और विशेष घड़ी के बारे में प्रभु कहता है, कि यह न केवल आनेवाला था बल्कि यह “अब है” क्योंकि, यदि राष्ट्र ने मन फिराया होता और उसे उद्धारकर्ता और परम प्रधान के रूप में ग्रहण किया होता, तो “भविष्यद्वक्ताओं ने जो कुछ कहा था वह सब” उस समय तेजी से होता और पूरा किया जाता। पतरस ने अपने पिन्तेकुस्त के उपदेश में इसका संकेत दिया है (प्रेरितों 3:19-21)।

हालाँकि, प्रभु के शब्द, मृत लोगों के कब्रों से आने वाली वास्तविक पुनरुत्थान तक ही सीमित नहीं हैं जो अपने आप में ईश्वरत्व के लिये एक व्यापक दावा है परन्तु उनमें लोगों को परमेश्वर का जीवन देना शामिल है, आत्मिक रूप से मृत, जो वैसे ही उसकी आवाज़ सुनते हैं। इसे सुस्पष्ट रूप से सामने लाया गया है, जैसा कि हम लाज़र के जिलाए जाने के समय मार्था को कहे गए प्रभु के शब्दों में देखेंगे (11:25)।

ऐसा प्रतीत होता है कि यह सब यहूदी अधिकारियों द्वारा स्तब्ध चुप्पी में प्राप्त किया गया है। वास्तव में, ऐसा प्रतीत नहीं होता है कि उन्होंने प्रभु को अपने सब्त के दिन की गतिविधियों का बचाव शुरू करने के समय से लेकर (5:17) समाप्त करने के समय तक (5:47) किसी भी तरह से बाधित नहीं किया है, सिवाय शुरुआत में शत्रुता के संकेत के (5:18)।

इस प्रकार एक क्षेत्र, कब्र पर अपने अधिकार का दावा करने के बाद, प्रभु ने अब दूसरे क्षेत्र, परमेश्वर के भीतर पुत्र के अन्तर्निहित जीवन पर अपना अधिकार जताया (5:26) : “क्योंकि जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखता है, उसी रीति से उसने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है कि अपने आप में जीवन रखे।” क्रिया का काल हमें समय की शुरुआत से परे ले जाता है। हमारे पास जीवन है क्योंकि हमने इसे अपने माता-पिता से प्राप्त किया है, और उन्होंने इसे अपने माता-पिता से प्राप्त किया है। जीवन अनायास उत्पन्न नहीं होता। पूर्व में विद्यमान जीवन के बिना कोई जीवन नहीं हो सकता। जीवन परमेश्वर का एकाधिकार है। इस ग्रह पर जीवन की जितनी भी प्रचुर विविधताएँ हम देखते हैं, वे उसी के आविष्कार हैं। जीवन का प्रत्येक रूप ईश्वरीय नियम द्वारा प्रसारित होता है, प्रत्येक प्रकार “अपनी जाति के अनुसार”—जैसा कि उत्पत्ति 1 में सुस्पष्ट रूप से बताया गया है, जहाँ इसे दस बार व्यक्त किया गया है।

परन्तु प्रभु यीशु का जीवन बिल्कुल भी ऐसा नहीं है। वह “पिता का एकलौता पुत्र” है (1:14), जन्म तो हुआ परन्तु सृष्टि नहीं की गई। पिता ने पुत्र को अपने आप में जीवन: अनन्त, सृष्टिहीन जीवनरखने की ईश्वरीय विशेषता प्रदान की है। **पिता** और पुत्र शब्द ही सह-अस्तित्व को दर्शाते हैं। उदाहरण के लिये, जब मेरे पहले बच्चे का जन्म हुआ, तब मैं पिता बन गया। उस समय से पहले मैं पिता नहीं था। मेरे पितृत्व की उत्पत्ति उसी समय हुई जब मेरे बच्चे का रिश्ता मेरे साथ जुड़ा। पुत्र के बिना परमेश्वर पिता नहीं हो सकता; पिता के बिना पुत्र पुत्र नहीं हो सकता। पिता और पुत्र एक ही तरह के जीवन का आनन्द लेते हैं।

हम अनन्त आयाम को नहीं समझ सकते क्योंकि हमारी सृष्टि समय के आयाम में हुई है। हम अपने अस्तित्व के तरीके को समय के तीन कालों में व्यक्त करते हैं। हम कहते हैं, “मैं था, मैं हूँ, मैं रहूँगा।” परमेश्वर अपने आप को इस तरह बिल्कुल भी व्यक्त नहीं करता। वह कहता है, “मैं हूँ, मैं हूँ, मैं हूँ।” अपनी समय की निर्धारित सीमा के कारण हम परमेश्वर के अनन्त स्वरूप को समझ नहीं पाते हैं। हम उसे नहीं समझ सकते जिसका कोई आरम्भ नहीं है, जो अनन्त और सृष्टिहीन है, जो अपने आप में जीवन रखता है। पिता के लिये अपने आप में जीवन रखने का

जो भी अर्थ है, वही पुत्र के लिये अपने आप में जीवन रखने का अर्थ है। परमेश्वर पिता का पितृत्व और परमेश्वर पुत्र का पुत्रत्व समान, अनन्त काल के हैं। फिर भी किसी तरह से, मानवीय समझ से परे पिता, पिता के रूप में पुत्र को पुत्र के रूप में अपने आप में जीवन रखने का अधिकार देता है, और पुत्र को पुत्र के रूप में अपने आप में जीवन रखने का अधिकार पिता से प्राप्त होता है। सृष्टि न तो पिता की और न ही पुत्र की हुई है। न तो पिता और न ही पुत्र का अस्तित्व एक दूसरे के बिना था। पिता अब पुत्र से कम परमेश्वर नहीं है, और पुत्र भी पिता से कम परमेश्वर नहीं है। फिर भी परमेश्वरत्व के भीतर एक ईश्वरीय क्रम, एक अनन्त पिता-पुत्र प्रेम सम्बन्ध है। हम स्पष्ट रूप से इसकी व्याख्या नहीं कर सकते हैं—परन्तु सबसे अच्छा होगा कि हम इस पर विश्वास करें, क्योंकि यह ऐसा ही है। सृष्टि का अन्तिम रहस्य परमेश्वर है—एक परमेश्वर, जो तीन व्यक्तियों: पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा में विद्यमान है। यह इस प्रकार है जो बाइबल में परमेश्वर को प्रकट किया गया है। "अपने आप में जीवन" रखने का दावा करके प्रभु यीशु दृढ़तापूर्वक, समझौता न करनेवाले और स्पष्ट रूप से, जैसा कि भाषा अनुमति देती है, परमेश्वर का पुत्र होने का दावा कर रहा था।

अब प्रभु ने अपने अदृश्य सुननेवालों का ध्यान दो पुनरुत्थानों की ओर आकर्षित किया (5:27-32)। पहले, हम देखते हैं, पुत्र का विजयी शब्द (5:27-29)। परमेश्वर के पुत्र अपने आप में जीवन रखता है और इसके साथ ही, जीवन देने की शक्ति भी रखता है। संसार का न्याय करने का एकमात्र अधिकार उसे ही दिया गया है (5:22)। परन्तु अब उसका नाम "परमेश्वर के पुत्र" से बदलकर "मनुष्य का पुत्र" कर दिया गया है। "और [पिता] ने उसे न्याय करने का भी अधिकार दिया है, इसलिये कि वह मनुष्य का पुत्र है" (5:27)। प्रभु मानव जाति का न्याय परमेश्वर के रूप में नहीं बल्कि मनुष्य के रूप में करेगा, जिसने मनुष्य जीवन में प्रवेश किया है, जिसने इसके सुख और दुःख, आशा और भय, परीक्षा और प्रलोभन, उतार-चढ़ाव—इसके प्रतिदिन के समय, इसकी प्रगति का अनुभव जन्म से मृत्यु तक किया है। यह हमारी दुर्बलताओं की भावना से अछूते किसी अनजान स्वर्गदूत के लिये नहीं है जिसे परमेश्वर ने संसार का न्याय करने का काम सौंप दिया है। यह यीशु के लिये भी नहीं है जो परमेश्वर का पुत्र है, अपनी सर्वज्ञ प्रतिभा के साथ, बल्कि हमसे उतना ही दूर है जितना सृष्टिकर्ता सृष्टि के लोगों से दूर है। उसने न्याय का सब काम एक व्यक्ति को सौंप दिया है, और वह उस काम में कुछ विशेष रूप से उपयुक्त है।

यीशु यहाँ का है। वह जानता है कि बालक होना, एक गरीब परिवार में पालन-पोषण होना, बढ़ई का काम करना कैसा होता है। वह जानता है कि थका, भूखा, प्यासा होना और दर्द क्या होता है। उसने जीवन के दबावों और खतरों का अनुभव किया है। वह उन्नति और विपत्ति से होकर गया है। वह जानता है कि मित्र और शत्रु दोनों का होना कैसा होता है। उसने लोकप्रियता और सताव दोनों को जाना है। उसने कोड़े का दर्द सहा है; उसने विश्वासघात, तिरस्कार और घृणा का अनुभव किया है। मानवीय सीमाओं के अधीन, उसे यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि मनुष्य होना कैसा होता है। भले ही वह अब अपने पिता के सिंहासन पर, ऊँचे पर विराजमान है, परन्तु वह सब कुछ जानता है।

इसलिये उसे न्याय करने का अधिकार दिया जाना विशेष रूप से उपयुक्त है।

न्याय का समय आने वाला है। पुनरुत्थान के आने वाले दिन के बाद न्याय का दिन आएगा। ईश्वरीय प्रकाशन की प्रक्रिया में इस बिन्दु पर, दो पुनरुत्थान और दो मुख्य न्याय एक साथ देखे जाते हैं: "इससे अचम्भा मत करो; क्योंकि वह समय आता है कि जितने कब्रों में हैं वे उसका शब्द सुनकर निकल आएँगे। जिन्होंने भलाई की है वे

जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है वे दण्ड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे" (5:28-29)।

दो पुनरुत्थान हैं। पहला पुनरुत्थान "जीवन के लिये" है। इसमें उद्धार पाए हुए लोग शामिल हैं। यह तीन चरणों में होता है। पहले पहला फल आते हैं (मत्ती 27:52-58)। इसके बाद पूरी कटनी आती है (1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18)। उचित समय पर बटोरने का काम आएगा, बड़े क्लेश के समय में कलीसिया के स्वर्गारोहण के बाद मसीह पर भरोसा करनेवाले अनेक लोगों का पुनरुत्थान, जिसमें सम्भवतः पुराने नियम के विश्वासियों को भी शामिल किया जाएगा जो पहले फलों में शामिल नहीं हैं। विश्वासियों का न्याय होगा। पौलुस कहता है, "अवश्य है कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए" (2 कुरिन्थियों 5:10)। इस न्याय आसन के सामने व्यक्तिगत उद्धार का प्रश्न नहीं उठेगा—यह "जीवन का पुनरुत्थान" है: जो लोग वहाँ उपस्थित हुए हैं, उन्होंने बहुत पहले ही मसीह में अपने विश्वास के द्वारा अनन्त जीवन की बातों को समझ लिया है। इस न्याय आसन पर जो मुद्दा है वह नए जीवन में प्रवेश करने के बाद से किसी के कामों के आधार पर फटकार या इनाम, लाभ या हानि का है (1 कुरिन्थियों 3:10-15)।

दूसरा पुनरुत्थान "दण्ड का पुनरुत्थान" है। यह यीशु मसीह के सहस्राब्दी शासनकाल के अन्त में घटित होता है। उस समय जो लोग जी उठेंगे वे सभी युगों के बुराई करनेवाले मृतक होंगे। उन्हें महान श्वेत सिंहासन के सामने बुलाया जाएगा और उनके पास कोई आशा नहीं होगी। उनके नाम मेम्ने की जीवन की पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं। उनके लिये "आग की झील" प्रतीक्षा कर रही है (प्रकाशितवाक्य 20:11-15)। (इन और दूसरे न्याय की अधिक सम्पूर्ण चर्चा के लिये, देखें जॉन फिलिप्स, बाइबल एक्सप्लोरर'स गाइड, नेपच्यून, एन.जे.: लोइज़ो ब्रदर्स, 1987.)।

यूहन्ना यहाँ अपने सुसमाचार के विवरण में जो बात कह रहा है, वह यह है कि प्रभु यीशु न्यायी है और वह मनुष्य के पुत्र के रूप में अपने चरित्र में न्यायी के रूप में कार्य करता है। निस्संदेह, यहूदी दानिय्येल की इस भविष्यद्वाणी से परिचित थे (दानिय्येल 7:9-14)।

यूहन्ना ने प्रभु की रक्षा के इस पहलू को पूरी तरह से समाप्त नहीं किया है, वह बात कि पिता ने मृत्यु के प्रश्न से सम्बन्धित सभी मामलों को पुत्र को सौंप दिया है। उसने पुत्र की विजयी शब्द का उल्लेख किया है, वह शब्द जिससे मरे हुए जी उठते हैं। अब वह पिता द्वारा पुत्र की पूर्ण पुष्टि का उल्लेख करता है (5:30-32)। गवाही दो प्रकार की होती है—पहली, आत्मकथात्मक गवाही (5:30)। प्रभु ने कहा, "मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता; जैसा सुनता हूँ, वैसा न्याय करता हूँ; और मेरा न्याय सच्चा है, क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं परन्तु अपने भेजनेवाले की इच्छा चाहता हूँ।"

परमेश्वर के पुत्र के रूप में, पुत्र ने स्वयं कुछ नहीं किया, कुछ भी अपने आप निर्धारित नहीं किया। ऐसा करना असम्भव होगा। परमेश्वरत्व के भीतर पूर्ण सामंजस्य है। मनुष्य के पुत्र के रूप में, प्रभु न्यायी की भूमिका निभाता है, यह कथन अन्य मुद्दों को उठाता है। परमेश्वर होते हुए, प्रभु को आज्ञा मानने की आवश्यकता नहीं थी। परमेश्वर किसकी आज्ञा मानता है? परमेश्वर को किसी की भी आज्ञा मानने की आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर पूर्व-अस्तित्व और स्वयं-अस्तित्व रखता है। वह सर्वज्ञानी और सर्वशक्तिमान है। परन्तु जब परमेश्वर का पुत्र मनुष्य का पुत्र हुआ तो उसने वह करना सीखा जो परमेश्वर ने कभी नहीं किया था। उसने "आज्ञा माननी सीखी" (इब्रानियों 5:8)।

लूका बालक यीशु के बारे में कहता है कि वह यूसुफ और मरियम के साथ नासरत वापस चला गया "और उनके वश में रहा" (लूका 2:51)।

जब यीशु ने कहा, "मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता," तो वह मुख्य रूप से अपने आप को मनुष्य के पुत्र के रूप में संदर्भित कर रहा था। यह एक अद्भुत बात है। वह मनुष्य के समान आचरण करनेवाला परमेश्वर, पूर्ण मनुष्य था। मनुष्य के रूप में, उसने मनुष्य को मनुष्य के बारे में सच्चाई दिखाने के लिये परमेश्वर की आज्ञा माननी सीखी: कि मनुष्य परमेश्वर के बिना कुछ नहीं कर सकता।

परन्तु, यदि प्रभु यीशु हमेशा मनुष्य के रूप में अपने पिता, परमेश्वर के लिये पूरी तरह से उपलब्ध था, तो उसका पिता, परमेश्वर होकर भी मनुष्य के रूप में अपने पुत्र के लिये हमेशा पूरी तरह से उपलब्ध था। फिर प्रभु आगे कहता है, "जैसा मैं सुनता हूँ, वैसा न्याय करता हूँ।" जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, प्रभु यीशु का मन परमेश्वर के मन के साथ व्यापक था। उसका न्याय परमेश्वर के न्याय के समान है। अतः उसका न्याय दोषरहित, बुद्धि से परिपूर्ण और निष्पक्ष है। वह अपनी इच्छा नहीं चाहता, केवल पिता की इच्छा चाहता है जिसने उसे इस संसार में भेजा। यह उसकी अपने आप की गवाही है।

परन्तु एक और गवाही है (5:31-32)। "यदि मैं आप ही अपनी गवाही दूँ, तो मेरी गवाही सच्ची नहीं। एक और है जो मेरी गवाही देता है, और मैं जानता हूँ कि मेरी जो गवाही वह देता है, वह सच्ची है।" "एक और" के लिये शब्द अलोस है, जो उसी प्रकार के एक और को दर्शाता है। प्रभु कहता है कि यदि वह केवल स्वयं ही गवाही दे रहा होता तो उसकी गवाही मानी नहीं जाती। कोई भी व्यक्ति अपने आप की गवाही नहीं देता। किसी भी मामले में, यहूदी व्यवस्था के लिये कम से कम दो गवाहों की आवश्यकता होती थी। प्रभु यीशु की प्रमाणित गवाही देने वाला "एक और" या तो उसका पिता था या पवित्र आत्मा। जब प्रभु ने कहा, "मैं जानता हूँ कि मेरी जो गवाही वह देता है, वह सच्ची है," जहाँ उसने शब्द ओइदा का प्रयोग किया। जिस सिद्ध ज्ञान की बात की जाती है उसे अनुभव के ज्ञान से अलग किया जाना चाहिए।

प्रभु अभी भी यहूदियों के इस दावे का खण्डन कर रहा है कि उसने सब्त के दिन को अपवित्र किया है। उसने अपने पिता को अपना गवाह बताया है। अब वह अपने अग्रदूत (5:33-35), यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को अपना गवाह बताता है।

यहूदियों ने अपने आप को अपनी पहुँच से बाहर पाया होगा जब प्रभु ने अपने पिता, परमेश्वर से विनती की, कि उसे उसके जैसा काम करने का अधिकार दिया जाए। वे निश्चित रूप से यह मानने के लिये तैयार नहीं थे कि परमेश्वर उसका पिता था। उन्हें आश्वस्त करना तो दूर, इस दावे के कारण वे क्रोध करने लगे। बात यह है कि यह सच था इससे कोई फर्क नहीं पड़ा। उन्हें इस पर विश्वास नहीं हुआ।

परन्तु यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की विनती अलग थी। वह उत्तरदेह था। यीशु ने कहा (शब्द तुम ने पर बल दिया गया है), "तुम ने यूहन्ना से पुछवाया," "और उसने सच्चाई की गवाही दी है।" यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का राष्ट्र पर प्रभाव बहुत प्रबल था। सब ने उसके बारे में सुना था। उसका सन्देश स्पष्ट था: "परमेश्वर का राज्य निकट है! राजा आने वाला है!" हजारों लोगों ने उसके सन्देश को ग्रहण किया और उसके हाथों से मन फिराव का बपतिस्मा लिया। राष्ट्र का उत्साह चरम पर था। मसीह के शीघ्र आने की लोकप्रिय आशा अपने चरम पर पहुँच चुकी थी।

तब यूहन्ना ने यीशु को मसीह, परमेश्वर का मेम्ना (1:29), और परमेश्वर के पुत्र (1:34) होने की घोषणा की। जब यूहन्ना ने यीशु को परमेश्वर का पुत्र कहा तो यह केवल कहने की बात या अतिशयोक्ति नहीं थी। यह सच का

एक गम्भीर कथन था। क्योंकि राष्ट्र के अधिकांश लोगों ने स्वीकार किया कि यूहन्ना एक भविष्यद्वक्ता था, इसलिये कहने के लिये और कुछ नहीं था। या तो यूहन्ना भ्रमित था या उसे धोखा दिया गया था, या ईश्वरीय रूप से प्रेरित था। यहाँ तक कि अधिकारियों ने भी यूहन्ना की भविष्यद्वाणी को चुनौती देने का साहस नहीं किया।

यीशु ने यहूदियों से कहा, तुम ने यूहन्ना से पुछवाया और उसने सच्चाई की गवाही दी है। यूहन्ना की गवाही आश्वस्त करने वाली होनी चाहिए थी। प्रभु ने आगे कहा, "परन्तु," "मैं अपने विषय में मनुष्य की गवाही नहीं चाहता; तौभी मैं ये बातें इसलिये कहता हूँ कि तुम्हें [हाँ तुम्हें] उद्धार मिले।" शब्द मैं पर वैसा ही बल दिया गया है, जैसा कि शब्द तुम्हें पर है। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की गवाही उसके लिये पर्याप्त थी, परन्तु स्वयं प्रभु के पास एक भविष्यद्वक्ता से प्राप्त गवाही की तुलना में कहीं अधिक उच्च स्रोत से गवाही थी, चाहे वह कितना भी उत्तम और प्रबुद्ध क्यों न हो। फिर भी, उनके उद्धार की आशा में, प्रभु ने यूहन्ना की छोटी गवाही को भी स्वीकार किया।

यूहन्ना ने सच्चाई की गवाही दी। सचमुच, वह "जलता और चमकता हुआ दीपक" था। यूहन्ना, वास्तव में, एक दीपक था, जिसके होने से कुछ समय के लिये लोग काफी प्रसन्न थे। परन्तु हेरोदेस ने यूहन्ना नामक दीपक को बुझा दिया। हालाँकि, इससे पहले के समय पर उसने पर्याप्त प्रकाश डाला था ताकि लोग उस मनुष्य को पहचानने में सक्षम हो सकें जिसके विषय में वह हमेशा बातें करता था। यूहन्ना के जल्द ही आने वाले मसीह के प्रेरक वादे से यहूदियों को जो प्रसन्नता मिली वह लम्बे समय तक नहीं रही। शासन करनेवाले पहले ही निराश हो चुके थे। उन्होंने एक उग्र मसीह की आशा की थी, न कि यीशु जैसे किसी व्यक्ति की जिसके आश्चर्यकर्मों को उन्होंने नकार दिया, जिसके सन्देश पर उन्होंने अविश्वास किया, जिसकी सेवकाई को उन्होंने ग्रहण नहीं किया और जिसकी पद्धति का उन्होंने तिरस्कार किया।

हालाँकि, प्रभु के पास अपने दावों का एक और गवाह था, उसके काम जो उसके गवाह थे (5:36-38)। वे उसके जीवन और सेवकाई के कामों को देखने पाएँ। उसने उन कामों को बारीकी से जाँचने के लिये उनके सामने रख दिया। उसने अपने कामों के पर्याप्त दायरे का उल्लेख किया (5:36)। "जो काम पिता ने मुझे पूरा करने को सौंपा है अर्थात् यही काम जो मैं करता हूँ, वे मेरे गवाह हैं कि पिता ने मुझे भेजा है।" यूहन्ना ने मसीह के जीवन में प्राकृतिक और अलौकिक दोनों बातों को चित्रित करने के लिये सुसमाचार के अपने विवरण में "काम" अभिव्यक्ति का उपयोग किया है—जहाँ सारे काम मनुष्यत्व में ईश्वरीय प्रदर्शन करने के एक ही उद्देश्य के लिये सेवकाई करते हैं। "जो काम" यीशु करता है (7:3; 9:3; 10:25, 32, 37; 14:10; 15:24) सब उस "काम" के हिस्सा थे जिसे वह करने आया था। सब मिलकर एक प्रभावशाली प्रमाण बन गए कि उसे इस संसार में पिता द्वारा भेजा गया था, न कि वह अन्य लोगों की तरह इस संसार में उसका जन्म हुआ था। प्रभु यीशु के काम इतने अधिक और इतने विविध थे कि उसने तत्वों पर, निर्जीव वस्तुओं पर और प्रकृति की सामान्य शक्तियों पर, दुष्टात्माओं और बीमारी पर, यहाँ तक कि मृत्यु पर भी अपनी ईश्वरीय सामर्थ्य का प्रदर्शन किया, जिससे विश्वास न करने का कोई बहाना नहीं दिया जा सकता था।

प्रभु अपने कामों के गुप्त स्रोत के विषय में कहता है (5:37-38)। सब कुछ उसके पिता से आया है। हम पहले ही देख चुके हैं कि प्रभु यीशु अपने पिता की ओर से कुछ भी करने पर कभी असफल नहीं हुआ। उसने कहा, यहूदी उसके पिता को नहीं जानते: "तुम ने न कभी उसका शब्द सुना, और न उसका रूप देखा है; और उसके वचन को मन में स्थिर नहीं रखते, क्योंकि जिसे उसने भेजा तुम उसका विश्वास नहीं करते।" पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं की श्रेणी में अन्तिम यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने पिता को बोलते हुए सुना था और पवित्र आत्मा (कबूतर के रूप में)

को स्पष्ट रूप से देखा था, परन्तु परमेश्वर का ऐसा प्रकट होना दुर्लभ था, और निश्चित रूप से यहूदियों को ऐसा कोई ईश्वरीय दर्शन नहीं मिला था। उन्होंने परमेश्वर के विषय में जो भी सुना या परमेश्वर को प्रत्यक्ष रूप से देखा, वह सब उनके सामने, सुनने और देखने में परमेश्वर के दूसरे व्यक्ति, यीशु के रूप में था।

यहूदियों के ये धार्मिक अगुवे, अपने रीतियों और विधियों, पर्वों और उपवासों, बलिदानों और विश्रामदिनों, परम्पराओं और शिक्षाओं को लेकर अपने आप इतने में तृप्त और सन्तुष्ट थे, कि उन्होंने बाइबल को इतना त्रुटिपूर्ण और विश्वास के अयोग्य माना कि वे परमेश्वर की सच्चाई: मसीह में पाई जानेवाली सच्चाई से अनभिज्ञ रह गए। परमेश्वर का वचन उनमें स्थिर नहीं रहा। यदि वे सचमुच भविष्यद्वक्ताओं द्वारा कही गई सारी बातों से परिचित होते (लूका 24:25-27) तो उन्होंने यीशु को तुरन्त पहचान लिया होता। परन्तु "जिसे उसने [पिता ने] भेजा तुम उसका विश्वास नहीं करते।"

प्रभु ने अपना बचाव किया है। उसने जो कहा वह यहूदियों को पसन्द नहीं आया, परन्तु यह तो कहना ही था—और भी बहुत कुछ कहना था। हमने प्रभु द्वारा खण्डन किए गए दोष को देखा है। अब हम प्रभु द्वारा दोष को पलटते हुए देखते हैं (5:39-47)। वह यहूदी धार्मिक अगुवों के अंधेपन, अविश्वास और मूर्खता को उजागर करता है। हम देखेंगे कि अब उसने उनकी आत्माओं पर जो घात किया है, उसके लिये उन्होंने उसे कभी क्षमा नहीं किया।

हम पहले, प्रभु का विरोध (5:39-42) पर ध्यान दें। यहूदियों के लिये उसकी पहली चुनौती यह थी कि वे अपने पवित्रशास्त्र में ढूँढ़े (5:40-42) : उसने कहा, "पवित्रशास्त्र में ढूँढ़ते हो," "क्योंकि समझते हो कि उसमें अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है; और यह वही है जो मेरी गवाही देता है।" एक चलन के अनुसार यहूदी वास्तव में, पवित्रशास्त्र में ढूँढ़ते थे। उनका उत्साह ऐसा था कि उन्होंने हर अक्षर को जान लिया, हर शब्द को तौला और हर वाक्य की जाँच की। उन्हें पवित्रशास्त्र में अनन्त जीवन पाने की आशा थी, परन्तु वे लक्ष्य से पूरी तरह चूक गए। प्रभु ने उनसे पहले ही कह दिया था कि उनमें परमेश्वर का वचन स्थिर नहीं है। उनका सारा अध्ययन व्यर्थ हो गया। उन्होंने प्रत्येक पद और शब्द की गहन जाँच की और गलत निष्कर्ष निकाले। उन्होंने सोचा कि क्योंकि उन्हें उस बात का बौद्धिक ज्ञान था जिसे वे सत्य मानते थे, इसलिये उन्हें किसी और बात की आवश्यकता नहीं थी।

यीशु ने कहा, "पवित्रशास्त्र में ढूँढ़ो।" उसने जिस शब्द का इस्तेमाल किया वह एरेउनाओ था, यह शब्द गंध द्वारा सिंह या शिकारी कुत्ते का पता लगाने के लिये इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द था। वह उनसे कह रहा था कि वे वापस जाएँ और एक बार ढूँढ़ें, अपने निशानों का पता लगाएँ, सही गंध लगाएँ, उस मार्ग के पीछे चलें जहाँ यह वास्तव में उसे ले जाए। उसने कहा, "यह वही है जो मेरी गवाही देता है।" पवित्रशास्त्र में ढूँढ़ना और यीशु मसीह को न पाना सबसे बड़ी त्रासदी है। हालाँकि, आज भी लाखों लोग ऐसा करते हैं। हमें पवित्रशास्त्र में ढूँढ़नी चाहिए। हमें पवित्रशास्त्र में ढूँढ़ने का आदेश दिया गया है। परन्तु बाइबल का अपने आप में कोई अन्त नहीं है; यह अन्त का एक साधन है। यह एक मार्ग-सूचक यन्त्र है जो उस दिशा की ओर इशारा करता है जिसमें हमें जाना चाहिए, जो सीधे मसीह की ओर ले जाता है। यह कितनी बड़ी मूर्खता है कि मार्ग-सूचक यन्त्र उपयोग न करना, उसका अध्ययन न करना और उसकी प्रशंसा न करना और उसके सन्देश को न समझना और जैसा वह कहता है वैसा न करना।

यह एक महत्वपूर्ण पद है। हमारे प्रभु हमेशा पवित्रशास्त्र से जुड़ी बातें करता था। उसने कभी भी बाइबल के आसपास विकसित होने वाली यहूदी परम्परा की बात नहीं की, जो समय के साथ ताल्मुद के रूप में जाना जाने लगा और जो पहले से ही न केवल पवित्रशास्त्र को अस्पष्ट करने बल्कि उन्हें प्रतिस्थापित करने के मार्ग पर भी था।

जिसे यहूदी "मौखिक व्यवस्था" कहते थे, उनकी परम्पराओं और गलत व्याख्याओं के लिये प्रभु के पास सबसे तीखी आलोचना के अलावा और कुछ नहीं था। परन्तु उसके मन में पुराने नियम के पवित्रशास्त्र के प्रति सर्वोच्च सम्मान और प्रेम के अलावा कुछ भी नहीं था, जिसके विषय में वह जानता था कि इसमें परमेश्वर का सन्देश निहित है। उसने उसे विशेष पवित्रता में रखा, उसकी बातों पर पूरी तरह से विश्वास किया, उन्हें लगातार उद्धृत किया, उनकी प्रेरणा, सिद्धता और त्रुटिहीनता को स्वीकार किया और पूरी तरह से उनका पालन किया।

यहूदी धार्मिक अगुवों को पवित्रशास्त्र की ओर फिर से निर्देशित करने के बाद, प्रभु ने उनसे कहा कि वे अपनी आत्मा में ढूँढ़ें (5:40-42)। उनका आत्मिक संकट भयानक था। हालाँकि बाइबल का उद्देश्य लोगों को उसकी ओर निर्देशित करना है, प्रभु को इन यहूदियों से कहना पड़ा, "फिर भी तुम जीवन पाने के लिये मेरे पास आना नहीं चाहते" (5:40)। हम फिर से पॉलीसिन्डेटोन के उपयोग पर ध्यान देते हैं: "तुम पवित्रशास्त्र में ढूँढ़ते हो, क्योंकि समझते हो कि उसमें अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है; और यह वही है जो मेरी गवाही देता है।" संयोजक और का उपयोग और दुःखद प्रक्रिया में प्रत्येक चरण को चिह्नित करता है। पवित्रशास्त्र का ज्ञान रखने, पवित्रशास्त्र का अध्ययन करने पर भी मसीह और अनन्त जीवन से चूकने से बुरा क्या हो सकता है?

मनुष्य के विश्वास न करने में केवल एक मानसिक समस्या शामिल नहीं है। सिर्फ इतना नहीं था कि उनका बाइबल अध्ययन दोषपूर्ण था और इसके परिणामस्वरूप अपर्याप्त या गलत निष्कर्ष निकलकर आए। मनुष्य का विश्वास न करने पर एक स्वैच्छिक समस्या शामिल है। "तुम जीवन पाने के लिये मेरे पास आना नहीं चाहते।" यह "मैं विश्वास नहीं कर सकता" जैसा मामला नहीं है—इस बात के पर्याप्त प्रमाण थे कि प्रभु ही वह सब कुछ था जिसका उसने दावा किया था; यह "मैं विश्वास नहीं करूँगा" का मामला है। इच्छा ही वह शक्ति है जहाँ लड़ाई लड़ी जाती है। यहूदियों के साथ भी ऐसा ही था। ऐसा हमेशा होता है।

तब यहूदी पूरी तरह से उत्तर देने के योग्य नहीं थे। उन में पूरी तरह से कोई सुधार भी नहीं था। यीशु ने कहा, "मैं मनुष्यों से आदर नहीं चाहता।" "परन्तु मैं तुम्हें जानता हूँ कि तुम में परमेश्वर का प्रेम नहीं" (5:41-42)। निस्संदेह, समस्या यह थी कि इन लोगों के पास मसीह के बारे में पूर्वकल्पित विचार थे कि वह कैसा होगा और वह क्या करेगा और क्या कहेगा। जब यीशु उनकी अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरा तो उन्होंने उसका तिरस्कार किया। हालाँकि, वह यहाँ उस तरह का आदर पाने के लिये नहीं था कि वे दे सकें।

उसने कहा, "मैं तुम्हें जानता हूँ।" वे उसे नहीं जानते थे, परन्तु वह उन्हें संयुक्त रूप से और अलग-अलग, एक समूह के रूप में और व्यक्ति विशेष के रूप में, उनके सार्वजनिक दृष्टिकोण और उनके सबसे निजी विचारों के साथ जानता था। "तुम में परमेश्वर का प्रेम नहीं।" उसकी अन्तर्दृष्टि ने उनकी आत्मा की स्थिति को पढ़ लिया था। यदि उनकी आत्माओं में परमेश्वर के लिये कोई प्रेम होता तो उन्होंने इसे बहुत पहले ही उस बीमार मनुष्य के प्रति अपनी करुणा से प्रदर्शित किया होता जो अब अड़तीस वर्ष की कैद से अपने पापों के परिणामों से स्वतंत्र हो चुका था। उसे स्वतंत्र करने के लिये उन्हें यीशु की प्रशंसा करनी चाहिए थी परन्तु वे दोष निकालने और उसकी आलोचना करने लगे, क्योंकि उसने उनके प्रिय धार्मिक वर्जनाओं में से एक को तोड़ दिया था।

अब प्रभु की भविष्यद्वाणी आती है (5:43-44), और यह बहुत भयानक है। इस भविष्यद्वाणी का आधार उनका उसे ग्रहण न करना था: "मैं अपने पिता के नाम से आया हूँ, और तुम मुझे ग्रहण नहीं करते" (5:43क)। सच और झूठ एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। सच को नकारना झूठ को गले लगाना है। ऐसा केवल धर्म के क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि किसी भी क्षेत्र में होता है। यदि कोई मनुष्य किसी के सही मार्ग बताने पर भी उसकी बात नहीं मानेगा, तो

वह निश्चित रूप से गलत मार्ग अपना लेगा। जो मनुष्य सृष्टि के सत्य को स्वीकार नहीं करेगा वह विकास के झूठ पर विश्वास करता है। एक मनुष्य जो सही इलाज बतानेवाले डॉक्टर की बात मानने से इनकार करता है, वह उस मनुष्य का शिकार बन जाएगा जो उसे गलत इलाज का सुझाव देगा। पिता ने यीशु को इस्राएल के प्रतिज्ञा किए मसीह के रूप में पूरी तरह से श्रेय दिया है। यहूदियों ने उसे ग्रहण करने से इनकार कर दिया, और एक राष्ट्र के रूप में अभी भी उसे ग्रहण करने से इनकार करते हैं।

इसलिये निश्चित परिणाम प्राप्त होता है: “यदि अन्य कोई अपने ही नाम से आए, तो उसे ग्रहण कर लोगे।” यहूदियों के पास कोई झूठा मसीह नहीं था जब तक उन्होंने सच्चे मसीह को ग्रहण करने से इनकार नहीं किया। फिर उनके पास झूठे मसीहों की एक पूरी श्रृंखला थी जिन्होंने हज़ारों की संख्या में उन्हें भरमा दिया। परन्तु सबसे बुरा अब तक नहीं हुआ है। वह समय आ रहा है जब यहूदी राष्ट्र अपने पूरे हृदय से आने वाले मसीह-विरोधी का समर्थन करेगा, जो उसके अपने नाम से आता है।

वास्तव में, मसीह-विरोधी जो नाम धारण करेगा उसमें कुछ महत्वपूर्ण बात है। यूनानी भाषा में वर्णमाला का प्रत्येक अक्षर एक संख्या है। संख्याओं के लिये अक्षरों को प्रतिस्थापित करके, किसी भी यूनानी शब्द को संख्यात्मक मूल्य प्रदान करना सम्भव है। इस प्रकार यूनानी में लिखे गए मसीह-विरोधी के नाम से संख्या 666 प्राप्त होगी, जो मानवीय विफलता से जुड़ी एक संख्या है। प्रभु के कथन का महत्व, “अन्य कोई अपने ही नाम से आए, तो उसे ग्रहण कर लोगे,” तब और भी महत्वपूर्ण हो जाता है जब यह स्मरण किया जाता है कि यूनानी में यीशु नाम से संख्या 888 प्राप्त होती है, पवित्रशास्त्र में संख्या आठ को पुनरुत्थान और एक नई शुरुआत के साथ जोड़ा गया है।

प्रभु ने उनके विश्वास न करने की कठोरता के लिये एक स्पष्टीकरण दिया: “तुम जो एक दूसरे से आदर चाहते हो और वह आदर जो एकमात्र परमेश्वर की ओर से है, नहीं चाहते, किस प्रकार विश्वास कर सकते हो” (5:44)। मुद्दा यीशु को मसीह मानने में उनके असमर्थ होने का प्रश्न था। समस्या यह थी कि यहूदी गलत जगह और गलत प्रकार का आदर चाहते थे। शब्द डोक्सा है, जिसका प्रयोग प्रभु ने पद 41 में मनुष्यों से आदर न चाहने के लिये भी किया है। इस शब्द का अनुवाद “स्तुति” या “महिमा” किया जा सकता है। यहूदी मसीह में जिस बात को ढूँढ़ रहे थे वह उस तरह की महिमा थी जो उन्होंने एक दूसरे को दी थी, अर्थात् सांसारिक महिमा। वे एक ऐसा मसीह चाहते थे जो रोम की शक्ति को नष्ट कर दे, यरूशलेम को एक नए विश्व साम्राज्य की राजधानी बना दे और उन्हें राष्ट्रों पर अधिकार के साथ एक नया राज कुलीन वर्ग बना दे। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वे मसीह में कोई महिमा नहीं देख सके, जिसने उन्हें अपने बैरियों को क्षमा करना, उनके लिये दुःख उठाना और उन लोगों से प्रेम करना और उनके लिये प्रार्थना करना सिखाया, जिन्होंने उनका उपयोग किया। वह कैसा मसीह था? प्रभु यीशु को वह आदर मिला था जो परमेश्वर की ओर से दिया गया था, परन्तु वे महिमा की अपनी सांसारिक विचारों के कारण अंधे हो गए थे।

यह लम्बी रक्षा प्रभु के प्रचार (5:45-47) के साथ समाप्त होती है। वह मूसा को चित्र में लाते हुए, उसे ग्रहण न करने के लिये उनके न्याय का होना निश्चित होने के मामले पर लौटता है। अब्राहम के बाद यहूदियों ने मूसा को अपनी सूची में सबसे महान सन्त, इब्रानी आकाश में सबसे तेज चमकते तारे के रूप में आदर दिया है।

वह मूसा का उन पर दोष लगाने का उल्लेख करता है (5:45) : “यह न समझो कि मैं पिता के सामने तुम पर दोष लगाऊँगा; तुम पर दोष लगानेवाला तो मूसा है, जिस पर तुम ने भरोसा रखा है।” बचाव पक्ष का मुख्य गवाह मूसा

होगा, जिसकी व्यवस्था का वे सम्मान करते थे और जिसका नाम उनके धार्मिक अगुवों द्वारा सबसे ऊपर उठाया जाता था। न केवल मूसा की व्यवस्था, जिसे उन्होंने बार-बार तोड़ा, जिसके वे दोषी ठहरे (रोमियों 2:17-29), बल्कि मूसा स्वयं न्याय के दिन उठेगा और मसीह को सताने के बहाने के रूप में उसका उपयोग करने के लिये उनको दोषी ठहराएगा।

अन्ततः, हमारे प्रभु ने मूसा की उसके विषय में दी मान्यता का उल्लेख किया है (5:46-47)। उसने कहा: “क्योंकि यदि तुम मूसा का विश्वास करते, तो मेरा भी विश्वास करते, इसलिये कि उसने मेरे विषय में लिखा है। परन्तु यदि तुम उसकी लिखी हुई बातों पर विश्वास नहीं करते, तो मेरी बातों पर कैसे विश्वास करोगे?”—और हर उदार धर्म के ज्ञाता जो उत्पत्ति की पुस्तक पर अत्यधिक ज्ञान की विशेषता रखते हैं उस पर ध्यान दें। मूसा के लेखन ऐसे प्रकारों से भरे हुए थे जो मसीह को चित्रित करते थे: नूह का जहाज, इसहाक का बलिदान, याकूब के स्वप्न की सीढ़ी, यूसुफ की कहानी, फसह का मेम्ना, स्वर्ग से मन्ना, चट्टान से पानी निकलना, खम्भे पर लटका साँप जैसी घटनाओं का उल्लेख किया गया था। मूसा के लेखन में एक उत्कृष्ट मसीहीयाई भविष्यद्वाणी शामिल है जिसे हर यहूदी अच्छे से जानता था (व्यवस्थाविवरण 18:15)।

यीशु ने अच्छी तरह से कहा, “मूसा ने मेरे विषय में लिखा है।” उसने उसके बारे में बार-बार लिखा। परन्तु इन लोगों ने मसीह के इन सभी प्रकारों और भविष्यद्वाणियों को नकार दिया। दोषी ठहराया जाना स्पष्ट था, परिणाम निश्चय था। मूसा के लेखन पर विश्वास न करना मसीह में किसी भी वास्तविक विश्वास को असम्भव बनाना था। उनका मामला निराशाजनक था यदि मूसा, पुराने नियम का महान मध्यस्थ (निर्गमन 32:30-33:17), उन पर सबसे बड़ा दोष लगानेवाला बन गया। उनका नष्ट होना निश्चित हो गया।

B. गलील के ग्रामीण क्षेत्र में (6:1-71)

अध्याय 6 हमें गलील में वापस लाता है। इसमें वह सब कुछ शामिल है जो यूहन्ना को प्रभु के जीवन में एक वर्ष की गलीली सेवकाई के बारे में कहना है। बैतहसदा के कुण्ड में उस बीमार मनुष्य की चंगाई 28 ईस्वी के बसन्त में हुआ था; पाँच हजार पुरुषों को खिलाना 29 ई.पू. के बसन्त में हुआ था। सहदर्शी सुसमाचारों के विवरणों में दर्ज लगभग दो दर्जन घटनाओं को यूहन्ना ने पूरी तरह से अनदेखा कर दिया है। वह बारहों की उनके मिशन “इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़” से वापसी के बाद से कहानी की शुरुआत करता है।

1. मसीह के दावे प्रकट किए गए (6:1-40)

इस लम्बे अध्याय में प्रभु के दावों को प्रकट किया गया है (6:1-40) और क्रोध को दर्शाया गया है (6:41-71)। उसके दावे पहले उसकी सामर्थ्य (6:1-21) और फिर उसके उपदेश (6:22-40) में प्रकट होते हैं। उसने सामर्थ्य में अपने दावों का खुलासा किया, पहले सार्वजनिक रूप से रोटी तोड़कर (6:1-15) और निजी रूप में लहरों पर चलकर (6:16-21)।

हम पाँच हज़ार पुरुषों को खिलाने के आश्चर्यकर्म में प्रभु के दावों की सार्वजनिक अभिव्यक्ति के साथ शुरुआत करते हैं, जो सुसमाचार के यूहन्ना के विवरण के चुने हुए “आश्चर्यकर्मों” में एक है। हमारा ध्यान सबसे पहले भीड़ की ओर आकर्षित होता है (6:1-9)। यह दृश्य गलील की झील का पूर्वी किनारा है, जिसे यहाँ तिबिरियास की झील कहा जाता है। हेरोद अंतिपस ने हाल ही में झील के पश्चिमी किनारे पर एक रोमी नगर की स्थापना की थी, जिसका नाम सम्राट तिबिरियास के नाम पर रखा गया था। धार्मिक यहूदियों ने इस आधे से अधिक मूर्तिपूजक नगर में जाने से इनकार कर दिया। समय बीतने पर इसी नाम पर झील का नाम रखा गया।

हेरोदेस ने पहले ही यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की हत्या करवा दी थी, और उत्साही लोगों द्वारा हेरोदेस और रोम के विरुद्ध एक नए विद्रोह में यीशु को अगुवा के रूप में इस्तेमाल करने का प्रयास किया गया था। और बारहों की वापसी ने, अस्थाई विराम लेने को वांछनीय बना दिया, इसलिये यीशु एक नाव पर चढ़ गया और झील के पार कम आबादी वाले क्षेत्र में चला गया। भीड़, जो और अधिक आश्चर्यकर्म देखने के लिये उत्सुक थी, उसके पीछे हो ली, उसने उसके आगे बढ़ने पर ध्यान दिया और झील के चारों ओर दौड़ पड़ी। जबकि उनकी यात्रा लम्बी थी, उन्होंने फुर्ती की और जब उनकी नाव किनारे पर आ गई तो वे वहीं उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। उसके लिये आराम बहुत ज़रूरी था।

अपने चारों ओर अभी भी भीड़ इकट्ठी होने के कारण प्रभु उन पहाड़ों की ओर चला गया जो झील के पूर्वी हिस्से की ओर तेजी से बढ़ते हैं—जिन्हें अब गोलान हाइट्स के नाम से जाना जाता है। उत्सुकता से भरी हुई बड़ी भीड़ उसके पीछे चल रही थी, यूहन्ना कहता है, "क्योंकि जो आश्चर्यकर्म वह बीमारों पर दिखाता था वे उनको देखते थे" (6:2)। प्रभु को एक उपयुक्त स्थान मिला, ऐसा स्थान जहाँ भीड़ को भी बैठने के लिये जगह मिल सके, और जब लोग इकट्ठे होकर बैठने लगे, तब वह भी वहाँ बैठ गया।

" "यहूदियों के फसह का पर्व निकट था" (6:4)। यूहन्ना (2:13; 6:4; 11:55) में तीन फसहों का उल्लेख किया गया है। यह दूसरा फसह था। प्रभु पहले और तीसरे पर्व पर यरूशलेम गया था, परन्तु इस समय वह गलील में ही रहा। सम्भव है कि उसके पीछे नियमित चलने वाली भीड़ इस अवसर पर पर्व मनाने के लिये यरूशलेम की ओर जाने वाले भक्तों की भीड़ से अधिक बढ़ गई होगी।

इस प्रकार एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली (6:1-4)। प्रभु अब गलील के ग्रामीण क्षेत्र में लोकप्रियता के शिखर पर पहुँच गया था। भीड़ उसके साथ साथ चलती रही (6:5-9)। हम अन्य सुसमाचारों के विवरणों के समानान्तर वृत्तान्तों से सीखते हैं कि वे पूरे दिन उसके उपदेश सुनते रहे। लूका कहता है, "दिन ढलने लगा" (लूका 9:12)। मरकुस कहता है, "दिन बहुत ढल गया है" (मरकुस 6:35)। मत्ती कहता है, "जब साँझ हुई" (मत्ती 14:15)। प्रभु का हृदय इस भीड़ के प्रति करुणा से भर गया जिसमें स्त्रियों और बच्चों के अलावा पाँच हजार पुरुष शामिल थे। बच्चे थक चुके थे, चेले अधीर हो रहे थे; सब लोग भूखे थे। निस्संदेह यीशु भी भूखा था, हालाँकि उसने अपनी आवश्यकता को पूरा करने के लिये कभी कोई आश्चर्यकर्म नहीं किया।

इस स्थिति में प्रभु ने इसे अपने चेलों को परखने का एक उचित अवसर समझा। तब उसने फिलिप्पुस को अलग करते हुए कहा, "हम इनके भोजन के लिये कहाँ से रोटी मोल लाएँ?" फिलिप्पुस पड़ोसी नगर बैतहसदा से आया था (1:44)। इसके लिये एक ऐसे व्यापारी की आवश्यकता होगी जिसके पास इस अल्प सूचना पर इतनी बड़ी संख्या में लोगों को खिलाने की आपूर्ति करने के लिये पर्याप्त भोजन-वस्तु हो। निस्संदेह, प्रभु फिलिप्पुस को परख रहा था, यूहन्ना ने यह बताने में जल्दी कर दी। वह पहले से ही जानता था कि वह क्या करना चाहता है (6:6)।

सरल विश्वास के साथ समस्या को वापस यीशु के पास रखने के बजाय, फिलिप्पुस ने समस्या के दायरे को देखते हुए कुछ गणितीय आँकलन लगाया (6:5ख-7)। वह घबरा गया था। उसने कहा, "दो सौ दीनार की रोटी भी उनके लिये पूरी न होंगी कि उनमें से हर एक को थोड़ी थोड़ी मिल जाए" (6:7)। इस समय तक भीड़ को पता चल गया था कि गुरु ने उपदेश देना बन्द कर दिया है और अब वह अपने एक चेले से बात कर रहा है। क्या वे उत्सुकता और आशा से कुछ होने की प्रतीक्षा कर रहे थे?

क्योंकि एक कामकाजी मनुष्य एक दिन के काम के लिये उचित मजदूरी के बदले एक दीनार से सन्तुष्ट होता (मत्ती 20:2), फिलिप्पुस ने अनुमान लगाया कि कम से कम वस्तु खरीदने के लिये एक मजदूर की वार्षिक मजदूरी के दो-तिहाई का सबसे अच्छा हिस्सा लगेगा—फिर भी यह हर किसी को संतोषजनक भोजन देने के लिये किसी भी तरह से पर्याप्त नहीं होगा। पर्याप्त रोटी खरीदने का पूरा आँकलन हास्यास्पद था।

बाइबल में संख्या दो सौ का बहुत महत्व है। जैसा कि यहाँ बताया गया है, यह अपर्याप्तता की संख्या है। आकान (यहोशू 7:20-21) और अबशालोम की कहानी में (2 शमूएल 14:26-27; 15:11), एप्रैम के पहाड़ी देश के धर्मत्यागी मीका की कहानी में (न्यायियों 17:1-5), और उन फौज के सवारों की भविष्यद्वाणी में जो अन्त समय में युद्ध में शामिल होंगी में (प्रकाशितवाक्य 9:16) इसका पता लगाएँ।

इस बीच अन्द्रियास इधर-उधर देख रहा था। उसने एक लड़के (पाइडारिओन, "एक बालक") को अपने खाने के लिये कुछ करने की तैयारी करते हुए देखा। वह भोजन लेकर आया था! इसमें कोई सन्देह नहीं कि उसकी माता ने, सम्भवतः उसे मित्रों या रिश्तेदारों के साथ जाने और महान उपदेश को सुनने की अनुमति देते समय, उसके लिये दोपहर का थोड़ा सा भोजन दिया था। शायद अन्द्रियास ने उसके पास आकर कहा: "देखो, बेटे, क्या तुम यीशु के साथ अपना भोजन बाँटना चाहोगे?" वह उस लड़के और उसके खाने की वस्तु को अपने साथ ले आया। अन्द्रियास भी, कुछ गणितीय आँकलन कर रहा था: उसने पूछा, "यहाँ एक लड़का है जिसके पास जौ की पाँच रोटी और दो मछलियाँ हैं; परन्तु इतने लोगों के लिये वे क्या हैं?" (6:9)। उसका आँकलन भोजन वस्तु की कम मात्रा को देखते हुए किया गया था (6:8-9)। उन सब लोगों को खिलाने का विचार फिलिप्पुस और अन्द्रियास दोनों के लिये पूरी तरह से अतार्किक था। जौ गरीबों का भोजन था। रोटियाँ जौ से बने छोटे चपटे टुकड़े थे; मछलियाँ मिरगल के आकार की थीं। इतना भोजन एक छोटे भूखे लड़के के लिये पर्याप्त था और एक भूखे मनुष्य के लिये एक दो कौर से अधिक नहीं था।

इस प्रकार एक आश्चर्यकर्म के लिये मंच तैयार हो गया। वहाँ भूखे लोग थे, उनमें से हज़ारों पुरुष, स्त्रियाँ और बच्चे थे। वहाँ चिन्तित चेले थे, जो एक भारी आवश्यकता के सामने असहाय थे। वहाँ वह अनजान छोटा लड़का खड़ा था, जो यीशु के लिये अपना दोपहर का भोजन छोड़ने को तैयार था। और वहाँ जीवित परमेश्वर का देहधारी पुत्र यह प्रदर्शित करने के लिये खड़ा था कि जब कोई मनुष्य परमेश्वर के आधीन हो जाता है तो क्या हो सकता है। हम आगे एक रोचक घटना को देखते हैं (6:10-13)। यीशु ने जो कुछ उसे दिया गया उसे ले लिया और जो कुछ उसे दिया गया उसे बदल दिया। पहले उसने लोगों को बैठाया ("उस जगह बहुत घास थी," यह विवरण तारीख के अनुरूप है; फसह का समय बसन्त ऋतु की शुरुआत में था। 16 अप्रैल, 29 ईस्वी को इस फसह के होने की गणना की गई है)।

"तब यीशु ने रोटियाँ लीं, और धन्यवाद करके बैठनेवालों को बाँट दीं; और वैसे ही मछलियों में से जितनी वे चाहते थे बाँट दिया" (6:11)। वहाँ सब के लिये बहुत कुछ था।

उसने यह कैसे किया? हमें स्मरण रखना चाहिए कि जब यीशु धरती पर आया तो वह परमेश्वर के समान व्यवहार करने नहीं आया, हालाँकि वह कभी भी परमेश्वर से कम नहीं था। उसने ऐसा व्यवहार करना शुरू कर दिया जैसे कि वह कभी भी मनुष्य से बढ़कर नहीं था, जबकि वह परमेश्वर था। तो, उसने बहुत ही अच्छे से मनुष्यों वाला काम किया। उसने रोटियाँ लीं और धन्यवाद दिया। वह अपने पिता पर अपनी मनुष्य रूपी निर्भरता को स्वीकार कर रहा था। उसने पहले ही यह सिद्धान्त दिया था: "मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता" (5:30)। उसने स्पष्ट

कहा था, “जिन जिन कामों को वह [पिता] को करता है, उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है” (5:19)। यद्यपि वह सृष्टिकर्ता था, पर मनुष्य रूप में वह चाहता था कि पिता उसमें वैसा ही रहे जैसा वह अब चाहता है कि पवित्र आत्मा: उसकी सारी शक्ति का स्रोत हममें रहे। जब प्रभु यीशु ने यह आश्चर्यजनक आश्चर्यकर्म करने की तैयारी की, तो उसने किस पर भरोसा किया? उसने उसकी ओर: अपने पिता की ओर देखा जिसका उसने धन्यवाद किया।

तो रोचक आश्चर्यकर्म हुआ। वहाँ “खाने के लिये पर्याप्त भोजन” था। जब सब लोग खाकर तृप्त हो गए, बल्कि खाकर छक गए, तो प्रभु ने चेलों को बचे हुए टुकड़े बटोरने के लिये लोगों की बैठी हुई पंक्तियों के बीच भेजा। “बचे हुए टुकड़े बटोर लो कि कुछ फेंका न जाए” (6:12)। यूहन्ना, जो उस दिन व्यस्त रहे बारह लोगों में एक था, अभी भी इस आश्चर्यकर्म पर अचम्भित था: “अत: उन्होंने [टुकड़ों को] बटोरा और जौ की पाँच रोटियों के टुकड़ों से जो खानेवालों से बच रहे थे, बारह टोकरियाँ [मोटी सींकों से बनी टोकरियाँ] भरीं” (6:13)। यहाँ तक कि सर्वशक्तिमान को भी जब वह खिलाता है, तो परमेश्वर को बचे हुए टुकड़ों को फेंकने से कोई प्रसन्नता नहीं होती है।

इन सबका अगला भाग था। हमारा ध्यान राजा बनाने की ओर मोड़ा गया है (6:14-15)। लोगों को यह निर्णय लेने में देर नहीं लगी कि वे इसी प्रकार का राजा चाहते हैं: ऐसा राजा जो उनकी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करेगा। उन्होंने कहा, “वह भविष्यद्वक्ता जो जगत में आनेवाला था निश्चय यही है” (6:14)। लूका एक अतिरिक्त विवरण देता है। वह हमें बताता है कि प्रभु ने उस दिन लोगों से “परमेश्वर के राज्य की बातें” की (लूका 9:11)।

वे उसे राजा बनाने के लिये उसी समय तैयार थे। यहाँ पाँच **हज़ार पुरुषों** की एक तैयार सेना थी, एक सेना का केन्द्र, जो आगे बढ़ने और यरूशलेम से लेकर रोम तक, पृथ्वी के कोने-कोने तक उसके पीछे हो लेने के लिये तैयार थी। परन्तु उनका दृष्टिकोण उसका नहीं था। राज्य का उनका विचार सांसारिक और भौतिक था। और उसका आत्मिक था। “यीशु यह जानकर कि वे मुझे राजा बनाने के लिये पकड़ना चाहते हैं, फिर पहाड़ पर अकेला चला गया” (6:15)।

भोजन खिलाने में मसीह की सामर्थ्य सार्वजनिक रूप से देखी गई थी। अब, यह सामर्थ्य निजी रूप में, लहरों पर चलने में देखी गई (6:16-21)। ईश्वरीय सामर्थ्य का यह अगला शक्तिशाली प्रदर्शन कम या अधिक निजी प्रकृति का था, हालाँकि दूसरों द्वारा पूरी तरह से ध्यान नहीं दिया गया (6:25)। हम सहदर्शी सुसमाचारों के विवरणों से सीखते हैं कि प्रभु ने चेलों को दूर भेज दिया, इसमें कोई सन्देह नहीं कि उन्हें हानि के मार्ग से बाहर निकाला। उसे यहूदा इस्करियोती की महत्वाकांक्षा, शमौन पतरस की उग्रता, शमौन कनानी की कट्टरता, याकूब और यूहन्ना के गुस्से पर विचार करना था। इन चेलों के लिये भीड़ की इच्छाओं पर अमल करना और उस मुकुट को स्वीकार करने के लिये उस पर दबाव डालना कभी उचित नहीं होगा जिसे वह नहीं चाहता था और उसको स्वीकार करने का उसका कोई इरादा नहीं था। इसलिये उसने अपने चेलों को विदा कर दिया और अपने स्वभाव के अनुसार उत्साही भीड़ को घर भेज दिया। फिर वह एकान्त स्थान की ओर पहाड़ पर चला गया।

इस बीच निस्संदेह चेले आपस में बात कर रहे थे और सोच रहे थे कि आखिरकार कहीं न कहीं कुछ बातें हो रही हैं। और समय के बारे में भी उनमें से कुछ ने महसूस किया होगा। चारों ओर घूम-घूम कर उपदेश देना और बीमार लोगों को चंगा करना सब ठीक और अच्छा था, परन्तु अब सही काम करने का समय आ गया था। अब जब गुरु ने गलील के लोगों का उत्साह देख लिया था, तो वह उसके अनुसार अपनी योजनाएँ बनाने और यरूशलेम में विजयी

प्रवेश का नेतृत्व करने, एक प्रचलित राष्ट्रीय विद्रोह का नेतृत्व करने, अपने पराक्रम का प्रदर्शन करने, रोम के साम्राज्य का अन्त करने और परमेश्वर का राज्य लाने में समर्थ होगा।

"चेले झील के किनारे गए" इस तथ्य में लगभग कुछ प्रतीकात्मक है। जब वे प्रभु के साथ संगति से बहुत दूर हो गए थे तो यही एकमात्र तरीका था जिसे वे अपना सकते थे। उसने उन्हें विदा करना ही उचित समझा। तो हम निर्देश पर ध्यान देते हैं (6:16-17क)। वे नीचे की ओर जाने लगे।

वे झील के किनारे बंधे छोटी नाव में घुस गए और झील के पार कफरनहूम जाने की दिशा में चले गए अब जहाँ यीशु का घर था। अपने हियाव में उन्हें विपत्ति का जरा भी विचार नहीं आया। यदि पतरस कुछ कर सकता था, तो उसे नाव चलाना था। मछली पकड़ने वाले उसके साथी उसके साथ थे। यह दूसरी ओर जाने का एक सीधा और आसान मार्ग था। परन्तु वे अचानक जागने वाले थे। सचमुच और प्रतीकात्मक रूप से, उनके लिये और मसीह के लिये आगे तूफानी मौसम था।

हम अन्धकार पर भी ध्यान देते हैं (6:17ख, ग) : "उस समय अन्धेरा हो गया था, और यीशु अभी तक उनके पास नहीं आया था।" इस संसार में अधिकांश लोग यहीं: अकेले, अन्धेरे में, यीशु के बिना हैं। यह एक भयानक जगह है। वे समय की लहरों पर थपेड़े खाते रहते हैं। वे अपने संसाधनों पर भरोसा रखते हैं। अन्धेरा उन पर हावी हो जाता है। और मसीह उनके जीवन के छोटी नाव पर सवार नहीं होते। उनके साथ अन्य लोग भी हो सकते हैं, अपने-अपने क्षेत्र में योग्यता रखने वाले लोग, परन्तु उतने ही अन्धेरे में जितना कोई और होता है। वे डर जो अपने आप में काफी वास्तविक हैं वे अन्धेरे में खतरे के नए आयाम प्राप्त कर सकते हैं।

हमें स्मरण रखना चाहिए कि इस संसार में अधिकतर लोग अन्धेरे में ही जीते और मरते हैं। वे इस संसार में परमेश्वर के बिना, मसीह के बिना और आने वाले संसार में आशा के बिना हैं। कल्पना कीजिए कि आप अपने पापों में मर रहे हैं, आपने कभी यीशु के विषय में नहीं सुना, कभी यूहन्ना 3:16 या रोमियों 10:9 को नहीं सुना। कल्पना करें कि आपका जन्म मूर्तिपूजा के अन्धकार में हुआ है, झूठे धर्म से ठगे गए हैं, पवित्रशास्त की एक भी पद को नहीं जानते हैं और परमेश्वर का अनुग्रह नही पाएँ हैं।

अन्धकार ने भय का स्थान ले लिया (6:18-20)। हम पहले उस आँधी पर ध्यान देते हैं जिससे वे डर गए (6:18)। "आँधी के कारण झील में लहरें उठने लगीं" (6:18)। उस आँधी के पीछे शैतान था। वह "हवा की शक्ति का राजकुमार है।" स्वर्गदूत प्रकृति की शक्तियों को नियन्त्रित करते हैं (प्रकाशितवाक्य 7:1-3) और स्वयं शैतान का उन पर अधिकार है (अय्यूब 1:9-12, 16, 18-19)। गलील की झील पर बिना किसी चेतावनी के आई आँधी जीवन के उन आँधियों का प्रतीक थी जो समय के अनिश्चित झीलों के पार हमारी यात्रा में हमें घेर लेती हैं। अक्सर इससे पहले कि हमें कुछ पता चले ये आँधियाँ हम पर आ चुकी होती हैं। वे बहुत हानि पहुँचाती हैं, अपने पीछे खण्डहर और मलबा: टूटे घर और टूटे हृदय, बीमारी और निराशा, मृत्यु और हानि छोड़ जाती हैं। बावजूद इसके, इतने सारे लोगों के साथ मसीह उस कमजोर नाव पर सवार नहीं है।

अक्सर विचारहीन और चतुर लोग इन बातों का जिम्मेदार परमेश्वर को देते हैं। हालाँकि, सृष्टि में अच्छाई और बुराई के सह-अस्तित्व का पूरा विषय, यहाँ दिए गए उत्तरों की तुलना में कहीं अधिक प्रश्न उठाता है।

हम उस डर पर ध्यान देते हैं जिसके कारण वे घबरा गए थे (6:19)। यह कहना विचित्र है, यह तेज हवा और तेज लहरों का डर नहीं था, बल्कि प्रभु के ईश्वरीय रूप का था। यूहन्ना कहता है, "तीन–चार मील के लगभग" चलकर वे झील के लगभग आधे मार्ग पर थे। बचपन से वह उस झील को देखते हुए बड़ा हुआ था, उसके आयामों को

हृदय से जानता था, और वह उस रात उसी झील पर था। बैतहसदा के आसपास से, झील के पार कफरनहूम में उनके पहुँचने के स्थान तक की दूरी लगभग पाँच मील थी। उन्होंने लगभग तीन को पार कर लिया था।

हम उनके डर की कल्पना कर सकते हैं जब उन्होंने पानी पर एक आकृति को अपनी ओर आते देखा—यीशु?—उसके बाल और कपड़े हवा में उड़ रहे थे, चारों ओर पानी का फुहार उठ रहा था, कभी वह एक क्षण के लिये तराई में छिप जाता, तो कभी उठती हुई लहरों पर चल रहा था, और धीरे-धीरे निकट और निकट आता जा रहा था। यूहन्ना की संक्षिप्त टिप्पणी थी, “वे डर गए”—हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि अन्धेरे और आँधी की इस अनपेक्षित घटना से वे उग्र तत्वों की तुलना में कहीं अधिक डर गए। इनका उपयोग झील में आँधियों के लिये किया जाता था। वे, भले ही वे अप्रिय हों, चाहे वे हानिकारक हों, उन्हें “प्राकृतिक घटनाएँ” कहा जा सकता है (या नहीं भी कहा जा सकता है)। परन्तु किसी को, बल्कि अपने प्रभु को उग्रता से उछलती लहरों के बीच अपनी ओर आते हुए देखना रोंगटे खड़े कर देने वाली और लहू को ठण्डा कर देने वाली घटना थी।

फिर, वह कोमलता भी थी जो उन पर छा गई (6:20)। लहरों के आगे, हवा की सरसराहट के ऊपर, वह जानी-पहचानी आवाज़ आई, जिसके आश्वासन के शब्द थे: “मैं हूँ; डरो मत।” उसकी आँखों ने उन्हें देखा, उसके विचारों ने उन्हें घेर लिया, उसका हृदय उन पर उमड़ने लगा। उसने उन्हें नहीं छोड़ा था। जबकि वह आँधी के बारे में सब कुछ जानता था, फिर भी उसने उसे उन पर हावी होने से नहीं रोका था, हालाँकि वह ऐसा कर सकता था, पर इसमें एक सीख है। उनके साथ यह उसकी इच्छा से हो रहा था। उसी ने उन्हें नाव पर जाने के लिये भेजा था। वह उन बुरी, अनदेखी शक्तियों को जानता था जो उसकी अनुपस्थिति का अवसर पाकर उन्हें हानि पहुँचाने की ताक में बैठे थे। यह सब उसकी स्वतंत्र इच्छा का हिस्सा था, सब अन्त की ओर ले जाने के साधन थे, सब का उद्देश्य अपने पर उनके विश्वास को मजबूत करना और उन्हें अपने विषय में अधिक ज्ञान देना था। नहीं, वह आँधी उन पर संयोगवश नहीं आई थी।

कुछ भी हम पर संयोगवश नहीं घटता। “जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं” (रोमियों 8:28)।

हम यह भी ध्यान देते हैं कि दूरी का क्या हुआ (6:21)। पहले, “अत: वे उसे नाव पर चढ़ा लेने के लिये तैयार हुए।” प्रभु कभी भी हमारी मानवीय इच्छा का उल्लंघन नहीं करता, कभी हस्तक्षेप नहीं करता, कभी अपने आप को हम पर नहीं थोपता। इस मामले में, हम निश्चिन्त हो सकते हैं कि चेले उसे नाव पर देखकर प्रसन्न थे। हमें उन पुरुषों और स्त्रियों पर आश्चर्य होता है जो उसके बिना जीवन के कठिन आँधियों का सामना करना चुनते हैं।

फिर यूहन्ना कुछ आश्चर्यजनक बात करता है: “और तुरन्त वह नाव उस स्थान पर जा पहुँची जहाँ वे जा रहे थे।” उस कथन को कुछ लोगों ने कमजोर कर दिया है: “कुछ ही समय में नाव उस स्थान पर पहुँच गई।” विचार यह है कि, मसीह के साथ होने और काम करने पर, सब कुछ ठीक हो जाएगा; और वह आकर्षण का ऐसा मनमोहक केन्द्र है कि यात्रा कम लगती है।

मैं इस टिप्पणी को बनाए रखना पसन्द करूँगा। प्रभु ने दूरी मिटा दी, समय समाप्त कर दिया। मैं इसे एक और आश्चर्यकर्म के रूप में देखता हूँ, दूसरे आयाम में उस जीवन का एक अग्रदूत जो पृथ्वी पर हमारे दिन पूरे होने पर हमारी प्रतीक्षा करता है। उसने अभी-अभी “प्राकृतिक नियमों” को चुनौती देने की अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया था जो सामान्य रूप में किसी ठोस पदार्थ का तरल से गुजरने के तरीके को नियन्त्रित करते हैं। न ही उसके लिये स्थान, पदार्थ और समय के अन्य नियमों को निष्फल करना कोई बड़ी बात थी। कोई बड़ी बात नहीं—उसने उन

नियमों को बनाया है। कौन समझा सकता है कि कैसे उसने पानी को दाखरस में बदल दिया, या कैसे उसने एक शब्द से कोढ़ की बीमारी को शुद्ध कर दिया, या कैसे उसने मिस्र की ममी की तरह कब्र के कपड़ों में लिपटे लाज़र को कब्र से बाहर लाया? तो यह कोई बड़ी बात नहीं है कि, एक क्षण में नाव तट से तीन मील दूर थी और अगले ही क्षण तुरन्त "वह नाव उस स्थान पर जा पहुँची जहाँ वे जा रहे थे।"

हमने देख चुके हैं कि कैसे मसीह के दावे उसकी सामर्थ्य में प्रकट होती हैं। अब हम इस बात पर विचार करेंगे कि ये दावे उसके उपदेश में कैसे प्रकट होते हैं (6:22-40)।

प्रभु द्वारा अभी-अभी किए गए दो आश्चर्यकर्म अब एक लम्बे और कठिन उपदेश का आधार बन गए हैं, जो समय-समय पर यहूदियों के प्रश्नों और बढ़ती शत्रुतापूर्ण बातों से बाधित होता है। हमें इस उपदेश की जटिलता को कम नहीं करना चाहिए। कई लोगों ने परमेश्वर की शिक्षा को गलत समझा और परिणामस्वरूप उसे त्याग दिया। आज तक रोमन कैथोलिक चर्च इस प्रवचन की बातें करके अपनी सबसे बड़ी निन्दाओं में से एक को बढ़ावा देता है। संरचनात्मक विश्लेषण, यदि चरण दर चरण अनुसरण किया जाए, तो पता चलेगा कि कई हिस्से मिलकर कैसे एक पूरा रूप ले लेते हैं।

हम भीड़ के अचम्भा करने से शुरू करते हैं (6:22-25)। उनका अचम्भा करना मसीह के वहाँ न होने पर केन्द्रित था (6:22-24क)। अन्तिम बार भीड़ ने इस आश्चर्यकर्म करनेवाले को एक रात पहले देखा था, जब उसने अपने चेलों को झील के पार भेजा और उन्हें घर जाने के लिये कहा था। पीछे मुड़कर देखने पर उन्होंने उसे पहाड़ियों की ओर जाते हुए देखा था। उन्हें पूरे विश्वास के साथ आशा थी कि वे अगले दिन फिर से इकट्ठा होंगे, उसे ढूँढ़ेंगे और निस्संदेह उसे नामी विद्रोह का नेतृत्व करने के लिये मनाने का प्रयत्न करेंगे। परन्तु वह जा चुका था। उन्होंने उसे अपने चेलों को पीछे छोड़ते हुए देखा था। झील पार करने के लिये उसके पास कोई अन्य नाव उपलब्ध नहीं थी। वैसे भी, पिछली रात की भयंकर आँधी के कारण इसे पार करने का कोई भी प्रयास यदि मूर्खतापूर्ण नहीं तो जोखिम भरा हो सकता था। परन्तु वह कहाँ था?

अगली सुबह तक अन्य नावें पूर्वी तट पर उतर चुकी थीं, या आँधी के कारण वहाँ चली गई थीं, परन्तु इससे उसके गायब होने की कोई जानकारी नहीं मिली। तो हमअसमंजस में पड़ी भीड़ को भी देखते हैं (6:24ख-25)। उन्होंने उस क्षेत्र को छान मारा जहाँ उसे अन्तिम बार देखा गया था, परन्तु उसे ढूँढ़ने में असफल रहे, उसके चेलों द्वारा उसे लेने आने का कोई संकेत नहीं मिला और अन्ततः उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि किसी न किसी तरह वह झील की दूसरी ओर चला गया होगा। वे उसे ढूँढ़ने के लिये जितनी तेजी से सम्भव हो सके निकल पड़े। "झील के पार जब वे उससे मिले तो कहा, "हे रब्बी, तू यहाँ कब आया?" (6:25)। प्रभु ने उनकी जिज्ञासा शान्त नहीं की।

इसके बदले, हम गुरु का मूल्यांकन करना देखते हैं (6:26-29)। पहले उसने उनके शारीरिक स्वभाव पर अचूक वार किया (6:26)। उसने कहा, "तुम मुझे इसलिये नहीं ढूँढ़ते हो कि तुम ने आश्चर्यकर्म देखे, परन्तु इसलिये कि तुम रोटियाँ खाकर तृप्त हुए।" "यहाँ तक कि मैंने जो तुम्हारे बीच आश्चर्यकर्म किया उसे भी तुम भूल गए।" वे यह भी नहीं जानते थे कि इसमें कोई सन्देश था; उन्होंने आश्चर्यकर्म के सन्देश को समझने के लिये चिल्लाना शुरू कर दिया। वे केवल इतना जानते थे कि जब वे भूखे थे तो उसने उन्हें खिलाया था।

एक बार जब प्रभु ने उन्हें आश्चर्यकर्म का महत्व समझाया, तो उन्हें यह बिल्कुल पसन्द नहीं आया। वे पूरी तरह से निराश होकर चले गए कि उसने उनके लिये कोई और तृप्त करनेवाले आश्चर्यकर्म नहीं किया।

तब प्रभु ने उनकी जरूरतों का उत्तर दिया (6:27-29)। उसने कहा, "नाशवान् भोजन के लिये परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन के लिये जो अनन्त जीवन तक ठहरता है।" इससे तुरन्त ही उस उत्कृष्ट अधिकार को प्राप्त करने के तरीके पर चर्चा शुरू हो गई। हमें चेतावनी "परिश्रम न करो" की तुलना प्रतिज्ञा "उस भोजन... जिसे मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा" से करनी चाहिए। यह चर्चा कई मायनों में कुएँ पर स्त्री के साथ प्रभु की बातचीत के समानान्तर है। जिसके विषय में उस ने कहा; वहाँ वह जल था, यहाँ यह रोटी है। दोनों ही मामलों में उसने रूपकों में बात की और दोनों ही मामलों में उसे गलत समझा गया। उसके सुननेवाले उसकी बातों को सचमुच ग्रहण करने पर जोर देते थे।

अनन्त जीवन अर्जित नहीं किया जा सकता। यह हमारे अच्छे कर्मों से प्राप्त नहीं होता। जैसा कि गीत का लिखनेवाला कहता है:

मेरे हाथों का श्रम नहीं

जो तेरी व्यवस्था की माँगों को पूरा कर सकें,

क्या मेरे परिश्रम का कोई अन्त नहीं,

क्या मेरे आँसू सदा बहते रहें,

सब के पापों का बलिदान कहाँ,

तू ही उद्धार है, केवल तू ही करे।

वह "मनुष्य का पुत्र" है जो अनन्त जीवन देता है, यीशु ने कहा, "क्योंकि पिता अर्थात् परमेश्वर ने उसी पर छाप लगाई है" (6:27)। प्रभु ने ख्रीस्त या मसीह शब्द को सावधानी से दूर रखा। उसे कल की उनकी राष्ट्रवादी और उग्रवादी आशाओं को समाप्त करना था। "मनुष्य का पुत्र" यहूदियों के लिये पुराने नियम के उपयोग से परिचित एक उपाधि थी। जो प्रभु को उनके मनुष्य रूप से जोड़ता है, एक ऐसे मनुष्य के रूप में जो उनकी गहरी आवश्यकताओं को जानता और समझता था, परन्तु यह मसीह शीर्षक से जुड़े अर्थों से मुक्त था। प्रभु पर "छाप लगाई" गई थी, जो कि उसके बपतिस्मा के समय अनन्त जीवन का प्रबन्धन करने के लिये ईश्वरीय रूप से अधिकृत है (1:32-34)।

मनुष्य अपने उद्धार के लिये कुछ करने की लालसा रखता है। जब तक हमारा नए सिरे से जन्म नहीं हो जाता, हम अपने पतित स्वभाव से उत्पन्न होने से उद्धार को केवल एक वरदान के रूप में स्वीकार करना हमें अनुचित लगता है। इसलिये यहूदियों ने पूछा, "परमेश्वर के कार्य करने के लिये हम क्या करें?" (6:28)। इसी तरह की भावना ने नामान कोढ़ी को जीवन्त किया था। जब एलीशा ने उसे सन्देश भेजा कि केवल विश्वास का एक सरल कार्य आवश्यक है: उसे यरदन में केवल डुबकी लगानी है, तो वह क्रोधित हो गया। उसके सेवकों ने उसकी अच्छी सेवा की, जो बातों को उसे समझाने में सक्षम थे: "यदि भविष्यद्वक्ता तुझे कोई भारी काम करने की आज्ञा देता, तो क्या तू उसे न करता? फिर जब वह कहता है कि स्नान करके शुद्ध हो जा, तो कितना अधिक इसे मानना चाहिए?" (2 राजाओं 5:13)। नए सिरे से जन्म न पाए हुए लोग परमेश्वर की नहीं, अपनी शर्तों पर उद्धार चाहते हैं और किसी तरह से यह मनुष्य के अहंकार को बढ़ावा देता है। सारे झूठे धर्मों के पास इस प्रश्न का उत्तर है, "परमेश्वर के कार्य करने के लिये हम क्या करें?" इस्लाम कहता है, "उपवास करो!" जो इस उद्देश्य के लिये रमज़ान के महीने को अलग करता है। रोमन कैथोलिक मत ने सदियों से कहा, "प्रायश्चित करो," "अधिकतर लोगों का कहना है, दया

करो।" हिन्दू धर्म कहता है, "अपने शरीर को कष्ट दो, शारीरिक सहनशक्ति का अद्भुत प्रदर्शन करो।" रब्बियों ने कहा, "पुरनियों की परम्परा के अनुसार व्यवस्था का पालन करो।"

"यीशु ने उत्तर दिया, का कार्य यह है कि तुम उस पर, जिसे उसने भेजा है, विश्वास करो" (6:29)। परमेश्वर केवल यही चाहता है: कि उसके पुत्र पर विश्वास और भरोसा करें। परमेश्वर के पुत्र और उद्धारकर्ता के रूप में यीशु पर विश्वास ही वह बात है जो परमेश्वर हमसे चाहता है। उस उत्तर से चिढ़कर यहूदियों ने एक चिह्न की माँग की।

इसके बाद मन्ना की बात की जाती है (6:30-31)। उन्होंने कहा, "तू कौन सा चिह्न दिखाता है?" (शब्द तू पर जोर दिया गया है)। वे स्पष्ट रूप से उस अचम्भित करनेवाले आश्चर्यकर्म से सन्तुष्ट नहीं थे जो उसने उन्हें केवल एक दिन पहले दिखाया था, एक छोटे लड़के के भोजन से उनकी हजारों की संख्या को खिलाया था। इससे भी अधिक, यदि उन्होंने चेलों से पूछा होता (सम्भवतः उन्होंने ऐसा किया भी, जब यीशु ने उन्हें इस बारे में उत्तर देने से इनकार कर दिया था कि उसने झील को कैसे पार किया), तो चेलों ने उन्हें यीशु के लहरों पर चलने के बारे में बताया होता। इससे बड़ा चिह्न क्या हो सकता था?

परन्तु जितने आश्चर्यकर्म होते हैं उससे और अधिक आश्चर्यकर्मों की लालसा उत्पन्न होती हैं। यहाँ तक कि कोई आश्चर्यकर्म न होने पर वे झूठे आश्चर्यकर्म और शैतानी आश्चर्यकर्म की भी लालसा करते हैं जो उन लोगों को अधिक सन्तुष्ट करते हैं जिन्होंने उन्हें होते हुए देखा हो।

"तू कौन सा चिह्न दिखाता है? तू कौन सा काम दिखाता है?" वे ऐसा प्रश्न कैसे पूछ सकते हैं, जबकि पूरा संसार उसके कामों की चर्चा कर रहा था? उनके पूरे इतिहास में पहले कभी ऐसा नहीं हुआ, उन विशेष समयों में भी नहीं जब आश्चर्यकर्मों ने—मूसा और एलिय्याह और दानिय्येल के दिनों में एक परिवर्तन बिन्दु को चिह्नित किया था—किसी ने प्रकृति की शक्तियों पर इतना अधिकार रखने और इतने सारे और इतने विविध आश्चर्यकर्म करने का प्रदर्शन नहीं किया था।

फिर उन्होंने उस ओर इशारा किया जो मूसा के जीवन में एक तुलनीय आश्चर्यकर्म, भटकते हुए इब्रानियों को स्वर्ग से रोटी खिलाने का दैनिक आश्चर्यकर्म था। उसने ऐसा कुछ क्यों नहीं किया? "हमारे बापदादों ने जंगल में मन्ना खाया; जैसा लिखा है, 'उसने उन्हें खाने के लिये स्वर्ग से रोटी दी'" (6:31), भजन 78:24 को बड़ी सरलता से उद्धृत करता है। स्पष्ट रूप में उन्हें आशा थी कि मसीह उस आश्चर्यकर्म की नकल करेगा। वास्तव में वे कह रहे थे: "तूने तो पाँच हजार लोगों को कुछ रोटी और मछलियों से खिलाई! इसमें इतनी बड़ी बात क्या है? तू हम सब को चालीस वर्षों तक क्यों नहीं खिलाता?" यह अविश्वासी का अपमान करने का एक कथन था, जिसमें उसे मूसा के जैसा महान कुछ करने की चुनौती दी गई थी।

इसके तुरन्त बाद रहस्य की घोषणा हो जाती है (6:32-40)। इस तरह के तानों का एकमात्र उत्तर सत्य को प्रतीकवाद में छिपा देना था, उन्हें भौतिक से परे आत्मिक, अन्त से परे अनन्त तक सोचने के लिये दबाब डालना था। हम देखते हैं, पहले, उनकी गलती प्रकट हुई (6:32-34)। उन्होंने मन्ना का उल्लेख "स्वर्ग से उतरी रोटी" के रूप में किया था। वैसे, वह उनसे इसी बारे में बात करनेवाला था। परन्तु पहले, उसे एक गलती को सही करनी होगी: "मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि मूसा ने तुम्हें वह रोटी स्वर्ग से नहीं दी, परन्तु मेरा पिता तुम्हें सच्ची रोटी स्वर्ग से देता है" (6:32)। यह मूसा नहीं बल्कि परमेश्वर था जिसने पूर्व में वह आश्चर्यकर्म किया था। मूसा परमेश्वर के हाथ का एक उपकरण था, और वह पहला व्यक्ति होगा जिसने अपने नाम के उनके उपयोग को स्वीकार नहीं किया होगा। इसके अलावा, वास्तव में वह जिसने पिछला आश्चर्यकर्म किया था वह अब और भी

बड़ा आश्चर्यकर्म कर रहा था। मन्ना नाशवान् रोटी थी, जो केवल शारीरिक पोषण के लिये उपयुक्त थी। उसने कहा, “मेरा पिता तुम्हें सच्ची रोटी स्वर्ग से देता है। क्योंकि परमेश्वर की रोटी वही है जो स्वर्ग से उतरकर जगत को जीवन देती है” (6:33)। मन्ना स्वर्ग से उतरा। वह, मसीह स्वर्ग से उतर आया था। मन्ना स्वर्ग द्वारा भेजा गया रोटी था; और वह स्वर्ग से भेजा गया सच्ची रोटी था।

अभी तक यहूदियों ने मन्ना से रूपक की ओर अपने मन में परिवर्तन नहीं किया था। उनमें से कुछ ने कभी नहीं किया। उन्होंने कहा, “हे प्रभु, यह रोटी हमें सर्वदा दिया कर,” जैसे कुएँ पर की स्त्री ने भी वास्तविक अर्थ को प्रतीकात्मक समझकर कहा था, “हे प्रभु, वह जल मुझे दे ताकि मैं प्यासी न होऊँ और न जल भरने को इतनी दूर आऊँ” (4:15)।

प्रभु ने अपने प्रसिद्ध मैं हूँ कथनों में से पहले का उत्तर दिया (6:35; 8:12; 10:7, 11; 11:25; 14:6; 15:1)। इस कथन में हम देखते हैं कि उनका मसीह उन पर प्रकट हुआ (6:35-40)। वह जीवन की रोटी था (6:35-36)। “यीशु ने उनसे कहा, जीवन की रोटी मैं हूँ : जो मेरे पास आता है वह कभी भूखा न होगा, और जो मुझ पर विश्वास करता है वह कभी प्यासा न होगा” (6:35)। यह उपदेश का मुख्य कथन है। अचम्भित करने वाले प्रतीकवाद में आने वाली सभी कल्पित कठिनाइयाँ, और जिन्होंने यहूदियों के साथ-साथ परमेश्वर के पीछे चलनेवाले कई लोगों को इतना चौंका दिया और भयभीत कर दिया, जिसका समाधान तब हो जाता है जब हम देखते हैं कि प्रभु विश्वास करने और ग्रहण करने को खाने और पीने के बराबर कह रहा है। रोटी और पानी खाने और पीने की प्राकृतिक शारीरिक क्रियाएँ हमारे जीवन में मसीह को ग्रहण करने के तरीके का वर्णन करने के लिये प्रतीकात्मक माध्यम हैं, जो हमारे आत्मिक जीवन को उसी तरह प्रदान करता और बनाए रखता है जैसे रोटी और पानी हमारे भौतिक जीवन को बनाए रखते हैं।

हमें कथन के मूल में मौजूद मैं हूँ को अनदेखा नहीं करना चाहिए। बाद में, यहूदियों के साथ अपने विवाद में, प्रभु स्पष्ट रूप से अपने आप को पुराने नियम का मैं हूँ होने की घोषणा करता है (निर्गमन 3:13-14)। यहाँ, सुसमाचार के यूहन्ना के विवरण में छः अन्य मैं हूँ दावों में, प्रभु ने यह बताया कि कैसे परमेश्वर के लिये वह छिपा हुआ नाम उसमें बढ़ाया गया था। वह कह सकता है कि जीवन की रोटी मैं हूँ; जगत की ज्योति मैं हूँ; भेड़ों का द्वार मैं हूँ; अच्छा चरवाहा मैं हूँ; मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ; सच्ची दाखलता मैं हूँ।

एक व्यक्तिगत प्रतिक्रिया की आवश्यकता थी (6:35)। एक भूखा व्यक्ति मेज पर बैठ सकता है, उसके सामने मेज पर रखे भोजन का सुगंध ले सकता है, मेज से पीछे हट सकता है और जैसे वह आया था वैसे ही भूखा चला जा सकता है। अवश्य ही उसकी भूख अभी उस स्थिति तक नहीं पहुँची है जहाँ वह भूख को सहन न कर पाए। जब तक कोई व्यक्ति भूख लगने पर न खाए तब तक भोजन से उसे कोई व्यक्तिगत लाभ नहीं होता। सच्ची रोटी, परमेश्वर की रोटी, जीवन की रोटी होने के मसीह के दावे पर एक व्यक्तिगत प्रतिक्रिया की आवश्यकता है। जब तक कोई व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से मसीह को अपने जीवन में ग्रहण नहीं कर लेता, तब तक मसीह परमेश्वर का जीवन प्रदान नहीं कर सकता। यहाँ व्यक्तिगत प्रतिक्रिया को अनदेखा कर दिया गया (6:36) : “परन्तु मैं ने तुम से कहा था कि तुम ने मुझे देख भी लिया है तौभी विश्वास नहीं करते।” यहूदियों ने पूछा, “तू कौन सा चिह्न दिखाता है?” प्रभु का उत्तर था, “चिह्न मैं हूँ। तुमने मुझे देखा है। तुमने चिह्न देखा है। परन्तु, तुम विश्वास करने से इनकार करते हो।” इसीलिये स्थिति इतनी निराशाजनक थी। यदि लोग जीवनदायी रोटी उनके सामने रखे जाने पर भी नहीं

खाएँगे, उसके होने से इनकार करेंगे, यह मानने से इनकार करेंगे कि वह है, उसके विषय में तर्क-वितर्क करेंगे, तो आप किस चिह्न से उन्हें उस रोटी का होना दिखा सकते हैं?

प्रभु अब जीवन के आधार पर चर्चा करता है (6:37-40)। परन्तु वह किसी भी तरह से रोटी की उपमा से नहीं जुड़ा है। उसके पास इस बारे में कहने के लिये और भी बहुत कुछ है। परन्तु पहले, जीवन की रोटी से इनकार करने की गम्भीरता को देखते हुए, उसे जीवन के आधार के बारे में बात करनी है।

संप्रभुता का विषय (6:37) उन सब के जीवन में शामिल है जो उस पर भरोसा करते हैं: "जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा, और जो कोई मेरे पास आएगा उसे मैं कभी न निकालूँगा।" ये आयतें भीड़ के बदले परमेश्वर के अपने चेलों को सम्बोधित करते प्रतीत होते हैं।

जब परमेश्वर लोगों को मसीह की ओर लाता है तो वह न तो अनुचित रीति से कार्य करता है और न ही मानवीय इच्छा की अवहेलना करता है। किसी ने एक बार मुझे समझाने का प्रयत्न किया था कि परमेश्वर ने कुछ लोगों को उद्धार के लिये चुना है परन्तु अन्य लोगों को नष्ट करने के लिये चुना है। ऐसा विचार शैतानी है। परमेश्वर अनुचित रीति से और अपने सर्वश्रेष्ठ होने से मानव जाति के बड़े हिस्से को जो वे नहीं चाहते, उन शर्तों पर जो वे नहीं चाहते (तथाकथित "पूर्ण दुष्टता"), असम्भव बाधाओं के तहत जो वे नहीं चाहते (अनैतिक इच्छा और "अपराधों और पापों में मरे हुए"), ऐसी शक्तियों के प्रभाव में जिन्हें वे नियन्त्रित (संसार, शरीर और शैतान) नहीं कर सकते, एक टूटे परिवार (आदम का) में वे स्वयं मूल पाप में नहीं गिरे, "चुने हुए लोगों" को दिया गया उद्धार जिसे अपनी इच्छा से न चुनने के कारण नरक में जाने के कठिनाई में नहीं डालता है। यह परमेश्वर के बारे में कुछ लोगों का विचार हो सकता है और कुछ लोगों का उद्धार के विषय में दृष्टिकोण, परन्तु ऐसे विचार परमेश्वर को मानव जाति के इतिहास में किसी से भी अधिक क्रूर बनाती हैं। हालाँकि, बाइबल का परमेश्वर ऐसा नहीं है और हमें इस प्रकार का "उद्धार" नहीं दिया गया है।

यीशु ने कहा, "जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा।" वह ईश्वरीय सत्य है। ऐसा ही है: "मेरे पास आना नहीं चाहते" (5:40)। ऐसा ही है: "हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूँगा" (मत्ती 11:28)। बाइबल का अन्तिम निमन्त्रण भी ऐसा ही है: "आओ! आओ! आओ!" परमेश्वर लोगों को आने के लिये आमन्त्रित नहीं करता और फिर उनके लिये आना असम्भव नहीं बनाता।

मानव उद्धार में परमेश्वर की सर्वश्रेष्ठता के विषय में चाहे कुछ भी कहा जाए, परमेश्वर कभी भी हमारे मसीह के पास आने के लिये अनुचित, असम्भव और पूरी तरह से अप्राप्य शर्तें निर्धारित नहीं करता है। न ही वह कुछ मामलों में (तथाकथित "विशेष अनुग्रह" द्वारा) किसी की मानवीय इच्छा को नष्ट करके हमारी नैतिक जवाबदेही का उल्लंघन करता है। कुछ लोगों द्वारा सुझाई गई समस्या का समाधान, यूहन्ना 6:37 जैसे आयतों के आधार पर, परमेश्वर का सर्वज्ञानी होने और उसके होने के अनन्त काल के समय में निहित है। परमेश्वर उन सब को जानता है जो मसीह को ग्रहण करेंगे और वह उन्हें इसलिये जानता है क्योंकि वह सब कुछ जानता है। इसके अलावा, परमेश्वर अनन्त वर्तमान काल में रहता है (इसलिये वह अपने आप को मैं हूँ के रूप में वर्णित करता है)। इसलिये, घटनाओं के बारे में परमेश्वर के दृष्टिकोण से, उसका चयन और हमारा चयन एक साथ होने वाले कार्य हैं। वे दोनों परमेश्वर के अनन्त वर्तमान काल "समय" में एक ही क्षण में घटित होते हैं।

यूहन्ना यहाँ जो कह रहा है वह यह है कि परमेश्वर "जो कोई मसीह के पास आएगा" उन सबको जानता है वह उन सब को मसीह को देता है। और, प्रभु अपने अनन्त अनुग्रह में उन सबको ग्रहण करता है, चाहे वे कोई भी हों या उन्होंने कुछ भी किया हो: "जो कोई मेरे पास आएगा उसे मैं कभी न निकालूँगा" (6:37)।

उद्धार में परमेश्वर की सर्वश्रेष्ठता विश्वास करनेवाले की सुरक्षा का परिणाम है (6:38-40)। मनुष्य के सम्बन्ध में पृथ्वी पर परमेश्वर के अनन्त उद्देश्य को पूरा करने के लिये प्रभु स्पष्ट रूप से स्वर्ग से उतर आया। वह अपने पिता की स्वतंत्रता में कार्य करने के लिये नहीं बल्कि पिता की सिद्ध इच्छा को पूरा करने के लिये आया था। "मेरे भेजनेवाले की इच्छा यह है कि जो कुछ उसने मुझे दिया है, उस में से मैं कुछ न खोऊँ, परन्तु उसे अन्तिम दिन फिर जिला उठाऊँ।" उद्धारकर्ता के लिये पिता की इच्छा यही थी (6:39)। एक बार उद्धार पाए मनुष्य को दोबारा खोया जा सकता है का विचार, पवित्रशास्त्र में नहीं दिया गया है। यीशु ने कहा, "जो कुछ उसने मुझे दिया है" उसे सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी मेरी है। केवल जय पाए या पवित्र लोगों की ही नहीं, बल्कि सब की! यह विचार हृदय को शान्ति देता और प्राण को आनन्दित करता है। हमारे उद्धार का लक्ष्य हमारे शरीर के उद्धार और एक महिमामय जीवन में प्रवेश में साकार होता है जो हमारी कल्पना या वर्णन करने की शक्ति से परे है। इस पूर्वनिर्धारित लक्ष्य की पूर्ति का दायित्व पिता द्वारा यीशु को सौंपा गया है।

केवल इस बार उद्धार पाए हुए लोगों के लिये पिता की इच्छा के संदर्भ में सत्य को दोहराया गया है (6:40) : "क्योंकि मेरे पिता की इच्छा यह है कि जो कोई पुत्र को देखे और उस पर विश्वास करे, वह अनन्त जीवन पाए; और मैं [बल दिया गया है] उसे अन्तिम दिन फिर जिला उठाऊँगा।" अन्तिम अधिकार कब्र के पास नहीं है; परन्तु उद्धारकर्ता के पास होता है। वह कहता है, "मैं," "जीवित परमेश्वर का देहधारी पुत्र, स्वर्ग और पृथ्वी का बनानेवाला, जिसमें परमेश्वरत्व की सारी परिपूर्णता, शारीरिक रूप से वास करती है, जिसे स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार दिया गया है, मैं उसे अन्तिम दिन जिला उठाऊँगा।" कोई भी मसीह पर व्यर्थ विश्वास नहीं करता। अनन्त जीवन, हर विश्वासी का वर्तमान अधिकार (3:16; 5:24) अभी भी हर विश्वासी के लिये एक सिद्ध और रूपान्तरित व्यक्तित्व को पुनः स्थापित करने में पूरा होना बाकी है। हमें पाप और मृत्यु की पहुँच से परे पूर्ण शरीर, प्राण और आत्मा होना है—"अवर्णनीय और महिमा से पूर्ण आनन्द" में अनन्त काल तक स्नान करते हुए, हमारा अविनाशी मनुष्यत्व उतना ही प्रदीप्त है जितना रूपान्तरण के पहाड़ पर हमारे प्रभु का था।

2. मसीह के दावों का विरोध किया गया (6:41-71)

इस बिन्दु पर ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ नए लोगों के आगमन के कारण व्यवधान उत्पन्न हुआ है, जिससे अपने चेलों के लिये प्रभु के निजी शब्दों को समाप्त करना और "परमेश्वर की रोटी" होने के उसके दावे पर यहूदियों के साथ उसके विवाद का नवीनीकरण आवश्यक हो गया है। यह खण्ड प्रभु के बैरियों की अप्रसन्नता पर लिया गया है (6:41-59)। यूहन्ना उनके कुड़कुड़ाने से आरम्भ करता है (6:41-51)। उनके पास प्रभु पर आपत्ति जताने के दो कारण थे। पहले प्रारम्भिक कारण दिया गया (6:41-42)। यहाँ वह "स्वर्ग से उतरी रोटी" होने का दावा कर रहा था, अर्थात्, स्वर्ग से आने का, परमेश्वर होने का दावा कर रहा था—परन्तु यह कैसे हो सकता है? "क्या यह यूसुफ का पुत्र यीशु नहीं है, जिसके माता–पिता को हम जानते हैं? तो वह कैसे कहता है कि मैं स्वर्ग से उतरा हूँ?" यूहन्ना कहता है, वे उस पर कुड़कुड़ाने लगे। रुचिपूर्ण बात यह है कि कुड़कुड़ाने के लिये शब्द (गोन्गुजो) वही है जो जंगल में इस्राएल के बच्चों के कुड़कुड़ाने के लिये सेप्टुआजेंट में इस्तेमाल किया गया है (देखें निर्गमन 16:2, 7, 8, 9,

12 और 1 कुरिन्थियों 10:10)। सम्भवतः यहूदी (निस्संदेह, प्रमुख धार्मिक दल के प्रतिनिधि) उस पर कुड़कुड़ा रहे थे जिसके विषय में वह पहले कहा चुका था और अब उस पर कुड़कुड़ा रहे हैं।

उन्होंने कहा, “हम जानते हैं कि इस मनुष्य के माता-पिता कौन हैं” “यूसुफ उसका पिता है।” वह कैसे कह सकता है: ‘मैं स्वर्ग से उतरा हूँ’?” स्पष्ट रूप में यह मान लिया गया था कि यूसुफ प्रभु का पिता था, जिसने निश्चित रूप से, उसे एक अवैध सन्तान और अत्यधिक धार्मिक भेदभाव के चलते मूसा की व्यवस्था के अधीन विषय बना दिया। यीशु अपने जन्म का वर्णन करने का एकमात्र तरीका यह कह सकता था कि वह स्वर्ग से उतरा है। हालाँकि, यहूदियों इस तरह के दावे को दिखावा और परमेश्वर की निन्दा मानते थे।

उनके कुड़कुड़ाने का बड़ा कारण (6:43-51) इस बात में पाया जाता है कि वह अपने पिता, अपनी सच्चाई और अपने देहधारण के विषय में क्या कहता था। जितना अधिक उन्होंने उसकी बात पर आपत्ति जताई, उसकी बातें उतनी ही अधिक अस्पष्ट होती गईं।

तब, उसके पिता का विषय था (6:43-46)। प्रभु वह बातें कहता है जो उसने अभी-अभी अपने चेलों से अकेले में कहा था और फिर उसे बड़ी संख्या में सुननेवालों के लाभ के लिये दोहराता है, जिसमें नए आए, अत्यधिक संदिग्ध और आलोचनात्मक धार्मिक अगुवे भी शामिल हैं: “कोई मेरे पास नहीं आ सकता जब तक पिता, जिसने मुझे भेजा है, उसे खींच न ले; और मैं उसे अन्तिम दिन फिर जिला उठाऊँगा।” अभिव्यक्ति “अन्तिम दिन” केवल यूहन्ना (यूहन्ना 6:40, 44, 54; 11:24; 12:48) में पाई जाती है। मनुष्य की ओर मसीह के पास आने के लिये मनुष्य की इच्छा के कार्य की आवश्यकता होती है और ईश्वर की ओर से परमेश्वर की इच्छा के कार्य की आवश्यकता होती है (6:44)। यह सीमित नहीं करता बल्कि मनुष्य की इच्छा की प्रकृति को परिभाषित करता है। खींचने की शक्ति परमेश्वर का प्रेम है, जिसे सामर्थ्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है (3:16) परन्तु किसी की इच्छा पर जोर नहीं दिया गया है। सच तो यह है कि पिता सब लोगों को अपने प्रेम के दायरे में खींचता है, हालाँकि सब लोग प्रतिक्रिया नहीं देते। जो लोग प्रतिक्रिया देते हैं वे फिर से जिलाए जाते हैं और अन्तिम दिन में मसीह द्वारा अनन्त काल के आनन्द के लिये जिलाए जाएँगे।

प्रभु परमेश्वर की इच्छा (6:44) से परमेश्वर के वचन (6:45-46) की ओर मुड़ता है और यशायाह 54:13 (यिर्मयाह 31:34) से एक पद उद्धृत करता है। यह भविष्यद्वाणी यरूशलेम के पुनर्स्थापित नगर की ओर निर्देशित है। एक राज्य युग की भविष्यद्वाणी, मसीह के सहस्त्राब्दी शासनकाल की आशा करते हुए, यह पद लोगों को आश्वासन देती है, कि “तेरे सब लड़के यहोवा के सिखलाए हुए होंगे।” निस्संदेह, बेबीलोन की बन्धुआई से लौटने के बाद ऐसा नहीं हुआ, हालाँकि एज्रा और शास्त्रियों ने लौटे हुए अग्रदूतों को परमेश्वर की बातों में फिर से शिक्षित करने के लिये एक साहसी प्रयास किया, जैसा कि बन्धुआई से लौटने के बाद के भविष्यद्वक्ताओं हाग्गै और जकर्याह ने किया था। बातें जल्द ही बिगड़ने लगीं, जिसके लिये मलाकी सेवकाई की बुलाहट हुई। यीशु मसीह के समय तक, वे शिक्षाएँ रब्बी परम्पराओं में बदल गई थीं, जिन्होंने प्रभावी रूप से परमेश्वर के वचन की सच्चाई को नकार दिया था। यहाँ प्रभु भविष्यद्वाणी को मसीहीयाई रूप में मानते हैं परन्तु, यदि यहूदियों ने मसीह को ग्रहण कर लिया होता, तो यशायाह की प्रतिज्ञा पूरी हो गई होती। क्योंकि यहूदियों ने मसीह को ग्रहण नहीं किया, इसलिये भविष्यद्वाणी को इस बार सहस्त्राब्दी रूप में फिर से स्थगित कर दिया गया।

कुछ लोग सोचते हैं कि यशायाह 54 को वर्ष के इस समय के लिये नियमित आराधनालय में आराधना की विधि में शामिल किया गया था। यदि ऐसा है, तो प्रभु का उद्धरण उसके सुननेवालों के लिये एक उपयुक्त स्मरण सूत्र था

कि वह समय आ गया था जब भविष्यद्वाणी पूरी होगी। प्रभु इसका अनुप्रयोग करता है: "जिस किसी ने पिता से सुना और सीखा है, वह मेरे पास आता है" (6:45)।

यहूदियों ने गलती से यूसुफ को यीशु का पिता मान लिया और इसे अपने अविश्वास का आधार बना लिया। परमेश्वर को अपने पिता के रूप में इस निरन्तर संदर्भ के द्वारा प्रभु ने बातों को सही करने का प्रयास किया और विश्वास के लिये एक श्रृंखला भी तैयार किया। वह अब आगे कहता है, "यह नहीं कि किसी ने पिता को देखा है; परन्तु जो परमेश्वर की ओर से है, केवल उसी ने पिता को देखा है" (6:46)। सर्वनाम का दूसरा प्रयोग उसी पर बल दिया गया है। अपने देहधारण से पहले, त्रिएक परमेश्वरत्व के सदस्य के रूप में, यीशु ने पिता को देखा था। प्रभु के शब्द परमेश्वरत्व का स्पष्ट दावा करते हैं और इस तथ्य को चिह्नित करते हैं कि देहधारण ने परमेश्वर के व्यक्तित्व को नहीं बदला। वह मनुष्य यीशु, जिसे यहूदियों ने गलती से यूसुफ के पुत्र के रूप में पहचाना था, वही व्यक्ति था जो परमेश्वर पुत्र के रूप में अनन्त काल से था। उसके देहधारण से न तो उसकी पहचान बदली और न ही उसका व्यक्तित्व।

यह उसकी सच्चाई का विषय था (6:47-50) जिसे उसने बिना रुके ईमानदारी के साथ अपने अविश्वसनीय सुननेवालों तक पहुँचाया, इस बात की परवाह किए बिना कि वे कितने कठोर और समझहीन लोग थे। सच सदा सच ही रहता है, और सच कभी बदलता नहीं। वह कुछ और होने से इनकार करता है।

प्रभु ने सबसे पहले मूल सच कहा (6:47) : "मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जो कोई विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसी का है।" हम कल्पना कर सकते हैं कि यहूदी इस तरह के दावे पर अपना सिर हिला रहे होंगे। जिस बात ने उन्हें अन्धा कर दिया वह यह था कि वे उसके परिवार को जानते थे। वे उस गाँव को जानते थे जहाँ वह बड़ा हुआ था। वे उसे एक स्कूली छात्र और गाँव के बढ़ई के रूप में जानते थे। वे उसकी माता और उसके शारीरिक भाइयों और बहनों को जानते थे। वे जानते थे कि वह किस घर में पला-बढ़ा है। अब वह पूरे देश में घूम-घूम कर लोगों को भ्रमित कर रहा था और ऐसे कथन दे रहा था जिन्हें वे अपमान की बातें मानते थे।

परन्तु वे उसके आश्चर्यकर्मों का हिसाब कैसे दे सकते थे? हम सुसमाचार के विवरणों में अन्य आयतों से जानते हैं कि उन्होंने मतिहीन या दुष्टात्मा से ग्रसित मनुष्य के रूप में उसका वर्णन किया। हालाँकि, मूल सत्य बहुत सरल था। वह सच बोल रहा था, और सबसे उत्तम बात यह होता कि वे उस पर विश्वास करते। प्रभु जो कहता है उसकी गम्भीरता की पुष्टि के लिये वह "सच सच" का उपयोग करता है।

तब व्यापक सच की बात आई (6:48-50)। प्रभु उन्हें उस महान सत्य की ओर वापस लाता है जो वह इस चर्चा में लगातार कह रहा है: "जीवन की रोटी मैं हूँ। तुम्हारे बापदादों ने जंगल में मन्ना खाया और मर गए। यह वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरती है ताकि मनुष्य उस में से खाए और न मरे।" शायद उन लोगों के लाभ के लिये जो हाल ही में भीड़ में शामिल हुए थे, उसने जीवन की रोटी होने के अपने मैं हूँ दावे को दोहराया। पुरानी व्यवस्था में जो रोटी स्वर्ग से उतरती थी, वह मृत्यु को टाल नहीं सकती थी। वह केवल शारीरिक जीवन को कुछ समय के लिये पोषण प्रदान करती थी। जबकि दूसरी ओर वह अनन्त जीवन देने की बात कर रहा था।

परन्तु जिस बात ने उसके सुननेवालों को परेशान कर दिया, वह उसके शरीर का विषय था (6:51) और उसके बारे में उसे जो कहना था। वह "जीवन की रोटी जो स्वर्ग से उतरी, मैं हूँ। यदि कोई इस रोटी में से खाए, तो सर्वदा जीवित रहेगा; और जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिये दूँगा, वह मेरा मांस है।" यह समझना महत्वपूर्ण है कि यहाँ प्रभु का अर्थ उसके "मांस" से क्या है। यह उसका वास्तविक शरीर नहीं है; ऐसा विचार हास्यास्पद है। उसका शरीर

वह रूपक है जिसका उपयोग वह अपने मानवीय स्वभाव, अपने मनुष्यत्व के पक्ष में अपने जीवन की समग्रता के लिये करता है। उसका मांस देना उसके बलिदान सम्बन्धी मृत्यु का संदर्भ है, वह मृत्यु जो अपनी इच्छा से ("मैं दूँगा") और दूसरों के बदले देना ("जगत के जीवन के लिये") है।

उसके शरीर के विषय में प्रभु के संदर्भ को इस तरह से समझा जाना चाहिए, यह इब्रानियों 10 से स्पष्ट है, जहाँ परमेश्वर उसकी उपस्थिति में हमारी वर्तमान स्वतंत्र पहुँच की बात करता है: "इसलिये हे भाइयो, जब हमें यीशु के लहू के द्वारा उस नए और जीवते मार्ग से पवित्रस्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है, जो उसने परदे अर्थात् अपने शरीर में से होकर, हमारे लिये अभिषेक किया है" (इब्रानियों 10:19-20)। उस पद में प्रभु के शरीर की पहचान मन्दिर के परदे से की गई है। वह परदा उस सब का प्रतिनिधित्व करता था जो यीशु देहधारी परमेश्वर के रूप में था। यह उत्तम, बटी हुई सनी के कपड़े से बना था जो उसकी धार्मिकता और पापरहित होने का प्रतीक था। इसे नीले, लाल और बैंगनी रंग में रंगा गया था। नीला रंग उसके परमेश्वर का प्रतीक था: वह स्वर्ग से उतरा था; वह परमेश्वर का पुत्र था। लाल रंग उसके मनुष्यत्व का प्रतीक था: वह "अन्तिम आदम, दूसरा मनुष्य" था (आदम नाम का अर्थ "लाल" है)। बैंगनी रंग मनुष्यत्व में परमेश्वरत्व का प्रतीक है। यदि आप एक मात्रा में नीला रंग और उतनी ही मात्रा में लाल रंग लेते हैं, और फिर एक को दूसरे में मिलाते हैं, तो आपको बैंगनी रंग प्राप्त होता है। यीशु "शरीर में प्रकट परमेश्वर" था। तो परदा उस सब का प्रतिनिधित्व करता था जो यीशु मनुष्य रूप में परमेश्वर था और है।

मन्दिर और तम्बू दोनों में परदा पवित्र स्थान के बीच लटका हुआ था, जहाँ याजक सेवा करते थे, और पवित्र स्थान, जहाँ परमेश्वर करूबों के बीच दया के आसन पर शेकीना महिमा के बादल में विराजमान था। उस परदा में एक सन्देश था: "बाहर रहो!" यह मनुष्य के पापपूर्ण दशा और परमेश्वर की पवित्रता के बीच एक सघन बाधा था। परदा यीशु के निर्दोष जीवन का प्रतिनिधित्व करता है, और वह जीवन हमारा सबसे बड़ा दोष है। यह बताता है कि पापरहित सिद्धता का जीवन जिसे परमेश्वर को हमसे अपेक्षा करने का पूरा अधिकार है और जिसे हम नहीं जी सकते, वह मनुष्य यीशु मसीह द्वारा जीया गया है। इस प्रकार वह जीवन हमें दोषी ठहराता है (रोमियों 8:3)। सबसे बड़ी त्रासदी प्रभु यीशु का धरती पर आना, पाप रहित जीवन जीना, हमारे सामने जीवन का एक अद्बितीय उदाहरण रखना जैसा कि परमेश्वर चाहता है कि इसे जीया जाए, और फिर स्वर्ग को उसका लौट जाना होता। फटे हुए परदे की यही सीख है।

परन्तु परदा फट गया था। जब यीशु की मृत्यु हुई (मत्ती 27:51), तो सचमुच मन्दिर का परदा फट गया, जिससे पवित्र स्थान में परमेश्वर की उपस्थिति का मार्ग खुल गया। यह फट गया था क्योंकि "परदा, अर्थात् उसके मांस" को क्रूस पर चीरा गया था। जब अन्त में प्रभु यीशु ने अपना जीवन सौंप दिया, तब वह परदा फट गया, जिससे वह सब कुछ हट गया जो हमें परमेश्वर से दूर करता था।

तब, प्रभु यीशु ने यहूदियों से कहा: "जो रोटी मैं दूँगा [कलवरी पर उसके दिए जानेवाले बलिदान की ओर संकेत देता है] वह मेरा मांस है [परमेश्वर के रूप में उसका अद्बितीय और पाप रहित जीवन, मांस में प्रकट होता है], जो मैं जगत के जीवन के लिये [मानव जाति के उद्धार के लिये, मनुष्यों को परमेश्वर का जीवन, अनन्त जीवन प्रदान करने के लिये] दूँगा [उसकी मृत्यु की सारी महत्वपूर्ण सच्चाई की पुनरावृत्ति]।" हमें जो करना है वह है "इस रोटी को खाना", अर्थात्, व्यक्तिगत रूप से इस रोटी को लेना और ग्रहण करना: व्यक्तिगत रूप से जानबूझकर, स्वेच्छा से मसीह को अपने जीवन में ग्रहण करना।

अब यहूदियों का विरोध खुलकर सामने आ गया। यह अब कुड़कुड़ाना नहीं बल्कि पूरी तरह से शत्रुता थी, जो उनके गलत समझने पर आधारित थी (6:52-59)। हम, पहले, समस्या पर ध्यान देते हैं (6:52) : "इस पर यहूदी यह कहकर आपस में झगड़ने लगे, "यह मनुष्य कैसे हमें अपना मांस खाने को दे सकता है?" वे यह नहीं पहचान पाए कि वह फिर से भाषा के उस अलंकार (सुनेखडोखे) का उपयोग कर रहा था, जिसमें एक हिस्सा पूरा के लिये रखा जाता है। यहाँ "मांस" का प्रयोग स्वयं प्रभु के लिये किया गया है। या हम इसे एक रूपक के रूप में देख सकते हैं, जहाँ किसी बात को अलग तरीके से कहा जाता है। दोनों ही पवित्रशास्त्र और प्रतिदिन के जीवन में भाषा के सामान्य अलंकार हैं। किसी अलंकार को वास्तविक रूप से लेना, या जो वास्तविक है उसे अलंकार के रूप में लेना, बाइबल की व्याख्या में एक सामान्य त्रुटि है। यहूदियों ने इस तथ्य को समझने के लिये आलोचना की कि प्रभु भाषा के अलंकार का उपयोग कर रहा था और निष्कर्ष निकाला कि वह किसी प्रकार के मांस भक्षण: वास्तविक रूप से उसके मांस को खाने का सुझाव दे रहा था।

तब प्रभु ने उपदेश का विस्तार किया (6:53-58)। उसने उनकी गलती पर ध्यान नहीं दिया और रोटी के विषय में आगे कहा: "मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जब तक तुम मनुष्य के पुत्र का मांस न खाओ, और उसका लहू न पीओ, तुम में जीवन नहीं। जो मेरा मांस खाता और मेरा लहू पीता है, अनन्त जीवन उसी का है; और मैं उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊँगा। क्योंकि मेरा मांस वास्तव में खाने की वस्तु है, और मेरा लहू वास्तव में पीने की वस्तु है। जो मेरा मांस खाता और मेरा लहू पीता है वह मुझ में स्थिर बना रहता है, और मैं उस में" (6:53-57)।

रोमन कैथोलिक चर्च ने परिवर्तन के अपने मत को तैयार करने के लिये इन आयतों का उपयोग किया है। इस मत का दावा है कि परमेश्वर का मांस खाने और लहू पीने का अर्थ पवित्र भोज में उसके वास्तविक शरीर और लहू का हिस्सा बनना है। जो स्पष्ट रूप से भाषा का एक अलंकार है जिसे वास्तविक माना जाता है। यह स्पष्ट है कि पद 35 के "आने" और "विश्वास करने" का अर्थ पद 51 और 54 के "खाने" और "पीने" के समान है, क्योंकि उनके साथ वही आशीष जुड़ी हुई है। जब हम मसीह के पास आते हैं और उस पर विश्वास करते हैं तो हम कलवरी के क्रूस पर हमारे लिये बलिदान किए गए उसके शरीर और लहू के लाभों को अपनी आत्मा में ग्रहण करते हैं।

इस तथ्य से बिल्कुल अलग कि यूहन्ना 6 का प्रभु के भोज से कोई सम्बन्ध नहीं है, जिसे प्रभु ने उसे क्रूस पर चढ़ाए जाने से ठीक पहले तक स्थापित नहीं किया था (मत्ती 26:26-28), यूहन्ना 6 में प्रभु की शिक्षा पूरी तरह से आलंकारिक है और कैथोलिक मत के समर्थन के लिये उपयोग नहीं की जा सकती। यहूदियों ने सत्य को ग्रहण करने और "आन्तरिक रूप से पचाने" में मन के संचालन को दर्शाने के लिये लाक्षणिक तरीके से "खाने, पीने" अभिव्यक्ति का उपयोग किया (व्यवस्थाविवरण 8:3; यिर्मयाह 15:16; यहेजकेल 2:8-10)। हम उन लोगों के विषय में बात कर रहे हैं जो पुस्तक खा रहे हैं या जानकारी का एक टुकड़ा चबा रहे हैं या अपमानजनक झूठ निगल रहे हैं। किसी स्पष्ट भाषा को वास्तविक रूप में लेना और फिर उस वास्तविक व्याख्या पर शिक्षा का निर्माण करना आत्मिक सत्य का उपहास है।

रोम द्वारा मत के रूप में स्वीकार की गई शिक्षा यह है कि रोटी और दाखरस यीशु मसीह के शरीर और मनोदशा में बदल जाती है। यह मरकुस 14:22, 24 में मसीह के कथनों को समझाने का एक प्रयास है, जहाँ वह कहता है, "यह मेरी देह है" और "यह मेरा लहू है।" रोम इस बात पर जोर देता है कि इस शब्द को वास्तविक रूप से लिया जाना चाहिए। धर्मनिष्ठ कैथोलिक का मानना है कि रोटी अब रोटी नहीं रह गई है। यह अभी भी दिखने और स्वाद में रोटी जैसा हो सकता है, इसे रोटी जैसा मोड़ा सकता है, परन्तु यह अब रोटी नहीं है। जब याजक मसीह के

पवित्र शब्द बोलता है तो रोटी और दाखरस के पदार्थ का मसीह के शरीर और लहू में वास्तविक परिवर्तन होता है (James Doyle, Bishop of Kildare and Leighin, An Abridgment of Christian Doctrine, p. 81, cited by T. C. Hammond, The One Hundred Texts, London: The Society for Irish Missions, 1939, p. 407)। परिवर्तन की शिक्षा "अपने साथ कई गम्भीर परिणाम लेकर आती है। यदि मसीह पर्याप्त रूप से मौजूद है, तो यह स्वाभाविक है कि इन पदार्थों का आदर की जानी चाहिए। यह भी दावा किया जा सकता है कि उसे उन सब को ग्रहण करना है जो इसमें शामिल होते हैं, चाहे उचित रीति से उद्धार के लिये या गलत तरीके से नाश होने के लिये हो। (*Evangelical Dictionary of Theology,* Grand Rapids: Baker Book House, p. 1108)।

यहूदी, जिन्होंने सबसे पहले प्रभु को यह उपदेश देते हुए सुना था, वे भी बातों को गलत समझने के लिये जिम्मेदार थे। हालाँकि, परमेश्वर ने उनकी गलती को अनदेखा कर दिया। उसने अन्तिम सारांश दिया: "जो रोटी स्वर्ग से उतरी यही है, उस रोटी के समान नहीं जिसे बापदादों ने खाया और मर गए; जो कोई यह रोटी खाएगा, वह सर्वदा जीवित रहेगा" (6:58)। यह लगभग वैसा ही है जैसा प्रभु ने कहा, "इसे रख लो या छोड़ दो।" भूसी को गेहूँ से अलग करने का समय आ गया था।

प्रभु की सेवकाई में यह निर्णायक मोड़ इतना महत्वपूर्ण था कि यूहन्ना ने उस स्थान   का उल्लेख भी किया (6:59) : "ये बातें उसने कफरनहूम के एक आराधनालय में उपदेश देते समय कहीं।" यह नगर उसका गलीली मुख्यालय बन गया था। वहाँ अब उसने अपना घर बना लिया था। वहाँ भी, उसने अपने कई आश्चर्यकर्म किए, जिसमें उस रोमी सूबेदार के सेवक की चंगाई भी शामिल थी जिसने आराधनालय का निर्माण किया था (लूका 7:1-10)।

परन्तु वे केवल प्रभु के बैरी ही नहीं थे जो इस प्रकार के उपदेश से परेशान थे। इसका प्रभाव उसके हृदय में बहुत गहराई तक जा चुका था।

अब हम अपना ध्यान प्रभु के अनुयायियों की अप्रसन्नता की ओर लगते हैं (6:60-71)। वह आक्रोश सबसे पहले उसके चेलों के बीच मतभेद से उत्पन्न हुआ (6:60-65)। भीड़ का गलत समझना बहुत बढ़ गया था, धार्मिक अगुवों की सक्रिय दुर्भावना भविष्य के लिये एक बुरा संकेत था, परन्तु कई लोगों के बीच कुड़कुड़ाहट जिन्होंने अपने आप को इस आश्चर्यकर्म की आशा से जोड़ लिया था—जो शीघ्र आने वाले भौतिक राज्य की आशा में, भविष्यद्वणी करनेवालों से आशा से जुड़े हुए थे, सबसे बुरा था। हालाँकि, यह सम्भव है कि प्रभु ने जानबूझकर इस संकट को खत्म करने के लिये उन लोगों को उकसाया जो केवल रोटी और मछलियों के पीछे पड़े थे। हम सबसे पहले देखते हैं   कि उसने क्या उजागर किया (6:60-61)। उसके कई अनुयायी, उसकी रूपक शैली का अनुसरण करने में असमर्थ थे, उसने कहा, "यह कठोर बात है; इसे कौन सुन सकता है?" प्रभु ने उनके विचार पढ़े। उसने कहा, "क्या इस बात से तुम्हें ठोकर लगती है?" यहाँ तक कि जिन लोगों ने रूपक को समझ लिया, वे भी क्रोधित हो गए। प्रभु ने अपने आप को मूसा से भी बड़ा बताया। उसने स्वर्ग से आने का दावा किया। उसने परमेश्वर के साथ एक होने का दावा किया। वह अपनी मृत्यु को जीवन का मार्ग बता रहा था। यह उपदेश, जो समझ से परे नहीं, परन्तु पूरी तरह से निन्दनीय था। "उन्होंने कहा, "इस तरह की बातें कौन सुन सकता है?" प्रभु ने उनके मन की बात प्रकट की।

हम ध्यान दें कि उसने क्या समझाया (6:62-63)। उसने बातों की अलौकिक प्रकृति (6:62) को समझाया: "यदि तुम मनुष्य के पुत्र को जहाँ वह पहले था, वहाँ ऊपर जाते देखोगे, तो क्या होगा?" यहाँ प्रभु ने प्रभावी ढंग से घोषणा की कि वह अपने देहधारण से पहले स्वर्ग में था और पुनरुत्थान के बाद वह स्वर्ग में वापस चला जाएगा।

यह उसके न बदलनेवाले व्यक्तित्व का परिचायक है। उसके जन्म से पहले, उसके सांसारिक जीवन के दौरान, उसके स्वर्गारोहण के बाद, यह वही व्यक्ति है, वही व्यक्तित्व है।

कुछ लोगों ने प्रश्न को इस प्रकार दोहराया है: “यदि तुम मनुष्य के पुत्र को जहाँ वह पहले था, वहाँ ऊपर जाते देखोगे, तो क्या होगा?” प्रभु का सम्पूर्ण जीवन ईश्वरीय जीवन था। उसका जन्म अलौकिक था, उसका जीवन अलौकिक था, उसके आश्चर्यकर्म अलौकिक थे, उसकी मृत्यु अलौकिक थी और सबकुछ घटित होना अलौकिक था, उसका पुनरुत्थान अलौकिक था, और स्वर्ग में उसका शारीरिक आरोहण अलौकिक था। प्रभु अपने देहधारण की अलौकिक प्रकृति के प्रमाण के रूप में अपने होनेवाले स्वर्गारोहण की अलौकिक प्रकृति की ओर इशारा करता है।

परन्तु इसमें अलौकिक प्रकृति से भी अधिक कुछ था; प्रभु ने बातों की आत्मिक प्रकृति (6:63) को भी समझाया: “आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं; जो बातें मैं ने तुम से कही हैं वे आत्मा हैं, और जीवन भी हैं।” हम नीकुदेमुस को कहे प्रभु की बातों को स्मरण करते हैं: क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है (3:6)। प्रभु के वचन जीवनदायी हैं। वे “आत्मा” हैं। वे आत्मिक जीवन उत्पन्न कर सकते हैं; वे “तत्पर” कर सकते हैं, जीवित कर सकते हैं, परमेश्वर का जीवन प्रदान कर सकते हैं। मनुष्य के आत्मा में उसका आत्मा है जो अनन्त जीवन प्रदान करता है, और वह आत्मा उसके वचन में वास करता है। यहाँ तक कि यदि कोई याजक किसी सम्बन्धी को प्रभु का शरीर दे सकता, तो भी इससे कोई लाभ नहीं होगा। जीवन देनेवाले सिद्धान्त आत्मा में, उसके वचन में वास करते हैं, जो “परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है।”

फिर हमें बताया गया कि उसने क्या अपेक्षा की थी (6:64) : “परन्तु तुम में से कुछ ऐसे हैं जो विश्वास नहीं करते।” क्योंकि यीशु पहले ही से जानता था कि जो विश्वास नहीं करते, वे कौन हैं; और कौन उसे पकड़वाएगा।” चेलों का दो समूह था। वहाँ बाहरी समूह था, जिसमें वे शामिल थे जो उसमें बहुत रुचि रखते थे। वे उसके आश्चर्यकर्मों से आकर्षित हुए थे और ऐसे अधिकार द्वारा चिह्नित शिक्षा से प्रभावित हुए थे—जो कि शास्त्रियों से बहुत अलग था। हम, शायद, इन लोगों के बारे में कह सकते हैं कि वे अपने मन में अधिक या कम आश्वस्त थे कि यीशु मसीह था, परन्तु उन्होंने मसीह के प्रति कोई वास्तविक, जीवन-परिवर्तनकारी, विश्वास में तत्पर हृदय की प्रतिबद्धता नहीं दिखाई थी। प्रभु ने उनके हृदयों को पढ़ा। वह सब कुछ जानता था। वह “पहले ही से जानता था कि जो विश्वास नहीं करते।” हो सकता है उन्होंने दूसरों को मूर्ख बनाया हो, उन्होंने अपने आप को मूर्ख बनाया हो, परन्तु उन्होंने उसे मूर्ख नहीं बनाया।

और दूसरा बारह चेलों का आन्तरिक समूह था, जिन्होंने मसीह के प्रति हृदय से प्रतिबद्धता जताई थी। परन्तु वहाँ प्रभु के साथ विश्वासघात भी नहीं किया गया। वह “पहले ही से जानता था कि... कौन उसे पकड़वाएगा।” पहले दिन से जब यहूदा संगति के प्रेरितों के समूह में शामिल हुआ, यीशु जानता था कि वह उसके साथ विश्वासघात करेगा। यह यहूदा के भावी विश्वासघात की प्रथम सूचना है। यहूदा अन्त तक दूसरे चेलों के साथ विश्वासघात करने में सफल रहा। मसीह के साथ विश्वासघात नहीं किया गया।

हमें बताया गया कि उसने किस बात का विस्तार किया (6:65) : “और उस ने कहा, सने कहा, “इसी लिये मैं ने तुम से कहा था कि जब तक किसी को पिता की ओर से यह वरदान न दिया जाए तब तक वह मेरे पास नहीं आ सकता।” यहाँ परमेश्वर उन लोगों के बीच एक रेखा खींचता है जो ईश्वरीय अवरोध से उसकी ओर खींचे आए थे और जो लोग उसके बारे में गलत विचारों के साथ उसकी ओर खींचे आए थे—उदाहरण के लिये, जो उसके

आश्चर्यकर्मों से खींचे आए थे, या एक प्रमुख स्थान की आशा से खींचे आए थे उनका मानना था कि वह पृथ्वी पर साम्राज्य स्थापित करने वाला था। लोग सभी प्रकार के कारणों से मसीह के पास आते हैं। कुछ लोग, आज भी, चंगाई के आश्चर्यकर्म या किसी "वरदान" की आशा में मसीह के पास आते हैं। बहुत से लोग उत्साहवर्धक सुसमाचार प्रचार के दबाव में मसीह के पास आते हैं, और उनमें से बहुत से मानसिक परिवर्तन का अनुभव करते हैं और इससे अधिक कुछ नहीं। कुछ लोगों के पास तो बहुत ही बुरे उद्देश्य होते हैं। यहूदा उन लोगों का प्रमुख उदाहरण था जो कुछ भौतिक लाभ पाने की आशा से आए थे। जो लोग आत्मिक कारण के अलावा किसी अन्य कारण से मसीह के पास आते हैं क्योंकि वे परमेश्वर द्वारा उसकी ओर खींचे जाते हैं, परन्तु वे जल्द ही दूर हो जाते हैं, और इनमें से कुछ जैसे यहूदा, जो अन्य लोगों की तुलना में कहीं अधिक चतुर, विश्वास में पीछे हटनेवाले और यहाँ तक कि मसीह के सक्रिय बैरी भी बन जाते हैं।

यूहन्ना अब यह दिखाने के लिये आगे बढ़ता है कि कैसे मसीह के प्रति क्रोध सेउसके चेलों का उलटा फिरना (6:66-71)। यूहन्ना यीशु की पुकार को स्मरण करता है (6:66-69)। "इस पर उसके चेलों में से बहुत से उल्टे फिर गए और उसके बाद उसके साथ न चले" (6:66)। उन्होंने न केवल उसके पीछे चलना बन्द कर दिया बल्कि उससे जो कुछ भी प्राप्त किया था उसे भी उन्होंने त्याग दिया। वे जीवन के अपने पुराने तरीकों पर वापस चले गए। उसके उपदेश को सुनकर वे उल्टे फिर गए।

कम से कम बारह जो थे वे रह गए। वह इनको भी परखना चाहता था। उसने उनसे पूछा, "क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?" तब पतरस ने उत्तर दिया: "हे प्रभु, हम किसके पास जाएँ? अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं; और हम ने विश्वास किया और जान गए हैं कि परमेश्वर का पवित्र जन तू ही है" (6:68-69)। पतरस का यह अंगीकार वैसा नहीं है जैसा उसने कैसरिया फिलिप्पी में किया था (मत्ती 16:16)। जो कुछ महीने पहले किया गया था। पतरस ने प्रभु के उपदेश के आत्मिक आयाम को समझ लिया था, कि उस पर विश्वास करके वे अनन्त जीवन पा सकते थे, कि मसीह के वचन वास्तव में "आत्मा" और "जीवन" थे (6:63)। पतरस ने प्रभु की बातों पर विश्वास उसे जानने के बाद किया था। उसने रूपक को समझ लिया था; उसने आन्तरिक सत्य को पकड़ लिया था।

उसने कहा, "हम किसके पास जाएँ?" यीशु मसीह को सुनकर कौन बुद्ध या कन्फ्यूशियस या मोहम्मद या कृष्ण के पास जाना चाहेगा? यीशु मसीह को सुनने के बाद कौन डार्विन या मार्क्स या लेनिन को सुनना चाहेगा? मसीह को सुनने के बाद कौन प्लेटो या फिलो या मारकस ऑरेलियस के पास जाना चाहेगा? "अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं; और हम ने विश्वास किया और जान गए हैं कि परमेश्वर का पवित्र जन तू ही है।" पतरस ने बिलकुल सही कहा। मसीह से विमुख होकर विश्व के झूठे धर्मों में से किसी एक के मृत संस्थापक, या किसी मूर्तिपूजक दार्शनिक के व्यर्थ के तर्कों, या आज के मानवतावादी पंथों के आधुनिक समर्थकों में से किसी एक की ओर मुड़ना, ज्योति के बदले अन्धकार, जीवन के बदले मृत्यु, आशा के बदले निराशा, स्वर्ग के बदले नरक की ओर मुड़ना है। कोई और है ही नहीं जिसके पास हम जा सकें।

पतरस कहता है, "और हम," (सर्वनाम पर बल दिया गया है: हम जो तेरे सबसे निकट हैं), "हम ने विश्वास किया और जान गए हैं [जान गए हैं—गिनोस्को, अनुभव से, तुझसे परिचित होकर, तुझसे सीखते हुए, बातों को समझते हुए] कि तू मसीह है [इस्राएल का प्रतिज्ञा किया हुआ मसीह], जीवित परमेश्वर का पुत्र।" विश्वास इससे अधिक ऊँचाइयों पर नहीं जा सकता। कम से कम पतरस और चेलों का आन्तरिक समूह आश्वस्त था। वे नहीं जाना चाहते। उनके पास जाने के लिये कोई दूसरा जगह नहीं था।

एक को छोड़कर सभी आश्वस्त थे। यूहन्ना, जो सभी बारहों में से विश्वासघात करनेवाले की गतिविधियों से विशेष रूप से क्रोधित था, यह दिखाने में सावधानी बरतता है कि वह प्रभु की सब कुछ देखने वाली, पारखी नजर के द्वारा पहले ही यहूदा देख को चुका था। इसलिये वह यहूदा के अपराध को दर्ज करता है (6:70-71)। प्रभु का कथन वास्तव में भयानक और गम्भीर है: "यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, क्या मैं ने तुम तुम बारहों को नहीं चुना? तौभी तुम में से एक व्यक्ति शैतान है।" यह उसने शमौन इस्करियोती के पुत्र यहूदा के विषय में कहा था, क्योंकि वही जो बारहों में से एक था, उसे पकड़वाने को था।"

प्रभु यह बात समय के प्रारम्भ के पहले से ही जानता था कि उसके चेलों में से एक विश्वासघात करनेवाला होगा, मनुष्य के पतन से पहले ही उद्धार की योजना आवश्यक थी, शमौन के पुत्र यहूदा का जन्म यहूदिया देश के करिय्योत में होने से पहले भजन 41:9 की भविष्यद्वाणी से भी यीशु इसे जानता था। उसने जानबूझकर यहूदा को बारहों में से एक चुना। यह असीम प्रेम—यहूदा की आत्मा के लिये प्रेम था जिसने प्रभु को उस व्यक्ति को चुनने के लिये प्रेरित किया जो एक दिन उसके साथ चुम्बन से विश्वासघात करेगा। यदि वह चाहता तो वह उसे बचा लेता। उसने उसे अपना प्रेम और चिन्ता दिखाने के लिये, उसके सामने स्वर्ग में घर की आशा रखने के लिये, उसके हृदय को घेरने के लिये, उसके दिमाग को आकर्षित करने के लिये, उसकी इच्छा के दरवाजे पर जोर से दस्तक देने के लिये, उसे विवेक को जगाने के लिये अपनी ओर आकर्षित किया। यह सब व्यर्थ था। यहूदा ने बार-बार अपना हृदय कठोर किया।

प्रभु खुले रूप में उसका वर्णन शैतान (डिआबोलस) के रूप में करता है। जी कैम्पबेल मॉर्गन इसे उसके चरित्र के अनुसार देखते हैं और कहते हैं कि यहूदा बिल्कुल भी एक मनुष्य नहीं था, बल्कि मनुष्य के रूप में छिपा हुआ शैतान था। इस शब्द का अर्थ है "दोष लगानेवाला" या "निन्दा करनेवाला" और यह शैतान को दिए गए दो प्रमुख नामों में से एक है। दूसरा प्रमुख नाम शैतान है, जिसका अर्थ है "विरोधी।" रोचक बात यह है कि यहाँ, जब पतरस अपना महान अंगीकार करता है, तो शत्रु तुरन्त प्रकट हो जाता है और जिसे "शैतान", दोष लगानेवाला कहा जाता है। अगले अवसर पर जब पतरस कैसरिया फिलिप्पी में अपना महान अंगीकार करता है, तो शत्रु फिर से प्रकट होता है, केवल उस अवसर पर वह "शैतान," विरोधी होता है।

और यहूदा के पिता करिय्योत का शमौन कौन था, जिसके नाम की चर्चा यहाँ की गई है? क्या वह, शायद, अपने बेटे के धूर्त, लोभी, कठोर, विवेकहीन और छली व्यवहार के लिये आंशिक रूप से दोषी था? वह कैसा पिता था? उसने अपने बढ़ते लड़के के सामने किस प्रकार का उदाहरण प्रस्तुत किया? वह घर पर कैसा था? वह अपनी पत्नी के साथ कैसा व्यवहार करता था? वह अपना काम किस रीति से करता था? क्या वह एक धार्मिक व्यक्ति था? वह अपने घर पर किस तरह के मित्रों को आमन्त्रित करता था? क्या वह आंशिक रूप से दोषी था? क्या इसी कारण से उसका नाम दिया गया है? या क्या उसका नाम हमें दया दिखाने के लिये दिया गया है कि किसी मनुष्य के पुत्र को इतना विवेकहीन होना चाहिए कि वह अपने मन में ऐसा कपट रख सके कि वह चुम्बन से मसीह के साथ विश्वासघात कर सकता है?

इस प्रकार सुसमाचार के यूहन्ना के विवरण का एक और भाग समाप्त होता है। मत्ती और अन्य सहदर्शी लेखक हमें प्रभु के गलीली सेवकाई के विषय में और भी बहुत कुछ बताते हैं। यूहन्ना के पास कहने के लिये और कुछ नहीं है। उसने विश्वासघाती का परिचय दिया है। अब वह उसके चित्र के गहरे हिस्सों को चित्रित करना शुरू कर देगा, और हमें क्रूस के और भी निकट ले जाएगा।

II. उसके जीवन के निहितार्थ (7:1-10:42)

यूहन्ना ने शहरी यरूशलेम और ग्रामीण गलील दोनों में मसीह के जीवन के प्रभाव को हमारे सामने रखा है (5:1-6:71); अब वह हमें उस जीवन के निहितार्थ को दिखाना चाहता है (7:1-10:42)। सुसमाचार के इस भाग में हमारी तीन गतिविधियाँ हैं: प्रभु द्वारा परमेश्वर के वचन को प्रकट करना (7:1-8:1), प्रभु द्वारा मनुष्यों की दुष्टता को उजागर करना (8:2-9:41), और प्रभु द्वारा जीवन के मार्ग की व्याख्या करना (10:1-42)।

A. उसके द्वारा परमेश्वर के वचन को प्रकट करना (7:1-8:1)

हमारे प्रभु द्वारा परमेश्वर के वचन को प्रकट करना विरोध के तीन केन्द्रों के आस-पास घूमता है। हम उसके परिवार का विरोध (7:1-10), यहूदियों के तर्क (7:11-29), और शासकों के विरोध (7:30-8:1) को देखते हैं। विवाद के ये तीन क्षेत्र परमेश्वर को पृथ्वी पर शरीर में होकर आनेवाले परमेश्वर के रूप में उसके जीवन के निहितार्थों को अधिक से अधिक स्पष्ट करने में सक्षम बनाते हैं।

1. उसके परिवार का विरोध (7:1-10)

हम उसके परिवार के विरोध से शुरुआत करते हैं। हम, पहले, तिथि (7:1-2) पर ध्यान देते हैं। पाँच हज़ार लोगों को खिलाने और जीवन की रोटी पर उपदेश देने के बाद, प्रभु गलील में तब तक सेवा करता रहा, जब तक कि झोपड़ियों के वार्षिक पर्व का समय नहीं आया, जो सभी यहूदी पर्वों में से सबसे हर्ष और उल्लास का पर्व था। प्रभु अच्छी तरह से जानता था कि यरूशलेम में किस तरह के बैर और विरोध उसके आने की प्रतीक्षा में थे।

झोपड़ियों का पर्व तिसरी के पन्द्रहवें दिन से शुरू हुआ, जो कि हमारे सितम्बर-अक्टूबर के साथ मेल खाने वाला यहूदी महीना है (हम यहूदी महीनों को हमारे साथ बिल्कुल नहीं जोड़ सकते क्योंकि यहूदी चन्द्र पंचांग का इस्तेमाल करते थे, प्रत्येक महीने का पहला दिन अमावस्या के साथ मेल खाता था)। यह पर्व एक प्रकार से कटनी या धन्यवाद का बलिदान चढ़ाने का उत्सव था। यह फसह के बीच का समय होता था। इस पर्व के लिये लोग बड़ी संख्या में यरूशलेम आते थे, नगर की दीवारों के चारों ओर अस्थाई आश्रय बनाते और बहुत हर्ष-आनन्द और संगति करने के लिये तैयार होकर आते थे। फसह और पिन्तेकुस्त के साथ, यह इब्रानी धार्मिक पंचांग में तीन धार्मिक स्थलों में से एक था। यूहन्ना के अध्याय 6 और 7 के बीच छः महीने का अन्तराल है, जिन महीनों को यूहन्ना मौन में बिताता है।

इसके बाद वाद-विवाद का समय आता है (7:3-8) और प्रभु को अपने भाइयों की सलाह सुननी पड़ती है (7:3-5)। वे अपने कहने और करने में ढीठ के समान और निश्चित रूप से अभिमानी थे। उन्होंने कहा, “तुम्हें यरूशलेम जाना चाहिए और वहाँ अपने आश्चर्यकर्म करने चाहिए।” उनका मानना था कि वह गलील के जंगलों, किसानों और यात्रियों को चंगा करने में अपना समय बर्बाद कर रहा था। यरूशलेम वह जगह थी जहाँ कार्य हुआ। यरूशलेम वह स्थान था जहाँ वे लोग रहते थे जो वास्तव में महत्व रखते थे। उसे राजधानी जाना चाहिए और वहाँ मुट्ठी भर गलील के लोगों के बजाय वास्तविक रूप से पीछे चलनेवाले लोगों का समूह बनाना चाहिए जो अब उसके पास हों। उन्होंने कहा, “तू अपने आप को जगत पर प्रकट कर।” उनके अनुमान के अनुसार लोगों की दृष्टि से उसका दूर रहना मूर्खतापूर्ण था, जबकि उसे यरूशलेम के केन्द्र स्थल पर साहसपूर्वक कदम रखने की आवश्यकता थी। यदि वह मसीह था, तो उसे आरम्भिक राष्ट्रीय विद्रोह की सूखी घास में आग जलाना, आग को जलाए रखना और पूरे देश में आग फैलाना था। एक योग्य मसीह को इसी तरह कार्य करना चाहिए। वह गलील में एक स्थान से

दूसरे स्थान तक डरपोक होकर दौड़ने में कभी सफल नहीं हुआ। हर तरह से, यरूशलेम उसे अपने आप को मसीह घोषित करने और प्रमाणित करने का स्थान था, न कि काना या कफरनहूम और न ही नासरत या नाईन।

यूहन्ना बताता है कि इस अनावश्यक सलाह के पीछे क्या बात थी: “क्योंकि उसके भाई भी उस पर विश्वास नहीं करते थे” (7:5)। अविश्वसनीय तथ्य यह है कि उसके ये भाई नासरत के उसी घर में एक साथ रहते थे और यह देखने में असफल रहे कि वह एक सामान्य मनुष्य से बढ़कर था। वह “पवित्र, और निष्कपट, और निर्मल, और पापियों से अलग” था (इब्रानियों 7:26)। उसकी अच्छाई आदम की सन्तान को ज्ञात सभी अच्छाइयों से परे थी। वह दूसरों से अधिक प्रिय और दयालु, धीरज और शुद्ध, बुद्धिमान और समर्थ था। फिर भी वे उसे पहचानने में असफल रहे कि वह कौन था और क्या था। यह उसकी सम्पूर्ण मानवता की वास्तविकता के लिये एक उल्लेखनीय सम्मान है—और उनके अंधेपन के लिये एक दुःखद सच्चाई है।

यहाँ तक कि उसके आश्चर्यजनक आश्चर्यकर्म से भी वे समझ नहीं पाए। उसकी शिक्षा ने उन्हें प्रभावित नहीं किया। उसके दावों का उन पर कोई असर नहीं हुआ। उसके स्वभाव में उनकी कोई रुचि नहीं थी। वे सिर्फ इतना ही कह सके कि यदि वह वास्तव में मसीह था, तो उसके पास अपने राज्य पर दावा करने का एक अनोखा तरीका था। उनके पास सबसे अच्छा यही विचार था कि बातें कैसे की जानी चाहिए।

प्रभु के पास अपने भाइयों के लिये चेतावनी का एक शब्द था (7:6-8)। वह यरूशलेम के आत्मिक वातावरण को उनसे कहीं अधिक अच्छे से जानता था। यरूशलेम के शत्रुतापूर्ण धार्मिक अगुवे उसे मार डालना चाहते थे। “मेरा समय अभी तक नहीं आया,” उसने ईश्वरीय समय सारिणी के अनुसार काम करते हुए कहा। वह अपने इन विश्वास न करनेवाले भाइयों के दबाव में नहीं आने वाला था, जो अपनी रिश्तेदारी का घमण्ड करते हुए उसे यह बताएँ कि उसे क्या करना चाहिए।

बहुत से लोग अपने जीवन में परमेश्वर के नेतृत्व की हर क्षण जागरूकता में नहीं रहते हैं। निश्चित रूप से प्रभु के भाई नहीं जानते थे कि परमेश्वर के साथ कैसे चलना है। उसने कहा, “तुम्हारे लिये सब समय है।” वे अपनी इच्छाओं के अनुसार आए और चले गए। वे स्वर्ग के अनुरूप जीवन नहीं जी रहे थे। इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि वे आज, कल, या अगले सप्ताह यरूशलेम जाएँ। उनके कार्य प्रभु की ओर से आदेशित नहीं किए गए थे।

वे इस संसार, इसके सिद्धान्तों, नीतियों, प्राथमिकताओं द्वारा चलाए चलते थे। वह उस संसार द्वारा चलाए चलता था। संसार उनसे बैर नहीं कर सकता था, क्योंकि उसी में अपना जीवन बिताते थे। उन्होंने इसके विचार और कार्य के तरीकों को स्वीकार किया। उसने कहा, “संसार तुम से बैर नहीं कर सकता, परन्तु वह मुझ से बैर करता है क्योंकि मैं उसके विरोध में यह गवाही देता हूँ कि उसके काम बुरे हैं” (7:7)। प्रभु ने बातों की वास्तविक प्रकृति को समझा। यह संसार और इसकी व्यवस्था परमेश्वर का बैरी है। यह पापियों के लिये शैतान की मांद है, यह सन्तों के लिये उसका प्रलोभन है। जैसा कि इस शब्द का उपयोग यहाँ किया गया है, और नए नियम में कई अन्य स्थानों पर, “संसार” परमेश्वर के लिये केवल मनुष्य का जीवन और समाज है। इसका विज्ञान, राजनीति, आर्थिक और सामाजिक प्रणालियाँ, दर्शन, सुख, धर्म, लक्ष्य और संगठन परमेश्वर के विरोधी हैं, आने वाले संसार के प्रति उदासीन हैं। शैतान इसका सरदार है; आँखों की अभिलाषा, शरीर की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड इसके प्रेरक कारक हैं। केवल इस संसार में रहकर, उस दूसरी संसार की शक्ति में परमेश्वर ने इसकी गवाही दी “कि उसके काम बुरे हैं।” जब संसार के साथ समझौता करने के लिये हमें प्रलोभन दिए जाते हैं तो हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि जिस हाथ से वह हमारी ओर बढ़ता है वह मसीह के लहू से सना हुआ होता है।

जहाँ तक प्रभु यीशु की बात है, वह संसार में तो था परन्तु संसार का नहीं था। उसने अपने भाइयों से कहा, "तुम पर्व में जाओ।" "मैं अभी इस पर्व में नहीं जाता, क्योंकि अभी तक मेरा समय पूरा नहीं हुआ" (7:8)। प्रभु को अभी तक स्वर्ग के अपने पिता से आन्तरिक आश्वासन नहीं मिला था कि उसके जाने का समय हो चुका है। इस बात की सम्भावना हमेशा बनी रहती थी कि यदि वह उनके साथ शामिल हो जाता है तो पर्व में जानेवाले भक्तों की भीड़ और गाती हुई मण्डली फिर से उसे बलपूर्वक राजा बनाने का प्रयत्न कर सकती हैं। परन्तु उसके भाइयों को मार्ग में बड़े उत्साह या यरूशलेम के किसी भी आनन्द से वंचित होने की कोई आवश्यकता नहीं थी। इसके अलावा, वह जानता था कि अन्ततः वह मन्दिर में अचानक प्रकट होगा, जैसा कि पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता मलाकी ने भविष्यद्वाणी की थी (मलाकी 3:1)।

फिर विदा होकर चला गया (7:9-10)। प्रभु कुछ समय तक गलील में रहा। उसने तब तक प्रतीक्षा की जब तक कि उसके भाई राज्य के बारे में अपने सांसारिक विचारों को अपने साथ लेकर चले नहीं गए। "जब उसके भाई पर्व में चले गए तो वह स्वयं भी, प्रकट में नहीं परन्तु मानो गुप्त रूप से गया" (7:10)। जब यूहन्ना 2:13 में प्रभु यरूशलेम गया तो उसे एक राजकुमार के रूप में, अपने पिता के घर को शुद्ध करने और अपने मसीहीयाई उत्साह को प्रकट करने के लिये जाना था। जब वह यूहन्ना 5:1 में ऊपर गया तो वह एक भक्त के रूप में गया। इस बार वह सब के हृदय में बात डालने की एक महत्वपूर्ण घोषणा करने के लिये भविष्यद्वक्ता के रूप में गया।

2. यहूदियों के तर्क-वितर्क (7:11-29)

यीशु के प्रति निर्णय न कर पाने और शत्रुता की सामान्य भावना अब यहूदियों के बीच काम में देखी जा सकती है; ऐसा प्रतीत होता है कि ये गलीली आराधकों के समूह में यहूदी दल थे। पहले हम उन्हें उसके बारे में तर्क-वितर्क करते हुए देखते हैं (7:11-13)। यरूशलेम संसार के सभी हिस्सों से आए भक्तों से भरा हुआ था, और बातचीत का एक प्रमुख विषय गलील का आश्चर्यकर्म करनेवाला भविष्यद्वक्ता था। वे आपस में सामान्य रूप से कुड़कुड़ाने या बड़बड़ाने लगे थे। कम से कम कुछ लोग मानते थे कि यीशु एक भला मनुष्य था। इस बात की सम्भावना है कि भीड़ में ऐसे लोग भी थे जो स्वयं, या जिनके रिश्तेदार या मित्र उसके द्वारा चंगे हुए थे, या जिन्होंने यीशु को लोगों को चंगा करते हुए देखा था। भीड़ में ऐसे लोग भी रहे होंगे जिन्होंने उसे सुना होगा। कुछ लोगों को पहाड़ पर दिए गए उपदेश की बातें या विभिन्न समयों पर दिए गए उनके उपदेश की बातें स्मरण रही होंगी। कुछ कहते थे, "वह भला मनुष्य है।"

दूसरे कहते थे, "उसके समान कोई नहीं। वह लोगों को भरमाता है, लोगों के पास जाकर उन्हें उनके मार्ग से भटकाता है। उसके दावे असाधारण, तर्क विहीन हैं। वह परमेश्वर होने का भी दावा करता है—और हम जानते हैं कि यह सच नहीं हो सकता क्योंकि हम उसके माता-पिता को जानते हैं। क्यों, अभी तक, वह नासरत में गाँव का सिर्फ बढ़ई था।"

इस तरह तर्क-वितर्क चलता रहा, और दूर-दूर से आने वाले भक्त इस समूह से उस समूह में आते जाते, कभी यहाँ तो कभी वहाँ दिखाई देते थे। परन्तु ऐसी चर्चाओं पर कोई बात नहीं की जाती थी। "तौभी यहूदियों के डर के मारे कोई व्यक्ति उसके विषय में खुलकर नहीं बोलता था" (7:13)। यह एक ऐसी बात थी जिसे सब ने स्वीकार किया : किसी भी तरह से बहुत ऊँची आवाज़ में बोलना उचित नहीं था। धार्मिक अधिकारी, हालाँकि अभी तक अपने विरोध में संगठित नहीं हुए हैं, पर निश्चित रूप से किसी भी चर्चा को धीमा करना चाहते थे। सबसे अच्छी

बात यह थी कि इस रिसियाए युवा भविष्यद्वक्ता को अनदेखा कर दिया जाए। महासभा की अप्रसन्नता कोई ऐसी बात नहीं थी जिसके लिये साधारण लोग आँगन में जाने को उत्सुक थे।

उसके बारे में तर्क-वितर्क जल्द ही उस पर आश्चर्य में बदल गई (7:14-19), जो उसके अचानक आ जाने से उत्पन्न हुई (7:14-15)। झोपड़ियों का पर्व एक सप्ताह तक चला, जिसमें एक अतिरिक्त दिन, "पर्व का महान दिन," आठवाँ दिन जोड़ा गया। जब पर्व के आधे दिन बीत गए, तो यह बात नगर भर में फैल गई। भविष्यद्वक्ता आया, जो मन्दिर के आँगन में था और अधिकारियों की पूरी उपेक्षा के साथ, साहसपूर्वक उपदेश दे रहा था। लोग उसे सुनने के लिये उमड़ पड़े।

यूहन्ना हमें बताता है कि किस बात ने उन्हें सबसे अधिक प्रभावित किया। यहूदियों ने चकित होकर कहा, "इसे बिन पढ़े विद्या कैसे आ गई?" वहाँ वह एक घरेलू किसान की पोशाक में खड़ा था, उत्तरी देहात के लहजे में बोल रहा था, नासरत का एक गाँव का लड़का, कौशल और सहजता से सिखा रहा था। वह निश्चित रूप से किसी रब्बी स्कूल का सिखाया विद्यार्थी नहीं था। उसे यरूशलेम के किसी भी पढ़े–लिखे शिक्षक के अधीन एक छात्र के रूप में नामांकित नहीं किया गया था। वह कुछ भी कैसे जान सकता है? उसके पास कोई "शिक्षा" नहीं थी, किसी से सिखा नहीं था।

उस तरह का बौद्धिक दिखावा अभी भी हमारे साथ है। यह धार्मिक क्षेत्रों में फलता-फूलता है। अधिकांश बाइबल संस्थान, कॉलेज और विश्वविद्यालय किसी ऐसे व्यक्ति को संकाय में रखने का सपना नहीं देखेंगे जो शैक्षणिक प्रणाली का उत्पाद नहीं है। वह आत्मा द्वारा सिखाया हुआ, परमेश्वर द्वारा अभिषेक किया हुआ बाइबल शिक्षक हो सकता है, जिसके पास शास्त्रों का व्यापक ज्ञान है और जो उन्हें समझाने में कुशलता रखता है उसे सुननेवालों के लिये जो स्पष्ट है। हो सकता है कि उसने परमेश्वर की आशीष से अनेक पुस्तकें लिखी हों, जिनका हजारों लोगों ने बड़े पसन्द से, यहाँ तक कि उन स्कूलों में आवश्यक पाठ्य पुस्तकों के रूप में भी उपयोग किया हो। कोई बात नहीं। वह संकाय में रहने के योग्य नहीं है—उसके पास शिक्षित होने का कोई प्रमाण-पत्र नहीं है। मान्यता प्राप्त संस्थाएँ परमेश्वर द्वारा सिखाए गए किसी ऐसे व्यक्ति को मान्यता नहीं देंगी जो उनके मानदण्डों को पूरा नहीं करता है। यहाँ हम सांसारिकता को विशेष रूप से अपमानजनक आवरण में देखते हैं।

यीशु के समय के विद्वानों और मान्यता प्राप्त शिक्षकों ने अपने छात्रों पर अपनी छाप छोड़ी। उनकी अपनी-अपनी शैलियाँ, व्याख्यान के तरीके, स्वीकृत व्याख्याएँ थीं। और वहाँ मन्दिर में, एक ऐसा व्यक्ति था जो सहजता और अधिकार के साथ बोल रहा था, बड़े अधिकार और पवित्रशास्त्र में स्पष्ट निपुणता के साथ बोल रहा था, जो उनके स्कूलों में कभी नहीं गया था। उसके पास उपदेश देने के लिये कोई उपाधि या प्रमाणपत्र नहीं था। (जबकि लोग अपने आप बाइबल पर विशेषता प्राप्त नहीं कर सकते!) यह कहना सच होगा कि यीशु पवित्रशास्त्र को हिलेल या शम्माई या गमलीएल या उस समय के किसी भी प्रसिद्ध रब्बी से कहीं बेहतर जानता था।

हम उसकी आवश्यक विनती पर भी ध्यान देते हैं (7:16-18)। प्रभु ने उन्हें बताया कि वह किस तरह से उपदेश दे सकता है, जैसा कि वह देता था। वह परमेश्वर द्वारा सिखाया गया था। उसने कहा, "मेरा उपदेश मेरा नहीं, परन्तु मेरे भेजनेवाले का है" (7:16)। उसकी बुद्धि सब कुछ जानती थी परन्तु विशुद्ध मानवीय स्तर पर यह परमेश्वर के वचन से परिपूर्ण मन था। हम निश्चिन्त हो सकते हैं कि यीशु इब्रानी शास्त्रों को बिना किसी त्रुटि के पढ़ सकता था। वह जानता था कि रब्बी स्कूलों में किस प्रकार की व्याख्या सामान्य है। वह बचपन से ही आराधनालय में जाता था। परन्तु वह पवित्रशास्त्र के लेखक को जानता था। वह न केवल व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की

पुस्तकों को जानता था, बल्कि वह प्रत्येक पंक्ति की भावना और इरादे को भी जानता था। वह अपनी माता के गर्भ से ही पवित्र आत्मा से भर चुका था। पवित्र आत्मा से उसका अभिषेक किया गया था। उसकी शिक्षा उसकी अपनी नहीं थी; उसने इसे स्वर्ग से प्राप्त किया था। शास्त्रों को स्मरण करने में, पवित्र पाठ में ठोस व्याख्यात्मक सिद्धान्तों को लागू करने में, अपने धर्मविज्ञान को तैयार करने में, यह सब आत्मा के मार्गदर्शन में किया गया था।

वे उसके उपदेश को परख सकते थे : "यदि कोई उसकी इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा कि यह परमेश्वर की ओर से है या मैं अपनी ओर से कहता हूँ" (7:17)। हर किसी का उपदेश उस फल पर आधारित होता है जो इसे अपनाने वालों के जीवन में उत्पन्न होता है।

उदाहरण के लिये चार्ल्स डार्विन द्वारा प्रतिपादित, टी. एच. हक्सले द्वारा लोकप्रिय और आज लाखों लोगों द्वारा सत्य माने गए विकासवाद के सिद्धान्त को लें। आइए हम इसे इस परीक्षा में डालें। "यदि कोई उसकी इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा कि यह परमेश्वर की ओर से है।" जब इसे इसके निम्नतम सामान्य गुणक में घटा दिया जाता है, तो विकास का सिद्धान्त प्रतिकूल परिस्थितियों में जीवित बच निकलने की सराहना करता है। यह वह सिद्धान्त है कि पराक्रम सही है। निर्बलों, शक्तिहीनों, विकृतों से दूर रहें। जंगल की व्यवस्था को प्रभावी रहने दें। यह वह सिद्धान्त है जो हमारे समय के कई सामाजिक और राजनीतिक दर्शनों का आधार है। हिटलर ने इसे अपनाया था। यह नाज़ी दर्शनशास्त्र के केन्द्र में है। पूरे यूरोप में मानव परिवार (यहूदी, दास, अश्वेत, जिप्सी) के तिरस्कृत लोगों को मिटाने वाली उच्च जाति "ब्लिट्ज़—क्रेगिंग" का सिद्धान्त, विकासवाद के सिद्धान्त से प्रेरणा लेता है। हिटलर को मारे गए लोगों के शरीरों पर जैक जूते पहने हथियारबन्द और वर्दीधारी शानदार गोरे आर्यों को देखकर आनन्द आता था। पैंजर डिवीजनों, यू—बोट वुल्फ पैक्स, लूफ़्टवाफ़े के पीछे नाज़ीवाद का दर्शन था। गेस्टापो, एकाग्रता शिविरों और गैस कक्षों के साथ नाज़ीवाद के राजनीतिक दर्शन के पीछे विकास का सिद्धान्त था। मार्क्स और लेनिन और साम्यवाद के पीछे विकासवाद का सिद्धान्त है। मसीही नैतिकता पर हमले के साथ धर्मनिरपेक्ष मानवतावाद के पीछे विकासवाद का सिद्धान्त है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हमारे महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों द्वारा लोगों के दिमाग से वास्तविकता को हटाकर इस सिद्धान्त को कैसे बढ़ावा दिया जा सकता है, इस सिद्धान्त की इसके परिणामों को देखते हुए निन्दा की जाती है।

यीशु ने अपने सुननेवालों को चुनौती दी, "मेरे उपदेश को परखो।" और यह उन लोगों के लिये उत्तर है जो कहते हैं कि मसीहीयत विफल हो चुकी है। यहाँ या वहाँ कोई पुरुष, स्त्री, किशोर, लड़का, लड़की मसीह पर अपना सब कुछ दाँव पर लगाने का साहस करते हैं। तब क्या होता है? यह काम करता है। जब प्रभु का उपदेश परखा जाता है, तो वह शराबी को शान्त, व्यभिचारी को शुद्ध और कुटिल को सीधा बना देती है। यह समाज को शुद्ध करता है, व्यक्ति को छुड़ाता है, जीवन बदलता है, लोगों को ईश्वरीय और मसीह जैसा बनाता है। यह दावा पृथ्वी पर कोई अन्य दर्शनशास्त्र, सिद्धान्त या धर्म नहीं कर सकता।

यीशु ने आगे कहा, "जो अपनी ओर से कुछ कहता है, वह अपनी ही बड़ाई चाहता हैं।" यह भी, चार्ल्स डार्विन के मामले में चित्रित किया गया है, जिसके विकास का सिद्धान्त अल्फ्रेड रसेल वालेस के काम से काफी मेल खाता है। ऑन दि ओरिजिन ऑफ स्पीशीज़ को प्रकाशित करने से पहले डार्विन कई महीनों तक दुविधा में रहा था, उसे एक ओर वैज्ञानिक समुदाय द्वारा उपहास और दूसरी ओर मसीही समुदाय द्वारा अस्वीकृति का डर था। चिन्तित था कि उसके प्रतिद्वंद्वी पहले उनके अपने निष्कर्ष को प्रकाशित कर सकते हैं, अन्ततः डार्विन ने अपने शोध को संक्षिप्त

करने और अपनी पुस्तक को प्रकाशित करने के लिये पर्याप्त साहस जुटाया। तब तक, वह चिन्तित था कि कहीं विकासवादी सिद्धान्त का श्रेय स्वयं के बदले वालेस को न चला जाए।

इसके विपरीत, मसीह ने अपने उपदेश के विषय में कहा : "जो अपने भेजनेवाले की बड़ाई चाहता है वही सच्चा है, और उसमें अधर्म नहीं।" बार-बार यूहन्ना हमें स्मरण दिलाता है कि यीशु ने हमेशा सारा श्रेय अपने पिता को दिया जिसने उसे भेजा था।

प्रभु ने अपनी ओर से निराशाजनक मूल्यांकन किया (7:19-20)। उसने उन लोगों के चेहरों की ओर देखा जो उसके आसपास इकट्ठे थे। उसने उनके हृदयों को पढ़ा और भविष्य को देखा। उसने उन पर कितना भयानक दोष लगाया : "क्या मूसा ने तुम्हें व्यवस्था नहीं दी? तौभी तुम में से कोई व्यवस्था पर नहीं चलता। तुम क्यों मुझे मार डालना चाहते हो?" (7:19)। इस तरह के दोष को पढ़कर हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि कोई भी यहूदी ऐसा नहीं था जो मूसा का सम्मान न करता हो। उनमें से कई लोगों के लिये तो व्यवस्था ही एक आकर्षण बन गया था। वे स्वयं को इसका संरक्षक और व्याख्याकार मानते थे। यीशु ने बताया, उन्होंने इसकी चितौनियों को विस्तृत किया, वे नियमों की बारीकियों की भूलभुलैया में उलझ गए, इसका विस्तृत विवरण करने में लगे रहे—और इसे बनाए रखने में विफल रहे। इसका प्रमाण वास्तव में भयानक था। वे उसे मार डालना चाहते थे। वह इसे जानता था, और उसने उन्हें ऐसा ही बताया। उनकी युक्ति सफल होगी। वह यह भी जानता था।

क्रोध में उन्होंने इससे इनकार कर दिया। उन्होंने उस पर जो दोष लगाया वह कितना भयानक था : "तुझ में दुष्टात्मा है! कौन तुझे मार डालना चाहता है?" (7:20)। परमेश्वर के पुत्र से यह कहना भयभीत करनेवाली बात थी। वे उन दावों से आश्चर्यचकित थे जो वह अपने लिये कर रहा था। उसके अनुमान के अनुसार वह या तो मतिहीन था या दुष्टात्मा से ग्रसित था। उन्होंने उसे उसके आरोपियों के नाम बताने की चुनौती दी कि वे उसे मार डालना चाहते थे।

उसके साथ वाद-विवाद करना और उस पर आश्चर्य करना अब उस पर क्रोध का रूप ले लेता है (7:21-24)। फिर से यूहन्ना हमें यीशु के प्रति यहूदियों की शत्रुता के अन्तर्निहित कारण पर वापस लाता है : जब सब्त के दिन के सम्बन्ध में वह उनके नियमों और शर्तों के आगे झुकने से इनकार करता है।

प्रभु ने उन्हें एक बार फिर कुछ समय पहले बैतहसदा के कुण्ड में किए उस मनुष्य की चंगाई की याद दिलाई। स्पष्ट रूप में सब्त के दिन उसका वह आश्चर्यकर्म करना एक निरन्तर निराशाजनक बात थी, जो बाद में चलकर उनके बैर का आधार बनी। यीशु ने कहा, "मैं ने एक काम किया, और तुम सब आश्चर्य करते हो" (7:21)। यह केवल आश्चर्यकर्म नहीं था जिसने उन्हें आश्चर्यचकित कर दिया था, इस तथ्य से भी नहीं कि उसने सब्त के दिन इसे करके पूरे धार्मिक रीति को अपने अधीन कर लिया था। तथ्य यह था कि उसने जानबूझकर, बिना क्षमा माँगे, दूरदर्शिता और स्पष्ट इरादे से यह आश्चर्यकर्म सब्त के दिन किया था और उसने ऐसा करने के लिये ईश्वरीय अधिकार का दावा किया था। यहूदियों ने उसके लिये या उसके अन्य सब्त के आश्चर्यकर्मों के लिये उसे कभी क्षमा नहीं किया।

यीशु ने इसके बाद उनके सब्त के मिथकों से सम्बन्धित एक और मामला उठाया। उसने कहा, "...मूसा ने तुम्हें खतने की आज्ञा दी है।" अर्थात्, मूसा ने व्यवस्था के अधीन एक आवश्यकता के रूप में खतना को औपचारिक रूप दिया, हालाँकि इस रीति की जड़ें अब्राहम की वाचा में थीं। मूसा की वाचा अब्राहम की वाचा के बाद का परिशिष्ट था; यह मूल वाचा में अस्थाई रूप से जोड़ा गया था, जो वाचा के लोगों के पाप के कारण आवश्यक

बना दिया गया था, और इसे अब्राहम की वाचा (उत्पत्ति 17:10; लैव्यव्यवस्था 12:3; निर्गमन 12:44) में प्राथमिकता नहीं दी गई थी।

यहाँ फिर, यह मामला मसीह द्वारा उद्धृत किया गया था। आठवें दिन बच्चे का खतना किया जाता था। परन्तु क्या होगा यदि आठवाँ दिन सब्त का दिन हो? उस स्थिति में यह चौथी आज्ञा के विपरीत होगा, जो सब्त के दिन काम करने से मना करती है। फिर भी खतना के नियम को सब्त की व्यवस्था पर प्राथमिकता दी गई। तो, एक याजक जिसने सब्त के दिन इब्री बच्चे का खतना किया, उसने बिना पाप के उस काम को पूरा किया।

इसके अलावा, वह नियम जिसके लिये खतना की आवश्यकता थी, हालाँकि मूल अब्राहमिक वाचा का हिस्सा था, मुख्य रूप से धार्मिक शुद्धि से सम्बन्धित था। खतने की व्यवस्था का पालन किया जाता था, चाहे विश्रामदिन हो या नहीं। यदि धार्मिक प्रकृति अनुसार छोटा सा मांस काटने के लिये सब्त के नियम को निलम्बित किया जा सकता है, तो उसके लिये सब्त के दिन एक ऐसे मनुष्य को चंगा करना कितना उचित होगा जो अड़तीस वर्षों से पूरी तरह से लकवाग्रस्त था (7:22-23)।

यहूदी उस पर दण्ड ठहरा रहे थे क्योंकि उसने सब्त के दिन आश्चर्यकर्म किया था। हालाँकि, वे गलत थे और वह सही। सब्त के दिन के बारे में उनकी समझ में गलती नहीं थी, बल्कि उनकी गलती थी। "मुँह देखा [बाहरी रूप के अनुसार] न्याय न करो, परन्तु ठीक ठीक न्याय करो" (7:24)। यीशु इन संकीर्ण सोच वाले, कठोर हृदय वाले और जिद्दी इरादों वाले लोगों के प्रति कितने धीरज और संयमी था। उनके हृदयों में हत्या का विचार था और उसके भीतर दया थी।

अब उसके प्रति दुविधा उत्पन्न होती है (7:25-29)। यहूदी आपस में मतभेद रखते थे और उसके विषय में कोई निर्णय नहीं ले पाते थे। दो प्रश्न प्रमुख थे। पहला प्रश्न पहचान का था (7:25-27)। यरूशलेम के नागरिक चकित थे क्योंकि वे जानते थे कि अधिकारी इस व्यक्ति को मार डालना चाहते थे: "क्या यह वही नहीं जिसे मार डालने का प्रयत्न किया जा रहा है?" (7:25)। ये लोग अधिकारिक लोगों की बुरी योजनाओं से परिचित थे परन्तु अभी तक उनसे पूरी तरह सहमत नहीं थे। हालाँकि, उनके शब्द प्रभु के आरोप की विवेकहीन पुष्टि थी: "तुम मुझे मार डालना क्यों चाहते हो?" वे और अधिक आश्चर्यचकित हुए: "परन्तु देखो, वह तो खुल्लमखुल्ला बातें करता है और कोई उससे कुछ नहीं कहता। क्या सरदारों ने सच सच जान लिया है कि यही मसीह है?" (7:26)। क्या ऐसा हो सकता है कि महासभा ने अपना मन बदल लिया हो और अब निर्णय लिया हो कि यीशु नासरी ही इस्राएल का मसीह था? मन्दिर में उसके साहसिक उपदेश को और कैसे समझाया जा सकता है? वह महासभा के मुख्यालय के परिसर में, खुल्लमखुल्ला प्रचार कर रहा था। यह वैसा ही होगा जैसे मार्टिन लूथर वेटिकन स्क्वायर में भीड़ को उपदेश दे रहा था। अधिकारियों की निर्णय न ले पाने की स्थिति इस बिन इच्छा के उकसाने वाले से छुटकारा पाने की वांछनीयता के बारे में उनके मन में कोई सन्देह नहीं था, बल्कि विधि और अवसर की कमी थी। अन्तिम बात जो वे भड़काना चाहते थे वह थी भीड़ का आक्रमक विद्रोह।

परन्तु ये केवल इस्राएल के सरदार ही नहीं थे जो निर्णय लेने की दशा में नहीं थे। भीड़ के विषय में भी यही सच था। कुछ लोग वास्तव में कह रहे थे, "इसको तो हम जानते हैं कि यह कहाँ का है; परन्तु मसीह जब आएगा तो कोई न जानेगा कि वह कहाँ का है" (7:27)। रब्बियों ने सिखाया कि मसीह बैतलहम से आएगा और फिर छिप जाएगा, कोई नहीं जानता कि कहाँ, फिर अचानक प्रकट होगा। यशायाह ने लिखा था, "उस समय के लोगों में से किसने इस पर ध्यान दिया?" (यशायाह 53:8), जो मसीह के वंश से सम्बन्धित एक सम्भावित रहस्य की ओर

इशारा करता है। इन सब में गहरी विडम्बना है। यहूदियों को निश्चय था कि वे इस "यीशु नासरी" के विषय में सब कुछ जानते थे। वह सिर्फ एक ग्रामीण बढ़ई था जो दशकों से उस साधारण से उत्तरी नगर में रहता था। उसके मसीह होने की सम्भावना कैसे हो सकती है? उनके पास तथ्य भी सही नहीं थे। यीशु बैतलहम से था, वह उनकी नाक के नीचे छिपा हुआ था, मसीह के जन्म की सबसे कम सम्भावना वाली जगह (नासरत) पर, वह "अचानक अपने मन्दिर में आया," और, जहाँ तक उसके जन्म का प्रश्न है, हालाँकि मरियम उसकी माता थी, पर यूसुफ उसका पिता नहीं था। कोई नहीं जानता था कि वह वास्तव में कहाँ का था। उसने उनसे कई बार कहा था परन्तु उन्होंने उस पर विश्वास नहीं किया।

प्रभु ने शीघ्रता की कि वे इस बात को जानें। उसने तुरन्त देहधारण का प्रश्न उठाया (7:28-29)। इससे उनकी कठिनाइयाँ हल हो गईं: "तुम मुझे जानते हो, और यह भी जानते हो कि मैं कहाँ का हूँ। मैं तो आप से नहीं आया, परन्तु मेरा भेजने वाला सच्चा है, उसको तुम नहीं जानते। मैं उसे जानता हूँ क्योंकि मैं उसकी ओर से हूँ और उसी ने मुझे भेजा है।" वे कुछ तथ्यों को, कुछ अधिक स्पष्ट और बाहरी तथ्यों को जानते थे। परन्तु जो वे नहीं जानते थे, उससे जो वे जानते थे वह नष्ट हो गया। स्वर्ग में एक परमेश्वर था, जिसने उसे इस संसार में भेजा था, वह परमेश्वर जिसे वह जानता था, वह परमेश्वर जिसे वे नहीं जानते थे। निस्संदेह वे यीशु की ईश्वरीय उत्पत्ति से अनभिज्ञ थे। वह परमेश्वर की ओर से आया था और वे उस परमेश्वर को नहीं जानते थे। यीशु ने खुल्लमखुल्ला इसका प्रचार किया। यूहन्ना कहता है, "तब यीशु रोया।" शब्द से पता चलता है कि वह जोर से रोया। उसकी आवाज़ जोर जोर से आने लगी। वह चाहता था कि वे सब सुनें। इसके अलावा, वह "मन्दिर में" यहूदी राष्ट्रीय धार्मिक जीवन का हृदय और आत्मा था। यदि परमेश्वर को जानना था, तो उन्हें किसी मूर्तिपूजा के स्थल में नहीं, बल्कि यहीं यरूशलेम में, मन्दिर में होना था। मूल रूप से निवासस्थान में और फिर, बाद में मन्दिर में परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति प्रकट की थी। संरचना स्वयं और उससे जुड़े बलिदान और सेवाएँ सभी परमेश्वर को जानने के लिये तैयार की गई थीं। फिर भी, वहीं, पूरे संसार में एक जगह जहाँ परमेश्वर को जाना जा सकता था, यीशु ने लोगों को यह बताने के लिये अपनी आवाज़ उठाई कि वे उसे नहीं जानते क्योंकि वे परमेश्वर को नहीं जानते थे। और उन्होंने सोचा कि परमेश्वर पर उनका एकाधिकार है।

3. हाकिमों का विरोध (7:30-8:1)

जब मन्दिर प्रांगण में तर्क-वितर्क बढ़ रहा था तब महासभा निर्णय पर आ रही थी और प्रतिक्रिया दिखाने के लिये व्याकुल हो रही थी। यह खबर कि लोग अटकलें लगा रहे थे कि क्या उन्होंने यीशु के बारे में अपना मन बदल लिया है या नहीं, ऐसा लगता है कि उन्होंने सारी बातों को उलट दिया है।

पहले, हम आने वाले खतरे पर ध्यान देते हैं (7:30-36)। आरम्भ में, उसे बलपूर्वक पकड़ने का प्रयास किया गया (7:30-31)। यूहन्ना कहता है, "इस पर उन्होंने उसे पकड़ना चाहा, तौभी किसी ने उस पर हाथ न डाला क्योंकि उसका समय अब तक न आया था।" यह परमेश्वर की श्रेष्ठ इच्छा नहीं थी कि उसे इस समय पकड़वाया जाए। इससे पहले कि परमेश्वर उन्हें उनके मार्ग पर चलने की आज्ञा देता, आधा वर्ष बीतने वाला था। इस समय, बल्कि, "बहुत से लोगों ने उस पर विश्वास किया, और कहने लगे, "मसीह जब आएगा तो क्या इससे अधिक आश्चर्यकर्म दिखाएगा जो इसने दिखाए?" (7:31)। भीड़ में से आधे से अधिक लोग यह विश्वास करने लगे थे कि यीशु प्रतिज्ञा का मसीह था।

इस जानकारी ने महासभा के संकल्प को और कठोर कर दिया। उन्होंने उसे पकड़ने के लिये औपचारिक प्रयास (7:32-36) को भड़काया। फरीसी और मुख्य याजक इस कार्य में शामिल हो गए। मुख्य याजक सबसे धनी और प्रभावशाली याजक परिवारों के स्तर से चुने जाते थे, जिनके स्तर से महायाजक का चयन किया जाता था। वे सदूकियों की रीढ़ थे, जो महासभा की बहुसंख्यक, कुलीन घराने से थे। हनन्याह, उसका बेटा एलीयाजर, काइफा और इस पदानुक्रमित परिवार के अन्य लोग इस कुलीन जाति के प्रमुख सदस्य थे। सामान्य रूप में फरीसी सदूकियों के साथ मतभेद रखते थे। अब उन्हें लग रहा था कि उनका स्तर गिर गया है। दोनों पक्षों को इस अनचाहे मसीह से खतरा महसूस हुआ। जिसके कारण, जैसा कि यूहन्ना कहता है, “उन्होंने उसे पकड़ने को सिपाही भेजे” (7:32)।

ये अधिकारी मन्दिर पुलिस के सदस्य थे, जिन्हें मन्दिर के परिसर के भीतर कानून और व्यवस्था बनाए रखने का कार्य सौंपा गया था। वे लेवी थे। उनके कमान अधिकारी, जिसे “मन्दिर का कप्तान” कहा जाता था, के पास बहुत अधिकार थे, जो मुख्य याजक के बाद दूसरे स्थान पर था। इस कारण से उसे सामान्य रूप से प्रमुख मुख्य-याजक परिवारों में से चुना जाता था।

यूहन्ना हमें यह नहीं बताता कि अधिकारी ठीक किस समय पहुँचे। यीशु परेशान नहीं था। उसका समय परमेश्वर के हाथों में था। यह जानते हुए भी कि सिपाही मार्ग में हैं, वह उपदेश देता रहा। सम्भवतः वह जो कुछ कह रहा था उसे सुनने के लिये वे समय पर पहुँचे।

प्रभु ने पृथ्वी पर अपनी अवधि के बारे में बोलना जारी रखा (7:33)। उसने कहा, “मैं थोड़ी देर तक और तुम्हारे साथ हूँ,” “तब अपने भेजनेवाले के पास चला जाऊँगा।” प्रभु जानता था कि पृथ्वी पर उसका समय बहुत कम, केवल छः महीने रह गए थे। यह ज्ञान केवल उसके आत्मिक अन्तर्ज्ञान और सर्वज्ञता पर आधारित नहीं था। यह कुछ ऐसा था जिसे पवित्रशास्त्र का एक मेहनती छात्र दानिय्येल की सत्तर सप्ताह की भविष्यद्वाणी से अपने आप समझ सकता था (दानिय्येल 9:24-27)। मसीह को अर्तक्षत्र के शासन के बीसवें वर्ष (445 ई.पू.) में, उसके आदेश की तारीख से उनसठ “सप्ताह” (483 वर्ष) वर्षों की समाप्ति के बाद “उजाड़ पड़ा” था, जिससे नहेम्याह को यरूशलेम लौट आने और उसका निर्माण करने की अनुमति मिली (नहेम्याह 2:1-8)। गणना सरल नहीं है, परन्तु हम आश्वस्त हो सकते हैं कि यीशु ने इसका पता लगा लिया था। सही तारीख तो उसे मालूम थी। यरूशलेम में उसके विजयी प्रवेश के एक सप्ताह के भीतर उसे क्रूस पर चढ़ाया जाना था और वह तारीख दानिय्येल की भविष्यद्वाणी में पहले ही बता दी गई थी।

इसलिये, उसने लोगों से उसके पास बचे समय की कमी के बारे में बात की। उसने उनसे पृथ्वी से अपने प्रस्थान के बारे में भी बात की (7:34-36)। “तुम मुझे ढूँढ़ोगे, परन्तु नहीं पाओगे; और जहाँ मैं हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते” (7:34)। वह स्वर्ग में अपने पिता के पास वापस जानेवाला था। यदि उनके अविश्वास ने उनके लिये उसे ढूँढ़ना कठिन बना दिया था, जब वह शारीरिक रूप से पृथ्वी पर मौजूद था, तो उसके ऊपर लौट जाने के बाद उसे ढूँढ़ना उनके लिये असम्भव हो जाएगा।

निस्संदेह यहूदियों ने उसे गलत समझा (7:34-36)। वे उसकी बातों को आपस में बढ़ा-चढ़ाकर बताने लगे। कुछ लोगों ने तिरस्कारपूर्वक माना कि वह अन्य क्षेत्रों में यहूदी प्रवासियों के पास जाने के बारे में बात कर रहा था, दूसरों ने कहा कि वह अपने मिशन को अन्यजातियों तक ले जाने का प्रस्ताव कर रहा था! कोई नहीं जानता था कि

यह अनोखा भविष्यद्वक्ता आगे क्या करने वाला है। परन्तु अन्यजातियों के पास जाना इन यहूदियों के लिये अन्तिम उपाय था।

हमें स्मरण रखना चाहिए कि प्रभु का मृत्यु और पुनरुत्थान अभी भी भविष्य की घटनाएँ हैं। हम इन बातों को बाद की घटनाओं को ध्यान में रखकर पढ़ते हैं। हम जानते हैं कि वह कहाँ: घर, क्रूस के मार्ग, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण पर जा रहा था। हम पिन्तेकुस्त पर पवित्र आत्मा के उतर आने के बारे में जानते हैं। हमारे हाथ में पूरा नया नियम है। ये यहूदी अभी भी इस बात से अनभिज्ञ थे कि हमारे लिये सामान्य ज्ञान क्या है। हम निश्चित रूप से उनकी घबराहट के प्रति कुछ हद तक सहानुभूति रख सकते हैं। "यह क्या बात है जो उसने कही, कि 'तुम मुझे ढूँढ़ोगे, परन्तु न पाओगे; और जहाँ मैं हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते?" (7:36)। जहाँ तक यहूदियों का प्रश्न है, जहाँ वे उसे नहीं पा सकते थे, वहाँ जाने के बारे में ये सारी बातें, विशेषकर यदि इसका अर्थ अन्यजातियों के पास जाना हो, तो यह तर्कहीन थी। एक सच्चा मसीह सम्भवतः इस तरह की गैर-जिम्मेदाराना धारणाओं का मन नहीं बना सकता है। उन्होंने पूछा, "यह क्या बात है?" यह व्यर्थ बात थी—फिर भी एक अस्पष्ट भावना बनी रही कि शायद इसमें उनकी समझ से कहीं अधिक कुछ है। इसलिये, खतरा मण्डरा रहा था।

यूहन्ना अन्तिम दिन के बारे में बताता है (7:37-39), जो झोपड़ियों के वार्षिक पर्व का महान दिन है। पर्व का अन्तिम दिन एक विशेष दिन था। यह "पवित्र सभा हो...वह महासभा का दिन" था जिसे एक विशेष सब्त के दिन के रूप में माना जाता था (लैव्यव्यवस्था 23:36; गिनती 29:35)। इस पर्व में लोग कटनी के लिये परमेश्वर को धन्यवाद देते थे। पुराने नियम में दिए गए पर्व मनाने के निर्देशों में यहूदियों ने एक और रीति जोड़ा था, एक आकर्षक रीति, एक ऐसी रीति जो वर्षा भेजने के लिये परमेश्वर के प्रति अपनी कृतज्ञता को स्वीकार करता था जिसके बिना कोई कटनी नहीं हो सकती।

पर्व के पहले सात दिनों में प्रत्येक भोर को याजक और लोग आनन्ददायी जुलूस में शामिल होते थे और सोने के घड़े के साथ सीलोह के कुण्ड की ओर बढ़ते थे। वे घड़ा को भर लेते थे और मन्दिर को लौट आते थे। फिर जैसे ही मन्दिर के गाना बजानेवालों का दल बड़े हालेल में प्रवेश करता था, वे वेदी के पश्चिम की ओर पानी डालते थे (भजन 113-118)। कुछ लोग सोचते हैं कि यह रीति उस पानी का स्मरण दिलाने के लिये था जहाँ मूसा ने चट्टान पर मारकर पानी निकाला था (निर्गमन 17:1-7) और जो मसीह का प्रतीक था (1 कुरिन्थियों 10:4)। सम्भवतः यह वर्षा के परमेश्वर के वरदान (जकर्याह 14:16-19) का प्रतीक है, जिसमें पिछले वर्ष के वर्षा के लिये धन्यवाद का एक तत्व और आने वाले वर्ष में वर्षा के लिये याचना का एक तत्व शामिल है।

ऐसा प्रतीत होता है कि पर्व के आठवें दिन जल का यह दैनिक अर्घ छोड़ दिया जाता है। यह प्रभु के शब्दों को और अधिक स्पष्ट कर देगा, जब "पर्व के अन्तिम दिन, जो मुख्य दिन है, यीशु खड़ा हुआ और पुकार कर कहा, "यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पीए। जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्रशास्त्र में आया है, 'उसके हृदय [अन्तर्मन] में से जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी'" (7:37-38)। यह सन्दर्भ पवित्रशास्त्र के किसी एक पद का नहीं बल्कि कई पुराने नियम के परिच्छेदों के सामान्य विषय का है, जैसे यशायाह 12:3; 55:1; 58:11; यहेजकेल 47:1; योएल 3:18; जकर्याह 13:1; 14:8। जैसे पुराने नियम में इस्राएल ने चट्टान से बहने वाली उस जीवनदायी धारा को पीया था, वैसे ही मसीह उन लोगों को जीवन के जल की निरन्तर बहती, कभी न रुकने वाली, आत्मा को सन्तुष्ट करने वाली, प्यास बुझाने वाली आन्तरिक आपूर्ति प्रदान करता है जो उस पर विश्वास करते हैं।

जब मसीह ने उस स्त्री से कुएँ पर बात की, तो वह स्वयं जीवन के जल का सोता था, एक ऐसा सोता जो उसकी हर आवश्यकता को पूरा करेगा। अब, यरूशलेम की भीड़ से बात करते हुए, वह पवित्र आत्मा को जीवन के जल की नदी के रूप में संदर्भित करता है, वास्तव में, जीवन के जल की नदियों के रूप में, एक बहती हुई आपूर्ति जो दूसरों की आवश्यकताओं को पूरा करने में समर्थ है। यूहन्ना इसे स्पष्ट करता है: "उसने यह वचन पवित्र आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करनेवाले पाने पर थे; क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था, क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुँचा था" (7:39)।

जैसे मूसा ने चट्टान पर प्रहार किया, वैसे ही हमारे प्रभु पर भी प्रहार हुआ। वह अन्ततः ऊँचे स्थान पर अपने घर लौट गया और पृथ्वी पर उसका स्थान लेने के लिये पवित्र आत्मा को भेजा। चेले पवित्र आत्मा से भर गए। पिन्तेकुस्त के दिन नदियाँ बहने लगीं। कलीसिया का जन्म हुआ। हजारों लोगों ने उद्धार पाया। वह सदा बहने वाली नदी अभी भी बहती है। जो लोग मसीह के पास आते हैं उनमें पवित्र आत्मा का वास होता है, वह उन्हें अपनी आत्मा से बहुतायत से भरने और दूसरों पर अपना आशीष उण्डेलने में समर्थ है।

इन वर्षों में, कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका में मेरी सेवकाई के दौरान मुझे ओंटारियो प्रान्त में जाने के अनगिनत अवसर प्राप्त हुए। जब भी मुझे यात्रा पर जाने का अवसर मिलता है, मैं बुफेलो, न्यूयॉर्क और फिर नियाग्रा जलप्रपात तक गाड़ी चलाकर जाता हूँ। मैं अपने आप को नियाग्रा नदी को उसके कलकल करते पानी के साथ झरने के किनारे से होकर नीचे घाटी में गिरते हुए देखकर आश्चर्यचकित होने से रोक नहीं पाता। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं कितनी बार उसे देखने आता हूँ, पानी अभी भी वैसे ही एरी झील से नियाग्रा नदी में, झरनों के ऊपर से घाटी के नीचे और ओंटारियो झील में गिरता रहता है। और यह ऐसे कई हजारों वर्षों से गिरता आ रहा है।

झरने के कनाडाई हिस्से में एक जगह है जहाँ आनेवाले लोग लिफ्ट से जमीन के भीतर उतर सकते हैं और फिर चट्टान के द्वारा बने लम्बे गलियारों के साथ उस स्थान पर जा सकते हैं जहाँ झरने की कलकल और शोर से बातचीत करना कठिन हो जाता है, जहाँ से फुहारे उड़ती हैं यदि पर्यटकों की त्वचा तैलीय नहीं होती तो झरने का पानी एक पल में ही उन्हें भिगो देता और जहाँ बिना रुके हिमस्खलन में गिरते पानी को देखकर किसी की भी साँसें थम जाती है।

दिन-पर-दिन, वर्ष-पर-वर्ष, सदी-पर-सदी बीत जाती हैं फिर भी पानी बहता रहता है। यह शक्तिशाली टर्बाइनों को चलाता है जो कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका दोनों के शहरों को बिजली की आपूर्ति करते हैं। इसको न तो मापा जा सकता है और न ही इसका कोई अन्त है। पवित्र आत्मा के साथ भी ऐसा ही है। नियाग्रा के प्रवाह की तुलना में, यरूशलेम में वेदी पर बहाए गए सीलोह के पानी के कुछ घड़े क्या थे? यीशु और आत्मा की तुलना में यहूदी मत और उसके उत्सव क्या थे?

इन सबसे एक जीवन्त वाद-विवाद छिड़ गई (7:40-44)। तब और अब भी तीन प्रकार के सुननेवाले थे। ऐसे लोग थे जिन्होंने समाचार पर ध्यान दिया (7:40-41क) : "किसी किसी ने ये बातें सुन कर कहा, "सचमुच यही वह भविष्यद्वक्ता है।" दूसरों ने कहा, "यह मसीह है।" दोनों मामलों में "कहा" के लिये क्रिया का तात्पर्य सुझाव को बार-बार दोहराने की अभिव्यक्ति से है। जीवन के जल की इस प्रतिज्ञा में ऐसा क्या था जिसने इतने सारे लोगों की प्रतिक्रिया को प्रेरित किया? क्या इसकी तुलना पर्व के जल की रीति से की गई? क्या यह वह अधिकार था

जिसके साथ उद्धारकर्ता ने बात की थी? क्या यह आत्मा की किसी गहरी प्यास को समझना था जिसे उसके शब्दों ने आकर्षित किया? सुसमाचार के बारे में ऐसा क्या है जो मानव हृदय में प्रतिक्रिया को तीव्र करता है?

परन्तु सबने विश्वास नहीं किया। ऐसे लोग थे जिन्होंने अपनी तर्कशील भावना से समाचार में बाधा डाली (7:41ख-43)। उन्होंने कहा, "क्या मसीह गलील से आएगा? क्या पवित्रशास्त्र में यह नहीं आया कि मसीह दाऊद के वंश से और बैतलहम गाँव से आएगा, जहाँ दाऊद रहता था?" उनका अविश्वास उनकी अज्ञानता और अर्धसत्य पर आधारित था (जैसा कि अविश्वास बहुत अधिक हो)। जहाँ तक बात चली, वे अपनी युगान्तशास्त्र में सही थे, परन्तु अपने अन्तिम निष्कर्ष में गलत थे क्योंकि उनके पास सभी तथ्य नहीं थे और वे अपनी गलती मानने को तैयार नहीं थे, या सत्य का पता लगाने के लिये बहुत आलसी थे। अपने अविश्वास का समर्थन करने के लिये उन्होंने जिस पवित्रशास्त्र का उपयोग किया, ये पवित्रशास्त्र वे बातें थीं जिसने मसीह के उनके मसीह होने के दावे को पूरा करने में सहायता की। उसका जन्म बैतलहम में हुआ था और वह दाऊद की सन्तान था। लगभग सभी अविश्वास को मिथविद्वता के समान तरीकों से बल मिलता है।

परन्तु हमेशा अविश्वासियों का एक कट्टर समूह होता है, जो समाचार से बैर रखते हैं (7:44)। "उनमें से कुछ उसे पकड़ना चाहते थे, परन्तु किसी ने उस पर हाथ न डाला।" यह निश्चित है कि अब तक महासभा के सिपाही कहानी के हिस्सा थे। परन्तु न तो उन्होंने और न ही भीड़ में से उन लोगों ने, जो अब यरूशलेम के लोगों (7:30) और फरीसियों (7:32) के साथ मिलकर मसीह को ग्रहण किया था, ने उस पर हाथ डालने की हिम्मत की। वास्तव में, सिपाही या महासभा यीशु की बातों से प्रभावित हुए थे।

इसके बाद कानूनी बचाव की बात आती है (7:45-52)। महासभा को अब दो अलग-अलग प्रकार के गवाहों की गवाही प्राप्त हुई, गवाही के दोनों रूप उन लोगों के लिये समान रूप से अस्वीकृत थे जिन्होंने पहले ही अपना मन बना लिया था और अब सच्चाई का पता लगाने में कोई रुचि नहीं रखते थे। उन्हें पहले ही पता चल गया था कि यीशु मसीह के विषय में सच्चाई उनके लिये सहज नहीं है।

पहला बचाव सिपाहियों की गवाही थी (7:45-49), आधिकारिक, सशस्त्र महासभा सिपाहियों जो अब यीशु को पकड़वाने के अपने मिशन से खाली हाथ लौट आए थे। उनके अधिकारियों ने कहा, "तुम उसे क्यों नहीं लाए?" यह उनके लिये अविश्वसनीय लग रहा था कि सशस्त्र लोगों का एक समूह एक निहत्थे व्यक्ति को अपने ही क्षेत्र, मन्दिर के प्रांगण में नहीं पकड़ सकता था।

उन्हें जो उत्तर मिला वह चौंकाने वाला था। सिपाहियों ने उत्तर दिया, "किसी मनुष्य ने कभी ऐसी बातें नहीं कीं" (7:46)। वे यीशु के अनुग्रहित और परमेश्वर को ऊँचा उठानेवाली बातों से चकित थे, और उनकी प्रतिक्रिया लगभग एक कहावत बन गई। वे शब्द सदियों से प्रचलित हैं। मसीह के प्रति उनके सम्मान में एक उल्लेखनीय भाव है: "किसी मनुष्य ने कभी ऐसी बातें नहीं कीं।"

बात केवल यह नहीं थी कि यीशु एक महान वक्ता था। सिर्फ इतना ही नहीं था कि उसने सत्य को स्मरणीय रूप में व्यक्त किया। सिर्फ इतना ही नहीं था कि उसने अधिकार के साथ बात की। बल्कि यह कि उसने परमेश्वर के वचन कहे। चाहे वह पहाड़ी उपदेश हो या उसका कोई दृष्टान्त, प्रत्येक शब्द में आश्चर्यकर्म था; चाहे वह उन बातों को कह रहा था जो मरे हुओं को जिलाती है, चाहे अपने आलोचकों को उत्तर दे रहा हो, या अपने चेलों को निर्देश दे रहा हो, यह सच है कि कोई भी उस तरह की बातें नहीं करता था जैसा वह करता था।

चकराए हुए अधिकारियों ने उनकी नागरिक सेना का तिरस्कार किया। “क्या तुम भी भरमाए गए हो? क्या सरदारों या फरीसियों में से किसी ने भी उस पर विश्वास किया है?” फिर, साधारण लोगों का अपमान करते हुए, उन्होंने आगे कहा, “परन्तु ये लोग जो व्यवस्था नहीं जानते, शापित हैं” (7:47-49)।

साधारण लोगों को मौखिक व्यवस्था और प्राचीनों की परम्पराओं के दायरे और सूक्ष्मता के बारे में क्या पता था? कुछ नहीं। वे एक अज्ञानी भीड़ थे जो हर दिन रब्बी के नियमों को तोड़ते थे। ऐसे बिना पढ़े-लिखे लोग कल्पना कर सकते हैं कि क्या यीशु के दावों में कुछ वैधता थी। परन्तु आप ऐसे मूर्ख लोगों से क्या आशा कर सकते हैं? एक भी विद्वान और प्रतिष्ठित व्यक्ति का नाम बताइए जिसे इस तथाकथित मसीह ने भरमाया हो।

उनके तर्क को अधिकारी की गवाही से तुरन्त रद्द कर दिया गया (7:50-52; प्रेरितों 5:21 की तुलना करें), और अधिक प्रभावशाली लोगों में से एक, एक व्यक्ति जो फरीसी था, मसीह के साथ बैर रखने के इस आधिकारिक रवैये में अग्रणी था। इस महत्वपूर्ण क्षण में नीकुदेमुस बोला। यूहन्ना उसकी पहचान करता है: “नीकुदेमुस ने उन से (वह जो रात को यीशु के पास आया था, उन में से एक था, कहा) क्या हमारी व्यवस्था किसी व्यक्ति को, जब तक पहले उसकी सुनकर जान न ले कि वह क्या करता है, दोषी ठहराती है?” (7:50-51)।

उनके अपने ही खेमे का एक प्रवक्ता उनके लिये एक अवांछित और अप्रिय कांटा था। यीशु के बचाव में यह उदारवादी कथन देने के लिये भी नीकुदेमुस को बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी होगी। परन्तु प्रभु की यरूशलेम की पहली यात्रा के अवसर पर यीशु के साथ उस लम्बी बातचीत की व्यथा उसकी आत्मा में उतर गई थी। जिस व्यक्ति पर उसे भरोसा था कि वह मसीह है, उस पर कई क्रूर हमलों को सुनकर वह चुप बैठा था। वह अब इसे सहन नहीं कर सका। कम से कम उसे न्याय की माँग करनी चाहिए। उसने अपने साथी महासभाविदों को चुनौती दी। क्या वे सुनवाई से पहले निर्णय सुनाते हुए स्वयं व्यवस्था नहीं तोड़ रहे थे (निर्गमन 23:1; व्यवस्थाविवरण 1:16)?

परन्तु अन्य लोग व्यवस्था के बारे में व्याख्यान सुनने या नासरत के इस यीशु के पक्ष में उठाई गई किसी भी आवाज़ को सुनने की दशा में नहीं थे। उन्होंने नीकुदेमुस का तिरस्कार किया। “क्या तू भी गलील का है?” नीकुदेमुस जैसे कुलीन व्यक्ति का इससे बड़ा कोई अपमान नहीं हो सकता। उन्होंने कहा, “ढूँढ़ और देख कि गलील से कोई भविष्यद्वक्ता प्रकट नहीं होने का” (7:52)। वे गलत थे। एलिय्याह, सभी भविष्यद्वक्ताओं में सबसे महान, गिलियाद से आता था। योना गाथ-हेपेर से आता था, जो नासरत से कुछ ही दूरी पर था। रुचिपूर्ण बात यह है कि एक समय में यहूदियों ने सोचा था कि यीशु एलिय्याह था (मत्ती 16:14) और यह भी कि प्रभु ने अपनी तुलना योना से की थी (मत्ती 12:38-40)।

इस प्रकार इस अध्याय में यीशु मसीह के जीवन पर किए गए सभी प्रयास विफल हो गए। उसका समय अब तक नहीं आया था।

यह अध्याय एकाकी प्रस्थान के साथ समाप्त होता है (7:53-8:1)। इस बिन्दु पर जो अध्याय विभाजन होता है वह खेदजनक है। जैसा कि यहाँ है, अध्याय लिखता है: “तब सब कोई अपने अपने घर चले गए।” हमें अध्याय विभाजन को अनदेखा कर अगली पद की ओर बढ़ना चाहिए। फिर कथन में लिखा है: “सब कोई अपने अपने घर चले गए। यीशु जैतून के पहाड़ पर गया।” इस प्रकार, पवित्र आत्मा द्वारा यीशु को उनके साथ एक और विरोधाभास में स्थापित किया गया है। बाकी सभी लोग घर चले गए। याजक और फरीसी घर चले गए; नीकुदेमुस घर चला गया; मन्दिर का प्रधान घर चला गया; अधिकारी घर चले गए; यरूशलेम के लोग घर चले गए। घरों में

रौशनी की गई, आग जलाई गई, मेज पर रात का खाना रखा गया, लोगों ने अपने हाथ धोए, अधिक आरामदायक कपड़े पहने, अपने सोफों पर लेट गए, अपने बच्चों के साथ खेले, जम्हाई ली, अपने दीये बुझाए और सो गए। यीशु जैतून के पहाड़ पर गया। उसने एक बार कहा था, "लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं; परन्तु मनुष्य के पुत्र के लिये सिर धरने की भी जगह नहीं है" (मत्ती 8:20)। तुम्हारे लिये लज्जा की बात है, नीकुदेमुस। तुम उसे अपने साथ घर क्यों नहीं ले गए?

B. उसका मनुष्यों की दुष्टता को सामने लाना (8:2-9:41)

हम अभी भी प्रभु के जीवन के निहितार्थों पर विचार कर रहे हैं (7:1-10:42)। हमने परमेश्वर के वचन की उसकी व्याख्या की ओर देखा है (7:1-8:1)। अब हम मनुष्यों की दुष्टता के कामों को देखते हैं। हम उसे उन्हें दोषी ठहराते हुए (8:2-11), उनका विरोध करते हुए (8:12-59) और उन्हें भ्रमित करते हुए देखेंगे (9:1-41)। सबसे पहले हम प्रभु द्वारा उन्हें दोषी ठहराते हुए देखते हैं (8:2-11)।

1. उन्हें दोषी ठहराना (8:2-11)

यूहन्ना 8 से शुरू होने वाली कहानी पर आलोचकों द्वारा तर्क-वितर्क किया गया है। यह साबित करने के प्रयत्न में गैलन भर स्याही खर्च कर दी गई है कि इस कहानी को यूहन्ना ने नहीं लिखी है। बाइबल के ऐसे संस्करण सामने आए हैं जो इसे बड़े कोष्ठकों में रखते हैं, जैसे कि ये पद सन्देह उत्पन्न करनेवाले फुटनोट थे। टीकाएँ इसे अनदेखा करती हैं, इसके लिये क्षमा चाहती हैं, इसे पुस्तक के पीछे रख देती हैं। हमें इसे वहीं स्थिर रहने देना चाहिए जहाँ यह है और इसे परमेश्वर के प्रेरित वचन का हिस्सा मानना चाहिए। कहानी स्वयं इसकी पुष्टि करती है। यह सच है। जिन बातों में यह सुसमाचार कथाओं के साथ सामंजस्य बिठाते हैं। यह यूहन्ना की पिछली घटनाओं से तार्किक रूप से अनुसरण करता है।

जैसे ही हम इस कहानी को जानने की शुरुआत करते हैं, यीशु की विशेषता, जो इसके संदर्भ में इतनी उपयुक्त है, हम पहले समय पर ध्यान देते हैं (8:2क)। यह "सुबह का समय था।" यीशु के बारे में हमने अन्तिम बार पिछली रात को देखा था, जब वह रात के समय जैतून के पहाड़ पर गया था। शायद उसका ध्यान लाज़र और उसकी बहनों पर पड़ा। शायद उसने गतसमनी नामक एक स्थान में प्रार्थना करते हुए रात बिताई। शायद उसने तारों के नीचे रात बिताई, सोते हुए नगर को देखा, पिछले दिन की घटनाओं, भोज के अन्तिम दिन के बारे में सोचा, और अपने आप को उस कार्य के लिये तैयार किया जिसका उसे अब सामना करना था।

भोर को वह मन्दिर में वापस आ गया था। यदि अधिकारी सोचते थे कि वे उसे डरा सकते हैं, तो वे ग़लत थे। भोर को वह अपने पिता के घर में पाया गया। हालाँकि उसके पास रात बिताने के लिये कोई जगह नहीं थी, परन्तु दिन निकलते ही वह अपने पिता के घर में था।

हमारा ध्यान मन्दिर की ओर खींचा चला जाता है (8:2ख)। "वह फिर मन्दिर में आया।" यदि आप यीशु को उस समय ढूँढ़ना चाहते थे जब वह यरूशलेम में था, तो वह सबसे सम्भावित जगह थी। यहीं पर मरियम और यूसुफ ने उसे कई वर्ष पहले पाया था (लूका 2:42-46)। इसमें कोई सन्देह नहीं कि गलील और संसार के विभिन्न हिस्सों से कई भक्त घर जाने की तैयारी कर रहे थे (अब जब पर्व खत्म हो चुका था), जाने से पहले एक अन्तिम दर्शन के लिये वे मन्दिर में आते थे। कुछ लोग निश्चित रूप से इस उल्लेखनीय भविष्यद्वक्ता को एक बार और सुनने के लिये उत्सुक रहे होंगे। यूहन्ना कहता है, "सब लोग उसके पास आए।"

हमें उपदेश देनेवाले के विषय में बताया गया है (8:2ग) : “और वह बैठकर उन्हें उपदेश देने लगा।” आधिकारिक उपदेश देनेवाले हमेशा बैठकर उपदेश देते थे और उनके छात्र उनके आसपास इकट्ठा होते थे। उस दिन मन्दिर में यीशु के पास भीड़ थी। शायद मन्दिर के कुछ अधिकारी एक बार फिर इस अद्भुत उपदेशक को सुनने के लिये रुके। शायद वे उस रात अपनी पत्नियों और बच्चों को यह बात बताने के लिये जल्दी ही घर आ गए थे। शायद उनके परिवार उद्धारकर्ता के चारों ओर उमड़ी भीड़ के बीच रह गए थे।

परन्तु फिर जाल आया (8:3-6), यह एक असराहनीय और सूक्ष्म जाल था। शास्त्रियों का उल्लेख किया गया है (8:3क)। शास्त्री और फरीसी एक स्त्री को मन्दिर में खींचकर यीशु के पास लाए। आलोचक इस तथ्य को बहुत उछालते हैं कि इसमें शास्त्री भी शामिल थे। वे कहते हैं, “यूहन्ना ने कभी भी शास्त्रियों का उल्लेख नहीं किया।” परन्तु, वह यहाँ करता है। वह उनका एक से अधिक बार उल्लेख करने के लिये क्यों बाध्य हो गया? यहाँ उनका उल्लेख इस बात का प्रमाण क्यों होना चाहिए कि यह कहानी यूहन्ना ने नहीं लिखी? शास्त्री पवित्रशास्त्र के विद्वान थे। उनका आदेश, जो बेबीलोन की बन्धुआई के बाद प्रमुखता से उभरा था, ने व्यवस्था की नकल करने, सिखाने और समझाने का कार्यभार सम्भाला (एज्रा उनमें से सबसे प्रमुख में से एक था)। निर्वासन से पहले यह काम लेवियों द्वारा किया जाता था परन्तु धीरे-धीरे इस पर विशेष रूप से प्रशिक्षित सामान्य लोगों का एकाधिकार हो गया। उन्होंने न केवल लिखित व्यवस्था की नकल की, बल्कि वे प्राचीनों की परम्पराओं के संरक्षक थे, वे लगातार बढ़ते मौखिक व्यवस्था में शामिल नियमों और विनियमों को जोड़ा करते थे।

सहदर्शी सुसमाचारों के विवरणों में अक्सर शास्त्रियों का उल्लेख होता है। बहुत से फरीसी थे। यीशु मसीह द्वारा उनके पाखंड के लिये अक्सर उनकी निन्दा की जाती थी। उनका उल्लेख यहाँ यूहन्ना द्वारा फरीसियों के साथ किया गया है, इसमें कोई सन्देह नहीं है क्योंकि उनका सम्बन्ध उस स्थिति से है जिसे अब यीशु के सामने प्रस्तुत किया जाना है। समदर्शी सुसमाचारों के विवरणों में शास्त्रियों को मसीह के कट्टर बैरी के रूप में देखा जाता है।

शास्त्री और फरीसी पापिन स्त्री को यीशु के पास लाए (8:3ख)। वे “एक स्त्री को लाए जो व्यभिचार में पकड़ी गई थी, और उसको बीच में खड़ा कर..।” व्यभिचार व्यवस्था का गम्भीर उल्लंघन था। शायद दोषी स्त्री को पहले महासभा के सामने लाया गया था। चतुर शास्त्रियों और फरीसियों ने नए उपदेशक को परखने का एक अवसर देखकर तुरन्त इस मामले को उसके पास लाए। निर्दयी स्वभाव के साथ वे उस स्त्री को मन्दिर के प्रांगण के सार्वजनिक क्षेत्र में घसीटते ले गए, बैठे हुए उपदेशक के आसपास मौजूद भीड़ के बीच से धक्का दिया, और स्त्री को यीशु के सामने खड़ा कर दिया। इस प्रकार राष्ट्र के धार्मिक अगुवों की शत्रुतापूर्ण दृष्टि, भीड़ की जिज्ञासा भरी आँखों और नासरत के इस पवित्र उपदेशक, जिसे कई लोग मसीह मानते थे की आँखों के सामने सार्वजनिक रूप से उजागर होना अत्यधिक कष्टदायक रहा होगा।

भरपूर आनन्द लेते हुए उस पर दोष लगानेवालों ने कहानी सुनाई (8:4)। “उन्होंने उस से कहा, हे गुरु, यह स्त्री व्यभिचार करते पकड़ी गई है।” इस प्रकार का दोष पहले से ही पूर्वाग्रह से भरा, अत्यन्त अनुचित था, क्योंकि व्यभिचार करने के लिये दो लोगों की आवश्यकता होती है। रंगे हाथों पकड़े जाने का अर्थ था कि उसका साथी भी इस कृत्य में पकड़ा गया होगा, परन्तु उसे अकेले ही कचहरी में लाया गया। उसके साथी को पहचानना और पकड़ना काफी आसान होना चाहिए था। हालाँकि, ये दुष्ट लोग अन्याय में रुचि नहीं रखते थे, बल्कि केवल यीशु को परखने में रुचि रखते थे। जिस तरह से उन्होंने लाचार स्त्री के अपराध को रेखांकित किया (“उस कृत्य में”) यह बताता है कि वे कितने मोटी बुद्धि वाले थे।

परन्तु उन्होंने बात यहीं समाप्त नहीं किया था। वे पवित्रशास्त्र (8:5-6क) का उपयोग करके उसके विरुद्ध षड्यंत्र कर उसे फँसाना चाहते थे और, जो उनकी दृष्टि में कुल मिलाकर यीशु के विरुद्ध षड्यंत्र कर उसे फँसाना था। उन्होंने कहा, "व्यवस्था में मूसा ने हमें आज्ञा दी है कि ऐसी स्त्रियों पर पथराव करें। अत: तू इस स्त्री के विषय में क्या कहता है?" जिन व्यवस्थाओं का उन्होंने उल्लेख किया है वे व्यवस्थाविवरण 22:22 और लैव्यव्यवस्था 20:10 में पाए जाते हैं। मूसा की व्यवस्था के अन्तर्गत पथराव करना मृत्युदण्ड देने का सामान्य तरीका था। निस्संदेह परमेश्वर यौन क्रिया की पवित्रता, विवाह की पवित्रता और राष्ट्र की नैतिक शुद्धता की रक्षा के लिये बनाए गए मूसा की व्यवस्था के उन हिस्सों की गम्भीरता से भली-भाँति परिचित था।

अत: तू इस विषय में क्या कहता है?" यह उसको परखने के लिये था। "उन्होंने उसको परखने के लिये यह बात कही ताकि उस पर दोष लगाने के लिये कोई बात पाएँ" (8:6क)। कल ही वे अपने मन्दिर सिपाहियों द्वारा उसे पकड़ने में विफलता से निराश हो गए थे। अब परमेश्वर ने उनके हाथों में यह देखने का एक उचित उपाय दे दिया था कि यह व्यक्ति कैसे बोलेगा। वह मूसा की व्यवस्था को बदल नहीं सकता और स्त्री को स्वतंत्र नहीं कर सकता। (वह देहधारी सत्य है।) न ही वह व्यवस्था के पूर्ण दण्ड पर जोर दे सकता, और स्त्री को पत्थर न मारने का आदेश दे सकता था। (वह देहधारी अनुग्रह है।) यदि उसने उन्हें किसी गम्भीर अपराध में पकड़ी गई स्त्री को स्वतंत्र करने का आदेश दिया, तो वह लोगों का समर्थन खो देगा। यदि उसने उन्हें उसे मृत्युदण्ड देने का आदेश दिया, तो वह रोमियों का अधिकार मान लेगा और वे पिलातुस के सामने उसकी निन्दा कर सकते थे।

परन्तु, जैसा कि स्वयं यीशु ने एक बार कहा था, "यहाँ वह है जो सुलैमान से भी बड़ा है।" यदि उन्होंने सोचा हो कि वे इस तरह से देहधारी जो सर्वज्ञानी को फँसा सकते हैं, तो उनकी बन्द आँखें खुल जातीं।

हमारा ध्यान उद्धारकर्ता की ओर आकर्षित होता है (8:6ख)। प्रभु ने उन्हें कोई उत्तर नहीं दिया। दया करते हुए उसने उस लाचार स्त्री की ओर देखा भी नहीं। न ही उसने उस पर दोष लगानेवालों की ओर दोबारा दृष्टि डाली, हालाँकि वह उनके मन की बातों को पढ़ सकता था। बल्कि, "यीशु झुककर उँगली से भूमि पर लिखने लगा।" यह एकमात्र बार है जब हमने यीशु के लिखने के बारे में पढ़ा है और हम नहीं जानते कि उसने क्या लिखा। हालाँकि, हम निश्चिन्त हो सकते हैं कि दोषी और दोष लगानेवाले समान रूप से यह देखने के लिये उत्सुक थे कि उसने क्या लिखा।

अब सत्य की बात आती है (8:7-9)। यूहन्ना कहता है, "वे उससे पूछते ही रहे।" वे अपनी धार्मिकता दिखाते रहे। तथ्य यह है कि वह भूमि पर लिखने के लिये झुका था, जिससे उन्हें यह विश्वास हो गया था कि शायद वह उनकी आँखों में नहीं देख सकता था। अन्त में यह नवोदित उपदेशक उनके साथ था।

भूमि पर लिखने के बाद, वह सीधा हुआ और बड़े से लेकर सबसे छोटे तक सब की आँखों में देखा। उसने कहा, "तुम में जो निष्पाप हो, वही पहले उसको पत्थर मारे।" उसके उत्तर से न तो व्यवस्था का स्तर गिरा और न ही उसने अपने असीम प्रेम को सही और गलत की समझ से दूर जाने दिया। बल्कि उसने व्यवस्था को इस तरह बनाए रखा कि जिम्मेदारी वापस उन्हीं पर डाल दी। वह "जानता था कि मनुष्य के मन में क्या है" (2:25)। वह जानता था कि ईश्वरीय पवित्रता और सर्वज्ञता की उपस्थिति में उनमें से कोई भी पाप रहित होने का दावा करने का साहस नहीं करेगा।

यीशु ने जिस शब्द अनामार्टेटोस का प्रयोग किया, जो केवल यहीं नए नियम में आता है। मूल शब्द हारमार्टिआ है, जिसका सम्बन्ध निशाना चूकने में असफल रहने से है। इसका सम्बन्ध ऐसी विफलता के परिणामस्वरूप होने

वाली व्यवस्था के उल्लंघन से है। नए नियम में इसका उपयोग हमेशा किसी पाप के लिये नैतिक अर्थ में किया जाता है, चाहे वह भूल-चूक से हो, विचार से हो, शब्द से हो या कर्म से हो।

शब्द "पत्थर मारना" का अनुवाद "पथराव करना" किया जा सकता है और यह मृत्युदण्ड के लिये उपयोग किए जाने वाले भारी पत्थर को संदर्भित करता है। व्यवस्था के अधीन यह पत्थर साक्षियों द्वारा फेका जाता था। इस घटना में ऐसी कोई जगह नहीं है जहाँ वास्तविक गवाहों को पेश किया गया, इसलिये इन लोगों को साक्षी के रूप में कार्य करना था। व्यवस्था में आगे यह आवश्यक है कि साक्षी स्वयं उस अपराध से मुक्त हों, ऐसा न हो कि दण्डित व्यक्ति को पत्थर मारने से वे स्वयं उसी तरह की मृत्यु के लिये उत्तरदायी हो जाएँ (व्यवस्थाविवरण 17:7)।

इस प्रकार परमेश्वर ने उनके अवचेतन मन को खोल दिया और साथ ही उस स्त्री को आशा की किरण दी जो इस दुःखद दृश्य का केन्द्र थी। वह फिर झुककर भूमि पर उँगली से लिखने लगा।

वे निश्चय के साथ उसी पाँव लौट गए। "वे यह सुनकर बड़ों से लेकर छोटों तक, एक एक करके निकल गए।"

हमें फिर आश्चर्य होता है कि यीशु ने भूमि पर क्या लिखा। इस बीच, सबसे बूढ़ा मनुष्य सबसे पहले निकल गया। उसके पास ध्यान करने लायक पापों की सबसे लम्बी सूची थी। "और यीशु अकेला रह गया, और स्त्री वहीं बीच में खड़ी रह गई" (8:9)। सब को आत्मग्लानि का बोध होने लगा। यहाँ तक कि प्रांगण में उपस्थित लोग भी घटनास्थल से चले गए। अब केवल यीशु और वह स्त्री वहाँ रह गए।

अन्त में, हमारे पास शर्तें हैं (8:10-11)। स्पष्टतः प्रभु इस स्त्री के पाप की गम्भीरता को कम करने के लिये स्वतंत्र नहीं था। पहले उसने उसका सामना किया (8:10) : "यीशु ने सीधे होकर उससे कहा, "हे नारी, वे कहाँ गए? क्या किसी ने तुझ पर दण्ड की आज्ञा न दी?" भीड़ तो जा चुकी थी परन्तु दण्ड का मिलना बाकी था। उस पर दोष लगानेवाले, आत्मग्लानि में डूबकर चले गए। परन्तु सच्चा न्याय करनेवाला अभी भी अपनी पूरी पवित्रता के साथ वहीं था। पहला पत्थर मारने का अधिकार केवल उसी को था। तो प्रभु ने स्त्री की ओर देखा और स्त्री ने प्रभु की ओर देखा। चारों ओर सुनसान मन्दिर का सन्नाटा था।

इस कहानी का आविष्कार कोई भी नहीं कर सकता था। यीशु के अलावा कोई भी मन्दिर के प्रांगण को इस तरह खाली नहीं कर सकता था।

फिर उसने उसे क्षमा कर दिया (8:11)। उसने उसके सामने नया प्रभु स्थापित किया (8:11क)। उसने पूछा, "क्या किसी ने तुझ पर दण्ड की आज्ञा न दी?" "उसने कहा, "हे प्रभु, किसी ने नहीं।" सरल कथन में उसने यीशु को अपने जीवन का उद्धारकर्ता और प्रभु मान लिया। वर्षों बाद पौलुस ने इसे इस प्रकार कहा: "यदि तू अपने मुँह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे...तो तू निश्चय उद्धार पाएगा" (रोमियों 10:9)। "प्रभु।" उसने उसे अपने हृदय के सिंहासन पर बिठाया। उसने स्वयं को उसके अधिकार में रखा। व्यवस्था केवल उसे मौत की सज़ा दे सकता है। जब आशा मर गई थी तब इस व्यक्ति ने उसे आशा प्रदान की। वह जगत में जगत का न्याय करने के लिये नहीं आया, परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए (12:47)। वह उसके पाप को बने रहने नहीं देगा; वह उसके पाप के लिये अपना प्राण देगा।

उसने उसके सामने एक नया जीवन स्थापित किया (8:11ख, ग)। उस ने कहा, "मैं भी तुझ पर दण्ड की आज्ञा नहीं देता; जा, और फिर पाप न करना। उसने पाप को क्षमा नहीं किया; उसने पाप पर जय पाई। एक नए परमेश्वर और एक नए जीवन के साथ, वह अपने मार्ग पर चली गई।

प्रभु की आज्ञाएँ सदैव उसके लिये सहायक होती हैं। वह जो कहता है उसे करने की शक्ति देता है। उसने वह अनुभव किया जिसे हेनरी ड्रमण्ड ने एक बार "नए स्नेह को बाहर निकलने की शक्ति" कहा था। जो काम व्यवस्था नहीं कर सका, उसे प्रभु ने अपनी समझदारी से कुछ शब्दों से पूरा कर दिया। उस दिन बाकी सभी लोग अपने आप को दोषी मानते हुए मन्दिर के प्रांगण से बाहर चले गए; स्त्री भी मन ही मन प्रसन्न होकर वहाँ से चली गई।

2. उनका विरोध करना (8:12-59)

यूहन्ना अब यहूदियों के साथ प्रभु के बढ़ते विवाद पर अपनी चर्चा जारी रखता है। इस खण्ड में हम उसे उनका विरोध करते हुए देखते हैं। हम खण्ड को चार भागों में विभाजित कर सकते हैं: यीशु और उसकी गवाही (8:12-19), उसका जगत (8:20-24), उसका वचन (8:25-45), और उसका चाल-चलन (8:46-59)। इन भागों में से पहला भाग यीशु को हमारे सामने जगत की ज्योति के रूप में बताता है (8:12) : "यीशु ने फिर लोगों से कहा, "जगत की ज्योति मैं हूँ; जो मेरे पीछे हो लेगा वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।" यीशु के बारे में जो दूसरी महान मैं हूँ कथन है वह स्पष्ट रूप से बाद के अवसर पर दी गई थी, शायद जब लोग मन्दिर के प्रांगण में इकट्ठे होने लगे थे। अभी तक हाकिम अपनी दुष्टता से पूरी तरह अनभिज्ञ थे, और सामान्य लोगों का वर्ग और समुदाय स्थिर नहीं था। स्त्रियों के प्रांगण में, जहाँ यीशु बोल रहा था, एक विशाल स्वर्ण दीपदान रखी हुई थी, जिसके दीपक तम्बू के पर्व की रात और शायद ओमर की रात को जलाए जाते थे। यह शेकीना महिमा के तेज़ का प्रतीक है जिसने इस्राएल को उसकी जंगल यात्राओं में मार्गदर्शन किया था और जो सुलैमान के मन्दिर में सदियों तक चमकता रहा। यह बेबीलोन के आक्रमण से पहले नगर से चुरा लिया गया था और दूसरे मन्दिर में कभी जलाया नहीं गया। राजा रहूबियाम द्वारा बनवाई गई पीतल की ढालों की तरह, सोने की ढालों जो पहले मन्दिर की शोभा बढ़ाती थीं और जिन्हें मिस्री उठा ले गए के स्थान पर यहूदियों ने नकली शेकीना के साथ सुन्दरता को बनाए रखने का प्रयास किया (1 राजाओं 14:25-28)।

इसी पृष्ठभूमि में प्रभु यीशु ने स्वयं को जगत की ज्योति कहा था। पहले मन्दिर में चमकने वाली महिमा और ज्योति से कहीं अधिक महान ज्योति यहाँ आई थी। परन्तु इसे यहूदिया और यरूशलेम से लौटा दिया गया जब यहूदियों ने मसीह को ग्रहण करने से पूरी तरह से इनकार कर दिया (मत्ती 23:38)। अब यह कलीसिया में भव्यता से—कम से कम इस युग के लिये चमक रही है। एक दिन इसे इस्राएल में पुनः स्थापित किया जाएगा (हाग्गै 2:6-7)।

ज्योति परमेश्वर का एक चरित्र है (1 यूहन्ना 1:5)। यह पहली चीज थी जिसे परमेश्वर ने बनाया था (उत्पत्ति 1:3-4)। यीशु ने कहा, "जो मेरे पीछे हो लेगा वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।" जो लोग फरीसियों, याजकों, और शास्त्रियों के पीछे चलते थे वे अन्धकार में चलते थे। जो लोग कन्फ्यूशियस या बुद्ध या कृष्ण या मुहम्मद के पीछे चलते हैं वे अन्धकार में चलते हैं। उनके मार्ग का अन्त मृत्यु का अन्धकार है। जो व्यक्ति यीशु के पीछे चलता है वह ज्योति में चलता है, और उस मार्ग का अन्त जीवन की ज्योति है।

इसके बाद हम यीशु और संसार का झूठ देखते हैं (8:13-19)। प्रभु के कथन को उनके शत्रुओं ने तुरन्त चुनौती दी। उन्होंने उसके दावे को झूठ बताया। "फरीसियों ने उससे कहा, "तू अपनी गवाही आप देता है, तेरी गवाही ठीक नहीं" (8:13)। एक घरेलू कहावत कहती है, "जो देखकर भी नहीं देखता उनसे बड़ा अंधा कोई नहीं हो सकता।"

परमेश्वर ने चीजों की वास्तविक प्रकृति के बारे में एक महान तथ्य पर जोर दिया था। पृथ्वी के लिये सूर्य (भौतिक ज्योति का स्रोत) जो था, वही वह जगत (आत्मिक ज्योति का स्रोत) के लिये था। यह उस व्यक्ति द्वारा तथ्य का कथन था जो चीजों की अन्तिम प्रकृति को जानता था, उस व्यक्ति द्वारा जो झूठ नहीं बोल सकता था। ज्योति की वास्तविकता की पुष्टि इस तथ्य से होती है कि वह चमकती है। इसके लिये किसी अन्य गवाह की आवश्यकता नहीं है। यदि कोई व्यक्ति इस बात से इनकार करता है कि वह चमकती है, तो इससे अधिक कुछ नहीं कहा जा सकता। यीशु ने एक स्व-स्पष्ट सत्य की घोषणा की। उसके स्वभाव, व्यवहार और बातचीत से इस बात की पुष्टि होती थी कि वह जगत की ज्योति था। परन्तु उन्होंने उसे झूठा कहा। अब कहने को कुछ नहीं रह गया। ज्योति चमक उठी; पर उन्होंने कहा कि यह नहीं चमकी।

फिर भी अत्यन्त धीरज के साथ उसने उन्हें समझाने का प्रयास किया। उसने दो पंक्तियों में प्रमाण प्रस्तुत किया। पहले हम, प्रभु की गवाही (8:14-16) पर ध्यान देते हैं। उसने कहा, “भले ही मैं अपनी गवाही आप देता हूँ, फिर भी मेरी गवाही ठीक है।” उसके लिये झूठ बोलना असम्भव था। उसका स्वभाव ही एकमात्र ऐसा प्रमाण था जिसकी उन्हें आवश्यकता थी। “क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ को जाता हूँ? परन्तु तुम नहीं जानते कि मैं कहाँ से आता हूँ या कहाँ को जाता हूँ” (8:14)। प्रभु अपने अस्तित्व के बारे में अपने ज्ञान की तुलना अपने अस्तित्व के बारे में उनकी अज्ञानता से कर रहा था। वह जानता था कि वह किस बारे में बात कर रहा है। वह जानता था कि वह कहाँ से आया है और कहाँ जा रहा है। वह अनन्त काल से निकलकर समय में आ गया था; जल्द ही वह अनन्त काल में वापस चला जाएगा। उसे अपने अनन्त अस्तित्व का पूर्ण ज्ञान था। परमेश्वर के विषय में कुछ सत्य हैं जिनकी पुष्टि केवल परमेश्वर ही कर सकता है। वे उसकी वास्तविक उत्पत्ति और नियति दोनों से अनभिज्ञ थे।

उसने आगे कहा, “तुम शरीर के अनुसार न्याय करते हो।” “मैं किसी का न्याय नहीं करता। और यदि मैं न्याय करूँ भी, तो मेरा न्याय सच्चा है; क्योंकि मैं अकेला नहीं, परन्तु मैं हूँ, और पिता है जिसने मुझे भेजा” (8:15-16)। उनका शरीर पर मन लगाने के कारण उनके लिये उसके बारे में कोई मान्य राय बनाना असम्भव था। जैसा कि उसने एक बार नीकुदेमुस से कहा था, “जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है” (3:6)। उन्होंने ऊपरी रूप में, केवल उन्हीं मानदण्डों: बाहरी दिखावे के अनुसार निर्णय लिया जिन्हें वे समझ सकते थे। किसी फिर से जन्म न पाए मनुष्य से यीशु मसीह के स्वभाव, व्यक्ति और व्यक्तित्व को परिभाषित करने के लिये कहना उतनी ही नासमझी होगी जितना कि एक चींटी से किसी मनुष्य के स्वभाव, व्यक्ति और व्यक्तित्व को परिभाषित करने के लिये कहना।

वह अपनी आत्मा की तुलना उनकी आत्मा से करता है। तथ्यों से अनभिज्ञ वे उसका न्याय कर रहे थे। जबकि उसके पास सभी तथ्य थे परन्तु वह उनका न्याय नहीं कर रहा था। वह अपने ज्ञान और समझ में पूर्ण था, गलती करने की किसी भी सम्भावना से परे था क्योंकि उसका मन, हृदय और आत्मा का अपने भेजने वाले के साथ पूर्ण सामंजस्य था। फिर भी, उसने न्याय नहीं किया क्योंकि वह बचाने आया था, दण्ड देने नहीं। अपने बैरियों के प्रति उसके रवैये में प्रेम, व्यवस्था नहीं प्रेरक कारक था। यही प्रभु की गवाही थी।

हालाँकि, उसने व्यवस्था की गवाही को अनदेखा नहीं किया (8:17-19)। मानवीय विफलताओं के कारण, व्यवस्था को पर्याप्त गवाही जुटाने के लिये दो गवाहों की आवश्यकता थी (व्यवस्थाविवरण 19:15)। “तुम्हारी व्यवस्था में भी लिखा है कि दो जनों की गवाही मिलकर ठीक होती है; एक तो मैं आप अपनी गवाही देता हूँ, और दूसरा पिता मेरी गवाही देता है जिसने मुझे भेजा।” एक भी गवाह ने घटना को पूरी तरह से नहीं देखा होगा; ईर्ष्या,

द्वेष, डाह, बैर, बदला या पूर्वाग्रह उसके न्याय को प्रभावित कर सकता है; वह कोई विश्वासयोग्य गलती कर सकता है। दो स्वतंत्र गवाहों द्वारा झूठी गवाही देने की सम्भावना उतनी नहीं होगी। महासभा के समक्ष प्रभु के मामले में एक के बाद एक पूछताछ में, अधिकारियों को कई झूठे गवाहों की गवाही की जाँच करनी पड़ी, इससे पहले कि उन्हें दो ऐसे गवाह न मिले जिनकी कहानियाँ उस मामले में एक जैसी थी वे इसकी जाँच करते रहे (मत्ती 26:59-61)।

यदि दो मनुष्यों की गवाही ने एक निष्पक्ष गवाही प्रस्तुत की है, तो परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र की गवाही ने सन्देह से परे गवाही दी है। यही प्रभु का मुख्य बिन्दु था।

यहूदियों ने प्रभु के इस दावे का तुरन्त इनकार कर दिया कि उसके पिता दूसरे गवाह थे। उनके लिये यह ग्रहण योग्य नहीं था; उन्होंने कहा, "तेरा पिता कहाँ है?" यीशु ने उत्तर दिया, "न तुम मुझे जानते हो, न मेरे पिता को, यदि मुझे जानते तो मेरे पिता को भी जानते।" (8:19)। यह काफी स्पष्ट है। सिर्फ इसलिये कि मैं किसी व्यक्ति को नहीं जानता, इसका कोई प्रमाण नहीं है कि वह अस्तित्व में नहीं है। यदि यहूदी यीशु को जानते होते तो वे उसके पिता को भी जानते, क्योंकि वह सदैव उससे और उसके विषय में बात करता था।

प्रभु ने विषय बदल दिया। उसने अपने संसार के विषय में बात करना शुरू किया (8:20-24), जिस संसार से वह आया था, उस संसार में उसका पिता रहता था। उसके पिता उनके लिये एक पहेली के समान था परन्तु उसके लिये वास्तविक था। हमें पवित्र आत्मा ने बताया कि जब यह बातचीत हुई थी तब यीशु कहाँ था। उसने "ये बातें मन्दिर में उपदेश देते हुए भण्डार घर में कहीं।" भण्डार घर मन्दिर का सबसे सुलभ एवं सार्वजनिक भाग था। यह वास्तव में गज़िथ हॉल के बहुत करीब था, जहाँ महासभा के सत्र आयोजित किए जाते थे।

वे उसके संसार के द्वार पर खड़े थे (8:20क, ख)। यदि कोई ऐसा स्थान था जहाँ स्वर्ग पृथ्वी पर उतर आया था, तो वह यरूशलेम का मन्दिर था। वहाँ बलिदान और भेंट चढ़ाए जाते हैं। वहाँ याजक वेदी पर सेवा करते थे और दीपकों को साफ करने, सोने की वेदी पर धूप चढ़ाने और मेज पर रखी रोटी खाने के लिये पवित्र स्थान में जाने से पहले हौदी में अपने आप को शुद्ध किया करते थे। वहाँ परदा लगा होता था, जो एक निरन्तर अनुस्मारक था कि उसके आगे पवित्र सन्दूक, प्रायश्चित का ढकना, पंखों वाले करूबों के साथ सबसे पवित्र स्थान था। वहाँ, पूर्व समय में, परमेश्वर शेकीना, महिमा के तेज़ में विराजमान था। यदि पृथ्वी पर कभी सच्चे और जीवित परमेश्वर से जुड़ा कोई स्थान था तो वह मोरिय्याह पहाड़ पर स्थित मन्दिर था। यीशु ने इसे "मेरे पिता का घर" कहा। यदि यहूदी उस मन्दिर की सारी सच्चाई में प्रवेश कर गए होते तो उन्होंने यीशु का स्वागत किया होता।

वह स्त्रियों के प्रांगण में था। मसीह में, परमेश्वर अति पवित्र स्थान से आता था, कहने का तात्पर्य है कि, एक ऐसे स्थान पर लोगों से मिलने के लिये आता था जहाँ स्त्रियाँ भी आ सकती थीं। जैसा कि याकूब ने बेतेल के विषय में कहा, "यह तो परमेश्वर के भवन को छोड़ और कुछ नहीं हो सकता; वरन् यह स्वर्ग का फाटक ही होगा" (उत्पत्ति 28:17), तो निश्चित रूप से यह उन दिनों के मन्दिर के विषय में कहा जा सकता था जब इसके आँगनों में यीशु ने उसका स्थान लिया था। यहूदियों ने इसे देखने के लिये अपनी आँखें बन्द कर ली थी। जब यीशु वहाँ था, तो वे उसके संसार के द्वार पर खड़े थे।

हम उसके संसार की सुरक्षा पर भी ध्यान देते हैं (8:20ग)। "किसी ने उसे न पकड़ा, क्योंकि उसका समय अब तक नहीं आया था।" उसने बैरी के गढ़ के साथ अपना मोर्चा सम्भाल लिया था। बड़े पैमाने पर संसार उस स्थान के रणनीतिक महत्व को नहीं जानता होगा जहाँ परमेश्वर अपना नाम रखता है और जहाँ वह अपनों से मिलने के लिये

समय निर्धारित करता है। वास्तव में, उसके अपने लोग इसके महत्व को कम कर सकते हैं और प्रार्थना के स्थान की उपेक्षा कर सकते हैं। परन्तु शत्रु इसके महत्व को जानता है। जब भी सम्भव हो वह उस स्थान पर कब्जा कर लेता है। यीशु के दिनों में महासभा (उन लोगों से बनी थी जो अधिकांशतः सांसारिक, शारीरिक, धार्मिक थे, परन्तु खोए हुए—शैतान के उपकरण थे) पवित्रस्थान में स्थापित थी। यीशु ने उस पर नियन्त्रण कर लिया जिसे वे अपना क्षेत्र मानते थे। वह "मन्दिर में" उपदेश देता रहा। उसने उस भूमि पर नियन्त्रण कर लिया जो उसके पिता की थी जिसे शत्रु ने मज़बूती से पकड़ कर रखा था।

कोई बात नहीं, वे उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते थे। वे उसे मार डालने की योजना बनाने के लिये गुप्त बैठकें कर सकते थे। वे क्रोध से अपने दाँत पीस सकते थे और उसे पकड़ने के लिये अपनी सेना भेज सकते थे, परन्तु कोई सफल नहीं हुए। स्वर्गदूतों की बारह सेनाएँ उसके अंगरक्षक थे। धरती या नरक की कोई भी शक्ति उसे छू नहीं सकती थी। उसका समय अब तक नहीं आया था।

फिर, हम उसके संसार के मार्ग पर भी ध्यान देते हैं (8:21-22)। प्रभु पहले इसकी ईश्वरीय दिशा का उल्लेख करता है (8:21क) : "मैं जाता हूँ।" निस्संदेह, इस मामले में वह अद्वितीय था। अन्य सभी मनुष्यों के बारे में, भविष्यद्वक्ता ने यह कहा: "हम तो सब के सब भेड़ों के समान भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया..." (यशायाह 53:6), एक तरह से भविष्यद्वक्ता तुरन्त "अधर्म" का मुहर लगाता है। परन्तु, यीशु ऐसा नहीं है। उसका मार्ग परमेश्वर का मार्ग था। वह कहता है, "मैं सर्वदा वही काम करता हूँ जिससे वह [पिता] प्रसन्न होता है" (8:29)। पालने से क्रूस तक उसके जीवन की एकमात्र दिशा स्वर्ग और घर की ओर थी, हर कदम उसके पिता की आज्ञाकारिता द्वारा चिह्नित था। केवल वह ही कह सकता है "मेरे पीछे आओ" और जानता है कि उसका मार्ग अच्छा और सही मार्ग था और वह हमें बिना किसी त्रुटि से घर ले जाता है।

वह इसके बड़े विभाजन का उल्लेख करता है (8:21ख-22) : "और तुम मुझे ढूँढ़ोगे और अपने पाप में मरोगे; जहाँ मैं जाता हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते।" प्राथमिक संदर्भ पृथ्वी पर परमेश्वर की भौतिक उपस्थिति और इस्राएल राष्ट्र के लिये अपने आप को एक मसीह के रूप में प्रस्तुत करने का है, जो लम्बे समय से प्रतिज्ञा किए गए सहस्राब्दी राज्य की स्थापना करने में समर्थ और इच्छुक है। यहूदी इतिहास में प्रभु की बातें सचमुच पूरे हुए हैं।

इस प्रकार, तात्कालिक अर्थ से परे ले जाने पर, प्रभु की बातें उन लोगों के विनाश के प्रकाशन हैं जो अक्सर मसीह का इनकार करते हैं। पुराने नियम का एक श्रेष्ठ उदाहरण, जो हर समय दिया जाता है, वह राजा शाऊल का है। उसने "अनुग्रह को भूलाकर पाप किया" और उसके बाद परमेश्वर का आत्मा उसे उसके हाल पर छोड़कर चला गया और एक दुष्ट आत्मा उसको सताया करता था। शमूएल की मृत्यु के बाद, शाऊल का इतिहास लगातार बढ़ते पापों में से एक था। उसके दुष्ट जीवन का मुख्य काम परमेश्वर के अभिषिक्त दाऊद को सताना था। अन्त में उसे परमेश्वर से एक वचन की अत्यन्त आवश्यकता थी, परन्तु उसने अपने सामने एक बन्द स्वर्ग को पाया। अपने सामने स्वर्ग का द्वार बन्द पाकर, वह गर्त में एक चुड़ैल के पास गया और नरक का द्वार खटखटाया, इस आशा में कि उसे अपने संकट में मार्गदर्शन करने के लिये ऊपर से कोई शब्द मिलेगा। परमेश्वर ने वह द्वार झट से खोल दिया और शाऊल उसके द्वारा अपने विनाश की और बढ़ गया।

वैसे, वे लोग सावधान रहें जो परमेश्वर के अनुग्रह से खिलवाड़ करते हैं। उन लोगों का अन्त कितना भयानक होगा, जो मसीही घर में पले-बढ़े, जिन्हें बचपन से परमेश्वर की सच्चाई सिखाई गई, जो इसके विरुद्ध बलवा करते हैं

और जो लगातार परमेश्वर के आत्मा का विरोध करते हैं, जब तक कि वह फिर कभी न लौटने के लिये चला जाए। ऐसे जीवन की अन्तिम घड़ियाँ कितनी हताश करने वाली होती हैं। "तुम मुझे ढूँढ़ोगे और अपने पाप में मरोगे।"

यहूदियों को यह समझ नहीं आया। उन्होंने कहा, "क्या वह अपने आप को मार डालेगा? क्योंकि वह कहता है, जहाँ मैं जाता हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते।" सदियों का अंधापन उन पर पहले से ही सवार था। मसीह का इनकार करने के बाद किसी व्यक्ति के लिये स्वर्ग जा पाना असम्भव है जो एक अद्भुत सत्य है। लूका 16 में प्रभु इस पर प्रकाश डालते हैं। अब्राहम ने अधोलोक के धनी व्यक्ति से कहा, "मेरे और तुम्हारे बीच एक भारी गड़हा ठहराया गया है।" बाइबल इसी तरह के टिप्पणी पर समाप्त होती है। मृतकों का चरित्र मृत्यु के समय निश्चित और पत्थर के समान कठोर हो जाता है। भयभीत करनेवाला वाक्य यह है, "जो अन्याय करता है, वह अन्याय ही करता रहे; और जो मलिन है, वह मलिन बना रहे" (प्रकाशितवाक्य 22:11)। चरित्र का वही अनन्त अपरिवर्तनीय रूप धार्मिक और पवित्र लोगों के लिये भी बताई गई है। जैसे पेड़ के गिरने के बाद वह उसी स्थिति में पड़ा रहता है। एक बार मृत्यु के द्वार पार हो जाने के बाद कोई परिवर्तन सम्भव नहीं है।

इस प्रकार अपने संसार के बारे में बात करते हुए, एक ऐसा संसार जिसके लिये वे अपने सभी धर्मों और स्व-धार्मिकता के साथ अनजान थे, यीशु ने अपने संसार के लिये अनुमति पत्र की बात की (8:23-24)। ऐसे अनुमति पत्र की आवश्यकता (8:23) स्पष्ट थी: "तुम नीचे के हो, मैं ऊपर का हूँ; तुम संसार के हो, मैं संसार का नहीं।" जिसने इस जीवन और अगले जीवन के संदर्भ में आवश्यकता बताई। जहाँ तक आने वाले जीवन का प्रश्न है, वह और वे लोग एक दूसरे से बहुत दूर थे, वास्तव में, जितना दूर नीचे ऊपर से है, उतना दूर नरक स्वर्ग से है।

यह विचार हमारे लिये बाइबल के शुरुआती आयतों में रेखांकित किया गया है। सृष्टि के वर्णन में पवित्र आत्मा कहता है कि सृष्टि के दूसरे दिन परमेश्वर ने "एक अन्तर बनाकर आकाश के नीचे के जल और उसके ऊपर के जल को अलग अलग किया" (उत्पत्ति 1:7)। "और वैसा ही हो गया" पवित्र आत्मा द्वारा कही गई बात है। वह क्या था जिसने नीचे के उफनते समुद्र को आकाश के ऊँचे बादलों से अलग कर दिया? यह वातावरण था—एक ऐसा वातावरण जो प्रभु से प्रेम करनेवाले और प्रेम न करनेवाले लोगों को अलग करता है।

उद्धार पाए हुए लोगों को स्वर्ग का वातावरण, प्रार्थना सभा का, बाइबल कक्षा का वातावरण अच्छा लगता है। नाश होते हुए लोगों को शराब की दुकान का, मौज-मस्ती का और अन्य असुरक्षित लोगों की संगति अच्छी लगती है। प्रभु ऊपर से है और जो उससे प्रेम करते हैं उन्हें "स्वर्गीय स्थानों में" बैठाया जाता है (इफिसियों 1:3, 20; 2:6)। नाश होते हुए लोगों को नहीं। वे "नीचे से हैं।" पानी अपना निम्नतम स्तर ढूँढ़ता है। यही उसका स्वभाव है। नाश होते हुए लोग नीचे की ओर जा रहे हैं।

यीशु ने कहा, "तुम इस संसार के हो; मैं इस संसार का नहीं।" प्रभु स्वर्ग से था। वे पृथ्वी के थे, जो शत्रु के शासन के अधीन एक ग्रह है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि यदि उन्हें कभी स्वर्ग जाना हो तो किसी प्रकार की नई समर्पण-भक्ति की आवश्यकता होगी।

अनुमति पत्र की प्रकृति (8:24) भी स्पष्ट है : "इसलिये मैं ने तुम से कहा कि तुम अपने पापों में मरोगे, क्योंकि यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूँ तो अपने पापों में मरोगे।" स्वर्ग का अनुमति पत्र मसीह है। केवल वही पुरुषों और स्त्रियों को उनके पापों से बचा सकता है। पाप ने इस संसार बर्बाद को और नष्ट कर दिया है और परमेश्वर का ऐसा बिलकुल इरादा नहीं है कि वह इसे नष्ट करने की उसे अनुमति दे।। मसीह में विश्वास स्वर्ग का द्वार खोलता है। पाठ पर जोर दिया गया है। शब्द वह इताली में है, जो दर्शाता है कि इसे अनुवादकों ने दिया है और

इसे छोड़ा जा सकता है। "तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूँ!" यीशु ने यही कहा था। उन्होंने उसके इस दावे पर विश्वास करने से इनकार कर दिया कि वह पुराने नियम के प्रकाशन का मैं हूँ है, वाचा का परमेश्वर, जो जीवन का स्रोत है। उस पर विश्वास, उसे उसका उचित स्थान और उपाधि देने से इनकार करना, स्वर्ग के द्वार को हमेशा के लिये बन्द करना है।

इससे पहले यहूदियों ने मूसा का उद्धरण देते हुए व्यभिचार में पकड़ी गई एक स्त्री को यीशु के पास लाया था। वे उसका उतना ही आदर करते थे जितना कि अपने राष्ट्र के संस्थापक पिता अब्राहम का करते थे। मूसा ही वह व्यक्ति था जिसने पुराने नियम में परमेश्वर के लिये इस अति महान नाम: "मैं हूँ" (निर्गमन 3:13-14) को इस्राएल में लाया। परमेश्वर द्वारा इस नाम का उपयोग उसके परमेश्वर होने का स्पष्ट दावा था।

हमारे लिये उसे ग्रहण करने से आसान कुछ भी नहीं होगा। हम उसे महान और अच्छा कह सकते हैं, परन्तु जब तक हम उसे परमेश्वर नहीं कहते, हम लक्ष्य से चूक जाते हैं और अभी भी उस भूमि पर हम अनुमति पत्र के बिना हैं जहाँ उसका ईश्वरत्व सृष्टि में सबसे स्पष्ट प्रमाण है।

यहूदियों के साथ बातचीत अब निर्णायक मोड़ पर आ गई है। उसने उनसे अपने गवाह और अपने संसार के विषय में बात की है। अब वह उनसे अपने वचन के विषय में बात करता है (8:25-45)। यह खण्ड दो भागों में विभाजित है: अपने स्वर्गीय पिता के साथ अपनी पहचान के विषय में उसे जो कहना है (8:25-32) और उनके पिता अब्राहम के साथ अपनी पहचान के विषय में उसे जो कहना है। प्रभु अपने आप को दोनों के साथ पहचानता है। हम उन बातों से आरम्भ करते हैं जो प्रभु को अपने पिता के विषय में अपने विरोधियों से कहना था।

वे यीशु द्वारा पुराने नियम के प्रकाशन के महान मैं हूँ के साथ की गई स्पष्ट पहचान को नहीं भूल सकते थे। उसके कथन ने तत्काल और एक सन्देह के अनुसार, एक अविश्वसनीय प्रतिक्रिया को उकसाया। जिन लोगों ने उसे परखा (8:25-29) उन्होंने पूछा: "तू कौन है?" उसने अपने पिता के विषय में एक शब्द में उत्तर दिया (8:25-27)।

हमें इस कथन को प्रभु के अलौकिक जीवन और सेवकाई के अद्भुत संदर्भ से अलग नहीं रखना चाहिए। उसने अनगिनत आश्चर्यकर्म किए थे। उसने कोढ़ियों को शुद्ध किया, दुष्टात्माओं को निकाला, मरे हुओं को जिलाया, भूखी भीड़ को खिलाया और पानी पर चला। उसने उन्हें अधिकार के साथ उपदेश दिया। वे कितने ढीठ थे कि अभी भी उसे चुनौती दे रहे थे, उसकी पहचान के विषय में कुछ और बातें कहने की माँग कर रहे थे।

प्रभु ने उन्हें अपनी पिछली गवाही का उद्धरण दिया (8:25ख) : "वही हूँ जो प्रारम्भ से तुम से कहता आया हूँ।" ऐसा कहा जाता है कि इस पूरे सुसमाचार के विवरण में अनुवाद करने के लिये यह शायद सबसे कठिन उपवाक्य है। न्यू इंग्लिश बाइबल अनुवाद ("मैं तुम से क्यों बातें करूँ?") यूनानी पिताओं द्वारा शब्दों पर लगाए गए अर्थ को सबसे अच्छी तरह से व्यक्त करता है, परन्तु वह संरचना वास्तव में संदर्भ में उचित नहीं बैठता है। उनसे बिल्कुल भी बात न करने की इच्छा के बदले, प्रभु ने उनसे कहा कि उसे अभी भी उनसे विशेषकर न्याय के विषय में बहुत कुछ कहना है। यूनानी पिताओं (जिन्हें, कम से कम, यूनानी पाठ को जानने वाला माना जा सकता है) के दृष्टिकोण का समर्थन करते हुए, कुछ लोगों का विचार है कि प्रभु सचमुच कह रहा था, "तुम्हारे प्रश्न का उत्तर कैसे दिया जा सकता है?" तथ्य यह है कि उन्होंने ऐसा प्रश्न पूछा जो यह सिद्ध करता है कि उसका उत्तर देना व्यर्थ होगा। आप जन्म से अंधे किसी व्यक्ति के सामने सूर्यास्त का वर्णन कैसे करते हैं? शब्द अपर्याप्त होते हैं। आप किसी जन्म से बहरे व्यक्ति के सामने मधुर संगीत का वर्णन कैसे करते हैं? सांकेतिक भाषा अपर्याप्त होती है।

यदि पाठ को वैसा ही रहने दिया जाए जैसा वह हमारे संस्करण में दिखाई देता है, तो प्रभु ने केवल महत्वपूर्ण आवश्यकता की बात की, कि लोग उसके मैं हूँ होने पर विश्वास करें। जब उन्होंने उसे चुनौती दी, तो उसने उत्तर दिया, "मैं वही हूँ जो मैं कहता हूँ," अर्थात् "मेरा व्यक्तित्व ही मेरी शिक्षा है।" उसके आश्चर्यकर्म इस बात के प्रमाण थे।

अपनी वर्तमान गवाही (8:26-27) को बताते हुए प्रभु कहता है कि ऐसी बातें थीं जिन्हें वह प्रकट नहीं कर सकता था (8:26) क्योंकि वे ऐसी बातें थीं जिन्हें वे समझ नहीं सकते थे (8:27)। उसने कहा, "तुम्हारे विषय में मुझे बहुत कुछ कहना और निर्णय करना है; परन्तु मेरा भेजनेवाला सच्चा है, और जो मैं ने उससे सुना है वही जगत से कहता हूँ" (8:26)। अब तक प्रभु यीशु अपने आप को उनके सामने प्रकट कर चुका था। अब से वह ऐसा ही करेगा, परन्तु वह यह भी बताएगा कि वे क्या थे। क्योंकि उनके मनों का प्रकाशन दर्द से भरा और अप्रिय लगनेवाला होगा, वे इसे पसन्द नहीं करेंगे। हालाँकि, सत्य, सत्य ही था, चाहे उन्हें यह अच्छा लगे या नहीं। इसके अलावा, इसकी उत्पत्ति उसके साथ नहीं हुई। इसकी उत्पत्ति उसके पिता के साथ स्वर्ग में हुई। हालाँकि, "वे यह न समझे कि हम से पिता के विषय में कहता है" (8:27)। यहूदी अगुवे यह विश्वास नहीं करना चाहते थे कि वह परमेश्वर था और जब उसने कहा कि वह परमेश्वर है तो वे क्रोधित हो गए (5:18), तब भी जब उनके आश्चर्यकर्मों ने सिद्ध कर दिखाया था कि वह परमेश्वर है। वह उनसे न्याय के अलावा किसी भी विषय पर कैसे बात कर सकता था, जब तथ्य के स्पष्ट वर्णन, आश्चर्यकर्मों के अद्भुत और निरन्तर प्रवाह, उसके आधिकार के साथ उपदेश प्रभावशील और अविस्मरणीय रूप में निहित होने के बावजूद, उन्होंने फिर भी पूछा "तू कौन है?"—विशेषकर तब जब उनका अविश्वास उन्हें सभी अपराधों से बड़े अपराध उसकी मृत्यु में शामिल कर देगा।

फिर उसने उन्हें अपने भविष्य के बारे में भी बताया (8:28-29)। हम देखते हैं कि क्रूस क्या प्रकट करता है (8:28क)। "तब यीशु ने उन से कहा, जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊँचे पर चढ़ाओगे, तो जानोगे कि मैं वही हूँ।" फिर से वह इताली में है (अर्थात्, अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया है) : "तो जानोगे कि मैं वही हूँ।" क्रूस एक बार और सभी के लिये प्रकट कर देगा कि वह वास्तव में कौन था। मत्ती ने कलवरी के आश्चर्यकर्मों, अन्धकार छा जाने और चट्टानों के फटने, कब्रों के खुलने और मन्दिर के पर्दे का बीच से फटने का वर्णन किया है। वह सूबेदार और उसके साथियों की गवाही दर्ज करता है। उन्होंने कहा, "वास्तव में यह परमेश्वर का पुत्र था।" लूका ने अपने वर्णन में आगे कहा, "और भीड़ जो यह देखने को इकट्ठी हुई थी, इस घटना को देखकर छाती पीटती हुई लौट गई" (लूका 23:48)। इसमें कोई सन्देह नहीं था कि एक भयानक अपराध किया गया था, जिसके विरुद्ध स्वर्ग और पृथ्वी ने समान रूप से अपना विरोध जताया था। इसके अलावा, यह सब केवल प्रारम्भिक प्रमाण था: "तो जानोगे कि मैं वही हूँ।" तीन दिन बाद वह मृतकों में से जी उठा और सभी सन्देहों का अन्त कर दिया—सिवाय इसके कि अधिकारियों ने अभी भी विश्वास करने से इनकार कर दिया। "अपनी इच्छा के विरुद्ध चलनेवाला व्यक्ति अभी भी उसी विचार पर बना रहता है।"

हम यह भी देखते हैं कि मसीह क्या प्रकट करता है (8:28ख-29)। हम पुत्र की अपने पिता पर पूर्ण निर्भरता देखते हैं (8:28ख) : "तो जानोगे कि मैं वही हूँ; मैं अपने आप से कुछ नहीं करता परन्तु जैसे मेरे पिता ने मुझे सिखाया वैसे ही ये बातें कहता हूँ" (8:28)। परमेश्वर सब कुछ जानता है। यीशु जो कुछ जानता था, उनमें से बहुत सी बातें उसने वैसे ही सीखी जैसे: घर और स्कूल में अपनी शिक्षा, पढ़ने, मनन करने और परमेश्वर के वचन के अध्ययन से हम सीखते हैं। अन्य बातें उसने सीधे अपने पिता के साथ अटूट संवाद से सीखी। परमेश्वर के रूप में, वह कभी भी परमेश्वर से कम नहीं था; एक मनुष्य के रूप में, वह कभी भी मनुष्य से बढ़कर कुछ नहीं था। वह मनुष्य था जैसा

कि परमेश्वर ने मनुष्य को बनाने की इच्छा व्यक्त की थी, परमेश्वर उस में वास करता था और वह पूरी तरह से परमेश्वर पर निर्भर था। “पिता, मैं यहाँ हूँ, मैं जो कुछ भी हूँ पूरी तरह से तेरे कार्य लिये उपलब्ध हूँ।” वह हर समय, हर जगह, हर परिस्थिति में परमेश्वर के अधीन था। इसीलिये यीशु ने लगातार ऐसी बातें कही जो यह पद कहती है: “मैं अपने आप से कुछ नहीं करता... पिता ने मुझे सिखाया वैसे ही ये बातें कहता हूँ...”

सब पापों के अन्त का सार, परमेश्वर की स्वतंत्रता है। यह इस “एक मनुष्य की आज्ञाकारिता” के कारण था कि परमेश्वर अन्ततः यह प्रदर्शित करने में समर्थ हुआ कि पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने में परमेश्वर के मन में क्या था। यीशु यहाँ अपने परमेश्वरत्व को परिभाषित नहीं कर रहा है—उसने कभी भी परमेश्वर होना नहीं छोड़ा। वह अपने मनुष्यत्व को परिभाषित करता है। उसने अपने ईश्वरत्व को सिर्फ मैं हूँ शब्दों में परिभाषित किया था। यहूदियों ने तुरन्त मनुष्यत्व के साथ परमेश्वरत्व के विरुद्ध प्रतिक्रिया व्यक्त की थी।

इसके बाद हम पुत्र में पिता की अत्यन्त प्रसन्नता को देखते हैं (8:29), जो उसमें उसकी निरन्तर उपस्थिति और प्रसन्नता से प्रमाणित है: “मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है; उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा क्योंकि मैं सर्वदा वही काम करता हूँ जिससे वह प्रसन्न होता है।” प्रभु यीशु के जीवन में एक भी क्षण ऐसा नहीं था जब उसने अपने पिता के हृदय में आनन्द और प्रसन्नता न लाई हो। प्रभु के जीवन में संसारिकता जैसी कोई बात नहीं थी। उसने जो कुछ भी किया वह एक सर्वश्रेष्ठ के सिद्धान्त से प्रेरित था: वह यहाँ अपने पिता को प्रसन्न करने के लिये था। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह एक बालक के रूप में घर के कामों में अपनी माता की सहायता कर रहा था, या फिर वह स्कूल में यूनानी वर्णमाला सीख रहा था, या गाँव के बढ़ई के रूप में हल बनाने के लिये लकड़ी का एक टुकड़ा काट रहा था, या पहाड़ पर उपदेश दे रहा था, या मरे हुओं को जिला रहा, या गतसमनी में रो रहा था, या रोमी क्रूस पर प्राण त्याग रहा था, या फिर यूसुफ की कब्र में मरकर शान्त और ठण्डा पड़ा हुआ था। वह सदैव वही काम करता था जिससे पिता प्रसन्न होता था। हर क्षण, हर परिस्थिति में, माता की गोद से लेकर कब्र तक (उन तीन भयानक घंटों को छोड़कर जब वह जो कभी पाप को नहीं जानता था हमारे लिये पाप बन गया) उसने अपने पिता की चेतन उपस्थिति का आनन्द लिया। और उसका पिता उससे प्रसन्न था, कुछ ऐसा जो मसीह को उन सब लोगों से अलग करता है जो अब तक जीवित रहे हैं।

इस प्रकार यूहन्ना हमारा ध्यान उन लोगों की ओर जिन्होंने उसको परखा और उसके बेजोड़ दावों की परस्पर क्रिया से और यहूदी अगुवों के विश्वास से इनकार करने की ओर आकर्षित करता है।

परन्तु यूहन्ना हमारा ध्यान उन लोगों की ओर भी आकर्षित करता है जो उस पर भरोसा करते थे (8:30-32)। विश्वास एक आसान अंगीकरण था (8:30) : “वह ये बातें कह ही रहा था कि बहुतों ने उस पर विश्वास किया।” क्योंकि, इन असाधारण दावों में उनके विषय में सच्चाई की झलक थी। जिसने उन्हें बनाया वह या तो बुद्धिहीन था—या संसार में सबसे अधिक बुद्धिमान। प्रभु की सम्पूर्णता, सन्तुलन और विवेक जैसा कि उसके जीवन और उपदेश से प्रमाणित है, निर्विवाद थे। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि वह दूसरे सभी से सबसे अच्छा था। वह कई लोगों को पूरी तरह आश्वस्त करने वाला था।

“बहुतों ने उस पर विश्वास किया” या, जैसा कि कुछ ने इसका अनुवाद “उन्होंने उस पर विश्वास किया” किया है। यह वाक्यांश पूर्ण अर्थों में विश्वास का सुझाव देता है। ऐसा कहा जा सकता है कि उन्होंने अपने आप को उस पर थोप दिया। ये शब्द किसी व्यक्ति में ऊर्जावान विश्वास का संकेत देते हैं, जिसे केवल कुछ कथनों के सत्य मान लेने से अलग किया जा सकता है। यह वाक्यांश सुसमाचार के यूहन्ना के विवरण की विशेषता है। एकमात्र स्थान

जहाँ यह अन्य सुसमाचार के विवरणों में आता है वह एक बालक के विश्वास से सम्बन्धित है (मत्ती 18:6; मरकुस 9:42)। इसलिये, बहुतों ने उस पर विश्वास किया। उन्होंने उस पर विश्वास का वह आत्मा बचानेवाला बदलाव दिया। उसका एक होना कितना आसान है। परन्तु जीवन बदलने वाले इस लेन-देन की सरलता के अपने खतरे भी हैं।

प्रभु तुरन्त चेतावनी देता है कि विश्वास का एक आवश्यक प्रमाण (8:31) अनिवार्य है: "तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्होंने उस पर विश्वास किया था, कहा, "यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे।" वाक्यांश "उस पर विश्वास किया" का अनुवाद "उसका विश्वास किया" किया जा सकता है, जो पिछली पद में उल्लेख किए गए विश्वास से कमतर एक प्रकार के विश्वास को दर्शाता है। प्रभु की टिप्पणी "उन यहूदियों" को सम्बोधित है जो उस पर विश्वास करते थे, जो शायद राजकीय अधिकारियों के कुछ सदस्यों को इंगित करता है, या उनमें से कुछ को जो अभी भी मसीह को कैसे होना चाहिए और क्या करना चाहिए, इस बारे में उनकी पूर्वकल्पित धारणाओं से पीछे रखा गया था। उन्होंने उसका विश्वास किया, परन्तु उस पर विश्वास नहीं किया। हालाँकि, प्रभु अनुग्रहकारी था। उसने उनके विश्वास को स्वीकार किया, चाहे वह कितना भी कमज़ोर, अपर्याप्त या परम्परावादी क्यों न हो। वह शब्द तुम पर जोर देता है। "यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच [अवश्य] मेरे चेले ठहरोगे।" उन्हें न केवल मानसिक रूप से उसके दावों पर सहमति देनी चाहिए, बल्कि वास्तव में उस पर भरोसा करना चाहिए। उसके वचन में बने रहने से वास्तविक, बचानेवाले विश्वास का आवश्यक प्रमाण जल्द ही स्पष्ट हो जाएगा। उसके उपदेश उनके विश्वास का नियम, उनके जीवन की व्यवस्था बन जाते।

प्रभु विश्वास के मुक्तिदायक कार्य के विषय में भी कहता है (8:32) : "तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।" प्रभु ने उनके मनों को कितनी अच्छी तरह पढ़ा। कुछ चर्चा हुई और इसके परिणामस्वरूप अनुकूल प्रतिक्रिया मिली थी। प्रभु ने तुरन्त गेहूँ को भूसी से अलग कर दिया। उस अनुकूल प्रतिक्रिया का कितना महत्व था यह अध्याय के अन्त में देखेंगे, अन्ततः जब उन्होंने उसे मारने के लिये पत्थर उठाए।

यहाँ प्रभु सच्चा चेला होने के लिये संक्षिप्त निर्देश देता है, क्योंकि वह उनके पिता अब्राहम के साथ एक पहचान बताता है (8:33-45)। उन्हें सत्य को जानना और उस पर चलना चाहिए, जैसा कि सत्य उसमें था और वह सत्य उन्हें स्वतंत्र करेगा। झूठ दास बनाता है; सत्य स्वतंत्र करता है। प्रभु के मन में जो स्वतंत्रता थी वह मन और नैतिकता को समान रूप से गले लगाती है। उनका बौद्धिक स्तर विस्तृत हो जाता और वे पाप के बन्धनों से मुक्त हो जाते।

जैसा कि हम देखेंगे, यहूदियों ने इस कथन पर तुरन्त प्रतिक्रिया व्यक्त की। प्रभु ने उन सब से उद्धार की प्रतिज्ञा की थी जो उस पर भरोसा करते थे। यहूदियों की तत्काल प्रतिक्रिया मूर्खतापूर्ण थी। हम उनका घमण्ड देखते हैं (8:33)। "उन्होंने उसको उत्तर दिया, "हम तो अब्राहम के वंश से हैं, और कभी किसी के दास नहीं हुए। फिर तू कैसे कहता है कि तुम स्वतंत्र हो जाओगे?" (8:33)। क्यों, उनका पूरा इतिहास दासत्व का रहा है। वे मिस्र में दासत्व में थे जब मूसा उन्हें स्वतंत्र कराने आया था। न्यायियों के समय के अधिकांश समय में वे किसी न किसी छोटी पलिश्तीनी रियासतों की बन्धुआई में थे जिन्हें उन्होंने कभी भी अपनी भूमि से बाहर नहीं निकाला था। उत्तरी गोत्रों को अश्शूरियों द्वारा बन्दी बना लिया गया था। यहूदा के गोत्र को बेबीलोन में निर्वासित कर दिया गया था। प्रतिज्ञा किए गए देश में उनकी वापसी एक फ़ारसी राजा की पीड़ा के तहत हुई थी। वे सदियों तक यूनानी, सीरियाई और मिस्र के अधीन रहे, अन्ततः जब तक रोमियों ने उन पर नियन्त्रण नहीं कर लिया। इसलिये, उनका घमण्ड स्पष्ट

आत्म-धोखे में से एक था। उन्होंने उन दासत्व को अस्थाई ताड़ना के रूप में टाल दिया। क्योंकि उन्होंने शायद ही कभी दासत्व की अवधि के प्रति विनम्रतापूर्वक समर्पण किया था, इसलिये उन्होंने स्वयं को स्वतंत्र करने की कल्पना की थी। अब्राहम से की गई वाचा प्रतिज्ञा ने उसे पृथ्वी पर आधिपत्य का आश्वसन दिया। फिर सभी विपरीत तथ्यों के बावजूद वे स्वयं को बन्धुआई में कैसे मान सकते हैं? यह एक मूर्खतापूर्ण घमण्ड था, भ्रमित राष्ट्रीय और आत्मिक गर्व का सार था।

प्रभु फिर से, और अब और अधिक स्पष्टता से उनकी बन्धुआई पर जोर देते हैं (8:34-36)। वह उनके दासत्व बन्धुआई की वास्तविक प्रकृति को उजागर करता है: "मैं तुम से सच सच कहता हूँ, जो कोई पाप करता है वह पाप का दास है" (8:34)। हमें स्मरण रखना चाहिए कि प्रभु यहाँ उन यहूदियों से बात कर रहा है जिन्होंने "विश्वास किया" (8:31) और जो अब सिद्ध करता है कि वे बिलकुल भी सच्चे विश्वासी नहीं हैं। यहाँ "पाप करना" का तात्पर्य किसी पृथक कार्य से नहीं बल्कि पाप का जीवन जीने से है। जो लोग इस तरह से जीते हैं वे बन्धुआई में हैं और शैतान, जो सारे पापियों को दास बनानेवाला स्वामी है, की शक्ति के अधीन हैं। यह बन्धुआई कितनी वास्तविक है, यह हम सब अपने व्यक्तिगत अनुभव से जानते हैं। कई बार हम अपने आप को किसी दासत्व की आदत से बन्धा हुआ पाते हैं और स्वतंत्र होने का प्रतिज्ञा करते हैं, परन्तु फिर से फँस जाते हैं।

किसी दास का स्वामी के घर में कोई स्थाई निवास नहीं होता है (8:35क)। किसी भी समय उसे बेचा जा सकता है और अधिक कष्टदायक कैद में ले जाया जा सकता है। यह दास्यमुक्ति से पहले दक्षिण में हर दास के लिये भयावह आतंक था। स्वामी की सम्पत्ति में बदलाव, दास के प्रति नापसन्दगी, या किसी अन्य दास के लिये स्वामी को मिली आकर्षक प्रस्ताव के कारण दास की बिक्री हो सकती थी। विवाह, बच्चे, व्यक्तिगत पसन्द, अनुरोध और विनती से कोई फर्क नहीं पड़ता था। एक दास एक दास होता था और उसका कोई अधिकार, कोई दर्जा, उसके भाग्य का कोई ठिकाना नहीं होता था। ऐसे ही वे सब लोग हैं जो पाप के दास हैं।

उनके दासत्व के विपरीत, यीशु ने अपना पुत्रत्व स्थापित किया। वह अनन्त काल का है: "परन्तु पुत्र सदा रहता है" (8:35ब)। हम अब्राहम के घराने में इसहाक और इश्माएल के बारे में विचार करते हैं। इश्माएल एक दासी स्त्री का पुत्र था, जो दासी के रूप में जन्मी थी, और अब्राहम के घर में उसका कोई स्थाई अस्तित्व नहीं था। इसके विपरीत, इसहाक घर में ही रहा और अपने पिता का उत्तराधिकारी था। इसहाक से भी महान, अब्राहम से भी महान पिता का पुत्र, अब बोल रहा था। वह सदैव घर में ही रहेगा। जहाँ तक यहूदियों और उनकी स्वतंत्रता के घमण्ड की बात है, उस क्षण भी परमेश्वर उन्हें घर से बाहर निकालकर ऐसी बन्धुआई में डालने की तैयारी कर रहा था जो सहस्त्राब्दियों तक चलता रहेगा।

पुत्र छुड़ानेवाला भी है। यीशु ने अभी भी आशा व्यक्त की: "यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो तुम सचमुच स्वतंत्र हो जाओगे।" यीशु पाप की बेड़ियाँ तोड़ सकता है। मसीही युग की सदियों से उन लोगों की अनगिनत गवाही हैं, जिन्हें यीशु ने गंदी और झूठ बोलने वाली जीभों से, अभिलाषा और वासना से, पूरी तरह से बंधन में पड़े और भयानक आदतों से छुड़ाया है।

हालाँकि, प्रभु अभी तक यहूदियों के साथ नहीं था और वे किसी भी तरह से उसके साथ नहीं थे। वह उनके अंधेपन के विषय में आगे बात करता है (8:37-41क)। "अब्राहम के वंश से" होने के उनके दावे को प्रभु ने आंशिक रूप से स्वीकार किया था (8:37)। उसने कहा, "मैं जानता हूँ कि तुम अब्राहम के वंश से हो।" जहाँ तक उनके शारीरिक वंश का प्रश्न है, तो वह वैसा ही था। वे इब्री थे। परन्तु इससे उसका इनकार करना और भी अधिक दोषपूर्ण हो

गया: "तौभी मेरा वचन तुम्हारे हृदय में जगह नहीं पाता, इसलिये तुम मुझे मार डालना चाहते हो।" अब्राहम "परमेश्वर का मित्र कहलाता" था (याकूब 2:23) परन्तु उन्होंने, अब्राहम के वंश ने स्वयं को परमेश्वर के पुत्र का शत्रु बना लिया था। कारण क्या है? उसका वचन उनके हृदय में "जगह नहीं" पाता था। उसे प्रवेश करने का कोई द्वार नहीं मिला।

अब्राहम के वंश होने के उनके दावे का मसीह ने सम्भावित रूप से विश्लेषण किया था (8:38-41क)। उनके अविश्वास को खुलकर उजागर करते हुए उसने कहा: "मैं वही कहता हूँ जो अपने पिता के यहाँ देखा है; और तुम वही करते हो जो तुमने अपने पिता से सुना है।" उसने अपने पिता की तुलना उनके पिता से की, अपने शब्दों की तुलना उनके कार्यों से की। उसने अपना मूल प्रकट किया, और उन्होंने अपना मूल प्रकट किया। उसका पिता परमेश्वर था; उनका पिता शैतान था। उसने अपने जीवन के तरीके में परमेश्वर को प्रकट किया; उन्होंने अपने अन्दर की दुष्टता को प्रकट किया। अब्राहम के आत्मिक बीज होने से दूर, वे शैतान के आत्मिक बीज थे।

ऐसा प्रतीत होता है कि पहली बार में यहूदियों को बात समझ में नहीं आई। उन्होंने फिर से कहा, "हमारा पिता तो अब्राहम है" (8:39), एक दावा जिसे यीशु अब स्पष्ट रूप से नकारता है: "यदि तुम अब्राहम की सन्तान होते, तो अब्राहम के समान काम करते।"

उत्पत्ति की पुस्तक का लगभग एक चौथाई भाग अब्राहम की कहानी को समर्पित है। हालाँकि अब्राहम का जन्म और उसका पालन-पोषण एक मूर्तिपूजक परिवार में हुआ था, परन्तु जब परमेश्वर का वचन उसके पास आया तो वह उस पर चला। उसने अपनी पुरानी जीवनशैली को त्याग दिया और पृथ्वी पर एक यात्री और परदेशी हो गया— और स्वर्ग का नागरिक बन गया। उसने भरोसा करना और आज्ञापालन करना सीखा। उसकी आत्मिक यात्रा उसके विश्वास पर एक बड़ी माँग के साथ शुरू हुई, कि वह अपना वर्तमान विश्वास का त्याग करे और यह उसके विश्वास पर और भी अधिक माँग के साथ चरम पर पहुँच गई, कि वह अपने बेटे का बलिदान करे। अब्राहम ने निर्भरता या परमेश्वर और उसके वचन की विश्वसनीयता पर सब कुछ दाँव पर लगा दिया। वास्तव में, यीशु ने यहूदियों से कहा, "मेरा वचन तुम्हारे हृदय में जगह नहीं पाता।" "इसलिये यह घमण्ड मत करो कि तुम अब्राहम के उत्तराधिकारी हो। अब्राहम तुम्हारा पिता नहीं है।" नहीं, सचमुच। उनका पिता, जिसके समान वे काम वे कर रहे थे, निश्चित रूप से अब्राहम नहीं था।

अब प्रभु एक चौंका देने वाला दोष लगाता है: "परन्तु अब तुम मुझ जैसे मनुष्य को मार डालना चाहते हो, जिसने तुम्हें वह सत्य वचन बताया जो परमेश्वर से सुना; ऐसा तो अब्राहम ने नहीं किया था। तुम अपने पिता के समान काम करते हो" (8:40-41क)। उनका मार डालने वाला व्यवहार शैतान की ओर से आ रहा था। जितना वे अपने आप को जानते थे वह उन्हें उनसे बेहतर जानता था। शायद वह दुष्ट को अपने शत्रुओं के कंधों पर चढ़कर अपनी ओर ताकते हुए देख सकता था, ठीक वैसे ही जैसे वह जो कुछ वे कह रहे थे उसमें शैतान की आवाज़ को पहचान सकता था।

यूहन्ना अब यहूदियों और उनकी निन्दा के विषय में बताता है (8:41ख-43)। यहूदियों को अब कोई सन्देह नहीं था कि प्रभु उन पर शैतान की सन्तान होने का दोष लगा रहा था। अन्त में सच्चाई सामने आ गई और वे इतने आहत हो गए कि उन्होंने भयानक दोष लगा दिया (8:41ख, ग)। उन्होंने कहा, "हम व्यभिचार से नहीं जन्मे, हमारा एक पिता है अर्थात् परमेश्वर" (8:41)। यह सूचना, यदि वास्तव में यह उनके व्यंग्य का ज़ोर था, तो भयावह था। उसने उन पर शैतान की सन्तान होने का दोष लगाया था। उन्होंने कहा था कि उसके जन्म के विषय में कुछ

सन्देहास्पद बातें थीं। वैसे उसके पिता कौन था? उनके माता-पिता पर कलंक लगानेवाला वह कौन था, जबकि वे व्यभिचार से तो बिलकुल नहीं जन्मे थे?

जहाँ तक उनकी बात है, परमेश्वर उनका पिता था। क्या बाइबल ने स्वयं इस सत्य की घोषणा नहीं की? क्या परमेश्वर ने स्वयं इस्राएल को अपना पहिलौठा पुत्र नहीं कहा? क्या उस ने नहीं कहा, मैं इस्राएल का पिता हूँ? (यिर्मयाह 31:9), पुराने नियम में दुर्लभ स्थानों में से एक में जहाँ परमेश्वर को पिता कहा जाता है?

प्रभु ने उनके परमेश्वर की सन्तान होने के दावे को खारिज कर दिया और उनके भयानक उत्तरदायित्व को उजागर किया (8:42-43)। उस ने कहा, "यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता, तो तुम मुझ से प्रेम रखते; क्योंकि मैं परमेश्वर की ओर से आया हूँ। मैं आप से नहीं आया, परन्तु उसी ने मुझे भेजा। तुम मेरी बात क्यों नहीं समझते? इसलिये कि तुम मेरा वचन सुन नहीं सकते।" वे पिता के स्वाभाव से रहित थे; उनमें परमेश्वर का कुछ भी नहीं था जो दिखाई दे। उनके हृदय मर चुके थे—उनमें उसके लिये कोई प्रेम नहीं था; उनके कान बहरे थे—वे सुन नहीं सकते थे कि वह उनसे क्या कह रहा था। परन्तु वह पिता से निकला था। उसका होना पिता के होने से थी।

यह सन्दर्भ उनकी अनन्त पीढ़ी की ओर प्रतीत होता है। ऐसा कोई समय नहीं था जब परमेश्वर और पुत्र का अनन्त काल तक अस्तित्व न रहा हो। यहाँ मुद्दा यह है कि जीवित परमेश्वर का अनन्त, असृजित, स्व-विद्यमान पुत्र पिता से निकला, परमेश्वर की दृढ़ सलाह और पूर्वज्ञान के अनुसार एक कुँवारी के गर्भ से स्थान-पदार्थ-समय सृष्टि में प्रवेश किया, पृथ्वी पर शरीर में होकर आने से परमेश्वर के रूप में कार्य किया, इस तरह से कि स्वर्ग में उसके पिता के साथ उसकी अटूट सहभागिता और सहयोग प्रदर्शित हो। ऐसा किसी अन्य व्यक्ति के विषय में सच नहीं है। यह निश्चित रूप से उन यहूदियों के लिये सच नहीं था जो उसे मार डालना चाहते थे।

आगे हम यहूदियों और उनके जन्मचिह्न को देखते हैं (8:44-45)। सन्देश को नरम करने के किसी और प्रयास के बिना, यीशु द्वारा भयानक सत्य को उजागर किया गया (8:44क)। उसने कहा, "तुम अपने पिता शैतान से हो।" वह कभी भी नाम-पुकारने का दोषी नहीं था। वह इन लोगों से प्रेम करता था, जबकि वह जानता था कि वे उसे मार डालेंगे फिर भी उनसे प्रेम करता था। क्योंकि वह उनके विचारों, उनके खतरों को जानता था, उसने उन्हें अप्रिय, गम्भीर, चौंकाने वाला सच बताया। ऐसा कहने के लिये वे उसे कभी क्षमा नहीं करेंगे। परन्तु यह कहेंगे कि उसने ऐसा किया, और हम निश्चिन्त हो सकते हैं कि उसने यह बात अपनी आवाज़ में सिसकते हुए और हृदय में बड़े दुःख के साथ कही है। वह उनका उद्धार करता, परन्तु उन्होंने उसे ऐसा न करने दिया।

इस संसार में शैतान के बच्चों पर प्रभु की अपनी टिप्पणी गेहूँ और जंगली पौधों के दृष्टान्त की उसकी व्याख्या में पाई जाती है (मत्ती 13:24-30, 36-43)। सब लोग शैतान की सन्तान नहीं हैं, केवल कुछ निश्चित लोग हैं, लोगों का एक विशेष वर्ग जिन्हें शैतान इस संसार में परमेश्वर के लोगों के बीच प्रकट करता है। इस संसार में जहाँ भी बीज बोनेवाला अपने बच्चों के पास ईश्वरीय बीज बोने जाता है, शैतान भी अपने नकली बीज बोने जाता है। आम तौर पर वे धार्मिक अगुवे, भरमाने वाले, आत्मिक रूप से शैतान से उत्पन्न, धर्मत्याग के बीज बोने वाले, सुसमाचार के दुश्मन होते हैं, जो अच्छे लोगों की तरह दिखने के लिए वेश बदलते हैं, कम से कम आत्मिक रूप से अविवेकी लोगों के लिए तो ऐसा ही है। 2 पतरस, 2 तीमुथियुस और यहूदा में इनका चित्रण विस्तार से पाया जाता है।

भयानक सत्य का विस्तार किया गया (8:44ख, ग)। "तुम अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो।" जैसे मनुष्य अपनी आन्तरिक इच्छाओं को अपने भौतिक शरीर के अंगों के द्वारा व्यक्त करता है, जैसे मसीह अब अपनी रहस्यमय देह, कलीसिया के सदस्यों के द्वारा पृथ्वी पर अपने जीवन को व्यक्त करता है, वैसे ही शैतान

अपनी शैतानी शारीरिक जीवन को उन लोगों के द्वारा व्यक्त करता है जो मानव इतिहास में अपनी बुरी अभिलाषाओं को पूरा करने के उसके लिये भौतिक उपकरण बन गए हैं।

इस उल्लेखनीय परिच्छेद में, प्रभु ने शैतान को उसी तरह प्रकट किया जैसा वह कर सकता था, जो उसे बहुत अच्छी तरह से सभी बुराईयों का व्यक्तिगत, शक्तिशाली आत्मा के रूप में जानता था। उसने कहा, "वह तो आरम्भ से हत्यारा है और सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य उसमें है ही नहीं।" हत्यारा वह है जो जानबूझकर हत्या करता है। झूठा वह है जो जानबूझकर धोखा देता है। इस पृथ्वी पर सारी मृत्यु शैतान के द्वार पर रखी गई है। वह इसके लिये जिम्मेदार हैं। वह एक सामूहिक हत्यारा है, हमारी जाति का हत्यारा है। वह मृत्यु का कर्ता है, हर कब्र का रखवाला है। वह मानव जाति से बैर रखता है। प्रभु ने हमारे आदि माता-पिता को चेतावनी दी कि यह हत्यारा हमारा सगा नहीं है। उसने उन्हें अपने आप को उस से बचाने के लिये उनके चारों ओर एक सुरक्षा कवच: उसका वचन दिया। उसने उनसे विश्वास और आज्ञापालन करने को कहा। उसने उन्हें द्वार खोलने के विरुद्ध चेतावनी दी: "तुम अवश्य मर जाओगे।"

शैतान झूठा है: "वह सत्य पर स्थिर न रहा।" यह हमें मनुष्य जीवन की शुरुआत से परे, उस समय तक ले जाता है जब लूसिफ़र, भोर के चमकनेवाले तारे, परमेश्वर की उपस्थिति की ज्योति में रहनेवाला अभिषिक्त करूब, जिसने कुटिलता से छल किया ने अपने मन में बलवा किया और पतित स्वर्गदूतों के साथ स्वर्ग से बाहर निकाल दिया गया था (यशायाह 14:9-14; यहेजकेल 28:12-15)। यीशु ने कहा, "सत्य उसमें है ही नहीं।" शैतान का नैतिक अस्तित्व विकृत हो गया है। उसके पास बुद्धि की अपनी पूर्व प्रतिभा और इच्छा शक्ति का अधिकांश हिस्सा सुरक्षित है, परन्तु यह टेढ़ा-मेढ़ा और मुड़ा हुआ है जिससे कि वह सच बोलने में असमर्थ है। पृथ्वी पर उनके पहले शब्द झूठ थे: "तुम निश्चित न मरोगे!... परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे...।"

वह यीशु मसीह का विरोधी है। इस सुसमाचार के विवरण में प्रभु का परिचय "अनुग्रह और सच्चाई से भरा हुआ" के रूप में किया गया है। शैतान, इन यहूदियों का आत्मिक पिता, इसके विपरीत है।

भयानक सत्य समझाया गया (8:45) : "परन्तु मैं जो सच बोलता हूँ, इसी लिये तुम मेरा विश्वास नहीं करते।" सभी लोगों में से, इन धार्मिक नेताओं को उसकी कृपा से प्रसन्न होना चाहिए था और उसकी सच्चाई का स्वागत करना चाहिए था। परन्तु इसके बजाय, घृणा और हत्या उनके दिलों में थी; उनका धर्म झूठा बन गया था।

हम यीशु और उसके गवाह, उसके संसार और उसके वचन पर विचार कर रहे हैं। यह खण्ड उसके चाल–चलन के साथ समाप्त होता है (8:46-59)। दो बातें सामने आती हैं: उसका आवश्यक पाप रहित होना (8:46-50) और उसका अनन्त पुत्रत्व (8:51-59)।

यीशु चुनौती के साथ (8:46-47), अपने चाल-चलन की पूर्ण पारदर्शिता के साथ (8:46) प्रारम्भ करता है। "तुम में से कौन मुझे पापी ठहराता है? यदि मैं सच बोलता हूँ, तो तुम मेरा विश्वास क्यों नहीं करते?" उसने उन्हें अपने जीवन के एक भी पाप पर अँगुली उठाने की चुनौती दी। उसने सम्पूर्ण मूसा की व्यवस्था को उसकी सभी 613 आज्ञाओं में लेने और उसके अक्षर और भाव, उसके योग और सार, उसके चितौनियों और सिद्धान्तों द्वारा उसके जीवन को परखने का अवसर उनके सामने रखा। उसने उन्हें चुनौती दी कि वे भविष्यद्वक्ताओं और लेखों को, पूरे पुराने नियम को भी ले लें और उसके जीवन के साथ उस मजबूत कसौटी पर कस दें ताकि यह देख सकें कि क्या वे धर्मी और सच्चे से थोड़ी सी भी त्रुटि का पता लगा सकते हैं। उसने उन्हें चुनौती दी कि वे उसके घर जाएँ, जो लोग उसके साथ रहते थे, उसकी माता और उसके भाई-बहनों से पूछताछ करें, यह देखने के लिये कि क्या वह

कभी भी सिद्ध से कुछ कम था। उसने उन्हें नासरत जाने और उसके साथ व्यापार करनेवाले किसी भी व्यक्ति से बात करने की चुनौती दी, यह देखने के लिये कि क्या वह कभी विश्वासयोग्य, परिश्रमी, उदार और आदर्श था। उसने उन्हें चुनौती दी कि वे नासरत और नाईन, काना और कफरनहूम, बैतसैदा और बैतहसदा जाएँ, सार्वजनिक सेवकाई के पिछले वर्षों के उसके पदचिह्नो का पता लगाएँ और पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों से बात करें और देखें कि क्या उसके आचरण में उन्हें थोड़ी सी भी बुराई मिल सकती है।

क्या उसने कभी कुछ ऐसा किया था जो उसे नहीं करना चाहिए था? क्या उसने कभी कुछ ऐसा नहीं किया जो उसे करना चाहिए था? क्या उसने कभी कोई झूठी बात कही थी या कोई झूठा उपदेश दिया था? क्या उसने कभी वासनापूर्ण व्यवहार किया था या अपना आपा खो दिया था या लालच से बात की थी? क्या उसने कभी कोई ऐसा प्रतिज्ञा किया था जो उसने पूरा नहीं किया हो? क्या उन्हें उसकी सार्वजनिक या निजी जीवन में कोई असंगति दिखी? वे मित्रों और बैरियों से पूछ लें। वे पहाड़ी उपदेश का मूल्यांकन करें और उसके जीवन की जाँच करें, चाहे वह व्यवस्था की कसौटी पर हो या प्रेम की कसौटी पर।

निश्चित रूप से कोई भी पुरुष, स्त्री, लड़का या लड़की ऐसी चुनौती देने का साहस नहीं करेगा, विशेषकर उन लोगों को जो उन्हें पसन्द न करते हों और उनका बुरा चाहते हों। परन्तु यीशु ने साहस किया। वह जानता था कि सर्वव्यापी परमेश्वर की सर्वज्ञ बुद्धि भी उसमें एक भी पाप नहीं पा सकती है। उसने कहा, ऐसा होने पर, यदि मैं सत्य बोलता हूं, सत्य जो एक निष्कलंक जीवन पर आधारित है, तो तुम मुझ पर विश्वास क्यों नहीं करते?

उसके वचन भी पूर्णतः विश्वसनीय थे (8:46ख-47) : "जो परमेश्वर से होता है, वह परमेश्वर की बातें सुनता है; और तुम इसलिये नहीं सुनते कि परमेश्वर की ओर से नहीं हो।" देहधारी सत्य का सामना करने पर, वे इसे पहचान न सके, इसका एकमात्र कारण यह था कि उसने जीवन की वास्तविकता के साथ बात की, जिसने सभी दोष लगानेवाली आवाजों को शान्त कर दिया था, क्योंकि वे परमेश्वर की ओर से नहीं थे। जब वह बोलता था तो परमेश्वर बोलता था। परन्तु जब वह बोलता था तो वे परमेश्वर की आवाज़ सुनने में असफल रहे।

अब दोष लगाने का समय आता है (8:48-50), और यह बहुत ही व्यर्थ दोष था। "यह सुन यहूदियों ने उससे कहा, "क्या हम ठीक नहीं कहते कि तू सामरी है, और तुझ में दुष्टात्मा है?" (8:48)। केवल एक ही बात जिसके लिये वे उस पर दोष लगा सकते थे, जिसे उनके विकृत विचार से उत्पन्न पाप कहा जा सकता था, वह यह था कि वह सामरिया गया था। क्योंकि कोई भी स्वाभिमानी धार्मिक यहूदी सामरिया और सामरियों के घरों में नहीं जाता था, जिन्हें अपरिचित और बैरी माना जाता था, उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि वह एक सामरी था।

पिछले इतिहास के आधार पर, सामरियों के प्रति यहूदियों का भेदभाव अपमानजनक था, और सामरियों द्वारा सच्चे इस्राएली होने का दावा करने से यह और भी बढ़ गई थी। एफ.एफ. ब्रूस ने एक काल्पनिक कहानी दर्ज की है कि कैन शैतान का हव्वा को दिए प्रलोभन का उत्पाद था और सुझाव दिया कि सम्भवतः सामरी लोगों ने यहूदियों पर शेत के नहीं, बल्कि कैन के वंश से होने का दोष लगाया था। यह बड़ी निन्दा, यदि उन तक पहुँच जाती, तो यहूदियों को विशेष रूप से कष्ट देने वाली होती। वे सभी सामरियों से दूरी बनाए रखते थे और इन यहूदियों का यीशु पर सामरी होने का दोष लगाना—या ऐसा उनका सोचना विशेष रूप से दुष्टतापूर्ण था। जहाँ तक यीशु की बात है, वह सामरियों से उतना ही प्रेम करता था जितना वह यहूदियों से करता था।

इससे भी अधिक गम्भीर व्यंग्य था, “तू सामरी है, और तुझ में दुष्टात्मा है।” परमेश्वर के देहधारी पुत्र, इस्राएल के पवित्र, पापरहित मसीह पर दुष्ट प्राणी होने का दोष लगाना इस बात का संकेत था कि वे कितने क्रोधित थे और वे कितने पूरी तरह से शैतान के नियन्त्रण में थे।

प्रभु ने उसके सामरी होने के विषय में उनके द्वारा कही गई बातों को अनदेखा कर दिया, परन्तु उनके कथन पर तुरन्त आपत्ति जताई कि वह दुष्टात्मा से ग्रस्त था: “मुझ में दुष्टात्मा नहीं; परन्तु मैं अपने पिता का आदर करता हूँ, और तुम मेरा निरादर करते हो। परन्तु मैं अपनी प्रतिष्ठा नहीं चाहता; हाँ, एक है जो चाहता है और न्याय करता है” (8:49-50)। यदि यहूदियों ने सोचा कि वे उसे क्रोध का प्रदर्शन करने के लिये उकसा सकते हैं, उसके क्रोध को भड़का सकते हैं, या उसकी उत्तेजक टिप्पणी के लिये उस पर पलटवार कर सकते हैं, तो वे गलत थे। उसकी ओर से ऐसी कोई पापपूर्ण प्रतिक्रिया सम्भव नहीं थी। पूरी गरिमा के साथ उसने इस दोष से इनकार किया कि में उस में दुष्टात्मा है। फिर चुपचाप परन्तु दृढ़ता से उसने फिर से इस तथ्य पर जोर दिया कि वह यहाँ अपने पिता का आदर करने आया है, अपना नहीं। यदि वे चाहें तो वे उसका निरादर कर सकते थे। उसने अपने लिये कोई महिमा नहीं चाही, परन्तु एक ऐसा था जो उसकी महिमा चाहता था और जिसने ठीक से न्याय किया।

वह उनके निरादर से निराश नहीं हुआ। वह अपनी प्रतिष्ठा का ख्याल रखने के लिये अपने पिता पर भरोसा कर सकता था। उन्होंने जो सोचा उसका कोई महत्व नहीं था।

प्रभु अपने मूल पाप रहित होने के प्रश्न से हटकर अब अपने अनन्त पुत्रत्व के प्रश्न की ओर मुड़ता है (8:51-59)। उन्होंने उस में दुष्टात्मा होने का दोष लगाया था। वास्तविक स्थिति बिलकुल इसके विपरीत थी।

ऐसे दो क्षेत्र थे जिन पर परमेश्वर के देहधारी पुत्र ने पूरी तरह से जय पाने का दावा किया था: कब्र पर और समय पर। केवल वही जो वास्तव में शरीर में होकर आया परमेश्वर था, ऐसे दावे कर सकता था जो उसने अब यहूदियों के साथ इस लम्बे विवाद के अन्तिम भाग में किया है।

पहले, उसने कब्र पर जय पाने का दावा किया (8:51-55)। इसके बारे में कोई अस्पष्ट बात नहीं थी। कथन स्पष्ट और त्रुटि रहित था। इसके पहले प्रभु की गम्भीर आश्वसन था, “सच सच।” उसने कहा, “मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि यदि कोई व्यक्ति मेरे वचन पर चलेगा, तो वह अनन्त काल तक मृत्यु को न देखेगा।” (8:51)। यह कल्पना करना असम्भव है कि यीशु को छोड़कर कोई भी सही अर्थों में इस तरह का बातें कहेगा। उसने इसे इसलिये कर दिखाया क्योंकि यह सच था, तथ्य था। जो लोग उस पर भरोसा करेंगे वे मृत्यु से बच जाएँगे।

कई वर्ष पहले, मेरा एक प्रचारक मित्र जमैका द्वीप पर सुसमाचार प्रचार अभियान चला रहा था। एक दिन समुद्र में तूफ़ान आया और द्वीप के तट पर एक जहाज संकट में पड़ गया। इसने भूमि पर एक एसओएस सिग्नल भेजा, और जैसे जैसे दिन ढल रहा था, उग्र लहरों को झेलते हुए एक लाइफबोट किनारे से हट गई, समय के विरुद्ध एक हताशाजनक दौड़ में, यह देखने के लिये कि क्या उस क्षतिग्रस्त जहाज के नाविकों को बचाया जा सकता है। अंधेरा छा गया और पूरी रात द्वीप पर लोग देखते रहे और समाचार सुनने की प्रतीक्षा करते रहे। अगली सुबह मेरा मित्र यह देखने के लिये नगर के लिये निकला कि क्या हुआ था। उसे बहुत देर तक इन्तजार नहीं करना पड़ा। एक अखबारवाला सड़क के किनारे खड़ा अखबार बेच रहा था। पहले पन्ने पर एक बड़े शीर्षक में एक शब्द लिखा था, सुरक्षित हैं।

मेरा मित्र बहुत उत्सुक था। उसने एक समाचार-पत्र खरीदा, शब्द सुरक्षित हैं की ओर इशारा करते हुए छोटे लड़के से कहा, "कहो, बच्चे इस शब्द का क्या अर्थ है?" लड़के ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा। उसने कहा, "क्यों, श्रीमान," "इसका अर्थ है कि उन लोगों की मृत्यु कभी नहीं हुई!"

यही उन लोगों के बारे में कहा जा सकता है जो उद्धार के लिये मसीह पर भरोसा करते हुए, अनन्त काल के तटों के लिये इस जीवन को छोड़ देते हैं। "उन लोगों की मृत्यु कभी नहीं हुई!" हमारे पास इसके लिये यीशु का वचन है। "यदि कोई व्यक्ति मेरे वचन पर चलेगा, तो वह अनन्त काल तक मृत्यु को न देखेगा।" क्या होता है जब एक विश्वास करनेवाला जीवन की यात्रा के अन्त पर आता है और न चाहते हुए भी मृत्यु के अंधेरे द्वारों से होकर बाहर निकल जाता है जो हम सभी का इन्तजार करते हैं? पौलुस के भावात्मक वाक्यांश में, वह व्यक्ति "देह से अलग होकर प्रभु के साथ रहना... है" (2 कुरिन्थियों 5:8)। विश्वास करनेवाला, अपनी मृत्यु शय्या पर लेटा हुआ, अपनी आँखें खोलता है और आस-पास एकत्रित अपने प्रियजनों के चेहरों को देखता है। वह अपनी आँखें बन्द करता है। वह उन्हें सीधे यीशु के चेहरे को देखने के लिये खोलता है। वह मृत्यु को नहीं देखता है। वह उसे देखता है।

इस दावे से यहूदी नाराज हो गए। हम देखते हैं, पहले, उन्होंने इस पर कितनी बुरी तरह से अविश्वास किया (8:52क) : "तब यहूदियों ने उस से कहा, अब हम ने जान लिया कि तुझ में दुष्टात्मा है।" प्रभु ने उन पर अब तक कहे गए सबसे महान सत्यों में से एक का खुलासा किया था। उनकी प्रतिक्रिया थी: "अब हम ने जान लिया कि तुझ में दुष्टात्मा है।" अविश्वास की दशा ऐसा ही है।

हम यह भी देखते हैं कि उन्होंने इस पर कैसे पूरी तरह से अविश्वास को दिखाया (8:52ख-55)। यह पहले उनके द्वारा उठाए गए तर्क-वितर्क में प्रकट होता है (8:52ख-53) : "अब्राहम मर गया, और भविष्यद्वक्ता भी मर गए हैं; और तू कहता है, 'यदि कोई मेरे वचन पर चलेगा तो वह अनन्त काल तक मृत्यु का स्वाद न चखेगा।' हमारा पिता अब्राहम तो मर गया। क्या तू उस से बड़ा है? और भविष्यद्वक्ता भी मर गए। तू अपने आप को क्या ठहराता है?"

उन्होंने पूछा, "तू अपने आप को क्या ठहराता है?" वे उसे आश्चर्य से देखते रहे होंगे। जब पौलुस ने एथेंस में एक समानान्तर सत्य, मसीह के द्वारा मृतकों में से जी उठने के सत्य की घोषणा की, तो एक समान प्रतिक्रिया दिखाई दी (प्रेरितों 17:32)।

यरूशलेम के यहूदियों ने चिल्लाकर कहा, क्यों, हर कोई मर जाता है। अब्राहम के विषय में क्या हुआ? इब्रानी राष्ट्र का संस्थापक, एक व्यक्ति जिसे "परमेश्वर का मित्र" कहा जाता था, वह व्यक्ति जिसकी गोद में सभी विश्वासयोग्य जाते हैं—उसके बारे में क्या? यदि कभी कोई मनुष्य न मरने का अधिकार रखता था, तो वह अब्राहम था। क्या उसने, नासरत के यीशु ने कल्पना की थी कि वह अब्राहम से बड़ा था? और भविष्यद्वक्ताओं के विषय में क्या? यशायाह और यिर्मयाह और यहेजकेल और दानिय्येल के विषय में क्या? एलिय्याह के विषय में क्या? सच है, वह मरा नहीं, परन्तु उसने ऐसा कोई व्यर्थ दावा भी नहीं किया कि जो लोग उस पर विश्वास करेंगे उन्हें अनन्त जीवन दे। कल्पना कीजिए कि एलिय्याह यह कहते हुए घूम रहा है, "जो कोई मेरे वचन पर चलेगा वह कभी मृत्यु नहीं देखेगा।"

वैसे भी आप क्या सोचते हैं कि आप कौन हैं? वास्तव में, यही इस मामले की जड़ थी। वह कौन था? उसने कौन होने का दावा किया? उस प्रश्न का उत्तर ढूँढ़ो, तो अन्य सभी प्रश्न समाप्त हो जाएँगे। यहूदियों ने उसे उनके इतिहास के महानतम व्यक्तियों के साथ खड़ा किया और उसकी तुलना उनसे की। यह उतना ही था जितना वे जाने को तैयार थे (मत्ती 16:13-14)। परन्तु विश्वास उससे भी आगे तक जाती है। विश्वास कहता है, "तू मसीह है,

जीवित परमेश्वर का पुत्र है” (6:69)। जब तक यहूदी उसके ईश्वरत्व को ग्रहण करने के लिये तैयार नहीं थे, तब तक कोई आश्चर्य नहीं कि उसकी कही बातों से उनकी नामधराई हुई। एक बार उसके परमेश्वरत्व को ग्रहण कर लेने पर सब कुछ सम्भव हो जाता है, यहाँ तक कि इस तथ्य पर भी कि उनके पीछे चलनेवाले को मृत्यु का अनुभव नहीं होता।

मृत्यु का अर्थ अलग करना है। यह मनुष्य को मनुष्य से अलग करता है और यह मनुष्य को परमेश्वर से सदा के लिये अलग कर देता है। मृत्यु अस्तित्व का गायब होना नहीं है। विश्वास न करनेवालों की मृत्यु एक भयानक वास्तविकता है। वे अत्यन्त अकेलेपन में मर जाते हैं और अन्तहीन युग बीतने के दौरान अपने पापों के कारण परमेश्वर से अलग होकर एक बड़े अन्धकार की भयावहता में चले जाते हैं। दूसरी ओर विश्वासियों की मृत्यु घर में उत्साह से स्वागत है, परमेश्वर और उसके पुत्र के साथ सदा-सर्वदा रहना है, आनन्द के स्वर में, “अवर्णनीय और महिमा से भरपूर आनन्द” में रहना है। शारीरिक मृत्यु, जो आने वाले पुनरुत्थान के लिये केवल एक अस्थाई उपाय है, जो बहुतायत के और स्वतंत्र जीवन में समाहित हो जाती है।

उन्होंने कहाँ तक अविश्वास किया, यह भी उन्हें मिले उत्तर से पता चलता है (8:54-55)। यह उत्तर तीन गुना था। इसमें परमेश्वर की अचूकता के विषय में एक कथन शामिल है (8:54क, ख) : “यीशु ने उत्तर दिया, यदि मैं आप अपनी महिमा करूँ, तो मेरी महिमा कुछ नहीं; परन्तु मेरी महिमा करनेवाला मेरा पिता है, जिसे तुम कहते हो कि वह तुम्हारा परमेश्वर है।” यह उसके परमेश्वरत्व के प्रति एक सकारात्मक पुष्टि थी, एक ऐसा परमेश्वरत्व जिसने स्वयं को मृत्यु को देखने से बचाने के अपने दावे की पुष्टि किया। उनका परमेश्वर उसका पिता था; उनका पिता शैतान था; उसका पिता परमेश्वर था।

अब यहूदियों के लिये यह असम्भव होगा कि वह जो कह रहा था उसमें गलती करे। जहाँ तक उसकी बात है, वह आत्म-प्रशंसा की भावना से परमेश्वरत्व पर यह दावा नहीं कर रहा था; वह केवल वही कर रहा था जो उसके पिता को प्रसन्न करता था, जो वास्तव में उसकी महिमा करेगा और उसके दावे को सही ठहराएगा। यदि कोई व्यक्ति अपने आप की गवाही देता है, तो वह बिलकुल भी गवाही नहीं है। हालाँकि, उनका परमेश्वर, उसका पिता ही था जिसने उसके दावे का समर्थन किया। त्रुटि या अपने आप को धोखा देने के लिये कोई जगह नहीं थी।

उनकी अज्ञानता के विषय में एक कथन था (8:54ग-55क) : “जिसे तुम कहते हो कि वह तुम्हारा परमेश्वर है। तुमने तो उसे नहीं जाना : परन्तु मैं उसे जानता हूँ।” वह अपने आप को धोखा नहीं दे रहा था; बल्कि वे दे रहे थे। उन्होंने कल्पना की कि वे परमेश्वर को जानते हैं परन्तु वास्तव में वे उसके लिये अनजान थे। क्या वे अब्राहम के वंश थे (8:33)? वे शैतान के वंश थे (8:44)। वे परमेश्वर को बिलकुल नहीं जानते थे। वे महासभा में अपना स्थान ले सकते हैं, वे रब्बी की पोशाक पहन सकते हैं, वे यहूदी धार्मिक रीति को पूरा करनेवाले हो सकते हैं, वे मनुष्यों की प्रशंसा से प्रसन्न हो सकते हैं, वे अपने आप को व्यवस्था के व्याख्याता के रूप में स्थापित कर सकते हैं और मन्दिर के संरक्षक, वे देश और विदेश में आराधनालयों और पूरे प्रवासी लोगों में अपना अधिकार बढ़ा सकते थे, परन्तु वे परमेश्वर को नहीं जानते थे।

उसकी विश्वसनीयता के सम्बन्ध में एक बात (8:55ख) : “मैं उसे जानता हूँ: यदि मैं कहूँ कि मैं उसे नहीं जानता, तो मैं तुम्हारी तरह झूठा ठहरूँगा; परन्तु मैं उसे जानता और उसके वचन पर चलता हूँ।” इस पद में जानने के लिये दो शब्द हैं। उनकी अज्ञानता (“तुमने तो उसे नहीं जाना”) का वर्णन करते समय प्रभु ने एक ऐसे शब्द (एगनोकाटे) का प्रयोग किया जो अनुभव या प्रयास से, ज्ञान अर्जित करने से, जान-पहचान से जानने का विचार व्यक्त करता

है। अपनी सारी शिक्षा के बाद भी वे परमेश्वर को नहीं जानते थे। परमेश्वर के अपने ज्ञान ("मैं उसे जानता हूँ") के विषय में बताते समय उसने एक शब्द (ओइडा) का इस्तेमाल किया जो बिना प्रयास के जानने का विचार व्यक्त करता है। परमेश्वर को जानने के उनके प्रयास वैकल्पिक थे; परमेश्वर के विषय में उसका ज्ञान व्यक्तिपरक था। परमेश्वर के विषय में उनका ज्ञान अभी बाकी था; परमेश्वर के विषय में उसका ज्ञान पूर्ण था।

यह उसके चरित्र की विश्वसनीयता का हिस्सा था कि, अपना जीवन देकर भी वह अपने विषय में सच्चाई बताए। वे उसके गवाह के साथ अविश्वसनीयता और हिंसा का व्यवहार कर सकते हैं। परन्तु उसे उन्हें सत्य बताना होगा, अन्यथा वह भी उतना ही झूठा ठहरेगा जितना कि वे थे। उस विरोधाभास पर और जोर देते हुए उसने कहा, "परन्तु मैं उसे जानता और उसके वचन [कहे] पर चलता हूँ।"

कब्र पर जय पाने का उसका दावा स्वाभाविक रूप से अगले दावे की ओर ले जाता है, कि वह सदा का जय पाया हुआ था (8:56-59)। यहूदियों के साथ इस तर्क-वितर्क की समाप्ति भाग में तीन गतिविधियाँ हैं। दो बार उन्होंने अब्राहम को बहस में शामिल किया था। अब प्रभु के पास उसके विषय में कहने के लिये कुछ है। वह इब्री कुलपिता के आनन्द का उल्लेख करता है (8:56) : "तुम्हारा पिता अब्राहम मेरा दिन देखने की आशा से बहुत मगन था; और उसने देखा और आनन्द किया।" वे अब्राहम और उसके वंश से होने के विषय में डींग मार रहे थे। वे यीशु को अब्राहम के साथ खड़ा कर रहे थे और उसे उनके सबसे सम्मानित कुलपिता से भी महान होने की चुनौती दे रहे थे। यीशु ने आगे कहा, सचमुच, अब्राहम न केवल अपने दिन देखने के लिये उत्सुक था, परन्तु वास्तव में उसे यह दिखने का अवसर दिया गया था—उसने उसे देखा और आनन्द किया।

अपने इतिहास के किसी बिन्दु पर अब्राहम ने न केवल मसीह के दिन को एक मसीहीयाई अर्थ में देखा था, बल्कि उसे उससे भी अधिक व्यक्तिगत और अन्तरंग बात का दर्शन दिया गया था। यीशु ने कहा, "मेरा दिन देखने की आशा से बहुत मगन था" हमें यह नहीं बताया गया कि अब्राहम को यह पौलुस-प्रकार का दर्शन (2 कुरिन्थियों 12:1-5) कब प्राप्त हुआ। शायद यह तब हुआ होगा जब परमेश्वर ने पहली बार उसे बुलाया। शायद यह तब हुआ होगा जब परमेश्वर ने उस से उसके आने वाले वंश की प्रतिज्ञा की पुष्टि की। शायद यह मोरिय्याह पर हुआ होगा जब उसने कलवरी की घटना और उससे आगे के पुनरुत्थान को रेखांकित करते हुए चित्रित किया। शायद यह तब हुआ होगा जब वह मलिकिसिदक से मिला होगा, जैसा कि कुछ लोग मानते हैं, मलिकिसिदक मसीह के प्रकारों में से एक था। शायद यह तब हुआ होगा जब सदोम के पतन से ठीक पहले अतिथि स्वर्गदूतों ने उससे भेंट की। प्रभु ने इस विषय पर विस्तार से बातें नहीं की। उसने केवल यहूदियों को एक सत्य बताया कि उन्होंने तब उसी निन्दनीय आक्रोश के साथ व्यवहार किया, जो उसने इस संवाद में जो कुछ भी कहा था, उसके साथ किया। उसने उन्हें बताया कि अब्राहम, जिसे वे अपना पिता कहते थे, ने वास्तव में अपना दिन देखा और आनन्द किया। "आनन्द किया" के लिये शब्द एगालिआसाटो है जिसका अर्थ है "खुशी से झूम उठना।"

इसके बाद इब्री लोगों की प्रतिक्रिया आती है (8:57) : "तब यहूदियों ने उस से कहा, अब तक तू पचास वर्ष का नहीं, फिर भी तू ने अब्राहम को देखा है?" उन्होंने सोचा कि इस समय वह उनके साथ है। अब्राहम के समय को दो हजार वर्ष हो गए। यह इस बात का संकेत हो सकता है कि यीशु आयु कितनी थी, हालाँकि वास्तव में वह केवल तैंतीस वर्ष का था। (पचास वर्ष की आयु यहूदियों के बीच परिपक्वता की प्राप्ति का प्रतीक थी; पुराने नियम की अर्थव्यवस्था के तहत सेवा करनेवाले याजक पचास वर्ष की आयु में सेवानिवृत्त हो जाते थे)। वह अभी भी उनमें से

कईयों से छोटा था। तो वह अब्राहम को कैसे देख सकता था, या अब्राहम ने उसे कैसे देखा होगा? पूरा विचार हास्यास्पद था।

अब इब्री भविष्यद्वक्ता का प्रकाशन आता है (8:58-59), जिसे देखकर अब्राहम ने आनन्द किया, जिसकी गवाही अन्य सभी भविष्यद्वक्ताओं ने दी थी। और जो एक प्रकाशन है। हम यहाँ मनुष्यत्व में ईश्वरत्व की त्रुटिहीन घोषणा को देखते हैं। तीन तीव्र चरण इस नाटक के चरमोत्कर्ष तक पहुँचे, वे सब अभी भी यूहन्ना के मन में स्पष्ट थे क्योंकि उसने अपने समय में उठ रहे मसीह के परमेश्वरत्व के विषय में किसी भी प्रश्न को दबाने के लिये लिखा था।

उसके परमेश्वरत्व का स्पष्ट प्रकट होना (8:53) : "यीशु ने उनसे कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि पहले इसके कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं हूँ।" यह तीसरी बार था जब उसने यह कहा था (8:24, 28)। अब उसने मैं हूँ होने के अपने दावे को ऐसे शब्दों में प्रस्तुत किया जिसे कोई मूर्ख व्यक्ति भी गलत नहीं समझ सकता।

यह स्मरण रखने योग्य है कि मैं हूँ यहूदियों के लिये जाना जाने वाला परमेश्वर का सबसे बड़ा नाम था और वे बड़े आदर के साथ उससे व्यवहार करते थे। इसे न टलनेवाला नाम के रूप में जाना जाता था। वे यह नहीं बताते। ऐसा कहा जाता है कि जब कोई लेखनकर्ता पवित्रशास्त्र की नकल कर रहा होता था और उसके पास परमेश्वर के लिये यह नाम आता था तो वह उस नाम को लिखने के लिये एक नई कलम लेता था। ऐसा कहा जाता है कि जब आराधनालय में किसी पाठक के पास पवित्र पाठ में यह नाम आता था, तो वह इसे नहीं पढ़ता था; वह आदर में अपना सिर झुकाता था, और मण्डली, यह जानकर कि वह इस अवर्णनीय नाम के विषय पर नतमस्तक हो रहा था, तो आदर में उनके सिर भी झुक जाते थे।

तो फिर, हम उस भय की कल्पना कर सकते हैं जिसके साथ अविश्वासी यहूदियों ने यीशु को यह कहते हुए सुना। उसने शान्ति से उनके चेहरे की ओर देखा और कहा, "पहले इसके कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं हूँ।" यह नहीं कहा कि "पहले इसके कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं था"—हालाँकि यह सच होता। वह कह रहा था कि वह, यीशु, पुराने नियम का यहोवा था। केवल इसलिये नहीं कि उसे अब्राहम पर प्राथमिकता थी क्योंकि वह अब्राहम के अस्तित्व में आने या इब्री राष्ट्र के अस्तित्व में आने से पहले अस्तित्व में था, बल्कि उसकी प्रधानता थी क्योंकि वह हमेशा से अस्तित्व में था। वह अनन्त काल का था, समय का नहीं। ऐसा कोई समय नहीं था जब वह अस्तित्व में न हो। वह आदि से था, जैसे परमेश्वर आदि से है। ये सबसे साहसी और धोखेबाज निन्दा करनेवाले के शब्द हैं—या ये शरीर में होकर आए परमेश्वर के शब्द हैं।

उसके परमेश्वर होने के इस प्रगटीकरण के बाद उसके परमेश्वर होने का स्पष्ट इनकार किया गया (8:59क) : "तब उन्होंने उसे मारने के लिये पत्थर उठाए।" वाद-विवाद का समय समाप्त हो चुका था। वे कुछ न कहते हुए भी बहुत क्रोधित थे। ऐसे दुःसाहसी, लज्जाहीन परमेश्वर की निन्दा करनेवाले के साथ केवल एक ही काम किया जाना—उन्हें उसे मार डालना चाहिए। हमें इसमें कोई सन्देह नहीं हो सकता कि उसके जीवन पर इस प्रयास के पीछे शैतान का हाथ था। लैव्यव्यवस्था 24:16 के समर्थन से, जैसा कि उन्होंने सोचा था, उन्होंने उस पर पथराव करने के लिये पत्थर उठाए।

"पत्थर" शब्द का शाब्दिक अर्थ "भारी पत्थर" है। उनमें से बहुत से लोगों ने पत्थर उठाए थे। हेरोदेस के कारीगर अभी भी मन्दिर के पुनर्निर्माण में कार्यरत थे। इस प्रकार यहूदी अपने मसीह की हत्या कर देंगे और परमेश्वर के पुत्र के जीवन और सेवकाई को हमेशा के लिये समाप्त कर देंगे।

यह महत्वपूर्ण है कि यह खण्ड यीशु द्वारा एक स्त्री का बचाव करते हुए, “तुम में जो निष्पाप हो, वही पहले उसको पत्थर मारे” (8:7) शब्दों के साथ शुरू होता है और वास्तव में क्रोधित यहूदी अगुवों जो उसे मार डालने के लिये, उसे वह मृत्यु देने के लिये जिससे उसने स्त्री को बचाया था के पत्थर उठाने के साथ समाप्त होता है।

परन्तु यह नहीं होना था। उद्धारकर्ता को उस तरह से नहीं मरना था। घटना उसके परमेश्वर होने के स्पष्ट प्रदर्शन के साथ समाप्त होती है (8:59ख) : “परन्तु यीशु छिपकर मन्दिर से निकल गया।” इस बच निलकने में पुनः मनुष्य और परमेश्वर का सम्मिश्रण है। निस्संदेह, वह स्वर्ग से आग बुला सकता था। वह उन्हें पत्थर में बदल सकता था। इसके बदले, उसने एक मानवीय उपाय का सहारा लिया। वह “छिपकर निकल गया” या “छुपा दिया गया”, शायद उसके साथियों ने, उसके आसपास भीड़ लगा दी और उसे छुपा दिया। जो भी हो, वह भी अपने परमेश्वर होने के द्वारा सुरक्षित था; मन्दिर से बाहर निकलते समय वह उनके बीच से होकर गुजरा। एक पत्थर भी नहीं फेंका गया। यहाँ तक कि उनका क्रोध या शैतान का सारा आग्रह भी उन भुजाओं को उन पत्थरों को फेंकने के लिये प्रेरित नहीं कर सका जो उनके हाथों में थे। इस प्रकार एक घटनापूर्ण और दुःखद दिन समाप्त हो गया।

उन्होंने एक के बाद एक प्रश्न पूछे, उन्हें उत्तर नहीं चाहिए था, बल्कि वे केवल वाद-विवाद करना चाहते थे: “तेरा पिता कहाँ है?” (8:19), “तू कौन है?” (8:25), “क्या वह अपने आप को मार डालेगा?” (8:22), “तू अपने आप को क्या ठहराता है?” (8:53)। उन्होंने उसे झूठा (8:13), व्यभिचार से जन्मा (8:41), सामरी (8:48), दुष्टात्मा (8:48, 52) कहा था। अन्त में उन्होंने उसे मारने के लिये पत्थर उठाए (8:59)। और वे कौन थे? संसार उनका नाम भूल चुका है; एक भी नाम दर्ज नहीं किया गया।

3. उन्हें भ्रमित करना (9:1-41)

सुसमाचार के यूहन्ना के विवरण के इस भाग के खण्ड एक में प्रभु के परमेश्वर होने की घोषणा की गई है (1:19-4:54)। खण्ड दो में उसके परमेश्वर होने पर विवाद है (5:1-10:42)। हमने शहरी यरूशलेम (5:1-47) और ग्रामीण गलील (6:1-71) में प्रभु के जीवन के प्रभाव का अध्ययन किया है। हम उसके जीवन के निहितार्थों पर विचार कर रहे हैं (7:1-10:42)। हम परमेश्वर के वचनों की उसकी व्याख्या (7:1-8:1) और मनुष्यों की दुष्टता को उजागर करने पर विचार कर रहे हैं (8:2-9:41), एक ऐसा प्रदर्शन जो चरमोत्कर्ष पर था जैसा कि, उसके परमेश्वर होने का स्पष्ट दावा और यहूदियों द्वारा उस पर पथराव कर उसे मार डालने का तत्काल प्रयास जिसे हमने अभी-अभी देखा है। हमने प्रभु को यहूदियों को दोषी ठहराते (8:2-11) और यहूदियों का विरोध करते हुए देखा है (8:12-59)। हमने आकाश में तूफ़ानी बादलों को और अधिक गहरा होते देखा है। परन्तु प्रभु ने अभी तक अपने विरोधियों का अन्त नहीं किया है। इस खण्ड में हम उसे यहूदियों को अचम्भित करते हुए देखते हैं (9:1-41)। पहले हम प्रभु को अंधे मनुष्य को चंगा करते हुए देखते हैं (9:1-34) मन्दिर में विरोधियों के हिंसक प्रदर्शन उसे रोक नहीं पाए। इसने उन्हें उसके परमेश्वर होने का एक और प्रदर्शन देने के लिये प्रेरित किया, एक ऐसा परमेश्वर होने का जिसे उन्होंने ग्रहण नहीं किया और तब तक उसका इनकार करते रहे जब तक कि उन्होंने उसे क्रूस पर नहीं चढ़ा दिया।

हम, फिर, नई घटना के साथ शुरू करते हैं (9:1-5) : “जाते हुए उसने एक मनुष्य को देखा जो जन्म से अंधा था” (9:1)। स्पष्ट है यह मामला कठिन था (9:1); ऐसा प्रतीत होता है कि यूहन्ना ने उदाहरण देने के लिये प्रभु के कुछ कठिन मामलों को चुना है। यह मामला यूहन्ना के चुने हुए के आश्चर्यकर्मों में आश्चर्यकर्म संख्या सात है। यह यहूदी लोगों के साथ प्रभु के व्यवहार में एक विभाजन बिन्दु है।

इस कंगाल मनुष्य की आवश्यकता ने यीशु को ऐसा करने पर विवश किया। जन्म से उसकी एक शारीरिक समस्या थी, जो सुसमाचारों के विवरणों में दर्ज एकमात्र समस्या थी। वह मनुष्य जन्म से अंधा था। उसने कभी दिन का उजाला, गलील की चमकती रौशनी, या कर्मेल पर सूर्य को अस्त होते हुए नहीं देखा था। उसने कभी फूल, पक्षी या मनुष्य का चेहरा नहीं देखा था। उसने बचपन से लेकर किशोरावस्था तक और फिर अपने पुरुषत्व की अब तक के जीवन को पूरी तरह से अंधेपन में बिता दिया था।

यह मामला भी विवादास्पद था (9:2-3क)। चेले जानना चाहते थे "हे रब्बी, किसने पाप किया था कि यह अंधा जन्मा, इस मनुष्य ने या इसके माता–पिता ने?" यीशु ने उत्तर दिया, "न तो इसने पाप किया था, न इसके माता–पिता ने।" धारणा यह थी कि ऐसे सारे शारीरिक दोष पाप का परिणाम था।

प्रभु ने उन दोनों सुझावों को किनारे कर दिया। इस मनुष्य का अंधा होना पाप दण्ड नहीं था। प्रभु यह नहीं कहता कि कोई भी मानवीय विकलांगता पाप का परिणाम नहीं है। उसका कहना है कि इस मनुष्य के जीवन में ऐसा नहीं था। इसका एक बड़ा कारण था।

यह एक जानबूझकर किया गया (9:3ख-5) मामला था, जिसे एक विशिष्ट ईश्वरीय उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए स्वर्ग में योजनाबद्ध किया गया था। इसका पहला उद्देश्य मानव जीवन में परमेश्वर के स्पर्श को प्रकट करना था (9:3ख) : "कि परमेश्वर के काम उसमें प्रकट हों।" हमारे सीमित दृष्टिकोण से चाहे कितना भी विपरीत उतार-चढ़ाव क्यों न हों, हमें तीन गुना प्रस्ताव पर अपनी प्रतिक्रिया रखनी चाहिए:

परमेश्वर इतना प्रेमी है कि दया किए बिना नहीं रहता।

वह इतना बुद्धिमान है कि कोई गलती नहीं करता।

वह इतना शक्तिशाली है कि उसके अनन्त उद्देश्य को विफल नहीं किया जा सकता।

निस्संदेह कई लोगों ने इस मनुष्य की जन्म से विकलांगता के सामने परमेश्वर की भलाई पर प्रश्न उठाया। उसकी परिस्थित बता रही थी कि वह अंधेपन और भीख माँगते हुए जीवन बिताने के लिये विवश था, उसका बहुत कुछ छीन गया था जो जीवन में आसानी और आनन्द को लाता था। उसके अंधे होने पर तर्क देते हुए वे ज्ञानवाद, अनीश्वरवाद, यहाँ तक कि विश्वविद्यालय परिसरों में और अपने आप को बुद्धिजीवी मानने वाले लोगों के बीच समय-समय पर परमेश्वर के विरुद्ध की जाने वाली निन्दनीय टिप्पणियों के लिये भी मामला बना सकते हैं। ऐसे सभी कड़वे दार्शनिक बातों का उत्तर अय्यूब की पुस्तक में पाया जाता है, और इस अंधे मनुष्य के मामले से इसे और भी स्पष्ट किया गया है। अय्यूब की पुस्तक में हम अय्यूब, उसकी पत्नी और उसके मित्रों को उन विपत्तियों पर वाद-विवाद करते हुए पाते हैं जो अय्यूब के दुःख को बढ़ा रही थीं—और वे सभी गलत थे क्योंकि सभी अधूरी जानकारी के आधार पर वाद-विवाद कर रहे थे।

इस मनुष्य का अंधा होना उसके जीवन में परमेश्वर का स्पर्श था—दण्ड देना या दोष लगाना नहीं। यह एक ऐसी योजना का हिस्सा था जिसे परमेश्वर और उसके मसीह के अलावा कोई नहीं जानता था, इस योजना का उद्देश्य उस मनुष्य के जीवन में यीशु मसीह को लाना और अन्ततः परमेश्वर की प्रशंसा और महिमा करना था।

इसका उद्देश्य मनुष्य जीवन में परमेश्वर के समय को प्रकट करना (9:4) भी था : "जिसने मुझे भेजा है, हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है; वह रात आनेवाली है जिसमें कोई काम नहीं कर सकता।" दूसरे शब्दों में, इस मनुष्य का अंधा होना परमेश्वर द्वारा प्रभु के सांसारिक सेवकाई के साथ मेल खाने के लिये निर्धारित किया

गया था। परमेश्वर के पास अन्य व्यक्तियों के साथ सम्भावित व्यवहार में अन्य समय होते हैं। यद्यपि हमारी आवश्यकता और परमेश्वर के उद्देश्यों के वे अद्भुत संयोजन अक्सर हमारे लिये अस्पष्ट होते हैं, पर उसके लिये वे स्पष्ट होते हैं। शायद अनन्त काल का कुछ हिस्सा हमारे लिये परमेश्वर के तरीकों के कुछ आश्चर्यकर्मों और रहस्यों को उजागर करने के लिये रखा गया होगा। यदि हम उन तरीकों को नहीं देख पाते, तो दोष हमारा है, परमेश्वर का नहीं। दाऊद ने इसे इस प्रकार प्रकट किया है: "उसने मूसा को अपनी गति, और इस्राएलियों पर अपने काम प्रकट किए" (भजन संहिता 103:7)। यदि इस्राएल की सन्तानों में जन समूह अपनी परिस्थितियों से परे नहीं देख सकते थे तो इसका कारण यह था कि वे परमेश्वर को उतनी अच्छी तरह से नहीं जानते थे जितना मूसा उसे जानता था। मूसा उनसे अधिक दूर तक देख सकता था। वे केवल अपनी परिस्थितियों के क्या को ही देख सकते थे; परन्तु मूसा इसके क्यों को देख सकता था।

प्रभु यीशु ने अपने जीवन को हर क्षण अपने पिता की ज्ञात इच्छा के साथ विवेकपूर्ण होकर जीया। उसे इस मनुष्य की शारीरिक कमी का कारण समझ में आ गया। इसे मसीह के सांसारिक सेवकाई के साथ मेल खाने की योजना बनाई गई थी, जब परमेश्वर पृथ्वी पर एक अनोखे तरीके से काम कर रहा था। जिस "दिन" का प्रभु ने उल्लेख किया था, वह पृथ्वी पर उसके व्यक्तिगत प्रवास का समय था, वह समय जब सभी प्रकार के आश्चर्यकर्म किए गए। "रात" पृथ्वी से उसके प्रस्थान का वर्तमान समय है।

जन्म से अंधे मनुष्य के मामले का उद्देश्य मनुष्य जीवन में परमेश्वर की सच्चाई को प्रकट करना (9:5) था : "जब तक मैं जगत में हूँ, तब तक जगत की ज्योति हूँ।" इस मनुष्य का अंधा होना वह पृष्ठभूमि बन गया जिसके विरुद्ध यीशु अपना एक और मैं हूँ कथन देने में समर्थ हुआ। "मैं जगत की ज्योति हूँ।" उसने पहले भी एक बार यह बात कही थी (8:12), परन्तु इस परिस्थिति ने उसे इसे दोहराने में समर्थ बनाया। पहले उदाहरण में एक नैतिक समस्या से सम्बन्धित पृष्ठभूमि थी, जहाँ एक स्त्री व्यभिचार में पकड़ी गई थी; यहाँ पृष्ठभूमि एक मानसिक समस्या, दर्द और पीड़ा की समस्या और परमेश्वर की प्रतीत होने वाली उदासीनता है। यहाँ निश्चित लेख हटा दिया गया है, इसलिये कथन इस प्रकार हो सकता है: "मैं जगत की ज्योति हूँ।" इसके बाद प्रभु ने जीवन के रहस्यों में परमेश्वर की सक्रिय भागीदारी को प्रदर्शित करने के लिये इस मनुष्य को शारीरिक दृष्टि प्रदान की। केवल मसीह के द्वारा ही उन बातों का अन्तिम उत्तर पाया जा सकता है नहीं तो ये बड़े संकट के समान प्रतीत होती हैं।

यूहन्ना अब चंगाई (9:6-12) और उसके परिणाम का वर्णन करता है। वह हमें बताता है कि वह मनुष्य कैसे ठीक हुआ (9:6-7)। पहले मिट्टी लिया गया (9:6)। इस मनुष्य को चंगा करने में यीशु ने जो "काम" किया उसे काम की रब्बी परिभाषा के अनुसार किया। उसने भूमि पर थूका, मिट्टी सानी और उसे अंधे मनुष्य की आँखों पर लगाया। हमें नहीं पता कि उसने ऐसा क्यों किया। कभी-कभी प्रभु साधारण शब्द कहकर लोगों को ठीक कर देता था। कभी-कभी वह साधन का प्रयोग करता था। परन्तु साधन के साथ या उसके बिना, केवल परमेश्वर ही है जो चंगा करता है।

मिट्टी लगाई गई; आदेश (9:7) का पालन किया गया : "जा, शीलोह के कुण्ड में धो ले" (शीलोह का अर्थ 'भेजा हुआ' है)। उसने जाकर धोया, और देखता हुआ लौट आया।" आश्चर्यकर्म हुआ। वह देखने लगा। वह चंगा हो गया।

फिर, उस व्यक्ति की बात सुनी गई (9:8-12)। उसकी आवाज़ उस व्यक्ति की गवाही और प्रशंसा में ऊँची थी जिसने उसे दृष्टि दी थी। हम ध्यान दें कि भीड़ ने क्या कहा (9:8-10)। इस आश्चर्यकर्म पर मिश्रित प्रतिक्रिया

हुई। उस व्यक्ति से परिचित लोग शायद ही अपनी आंखों के प्रमाण पर विश्वास कर सकें। “क्या यह वही नहीं, जो बैठा भीख माँगा करता था?”

यह उस मनुष्य के विषय में दूसरा तथ्य है: वह मनुष्य जो अंधा था, अब अंधा नहीं रहा; मनुष्य जो भीख माँगा करता था, उसने फिर कभी भीख नहीं माँगी। अनुग्रह का वास्तविक कार्य हमेशा मनुष्यों को समाज के उपयोगी सदस्यों में बदल देता है, साथ ही ईश्वरीय सत्य के प्रति उनकी आँखें भी खोल देता है। इस परिवर्तन को देखकर कुछ लोग अभी भी उलझन में थे, कुछ लोगों ने कहा, “यह वही है,” दूसरों ने कहा, “नहीं, परन्तु उसके समान है।” इसलिये उन्होंने उससे पूछा। उसने कहा, “मैं वही हूँ।” तब वे उससे पूछने लगे, “तेरी आँखें कैसे खुल गईं?”

यह अनुग्रह के आश्चर्यकर्म के बारे में एक और बात है। लोग जानना चाहते हैं कि क्या हुआ। परिवर्तित जीवन एक प्रभावशाली गवाही है।

हम यह भी ध्यान देते हैं कि उस मनुष्य ने क्या कहा (9:11-12) : “यीशु नामक एक व्यक्ति ने मिट्टी सानी, और मेरी आँखों पर लगाकर मुझ से कहा, ...।” उन्होंने उससे पूछा, “वह कहाँ है?” उसने कहा, “मैं नहीं जानता।” यह उल्लेखनीय है कि यह मनुष्य यीशु के विषय में कुछ भी नहीं जानता था। वह नहीं जानता था कि वह कौन है या कहाँ है। यह इस तथ्य से मिली सीख है कि बचाए जाने के लिये हमें यीशु के विषय में अधिक जानने की आवश्यकता नहीं है। यह मनुष्य केवल उसका नाम जानता था—पूरे देश में यीशु मसीह की सेवकाई के प्रभाव को देखते हुए यह आश्चर्यचकित था, पूरे यरूशलेम में उसके विषय में चल रहे वाद-विवाद का तो चर्चा ही नहीं किया गया। वह केवल उसका नाम जानता था: यीशु, जो बचाता है। वह सुसमाचार निम्नतम स्तर पर सिमट गया है।

उद्धार का अनुभव करने के लिये किसी को धर्मविज्ञानी होना जरूरी नहीं है। किसी को इस बात का पूरा ज्ञान होना ज़रूरी नहीं है कि यीशु कौन है। न ही किसी व्यक्ति को यह जानने की ज़रूरत है कि वह कहाँ है: परमेश्वर के दाहिने बैठा है। हमें केवल उसका नाम जानने और विश्वास के साथ उत्तर देने के लिये तैयार रहने की आवश्यकता है।

यरूशलेम में अंधे मनुष्य को चंगा करने के बारे में चर्चा जल्द ही फरीसियों के कानों तक पहुँच गई। अब उनके और नये परिवर्तित मनुष्य के बीच संघर्ष (9:13-29) शुरू होता है।

हम उनके तीन गुना उग्र हमले पर ध्यान देते हैं। पहले उन्होंने मनुष्य के विश्वास पर हमला किया (9:13-17)। यूहन्ना उनके प्रश्न की ओर ध्यान आकर्षित करता है (9:13-15)। उन्होंने पूछा कि वह कैसे देखने लगा (9:13-15), यह प्रश्न उनके दृष्टिकोण से और भी जरूरी था क्योंकि यीशु ने यह आश्चर्यकर्म सब्त के दिन किया था (9:14)। पिछली बार जब वह यरूशलेम में था तब उसने उसी गलती को दोहराया था जिसके कारण वह फरीसियों के साथ विवाद में उलझ गया था (5:1-9)।

इसके बाद उनका विरोध दिखाई देता है (9:16)। “यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से नहीं, क्योंकि वह सब्त का दिन नहीं मानता।” दूसरों ने कहा, “पापी मनुष्य ऐसे चिह्न कैसे दिखा सकता है?” अत: उनमें फूट पड़ गई।” बाड़ के एक तरफ वे लोग थे जिन पर क़ानूनवाद का शासन था। उनका रवैया यह था कि यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से नहीं हो सकता क्योंकि वह सब्त का पालन नहीं करता। जब तक वह व्यवस्था की उनकी जटिल व्याख्याओं को स्वीकार नहीं करेगा, वह परमेश्वर की ओर से नहीं हो सकता। दूसरी तरफ वे लोग थे जिन पर तर्क का शासन था। उनकी स्थिति यह थी कि जो कोई भी इस परिमाण का आश्चर्यकर्म कर सकता है वह सम्भवतः पापी नहीं हो सकता है, परन्तु स्पष्ट रूप में वह परमेश्वर की ओर से है।

कुछ लोगों ने फरीसियों के बीच इस मतभेद में उस समय के दो लोकप्रिय रब्बियों के स्कूलों का प्रतिबिम्ब देखा है। शम्माई के अनुयायी बनाए गए सिद्धान्तों के आधार पर तर्क देते हैं: "जो मनुष्य सब्त के दिन का उल्लंघन करता है वह पापी है।" हिलेल के अनुयायी स्पष्ट तथ्यों के आधार पर तर्क देते है: "एक मनुष्य जो सचमुच अच्छे कार्य करता है वह पापी नहीं है।"

यूहन्ना उनकी दुविधा की ओर इंगित करता है (9:17) : "उन्होंने उस अंधे से फिर कहा, "उसने तेरी आँखें खोलीं हैं। तू उसके विषय में क्या कहता है?" उसने कहा, "वह भविष्यद्वक्ता है" (9:17)। "उसने तेरी आँखें खोलीं हैं। तू उसके विषय में क्या कहता है?" वे अधिक जानकारी प्राप्त करने की आशा कर रहे थे। एक समूह उस मनुष्य को डराने और उससे यीशु के विषय में कुछ अपमानजनक कहने की आशा कर रहा था। दूसरे समूह को आशा थी कि आभार प्रकट करने के लिये वह मनुष्य उसके विषय में जो कुछ कहेगा उसमें वह अधिक सकारात्मक होगा। इस सारे डराने धमकाने के अन्तर्गत वह मनुष्य स्वयं, जो अपने माता-पिता की तुलना में अधिक सख्त स्वभाव का बना हुआ प्रतीत होता है, अपने स्वयं के निष्कर्ष पर पहुँचा। उसने कहा, ''वह भविष्यद्वक्ता हैं।" यह वह उत्तर नहीं था जो व्यवस्थाविद् चाहते थे। इस बात ने उन्हें वास्तव में दुविधा में डाल दिया।

उस मनुष्य के विश्वास पर उग्र प्रतिक्रिया दिखाने के बाद प्रभु के बैरियों ने उसके परिवार पर हमला किया (9:18-23)। यहाँ वे अधिक सफल रहे। अभी भी बच निकलने का एक उपाय था। हो सकता है कि वह मनुष्य जन्म से अंधा न हो। उसकी अपनी गवाही को चुनौती दी जा सकती है, क्योंकि कोई भी उसके जन्म से जुड़े तथ्यों को स्मरण नहीं रख सकता है। हो सकता है बचपन में ही किसी बीमारी या दुर्घटना के कारण वह अंधा हो गया हो। इसलिये उन्होंने उस मनुष्य के माता-पिता को बुलाया। उन्होंने पूछा, "क्या यह तुम्हारा पुत्र है, जिसे तुम कहते हो कि अंधा जन्मा था? फिर अब वह कैसे देखता है?" भयभीत होकर, उस मनुष्य के माता-पिता ने सावधानी से उत्तर दिया: "हम तो जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है, और अंधा जन्मा था। परन्तु हम यह नहीं जानते हैं कि अब कैसे देखता है, और न यह जानते हैं कि किसने उसकी आँखें खोलीं।" वे यरूशलेम की सबसे शक्तिशाली दल का क्रोध झेलने से बच गए। उन्होंने अधिकारियों को अपने बेटे के पास वापस भेज दिया। "वह सयाना है, उसी से पूछ लो; वह अपने विषय में आप कह देगा।" हमें सर्वनामों पर जोर देते हुए इस पद को पढ़ना चाहिए: "हम तो जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है, और यह अंधा जन्मा था; परन्तु हम यह नहीं जानते हैं कि अब यह कैसे देखता है, और हम न यह जानते हैं कि किसने उसकी आँखें खोलीं। वह सयाना है, उसी से पूछ लो; वह अपने विषय में आप कह देगा।" जिससे दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा।

यूहन्ना इस अत्यधिक सावधानी के लिये स्पष्टीकरण की एक बात कहता है: "ये बातें उसके माता–पिता ने इसलिये कहीं क्योंकि वे यहूदियों से डरते थे, क्योंकि यहूदी एकमत हो चुके थे कि यदि कोई कहे कि वह मसीह है, तो आराधनालय से निकाला जाए" (9:22)। कितना संगठित धर्म है। धार्मिक प्रतिष्ठान की नाराजगी को ध्यान में रखते हुए, माता-पिता ने अपने बेटे के चंगे होने के आनन्द को उनके प्रतिशोध के डर से खो दिया, जिसकी वे अपेक्षा कर सकते थे यदि वे मसीह को मौखिक रूप से श्रेय देते। वे ऐसे कई अन्य लोगों की गिनती में आते हैं, जिन्होंने परिणामों के डर से मसीह के लिये अपनी गवाही से समझौता किया है।

फरीसी अभी तक रुके नहीं थे। इसके बाद उन्होंने उस मनुष्य के मित्र पर हमला किया (9:24-29)। पहले एक मांग आती है (9:24) : "तब उन्होंने उस मनुष्य को जो अंधा था, दूसरी बार बुलाकर उससे कहा, परमेश्वर की स्तुति कर। हम तो जानते हैं कि वह मनुष्य पापी है।"

वाक्यांश “परमेश्वर की स्तुति कर” पूरी सच्चाई बताने का एक गम्भीर दोष है, जैसा कि यहोशू 7:19 में है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि यीशु ने क्या कहा या क्या किया, प्रमुख पक्ष की दृष्टि में वह पापी था। यहाँ “पापी” के लिये शब्द का अर्थ है लक्ष्य से चूक जाना, जो निर्धारित व्यवस्था का पालन करने में विफल रहता है। नये नियम में इस शब्द का प्रयोग हमेशा नैतिक अर्थ में किया जाता है। इसका उपयोग उस मनुष्य के लिये किया जाता है जो भूल-चूक से, विचार, शब्द या कर्म से पाप का दोषी है। (यह इब्रानियों 10:6-8 में पापबलि का वर्णन करने के लिये भी उपयोग किया जाने वाला शब्द है)।

उन्होंने कहा, “हम जानते हैं कि यह मनुष्य पापी है।” “जानना” शब्द वही है जो उस मनुष्य के माता-पिता द्वारा उपयोग किया गया था। “हम तो जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है” (9:20)। यहाँ फरीसियों द्वारा उपयोग किया गया, यह पूर्ण ज्ञान का एक अहंकारी दावा है। “तू क्या कहता है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता; हम तो जानते हैं कि वह मनुष्य पापी है।”

अब साहस से कहने की बारी आती है (9:25-27)। अंधा मनुष्य मसीह के लिये एक साहसिक गवाही में अपने मित्र के लिये खड़ा होता है: “मैं नहीं जानता कि वह पापी है या नहीं; मैं एक बात जानता हूँ कि मैं अंधा था और अब देखता हूँ” (9:25)। उसने इस प्रश्न पर चर्चा करने से इनकार कर दिया कि यीशु पापी था या नहीं। हम निश्चिन्त हो सकते हैं कि इस पर उसके अपने विचार थे: कोई भी मनुष्य जो परमेश्वर की और से न हो, वह उसके लिये वह नहीं कर सकता था जो इस मनुष्य ने किया है। उसके लिये यह प्रश्न अप्रासंगिक था कि यीशु पापी था या नहीं। यहाँ एक बात थी जो वह जानता था : उसने कहा, “मैं अंधा था, और अब देखता हूँ।” उस गवाही को सदियों से लाखों लोगों द्वारा दोहराया गया है। नए मसीही, जो धार्मिक मुद्दों पर बहस करने के योग्य नहीं हैं, हमेशा मसीह को उद्धारकर्ता के रूप में अपने नए दृष्टिकोण के बारे में कह सकते हैं: “मैं एक बात जानता हूँ कि मैं अंधा था और अब देखता हूँ।” ऐसी गवाही का खण्डन करना कठिन है।

इसलिये फरीसियों ने खोज की। परन्तु वह मनुष्य अब तक नहीं आया था। इस मनुष्य में कुछ आकर्षक बात है। उसके अंधे होने ने उसके चरित्र में एक अत्यन्त स्वतंत्र भाव विकसित कर दिया था। उन्होंने फिर उस से पूछा, “उसने तेरे साथ क्या किया? और किस तरह तेरी आँखें खोलीं?” वे इस मुद्दे पर उसकी आलोचना करते रहे क्योंकि उनके लिये यह मामले की जड़ थी। सब्त के दिन यीशु ने मिट्टी सानकर आश्चर्यकर्म किया और सब्त के नियमों को तोड़ा।

परन्तु वह मनुष्य धैर्य खो रहा था। वह उनके वस्त्रों और तावीज़ों से, उनके परिधानों की झालरों से, या उनके बाकी धार्मिक साज-सज्जा से भयभीत नहीं था—उसने अब तक किसी भी प्रकार के कपड़े कभी नहीं देखे थे। उसने कहा, “मैं तो तुम से कह चुका हूँ,” “और तुम ने नहीं सुना; अब दूसरी बार क्यों सुनना चाहते हो? क्या तुम भी उसके चेले होना चाहते हो?” उसकी बातों में व्यंग्य कसा गया है। वह जानता था कि उसके प्रश्न करनेवालों को यीशु का चेला होने का कोई इरादा नहीं था। शब्द भी इस मनुष्य की यीशु के विषय में समझ में प्रगति का भी प्रतीक है। वह तेजी से सीख रहा था। वह देख सकता था कि उसे पक्ष लेना था, या तो विश्वासयोग्यता का या इनकार का जो उस पर थोपा जा रहा था। उसकी कृतज्ञता ने इनकार की किसी भी सम्भावना को खारिज कर दिया।

अब उपहास किया जाता है (9:28-29)। “तब वे उसे बुरा–भला कहकर बोले, तू ही उसका चेला है, हम तो मूसा के चेले हैं” (9:28)। शब्द बुरा–भला कहकर बोलने का अर्थ है “बातों से झूठा ठहराना।” वे डाँट-फटकार की हद से आगे निकल चुके थे। उन्होंने उसके साथ दुर्व्यवहार किया। नए नियम में इस शब्द का प्रयोग केवल तीन अन्य

स्थानों पर किया गया है। पहला, जब पौलुस ने महायाजक को "हे चूना फिरी हुई भीत" कहा क्योंकि उसने किसी को उसके मुँह पर थप्पड़ मारने की आज्ञा दी थी, तो पास खड़े लोगों ने कहा, "क्या तू परमेश्वर के महायाजक को बुरा–भला कहता है?" (प्रेरितों 23:4) पौलुस ने अपने आप को इस आधार पर क्षमा कर दिया कि वह नहीं जानता था कि उसका सतानेवाला परमेश्वर का महायाजक था। निश्चित रूप से उसके आचरण में ऐसा कुछ भी नहीं था जो इस तथ्य को उजागर करता हो। दूसरा, इस शब्द का उपयोग पौलुस ने अपने स्वयं के पारम्परिक व्यवहार का वर्णन करने के लिये किया है: "लोग हमें बुरा कहते हैं, हम आशीष देते हैं; वे सताते हैं, हम सहते हैं" (1 कुरिन्थियों 4:12)। तीसरा, इस शब्द का उपयोग प्रभु यीशु के आचरण का वर्णन करने के लिये किया जाता है: "वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था" (1 पतरस 2:23)।

बुरा–भला कहना या आलोचना करना उन लोगों का काम है जो वाद-विव्वाद में हार जाते हैं। वे अपनी बातों में पकड़ नहीं रख सकते, इसलिये दुर्व्यवहार का सहारा लेते हैं। उन्होंने न केवल उस मनुष्य को बुरा–भला कहा, वे गुरु को भी बुरा–भला कहकर बोलने लगे: "हम जानते हैं कि परमेश्वर ने मूसा से बातें कीं; परन्तु इस मनुष्य को नहीं जानते कि कहाँ का है" (9:29)। उनके अनुमान में, मूसा का स्थान परमेश्वर के बाद आता था। परमेश्वर मूसा से बातें करता था। माना जाता है कि मौखिक व्यवस्था (मसीह के प्रति उनके विरोध का आधार, परम्परा का वह विशाल और निरन्तर बढ़ता हुआ निकाय) लिखित व्यवस्था के साथ सीनै में मूसा को दिया गया था। अपने सामने वे उस मनुष्य को तुच्छ दृष्टि से देखने लगे। उसका तिरस्कार करते करते उनके होंठ सुख गए। और यह उनके अपने अंधेपन को स्वीकार करना था। वे आत्मिक रूप से उससे कहीं अधिक अंधे थे, जितना उनके सामने खड़ा वह मनुष्य शारीरिक रूप से कभी नहीं था।

अब उस मनुष्य की आत्मा में, जो जन्म से अंधा था, ज्योति चमकने लगी। उसके बैरियों ने उसे संकेत दिया (9:30-34) और चंगे हुए मनुष्य का प्रेरित तर्क है (9:30-33)। इसे तीन तीव्र चरणों में विकसित किया गया है। पहला उसका आश्चर्य है (9:30) : "क्यों," उसने कहा, "यह तो आश्चर्य की बात है कि तुम नहीं जानते कि वह कहाँ का है, तौभी उसने मेरी आँखें खोल दीं।" यह वह था जिसे हम आज क्वांटम लीप (लम्बी छलांग) कहते हैं। दो आश्चर्य की बातें थीं: आश्चर्यकर्म का आश्चर्य और उस व्यक्ति का आश्चर्य जिसने उसे दृष्टिदान किया था। ऐसा आश्चर्यकर्म करनेवाला केवल एक ही स्थान—स्वर्ग से आ सकता था। दूसरा आश्चर्य यहूदी अधिकारियों के अविश्वास और शत्रुता का था। वे अंधी आँखें खोलने में समर्थ किसी व्यक्ति का खुली बाँहों से स्वागत करने में कैसे असफल हो सकते हैं?

फिर परमेश्वर की पवित्रता और सहायता के विषय में उनका आकलन (9:31) है: उन्होंने कहा, "अब हम जानते हैं," "कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता,"—यह सरल तर्क था, एक सार्वभौमिक तथ्य—"परन्तु यदि कोई परमेश्वर का भक्त हो और उसकी इच्छा पर चलता है, तो वह उसकी सुनता है" (9:31)। यह अंधा मनुष्य पवित्रशास्त्र की बातों को जानता था। वह इन धार्मिक अगुवों को परमेश्वर का वचन उद्धृत कर रहा था: "यहोवा दुष्टों से दूर रहता है, परन्तु धर्मियों की प्रार्थना सुनता है" (नीतिवचन 15:29); "और जब तुम मेरी ओर हाथ फैलाओ, तब मैं तुम से मुख फेर लूँगा; तुम कितनी भी प्रार्थना क्यों न करो, तौभी मैं तुम्हारी न सुनूँगा; क्योंकि तुम्हारे हाथ खून से भरे हुए हैं" (यशायाह 1:15); "हे याकूब के प्रधानो, ... तुम तो भलाई से बैर, और बुराई से प्रीति रखते हो, ... वे उस समय यहोवा की दोहाई देंगे, परन्तु वह उनकी न सुनेगा" (मीका 3:1-2, 4); "यहोवा की आँखें धर्मियों पर लगी रहती हैं, और उसके कान भी उनकी दोहाई की ओर लगे रहते हैं" (भजन संहिता 34:15);

“यदि मैं मन में अनर्थ की बात सोचता, तो प्रभु मेरी न सुनता” (भजन संहिता 66:18)। इस मनुष्य को ऐसे सत्य, ऐसे पवित्र सामान्य ज्ञान की बातें करते हुए सुनना उसके बैरियों के घावों पर नमक छिड़कना था।

अन्त में हम उसके आश्वासन पर ध्यान देते हैं (9:32-33)। वह अपने अकेले विषय का हवाला देता है (9:32) : “जगत के आरम्भ से यह कभी सुनने में नहीं आया कि किसी ने जन्म के अंधे की आँखें खोली हों” (9:32)। उनके पवित्रशास्त्र में ऐसा कोई आश्चर्यकर्म दर्ज नहीं है। स्मृति, अनुभव, समस्त इतिहास में प्रदर्शित करने के लिये ऐसा कोई आश्चर्यकर्म नहीं था—कि किसी ने जन्म के अंधे को चंगा किया हो। यह एक अकेला मामला था, यह उस व्यक्ति के स्वभाव के प्रति एक सम्मान था जिसने उसे चंगा किया था।

वह अपने ठोस निष्कर्ष का हवाला भी देता है (9:33) : “यदि यह व्यक्ति परमेश्वर की ओर से न होता, तो कुछ भी नहीं कर सकता।” अब उसे पूरा निश्चय हो गया था कि यीशु कौन था। जैसे कुएँ पर उस स्त्री के मामले में हमने देखा, वैसे ही हम यहाँ एक पुरुष को परमेश्वर के ज्ञान में बढ़ते हुए देखते हैं। महासभा की सारी शक्ति उसे डरा नहीं सकी। फरीसियों के तर्क उसे हिला नहीं सके। जिसने यह आश्चर्यकर्म किया था वह “यीशु नामक एक व्यक्ति” था (9:11)। यह मनुष्य एक भविष्यद्वक्ता था (9:17)। वह पापी नहीं था जैसा कि यहूदी अधिकारियों ने दावा किया था। वह परमेश्वर का जन था, एक ऐसा मनुष्य जिसकी बात परमेश्वर सुनता था, एक ऐसा मनुष्य जो परमेश्वर की आराधना करता था, एक ऐसा मनुष्य जो “परमेश्वर की ओर से” था।

चंगे हुए मनुष्य के प्रेरित तर्क के बाद इब्रानी गुरुओं का क्रोध से भरा व्यवहार दिखाई देता है (9:34)। हम ध्यान देते हैं कि उन्होंने उस से क्या कहा (9:34क) : “उन्होंने उसको उत्तर दिया, “तू तो बिलकुल पापों में जन्मा है।” वे क्रोधित थे क्योंकि इस अनपढ़ मनुष्य द्वारा वाद-विवाद में उनके अपवित्र चाल-चलन प्रकट की जा रही थी। यहाँ एक मनुष्य था, जो अपनी शारीरिक निर्बलता के कारण जन्म से ही पापी के रूप में जाना जाता था, जो फरीसियों को सिखाने का दावा कर रहा था। यह कैसी अशिष्टता है। वे व्यवस्था के संरक्षक, सुसंस्कृत और शिक्षित वर्ग के थे। वह किसी योग्य नहीं था। उसने उन्हें सिखाने का साहस कैसे किया!

हम यह भी देखते हैं कि उन्होंने उसे शाप क्यों दिया (9:34ख) : “तू हमें क्या सिखाता है?” यह इतना बुरा था कि वे वाद-विवाद में उससे अच्छा नहीं हो सके। परन्तु उसे उन्हें उत्तर देने और उन्हें बाइबल उद्धृत करने और यीशु के सम्बन्ध में उनके निर्णय को चुनौती देने का साहस करना चाहिए! उस मनुष्य की बातें उनके लिये असहनीय थीं।

हम यह भी ध्यान देते हैं कि उन्होंने उसे कहाँ निकाला (9:34ग)। अपने क्रोध में “उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया।” उन्होंने उसे आराधनालय से बहिष्कृत कर दिया, उसे राष्ट्र के धार्मिक जीवन से अलग कर दिया, उसे एक अछूत, एक आत्मिक कोढ़ी बना दिया, जिससे हर कोई उससे दूर रहे जो उसके भाग्य को साझा नहीं करना चाहता था। मनुष्य के लिये सामाजिक और आत्मिक रूप से इसका क्या अर्थ होगा, इसकी सराहना केवल वही लोग कर सकते हैं जो शुरुआती दिनों से एक सख्त धार्मिक समुदाय में पले-बढ़े हैं, जो धर्म की सहजता, विश्वासियों की करुणा और समुदाय की भावना, अपनेपन का भाव ऐसे ही सहयोग से बनता है।

बाहर निकालने का अर्थ था कि कोई भी उसे नौकरी पर नहीं रखेगा। उसका परिवार उसे स्वीकार नहीं करेगा। आराधनालय की धार्मिक सेवाओं या मन्दिर की रीति-विधि में उसकी कोई भूमिका नहीं हो सकती थी। जो कोई उसकी सहायता करते हुए देखा जाएगा, उसकी भी यही दशा होगी।

परन्तु, घटनाओं के इस मोड़ से भले ही वह आश्चर्यचकित हुआ हो, परन्तु निश्चित रूप से वह हतोत्साहित नहीं हुआ। उसका हृदय बहुत मजबूत था। वह हर हाल में ढल जानेवाला था जो हर कमी को सहकर जी सकता था।

इस पूरे समय प्रभु दृष्टि से ओझल रहा। वह उस मनुष्य को "अनुग्रह और परमेश्वर के ज्ञान में बढ़ने" का अवसर देना चाहता था। उसे विश्वासी के रूप में परिपक्व होने की शुरुआत करना और इसका अर्थ है निराशाजनक परिस्थितियों के बावजूद मसीह पर भरोसा रखना था। प्रभु अक्सर ऐसा करता है, विशेषकर विश्वास के किसी भी नए अवसर की शुरुआत में। यह उन लोगों को प्रदान की गई नई आत्मिक भावनाओं को विकसित करने का परमेश्वर का तरीका है जो मसीह पर भरोसा रखते हैं। इस मनुष्य के मामले में तो यह और भी आवश्यक था। उसे सीखना अवश्य था कि आश्चर्यकर्म महत्वपूर्ण बात नहीं थी; यह गौण था। उसे इस नए जीवन को दृष्टि से नहीं, विश्वास से चलाना सीखना था।

अब तक हमने प्रभु को अंधे को चंगा करते देखा; अब हम उसे अंधे मनुष्य का बचाव करते हुए देखते हैं (9:35-41)। ध्यान दें कि कैसे यीशु ने अपने उस जन को दोषमुक्त किया (9:35-38)। जब पाया गया कि समझाना-बुझाना काम नहीं आया, तो धार्मिक अधिकारियों ने सताने का सहारा लिया। जब कोई भी युक्ति नहीं चलती, तो यही संगठित धर्म का अन्तिम हथकण्डा होता है।

प्रभु हमारी सृष्टि जानता है; उसको स्मरण रहता है कि हम मिट्टी ही हैं (भजन 103:14)। यह मनुष्य, समझदार और मानसिक रूप से सतर्क तो था, फिर भी मानवीय भय और असफलताओं का अनुभव रखनेवाला वाला मनुष्य था। परमेश्वर कभी भी हमें उस सीमा से अधिक परीक्षा में नहीं डालता जिसे वह अपनी बुद्धि में हमारे टूटने के बिन्दु के रूप में जानता है। और यीशु इस व्यक्ति के बारे में सब कुछ जानता था। हम उसकी कल्पना कर सकते हैं, देख पाने में सक्षम होने की नवीनता से रोमांचित, परन्तु साथ ही हतप्रभ भी था। उसने ऊपर देखा और स्वर्ग की नीली चादर और आकाश में ऊनी बादल देखे; उसने ऐसा पहले कभी नहीं देखा था। वह मन्दिर को सोने से चमकता हुआ देख सकता था; उसने ऐसा पहले कभी नहीं देखा था। वह जानवरों को बलिदान के लिये मन्दिर में ले जाते हुए देख सकता था। वह मन ही मन सोचता है—तो भेड़ ऐसी ही दिखती है। और बैल का आकार कितना विचित्र है। वह लोगों को देख सकता था; उसने पहले कभी किसी मनुष्य का चेहरा नहीं देखा था। वहाँ कितनी विविधता या अलग अलग चेहरे के लोग थे!

परन्तु ये फरीसी इस मनुष्य यीशु को ग्रहण करने से इनकार क्यों करते हैं? और वह वास्तव में कौन है? वह उसे कहाँ मिल सकता है? यीशु कैसा दिखता है? निस्संदेह, वह उसे उसकी आवाज़ सुनकर पहचान लेगा। परन्तु यह भ्रमित करने वाला है। क्या उसे उसके घर जाना चाहिए? क्या उसके माता-पिता उसे अन्दर आने देने से डरेंगे?

उसे अधिक समय तक नगर में अकेले घूमने के लिये नहीं छोड़ा गया। नगर में एक मनुष्य था जो फरीसियों से नहीं डरता था। "यीशु ने सुना कि उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया है, और जब उससे भेंट हुई तो कहा, "क्या तू परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है?" (9:35)। कुछ लोग सोचते हैं कि यहाँ मूल पाठ में लिखा है, "क्या तू परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है?" परन्तु लोगों के अलग अलग विचार हैं। हर तरह से, प्रभु ने अब अपने आप को इस मनुष्य के सामने प्रकट किया ताकि उसे अपने आप का एक और प्रकाशन दिया जा सके जो कि पूरे विश्वास के योग्य है।

यीशु ने उसे एक मृत धार्मिक व्यवस्था द्वारा बाहर निकाला गया पाया। उसने अपने आप को उसके सामने ऐसे मनुष्य के रूप में प्रस्तुत किया जिस पर अब और सदा उसे विश्वास करना चाहिए। मनुष्य के पुत्र के रूप में, वह अपने आप को मनुष्यत्व से जोड़ने और पृथ्वी पर परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिये आया था। परमेश्वर

के पुत्र के रूप में वह पिता के साथ अनन्त समानता रखता था; वह सबसे ऊपर परमेश्वर के रूप में आदर के योग्य था, सदा के लिये धन्य ठहरा था।

वह मनुष्य किसी भी प्रकाशन के लिये तैयार था। भले ही सही वाचन "मनुष्य का पुत्र" हो, अंधे मनुष्य ने उसे परमेश्वर का पुत्र कहा। उसने पहले इस बात पर अपनी अनभिज्ञता व्यक्त की कि यह कौन है जिस पर उसे विश्वास करना चाहिए: उसने कहा, "हे प्रभु, "वह कौन है, हे प्रभु, कि मैं उस पर विश्वास करूँ?"

तुरन्त, यीशु ने अपने आप को प्रकट किया: "तू ने उसे देखा भी है, और जो तेरे साथ बातें कर रहा है वह वही है" (9:37)। उस मनुष्य की आँखें यीशु के चेहरे पर टिकी थीं। अपनी इन नई आँखों से उसने अभी तक बहुत कुछ नहीं देखा था। परन्तु यह तो वह जानता ही था। यदि वह मतूशेलह जितना बूढ़ा होता, तो वह यीशु के चेहरे से अधिक अद्भुत दृश्य कभी नहीं देख पाता। और वह आवाज़—उसने इसे पहले भी सुना था और वह इसके अधिकार, सत्य और सामर्थ्य को जानता था। उसे कोई झिझक नहीं थी। वह यीशु के चरणों पर गिर गया। उसने कहा, "हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ।" और उसे दण्डवत् किया।"

यीशु ने उसकी आराधना ग्रहण की। वास्तव में वह परमेश्वर का पुत्र था, मनुष्य की आराधना का अधिकार रखता था। अंधे मनुष्य ने उसका वर्णन "यीशु नामक एक व्यक्ति" के रूप में करना शुरू किया था। वह अब उसकी आराधना परमेश्वर के रूप में करता है। इस्तेमाल किया गया शब्द प्रोसेकुनेसेन है, जो भक्ति और आदर में स्वयं को साष्टांग प्रणाम करने का विचार रखता है और आराधना के कार्य के लिये उपयोग किया जाता है।

अन्त में हम देखते हैं कि कैसे यीशु ने अपने आलोचकों को उनका वास्तविक चेहरा दिखाया (9:39-41)। ऐसा नहीं लगता कि उसका पहला कथन किसी विशेष को दिया गया हो। यह इस पूरी घटना को संक्षेप में प्रस्तुत करने की प्रकृति में अधिक था। "और यीशु ने कहा, मैं न्याय करने के लिये इस जगत में आया हूँ, कि जो नहीं देखते वे देखें; और जो देखते हैं वे अन्धा हो जाएँ।" उन शब्दों के पीछे उस जन्म से अंधे मनुष्य, जो अब देख सकता था (और न केवल शारीरिक रूप से) और फरीसियों और इस्राएल राष्ट्र के आत्मिक अंधेपन के बीच विरोधाभास छिपा था। संसार में प्रभु की उपस्थिति एक बड़ा विभाजन था (9:39), जो विश्वासी को अविश्वासी से, सच्चे को झूठ से, देखने वाले को अंधे से अलग करती थी।

पास खड़े कुछ फरीसियों ने इस कथन पर तुरन्त प्रतिक्रिया व्यक्त की। मसीह ने तब इस तथ्य को उजागर किया कि वे एक बड़े भ्रम में जी रहे थे (9:40-41) : "जो फरीसी उसके साथ थे उन्होंने ये बातें सुनकर उससे कहा, "क्या हम भी अंधे हैं?" यीशु ने उनसे कहा, "यदि तुम अंधे होते तो पापी न ठहरते; परन्तु अब कहते हो कि हम देखते हैं, इसलिये तुम्हारा पाप बना रहता है।"

यदि उनकी आँखें सचमुच खुली होतीं, तो वे जन्म से अंधे मनुष्य के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, उसके सामने नीचे झूककर दण्डवत कर रहे होते।

मसीह के प्रति इस्राएल राष्ट्र का अंधापन, जिसका प्रतीक इन फरीसियों ने दर्शाया, वास्तविक था। इस बात ने उन्हें अपने मसीह को मार डालने के लिये प्रेरित किया। यह लगभग दो हजार वर्षों से चला आ रहा है। इसने प्रेरित पौलुस को, जो कभी उन्हीं में से एक था, यह कहने के लिये प्रेरित किया, "जब तक अन्यजातियाँ पूरी रीति से प्रवेश न कर लें, तब तक इस्राएल का एक भाग ऐसा ही कठोर रहेगा" (रोमियों 11:25)।

यूहन्ना 9 में यह इतना अधिक नहीं है कि संगठित धर्म ने यीशु के सम्पर्क में रहने वाले एक मनुष्य को बाहर निकाल दिया। बल्कि, यीशु ने संगठित धर्म को ही बाहर निकाल दिया या उससे उसके सम्पर्क को खत्म कर दिया।

C. जीवन के मार्ग की उसकी व्याख्या (10:1-42)

प्रेरित यूहन्ना प्रभु के जीवन के आशयों का वर्णन करता रहा है। उसने हमें परमेश्वर के वचन की व्याख्या (7:1-8:1) दिखाई है और मनुष्यों की दुष्टता को उजागर किया है (8:2-9:41), जिसके अंत में उसका वक्तव्य आया कि यहूदी केवल अंधे ही नही, बल्कि पापपूर्ण अंधे थे। अब हम जीवन के मार्ग की उसकी व्याख्या को देख सकते हैं। (10:1-42)

1. उसकी मृत्यु पर ध्यान (10:1-21)

इस महत्वपूर्ण प्रकाशन के पहले भाग में उसकी मृत्यु मुख्य केंद्र में है (10:1-21); दूसरे भाग में उसका ईश्वरत्व केंद्र में है। (10:22-42) विचार विमर्श का पहला भाग चरवाहे और बाड़े से (10:1-15) एवं अंतिम भाग चरवाहे और झुंड से संबंधित है। इस अध्याय की एकतरफा बातचीत इस तथ्य को दिखाती है कि अंधा आदमी अच्छे चरवाहे के झुंड के लिए इस्राएल के बाड़े को छोड़ गया है।

इस भाग की पृष्ठभूमि में हम यहूदी बाड़े अथवा घराने को देखते हैं। प्रभु स्वयं को भेड़ों के द्वार के रूप में प्रस्तुत कर बोलना प्रारंभ करता है। (10:1-7) कहानी तीन किरदारों के इर्द-गिर्द घूमत्ती है।

भेड़ डाकू से डरती हैं (10:1) : "मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जो कोई द्वार से भेड़शाला में प्रवेश नहीं करता, परन्तु किसी दूसरी ओर से चढ़ जाता है, वह चोर और डाकू है।" प्रभु इस्राएल के झूठे चरवाहों की तस्वीर के साथ मंच तैयार करता है, जिनकी भविष्यवाणी की गई थी (यहेजकेल 34:1-6; यिर्मयाह 23:1-6; जकर्याह 11:4-11), जिन्होंने अंधे आदमी को बाहर निकालकर, भेड़ों के कल्याण के प्रति अपनी उपेक्षा का प्रदर्शन किया था।

बाइबल के समय में, भेड़शालाएँ पत्थरों या कांटेदार झाड़ियों से बने हुए बाड़े थे, जो आकाश की ओर खुले होते थे और एक तरफ से प्रवेश स्थान या द्वार हुआ करता था। प्रभु का इस्राएल में आगमन उचित तरीके से था। उन्होंने अपनी विशेषताओं का परिचय दिया। जन्म से अंधे व्यक्ति को चंगाई देकर, इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों के प्रति अपना प्रेम प्रकट किया। इसके विपरीत, धार्मिक अधिकारी चोर (चतुराई से चोरी करने वाले) और लुटेरे (इच्छुक वस्तु को हिंसक तरीके से हथियाने वाले) थे। इस्राएल के धार्मिक अगुवे ऐसा बन चुके थे। परमेश्वर के झुंड को खिलाने से बहुत दूर, कुर्सी का घमंड, सत्ता का लालच, बाइबल व्याख्या की उनकी प्रणाली, मसीह का विरोध करने के उनके दृढ़ संकल्प इत्यादि ने उनकी समृद्ध विरासत को तो छीना, परंतु सभी ने उन्हें झूठे चरवाहों के रूप में चिह्नित भी कर दिया।

यह स्पष्ट था कि प्रभु यीशु मसीह सच्चे चरवाहे थे। उन्होने सही तरीके से, दरवाजे के द्वारा प्रवेश किया था। वे एक कुंवारी के द्वारा पैदा हुए (यशायाह 7:14; मत्ती 1:21-23); उनका जन्म बेतलहेम में हुआ था (मीका 5:2; मत्ती 2:4-6); वे "समय पूरा होने पर" आए (गलातियों 4:4); परमेश्वर ने मिस्र से अपने पुत्र को बुलाया (होशे 11:1; मत्ती 2:14-15); उसके आगमन से शत्रु का क्रोध भड़क उठा। (यिर्मयाह 31:15; मत्ती 2:16-18) अतः वे एक सही व्यक्ति थे, सही जगह पर पैदा हुए, सही समय पर पहुंचे, सही देश से बुलाए गए और सही संकेतों के द्वारा प्रमाणित हुए।

परन्तु यदि भेड़ें चोर और डाकू से डरती हैं, तो वे सच्चे चरवाहे के पीछे हो लेती हैं। (10:2-4) हम यहाँ बाड़े तक की चरवाहे की पहुँच को देखते हैं (10:3) : “उसके लिये द्वारपाल द्वार खोल देता है, और भेड़ें उसका शब्द सुनती हैं, और वह अपनी भेड़ों को नाम ले लेकर बुलाता है और बाहर ले जाता है।” द्वारपाल यीशु मसीह का प्रमाणित अग्रदूत, यूहन्ना बप्तिस्मादाता था जिसे उसके आगमन की घोषणा करने, राष्ट्र के सामने उसको प्रमाणित करने और लोगों से उसका परिचय कराने के लिए भेजा गया था।

भेड़ों ने तुरंत सच्चे चरवाहे की आवाज़ पहचान ली। उन्होंने उसके बारे में कहा, “वह उन्हें शास्त्रियों की तरह नहीं, बल्कि अधिकार रखनेवाले की तरह सिखाता था” (मत्ती 7:29)। यहूदी शिक्षक हमेशा परंपरा या किसी अन्य शिक्षक की बात का उल्लेख करके अपनी बात कहा करते थे। आज तक उनके पास अधिकार का एक अतिरिक्त बाइबलीय स्रोत तलमूद ही है। यीशु मसीह के समय में भी तल्मूदीय विचारधाराएँ फल-फूल और बढ़ रही थीं, जिसके परिणामस्वरूप लोगों के बीच में विचारों का बड़ा जाल बना हुआ था। व्यवस्था में जोड़ी जाने वाली भारी भरकम शर्तें, इस रब्बी ने क्या सोचा या उस रब्बी ने क्या कहा के आधार पर की जाने वाली मांगें, परमेश्वर के प्रकाशन से मिलने वाले जीवन को समाप्त कर रही थीं। परन्तु जब आम लोगों ने यीशु को सुना, जो उन्हें सीधा परमेशवर के प्रेरित वचन की ओर लेकर गया, तो उन्होंने उसकी अधिकारभरी आवाज़ को पहचान लिया। यह परमेश्वर की आवाज़ थी।

“वह अपनी भेड़ों को नाम लेकर बुलाता है।” उन्होंने उसे पहचान लिया; उसने उन्हें पहचान लिया। उसने उन्हें नाम लेकर बुलाया। इसमें एक खूबसूरत सच्चाई है। हम सभी को अपने नाम से पुकारा जाना पसंद है। महायाजक अपने कंधों पर गोमेद पत्थरों में खुदे हुए गोत्रों के नाम लिखकर रखता था; वह उन्हें अपने हृदय पर चपरास के बहुमूल्य रत्नों में धारण किया करता था। मजबूत और कमजोर, हर स्थान पर वह उन्हें लेकर चलता था; वह उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति में ले जाता था। यह जानना कितना अद्भुत है कि हमारा महायाजक, भेड़ों का महान चरवाहा, प्रत्येक व्यक्ति को नाम से जानता है और उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति में ताकत और कमजोरी में संभालता है। वह हममें से किसी को भी नहीं भूलता है।

तौभी, हमें झुंड के द्वारा उसकी स्वीकृति प्राप्त है (10:3ख-4) : “वह अपनी भेड़ों को नाम ले लेकर बुलाता है और बाहर ले जाता है। जब वह अपनी सब भेड़ों को बाहर निकाल चुकता है, तो उनके आगे आगे चलता है, और भेड़ें

उसके पीछे पीछे हो लेती हैं, क्योंकि वे उसका शब्द पहचानती हैं।” दृष्टांत का परिवेश अभी भी पुराने समय के फ़िलिस्तीनी चरवाहे जैसा है। उसने भौंकने वाले कुत्तों से भेड़-बकरियों के झुंड को नहीं घेर रखा। उसने अपनी भेड़ों को नाम लेकर बुलाया। उसने उन्हें चलाया नहीं; उनका नेतृत्व किया। वह उनके आगे आगे चला और वे उसके पीछे हो लीं क्योंकि वे उसे जानती थीं और उस पर भरोसा करती थीं।

प्रभु यीशु अब अपनी भेड़ों को यहूदी धर्म की संकीर्ण सीमा से बाहर ले जा रहा था। उनके अपनों ने उसकी अनुग्रहकारी, सच्चाई और शक्ति से भरी आवाज़ को सुना और पहचाना। वे उसके पीछे चल रहे थे। इस बातचीत को शुरू करने वाला वाकया एक अंधे व्यक्ति का मामला था। वह यीशु की आवाज़ पहचानता था और अब उसका प्रबल अनुयायी था। झूठे यहूदी चरवाहों के पास इस भेड़ का कोई उपयोग नहीं था। सच्चे चरवाहे की चाहत के कारण वे उससे और भेड़ों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए वे यीशु मसीह से नफरत करते थे।

भेड़ें परायों से दूर भागती हैं (10:5) : “परन्तु वे पराये के पीछे नहीं जाएँगी, परन्तु उससे भागेंगी, क्योंकि वे परायों का शब्द नहीं पहचानतीं।” जो कोई भी ऐसे खेत से गुज़रा है जहाँ भेड़ें चर रही हैं, वह इस दृश्य को पहचान सकता है। भेड़ें अजनबियों की ओर आकर्षित नहीं होतीं। वे उनसे भागती हैं। हमें ऐसे लोगों से सावधान रहना है जो परमेश्वर के झुंड के पास जाना चाहते हैं लेकिन अजनबी हैं। भाषण अथवा वाक्य के एक अलग अलंकार का उपयोग करते हुए, पौलुस ने इफिसुस के प्राचीनों (चरवाहों) को चेतावनी दी : “इसलिये अपनी और पूरे झुण्ड की चौकसी करो जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है ...मैं जानता हूँ कि मेरे जाने के बाद फाड़नेवाले भेडिए तुम में आएँगे जो झुण्ड को न छोड़ेंगे” (प्रेरितों 20:28-29)। परमेश्वर के लोग भेड़ों से भी अधिक भोले-भाले हैं। पौलुस ने इफिसियों के पादरियों से कहा : “तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे–ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी–मेढ़ी बातें कहेंगे” (20:30)। कुछ समय बाद, वह अजनबी अजनबी नहीं रहता। वह झुंड के लिए खतरा बन सकता है।

आगे प्रभु श्रोताओं की नीरसता को रेखांकित करता है। “यीशु ने उनसे यह दृष्टान्त कहा, परन्तु वे न समझे कि ये क्या बातें हैं जो वह हम से कहता है। तब यीशु ने उनसे फिर कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूँ, भेड़ों का द्वार मैं हूँ” (10:6-7)। भविष्यवाणी के अनुसार, वह अपने झुण्ड में आ चुका था। अब, वह स्वयं ही द्वार था। वह मृत धर्म से जीवन की ओर निकलने का मार्ग था। द्वार विभाजित करता है, सुरक्षा देता है, खोलता है और पहुँच देता है। यीशु द्वार है।

बाइबल के समय में चरवाहा द्वार था। रात में वह अपनी भेड़ों को बाड़े में ले जाता था जहाँ वे शिकारी जानवरों से सुरक्षित, आराम कर सकती थीं। उसने शुरुआत में ही अपना स्थान ले लिया और “द्वार” बन गया। जब तक वह वहाँ था, कोई भी जानवर अन्दर नहीं आ सकता था। कोई भी बेचैन भेड़ रात में भटक नहीं सकती थी। भोर को वह एक ओर खड़ा होता, और अपनी भेड़-बकरियों को बाहर बुलाकर, गिनता और जांचता, और जिस मार्ग से वह उन्हें ले जाना चाहता था, ले जाता था।

यीशु ने स्वयं को द्वार घोषित कर दिया था। उसके द्वारा, केवल उसके द्वारा, भेड़ों को यहूदी धर्म की जटिल सीमाओं से परे, आत्मिक अनुभव से भरी एक विस्तृत दुनिया तक पहुँच मिल सकती थी।

प्रभु ने अपना दृष्टांत जारी रखा। वह भेड़ों का द्वार ही नहीं, उनका रक्षक भी है। (10:8-15) इस भाग में उसने तीन प्रकार के चरवाहों की चर्चा की है।

उनमें एक है झूठा चरवाहा। (10:8-10) उसने कहा, "जितने मुझ से पहले आए वे सब चोर और डाकू हैं, परन्तु भेड़ों ने उनकी न सुनी" (10:8)। परमेश्वर का समय आये बगैर सच्चा चरवाहा नहीं आ सकता था। मूसा और भविष्यवक्ता चोर और लुटेरे नहीं थे क्योंकि उन्होंने स्वयं को प्रतिज्ञा किया हुआ चरवाहा घोषित नहीं किया था। यूहन्ना बप्तिस्मादाता की तरह उन्होंने आने वाले की ओर इशारा किया। लेकिन, शेष सब धोखेबाज थे। रब्बियों ने सच का स्थान परंपराओं को दे दिया; तोराह के स्थान पर तलमुद (उस समय अपने प्रारंभिक चरण में); ईश्वर प्रेरित लिखित वचन के स्थान पर काल्पनिक मौखिक वचन अथवा व्यवस्था। परन्तु सच्ची भेड़ों ने "उनकी न सुनी।" इसलिए जैसे ही उन्होंने यीशु को सुना, वे पहचान गए कि शास्त्रियों की भारी भरकम, दिखावटी शिक्षाओं और फरीसियों के पवित्र पाखंड में ऐसा क्या था जिनसे वे असहज थे। प्रभु ने स्वयं को इन झूठे चरवाहों के विपरीत बताया।

सच्चा चरवाहा बचाता है। (10:9) "द्वार मैं हूँ; यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करे, तो उद्धार पाएगा, और भीतर बाहर आया जाया करेगा और चारा पाएगा।" प्रभु यीशु मसीह के द्वारा ही हम बचते और नई स्वतंत्रता एवं जीवन के निश्चित आनंद में प्रवेश करते हैं।

सच्चा चरवाहा सुरक्षा प्रदान करता है। (10:10क) "चोर किसी और काम के लिये नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है; मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएँ, और बहुतायत से पाएँ।" चोर भेड़ों के लिए खतरा है। प्रभु उनके चारों ओर अपनी सुरक्षा का घेरा बनाये रहता है।

सच्चा चरवाहा संतुष्टि देता है। (10:10ख) "मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएँ, और बहुतायत से पाएँ।" कैन और शेत के वंशजों के विपरीत, पुराने नियम में एक सर्वश्रेष्ठ उदाहरण मौजूद है। (उत्पत्ति 4:1-5:32) कैन के वंशज शहरों को बनाने वाले, साहसी, खोजबीन करने वाले, आविष्कार करने वाले लोग थे। कला, विज्ञान, विकासशील सभ्यता का परिशोधन, यांत्रिकी, संगीत, विपणन इत्यादि कैनियों के मुख्य आकर्षण थे। निस्संदेह कैनी आत्मिक शेतवंशियों को पैनी निगाहों से देखा करते थे, जिनमें ये कोई योग्यता नहीं थी।

इसके बावजूद, पवित्र आत्मा प्रत्येक शेतवंशी के बारे में कहता है, "वह जीवित रहा।" वास्तव में, वह हर व्यक्ति के बारे में दो बार लिखता है : "वह जीवित रहा।" तेजी से बढ़ रही दुष्ट दुनिया में चुपचाप गवाही की मशाल जलाए हुए, शेतवंशी जीवित रहे। परमेश्वर का आत्मा (हनोक को छोड़कर) प्रत्येक शेती के बारे में यह भी दर्ज करता है

कि "वह मर गया।" उनके लिए मृत्यु समाप्ति नहीं, बल्कि एक संचार था, पृथ्वी के तात्कालिक जीवन से अनंत जीवन की ओर परिवर्तन था।

यीशु आया कि हम जीवन पा सकें और इसे बहुतायत के साथ पा सकें — लेकिन केवल उसकी शर्तों पर। उसकी शर्तों पर, हममें से प्रत्येक के पास अब जीवन है, एक उच्च स्तरीय जीवन, ऐसी भूमि में जीवन जहाँ का दिन कभी धुंधला नहीं पड़ता।

उनमें एक डरपोक चरवाहा है। (10:11-13) झूठे चरवाहे के समान ही, प्रभु यहाँ भी तुलना की बजाय, विरोधाभास के द्वारा शिक्षा देते हैं। हम स्वर्गीय चरवाहे के चिह्न को देख सकते हैं (10:11) : “अच्छा चरवाहा मैं हूँ; अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है।” यहां, इस सन्देश में दूसरी बार, हम प्रभु के ‘मैं हूँ’ कथनों में से एक को देख सकते हैं।

इस अभिव्यक्ति का वास्तविक रूप आकर्षक है : “चरवाहा मैं हूँ, अच्छा चरवाहा।” यह विचार हमें पुराने नियम के चरवाहे के रूप में मसीह के जीवन के प्रकार अथवा तरीके की ओर ले जाता है। वहाँ हम धर्मी चरवाहे हाबिल को, संपन्न चरवाहे याकूब, लौटने वाले चरवाहे मूसा, और राजकीय चरवाहे दाऊद को देख सकते हैं। ये सब भेड़ों के महान चरवाहे यीशु के आंशिक प्रकार अथवा रूप थे।

पवित्र आत्मा इस स्वर्गीय चरवाहे के बारे में प्रमुख तथ्य को रेखांकित करता है: उसने भेड़ों के लिए अपना जीवन दिया।

यह कहानी डी. एल. मूडी और उनके संगीतकार इरा सैंकी की है, जब वे पूरे इंग्लैंड में सुसमाचार सभाओं की यात्रा कर रहे थे। एक पत्रिका को पढ़ते समय सैंकी को एक कविता मिली जिससे वो आकर्षित हुए। उसने यह सोचकर इसे काटकर अपनी जेब में रख लिया कि किसी दिन वह इसके लिए संगीत तैयार करेगा और इसे एक भजन का रूप दे देगा। उस रात मूडी ने अच्छे चरवाहे के रूप में यीशु का प्रचार दिया। सन्देश समाप्त होते ही, वे सैंकी की ओर मुड़े और आगे आकर कुछ गाने को कहा। सैंकी को वह कविता याद आ गई। उसने इसे अपने सामने अपने छोटे से पोर्टेबल ऑर्गन पर सेट किया और गाना शुरू कर दिया। जैसे-जैसे आगे बढ़ता गया, धुन बनाता गया।

बड़े-बड़े पहाड़ों में, गरज के साथ,

और चट्टानी ढलान से,

स्वर्ग के द्वार पर एक आनंद भरी पुकार उठी,

“आनन्द मनाओ! मुझे मेरी भेड़ें मिल गई हैं!”

और स्वर्गदूतों ने सिंहासन के चारों ओर गूँजते हुए कहा,

“आनन्द मनाओ, क्योंकि प्रभु अपनी भेड़ों को वापस लाता है।”

लेकिन छुड़ाए गए लोगों में से किसी को भी यह नहीं पता था कि

पानी कितना गहरा था;

और न ही यह कि वह रात कितनी अंधेरी थी जिससे प्रभु गुज़रे थे,

वह भजन, “नाइन्टी एण्ड नाइन” तुरन्त ही पसंदीदा बन गया।

यीशु ने स्वर्गीय चरवाहे की भाड़े के चरवाहे से विपरीतता बताई है (10:12-13)। भाड़े के चरवाहे में समर्पण की कमी होती है (10:12) : “मजदूर जो न चरवाहा है और न भेड़ों का मालिक है, भेडिए को आते देख भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है; और भेड़िया उन्हें पकड़ता और तितर–बितर कर देता है।” वह परवाह नहीं करता (10:13) : “वह इसलिये भाग जाता है कि वह मजदूर है, और उसको भेड़ों की चिन्ता नहीं।”

धार्मिक अगुवे, भाड़े के चरवाहे थे। भेड़ों में उनका कोई वास्तविक निवेश नहीं था। उन्हें केवल अपनी शक्ति और पद की चिंता थी।

उसके बाद, प्रभु विश्वासयोग्य चरवाहे के बारे में बताता है (10:14-15)। वह उसकी समझ का उल्लेख करता है, (10:14-15क), विशेषकर, अपने झुंड के प्रति (10:14) : “अच्छा चरवाहा मैं हूँ; मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ, और मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं।” यीशु की ओर से हम सर्वज्ञानी होने के दावे को देख सकते हैं। एक बाइबल शिक्षक के रूप में मैंने कई वर्षों तक दूर-दूर तक यात्राएँ की हैं। हजारों लोग मुझे जानते हैं। अक्सर लोग मेरे पास आते हैं, मुझे लिखते हैं या फोन करके याद दिलाते हैं कि वे मुझसे इस जगह या उस जगह मिले थे। उनके लिए मुझे जानना आसान है. लेकिन, मैं सैकड़ों, हजारों से मिलता हूँ। मेरे लिए, उन्हें जानना संभव नहीं है। यीशु ने कहा कि न केवल उसकी भेड़ें उसे जानती हैं, बल्कि वह उन्हें जानता है — हर एक को। वह उन्हें नाम से जानता है, वह जानता है कि वे कहाँ रहते हैं। वह जानता है कि वे कब अपने हो गये। वह उनके व्यक्तित्व और उनकी विशिष्टताओं को जानता है। वह उनके बारे में सब कुछ जानता है।

दूसरा, वह पिता के प्रति उसकी समझ बताता है (10:15क) : “जैसे पिता मुझे जानता है और मैं पिता को जानता हूँ।” अर्थात्, यीशु और झुंड के बीच का ज्ञान ठीक उस प्रकार का था, जैसा पिता और पुत्र के बीच का : संपूर्ण ज्ञान।

प्रभु इस विश्वासयोग्य चरवाहे के बारे में अपनी बात जारी रखता है और उसके समर्पण के बारे में बताता है (10:15ख) : “और मैं भेड़ों के लिये अपना प्राण देता हूँ।”” क्रूस की छाया पहले से ही उद्धारकर्ता के आत्मा पर थी। भेड़ियों के साथ उसका सामना, उसकी मृत्यु के लिए होने जा रहा था। उसे इस बारे में कोई संदेह नहीं था। वह जानता था। उसके पिता को पता था। वे हमेशा से जानते थे।

परन्तु परमेश्वर के मन में इस्राएल राष्ट्र से बढ़कर कुछ और भी था। प्रभु चरवाहे और बाड़े के बारे में बता रहे थे। अब वह चरवाहे और झुण्ड की ओर अपने विचार केंद्रित करता है। (10:16-21) सबसे पहले, प्रभु अपने भविष्य के बारे में बताकर, विषय को आगे बढ़ाता है (10:16-18)। वह एक महान सत्य (10:16) से शुरू करता है : “मेरी और भी भेड़ें हैं, जो इस भेड़शाला की नहीं। मुझे उनका भी लाना अवश्य है। वे मेरा शब्द सुनेंगी, तब एक ही झुण्ड और एक ही चरवाहा होगा।”

झुंड और भेड़शाला (बाड़ा) के बीच बहुत बड़ा अंतर है। बाड़ा इस्राएल राष्ट्र था। बाड़े की पहचान एक सीमा अथवा एक दीवार से होती है। झुंड की पहचान एक केंद्र अथवा चरवाहे के द्वारा की जाती है। यीशु इस महान सत्य की घोषणा कर रहा था कि वह अपनी भेड़ों को इस्राएल राष्ट्र के क्षेत्र से बाहर ले जा रहा है। वह अब एक झुंड इकट्ठा कर रहा था। "इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ें" जिनके पास वह आया था, उन्होंने उसकी पुकार सुनी थी। जिन लोगों ने सुना और उस पर ध्यान दिया, वे एक नया झुंड बन गए, एक बहुत बड़े झुंड का केंद्र, एक झुंड जिसमें यहूदी और गैर यहूदी एक होंगे, एक नया झुंड। "अन्य भेड़ें" जो "इस बाड़े की नहीं हैं" वे गैर यहूदी हैं जो आने वाली शताब्दियों में उस पर विश्वास करेंगी। कितना विशाल झुण्ड बन चुका है ये!

इस झुंड में यहूदी स्थायी अल्पसंख्यक हैं, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता; अब केवल एक ही झुण्ड है। मसीह में यहूदी और गैर-यहूदी के बीच, यूनानी और अन्यजाति के बीच, नस्लों के बीच, लिंगों के बीच, सामाजिक वर्गों के बीच कोई अंतर नहीं है। उसकी सभी भेड़ें इसी झुण्ड की हैं।

जहाँ तक पुराने बाड़े की बात है, यह अभी भी अविश्वास का एक स्मारक है। यीशु के प्रति अपनी शत्रुता के साथ, यहूदी धर्म आज भी फल-फूल रहा है। भौतिक बाड़ा, इस्राएल की भूमि, जर्जर हो गई है और सदियों की लंबी यात्रा के दौरान, कई बार हाथ बदले हैं। आज यहूदी इस पर दोबारा कब्ज़ा करने में सफल हो गए हैं और इसकी मरम्मत और विस्तार कर रहे हैं।

परन्तु जिस चरवाहे को उन्होंने तुच्छ जाना, अस्वीकार किया, उसी पुराने ढांचे के संबंध में परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए वह वापस आ रहा है। इस बीच, परमेश्वर की योजनाओं की एक महत्वपूर्ण इकाई अथवा झुंड है - कलीसिया। (कलीसिया और इस्राएल एवं झुंड और बाड़े के फर्क के बारे में हममे कोई संदेह न हो)

हमारे पास एक बड़ी विजय भी है। (10:17-18) चरवाहा अभी भी स्वयं और अपने भविष्य के बारे में बता रहा है। महान विजय उसके उत्कृष्ट प्रेम में केन्द्रित है (10:17) : “पिता इसलिये मुझ से प्रेम रखता है कि मैं अपना प्राण देता हूँ कि उसे फिर ले लूँ।” पिता और पुत्र के बीच पूर्ण और अनंत समझ है। यह हमेशा समझा जाता था कि यदि परमेश्वर ने सृष्टि में कार्य किया तो वह अवश्य उद्धार के लिए कार्य करेगा, और यदि उसने उद्धार के लिए कार्य किया तो पुत्र को पृथ्वी पर आना होगा, मरना होगा और फिर से जीवित होना होगा। पिता और पुत्र के बीच अनंत प्रेम ने इन सभी चीजों को निर्धारित किया। प्रभु जानते थे कि, पल-पल, स्थिति-दर-स्थिति, वह अपने पिता के प्रेम

में लिप्त था। उस “अनन्त प्रेम,” जिसका आरंभ या अंत नहीं है, का केंद्र प्रभु यीशु के विश्वास और आज्ञाकारिता में था।

महान विजय उसके उत्कृष्ट जीवन में केन्द्रित है (10:18) : “कोई उसे मुझ से छीनता नहीं, वरन् मैं उसे आप ही देता हूँ। मुझे उसके देने का भी अधिकार है, और उसे फिर ले लेने का भी अधिकार है : यह आज्ञा मेरे पिता से मुझे मिली है।” कोई भी साधारण आदमी ऐसा दावा नहीं कर सकता। दरअसल, जहाँ तक उसके शारीरिक जीवन का सवाल है, किसी भी व्यक्ति ने यीशु का जीवन उससे नहीं छीना। उसने स्वयं उन्हें गिरफ्तार करने की अनुमति दी, जबकि वो अपने आप गिरफ्तार करने में निर्बल साबित हो चुके थे (18:4-12)। वह अपने आरोपियों के सामने चुप रहा, हालाँकि स्वर्गदूतों की बारह सेनाएँ उसके बचाव में आने के लिए तैयार थीं। (मत्ती 26:53) उसने स्वयं को क्रूस पर चढ़ने की अनुमति दी, यद्यपि उसने पृथ्वी की नींव को भी हिलाने वाली शक्ति का प्रदर्शन किया था (मत्ती 27:51-52) । उसने सभी आवश्यक भविष्यवाणियाँ पूरी होने तक प्रतीक्षा की और फिर शान से अपने आत्मा को त्यागा (लूका 23:46)। इसलिए, जब सैनिक उसके पैर तोड़ने और उसे जल्दी मारने के लिए करीब आए, तो उन्हें पता चला कि “वह पहले ही मर चुका था।” (यूहन्ना 19:33) प्रभु की मृत्यु स्वैच्छिक, हमारे बदले में और विजयी मृत्यु थी। उसने कहा, “मेरे पास इसे दोबारा लेने की शक्ति है।” और उसने अपने पुनरुत्थान में इसे आक्षरिक रूप से, शानदार ढंग से, एक बार और हमेशा के लिए प्रदर्शित किया।

इस तरह के बयानों पर प्रतिक्रिया तो आनी ही थी। यूहन्ना चरवाहे और उसके साथियों के बारे में बताता है (10:19-21) । यहूदियों में उसी क्षण मतभेद खड़ा हो गया। हम उनकी फूट के कारण पर ध्यान देते हैं (10:19) : “इन बातों के कारण यहूदियों में फिर फूट पड़ी।” यीशु का यह दावा उनकी सोच के बिलकुल परे था कि उसने जीवन देने और उसे दोबारा लेने का अधिकार स्वर्ग के परमेश्वर से प्राप्त किया है। उन लोगों ने भी जो कहीं न कहीं उस पर विश्वास करना चाहते थे, इस दावे के बाद, अपने ढुलमुल विश्वास को मजबूत करने के लिए, अधिक सबूतों की तलाश करना जरूरी समझा।

हम उनकी फूट की पूर्णता पर ध्यान देते हैं (10:20-21)। कुछ लोगों ने उसे बदनाम किया तो कुछ लोगों ने उसका बचाव किया। बहुत से लोगों ने कहा, “उसमें दुष्टात्मा है, और वह पागल है; उसकी क्यों सुनते हो?” (10:20)। यह सिद्धांत कि शैतान अलौकिक चमत्कार कर सकता है, परमेश्वर के चमत्कारों को धोखाधड़ी करार देकर खारिज करना उन्हें सुविधाजनक लगा। परमेश्वर के देहधारी पुत्र के बारे में यह कहना एक भयानक बात थी। दूसरों ने इस आरोप का खंडन करके कहा कि, "ये शब्द ऐसे व्यक्ति के नहीं हो सकते हैं जिसमें शैतान है। क्या शैतान अंधों की आंखें खोल सकता है?" (10:21)

उन्होंने शैतानों के प्रलाप को सुना था। यीशु की आधिकारिक शिक्षाओं का शैतानीय आलापों अथवा कथनों से कोई लेना-देना नहीं था। यहूदियों का ये आरोप बिलकुल बेअर्थ था कि यीशु के करुणामयी, भले और अच्छी तरह से लिखे चमत्कारों का स्रोत शैतान के झूठे चमत्कार थे।

2. उसके ईश्वरत्व पर केंद्र (10:22-42)

जीवन के मार्ग के बारे में बताते वक़्त अभी तक, प्रभु अपनी मृत्यु की ओर इशारा करते रहे हैं, जो खुद के बाड़े की भेड़ों को खाली करने और दुनिया भर से इकट्ठा करने में प्रमुख घटना है। अब यीशु अपने ईश्वरत्व पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। (10:22-42) उनकी चुनौती पर की गई उसकी प्रतिक्रिया को देखते हैं। (10:22-30)

हम अवसर को देखते हैं। (10:22-23) : “यरूशलेम में स्थापन पर्व मनाया जा रहा था; और जाड़े की ऋतु थी।” (10:22) एंटिओकस एपिफानस के भयानक दिनों में यरूशलेम मंदिर को तीन साल (167-164 ईसा पूर्व) तक अशुद्ध किया गया था। सीरियाई सम्राट ने ईश्वरीय वेदी के ऊपर अन्य देवों की वेदी ("उजाड़ने की घृणित वस्तु") बनवाई थी। यहूदी क्रान्तिकारी जुडस मैकाबियस ने मंदिर के स्थान को पुनः प्राप्त किया और मंदिर को शुद्ध किया। 25 किसलेव (14 दिसंबर) को मंदिर का पुनः समर्पण हुआ और यहूदियों के द्वारा इसे हर साल खुशी की दावत के रूप में मनाया जाता था। अर्पण पर्व आठ दिनों तक चला। उत्सव को अक्सर रोशनी का त्योहार भी कहा जाता था, इस अवसर की याद में अपने घरों में दीपक जलाने की यहूदी प्रथा के कारण, यदि यीशु मसीह के जन्म की पारंपरिक तारीख सही है, तो दावत उसके जन्मदिन के समय में रखी जाती थी। जिन घटनाओं पर हम चर्चा कर रहे हैं (7:1-10:21), वे तम्बू के पर्व से जुड़ी हुई प्रतीत होती हैं। 10:22 बजे शुरू होने वाले कार्यक्रम समर्पण के पर्व से जुड़े हैं। इस प्रकार दो महीनों की कथा में एक अंतराल है — ऐसा प्रतीत होता है कि प्रभु ने यरूशलेम में और उसके आसपास समय बिताया था।

यूहन्ना ने हमें याद दिलाया कि यह सर्दी का मौसम था। “यीशु मन्दिर में सुलैमान के ओसारे में टहल रहा था” (10:23)। सुलैमान का ओसारा या स्तंभ, ढ़का हुआ बरामदा था जो हेरोदेस के मंदिर के बाहरी प्रांगण के पूर्व तक बढ़ा हुआ था। यह एक लोकप्रिय स्थान था जिसे प्रेरितों के काम 3:11 में उस स्थान के रूप में दिखाया गया है जहाँ पतरस ने लंगड़े आदमी को चंगा किया था और प्रेरितों के काम 5:12 में मसीही विश्वासियों की बैठक के रूप में दिखाया गया है। यह "सर्दी का मौसम था" और प्रभु वहां पर थे जिससे कुछ आसरा मिला। यहीं पर एक और चुनौती आई।

अब आती है घटना। (10:24-30) हम देखते हैं कि यहूदी खुले तौर पर खुद की घोषणा करने की चुनौती दे रहे थे : “तब यहूदियों ने उसे आ घेरा और पूछा, तू हमारे मन को कब तक दुविधा में रखेगा? यदि तू मसीह है तो हम से साफ साफ कह दे” (10:24)। अब तक प्रभु ने केवल यरूशलेम के यहूदियों को ही नहीं, वरन कुएं पर मौजूद महिला के सामने भी प्रकट किया था कि वह मसीहा है। (सामरियों के बीच, इस नाम का अर्थ अधिक धार्मिक था, जबकि यहूदियों में इसको राजनीति और ताकत के साथ जोड़कर देखा जाता था)

अश्शूर की बंधुआई से यरूशलेम को मिली आज़ादी की याद में मनाया जाने वाला शायद समर्पण का यह पर्व यहूदियों को मजबूर कर रहा था कि यीशु से ऐसी घोषणा करवाए। यदि वह मसीहा था, अपने अजीबोगरीब बयानों को बंद करने का सही समय था। यदि उसके दावे सच थे, तो जरुरी था कि घोषणा करे और राष्ट्र को

रोमियो से मुक्त करा लें। और चूंकि सुलेमान का ओसारा एक सार्वजनिक स्थान था, खुला प्रदर्शन करने का उनके पास सही मौका था।

यीशु मसीह ने अपने उत्तर में दो प्रकार की गवाही की ओर संकेत किया। पहला, उसके कार्यों की गवाही (10:25-29)। सबसे पहले, उसने उन्हें बताया कि उन्होंने क्यों (10:25-26) विश्वास नहीं किया : "यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, मैं ने तुम से कह दिया पर तुम विश्वास करते ही नहीं। जो काम मैं अपने पिता के नाम से करता हूँ वे ही मेरे गवाह हैं, परन्तु तुम इसलिये विश्वास नहीं करते क्योंकि मेरी भेड़ों में से नहीं हो।" प्रभु इस दौरान भी राजनीति से भरे मसीहा शब्द से बचते रहे। लेकिन वे संदेह कैसे कर सकते थे? उनके पास उसके कार्यों के प्रमाण थे। उसके पास सदा दोहराया जाने वाला एक दावा कि परमेश्वर उसका पिता है, जिसके नाम पर वह सब कुछ किया करता था। प्रभु ने अच्छे चरवाहे रुपी अपने ताज़े दावे की भी याद दिलायी। एक राजा के चरवाहा होने का विचार इतना प्रसिद्ध था कि उसे और अधिक विस्तार से बताने की आवश्यकता नहीं थी। (उदाहरण के लिए, दाऊद चरवाहा और राजा था) वे उसे इसलिए नहीं पहचान सके क्योकि स्पष्ट कहें, तो वे उसकी भेड़ नहीं थे।

फिर उसने उन्हें क्या ऐसा बताया (10:27-29) जिस पर वे कभी भी विश्वास नहीं कर सकते थे। उन्होंने उसकी अपनी भेड़ के स्पष्ट संकेत (10:27) को स्वीकार करने से इनकार कर दिया : "मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं; मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं।" प्रभु के लोग उसकी आवाज़ को पहचानते हैं और उसके वचन पर प्रतिक्रिया देते हैं। यह आंतरिक विश्वास का बाहरी प्रमाण है। मान्यता पारस्परिक है।

लेकिन इसमें केवल इससे कुछ अधिक भी है। उसकी अपनी भेड़ों को अनंत सुरक्षा मिलती है (10:28-29) : "और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ। वे कभी नष्ट न होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा। मेरा पिता, जिसने उन्हें मुझ को दिया है, सबसे बड़ा है और कोई उन्हें पिता के हाथ से छीन नहीं सकता।" विश्वासियों की अनंत सुरक्षा का यह कथन केवल रोमियों 8 में दिए गए पौलुस के आश्वासन से मेल खाता है। हम देख सकते हैं कि अनंत जीवन पर हमारे अधिकार को वर्तमान एवं निरंतर काल में बताया गया है। हमें यह पता लगाने के लिए मरने तक इंतजार करने की ज़रूरत नहीं है कि क्या हमने उद्धार पा लिया है या नही। हमें वर्तमान आश्वासन दिया गया है।

हम यहाँ एक शानदार तस्वीर देख सकते हैं जिसमें यीशु मसीह का, पिता परमेश्वर का सर्वशक्तिमान हाथ हमें घेरे हुए है। हम परमेश्वर में, मसीह में सुरक्षित हैं।

पुराने नियम का एक उदाहरण नूह है। जब जहाज़ पूरा बन गया, तो परमेश्वर ने उसे अंदर बंद कर दिया। न्याय का तूफ़ान अपने पूरे क्रोध में आ पड़ा था। स्वर्ग के झरोखे खुल गए। गहरे पानी के सोते फुट पड़े। लेकिन नूह सुरक्षित था। वह जहाज़ में था। न्याय का जल जहाज पर गिरा, उस पर नहीं। इसी प्रकार, हमारा भी "जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा है" (कुलुस्सियों 3:3)।

अब यीशु अपने वचन की गवाही की ओर इशारा करता है (10:30)। उसने कहा, "मैं और पिता एक हैं।" वे मन, विचार, हृदय, इच्छा, उद्देश्य और कार्य में एक हैं। सच है, लेकिन इसका अर्थ इससे भी अधिक है। यूनानी भाषा में, 'एक' शब्द नपुंसकलिंग है — "मैं और पिता एक हैं" - व्यक्तित्व में नहीं, सार रूप में। यह कथन यीशु के द्वारा पिता के शक्ति में उसकी समानता ("मेरा हाथ, मेरे पिता का हाथ") के बारे में किये गए दावे से पैदा हुआ है। यीशु ने जिस अनंत सामर्थ्य का दावा किया था, वह परमेश्वर का एक गुण है।

यह पिता के साथ एकता के प्रभु के दावे का सर्वोत्कृष्ट रूप है। (10:18, 25, 28, 29) उसका उत्तर उनकी अपेक्षा से कहीं अधिक था। वह केवल मसीहा के रूप में आने वाला मसीह नहीं था; उसने परमेश्वर के साथ समानता का दावा किया था। यह उनके प्रश्न का उत्तर था।

यीशु का स्पष्ट दावा उसी सार का था जैसा कि परमेश्वर ने यहूदियों को उसकी चुनौती के सामने प्रतिक्रिया करने के लिए उकसाया था। (10:31-42) हम उससे छुटकारा पाने के उनके दृढ़ संकल्प (10:31-39) को देख सकते हैं। उन्होंने उसके ख़िलाफ़ दो चालें चलीं। पहली चाल (10:31-38) के दो भाग हैं। ध्यान दें कि उन्होंने क्या प्रयास किया (10:31-33)। "यहूदियों ने उस पर पथराव करने को फिर पत्थर उठाए" (10:31)। उन्होंने पहले भी एक बार ऐसा किया था जब उन्होंने खुद को 'मैं हूँ' (8:58-59) घोषित किया था। यहां उपयुक्त शब्द "उठाए " जब्त की गई वस्तु की बजाय, वजनदार वस्तु की ओर इशारा करता है। जाहिर तौर पर, उन्होंने अपना गोला-बारूद मंदिर के कार्य स्थल से निकाला होगा। इस बार उनका इरादा उसे ख़त्म करने का था। उन्होंने परमेश्वर होने के उसके स्पष्ट दावों को समझा, जो उनके अनुसार, सबसे बड़ी निंदा थी। परन्तु उन्होंने वे पत्थर उस पर फेंके नहीं। उसका समय अभी नहीं आया था, न ही वह इस तरह से मरने आया था। एक संयमित हाथ ने उन्हें रोक लिया। शायद, प्रभु के नरम उत्तर ने भी उन्हें विराम दिया, और पत्थर गिरा दिये गये।

"इस पर यीशु ने उनसे कहा, मैं ने तुम्हें अपने पिता की ओर से बहुत से भले काम दिखाए हैं; उन में से किस काम के लिये तुम मुझ पर पथराव करते हो?" क्या तुम मुझ पर इसलिए पथराव करना चाहते हो कि मैंने एक जन्म से अंधे व्यक्ति को आँखें दीं? या बेतसैदा कुंड के पास अड़तीस साल से पड़े बीमार को चंगा किया? या मैंने कोढ़ियों को शुद्ध किया, या मरे हुओं को जिलाया, या दुष्टात्माओं को निकाला या गूंगों को बोलने, बहरों को सुनने और लंगड़ों को चलने योग्य बनाया? या भूखी भीड़ को खिलाया? उसने अपने हर दावे के प्रमाण के रूप में अपने अच्छे कार्यों, सर्वशक्तिमान के कार्यों की ओर इशारा किया। उसका हर कार्य पूरी तरह से मान्यता प्राप्त था।

परन्तु उन्हें उसकी शक्ति के प्रमाणों को जानने में ज़रा भी दिलचस्पी नहीं थी। इसके विपरीत, वे और अधिक गुस्से और आरोप के साथ आये। "यहूदियों ने उसको उत्तर दिया, भले काम के लिये हम तुझ पर पथराव नहीं करते परन्तु परमेश्वर की निन्दा करने के कारण; और इसलिये कि तू मनुष्य होकर अपने आप को परमेश्वर बनाता है" (10:33)। उन्होंने कहा, यह साधारण ईशनिंदा नहीं है, एक व्यक्ति परमेश्वर के बारे में अपमानजनक बयान दे रहा

है। उसने बहुत सरे दावे किये हैं। वह स्वयं को केवल परमेश्वर से संबंधित विशेषाधिकार वाला व्यक्ति समझ रहा था। जो वास्तव में सच था। वह सिर्फ एक आदमी नहीं था, शरीरधारी परमेश्वर था।

हमने देखा कि उनकी कोशिश क्या थी। अब यूहन्ना हमें दिखाता है कि उसका क्या प्रयास था (10:34-38)। वह उनके स्तर पर उतरकर आये और एक ऐसा तर्क पेश किया जो फरीसी दिमाग को पसंद था। इतना ही नहीं, उसने उनके पवित्रशास्त्रो का भी उल्लेख किया। यहाँ हम परमेश्वर के लिखित वचन के प्रति यीशु मसीह के आदर और भक्ति को देख सकते हैं। उसने हमेशा पवित्रशास्त्र को ईश्वरीय, प्रेरणा-प्राप्त, आधिकारिक और त्रुटिहीन बताया।

उसने पूछा, “क्या यह आपकी व्यवस्था में नहीं लिखा है?” व्यवस्था नामक शब्द इब्रानी बाइबल के लिए एक व्यापक शब्द है। वास्तव में, प्रभु ने उनसे भजन संहिता 82:6 का उल्लेख किया था, जहाँ पवित्र आत्मा की प्रेरणा में, भजनकार इस्राएल नामक ईशतंत्रीय राष्ट्र के नागरिक शासकों को “प्रभु (एलोहीम)” कह रहा था। भजनकार के शब्दों से स्पष्ट है कि ये लोग अधर्मी न्यायी थे, फिर भी, स्वर्गीय धर्मी न्यायी के प्रतिनिधि के रूप में, उनका पद ऐसा था कि जिन्हे वास्तव में एलोहीम कहा जाता था। इस प्रकार भजनहार उनके पद की गरिमा को वापिस उनकी ओर लौटा रहा था।

एलोहिम शब्द का प्रयोग 82वें भजन में सांसारिक न्यायियों के लिए किया गया था, जिन्हें उनके उच्च पद के आधार पर परमेश्वर का वचन सौंपा गया था। यही शब्द मूसा के लिए भी प्रयुक्त होता है। “सुन, मैं तुझे फ़िरौन के लिये परमेश्वर सा ठहराता हूँ” (निर्गमन 7:1), क्योंकि मूसा उस दुष्ट राजा के सामने परमेश्वर के स्थान पर खड़ा था। यह शब्द सामान्यतः न्यायियों के लिए भी प्रयोग किया जाता है। (निर्गमन 21:6; 22:8, 9, 28) यह स्पष्ट है कि पवित्र आत्मा ने इस्राएल में न्यायियों के पद को इतनी गरिमा प्रदान की थी कि जो लोग न्यायियों के रूप में कार्य करते थे उन्हें “एलोहीम” कहा जाता था क्योंकि वे इस क्षमता में परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करते थे। इस शब्द का प्रयोग अन्यायी न्यायियों के लिए भी किया जाता है क्योंकि उनके कार्यालय की जिम्मेदारी बहुत अधिक होती है।

यह पृष्ठभूमि बताती है कि किस प्रकार प्रभु, परमेश्वर होने के दावा करते हैं। निस्संदेह, यहूदी, पुराने नियम के एलोहिम नामक उपयोग से काफी परिचित थे। प्रभु ने उन्हें इसकी याद दिलाई : “यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, क्या तुम्हारी व्यवस्था में नहीं लिखा है, ‘मैं ने कहा, तुम ईश्वर हो’? यदि उसने उन्हें ईश्वर कहा जिनके पास परमेश्वर का वचन पहुँचा (और पवित्रशास्त्र की बात असत्य नहीं हो सकती), तो जिसे पिता ने पवित्र ठहराकर जगत में भेजा है, तुम उससे कहते हो, ‘तू निन्दा करता है,’ इसलिये कि मैं ने कहा, ‘मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ’?” (10:34-36).

हम देख सकते हैं कि प्रभु क्या कह रहे थे। यदि अच्छे या बुरे लोगों को एलोहीम की उपाधि देना ईशनिंदा नहीं था, जिनका ईश्वरीयता से बहुत दूर का (केवल अपने पवित्र पद के आधार पर) सम्बन्ध था, तो यह उसके लिए ईशनिंदा कैसे हुई, जो परमेश्वर का पुत्र है, पवित्र है, अलग किया गया है और जिसे पिता ने जगत में यह कहने के

लिये भेजा है कि मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ? उन अयोग्य एवं प्राचीन एलोहिमों और यीशु के बीच बहुत बड़ी दूरी थी। स्वयं के बारे में सच बताना ईशनिंदा नहीं थी।

एक बार फिर उन्होंने पवित्रशास्त्र की पवित्रता का समर्थन किया। उसने कहा, "पवित्रशास्त्र को तोड़ा मरोड़ा नहीं जा सकता।" सदियों से कई दुष्ट लोगों ने पवित्रशास्त्र को तोड़ने की कोशिश की, लेकिन उनकी कोशिश व्यर्थ रही। बाइबल से छुटकारा पाने के लिए डायोक्लेटियन ने विश्व साम्राज्य की ताकत का इस्तेमाल किया। वोल्टेयर ने पवित्रशास्त्र की एक प्रति उठाई और एलान किया कि वह बाइबल को मुर्दाघर में रख देगा। ज्यादा समय नहीं बीता, वह स्वयं मुर्दाघर में जा पड़ा, और जिनेवा बाइबल सोसायटी ने उसके घर को बाइबल गोदाम के रूप में इस्तेमाल किया। वामपंथियों ने लोगों की पीढ़ियों को फिर से शिक्षित करने की पूरी कोशिश की और पवित्रशास्त्र का तिरस्कार किया, लेकिन उन्हें नष्ट नहीं कर पाए। सदियों तक, रोमी कलीसिया ने बाइबल को लोगों के हाथों में नहीं आने दिया। आधुनिक उदारवादी पवित्रशास्त्र के बारे में अपने परमेश्वर का अपमान करने वाले एवं तर्कसंगत सिद्धांतों से लाखों लोगों के दिमागों को प्रभावित करते रहे हैं, लेकिन सब व्यर्थ। “पवित्रशास्त्र को तोड़ा नहीं जा सकता।”

मुझे एक पुरानी निघाती अर्थात् एनविल की याद आती है जो मेरे बचपन में मेरे पिता की कार्यशाला में लगी हुई थी। कई वर्षों में उस निघाती ने कई हथौड़ों को तोडा था। लेकिन इस पर इस्तेमाल किया गया कोई नहीं हथौड़ा कभी नहीं टूटा।

फिर से, प्रभु ने यहूदियों को अपने कार्यों की ओर संदर्भित किया - उनके दृढ़ अविश्वास के सामने उनका अटल तर्क : “यदि मैं अपने पिता के काम नहीं करता, तो मेरा विश्वास न करो। परन्तु यदि मैं करता हूँ, तो चाहे मेरा विश्वास न भी करो, परन्तु उन कामों का तो विश्वास करो, ताकि तुम जानो और समझो कि पिता मुझ में है और मैं पिता में हूँ” (10:37-38)। वह इन लोगों से प्यार करता था। यदि वे केवल उसके कार्यों पर विश्वास करते, तो उन्हें उस पर विश्वास करने में अधिक समय नहीं लगता। हाँ, और उसके और उसके पिता के बीच मौजूद अनोखे रिश्ते को देखने आएं।

उन्होंने उसके ख़िलाफ़ पहली चाल चल दी थी। (10:31) अब वे उसके विरुद्ध अगले कदम बढ़ाते हैं (10:39) : “तब उन्होंने फिर उसे पकड़ने का प्रयत्न किया परन्तु वह उनके हाथ से निकल गया।” उन्होंने स्पष्ट बात कहने की मांग की थी। उसने उत्तर दे भी दिया था। उन्होंने पत्थर उठा लिए, लेकिन फेंक नहीं सके। वे उसे गिरफ़्तार कर, ईशनिंदा का गंभीर आरोप लगाकर, महासभा के सामने पेश करने वाले थे। लेकिन वे उसे छू नहीं पाए। उसका समय अभी नहीं आया था।

यूहन्ना अब उसके प्रस्थान को दर्ज करता है। (10:40-42) हम ध्यान दें कि वह कहाँ गया (10:40) : “फिर वह यरदन के पार उस स्थान पर चला गया, जहाँ यूहन्ना पहले बपतिस्मा दिया करता था, और वहीं रहा।” यह दिसंबर का समय था। अप्रैल तक वह बैतनिय्याह से दूर रहा (11:1) और अधिकांश समय एप्रैम (11:54) में बिताया। अगली बार जब वह यरूशलेम आता तो यहूदी उसे अवश्य मार डालते।

यीशु अब उस स्थान पर वापस चला गया जहाँ यूहन्ना बपतिस्मादाता ने उसे सबसे पहले मसीहा के रूप में पहचाना था। यह राष्ट्र को दिया गया एक मौन सन्देश था कि वह वही है, जो वह कहता और दावा करता है। यादों को बोलने दो।

हम यह भी देखते हैं कि वह क्यों गया। (10:41-42) दो कारण थे। एक कारण, बपतिस्मा देने वाले पर केंद्रित था (10:41) : “बहुत से लोग उसके पास आकर कहते थे, यूहन्ना ने तो कोई चिह्न नहीं दिखाया, परन्तु जो कुछ यूहन्ना ने इसके विषय में कहा था, वह सब सच था।” इसमें थोड़ा संदेह हो सकता है कि यूहन्ना बप्तिस्मादाता की यादें उस जगह पर अभी भी जीवित थीं। लोगों को याद आया कि यूहन्ना ने कैसे यीशु की पहचान बताई थी।

"उन्होंने कहा, यूहन्ना ने तो कोई चिह्न नहीं दिखाया।" वह यूहन्ना की महानता का हिस्सा था। परमेश्वर कभी भी चमत्कारों को अधिक महत्व नहीं देता। वचन में केवल कुछ महत्वपूर्ण मोड़ों पर चमत्कारों का वर्णन किया गया है। इस्राएल को मिस्र से निकालने, जंगल के रास्ते चलाने, और कनान तक पहुँचाने के लिए चमत्कार हुए; फिर वे रुक गए। एलिय्याह और एलीशा के दिनों में चमत्कार हुए, उस विश्वासत्याग के विरोध में जो इस्राएल और यहूदा दोनों को धूल में मिला देता; फिर चमत्कार रुक गए। दानिएल के दिनों में चमत्कारों की एक संक्षिप्त बाढ़ आई, जिससे यहूदा, शाही एकाधिकार से एक निर्भरता के शासन में आ पाया; फिर चमत्कार रुक गए। यीशु मसीह और उसके प्रेरितों के दिनों में, उसे और कलीसिया, दोनों को मान्यता देने के लिए चमत्कार हुए; फिर रुक गए। कलीसिया के उठाने जाने के बाद चमत्कारों की एक संक्षिप्त लड़ाई होगी, जब परमेश्वर के दो गवाह और शैतान के दो जानवर अपने चिह्न दिखाएंगे; लेकिन फिर वे रुक जायेंगे।

समय का बड़े हिस्से में कोई चमत्कार नहीं दिखाया गया है। क्योंकि, जब सब कुछ कहा और किया जाता है, तो चमत्कार अविश्वासियों के लिए एक संकेत है। उन्हें इसके द्वारा समझाया जाता है। हमने अभी देखा कि मसीह के चमत्कारों के प्रमाणों पर विश्वास करने से इनकार करने में यहूदी कितने अड़ियल थे।

"यूहन्ना ने कोई चमत्कार नहीं किया।" लोगों ने उसकी बातों से ही विश्वास कर लिया था। यह ध्यान देने योग्य बात है कि ऊपर लिखे हर चमत्कार के बाद, परमेश्वर का लिखित वचन आता है। मूसा और यहोशू के चमत्कारों ने पंचग्रंथ, प्रारंभिक इतिहास, दाऊद के भजन, सुलैमान की बौद्धिक पुस्तकों को सामग्रियां प्रदान कीं। एलिय्याह और एलीशा के चमत्कारों ने यशायाह, यिर्मयाह और उनके सहयोगी भविष्यवक्ताओं को लिखने का मार्ग तैयार किया। बेबीलोन में किए गए चमत्कारों के बाद विस्थापन-परान्त भविष्यवाणियों की पुस्तकों को लिखा गया। यीशु और प्रेरितों के चमत्कारों का स्थान सुसमाचारों और पत्रियों ने ले लिया।

जो लोग आज चमत्कारों की लालसा रखते हैं, वे इस कथन को रेखांकित करें, "यूहन्ना ने कोई चमत्कार नहीं किया," फिर भी उसका शब्द शक्तिशाली और प्रभावी था। मसीह का वचन भी शक्तिशाली और प्रभावशाली रहा है। परमेश्वर का मकसद लोगों को उस विश्वास में लाना है जो चमत्कारों पर नहीं बल्कि उसके वचन पर आधारित हो। "यूहन्ना ने कोई चमत्कार नहीं किया; परन्तु जो कुछ यूहन्ना ने इस मनुष्य के विषय में कहा था, वह सब सच था।" मरने के बावजूद, यूहन्ना बोल रहा था।

इसलिए यीशु उस स्थान पर गया जहाँ से उसकी सार्वजनिक सेवकाई शुरू हुई थी। एक कारण, विश्वासी पर केन्द्रित था (10:42) : “और वहाँ बहुतों ने यीशु पर विश्वास किया।” “वहाँ” नामक शब्द महत्वपूर्ण है, उनके विश्वास को उस अविश्वास से अलग करने के लिए जिसका प्रभु ने यरुशलेम में सामना किया था - और उसके चमत्कारों के प्रति अविश्वास को बोले गए शब्द पर केंद्रित विश्वास से अलग करने के लिए। सच्चा विश्वास

परमेश्वर पर उसके वचन के आधार पर किया जाता है। इसे मजबूत करने के लिए किसी चमत्कार की आवश्यकता नहीं होती।

इस प्रकार प्रभु ने यरूशलेम के यहूदियों के साथ अपने अंतिम टकराव से पहले विश्राम किया, और उन लोगों के सच्चे विश्वास पर भरोसा किया जिन्होंने उस पर भरोसा किया था क्योंकि वह वही था, बदला नही था, उसके कार्यों के आधार पर नही।

हम यीशु के कई अद्भुत चमत्कारों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं। लेकिन हम परमेश्वर को उसके जीवन, सिखाई गई सच्चाईयाँ, उसकी मृत्यु और परमेश्वर की दाहिनी ओर अपनी सेवकाई करते रहने के लिए और भी अधिक धन्यवाद देते हैं।

हम परमेश्वर के पुत्र के चिह्नों पर विचार करते आ रहे हैं। पहले भाग में उनकी ईश्वरीयता की घोषणा की गई और दूसरे भाग में उनकी ईश्वरीयता पर वाद विवाद किया गया। अब हम तीसरे भाग में आ गए हैं, जहाँ उनकी ईश्वरीयता का अनादर किया गया है। पहले हम उसे इनकार किये जाने के कुछ उदाहरणों और फिर कुछ स्पष्टीकरणों पर विचार करेंगे।

भाग 3 – उसके ईश्वरत्व का अनादर (11:1-12:50)

I. उसके तिरस्कार के कुछ उदाहरण (11:1-12:36)

हम लाज़र को जी उठाने की कहानी से कभी नहीं थकेंगे। यह अंधकार के क्षेत्र में प्रकाश डालती है, मृत्यु के राज के अधीन जीवन लाती है और कब्र से उसके आतंक को दूर करती है। यह एक सच्चा चमत्कार था, लेकिन हम देख सकते हैं कि यीशु मसीह की असीम सामर्थ्य के कार्य के बावजूद, उसे अस्वीकार कर दिया गया।

A. अपनी सामर्थ्य के बड़े कार्य के बावजूद ठुकराया गया (11:1-12:11)

हमारे सामने विचार विमर्श करने के लिए एक अद्भुत पुनरुत्थान और एक अद्भुत प्रतिक्रिया है।

1. एक अद्भुत पुनरुत्थान (11:1-46)

हम बुलावों से शुरू करते हैं (11:1-16)। कहानी प्रभु और उसके मित्रों के साथ शुरू होती है। (11:1-6) यीशु मसीह की सार्वजनिक सेवकाई से जुड़े सात चमत्कार, और आठ में से यूहन्ना के द्वारा चुने गए सात "चिह्नों" का आरंभ और अंत एक एक परिवार के साथ होता है, एक गलील के काना में और एक यहूदिया के बैतनिय्याह में। एक विवाह में था, तो दूसरा अंतिम संस्कार में — जीवन का सबसे सुखद और सबसे दुखद समय। एक में उसने पानी को दाखरस बनाया, दूसरी ओर, उसने कब्र पर विजय प्राप्त की। दोनों चमत्कार मानवीय रूप से असंभव थे। एक ने यीशु मसीह को सृष्टिकर्ता परमेश्वर के रूप में, तो दूसरे ने उसे जीवनदाता के रूप में प्रकट किया।

इस घटना में हम एक विशेष परिवार से शुरू करते हैं (11:1-2) : "मरियम और उसकी बहिन मार्था के गाँव बैतनिय्याह का लाज़र नामक एक मनुष्य बीमार था।" यूहन्ना हमें यह बताते हुए आगे की पहचान जोड़ता है कि "यह वही मरियम थी जिसने प्रभु पर इत्र डालकर उसके पाँवों को अपने बालों से पोंछा था, इसी का भाई लाज़र बीमार था" (11:2)। नए नियम में छः मरियमों के बारे में लिखा है, इसलिए यह पहचान सहायक है। यूहन्ना वास्तव में अभिषेक की घटना को तब तक नहीं बताता है जब तक उसका सही स्थान न आ जाए और वह सही स्थान अगला अध्याय है।

बैतनिय्याह जैतून पर्वत की पूर्वी ढलान एवं यरीहो के राजमार्ग पर बसा हुआ एक गाँव था। एक भाई और दो बहनों वाले परिवार में आपसी रिश्ता गहरा था। ऐसा प्रतीत होता है कि यह एक ऐसा घर है जहाँ यीशु अक्सर आया जाया करते थे, यह यीशु के लिए अपने घर से दूर एक घर था।

शांति से भरे बैतनिय्याह के इस घर में अचानक से भय आ धमका (11:3), इतना बुरा कि लाज़र बीमार हो गया। यहां प्रयुक्त शब्द ("बीमार था") बड़ी कमजोरी और थकान की ओर इशारा करता है। सुसमाचारों में इसे आम तौर पर "बीमारी" और पौलुस की पत्रियों में "कमजोरी" कहा गया है। बेतसैदा के कुंड के किनारे पड़े व्यक्ति की असहाय हालत को बताने के लिए उपयुक्त शब्द "रोगी" (असमर्थ) का भी इसी अर्थ के साथ उपयोग किया गया है (5:7)। बहनों से पूछा जाए तो उससे भी बुरा यह था कि यीशु उनसे दूर था। उन्हें इसमें कोई संदेह नहीं था कि यदि वह यरूशलेम में होता तो वह बैतनिय्याह की दो मील की दूरी को आसानी से तय कर लेता और अपने मित्र को ठीक कर देता।

अब जो बात सामने आई, उसने उन्हें उलझन में डाल दिया होगा। उन्होंने यीशु के पास संदेश भेजा : "हे प्रभु, देख, जिससे तू प्रीति रखता है (फिलेओ), वह बीमार है।" उसका मित्र, जिससे वह भाई जैसा प्रेम रखता था, बहुत बीमार (कमजोर, निराश) था। स्थिति निराशाजनक थी।

उस समय प्रभु यरूशलेम से लगभग पच्चीस मील दूर, पेरिया में यरदन के पार बेथबारा में थे। हम तस्वीर देख सकते हैं कि एक व्यक्ति अत्यावश्यक संदेश देने की जल्दबाजी में जा रहा है। हम उन चिंतित बहनों की भी तस्वीर देख सकते हैं, जो अपने भाई की मृत्यु शैय्या के पास इस उम्मीद में बैठी हैं कि यीशु समय पर आएँगे - या शायद यह भी उम्मीद रही होगी कि वह दूर से ही अपने भाई को ठीक कर देंगे, जैसा कि उन्होंने अन्य अवसरों पर दूसरों के लिए किया था?

लेकिन उन्होंने उसे संदेश भेजने के लिए इतना लंबा इंतजार क्यों किया? शायद उन्होंने सोचा होगा कि यीशु को बिना बताए ही इस बात का पता चला जाएगा? और यदि वह जानता था, तो उसने कदम क्यों नहीं उठाया? उनके दिलों में डर बैठ गया होगा। लाज़र मर रहा था; शायद उन्होंने बहुत देर तक चीजों को अपने आप होने का मन बना लिया था।

अब उनके सामने एक स्पष्ट विफलता आती है (11:4-6)। हम मरियम की कल्पना कर सकते हैं जो मरते हुए लाज़र के पास बैठकर, उसकी जरूरतों को पूरा कर रही है। हम मार्था की कल्पना कर सकते हैं, जो काम करने में लगी है, बाहर जा रही है, और हर वक़्त अपनी आँखों को बाहर की ओर लगाए हुए है कि उसे पता चल सके जैसे ही यीशु उनके रास्ते पर आता है। हम उनके आश्चर्य की भी कल्पना कर सकते हैं जब भेजा गया संदेशवाहक अकेला लौटता है। उनकी बातचीत कुछ इसी तरह हुई होगी :

"यीशु कहाँ हैं?"

"वह अभी भी बेथबारा में है।"

"क्या वह आ रहा है?"

"मुझे नहीं लगता। उसने कहा था, "यह बीमारी मृत्यु की नहीं; परन्तु परमेश्वर की महिमा के लिये है, कि उसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो" (11:4)।

हम कल्पना कर सकते हैं कि बहनें सामने दिख रही इस सच्चाई के सामने कितनी स्तब्ध थीं कि लाज़र तो मर चुका था। और उन्होंने उसका अंतिम संस्कार भी कर दिया था, उसे पारिवारिक कब्र में दफना दिया था। और यीशु नहीं आये। वे इस स्पष्ट विफलता की व्याख्या कैसे करें?

हम इस कहानी को अय्यूब की कहानी के समान पढ़ सकते और हैं, यह जानने के लिए कि यह त्रासदी क्यों घटी और इसका सुखद अंत कैसे हुआ। लेकिन, अय्यूब की तरह मार्था और मरियम को यह ज्ञान नहीं था। ऐसा लग रहा था कि यीशु उस समय चुप रहे, जब उन्हें बोलना था। ऐसा लग रहा था कि उसने उन्हें निराश कर दिया — ठीक वैसे ही, जब हम बड़ी जरुरत के साथ प्रार्थना करते हैं और हमें कोई उत्तर नहीं मिलता है, या उत्तर गलत लगता है।

यूहन्ना हमें यीशु के पास वापस ले जाता है। यूहन्ना स्वयं और दूसरे चेले भी असमंजस में थे। प्रभु का तर्क (11:4) बिल्कुल स्पष्ट था। बीमारी का अंत मृत्यु नहीं था। मृत्यु हस्तक्षेप अवश्य करेगी, लेकिन अंत मृत्यु नहीं होगा। यह बीमारी परमेश्वर, उसके पुत्र की महिमा के लिये थी।

अब हम प्रभु के प्रेम को देखते हैं (11:5) : “यीशु मार्था और उसकी बहिन और लाज़र से प्रेम रखता था।” इस बार प्रेम के लिए उपयुक्त क्रिया है ‘अगापाओ’। यह सर्वोच्च प्रेम है, केवल माता-पिता का अपने बच्चे के प्रति प्रेम नहीं, बल्कि नैतिक चाहत से उत्पन्न प्रेम। ऐसा उच्च प्रेम जो भावनाओं से प्रभावित नहीं होता।

फिर हम प्रभु के मार्गदर्शन को देखते हैं (11:6) : “फिर भी जब उसने सुना कि वह बीमार है, तो जिस स्थान पर वह था, वहाँ दो दिन और ठहर गया।” बैतनिय्याह की यात्रा में लगभग एक दिन का समय लगता है, अर्थात् संदेशवाहक के बैतनिय्याह छोड़ने के तुरंत बाद ही लाज़र की मृत्यु हो गई होगी। यीशु जानता था कि वह मर चुका है। उसे कोई जल्दी नहीं थी, क्योंकि यीशु ने जो कदम उठाया, वह परमेश्वर के उचित समय के अनुरूप था। इसलिए, परमेश्वर के हस्तक्षेप के इन्तजार करने के साथ, प्रभु ने उस काम को भी पूरा कर लिया था जो उसे उस जगह पर करना था।

अब ध्यान प्रभु और उसके अनुयायियों पर आता है (11:7-16)। अपने मित्र की मृत्यु और बहनों की परेशानी के प्रति प्रभु की उदासीनता को देखकर चेले भी अवाक हैं। सबसे पहले, उसके निर्णय की ओर ध्यान आकर्षित किया जाता है (11:7-10)। दो दिन के बाद प्रभु ने एक चौंका देने वाली घोषणा की, “आओ हम फिर यहूदिया को चलें।” प्रभु ने यह नहीं कहा, आओ हम बैतनिय्याह वापस चलें, जहाँ उसके मित्र थे, परन्तु यहूदिया, जहाँ उसके शत्रु थे। निस्संदेह, इस समय भी चेलों को नहीं पता था कि लाज़र मर चुका है। उन्होंने प्रभु को यह कहते सुना था, “यह बीमारी मृत्यु की नहीं है।” परन्तु जैसे ही उन्होंने यहूदिया शब्द सुना तो वे घबरा गए। “हे रब्बी, अभी तो यहूदी तुझ पर पथराव करना चाहते थे, और क्या तू फिर भी वहीं जाता है?” (11:8)। उन्होंने सोचा कि वहाँ वापस जाना मूर्खता होगी।

लेकिन प्रभु की नज़र खतरे पर नहीं थी। उसने उसे कोई महत्व नहीं दिया। उनकी नज़र परमेश्वर के समय और उसके नजदीक आने पर लगी हुई थी। “यीशु ने उत्तर दिया, क्या दिन के बारह घंटे नहीं होते? यदि कोई दिन में चले तो ठोकर नहीं खाता, क्योंकि इस जगत का उजाला देखता है। परन्तु यदि कोई रात में चले तो ठोकर खाता है, क्योंकि उसमें प्रकाश नहीं” (11:9-10)। प्रभु ने इस धरती पर अपने आवंटित जीवनकाल को एक “दिन” के रूप में देखा, जो उस समय समाप्त हो जाएगा जिसे उसने “मेरा समय” कहा था। वह घड़ी अभी तक नहीं आई थी। अभी भी दिन था, अभी भी काम करने का समय था। सब ठीक था।

वह बिल्कुल स्पष्ट देख सकता था कि वह कहाँ जा रहा है; वह अच्छी तरह जानता था कि वह क्या कर रहा है। वह अनावश्यक रूप से, जल्दबाजी में, खतरे में जाकर नहीं पड़ रहा था। दूसरी ओर, वह सिर्फ इसलिए पीछे भी नहीं हटने वाला था क्योंकि सामने खतरा था। उसका समय परमेश्वर के हाथों में था और वह उस समय को जानता था। शाम की परछाइयाँ सचमुच इकट्ठी हो रही होंगी। "अंधेरे के अधिकार" (लूका 22:53) का अपना समय होगा। लेकिन अभी नहीं। काम के लिए समय सीमित था और काम उस समय में ही पूरा हो।

एक और प्रयोग है। हम उसके जैसे नहीं हैं। वह संसार की ज्योति था। वह सदैव ज्योति में चलता था। हम अपने भीतर, वह सब कुछ लेकर नहीं चलते हैं जिसकी हमें आवश्यकता होती है, लेकिन उसमें वह सब कुछ था। इसलिए हमें उससे प्रकाशित होने की आवश्यकता है। हमारा भी अपना निर्धारित समय है। हमें जब तक संभव हो, इस निश्चितता के साथ काम जारी रखना है कि हम उससे मिल रहे प्रकाश में काम कर रहे हैं। उनकी आपत्ति, जो चेलों को भारी लग रही थी कि यहूदिया में मृत्यु उनका इंतजार कर रही है — खारिज कर दी गई। प्रभु हर कदम पूर्ण दिन की पूर्ण रोशनी में कर रहे थे। ऐसा लग रहा था कि यीशु उस सूरज का दृष्टान्त दे रहे थे जो पूर्व में उग रहा था जिससे पूरी दुनिया को अगले दिन की रोशनी से भरा जा सके।

निर्णय लिया जा चुका था लेकिन चेले अभी भी संतुष्ट नहीं थे। प्रभु ने अपना उद्देश्य स्पष्ट कर दिया था। हम बातचीत को सुनते हैं (11:11-15)। पहले हम देखते हैं, यीशु ने क्या कहा (11:11-13) : "उसने ये बातें कहीं, और इसके बाद उनसे कहने लगा, हमारा मित्र लाज़र सो गया है, परन्तु मैं उसे जगाने जाता हूँ" (11:11)। उसने स्पष्ट कर दिया था कि 'यहूदिया' शब्द से उनका तात्पर्य, कम से कम अभी के लिए, यरूशलेम नहीं बल्कि बैतनिय्याह था।

प्रभु प्रतीकात्मक भाषा का उपयोग कर रहे थे, चेले उसे समझ नहीं पाए और इसीलिए उन्होंने एक के बाद एक आपत्तियां व्यक्त कीं। यीशु जानता था कि लाज़र मर चुका है। परन्तु वह फिर भी उसे "हमारा मित्र लाज़र" कहता है। कितना राहत देनेवाला है यह।

मृत्यु जीवन का अंत नहीं है। मृत्यु से अस्तित्व विलुप्त नहीं होता है। "हमारा मित्र लाज़र" अब भी "हमारा मित्र लाज़र" ही है। भले ही "हमारा मित्र लाज़र" मृत हो, वह उतना ही "हमारा मित्र लाज़र" है जितना जब वह जीवित था। लाज़र जब जीवित था, तो यूहन्ना, पतरस, मत्ती और यीशु का मित्र था। मृत्यु के बाद भी, लाज़र उनका मित्र था। मृतकों को जीवितों के समान स्पष्टता से देख सकने वाला यीशु जानता था कि मृत्यु ने कुछ भी नहीं बदला है जो आवश्यक है। उसने मृत्यु की तुलना नींद से की — अर्थात् शरीर की मृत्यु। आत्मा को नींद नहीं आती। सुनते ही, चेलों ने प्रभु के मृत्यु के संदर्भ को नींद के रूप में गलत समझा, हालांकि इससे पहले भी उसने इस रूपक का उपयोग किया था (लूका 8:52)। उन्होंने सोचा कि लाज़र आरामदायक एवं उपचारकारी नींद सो रहा है — जो एक अच्छा संकेत था। प्रभु ने दूर से ही लाज़र को चंगा कर दिया होगा। उन्होंने राहत की सांस ली होगी। अब उन्हें यहूदिया जाकर अपनी गर्दन को ओखली में देने की जरूरत नहीं पड़ेगी। यदि उन्होंने ऐसा सोचा भी होगा, तो उनका यह मोह भी जल्द ही टूट गया। यीशु ने कहा, "परन्तु मैं उसे जगाने जाता हूँ।" चेलों ने तुरंत विरोध किया : "हे प्रभु, यदि वह सो गया है, तो स्वस्थ हो जाएगा" (11:12)। यूहन्ना यह भी जोड़ता है कि यीशु वास्तव में लाज़र की मृत्यु का जिक्र कर रहा था परन्तु चेलों ने उसकी बातों का शाब्दिक अर्थ निकाला और मान लिया कि वह उन्हें लाज़र के आराम से सोने की बात कर रहा है।

यह देखकर कि चेले उसकी आसान भाषा को भी नहीं समझ पा रहे हैं, प्रभु ने उन्हें स्पष्ट रूप से समझाया। हम देखते हैं कि यीशु ने क्या समझाया (11:14-15) : "तब यीशु ने उनसे साफ साफ कह दिया, लाज़र मर गया है; और मैं तुम्हारे कारण आनन्दित हूँ कि मैं वहाँ न था जिससे तुम विश्वास करो। परन्तु अब आओ, हम उसके पास चलें।" लाज़र मर चुका था। लाज़र के मरने से प्रभु प्रसन्न नहीं हुआ। यदि ऐसा होता तो वह बहनों के दुःख को नहीं देखने वाला कठोर व्यक्ति होता। वह इसलिए खुश था क्योंकि वह परिणाम जानता था। वह "उसे जगाने वाला" था। यदि वह उस समय उसके निकट होता, जब उसका मित्र बीमार हुआ था, तो उसे ठीक नहीं करना, कठिन होता। चेले, बहनें और पूरी दुनिया, उसकी शक्ति के असाधारण प्रदर्शन और पुनरुत्थान की सच्चाई के एक उल्लेखनीय चित्रण से चूक जाती। बातचीत ख़त्म हो गयी; निर्णय हो गया। यूहन्ना एक क्षण के लिए हमारा ध्यान चेलों की ओर आकर्षित करता है (11:16)।

थोमा बोल पड़ा। उसे स्पष्ट हो गया था कि स्वामी ने यहूदिया जाने का संकल्प ले लिया है। उसके मन में यह भी स्पष्ट था कि नतीजा भी एक ही होगा। इस बार यहूदी उसे जरूर पकड़ लेंगे। हमें यह बात भी याद रखनी है कि चेले उन दो अवसरों पर भी यीशु के साथ ही उपस्थित थे, जब यहूदियों ने उस पर पथराव करने और गिरफ्तार करने की कोशिश की थी। यरूशलेम में गर्मी काफी थी। फिर भी, थोमा ने दिखाया कि वह किस चीज़ से बना है : "तब थोमा ने जो दिद्‌मुस कहलाता है [दोनों शब्दों का अर्थ जुड़वाँ होता है], अपने साथी चेलों से कहा, आओ, हम भी उसके साथ मरने को चलें।"

उन निराशाजनक शब्दों में थोमा ने दिखाया कि वास्तव में उसका विश्वास कितना कम था। उसे केवल यहूदियों की शत्रुता और यीशु से छुटकारा पाने का उनका संकल्प दिख रहा था। थोमा का उल्लेख करने वाले अन्य भाग उसे इसी चरित्र का दिखाते हैं (14:5; 20:25)।

यूहन्ना अब हमें उस दुःख के बारे में बताता है (11:17-37) जिसने शोक संतप्त परिवार को जकड़ लिया था, ऐसा दुःख जो प्रभु के देर से आगमन के कारण फिर से फूट पड़ा लगता है। वह हमें बहनों के दुःख के बारे में बताता है (11:17-32), फिर उद्धारकर्ता के दुःख के बारे में।

वह प्रभु के आगमन (11:17-20) पर मार्था की प्रतिक्रिया (11:17-27) से शुरू करता है। उसके आगमन पर प्रभु को बताया गया कि वह बहुत देर से आया है। लाज़र मर चुका है, उसे दफना दिया गया है; कब्र में रखे चार दिन हो गए हैं (11:17)। उस मौसम में, दफ़नाने में देरी नहीं की जाती थी।

यूहन्ना जो इस यात्रा में यीशु के साथ था, एक आकस्मिक विवरण का उल्लेख करता है : "बैतनिय्याह यरूशलेम के समीप कोई दो मील की दूरी पर था।" यरूशलेम, जहाँ प्रभु के शत्रु अभी भी उसके दावों और गतिविधियों पर ध्यान रखे हुए थे, उनसे केवल 3.2 किमी दूर।

सारी मानवीय आशाएँ समाप्त हो चुकी थीं। लाज़र अपनी कब्र में सड़ रहा था। बहनों के मित्र और पड़ोसी उन्हें "उनके भाई की मृत्यु पर शान्ति" दे ही सकते थे (11:19)। "शांति" के लिए उपयुक्त शब्द 'पैरामुथेओमाई' है, जिसका अर्थ है, "कोमलता से बोलना, सांत्वना देना।" वे यह नहीं जानते थे, परन्तु यीशु ने अपने आने में देरी इसलिए की कि वह ठीक उस समय पर पहुँचे, जब सारी मानवीय मदद और आशा समाप्त हो चुकी हो। स्वर्ग में इसका समय इसी प्रकार निर्धारित किया गया था।

लेकिन इस वीराने दृश्य में "यीशु के आने" का एक अद्भुत समाचार आया। मार्था उससे मिलने के लिए दौड़ी। मरियम घर में ही बैठी रही (11:20) ।

अब हम प्रभु की टिप्पणी देखते हैं। (11:21-27) हम मार्था के विश्वास को व्यक्त होता देखते हैं (11:21-24)। हम उसकी निर्भीकता पर ध्यान देते हैं (11:21-22) : "मार्था ने यीशु से कहा, हे प्रभु, यदि तू यहाँ होता, तो मेरा भाई कदापि न मरता [जो अतीत में हो गया], और अब भी मैं जानती हूँ कि जो कुछ तू परमेश्वर से माँगेगा, परमेश्वर तुझे देगा [जो वर्तमान में होगा]।" मार्था का विश्वास यीशु के प्रति एक श्रद्धांजलि थी, लेकिन यह अपर्याप्त था। उसे यह समझ नहीं आया कि वह जानबूझकर वहाँ पहले नहीं आया था। अगर वो चाहता तो दूर से ही चंगा कर सकता था। फिर उसने अपना विश्वास प्रकट किया कि प्रभु परमेश्वर से कुछ भी प्राप्त कर सकता है। उसने आधा विश्वास किया कि यीशु उसके भाई को जिंदा कर सकता है, आखिरकार उसने दूसरों को जिलाया था। लेकिन उसके शब्द उसके वास्तविक विश्वास से बहुत बड़े नजर आये, जो उसने बाद में दिखाया (11:39)। अक्सर विश्वास का हमारा अंगीकरण हमारे वास्तविक विश्वास से कहीं अधिक होता है।

हम उसके विश्वास पर भी ध्यान देते हैं (11:23-24)। प्रभु ने मार्था के इस आधे विश्वास को चुनौती नहीं दी, बल्कि उसे मजबूत किया : "तेरा भाई फिर जी उठेगा" (11:23)। यह सच्चाई का एक विश्वसनीय कथन था। यदि मृत्यु मानववीय अवस्था का अंतिम उत्तर है, तो शैतान जीत गया है। पाप के प्रति परमेश्वर का उत्तर मृत्यु है, और मृत्यु के प्रति उसका उत्तर पुनरुत्थान है।

मार्था ने उसके शब्दों को स्वीकार किया, उन्हें कुछ दूर के अर्थात् भविष्य में होने वाली बात के महत्व के रूप में समझा, और पुनरुत्थान के सिद्धांत को स्वीकार किया — जैसा कि हम करते हैं, जब हमें किसी प्रियजन के चले जाने के नुकसान का सामना करना पड़ता है। उसने कहा, "मैं जानती हूँ कि अन्तिम दिन में पुनरुत्थान के समय वह जी उठेगा" (11:24)। विश्वासी के शारीरिक पुनरुत्थान पर पुराने नियम का सबसे बड़ा बयान अपने कष्टों के बीच में अय्यूब ने दिया था। उसने कहा, "भला होता, कि मेरी बातें लिखी जातीं; भला होता, कि वे पुस्तक में लिखी जातीं, और लोहे की टाँकी और सीसे से वे सदा के लिये चट्टान पर खोदी जातीं। मुझे तो निश्चय है कि मेरा छुड़ानेवाला जीवित है, और वह अन्त में पृथ्वी पर खड़ा होगा; और अपनी खाल के इस प्रकार नष्ट हो जाने के बाद भी, मैं शरीर में होकर परमेश्वर का दर्शन पाऊँगा" (अय्यूब 19:23-26)। 1 कुरिन्थियों 15 से पहले यही एक बड़ा कथन है जो हमें वचन में मिलता है। मार्था विश्वासियों के अंत समय के पुनरुत्थान में पूरी तरह से विश्वास करती थी।

परंतु प्रभु चाहता था कि मार्था का विश्वास बढ़े (11:25-27)। ध्यान दें कि सच्चाई कैसे बताई गई। "पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ [अर्थात्, प्रभु यीशु के पास पुनरुत्थान जीवन की कुंजी है, मृत्यु से परे शरीर में जीवन की]; जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए तौभी जीएगा [अर्थात्, प्रभु यीशु उन लोगों को आत्मिक जीवन प्रदान करता है जो अपराधों और पापों में मर गए हैं]; और जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है वह अनन्तकाल तक न मरेगा [अर्थात्, प्रभु यीशु अनन्त जीवन की गारंटी देता है]। क्या तू इस बात पर विश्वास करती है?"

कोई भी साधारण मनुष्य मृत्यु पर प्रभुत्व पाने का ऐसा दावा नहीं कर सकता था। उसने उस अद्भुत दावे की प्रस्तावना अपने जोरदार "मैं हूँ" के साथ की। वह मार्था, मरियम और संसार को यह साबित करने वाला था कि यह केवल धार्मिक बयानबाजी नहीं बल्कि सच्चाई का कथन था।

इस पर मार्था ने यह कहा : "हाँ हे प्रभु, मैं विश्वास करती हूँ कि परमेश्वर का पुत्र मसीह जो जगत में आनेवाला था, वह तू ही है" (11:27)। उसने इस मुद्दे को दरकिनार कर दिया कि क्या वह मृत्यु पर प्रभुता पाने के प्रभु के दावे को

पुनरुत्थान मानती है। लेकिन उसने इस्राएल के मसीहा और परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु में अपने हार्दिक विश्वास को स्वीकार किया। उसने एक सशक्त सर्वनाम का उपयोग किया : "मैंने, यहाँ तक कि मैंने भी विश्वास किया है। यह विश्वास व्यक्तिगत है, मेरा अपना है।"

अब मरियम की प्रतिक्रिया आती है। (11:28-32) मार्था ने यह खुशखबरी लेकर कि यीशु आ रहे हैं, वापस घर की ओर दौड़ने में कोई समय नहीं गंवाया। दुःख में डूबी मरियम को यह नहीं पता था कि यीशु निकट है। चुपके से, मार्था ने अपनी बहन को अकेले में खोजा और उसे खुशखबरी सुनाई : "गुरु यहीं है और तुझे बुलाता है" (11:28)।

तब मरियम घर से बाहर निकल गई। उसे दिलासा देने वालों का दल, यह मानकर कि वह कब्र पर रोने के लिए जा रही है, उसके पीछे जल्दी से दौड़े। परन्तु मरियम कब्र पर नहीं गई; इसकी बजाय वह उद्धारकर्ता के पास भागी।

जब मरियम यीशु के पास पहुँची तो वह उसके चरणों में गिर पड़ी। अपनी बहन जैसे शब्दों का उपयोग करते हुए, उसने अपने विचार बताए : "हे प्रभु, यदि तू यहाँ होता तो मेरा भाई न मरता" (11:32)। इसमें कोई शक नहीं कि पिछले कुछ दिनों में दोनों बहनें एक-दूसरे से कई बार ऐसा कह चुकी थीं। यीशु ने कुछ नहीं कहा। उसमें जो पीड़ा देखी, उससे उसका हृदय अभिभूत हो गया। निश्चित रूप से उसने उसके शब्दों में तिरस्कार के संकेत पर कोई ध्यान नहीं दिया।

हमने बहनों का दुख देखा; अब हम उद्धारकर्ता का दुःख देखते हैं (11:33-37)। यूहन्ना अब हमें रोता हुआ मसीह दिखाता है (11:33-35)।

सबसे पहले हम देखते हैं, उसने क्या देखा (11:33क) : "जब यीशु ने उसको और उन यहूदियों को जो उसके साथ आए थे, रोते हुए देखा..." "रोना" शब्द का अर्थ है, "विलाप करना।" यीशु अपने चारों ओर दुःख की भावुक अभिव्यक्तियों को देख सकता था। वह ऐसे स्थान से आया था जहाँ कोई पाप नहीं है और इसीलिए कोई दुःख नहीं, न वहाँ कोई कब्र है, न कोई आँसू। उसका घर बहुत दूर था, अनंत आशीष का स्थल, "अकथनीय आनंद और महिमा से भरपूर" स्थान। वह तैंतीस वर्षों से पृथ्वी पर था। उसने बहुत सारे आँसू देखे थे, कई टूटे हुए दिलों को जोड़ने में मदद की थी।

लेकिन ये उसके विशेष मित्र थे। उनका घर उसका घर था। कई बार उसने लाज़र और बहनों के साथ वहाँ समय बिताया था — मार्था अतिथि सत्कार में व्यस्त थी; मरियम विचारशील, ईमानदार और सीखने के लिए उत्सुक थी। परंतु अब लाज़र मर चुका था और बहनें अकेली पड़ गई थीं। खुशियों भरी बातचीत और हँसी की फुहारों की जगह आँसुओं ने ले ली थी।

हम देखते हैं कि उसने क्या सहा (11:33ख) : "तो आत्मा में बहुत उदास और व्याकुल हुआ।" "उदास" के लिए एम्ब्रिमाओमाई नामक शब्द का उपयोग हुआ है, जिसका अर्थ है "गहरी उत्तेजना।" इस शब्द का शाब्दिक अर्थ है "घरघराना", जैसे कि एक घोड़ा भय या क्रोध के कारण करता है। इसका उपयोग नए नियम में नाखुशी या आक्रोश को दर्शाने के लिए किया गया है। उदाहरण के लिए, इसका उपयोग बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर में यीशु के सिर पर डाले गए एक दुर्लभ और महंगे इत्र की बर्बादी पर कुछ लोगों की प्रतिक्रिया अथवा आक्रोश का वर्णन करने के लिए किया गया है (मरकुस 14:4)। मृत्यु के इस कृत्य की वजह से प्रभु क्रोध और आक्रोश से भर उठता है।

वह “व्याकुल” हुआ। अर्थात् वह वास्तव में भावना से काँप उठा। वह इतना प्रभावित हुआ कि उसका शरीर आक्रोश और दुःख से कांपने लगा।

हम देखते हैं कि उसने क्या कहा (11:34) : “तुम ने उसे कहाँ रखा है?” उन्होंने उससे कहा, “हे प्रभु, चलकर देख ले।” उसने कब्र पर ले जाने के लिए कहा, इसलिए नहीं कि वह कब्र देखना चाहता था, बल्कि इसलिए क्योंकि वह अब सबको उस स्थान पर इकट्ठा करना चाहता था जहाँ उसका सबसे शक्तिशाली आश्चर्यकर्म होने वाला था (जब वह स्वर्ग से जय जयकार के साथ उतरेगा, तब भी ऐसा ही होगा!)।

बाइबल में यीशु मसीह के ईश्वरत्व का सबसे बड़ा प्रमाण इस कहानी से अधिक कहीं और नहीं मिल सकता है। उसकी मानवीयता का भी इससे बड़ा प्रमाण कहीं नहीं मिलता। वह एक कब्र पर जा रहा था। बाकी सब लोग भी। सिर्फ लाज़र की कब्र तक नहीं। सब अपनी-अपनी कब्र की ओर जा रहे थे। देर-सबेर कब्र उन सब पर दावा करने वाली थी। वे सब अपने पापों के कारण कब्र की ओर जा रहे थे। वह भी इसीलिए कब्र की ओर जा रहा था—उनके पापों के लिए। उसने कोई पाप नहीं किया था, इसलिए कब्र का उस पर कोई दावा नहीं था। लेकिन वह उसी तरह कब्र की ओर जा रहा था — उसके गहन दरवाजे हमेशा के लिए खोलने के लिए, अपने लिए और उन सबके लिए जो उस पर विश्वास करते हैं।

इसलिए वह मार्था और मरियम के पीछे-पीछे गया जहाँ लाज़र को दफनाया गया था।

हम देखते हैं कि उसने क्या दिखाया (11:35) : यूहन्ना ने कहा, “यीशु रोया।” शब्द है डक्रूओ। हम इसका उल्लेख केवल यहीं देखते हैं, हालाँकि इसका संज्ञा रूप अन्य जगहों पर भी है। वह फूट-फूट कर रोने लगा। मरियम (11:31) और यहूदियों (11:33) के रोने के लिए यह शब्द इस्तेमाल नहीं किया गया है। यह निराशा से भरा विलाप नहीं था। यह परमेश्वर के पुत्र का “पुकार–पुकारकर और आँसू बहा–बहाकर” (इब्रानियों 5:7) रोना था।

वह रोया क्योंकि वह उदास था और दुःख से परिचित था। वह मार्था, मरियम और लाज़र के मित्रों के दुःख से रोया। वह रोया क्योंकि उसका हृदय मृत्यु के दुःख से और उन दुखों से टूट गया था जिसके लिए कोई सांत्वना नहीं थी।

वह रोया क्योंकि वह परमेश्वर था। वह उस चीज को देख सकता था जो वे नहीं देख सकते थे। वह लाज़र को स्वर्ग में, परमेश्वर के संतों से घिरा हुआ देख सकता था। स्वर्गदूतों की सेना वहाँ खड़ी थी। वह सांसारिक संकट की पहुंच से दूर, विश्राम में प्रवेश कर चुका था। वह अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ था, जो सिद्ध बनाए गए धर्मी मनुष्यों की आत्माएँ थीं। वह एक ऐसे देश में था जहाँ समय अभी भी रुका हुआ है, जहाँ सभी लोग परमेश्वर के विजयी पुत्र के पृथ्वी को हिला देने वाले कदम का उत्सुकता से इंतजार कर रहे थे।

लाज़र का बहुत कम परिचय क्यों हुआ था। उत्सुक प्रश्नकर्ताओं ने शायद उससे यह पूछना शुरू ही किया था कि वह यीशु के बारे में क्या जानता है। और यीशु उसे पाप, पीड़ा और दर्द के संसार में वापस बुलाने जा रहा था। यीशु लाज़र के दुःख के कारण रोया।

हम एक चकित भीड़ को भी देखते हैं (11:36-37)। वे उसकी भावना के प्रबल प्रदर्शन पर हैरान हुए (11:36) : “तब यहूदी कहने लगे, देखो, वह उससे कितना प्रेम रखता था।” यह सच था। उन्हें इसका एहसास नहीं था, लेकिन वह उनसे भी, लाज़र के समान ही प्यार करता था — उनमें से हर एक से। वह काइफा, हन्ना और मन्दिर के दुष्ट षड्यंत्रकारियों से भी उतना ही प्रेम करता था जितना लाज़र से। वह चालाक हेरोदेस और कमजोर पिलातुस से भी

प्रेम करता था। वह उस व्यक्ति से भी प्रेम करता था जो उसके चेहरे पर मार रहा था, जो उसे पेड़ पर कीलों से ठोंक रहा था। वह आपसे और मुझसे भी उतना ही प्रेम करता है।

उन्होंने भी, विफलता के उसके स्पष्ट प्रदर्शन पर आश्चर्य किया (11:37) : "परन्तु उनमें से कुछ ने कहा, क्या यह जिसने अंधे की आँखें खोलीं, यह भी न कर सका कि यह मनुष्य न मरता?" आखिरकार, वो सवाल भी खुलकर सामने आ गया जो नास्तिक, अज्ञेयवादी, अविश्वासी हमेशा अंत में पूछते हैं : "एक सर्वशक्तिमान परमेश्वर, यदि वह भला परमेश्वर है, तो पीड़ा, दुःख, अन्याय, दर्द और मृत्यु की अनुमति क्यों देता है? यदि वह सर्वशक्तिमान है, तो वह भला नहीं है; यदि वह भला है, तो वह सर्वशक्तिमान नहीं है। अन्यथा वह अवश्य हस्तक्षेप करता।" कमोबेश यही स्थिति इन यहूदियों द्वारा अपनाई गई थी, जो ऐसा लगता है, मृत व्यक्ति की कब्र पर इस अभियान में शामिल हो गए थे। उन्होंने पूछा, "निश्चित रूप से वह इस मृत्यु को रोक सकता था, पर उसने ऐसा क्यों नहीं किया?"

अब हमें कब्र को देखने के लिए बुलाया गया है (11:38-44)। यीशु इतिहास में कुछ अनोखा करने जा रहा है। हम कब्र का सामना किए जाने को देखते हैं (11:38-40)।

परंतु सबसे पहले, हमारे पास यूहन्ना की एक टिप्पणी है (11:38)। वह हमें उद्धारकर्ता की भावनाओं के बारे में बताता है (11:38क) : "यीशु मन में फिर बहुत ही उदास होकर कब्र पर आया।" संभवतः यहूदियों के अविश्वास ने इस समय प्रभु की पीड़ा को और बढ़ा दिया था। इस बात की प्रबल संभावना है कि लाज़र को ठीक नही करने के बारे में यहूदियों ने जो कहा, उपहास के साथ कहा होगा। वे उसकी सामर्थ्य पर सवाल उठा रहे थे।

यूहन्ना हमें कब्र की पूर्णता के बारे में बताता है (11:38ख) : "वह एक गुफा थी और एक पत्थर उस पर रखा था।" पत्थर के दरवाजों से बंद गुफाओं को अक्सर कब्रों के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। दरवाजा चक्की के पाट के आकार जैसा हुआ करता था जिसे एक खांचे में रखा जाता था जिसकी मदद से कब्र को बंद किया या खोला जाता था। कसकर बंद की गई और एक चट्टान से ढकी गई कब्र मुहर के साथ पूरी तरह से सुरक्षित प्रतीत होती थी। लाज़र मर चुका था, गाड़ा गया था, उसकी कब्र पर मुहर लग गई थी।

अब हमारे पास एक आज्ञा है (11:39-40)। यीशु ने कहा, "पत्थर हटाओ" (11:39क)। वह उस प्रक्रिया का पहला कदम था। ध्यान देने योग्य बात यह है कि परमेश्वर हमारे लिए वह काम नहीं करेगा जो हम स्वयं कर सकते हैं। सर्वशक्तिमान, सामर्थी यीशु उस पत्थर को चूर-चूर कर सकता था। वह उस पत्थर को लुढ़कने का आदेश दे सकता था। परंतु उसने ऐसा कुछ नहीं किया। वह हल्के चमत्कार दिखाने नहीं आया था, न ही वह कुछ ऐसा करेगा जो वे कर सकते थे।

लोग इस आज्ञा से स्तब्ध रह गए, कि यीशु का इरादा सामान्य से कुछ अलग करने का था। विशेषकर, मार्था हैरान थी। उसने कहा, "हे प्रभु, उसमें से अब तो दुर्गंध आती है, क्योंकि उसे मरे चार दिन हो चुके हैं" (11:39ख)। उसने उसके उद्देश्य, पुनरुत्थान और जीवन के बारे में उसके शब्दों को गलत समझा। उसने सोचा कि वह अपने मित्र के शव को देखना चाहता है। ऐसी बात अब संभव नहीं थी। यह कल्पना से परे था। शरीर सड़ना शुरू हो चुका था।

यीशु ने अपनी आज्ञा को और दृढ़ किया। "क्या मैं ने तुझ से नहीं कहा था कि यदि तू विश्वास करेगी, तो परमेश्वर की महिमा को देखेगी" (11:40)। उसकी बातों से दुःख झलकता है। "मार्था, क्या मैंने तुझसे नहीं कहा था?" इन शब्दों के बारे में सोचें। पहले एक शब्द पर जोर दें, फिर दूसरे पर : "मार्था, क्या मैंने तुझसे नहीं कहा था?" क्या वह इतनी जल्दी भूल सकती थी? आधे घंटे से भी पहले ही, उसने उससे कहा था कि वह पुनरुत्थान और जीवन है और उसे चुनौती दी थी कि वह उस पर विश्वास करे। "मार्था, क्या मैंने तुझसे नहीं कहा था?" क्या वह अपने उस

विश्वास की घोषणा को भूल गई थी जिसमें उसने उसे पहले दाऊद के सिंहासन पर और फिर ब्रह्मांड के सिंहासन पर बिठाया था : “परमेश्वर का पुत्र मसीह... तू ही है।” “मार्था, क्या मैंने तुझसे नहीं कहा था?” कब्र को खोलने की आपत्ति जतानेवाले दूसरे लोगों के पास बहाने हो सकते हैं, लेकिन तू, मार्था? हमारा पुराना अविश्वास उसे कितना दुखी करता होगा।

अब हम कब्र पर विजय पाने को देखते हैं (11:41-44)। सबसे पहले, साहसी कदम उठाया गया (11:41क) : “तब उन्होंने उस पत्थर को हटाया।” प्रभु की आज्ञा प्रबल हुई। मार्था की आपत्ति खारिज कर दी गई। मरियम ने उस बात का कोई विरोध नहीं जताया जो किसी भी प्रियजन के लिए एक डरावनी घटना बन सकती थी, अर्थात् शव को कब्र से बाहर निकालना। शायद मरियम को अपनी आत्मिक अंतर्दृष्टि से पहले से ही इस बात का अंदाज़ा हो गया था कि उसका प्रिय प्रभु क्या करने वाला है।

तब ईश्वरीय मध्यस्थ (11:41ख-42) दिखाई देता है। हम परमेश्वर पर उसके विश्वास (11:41ख) को देखते हैं : “यीशु ने आँखें उठाकर कहा, हे पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तू ने मेरी सुन ली है” और मनुष्यों के बीच उसकी गवाही को देखते हैं (11:42) : “मैं जानता था कि तू सदा मेरी सुनता है, परन्तु जो भीड़ आस पास खड़ी है, उनके कारण मैं ने यह कहा, जिससे कि वे विश्वास करें कि तू ने मुझे भेजा है।”

क्या आप कभी किसी प्रार्थना सभा में शामिल हुए हैं जहाँ आपको महसूस हुआ हो कि प्रार्थना करने वाला व्यक्ति प्रचार कर रहा था, वह परमेश्वर से कुछ कहने के साथ-साथ किसी विशेष व्यक्ति को भी निशाना बना रहा है? यह बिल्कुल अच्छा नहीं है कि एक पापी, किसी दूसरे पापी के साथ कुछ ऐसा करे। यह हम कायर और पाखंडी बनाता है। लेकिन जब देहधारी मसीह ने ऐसा किया, तो उसने अपने पूरे मन से, सबके सामने, बिना किसी दिखावे के और बहुत अच्छे कारण से किया।

प्रभु ने मृत्यु पर पहले से ही अपनी निजी प्रार्थना कर ली थी, लाज़र के पुनरुत्थान का प्रस्ताव रख दिया था। इस विषय को वह अपने पिता को बता चुका था, और उसे भरोसा था कि पिता ने स्वीकृति दे दी है। यह एक बात थी। परंतु यह सार्वजनिक प्रार्थना उन लोगों के लिए थी जो खुली कब्र के आस पास एकत्र थे। यह सार्वजनिक धन्यवाद का अवसर था; हर समय और हर हालात में, अपने पिता के साथ एकता को घोषित करने का अवसर था; एक मनुष्य के रूप में, अपने पिता पर अपनी निर्भरता को घोषित करने का अवसर था। परमेश्वर के रूप में, लोगों को यह विश्वास दिलाने का एक अवसर था कि स्वयं के बारे में उसके सारे दावे सच थे; प्रार्थना की ताकत और प्रभाव को दिखाने का अवसर था, अपने दुश्मनों के सामने गंभीर घोषणा करने का अवसर था।

अंत में हम नाटकीय चमत्कार को देखते हैं (11:43-44) : “यह कहकर उसने बड़े शब्द से पुकारा, हे लाज़र, निकल आ! जो मर गया था वह कफन से हाथ पाँव बँधे हुए निकल आया, और उसका मुँह अँगोछे से लिपटा हुआ था। उसने सामर्थ्य के उस शब्द का उपयोग किया जिसका उसने समय की शुरुआत में, “ज्योति” को आदेश देते वक्त किया था, और ज्योति हो गई। यह वही शब्द था जिसने तेज़ लहरों और गरजती हवाओं से कहा, “शांत हो,” और तुरंत एक बड़ी शांति छा गई; वही शब्द जिसने कोढ़ी से कहा, “शुद्ध हो जा,” और तुरन्त उसका कोढ़ दूर हो गया; वही शब्द जिसने दुष्टात्मा की एक सेना को एक दुष्टात्माग्रसित में से चले जाने का आदेश दिया, और वे तुरंत निकल गईं।

वही शब्द फिर गूंजा। निस्संदेह लाज़र बाहर आया। और करता भी क्या? उस शब्द की आवाज़ पर, नाशमान ने अविनाशी को पहन लिया। जो कमज़ोरी में बोया गया, वह सामर्थ्य में उग आया। विजय ने मृत्यु को निगल लिया। यह भविष्य की बातों का पूर्वाभास था (1 कुरिन्थियों 15:35-57)।

कई वर्ष पहले एक नास्तिक, भीड़ को अपने अविश्वास के विषय पर व्याख्यान दे रहा था। अपने व्याख्यान के दौरान, उसने लाज़र के जिंदा होने की कहानी का उपहास किया। अपना हाथ बाहर की ओर फैलाते हुए वह अलंकारिक रूप से चिल्लाया, "यीशु ने क्यों कहा कि हे लाज़र, बाहर आ? कमरे के पीछे से, एक बुजुर्ग विश्वासी खड़े हुए और कहा, "यह तो सरल सी बात है, श्रीमान! यदि यीशु ने लाज़र का नाम लिए बगैर बाहर आने को कहा होता तो संसार का हर मृत व्यक्ति बाहर आ गया होता।" लेकिन वो ऐसा अवश्य करेंगे। पर एक दिन ऐसा ही होगा। वे सब निकल आएँगे।

यहाँ दोहरा चमत्कार हुआ। कब्र के वस्त्रों के लिए उपयुक्त शब्द था, केइरियाई, जिसका प्रयोग नए नियम में केवल यहीं किया गया है। कब्र के वस्त्र मृत व्यक्ति के क्षत-विक्षत शरीर पर कसकर लपेटी गई घुमावदार चादरें थीं। अंगोछे के लिए शब्द सूडारियन है जो लातिनी भाषा से लिया गया है जिसका शाब्दिक अर्थ है, "पसीना पोंछने का कपड़ा।" चूंकि यह मृत व्यक्ति के सिर पर लपेटा गया था, लाज़र देख नहीं सकता था। तौभी वह दिन के उजाले में बाहर निकल आया।

यीशु ने कहा, "उसे खोल दो और जाने दो।" यहाँ पर भी उसने वह काम नहीं किया जो लोग कर सकते थे। वस्त्र को खोलने के लिए किसी विशेष चमत्कार की आवश्यकता नहीं थी। और आख़िरकार, लाज़र मृतकों में से जीवित होकर उनके सामने आ खड़ा हुआ।

यूहन्ना ने कब्र का सारा विवरण दे दिया था। अब वह हमारा ध्यान चिह्न की ओर आकर्षित करता है। (11:45-46) अपनी आंखों के सामने हुए इस आश्चर्यजनक चमत्कार की कारण, लोग यीशु के बारे में हमेशा हमेशा के लिए अपना मन बनाने के लिए मजबूर हो गए थे। कुछ लोगों ने उस पर विश्वास किया (11:45) : "तब जो यहूदी मरियम के पास आए थे और उसका यह काम देखा था, उनमें से बहुतों ने उस पर विश्वास किया।" यह करना ही एकमात्र समझदारी का काम था।

यह सारे चिह्नों में सबसे शीर्ष "चिह्न" था जिसने यीशु मसीह की सार्वजनिक सेवकाई की सर्वश्रेष्ठ विशेषता को प्रकट किया। सबसे बड़ी सामर्थ्य के इस प्रमाण के सामने अब किसी का भी उदासीन अथवा तटस्थ रहना असंभव था। बहुतों ने विश्वास किया। "बहुतों" नामक शब्द एक त्रासदी को दर्शाता है : कि यूहन्ना सब कुछ नहीं लिख सका।

लेकिन कुछ ऐसा भी हुआ जो नहीं होना था। कुछ लोग विश्वास करने से इनकार करते हैं, चाहे सबूत कुछ भी हो। इसलिए यूहन्ना उन लोगों के बारे में बताता है जिन्होंने यीशु को धोखा दिया (11:46) : "परन्तु उनमें से कुछ ने फरीसियों के पास जाकर यीशु के कामों का समाचार दिया।" परंतु शब्द दिखाता है कि उनका इरादा गलत था। शुरुआत से ही शत्रुता से भरे हुए वे अधिकारियों का भी पक्ष पाने के लिए उनके पास जाने लगे।

उनकी बातों ने मुद्दे की गंभीरता को और बढ़ा दिया। यहूदी महासभा भी अब यीशु से छुटकारा पाने के लिए पहले से कहीं अधिक दृढ़ संकल्पित थी।

2. एक अद्भुत प्रतिक्रिया (11:47-12:11)

लाज़र के फिर से जीवित होने पर हुई आधिकारिक प्रतिक्रिया अविश्वसनीय है। संपूर्ण यहूदी महासभा द्वारा बैतेनिय्याह में मौके पर आकर चमत्कार की जांच करने, सब कुछ जानने के बाद यीशु को मसीहा और परमेश्वर के रूप में घोषित करने की बजाय, वहाँ बिलकुल विपरीत हुआ। यूहन्ना कथा के दो अंतरालों को दर्ज करता है, एक कथाओं का अंतराल (11:47-57) और दूसरा शांति का अंतराल (12:1-11)। पहला दृश्य, यहूदी याजक (11:47-54) और उसके साथियों (11:47-48) पर केंद्रित है। उन्होंने यहूदियों की सर्वोच्च शासी संस्था यहूदी महासभा बुलाई। इसमें मुख्य याजक (महायाजक, मंदिर के मुखिया और याजकों के प्रमुख परिवारों के सदस्य) सहित इकहत्तर सदस्य शामिल थे। महासभा में अधिक संख्या सदूकियों की थी लेकिन प्रभाव फरीसियों का ज्यादा था। उनका मिलन स्थल मंदिर परिसर के भीतर स्थित "पत्थर कक्ष" था।

यह प्रभावशाली निकाय भी, जिसका हिसाब रोमी राज्यपालों को भी रखना पड़ता था, यीशु के इस नवीनतम चमत्कार की खबर से बहुत उत्तेजित था : उन्होंने एक दूसरे से कहा, "हम करते क्या हैं? यह मनुष्य तो बहुत चिह्न दिखाता है" (11:47)। वे इस बात से इनकार नहीं कर सकते थे कि पूरा यरूशलेम उत्साह से भरा हुआ था। उन्होंने पहचान लिया कि चीजें अब अंतिम रूप ले रही हैं। एक संकट सामने था। उन्होंने इस मामले में निष्क्रिय रहने के लिए स्वयं को धिक्कारा। उन्होंने बहुत पहले ही तय कर लिया था कि वे ऐसे मसीहा का हिस्सा नहीं बनना चाहते जो सत्तारूढ़ धार्मिक प्रतिष्ठान के प्रति इतना कम सम्मान दिखाता हो। वे अच्छी तरह से कल्पना कर सकते थे कि यदि यह कट्टरपंथी, सुधारवादी, चमत्कारी मसीहा एक बार खुद को सत्ता में स्थापित कर लेता है तो उनके पद से हटने की संभावना लगभग तय है।

दूसरी ओर, रोमियों से खतरा था। रोमियों ने देश में घरेलू और विशेष रूप से धार्मिक मुद्दों से निपटने के लिए महासभा को काफी छूट दी थी। रोमियों को एक ऐसे मसीहा पर संदेह होना स्वाभाविक था जो "यहूदियों का राजा" होने का दावा करता था। इसलिए धार्मिक नेता दुविधा में थे। यदि उन्होंने यीशु मसीह के विरुद्ध कोई कदम उठाया तो उन्हें एक लोकप्रिय राष्ट्रीय विद्रोह की संभावना का सामना करना पड़ा, विशेष रूप से इस आश्चर्यजनक चमत्कार के सामने। इसके अलावा, कौन जानता था कि इस चमत्कारिक व्यक्ति के पास और कौन सी शक्तियाँ थीं? पूरे दौर में, हम महासभा की कायरता देखते हैं। उन्होंने इस सच को कभी नहीं समझा कि यीशु मसीह का मिशन अथवा दायित्व आत्मिक ही था, और जब तक उनका आत्मिक साम्राज्य स्थापित नहीं हो जाता, तब तक भौतिक साम्राज्य स्थापित करने का उसका कोई इरादा नहीं था।

लेकिन अगर उन्होंने इस गैर–जरूरी मसीहा की गतिविधियों को रोकने के लिए कुछ नहीं किया, तो रोमी सेना का हस्तक्षेप अवश्य हो सकता है : "यदि हम उसे यों ही छोड़ दें, तो सब उस पर विश्वास ले आएँगे, और रोमी आकर हमारी जगह और जाति दोनों पर अधिकार कर लेंगे" (11:48)। उन्हें अपना स्थान और ताकत खोने का डर था।

यहां मुख्य शब्द हमारा है, जिस पर बल दिया गया है। उनका दावा था कि जो कुछ परमेश्वर का था, वह उनका है। स्थान से उनका तात्पर्य निस्संदेह मन्दिर से था, जो उनके प्रभाव का केन्द्र था। बलपूर्ण हमारा उस राष्ट्र से भी संबंधित है, जिसे उन्होंने इस तरह नियंत्रित किया जैसे कि यह उनका अपना हो। यीशु मसीह की उपस्थिति उनके लिए एक खतरा थी।

महायाजक ने यह चर्चा सुनी। अब उसकी सलाह आती है (11:49-52)। हम सबसे पहले, उसके व्यक्तित्व पर ध्यान देते हैं (11:49क) : "तब उनमें से काइफा नामक एक व्यक्ति ने जो उस वर्ष का महायाजक था..." काइफा को ई.पू. 18 में रोमी राज्यपाल वेलेरियस ग्रैटस ने महायाजक नियुक्त किया था और वह ई.पू. 36 तक उस पद

पर बना रहा। वह हन्नाह का दामाद था, जो 6 से 15 ईस्वी तक महायाजक था परन्तु देश में हो रही हर चीज पर उसने अपनी अधिक शक्ति का प्रयोग जारी रखा। काइफा के बारे में यूहन्ना के बयान का मतलब है कि जब यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ाया गया था, तब वह राष्ट्रीय मामलों का संचालन कर रहा था। यहूदी महासभा के प्रमुख याजक वर्ग के अधिकांश सदस्यों की तरह, काइफा एक सदूकी था। चूँकि सदूकियों ने पुनरुत्थान की संभावना से इनकार किया था, विशेष रूप से, इस चमत्कार ने खटास पैदा कर दी।

हम उसके गौरव पर भी ध्यान देते हैं (11:49ख)। काइफा ने अपने सहयोगियों द्वारा की जा रही चर्चा को बेरहमी से काट दिया। उसने कहा, ""तुम कुछ भी नहीं जानते।" उसने अपनी बात पर जोर देने के लिए दोहरे नकारात्मक प्रयोग किए। वस्तुतः वह अपने साथी शासकों से कह रहा था कि वे नही जानते हैं कि वे किस बारे में बात कर रहे हैं।

अब उसकी नीति प्रकट होती है (11:50) : "और न यह समझते हो कि तुम्हारे लिये यह भला है कि हमारे लोगों के लिये एक मनुष्य मरे, और सारी जाति नष्ट न हो।" काइफा को कानून या इसमें निहित अधिकारों अथवा कमियों की चिंता नहीं थी — बस जो लाभदायक था। उसके विचार में, एक अवांछित मसीहा से छुटकारा पाना, स्वयं को पद से हटाने और राष्ट्र को रोमी कानून के अधीन करने, साथ ही घरेलू स्वायत्तता को रद्द करने और मंदिर की अर्थव्यवस्था में रोमी हस्तक्षेप से कहीं बेहतर था। यीशु को भेड़ियों के सामने फेंक देना ही उचित था। इससे उनके दो उद्देश्य पूरे होते : राष्ट्र को कठोर रोमी शासन से बचाना और उस व्यक्ति से छुटकारा पाना जिससे वे नफरत करते थे।

हम उसकी भविष्यवाणी (11:51-52) पर भी ध्यान देते हैं : "यह बात उसने अपनी ओर से न कही, परन्तु उस वर्ष का महायाजक होकर भविष्यद्वाणी की, कि यीशु उस जाति के लिये मरेगा" (11:51)। उसकी बातों का दोहरा मतलब था जिसका उसे खुद भी अंदाज़ा नहीं था। वह एक राजनेता था, वह जैसा भी था फिर भी परमेश्वर ने उसे एक भविष्यवक्ता के रूप में उपयोग किया — जैसा कि उसने एक बार बिलाम का उपयोग किया था (गिनती 22:38)।

यह भविष्यवाणी इस्राएल राष्ट्र से कहीं आगे तक गई : "और न केवल उस जाति के लिये, वरन् इसलिये भी कि परमेश्वर की तितर–बितर सन्तानों को एक कर दे" (11:52)। महायाजक ने वही कहा जो उसके दुष्ट हृदय में था। लेकिन, ईश्वरीय प्रेरणा के एक रहस्यमय हस्तक्षेप से, उसने यीशु मसीह की मृत्यु के राष्ट्रीय और वैश्विक लाभ की घोषणा की।

महायाजक के विषय को छोड़ने से पहले, यूहन्ना ने उसके अपराध के बारे में भी एक कथन जोड़ा (11:53-54)। उसके सहकर्मी प्रभावित हुए। वह सबको अपने सामने लेकर आया। उसका अवसरवाद सबकी पसंद का था। प्रस्ताव पारित किया गया (11:53) : "अत: उसी दिन से वे उसे मार डालने का षड्यन्त्र रचने लगे।" काइफा की आपराधिक सलाह पर कार्रवाई करते हुए, महासभा ने यीशु को मृत्युदंड दिया, और वह भी बिना किसी सुनवाई के। इस प्रकार उन्होंने निश्चितता प्रदान की कि रोमी हमला जिससे काइफा बचना चाहता था, अंततः परमेश्वर द्वारा उनके देश पर आ पड़ेगा।

प्रस्ताव पारित हो गया, लेकिन हत्या स्थगित कर दी गई (11:54) क्योंकि यीशु उस जगह से कुछ समय के लिए हट गया था : "इसलिये यीशु उस समय से यहूदियों में प्रगट होकर न फिरा, परन्तु वहाँ से जंगल के निकटवर्ती प्रदेश के इफ्राईम नामक एक नगर को चला गया; और अपने चेलों के साथ वहीं रहने लगा।" इस विषय में कई

सारे मत हैं कि वह उस समय कहाँ गया था। कुछ लोग मानते हैं कि वह ताईबे में चला गया था, यरूशलेम से लगभग सोलह मील उत्तर पूर्व में और बेथेल से पांच मील पूर्व में एक शंकु के आकार की पहाड़ी पर था। यह जंगल के किनारे पर स्थित था, जहाँ से यरदन का व्यापक दृश्य दिखाई देता था। आखिरी फसह के लिए यरूशलेम में वापस आने तक यीशु ने खुद को इस स्थान पर एकांत में रखा।

सुसमाचार के इस भाग को समाप्त करते हुए, यूहन्ना यहूदी याजक से यहूदी फसह (11:55-57) की ओर ध्यान केंद्रित करता है। वह धार्मिक यात्रा का उल्लेख करता है (11:55) : “यहूदियों का फसह पर्व निकट था, और बहुत से लोग फसह से पहले देहात से यरूशलेम को गए कि अपने आप को शुद्ध करें।” यीशु के अलावा किसी को भी अंदाज़ा नहीं था कि यह विशेष फसह कितना महत्वपूर्ण होने वाला था।

यहूदी यह अवश्य सुनिश्चित करते थे कि फसह से पहले वे धार्मिक तौर पर अशुद्धता से दूर रहें। किसी भी महत्वपूर्ण घटना से पहले औपचारिक रूप से शुद्ध होना उनकी व्यवस्था का भाग था (निर्गमन 19:10-11; 2 इतिहास 30:13-20)। औपचारिक रूप से अशुद्ध लोग फसह में भाग नहीं ले सकते थे (यूहन्ना 18:28)। फसह मनाने से पहले औपचारिक रूप से शुद्ध होने की आवश्यकता को गिनती 9:6-14 में स्पष्ट किया गया है।

30 ईस्वी का यह फसह यूहन्ना द्वारा बताया गया तीसरा फसह है। यह वास्तविक महत्व रखने वाला आखिरी फसह था; फसह का सच्चा मेमना जगत के पाप के लिए मरने जा रहा था।

यूहन्ना लोगों का उल्लेख करता है (11:56) : “अत: वे यीशु को ढूँढ़ने लगे और मन्दिर में खड़े होकर आपस में कहने लगे, तुम क्या सोचते हो? क्या वह पर्व में नहीं आएगा?” बातचीत का सामान्य विषय यीशु था। गलीली यहूदियों ने उसे कुछ समय तक नहीं देखा था। लाज़र के पुनरुत्थान के बाद से, यरूशलेम के यहूदियों ने उसके बारे में कुछ नहीं सुना था। हम मंदिर में लोगों को इधर-उधर छोटे छोटे झुंडों में इकट्ठे देख सकते हैं जो इस असमंजस में हैं कि क्या यीशु आएगा। उसके चमत्कार, उसके संदेश, अतीत की बहुत सारी बातचीत के लिए आधार बने हैं। “क्या वह आएगा?” यह एक ज्वलंत प्रश्न था।

पृथ्वी या नरक की कोई भी शक्ति उसे दूर नहीं रख सकती। उन्हें यह नहीं पता था। जिस घड़ी के लिए वह संसार में आया था, वह निकट आ रही थी। और वह समय फसह के मेमने की बलि से भी मेल खा रहा था। उस घड़ी उसे यरूशलेम में रहना जरुरी था।

यूहन्ना ने याजकों का उल्लेख करता है (11:57) : “प्रधान याजकों और फरीसियों ने यह आदेश दे रखा था कि यदि कोई यह जाने कि यीशु कहाँ है तो बताए, ताकि वे उसे पकड़ सकें।”

महासभा का आदेश अब सबको पता था और यह बहस छिड़ी हुई थी कि यीशु राजधानी में आने की हिम्मत करेगा या नहीं। सभी यहूदी अधिकारिक मान्यता से परिचित थे। शासकों ने मसीह के दावों का इनकार कर दिया था और उस पर हाथ डालने के लिए उत्सुक थे। भीड़ को यीशु के प्रति महासभा के बुरे इरादों की जानकारी थी। इसीलिए, जब उन्होंने चिल्लाकर कहा था कि, “उसे क्रूस पर चढ़ाओ,” तो यह उन पर शासकों ने थोपा नहीं था। वे मसीह के आधिकारिक तिरस्कार में सहायक उपकरण थे, जिसके बारे में वे अच्छी तरह से जानते थे।

बैतनिय्याह के खुशहाल घर में बनी शांति का अंतराल (12:1-11) तूफान से पहले की शांति थी। हम यीशु को अपने दुश्मनों की क्रूरता का सामना करने से पहले मित्रों की संगति का आनंद लेते हुए देखते हैं।

यूहन्ना हमें प्रभु की बैतनिय्याह यात्रा का समय बताता है (12:1) : “यीशु फसह से छ: दिन पहले बैतनिय्याह में आया जहाँ लाज़र था, जिसे यीशु ने मरे हुओं में से जिलाया था।”

पृथ्वी पर प्रभु के अंतिम सप्ताह का समयक्रम आसान नहीं है, और विभिन्न दृष्टिकोण अपनाए गए हैं। कुछ लोगों का मानना है कि प्रभु को शुक्रवार को क्रूस पर चढ़ाए गया, तो दूसरों का मानना था कि उसे फसह सप्ताह के बुधवार को क्रूस पर चढ़ाया गया था। इस भ्रम का एक भाग इस सच्चाई के कारण है कि हमारा दिन सूर्योदय से शुरू होता है, जबकि यहूदियों का दिन सूर्यास्त से शुरू होता है। यह भ्रम विभिन्न प्रकार के विश्रामदिनों को लेकर भी उत्पन्न होता है। चर्चा का एक भाग इस बात पर भी केंद्रित है कि प्रभु कितने समय तक कब्र में था, और यह इस बात पर निर्भर करता है कि क्या हम दिन के हिस्से को पूरे दिन के रूप में गिनते हैं या फिर यह मानते हैं कि यीशु पूरे तीन दिन और तीन रात कब्र में था।

इस समय घटनाओं के मुख्य क्रम को संक्षेप में प्रस्तुत करना सहायक होगा।

1. फसह से पहले छठा दिन
   नीसान महीने का 9वां दिन
   हमारे गुरूवार के सूर्यास्त से शुक्रवार सूर्यास्त तक
    - प्रभु यरीहो से यरूशलेम जाता है (लूका 19:1-10)
    - वह जक्कई के साथ गुरुवार की रात बिताता है (लूका 19:11-27)
    - वह यरूशलेम में प्रवेश करता और मंदिर को शुद्ध करता है (मत्ती 21:1-16)
    - वह बैतनिय्याह को जाता है (यूहन्ना 12:1)
2. फसह से पहले का पाँचवाँ दिन
   नीसान महीने का 10वां दिन
   हमारे शुक्रवार के सूर्यास्त से शनिवार सूर्यास्त तक
    - प्रभु विश्राम दिवस बैतनिय्याह में बिताता है। सूर्यास्त के बाद तीन भोजों में से पहला भोज संभवतः लाज़र के घर पर दिया गया (यूहन्ना 12:2)
    - बैतनिय्याह में मरियम ने यीशु का अभिषेक किया (यूहन्ना 12:3-11)
3. फसह से पहले का चौथा दिन
   नीसान महीने का 11वां दिन
   शनिवार सूर्यास्त से रविवार सूर्यास्त तक
    - यरूशलेम में विजयी प्रवेश (मरकुस 11:1-7; लूका 19:29-35; यूहन्ना 12:12)
    - बैतनिय्याह में लौटना (मरकुस 11:11)
4. फसह से पहले का तीसरा दिन
   नीसान महीने का 12वां दिन
   रविवार सूर्यास्त से सोमवार सूर्यास्त तक

- प्रभु यरूशलेम लौटता है और अंजीर के पेड़ को शाप देता है (मत्ती 21:18-22)
- यूनानियों का आगमन (यूहन्ना 12:20-50)
- प्रधानों की ओर से विरोध (मरकुस 11:12-18)
- प्रभु यरूशलेम से निकलता है, शायद बैतनिय्याह के लिए (लूका 11:19)

5. फसह से पहले का दूसरा दिन
   नीसान महीने का 13वां दिन
   सोमवार सूर्यास्त से मंगलवार सूर्यास्त तक
   - प्रभु यरूशलेम लौटता है (मत्ती 21:23-23:39; मरकुस 11:20-12:44; लूका 20:1-21:38)
   - प्रभु जैतून के पहाड़ से उपदेश देता है (मत्ती 24:1-25:46)
   - समय टिप्पणी : “दो दिन के बाद फसह का पर्व है” (मत्ती 26:1-5; मरकुस 14:1-2)
   - प्रभु बैतनिय्याह लौटता है। शमौन कोढ़ी के घर में दूसरा भोज। दूसरा अभिषेक (मत्ती 26:6-13; मरकुस 14:3-9)
6. फसह से पहले का दिन
   नीसान महीने का 14वां दिन
   मंगलवार सूर्यास्त से बुधवार सूर्यास्त तक, सूली पर चढ़ने का दिन
   - यहूदा की साजिश (मत्ती 26:14-16)
   - अंतिम भोज की “तैयारी” (मत्ती 26:17-19)। मरकुस 14:12 और लूका 22:7 के शब्द “अखमीरी रोटी का पहले दिन” (नीसान का 14वाँ दिन, “तैयारी का दिन”) को दिखाते हैं।
   - शाम को प्रभु ऊपरी कमरे में जाता है और चेलों के पैर धोता है (मत्ती 26:21-25; यूहन्ना 13:1-20)
   - प्रभु पकड़वाने वाले का खुलासा करता है (यूहन्ना 13:21-30)
   - प्रभु फसह खाता है और नई वाचा बांधता है (मत्ती 26:26-29)
   - प्रभु पतरस के इन्कार की भविष्यवाणी करता है (यूहन्ना 13:31-38)
   - प्रभु अपने चेलों से बात करता और उनके लिए प्रार्थना करता है (यूहन्ना 14:1-17:26)
   - वे गतसमनी जाते हैं (मत्ती 26:30-35; यूहन्ना 18:1)
   - प्रभु की गिरफ्तारी (मत्ती 26:47-56; यूहन्ना 18:2-11)
   - मुकदमें (मत्ती 26:57-27:31; यूहन्ना 18:12-19:13)
   - क्रूस पर चढ़ाया जाना (“तीसरा घंटा” — बुधवार सुबह 9 बजे) (मरकुस 15:25-26)
   - प्रभु की माँ को यूहन्ना की देखरेख में दिया जाना (यूहन्ना 19:25-27)
   - प्रभु की मृत्यु “नौवें घंटे” (बुधवार दोपहर 3 बजे) होती है (यूहन्ना 19:31-37)

- प्रभु को जल्दबाज़ी में गाड़ा जाना (यूहन्ना 19:38-42)

इस प्रकार, फसह के पहले दिन, नीसान के 15वें दिन (बुधवार सूर्यास्त से गुरुवार सूर्यास्त तक) प्रभु पहले से ही कब्र में था। इस दिन को “परम दिवस” या “परम विश्रामदिवस” कहा जाता था। वह फसह के दूसरे और तीसरे दिन (गुरुवार सूर्यास्त से शनिवार सूर्यास्त तक) कब्र में ही रहा। शनिवार नियमित यहूदी सब्त का दिन था, जो नीसान का 17वाँ दिन था। वह “सप्ताह के पहले दिन,” नीसान के 18वें दिन : “तीसरे दिन भोर को” मृतकों में से जी उठा, जैसी यीशु ने भविष्यवाणी की थी (मत्ती 16:21)।

अब यूहन्ना हमें प्रभु की बैतनिय्याह यात्रा का विवरण देता है (12:2-11)। यहाँ बताई गई प्यारी कहानी मार्था, मरियम और लाज़र के इर्द-गिर्द है। पूरा दृश्य स्थानीय कलीसिया का एक प्रतिरूप है : जब उसके नाम में “दो या तीन एक साथ इकट्ठे होते हैं”, तो वह “उनके बीच में होता है।”

प्रत्येक स्थानीय कलीसिया को एक मार्था की आवश्यकता है। मार्था एक सेवादार थी (12:2) : “वहाँ उन्होंने उसके लिये भोजन तैयार किया; और मार्था सेवा कर रही थी।” (यहाँ दर्ज भोज मत्ती 26:6-13 और मरकुस 14:1-9 में दर्ज भोज प्रतीत नहीं होता है, न ही यहाँ दर्ज अभिषेक मत्ती 26:7-13 और मरकुस 14:3-9 में दर्ज अभिषेक प्रतीत होता है) यूहन्ना जोड़ता है कि “लाज़र उनमें से एक था जो उसके साथ भोजन करने के लिये बैठे थे।” लाज़र के बारे में आश्चर्य कभी कम नहीं हुआ था। आज होता तो, शायद लाज़र किसी टीवी शो में अतिथि होता या कोई व्यवसायी प्रचारक किताब लिखने, गवाही देने या बिक्री बढ़ाने के लिए महाद्वीपों की यात्रा करने के लिए उसे रख कर लेता। यहाँ हम लाज़र को चुपचाप और अदृश्य रूप से यीशु के साथ मेज पर अपना स्थान लेते हुए देखते हैं।

मार्था एक सेवादार थी। परन्तु अब कोई आलोचना या शिकायत नहीं थी, जैसा पहले हुआ करता था (लूका 10:38-42)।

मरियम एक आराधक थी (12:3-8)। हर स्थानीय कलीसिया में उन लोगों की आवश्यकता है जो स्वयं को यीशु के चरणों में समर्पित करते हैं। हम कितनी बार बैतनिय्याह की मरियम को यीशु के चरणों में पाते हैं (लूका 10:39; यूहन्ना 11:32; 12:3)।

हम देखते हैं कि उसकी आराधना किस प्रकार व्यक्त की गई (12:3) : “तब मरियम ने जटामांसी का आधा सेर बहुमूल्य इत्र लेकर यीशु के पाँवों पर डाला, और अपने बालों से उसके पाँव पोंछे; और इत्र की सुगंध से घर सुगन्धित हो गया।” जटामांसी एक तरल इत्र था, जो बेहद महंगा था। उपयुक्त शब्द स्पाइकेनार्ड इशारा करता है कि इत्र असली या शुद्ध था, पैसों से खरीदा जा सकने वाला सबसे अच्छा इत्र। उसने इसे पूरी उदारता के साथ, अप्रत्याशित तरीके से, सहजता के साथ निकाला और उसके पैरों पर डालकर अपने बालों से पोंछा। सच्ची आराधना कभी भी लागत नहीं गिनती। यह सांसारिक लोगों के घूरने या उपहास करने से भयभीत नहीं होती। इसने केवल यीशु मसीह के बारे में और उसके लिए सोचा। यह अपने पीछे एक ऐसी खुशबू छोड़ता है जिसे कोई भूल या टाल नहीं सकता। उस सुगंध का थोड़ा सा हिस्सा हर कोई ले जाता है।

उसकी आराधना को परखा गया (12:4-6)। हम यहूदा की कड़वी टिप्पणी पर ध्यान देते हैं : “परन्तु उसके चेलों में से यहूदा इस्करियोती नामक एक चेला जो उसे पकड़वाने पर था, कहने लगा, यह इत्र तीन सौ दीनार में बेचकर कंगालों को क्यों न दिया गया?” यहूदा की राय में यीशु को दान देने में इतनी फिजूलखर्ची करना बर्बादी थी। ऐसा आज भी कई लोगों के मन में है। कई लोग सोचते हैं कि परमेश्वर के काम के लिए दिया गया पैसा सामाजिक

सेवाओं पर खर्च करना बेहतर होगा। वे सोचते हैं कि किसी सुदूर जनजाति तक सुसमाचार पहुँचाने की कोशिश में बिताया जाने वाला जीवन, बर्बादी है।

यहूदा ने मरियम के प्रेमभरे कार्य पर तुरंत कीमत लगा दी। "तीन सौ दीनार" इत्र के बाजार मूल्य की उसकी गन्ना थी। बाइबल के समय में एक मजदूर को पूरे दिन काम करके एक दीनार मिलता था, इसलिए उस इत्र की कीमत, एक कामकाजी आदमी की वार्षिक मज़दूरी के लगभग थी। यह राशि यहूदा के लिए बहुत बड़ी थी।

यूहन्ना भी यह समझ पा रहा था : यूहन्ना टिप्पणी करता है, "उसने यह बात इसलिये नहीं कही कि उसे कंगालों की चिन्ता थी परन्तु इसलिये कि वह चोर था, और उसके पास उनकी थैली रहती थी और उसमें जो कुछ डाला जाता था, वह निकाल लेता था" (12:6)। यूहन्ना कई सालों के बाद इन चीज़ों पर नज़र डाल रहा है। हालाँकि अब वह बूढ़ा हो गया था, लेकिन यहूदा के दोहरेपन का भय अब भी उसमें दिखता था। उसने कहा, "वह चोर था।" यह शब्द क्लेप्टेस है, जिससे हमें क्लेप्टोमेनियाक नामक शब्द मिलता है। यहूदा अंत तक अपने साथियों की आंखों पर पट्टी बांधने में सफल रहा। लेकिन एक बार जब उसके विश्वासघात का पर्दाफाश हुआ तो कई अन्य बातें बताई गईं। अन्य सभी अविश्वासी चेलों ने मान लिया था कि यहूदा गरीबों को पैसा दे रहा था। अब स्पष्ट हो चुका था कि यह कहाँ जा रहा था : एक चोर की जेब भरने के लिए। यहूदा इस बात से क्रोधित था कि इतनी बड़ी रकम थैले में नहीं डाली गई जिसमें से वह अपना हिस्सा भी ले सके।

यहूदा की तीखी टिप्पणी मरियम पर कोड़े की तरह पड़ी होगी, लेकिन प्रभु ने उसकी रक्षा में कदम बढ़ाया : "यीशु ने कहा, "यीशु ने कहा, उसे रहने दो। उसे यह मेरे गाड़े जाने के दिन के लिये रखने दो" (12:7)।

यह है कुंजी। हमें खुद को मरियम की जगह पर रखकर देखना है। उसने यीशु की बात सुनी, उसके चरणों में बैठी, उससे सीखा। उसने उसे उसकी मृत्यु और गाड़े जाने के बारे में बात करते हुए सुना था। उसने इस बारे में बहुत सोचा और उसे एहसास हुआ कि वह मरने जा रहा है।

उसकी मृत्यु की तैयारी में, कभी उसने यह दुर्लभ और महँगा इत्र खरीदा होगा और उसे छिपाए रखा। उसी समय लाज़र की अचानक और अप्रत्याशित रूप से मृत्यु हो गई थी, और उसे दफनाने के लिए सुगंधद्रव्यों की आवश्यकता थी। क्या मरियम को अपने भाई के मृत शरीर पर अपना ये खजाना लुटाने का प्रलोभन नहीं आया होगा? नहीं, उसने यह लाज़र के लिए नहीं; यीशु के लिए खरीदा था। यह लाज़र के गाड़े जाने के लिए नहीं था; यह यीशु के गाड़े जाने के लिए था। यीशु जानता था कि उसके पास यह है, और क्यों है।

फिर एक दिन पुनरुत्थान हुआ! यीशु बैतनिय्याह आया और उसके भाई को जीवित किया। हम कल्पना कर सकते हैं कि भोजन की मेज पर मार्था ने अपने भाई और बहन को कितनी ही बार बताया होगा कि यीशु ने क्या कहा था : "पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ।" मरियम ने इस बात को अपने हृदय में छिपाए रखा।

फिर एक दिन उसकी आत्मा में रोशनी जल उठी। यीशु ने कहा कि उसे क्रूस पर चढ़ाया जाएगा, गाड़ा जाएगा, और वह फिर से जी उठेगा। लाज़र जैसा पुनरुत्थान! यह तो होना ही था। वह पुनरुत्थान था। मृत्यु उसे रोक नहीं पाएगी। उसने कहा था कि वह तीसरे दिन जी उठेगा। जहाँ तक उसके शरीर की बात है, उसे किसी सुगन्धित द्रव्य की जरूरत नहीं पड़ेगी। दाऊद ने भविष्यवाणी की थी : "तू अपने पवित्र भक्त को सड़ने नहीं देगा" (भजन 16:10)। आख़िरकार जब यीशु को गाड़ा जाएगा तो उसे इत्र की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

अतः उसने खुद से कहा, अगली बार जब वह यहाँ आएगा तो मैं यह उसे जरूर दूंगी। यह उसके विश्वास का अद्भुत प्रदर्शन था। उसने वह इत्र उसके गाड़े जाने के लिए रखा था, लेकिन उसने उसे एक सप्ताह पहले ही दे दिया — क्योंकि अब उसे उसके पुनरुत्थान पर विश्वास था। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि घर खुशबू से भर गया!

ऐसा लगता है कि बैतनिय्याह की मरियम ही एकमात्र ऐसी महिला थी जिसने पुनरुत्थान की सच्चाई पर विश्वास किया। आप उसे क्रूस या कब्र पर नहीं देखोगे। कायरता या निराशा ने उसे दूर नहीं रखा। आप प्रभु की माता मरियम को क्रूस के निकट देख सकते हैं, मरियम मगदलीनी को कब्र पर देख सकते हैं, यूहन्ना और याकूब की माता मरियम क्रूस और कब्र के निकट देख सकते हैं। लेकिन आप बैतनिय्याह की मरियम को वहां नहीं पाएंगे। उसे कहीं भी होने की कोई आवश्यकता नहीं थी। वह पहले से ही पुनरुत्थान की भूमि पर खड़ी थी।

प्रत्येक स्थानीय कलीसिया को काम पूरा करने के लिए मार्था की जरूरत होती है। प्रत्येक कलीसिया को दूसरों को परमेश्वर की गहरी बातों में प्रवेश कराने के लिए मरियम की आवश्यकता होती है। प्रत्येक स्थानीय कलीसिया को लाज़र जैसे पुरुषों की आवश्यकता होती है जो एक विशेष अर्थ में गवाह था (12:9-11)।

यूहन्ना हमारे लिए लाज़र की गवाही की जबरदस्त वास्तविकता (12:9) को दर्शाता है : "जब यहूदियों की बड़ी भीड़ जान गई कि वह [यीशु] वहाँ है, तो वे न केवल यीशु के कारण आए परन्तु इसलिये भी कि लाज़र को देखें, जिसे उसने मरे हुओं में से जिलाया था।"

हमें कोई अंदाजा नहीं है कि लाज़र कितने समय तक बैतनिय्याह में रहा था, शायद जीवनभर। जहाँ तक हम जानते हैं, वह हमेशा एक सभ्य, नैतिक, कानून का पालन करने वाला, आराधनालय में जाने वाला व्यक्ति था। अब वह यीशु मसीह पर विश्वास करने वाला बन गया था। उसका घर एक ऐसा केंद्र बन गया था जहाँ प्रभु यीशु से प्रेम किया जाता था, उसका स्वागत किया जाता था, सम्मान किया जाता था। वह यीशु को व्यक्तिगत रूप से जानता था। उसने अपने लोगों का स्वागत किया। क्योंकि वह मसीह में विश्वास रखता था, किसी ने भी उसे देखने के लिए यरूशलेम से दो मील की यात्रा नहीं की थी। किसी भी साधारण विश्वासी को देखने के लिए कभी भी किद्रोन को पार नहीं किया गया, न ही जैतून पर कोई चढ़ा।

फर्क कहाँ आया? अब वह पुनरुत्थान का जीवन जीने वाला व्यक्ति था। पुनरुत्थान की शक्ति में दिन-ब-दिन, स्थिति दर स्थिति जीने वाला व्यक्ति था। उस समय तक, लाज़र एक सच्चा विश्वासी था, एक समर्पित विश्वासी। लेकिन मसीह का विशेष रूप से उत्कृष्ट गवाह नही था। परन्तु अब उसका जीवन एक गवाह था। उसने यह नहीं कहा, "आज मैं घर-घर जाकर लोगों से मुलाकात करूँगा और उन्हें यीशु के लिए जीतने की कोशिश करूंगा।" उसने आत्माओं को जीतने का कोई पाठ्यक्रम नहीं किया था या बाइबल के प्रमुख पद कंठस्थ नहीं किए थे। उसने बस पुनरुत्थान का जीवन जीया। और लोगों ने लाज़र की गवाही पर विश्वास किया। पुनरुत्थान के उस जीवन का चमत्कार देखने के लिए लोग दूर-दूर से आये। वे उस मनुष्य को देखने आये जो मर गया था परन्तु अब जीवित है।

मान लीजिए कि हमें उससे पूछना हो : "लाज़र, तुम यह कैसे करते हो? तुम्हारे इस गतिशील नए जीवन का रहस्य क्या है?" तो वह कुछ इस तरह कहता, "मैं हमेशा से ऐसा नहीं था। कुछ वर्षों तक मैं यीशु में नाममात्र का विश्वासी था। मैं उससे प्रेम करता था; मैं उसे खुश करना चाहता था। वह मेरे जीवन में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति था। मैं अपनी बहनों से प्रेम करता था; प्रभु के लोगों से प्रेम करता था। मैंने सब सही कार्य किए, सब सही बातें कहीं। मैं पूरी तरह से ईमानदार था। फिर एक दिन, मैं हर किसी के लिए मर गया, यहाँ तक कि मैं यीशु में अपनी गवाही के लिए भी मर गया। बूढ़ा लाज़र वास्तव में बहुत मरा हुआ था। और हर कोई यह जानता था। आप एक

मरे हुए आदमी से कुछ भी उम्मीद नहीं कर सकते? मैं मर गया था। और मुझे गाड़ दिया गया था। मैं पूरी तरह से समाप्त हो गया था। तब यीशु आया और उसने मुझे एक नया जीवन दिया — उसका जीवन, पुनरुत्थान का जीवन। अब देखो कि मैं वह पुराना लाज़र नहीं हूँ जिसे तुम जानते थे..."

ऐसे व्यक्ति के जीवन में कुछ आकर्षक अवश्य होता है जो अपने पुराने जीवन के लिए मर चुका हो और मसीह में पुनरुत्थान का जीवन जी रहा हो। परमेश्वर का पुत्र उन लोगों को जीवन प्रदान करता है जो पापों में मर चुके हैं। वह बोलता है और आत्मिक रूप से मृत लोगों को पुनर्जीवित करता है।

यूहन्ना भयानक प्रतिक्रिया दिखाना जारी रखता है (12:10-11)। "तब प्रधान याजकों ने लाज़र को भी मार डालने का षड्यन्त्र रचा। क्योंकि उसके कारण बहुत से यहूदी चले गए और यीशु पर विश्वास किया।" लाज़र के नये जीवन की गवाही अत्यधिक प्रभावशाली थी। लोग आये, देखा, चले गये, और यीशु पर विश्वास किया। धार्मिक अगुवे इसे रोकने में असमर्थ थे। वे इससे इनकार नहीं कर सके।

इसलिए अधिकारियों की प्रतिक्रिया लाज़र की हत्या की साजिश रचने की थी। यीशु ने एक मृत व्यक्ति के सामने जाकर और उसे जीवित कर दिया था। ये अगुवे एक पुनर्जीवित व्यक्ति के सामने गए और उसे मार डालने का प्रयास किया। वे मसीह के विरुद्ध, और मसीह की सामर्थ्य में रहने वाले मनुष्य के विरुद्ध जहर से भरे हुए थे।

B. भविष्यवाणी की पूर्णता के बावजूद ठुकराया गया (12:12-19)

बातें अब तेज़ी से समाप्ति की ओर बढ़ रही थीं। प्रभु को उसकी सामर्थ्य के बावजूद ठुकरा दिया गया। अब उसकी भविष्यवाणी की पूर्णता के बावजूद उसे ठुकराया जाना था (12:12-19)। भविष्यवाणी के अनुसार ही, वह यरूशलेम में प्रवेश करने वाला था, और आधिकारिक तौर पर खुद को राष्ट्र के अधिकारपूर्ण राजा के रूप में इस्राएल के सामने प्रस्तुत करने वाला था।

1. धार्मिक यात्री (12:12-13क)

यरूशलेम में प्रभु के विजयी प्रवेश में, यूहन्ना को सबसे ज्यादा प्रभावित करने वाले लोग थे, धार्मिक यात्री (12:12-13क)। हम उस दिन के महत्व पर ध्यान देते हैं (12:12) : "दूसरे दिन बहुत से लोगों ने जो पर्व में आए थे यह सुना कि यीशु यरूशलेम में आ रहा है।" वह दिन फसह से पहले का चौथा दिन था, जिसे हम खजूरी इतवार (पाम सन्डे) कहते हैं।

हालाँकि यूहन्ना ऐसा नहीं कहता, यह एक महत्वपूर्ण तारीख थी। पवित्रशास्त्र में निपुण यहूदी इस तिथि को अपने पंचांग पर अंकित करके रखा करते थे। यहूदी महासभा इस तिथि के आगमन का इंतजार कर रही थी। वे अपने धार्मिक पंचांग के अन्य सभी दिनों और तिथियों, समयों और कालों से अधिक इस तिथि का विशेष महत्व जानते थे। वह दिन और तारीख आ चुकी थी जिसकी भविष्यवाणी दानिय्येल भविष्यवक्ता ने 483 वर्ष पहले की थी, जिसमें इस्राएल के लिए सत्तर वर्ष की अवधि निर्धारित की गई थी। सात सात वर्ष के कालों में उनसठ वर्ष के बाद, कुछ महत्वपूर्ण घटने वाला था। दानिय्येल ने वह तारीख बताई थी जहाँ से उन्हें आगे आने वाले वर्षों का हिसाब रखना था :

"तेरे लोगों और तेरे पवित्र नगर के लिये सत्तर सप्ताह ठहराए गए हैं कि उनके अन्त तक अपराध का होना बन्द हो, और पापों का अन्त और अधर्म का प्रायश्चित किया जाए, और युगयुग की धार्मिकता प्रगट हो; और दर्शन की बात पर और भविष्यद्वाणी पर छाप दी जाए, और परमपवित्र का अभिषेक किया जाए। इसलिये यह जान और समझ

ले, कि यरूशलेम को फिर बसाने की आज्ञा के निकलने से लेकर अभिषिक्त प्रधान के समय तक सात सप्ताह बीतेंगे। फिर बासठ सप्ताहों के बीतने पर चौक और खाई समेत वह नगर कष्ट के समय में फिर बसाया जाएगा। उन बासठ सप्ताहों के बीतने पर अभिषिक्त पुरुष काटा जाएगा और उसके हाथ कुछ न लगेगा; और आनेवाले प्रधान की प्रजा नगर और पवित्रस्थान को नष्ट तो करेगी। परन्तु उस प्रधान का अन्त ऐसा होगा जैसा बाढ़ से होता है; तौभी उसके अन्त तक लड़ाई होती रहेगी; क्योंकि उसका उजड़ जाना निश्चय ठान लिया गया है। वह प्रधान एक सप्ताह के लिये बहुतों के संग दृढ़ वाचा बाँधेगा, परन्तु आधे ही सप्ताह के बीतने पर वह मेलबलि और अन्नबलि को बन्द करेगा; और कंगूरे पर उजाड़नेवाली घृणित वस्तुएँ दिखाई देंगी और निश्चय ही ठनी हुई बात के समाप्त होने तक परमेश्वर का क्रोध उजाड़नेवाले पर पड़ा रहेगा" (दानिय्येल 9:24-27)।

इस भविष्यवाणी को तीन कालों में विभाजित किया गया था। पहला (7 x 7) काल यहूदियों को पुराने नियम के अंत तक लेकर गया जिस दौरान कठिन समय में नगर का पुनर्निर्माण हुआ और इसकी शुरुआत 445 ईसा पूर्व से हुई, जब अर्तक्षत्र राजा ने अपने शासन के बीसवें वर्ष में, नहेम्याह को यरूशलेम लौटने और उसका पुनर्निर्माण करने की अनुमति दी (नहेम्याह 2:1-8)।

इसके बाद दूसरा काल (62 x 7) आता है जो यहूदियों को तथाकथित "मौन शताब्दियों" से होते हुए, मध्यकालीन समय तक पहुँचाता है, जिस समय मसीहा आएगा, उसे "काटा जाएगा : और उसके हाथ कुछ न लगेगा।" सर रॉबर्ट एंडरसन के अनुसार, यह काल यीशु मसीह के यरूशलेम में विजयी प्रवेश के दिन समाप्त हुआ। उसी सप्ताह में वह उन यहूदी अगुवों के द्वारा "काटा गया, और उसके हाथ कुछ न लगा" जिन्हें इस दिन के भविष्यसूचक महत्व को जानना चाहिए था।

तीसरा काल (1 x 7) एक संतुलन में झूला। मान लीजिए कि यहूदियों ने यीशु को मसीहा के रूप में स्वीकार कर लिया होता, अधिकारियों और भीड़ ने उसे राजा मान लिया होता, तो निस्संदेह, अंतिम सप्ताह से जुड़ी सभी घटनाएँ तुरंत सामने आ गई होतीं। रोमियों ने यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ा दिया होता। भविष्यवाणी के अनुसार, यहूदियों के साथ सात साल की संधि पर हस्ताक्षर कर दिए होते, फिर उसे तोड़ दिया गया होता, महाक्लेश का आरंभ हो गया होता, अपना राज्य स्थापित करने के लिए आये मसीह के द्वारा हटा दिए गए होते। काइफा की भविष्यवाणियाँ तत्काल पूरी होतीं, परमेश्वर ने कार्यों को "जल्दी से करवा" दिया होता और मसीह के दूसरे आगमन को जल्दी कर दिया होता।

लेकिन हुआ यह कि यहूदियों ने यह भविष्यवाणी पूरी की कि मसीहा काट दिया जाएगा। मसीह के पुनरुत्थान और पिन्तेकुस्त पर पवित्र आत्मा के आगमन पर उन्होंने पश्चाताप नहीं किया। फलस्वरूप दानिय्येल की भविष्यवाणी का अंतिम सप्ताह अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दिया गया। परमेश्वर ने कलीसिया के युग को उनसठवें और सत्तरवें सप्ताह के बीच डाला। जो डर काइफा को था कि रोमी आएँगे, यरूशलेम को नाश कर डालेंगे, यहूदी एक पीढ़ी के भीतर ही अपने ऊपर वह क्लेश ले आए।

यह वह दिन था, जो निश्चित रूप से यहूदियों के, शायद संसार के इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण दिन था, क्योंकि तत्काल या लंबे समय से विलंबित सहस्त्राब्दी के शासन का विकल्प संतुलन में आ गया था।

वह वह दिन था जब आम लोगों ने, जो अब भी लाज़र के जीवित किए जाने के कारण उत्साह से भरे हुए थे, सुना कि "यीशु यरूशलेम में आ रहा है।"

इसके साथ, हम कार्य के निहितार्थ (12:13क) पर ध्यान देते हैं : "उन्होंने खजूर की डालियाँ लीं और उससे भेंट करने को निकले।" भीड़ संभवतः कई देशों से यरूशलेम में फसह मनाने आए हजारों धार्मिक यात्रियों की थी।

मकाबियों के दिनों से ही, यहूदियों द्वारा खजूर की डालियों को जीत के प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया जाता रहा है। जब यहूदियों ने 164 ईसा पूर्व में मंदिर के पुनर्समर्पण का जश्न मनाया था तो जुलूस में खुशी मना रहे लोगों ने खजूर की डालियां लहराईं थीं। जब ईसा पूर्व 141 में शिमॉन के अधीन यहूदियों को पूर्ण स्वतंत्रता मिली, तो उन्होंने खजूर के पत्ते लहराए थे। 66-70 ईसा पूर्व में रोमियों के विरुद्ध युद्ध में और पुनः बार-कोचबा के अधीन, 132 से 135 यहूदियों ने अपने सिक्कों पर प्रतीक के रूप में खजूर के पत्तों की मुहर लगाई। यहां भी धार्मिक यात्रियों ने जय जयकार करते हुए खजूर की डालियाँ लहराईं। मसीहा आ रहा था। जीत उसके हाथ में थी। यह अंततः रोमी शासन का अंत था।

2. स्तुति (12:13ख)

यूहन्ना स्तुति को सुन सकता था : "और पुकारने लगे, होशाना! धन्य इस्राएल का राजा, जो प्रभु के नाम से आता है।" यह भजन 118:25-26 से लिया गया एक उद्धरण था। होसन्ना शब्द का अर्थ था "अभी बचाओ!" या "अभी विजय दो!" इसमें कोई संदेह नहीं है कि वे राजा के आगमन के राजनीतिक और सैन्य निहितार्थों से उत्साहित थे। उन्होंने इस सच्चाई को कभी नहीं समझा कि सहस्त्राब्दी साम्राज्य केवल आत्मिक साम्राज्य की नींव पर ही प्रकट हो सकता है।

3. जुलूस (12:14क)

हम जुलूस पर ध्यान देते हैं : "जब यीशु को गदहे का एक बच्चा मिला; तो वह उस पर बैठ गया।" यरूशलेम से जैतून पर्वत की ओर उमड़ती हुई जय जयकार कर रही भीड़, यीशु और उसके चेलों से यरूशलेम की ओर ढलान पर आते हुए मिली। प्रभु गधी पर सवार थे। यदि उसका मकसद यहूदियों की सैन्य आकांक्षाओं को प्रोत्साहित करना होता, तो वह युद्ध के घोड़े पर सवार होकर यरूशलेम में आता। इस तथ्य में कोई संदेह नहीं है कि यह "मसीहा" गधे पर विजयी सवारी कर रहा था, इससे रोमी संदेह को खत्म करने में मदद मिली होगी। हम निश्चिंत हो सकते हैं कि इस लोकलुभावन आंदोलन पर रोमियों की पैनी नजर थी। लेकिन गधे पर सवार राजा की ओर से कोई खतरा नहीं आएगा। उन्हें यह मनोरंजक, यहाँ तक कि उपहास करने लायक भी लगेगा।

4. भविष्यवाणी (12:14ख-16)

लेकिन यह उन लोगों के लिए मनोरंजक नहीं था जो बाइबल से परिचित थे। ऐसी भविष्यवाणी थी : "हे सिय्योन की बेटी, मत डर; देख, तेरा राजा गदहे के बच्चे पर चढ़ा हुआ चला आता है।" भविष्यवक्ता जकर्याह ने इस घटना की भविष्यवाणी (जकर्याह 9:9) एक स्पष्ट सहस्त्राब्दी के संदर्भ में की थी (जकर्याह 9:10)। चेले स्वयं इस भविष्यवाणी को भूल गए थे : "उसके चेले ये बातें पहले न समझे थे, परन्तु जब यीशु की महिमा प्रगट हुई तो उनको स्मरण आया कि ये बातें उसके विषय में लिखी हुई थीं और लोगों ने उससे इसी प्रकार का व्यवहार किया था" (12:16)। जाहिर है, उस समय चेले स्वयं भविष्यवाणी को पूरा करने के प्रति सचेत नहीं थे। हालाँकि, महासभा में कुछ अधिक चतुर दिमाग भी रहे होंगे, जिन्होंने इस भविष्यवाणी को याद किया और मसीह द्वारा इसकी पूर्ति में, अपने दृष्टिकोण से, अशुभ निहितार्थ देखे।

5. लोग (12:17-18)

हमारा ध्यान वापस लोगों की ओर आकर्षित किया जाता है : "तब भीड़ के उन लोगों ने गवाही दी, जो उस समय उसके साथ थे जब उसने लाज़र को कब्र में से बुलाकर मरे हुओं में से जिलाया था। इसी कारण लोग उससे भेंट करने को आए थे क्योंकि उन्होंने सुना था कि उसने यह आश्चर्यकर्म दिखाया है।" दो प्रकार की भीड़ आपस में मिल गई। हाल ही में हुए चमत्कार के कारण उत्साह से भरी हुई एक मंडली बैतनिय्याह से यरुशलेम आ रही थी। लाज़र के पुनरुत्थान की कहानी स्पष्ट रूप से शहर में प्रसिद्ध हो चुकी थी। शहर के धार्मिक यात्री भी उस चमत्कार के बारे में सुनकर आने वाले राजा से मिलने के लिए उत्साहित हो गए। जो व्यक्ति मृतकों को जीवित कर सकता था, रोमियों से आसानी से निपट सकता था।

6. धारणा (12:19)

यूहन्ना इस घटना का समापन प्रभु के शत्रुओं की धारणा के साथ करता है। इस बात को समझने के लिए बहुत अधिक माथापच्ची की आवश्यकता नहीं थी कि याजकों की ताकत और महासभा के अधिकार के सहयोग से हो रहे संगठित और आधिकारिक विरोध का कोई नतीजा नहीं निकल रहा था। "तब फरीसियों ने आपस में कहा, सोचो तो सही कि तुम से कुछ नहीं बन पड़ता। देखो, संसार उसके पीछे हो चला है" (12:19)। दृढ़ निश्चयी महायाजक काइफा द्वारा मजबूती पा रहे सदूकियों ने इस निराशावाद रुकावट नहीं बनने दी। वे अपनी योजनाएँ बना रहे थे और अपने समय का इंतजार कर रहे थे। फिर भी, जितना वे जानते थे उससे भी कहीं अधिक सही फरीसी थे। दुनिया उसके पीछे हो चली थी। यूहन्ना फरीसियों की इस टिप्पणी को एक उपयुक्त अवसर के रूप में लेता है कि इस घटना को स्पष्ट कर सके।

C. प्रार्थना में अपने उत्साह के बावजूद ठुकराया गया (12:20-36)

आगे हम देखते हैं कि प्रार्थना में अपने उत्साह के बावजूद मसीह को ठुकरा दिया गया।

1. यूनानियों का दौरा (12:20-26)

यूहन्ना अब हमें यूनानियों के दौरे के बारे में बताता है, जो यीशु मसीह के वैश्विक मिशन के संदर्भ में काफी रोचक विषय था। घटना की शुरुआत एक विनती (12:20-24) से होती है। ये यूनानी भाषी गैर-यहूदी (हेलेन्स) थे, न कि केवल यूनानी भाषी यहूदी। वे फिलिस्तीन से परे गैर-यहूदी जगत के प्रतिनिधि थे। हो सकता है कि वे परमेश्वर का भय माननेवाले अन्यजाति रहे हों, जो यहूदी धर्म के प्रति आकर्षित थे लेकिन वे पूरी तरह से धर्म को बदलकर एक अपरिवर्तनीय कदम नहीं उठा रहे थे। ये अन्यजातिय लोग कभी-कभार पर्व के अवसरों पर यरुशलेम जाते थे। उन्हें मन्दिर में अन्यजातियों के आँगन तक जाने की अनुमति दी जाती थी। इनमें से कुछ लोग सहज अनुरोध के साथ चेले फिलिप्पुस के पास पहुँचे (12:20-22)। स्पष्ट है की वे इस चमत्कारी यीशु के बारे में शहर में भरे उत्साह से प्रभावित थे। वे "पर्व में आराधना करने" यरुशलेम आये थे।

प्रभु के विजयी प्रवेश और इन अन्यजातियों की यात्रा के बीच संभवतः कई दिन बीत गए। (पृथ्वी पर प्रभु का जीवन पूर्व से आये अन्यजातियों की यात्रा के साथ शुरू हुआ और पश्चिम से आये अन्यजातियों की यात्रा के साथ समाप्त हुआ।) इस बीच प्रभु ने अन्यजातियों के आँगन से सर्राफों को हटा दिया था (मरकुस 11:15-17)। शायद इस कार्य में उन्होंने अपने प्रति मसीहा के अच्छे भाव को पढ़ लिया था। जो भी हो, वे फिलिप्पुस (गैर-यहूदी नाम वाले यहूदी) के पास इस अनुरोध के साथ पहुँचे : "उन्होंने गलील के बैतसैदा के रहनेवाले फिलिप्पुस के पास आकर उससे विनती की, श्रीमान्, हम यीशु से भेंट करना चाहते हैं" (12:20-22)। ऐसा हो सकता है कि

फिलिप्पुस यूनानी बोलता हो, या शायद ये यूनानी लोग गलील के हों। फिलिप्पुस ने अन्द्रियास को अनुरोध भेजा, और फिर उन दोनों ने जाकर यीशु को बताया।

फिलिप्पुस और अन्द्रियास को एक विशिष्ट उत्तर मिला (12:23-24)। उस उत्तर को देखने से पहले, इस अनुच्छेद से हम बता सकते हैं कि यूनानियों का अनुरोध स्वीकार नहीं किया गया। इसके दो संभावित कारण हैं। एक, पृथ्वी पर देहधारित मसीह, यहूदियों का राजा, जिसे "इस्राएल के घर की खोई हुई भेड़ों" के लिए भेजा गया था, अन्यजातियों के विश्वास के लिए उपयुक्त नहीं था। यहूदियों को इस रूप में उस पर विश्वास करना चाहिए था। अन्यजातियों के लिए, मसीह को पहले मरना, गाडा जाना, और फिर से जी उठना जरूरी था। उसे दाऊद (इफिसियों 2:11-13) के वंश के रूप में नहीं, बल्कि अब्राहम (उत्पत्ति 12:1-3) के वंश के रूप में अन्यजातियों के सामने प्रस्तुत किया जाना था।

दूसरा कारण, लाज़र के पुनरुत्थान पर आधारित है। हम इस घटना की पूरी पृष्ठभूमि को नजरअंदाज नहीं कर सकते। इन अन्यजातियों द्वारा आकर यीशु को देखने का वास्तव में कोई कारण नहीं था। प्रभु ने शायद उनसे कहा होगा : "तुम्हें मुझे देखने की जरूरत नहीं है। जाकर लाज़र को देखो। वह अब उसी तरह का जीवन जी रहा है, जैसा मैं जी रहा हूँ। पुनरुत्थान और जीवन के रूप में, मेरा जीवन अब उसका जीवन है। जब तुम लाज़र के जीवन को देखते हो तो मेरे जीवन को देख सकते हो। अतः जब तुम लाज़र को देखते हो, तो मुझे देखते हो।"

यही बात यीशु दो हज़ार वर्षों से अपने लोगों से कहता आ रहा है। लाज़र अब जो जीवन जी रहा था, वह एक असंभव जीवन था। परन्तु यह संभव इसलिए हुआ क्योंकि यह एक दिया गया जीवन था। पौलुस ने मसीही जीवन को इस रीती से दर्शाया : "अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है; और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिये अपने आप को दे दिया" (गलातियों 2:20)। परमेश्वर उम्मीद करता है कि हमारे जीवन में मसीही जीवन इस प्रकार प्रकट हो कि, भले ही लोग मसीह को शारीरिक रूप में न देख सकें, पर वे उसे हममें देख पाएँ। यही वह सत्य है जिसे यीशु समझाते हुए आगे बढ़ता है।

प्रभु का उत्तर अन्द्रियास और फिलिप्पुस को था। इसके तीन भाग थे। हमें प्रभु को महिमान्वित देखना है (12:23) : "इस पर यीशु ने उनसे कहा, वह समय आ गया है कि मनुष्य के पुत्र की महिमा हो।" यहूदियों ने नियमित रूप से और बिना सोचे-समझे उसे अस्वीकार किया। इसके विपरीत, ये अन्यजाति उसे ढूंढ़ते हुए आये। इन अन्यजातियों को यीशु ने उस विशाल झुंड की शुरुआत की "अन्य भेड़ों" के रूप में देखा जो यहूदी समुदाय के नहीं थे। वह देख सकता था कि उसका नाम अन्यजातियों में ऊंचा और महिमान्वित हो रहा है, पृथ्वी के सभी हिस्सों में उसकी आराधना के लिए कलीसियाएँ स्थापित हो रही हैं। ये यूनानी उस विशाल भीड़ के अग्रणी थे जिन्हें गिनना असंभव था, उन्हें गैर-यहूदी देशों से बुलाया गया, उनके लिए छुड़ौती दी गई और उन्हें पुनर्स्थापित किया गया, उनके नाम उसकी पुस्तक में लिखे गए, उसकी प्रशंसा में उनकी आवाजें उठीं।

हमें प्रभु को क्रूस पर चढ़ा हुआ देखना है (12:24क) : "मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है..." "गेहूँ का दाना" कोक्कोस है, जो गेहूँ के बीज को दिखाता है। सारी बागवानी और खेती इसी सिद्धांत पर आधारित है कि एक बीज भूमि में बोया जाए। इसकी पैदावार तभी होगी, जब यह बीज बोया जाए और मरे। मारे जाने, गाड़े जाने और पुनरुत्थान में पुनरुत्पादन की प्रक्रिया के बगैर, कोई भी बीज "अपने अस्तित्व के नियम" को पूरा नहीं कर सकता।

इस प्रकार प्रभु ने काइफा के असभ्य और दुष्ट सिद्धांत को बदल दिया। उसे मरना और गाड़ा जाना था, नहीं तो वह अकेला रहता।

हमें प्रभु को कई गुणा बढ़ते हुए देखना है (12:24ख) : "... परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है।" इन यूनानी लोगों के दौरे ने प्रभु को फसल देखने में सहायता की। यह महत्वपूर्ण है कि प्रेरितों के काम में कलीसिया का पहला प्रमुख मिशनरी कार्य अन्ताकिया में यूनानियों के बीच शुरू किया हुआ (प्रेरितों 11:20)। इसने पौलुस की मिशनरी यात्राओं को प्रेरित किया जिसमें उसने रोमी साम्राज्य के यूनानी शहरों में सेवाकार्य पर अपना ध्यान केंद्रित किया। "बहुत फल।" मृत्यु तक आज्ञाकारी रहने के फलस्वरूप, प्रभु आने वाले युगों में स्वयं को कई गुणा बढ़ते हुए देख पाया।

अब, हमारे सामने एक विरोधाभास है (12:25) : "जो अपने प्राण को प्रिय जानता है, वह उसे खो देता है; और जो इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय जानता है, वह अनन्त जीवन के लिये उस की रक्षा करेगा।" विरोधाभास यह है कि मृत्यु ही जीवन का मार्ग है। हमें मसीह के प्रति इतना समर्पित होना चाहिए कि हम कभी आत्मकेंद्रित न हों, न स्वयं के प्रति कोई चिंता हो।

इसके बाद एक सिद्धांत आता है (12:26)। सबसे पहले प्रभु के अनुयायियों के बारे में कुछ कहा गया है (12:26क, ख) : "यदि कोई मेरी सेवा करे, तो मेरे पीछे हो ले; और जहाँ मैं हूँ, वहाँ मेरा सेवक भी होगा।" विरोधाभास सिद्धांत का एक हिस्सा है : प्रत्येक व्यक्ति को यह निर्धारित करना होगा कि वह किस संसार में रहना चाहता है। हम यीशु और आने वाले संसार के लिए जी सकते हैं, और अनंत काल तक उसके साथ रह सकते हैं। या हम इस संसार के लिए जी सकते हैं और अनंत काल तक हारे हुए रह सकते हैं, जैसा कि अगले भाग से पता चलता है।

क्योंकि, प्रभु के पिता के बारे में भी कहा गया है (12:26ग) : "यदि कोई मेरी सेवा करे, तो पिता उसका आदर करेगा।" बची हुई आत्मा और एक खोया हुआ जीवन पाना संभव है। लाखों लोग बचे लेकिन उन्होंने कभी सेवा नहीं की। मसीह के न्याय के सिंहासन के सामने सेवा करने वालों को सम्मानित किया जाएगा। वे लोग सम्मानित होंगे जो शहीद हुए हैं, जिन्होंने संसार के दूर-दराज इलाकों में उसकी सेवा के लिए घर, जमीन, प्रियजन, दोस्त, परिवार और व्यवसाय त्याग दिए, वे नास्तिक जनजातियों के बीच में रहे, कई भाषाओं में बाइबल का अनुवाद किया, बीमारों को चंगा किया, सुसमाचार प्रचार किया, नए मार्ग तैयार किए, आत्माओं को जीता, कलीसियाएँ स्थापित कीं, अस्पताल बनाए। सम्मानित वे होंगे जो रोते हुए, बहुमूल्य बीज बोते हुए आगे बढ़े हैं। पिता उन्हें सम्मानित करेगा।

2. परमेश्वर की आवाज़ (12:27-36)

यह सब यूनानियों के दौरे से निकला। इसके बाद परमेश्वर की आवाज़ आई। अब हम प्रभु की व्यथा को देखते हैं (12:27) : "अब मेरा जी व्याकुल है। इसलिये अब मैं क्या कहूँ? 'हे पिता, मुझे इस घड़ी से बचा?' नहीं, क्योंकि मैं इसी कारण इस घड़ी को पहुँचा हूँ।" प्रभु के विचार कलवरी तक के हैं। उसके लिए क्रूस का रास्ता आसान नहीं होगा। उसके लिए यह एक घातक वास्तविकता होगी : बगीचे में पीड़ा, उपहासपूर्ण मुकदमें, शारीरिक शोषण, कोड़े, कांटों का ताज, भारी क्रूस, क्रूस पर चढ़ने की पीड़ा, हमारे लिए पाप बनने की पीड़ा, अँधेरे का आतंक, मृत्यु का कड़वा स्वाद। इन बातों ने उस "एकांत, रहस्यमयी घडी" की रचना की जिसकी ओर वह अनंत काल से अपना रास्ता खोजता हुआ आ रहा था।

उसके जन्म की घड़ी से भी बहुत करीब वह घड़ी आ गई थी। यूहन्ना के द्वारा बपतिस्मा पाने और उस जाति के साथ पहचान बनाने जिसे वह छुड़ाने के लिए आया था, से भी करीब वह घड़ी आ चुकी थी। यह घड़ी तब और भी करीब आ गई थी जब वह मूसा और एलिय्याह से मिलने के बाद अपनी मृत्यु के बारे में बात करने के लिए पर्वत से नीचे उतरा। यह तब और भी करीब आ गई थी जब उसने रब्बियों की रीतियों को चुनौती देने के लिए सब्त के दिन यरूशलेम में आश्चर्यकर्म किए थे। यह तब और निकट आ गई थी जब उसने स्वयं को परमेश्वर घोषित किया था। यह तब और निकट आ गई थी जब वह महासभा के विरोध के बावजूद, स्वयं को मसीहा घोषित करने के लिए विजयी होकर यरूशलेम पहुँचा था। अब यह और निकट आ गई थी जब उसने यह प्रार्थना करने से बिल्कुल इनकार कर दिया कि स्वर्ग में उसका पिता उसे उस घड़ी से बचाए।

हम प्रभु की इच्छा पर ध्यान देते हैं (12:28-30)। प्रभु अचानक प्रार्थना में जुट गया — यह प्रार्थना नहीं कि उसे इस घड़ी से बचाया जाए, बल्कि यह कि उसके पिता की महिमा हो। "हे पिता, अपने नाम की महिमा कर। तब यह आकाशवाणी हुई, मैं ने उसकी महिमा की है, और फिर भी करूँगा। तब जो लोग खड़े हुए सुन रहे थे उन्होंने कहा कि बादल गरजा। दूसरों ने कहा, कोई स्वर्गदूत उससे बोला। इस पर यीशु ने कहा, यह शब्द मेरे लिये नहीं, परन्तु तुम्हारे लिये आया है।"

तीसरी बार परमेश्वर ने स्वर्ग से ऊँची आवाज़ से बात की। पहली बार, उसकी सेवकाई की शुरुआत में उसके बपतिस्मा के समय (मत्ती 3:17); दूसरी बार, उसकी सेवकाई के शीर्ष पर रूपान्तरण के पहाड़ पर (मत्ती 17:5); तीसरी बार यहाँ उसकी सेवकाई के संकट में। पहली बार, जब वह यरदन के जल में उतरा; दूसरी बार, जब वह पर्वत से नीचे आने ही वाला था; तीसरी बार, जब वह स्वयं मृत्यु के आगोश में जाने के लिए तैयार था।

आसपास खड़े लोगों ने एक ऊँची आवाज़ सुनी, लेकिन वे असमंजस में थे कि इसे कैसे समझाया जाए। कुछ लोगों ने सोचा कि यह एक प्राकृतिक घटना थी, कोई वज्रपात था। दूसरों को लगा कि यह कोई अलौकिक घटना है, किसी स्वर्गदूत की आवाज़ है। कोई भी नहीं समझ पाया कि क्या कहा गया था। प्रभु ने तुरंत अपने पिता की आवाज़ पहचान ली। उसने भीड़ को समझाया कि यह सचमुच एक आवाज़ थी। लेकिन उसे स्वयं को इस पुष्टि की आवश्यकता नहीं थी कि वह पिता की इच्छा में था।

स्पष्ट है कि इस घोषणा में यीशु से क्या कहा गया था, या तो चेलों ने आप ही समझ लिया था, या यीशु ने उन्हें बताया था। इसमें परमेश्वर ने घोषणा की कि यीशु की सेवकाई में पहले ही उसके नाम को महिमा मिली है और वह इसे फिर से महिमा देगा। इस संदर्भ से, हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि जंगल में शैतान पर प्रभु की विजय से पिता के नाम को महिमा मिली और कलवरी पर शैतान पर मिलने वाली विजय और उसके सर्वनाश से उसे फिर से महिमा मिलेगी। शैतान ब्रह्मांड में एक महान नैतिक धब्बा है। उसका चरित्र, कार्य और अपराध परमेश्वर की पवित्रता और अच्छाई का स्थाई अपमान है। शैतान पर प्रभु की विजय से परमेश्वर की महिमा होती है।

हम प्रभु की घोषणा (12:31) को भी देखते हैं : "अब इस संसार का न्याय होता है, अब इस संसार का सरदार निकाल दिया जाएगा" इस संसार का सरदार शैतान है। "सरदार" के लिए अर्खन शब्द का उपयोग हुआ है। यह शीर्षक शैतान पर तीन बार लागू किया गया है। (यहाँ, 14:30 में और 16:11 में) वह दुष्टात्माओं का सरदार है (मत्ती 12:24) और आकाश के अधिकार का सरदार है (इफिसियों 2:2)।

बाइबल में परमेश्वर और मानव जाति के इस कट्टर शत्रु के बारे में बहुत कुछ कहा गया है। इस संसार के सरदार के रूप में शैतान संसार पर उस शक्ति का प्रयोग करता है जिसे परमेश्वर ने मूल रूप से आदम और हव्वा को दी

थी (उत्पत्ति 1:26-28)। पतन होते ही, यह अधिकार शैतान ने हथिया लिया। जब शैतान ने जंगल में यीशु की परीक्षा की, तो उसने यीशु को उसकी आराधना करने का लालच देने के लिए इस संसार के देशों को रिश्वत के रूप में पेश किया (मत्ती 4:8-10)। हम दानिय्येल की पुस्तक से सीखते हैं कि शैतान अदृश्य जगत में राष्ट्रों पर अपने स्वयं के हाकिमों को स्थापित करता है। ये हाकिम बड़ी शक्ति के पतित स्वर्गदूत हैं (दानिय्येल 10:11-21)। पौलुस हमें बताता है कि जब हम प्रार्थना करते हैं तो हम उसके खिलाफ युद्ध लड़ते हैं (इफिसियों 6:12)। वह हमें यह भी बताता है कि यीशु ने क्रूस पर उस पर विजय प्राप्त की है (कुलुस्सियों 2:15)।

यहाँ प्रभु ने घोषणा की कि इस संसार के न्याय का दिन आ गया है। उसने स्वयं को इस्राएल के मसीहा के तौर पर पेश किया था। अस्थिर भीड़ क्षण भर के लिए उत्तेजित हो गई थी लेकिन प्रधान उसके विरोधी बने रहे।

पासा फेंका गया। संसार ने, जिसका प्रतिनिधित्व यहूदी, अर्थात् परमेश्वर के विशेष रूप से चुने हुए लोग करते हैं, तथा उसका प्रतिनिधित्व उनके अगुवे करते हैं, यीशु पर निर्णय सुना दिया था। उनके अनुसार वह दुष्टात्मा से ग्रस्त, परमेश्वर की निंदा करनेवाला और राष्ट्र के लिए खतरा था। उनका फैसला उससे छुटकारा पाने का था। उनके विरोध के पीछे इस संसार का सरदार था। यीशु मसीह के जन्म के समय से ही, किसी स्वर्गदूत ने नहीं बल्कि शैतान ने यीशु के विरोध का नेतृत्व किया था।

बाइबल में हम एक पद्धति को देख सकते हैं : शरीर आत्मा का विरोध करता है, संसार पिता का विरोध करता है, पुत्र का विरोध शैतान करता है। यीशु मसीह के आगमन के साथ, पृथ्वी पर शैतान के साम्राज्य की घेराबंदी कर दी गई। शुरू से ही शैतान हताशा में जवाबी कार्रवाई करता रहा, जिसकी शुरुआत बैतलहम में बच्चों की नृशंस हत्या थी। अब उसने रोमी माध्यम के द्वारा यीशु मसीह के जीवन को समाप्त करने की अपनी योजना को आगे बढ़ाने के लिए महासभा को उकसाना शुरू कर दिया था।

लेकिन उसने एक गंभीर गलती कर दी। मसीह का क्रूस परमेश्वर का चुना हुआ साधन था जिससे शैतान, उसके राज्य और उसकी शक्ति की अनन्त मृत्यु की घंटी बजने वाली थी। मसीह को दंड देने के लिए यहूदियों को उकसाकर उसने उन घटनाओं का प्रवाह शुरू कर दिया जो उसके स्वयं के विनाश को लाने वाली थीं।

इसलिए यीशु कह सका, "अब इस संसार का न्याय होता है, अब इस संसार का सरदार निकाल दिया जाएगा।" 'निकाले जाने' के लिए उसी शब्द का परयोग हुआ है जब यीशु के द्वारा चंगा किए गए अंधे व्यक्ति को महासभा ने आराधनालय से बाहर निकाल दिया था (9:34-35)। इसी शब्द को यीशु ने दाख की बारी के दृष्टांत में इस्तेमाल किया था : "परन्तु किसानों ने पुत्र को देखकर आपस में कहा, 'यह तो वारिस है, आओ, इसे मार डालें और इसकी मीरास ले लें। अत: उन्होंने उसे पकड़ा और दाख की बारी से बाहर निकालकर मार डाला" (मत्ती 21:38-39)। इसका उपयोग स्तिफनुस पर पथराव का वर्णन करते समय लूका करता है: "तब... [वे] एक साथ उस पर झपटे; और उसे नगर के बाहर निकालकर उस पर पथराव करने लगे" (प्रेरितों 7:57-58)। शैतान ने मसीह और उसके प्रति समर्पित लोगों के प्रति यह सारा विरोध आयोजित किया था। क्रूस के वास्तविक महत्व को देखकर प्रभु कहता है, "अब इस संसार का सरदार निकाल दिया जाएगा।"

प्रभु की मृत्यु (12:32-34) शैतान की सांसारिक प्रणाली को नष्ट करने का परमेश्वर का साधन है। उस मृत्यु का वर्णन किया गया है (12:32-33) : "और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊँचे पर चढ़ाया जाऊँगा, तो सब को अपने पास खीचूँगा। ऐसा कहकर उसने यह प्रगट कर दिया कि वह कैसी मृत्यु से मरेगा।" क्रूस मनुष्यजाति का महान विभाजक है। क्रूस के एक ओर हम एक मरते हुए चोर को देखते हैं, जो निंदा करते हुए सदा के लिए खोए हुए

अनंत काल में चला गया। तो क्रूस के दूसरी ओर, हम एक और मरते हुए चोर को देखते हैं, जो विश्वास करते हुए मरा और स्वर्ग में मसीह के साथ रहने के लिए चला गया। इसी प्रकार क्रूस संसार को भी विभाजित करता है। हर कोई क्रूस की ओर आकर्षित होता है। हर किसी को — यहूदी और गैर-यहूदी, अमीर और गरीब, अच्छे और बुरे, धार्मिक और अधर्मी, यूनानी और बर्बर, सबको तय करना है कि क्रूस के किस ओर खड़ा होना है।

यह यूनानियों को प्रभु का उत्तर था। अपनी मृत्यु में, यीशु इस संसार के सरदार से निर्णायक रूप से निपटेगा; वह इस संसार के न्याय के लिए मंच तैयार करेगा; वह संसार के लोगों का न्याय करेगा और देश, संस्कृति या पंथ की परवाह किए बिना सबको उद्धार प्रदान करेगा।

फिर हम उसकी मृत्यु पर चर्चा देखते हैं (12:34) : "इस पर लोगों ने उससे कहा, हम ने व्यवस्था की यह बात सुनी है कि मसीह सर्वदा रहेगा, फिर तू क्यों कहता है कि मनुष्य के पुत्र को ऊँचे पर चढ़ाया जाना अवश्य है? यह मनुष्य का पुत्र कौन है?" तब न्याय की प्रक्रिया तुरंत काम करने लगी। यहूदियों ने यीशु को टोका। उन्होंने जरूरत से ज्यादा सुन लिया था। मसीहा के बारे में उनके अपने विचार थे। यीशु ने अपने विजयी प्रवेश में स्वयं को मसीहा घोषित किया था। अब वह "ऊँचे पर चढाए जाने" के बारे में बात कर रहा था (बीस बार इस अभिव्यक्ति को दर्शाया गया है और यूहन्ना के सुसमाचार में इसे हमेशा क्रूस से जोड़कर बताया गया है) उन्हें पिछले अवसर याद आए जब उसने स्वयं को मनुष्य का पुत्र और मनुष्य के पुत्र के ऊँचे पर चढाए जाने की बात कही थी (3:14; 8:28)।

उन्होंने यीशु का ध्यान 'व्यवस्था' की ओर खींचा। एज्रा के दिनों से, सब्त के दिन पढ़े जाने वाले भजन 89:29 और भजन 92 उनके मन में रहे होंगे। यदि मसीह हमेशा रहने वाला था, तो "ऊँचे पर चढाए जाने" की चर्चा क्यों? आख़िर यह मनुष्य का पुत्र कौन था? ऐसा प्रतीत होता है कि उनके प्रश्न में अवमानना का भाव है। आने वाले मसीहा की अपनी पूर्व-निर्धारित विचारों के शिकार, और प्रभु के काम करने के तरीकों एवं उसके कथनों से चकित होकर, उन्होंने अपना प्रश्न पूछा। यह प्रश्न उनके द्वारा कहे गए होशन्ना और यीशु को क्रूस पर चढ़ाने की उनकी चीख के बीचों-बीच आया था।

अब हम प्रभु की समझ को देखते हैं (12:35-36क) : यीशु ने उनसे कहा, "ज्योति अब थोड़ी देर तक तुम्हारे बीच में है। जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है तब तक चले चलो, ऐसा न हो कि अन्धकार तुम्हें आ घेरे; जो अन्धकार में चलता है वह नहीं जानता कि किधर जाता है। जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है, ज्योति पर विश्वास करो ताकि तुम ज्योति की सन्तान बनो। ये बातें कहकर यीशु चला गया और उन से छिपा रहा।" यह उनके अविश्वास के प्रति उसका उत्तर था। यद्यपि वह ज्योति था, फिर भी उन्होंने उसे देखने से इनकार कर दिया। वह जानता था कि वह कहाँ, कैसे, और क्यों जा रहा है।

उसकी सांसारिक सेवकाई लगभग समाप्त हो चुकी थी। उन्हें इस ज्योति का लाभ उठाने की तत्काल आवश्यकता थी जब वह उनके राष्ट्र पर चमक रही थी। ज्योति में चलने का, यहाँ तक कि ज्योति की संतान बनने का, उसके स्वभाव का सहभागी बनने का अब भी मौका था। लेकिन जल्द ही ज्योति वापस ले ली जाएगी। तब वे अन्धियारे में लड़खड़ाते हुए चलेंगे, पता भी नहीं चलेगा कि वे कहाँ जा रहे हैं।

यहूदी लोगों का आगे का इतिहास इसी पर एक लंबी टिप्पणी है। उन्होंने उद्धारकर्ता को ठुकरा दिया; आत्मा को ठुकरा दिया। वे रोम के साथ युद्ध के विनाश में फंस गए। वे बार-कोचबा विद्रोह के और भी बदतर विनाश में चले

गए। उन्होंने मसीह में कोई ज्योति नहीं देखि। वे तलमूद के निरंतर बढ़ते अंधेरे में डूब गए। वे आज तक अविश्वास में बने हुए हैं, और तब तक ऐसे ही रहेंगे जब तक की मसीह-विरोधी के हाथों में न पड़ जाएँ।

इन सारी बातों को आभास देते हुए, प्रभु उनके सामने से हट गया और जाकर छिप गया। ऐसा लगता है कि यह यहूदी लोगों से उसकी आखिरी सार्वजनिक विनती थी। संभवतः वह बैतनिय्याह चला गया, और उन्होंने उसे तब तक नहीं देखा जब तक कि शत्रुओं ने उसे पकड़ नहीं लिया और उन्होंने महासभा के उकसावे पर उसकी मृत्यु के लिए चिल्लाना शुरू नहीं किया। अतः यह खंड प्रभु के प्रस्थान (12:36ख) के साथ समाप्त होता है।

यूहन्ना ने हमें प्रभु के ईश्वरत्व को अस्वीकार करके ठुकरा दिए जाने के कुछ उदाहरण दिए हैं। इन्हें स्पष्ट करने के लिए उसके पास कुछ और बातें भी हैं।

II. उसके तिरस्कार के कुछ स्पष्टीकरण (12:37-50)

A. एक प्राचीन भविष्यवाणी (12:37-43)

1. ठोस अविश्वास (12:37-41)

यूहन्ना यहूदियों के कठोर अविश्वास के दो प्रमुख कारण बताता है। एक का संबंध प्राचीन भविष्यवाणी से है और दूसरे का संबंध स्थाई सिद्धांत से है। यूहन्ना यहूदियों के ठोस अविश्वास को दर्शाते हुए शुरु करता है (12:37-41)।

यह अविश्वास कोई संयोग नहीं था। इसे जानबूझकर बढ़ावा दिया गया था (12:37) : "उसने उनके सामने इतने चिह्न दिखाए, तौभी उन्होंने उस पर विश्वास न किया।" उन्होंने जानबूझकर, लगातार, हठपूर्वक उसकी साख को नष्ट किया था।

सुसमाचारों में यीशु के केवल छत्तीस आश्चर्यकर्मों का वर्णन है। लेकिन सुसमाचारों के लेखक यह भी सारांश में कहते हैं कि उसने और भी आश्चर्यकर्म किए जिन्हे लिखा नहीं गया है। यहाँ यूहन्ना ने "इतने चिह्न" का उल्लेख किया है। प्रभु की सार्वजनिक सेवकाई असाधारण थी। उसने हर दिन चमत्कार पर चमत्कार किए। अनगिनत तरीकों से अपने ईश्वरत्व को प्रकट किया, प्रकृति की शक्तियों और प्रक्रियाओं, सब प्रकार की बिमारियों, विकलांगता, अनेक बुरी आत्माओं, और मृत्यु पर अपना प्रभुत्व दिखाया। ऐसे प्रमाण के सामने अविश्वास को जानबूझकर ही बढ़ाया जा सकता है, और वही उन्होंने किया।

इसकी ईश्वरीय रूप से भविष्यवाणी की गई थी (12:38-41)। इसे दर्शाने के लिए यूहन्ना पुराने नियम की दो भविष्यवाणियों का उल्लेख करता है और ये दोनों भविष्यवक्ता यशायाह से हैं। पहली यशायाह 53 से है जो मसीहा के दुखों की भविष्यवाणी है : "ताकि यशायाह भविष्यद्वक्ता का वचन पूरा हो जो उसने कहा : हे प्रभु, हमारे समाचार का किसने विश्वास किया है? और प्रभु का भुजबल किस पर प्रगट हुआ है?" (12:38)। पुराने नियम में परमेश्वर की अँगुलियों, परमेश्वर के हाथों और परमेश्वर की भुजा की बात कही गई है। भजनकार ने घोषणा की कि स्वर्ग परमेश्वर की अँगुलियों का कार्य है (भजन 8:3)। उदाहरण के लिए, मिस्र से निर्गमन के बारे में कहा जाता है कि यह परमेश्वर के शक्तिशाली हाथ से हुआ था (निर्गमन 32:11)। पवित्र आत्मा अंतरिक्ष के सभी सूर्यों और तारों की रचना को परमेश्वर की बहुत छोटी सी बात, उसकी अँगुलियों का काम, कहता है। इसके विपरीत,

यीशु के आश्चर्यकर्मों को परमेश्वर की भुजा की सामर्थ्य का प्रदर्शन कहा जाता है। फिर भी यहूदियों ने सामर्थ्य के ऐसे प्रकटीकरणों को नकार दिया था।

यूहन्ना एक और भविष्यवाणी का उल्लेख करता है : "इस कारण वे विश्वास न कर सके, क्योंकि यशायाह ने यह भी कहा है : उसने उनकी आँखें अंधी, और उनका मन कठोर कर दिया है; कहीं ऐसा न हो कि वे आँखों से देखें, और मन से समझें, और फिरें, और मैं उन्हें चंगा करूँ" (12:39-40)। अविश्वास अपने आप फैलता है। पुराने नियम का एक उदाहरण फ़िरौन का है, जिसने अपने हृदय को तब तक कठोर बनाए रखा जब तक कि परमेश्वर ने उसके लिए इसे कठोर कर दिया। अब यहूदी भी इसी तरह के व्यवहार के दोषी थे। पश्चाताप नहीं करने वालों के जीवन में एक समय ऐसा आता है जब अंततः वे कभी पश्चाताप नहीं कर पाएंगे। इस्राएल के लगातार अविश्वास की भविष्यवाणी यशायाह ने स्पष्ट रूप से की थी। उसने इसे अपने जीवनकाल में और अपनी सेवकाई के जवाब में अनुभव किया था।

यूहन्ना आगे कहता है, "यशायाह ने ये बातें इसलिये कहीं कि उसने उसकी महिमा देखी, और उसने उसके विषय में बातें की" (12:41)। प्रभु, जिसकी महिमा उसने देखी, वह यीशु था। उल्लेख यशायाह की बुलाहट का है, उस समय जब उसने प्रभु को "बहुत ही ऊँचे सिंहासन पर" देखा, सारापों ("अग्निमय"), अर्थात् ईश्वरीय प्राणियों से घिरा हुआ, जिनकी आवाज़ परमेश्वर की पवित्रता की घोषणा करती थी (यशायाह 6)। यूहन्ना के इन उद्धृत वचनों में, जिस दिन यशायाह को सेवकाई के लिए बुलाया गया, उसी दिन उसे इस्राएल के कट्टर अविश्वास के बारे में चेतावनी दी गई।

2. गुप्त चेले (12:42-43)

यूहन्ना कहता है कि प्रभु यीशु पर विश्वास करने वाले लोग भी थे, लेकिन वे गुप्त चेले थे। वह उनके बोध (12:42क), उनकी कायरता (12:42ख), और उनके समझौते (12:43) के बारे में बात करता है : "तौभी अधिकारियों में से बहुतों ने उस पर विश्वास किया, परन्तु फरीसियों के कारण प्रगट में नहीं मानते थे, कहीं ऐसा न हो कि वे आराधनालय में से निकाले जाएँ : क्योंकि मनुष्यों की ओर से प्रशंसा उनको परमेश्वर की ओर से प्रशंसा की अपेक्षा अधिक प्रिय लगती थी।" इनमें निकुदेमुस और अरिमतिया का युसूफ भी गिना जाता था, दोनों ने जब देखा कि महासभा ने यीशु के साथ क्या किया है तो उन्होंने अपना समझौता त्याग दिया।

उनका समझौता महंगा था। सचमुच, अधिक मुखर फरीसियों की यीशु के प्रति शत्रुता के कारण उन्हें बहिष्कृत कर दिया गया होता, परन्तु वे प्रभु के आंतरिक घेरे में शामिल कर लिए गए होते और ऊपरी कक्ष में हुई सेवकाई में भागीदार बने होते — यदि उन्होंने अपने बोध के लिए हिम्मत दिखाई होती। वे हार गए थे। हमें नहीं पता की जब यूहन्ना विश्वास करने वाले कई अधिकारियों की बात करता है तो और किन-किन की बात करता है। निस्संदेह, पिन्तेकुस्त के बाद उन्हें कलीसिया में अपना लिया गया। यीशु मसीह के पुनरुत्थान ने बहुत सारी बातें बदल दीं।

B. एक स्थाई सिद्धांत (12:44-50)

प्राचीन भविष्यवाणी और यहूदी अविश्वास पर उसके असर को दिखाने के बाद, यूहन्ना अपना ध्यान एक स्थाई सिद्धांत की ओर लगाता है।

1. एक महान सच्चाई (12:44-46)

सबसे पहले, एक महान सच्चाई है। प्रभु के पास ईश्वरत्व के बारे में कहने को कुछ था (12:44-45) : "यीशु ने पुकारकर कहा, जो मुझ पर विश्वास करता है, वह मुझ पर नहीं वरन् मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है। और जो मुझे देखता है, वह मेरे भेजनेवाले को देखता है।" यीशु अपने पिता के साथ अपने अनूठे रिश्ते के कारण ऐसा कह सका। प्रभु यीशु मनुष्य बनने, मनुष्य के रूप में व्यवहार करने, पल-पल, स्थिति-दर-स्थिति अपने पिता पर निर्भर रहने के लिए हमारे इस ग्रह पर आने के लिए तैयार था, ताकि अदृश्य परमेश्वर को अपने में दृश्यमान बना सके। यद्यपि वह परमेश्वर था, और उसने एक बार भी परमेश्वर के रूप में अपनी पहचान, या उसके साथ अपनी समानता का इनकार या त्याग नहीं किया, फिर भी उसने जानबूझकर स्वयं को कोई प्रतिष्ठा नहीं दी और पूरी तरह से अपने पिता पर निर्भर रहकर कार्य किया। उसने स्वयं को अपने स्वर्ग के पिता के लिए पूरी तरह से उपलब्ध कराया, और पिता ने स्वयं को पृथ्वी पर अपने पुत्र के लिए पूरी तरह से उपलब्ध कराया। और इसीलिए, जिन्होंने यीशु पर विश्वास किया, उन्होंने उस पर नहीं बल्कि उसके भेजनेवाले पर विश्वास किया। जिन्होंने उसे विश्वास की आंखों से देखा, उन्होंने उसके भेजने वाले को देखा।

प्रभु को अंधकार के बारे में भी कुछ कहना था (12:46) : "मैं जगत में ज्योति होकर आया हूँ, ताकि जो कोई मुझ पर विश्वास करे वह अन्धकार में न रहे।" वह उन्हें बार बार प्रकाश और अंधकार में लाता रहा। जीवन की यात्रा के अंत में, इनमें से एक या दूसरा अवश्य होगा : दोपहर के सूरज की चमक से परे प्रकाश में जाना और उस प्रकाश में हमेशा के लिए डूब जाना, हमेशा के लिए परमेश्वर के ज्ञान, सामर्थ्य और प्रेम में, आनंद के निरंतर बढ़ते क्षितिजों और आयामों में अधिक से अधिक प्रवेश करना या गहरे अंधकार की भयावहता, अनंत विनाश के अंधकार में सदा के लिए चले जाना।

2. एक गंभीर भविष्य (12:47-50)

हमारे पास विचार विमर्श के लिए एक गंभीर भविष्य है। सबसे पहले, न्याय का आदेश दिया जा चुका है (12:47-48) : "यदि कोई मेरी बातें सुनकर न माने, तो मैं उसे दोषी नहीं ठहराता; क्योंकि मैं जगत को दोषी ठहराने के लिये नहीं, परन्तु जगत का उद्धार करने के लिये आया हूँ। जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उसको दोषी ठहरानेवाला तो एक है : अर्थात् जो वचन मैं ने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा।" "तुच्छ जानता है" के लिए शब्द आथेटियो है जिसका शाब्दिक अर्थ है, "कुछ भी नहीं समझना"। यीशु के वचनों के साथ इस प्रकार का व्यवहार करना भयानक अपराध है।

प्रभु "पिछले दिन," को न्याय के दिन के रूप में दर्शाता है। यीशु के वचनों से लोगों ने जैसा व्यवहार किया, उन्हें वैसा ही हिसाब देना पड़ेगा। अज्ञानता कोई बहाना नहीं होगी, विशेषकर उन लोगों के लिए जो लंबे समय से सुसमाचार से प्रबुद्ध देशों में रह रहे हैं।

हाल ही में मैं बहमास में था, जहाँ लोग सड़क के बाएँ ओर गाड़ी चलाते हैं। मान लीजिए कि मैं नासाउ से एक कार किराए पर लेता हूँ और सड़क के दाएँ ओर गाड़ी चलाना शुरू करता हूँ। मुझे एक पुलिसकर्मी पकड़ता है, न्यायाधीश के सामने ले जाया जाता है और मुझे दोषी पाया जाता है। न्यायाधीश ने पूछता है, "क्या तुम्हें कुछ कहना है?" मैं उत्तर देता हूँ, "संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा में हर कोई सड़क के दाएँ ओर गाड़ी चलाता है।" न्यायाधीश कहेगा : "आपका न्याय संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा के कानूनों के तहत नहीं किया जा रहा है। आपको उन कानूनों की जानकारी होनी चाहिए जिनके तहत आपका न्याय किया जाएगा। आपकी अज्ञानता और लापरवाही बहाना नहीं बन सकतीं।"

परमेश्वर ने अपने पुत्र को इस जगत में भेजा। “वचन देहधारी हुआ।” इन अंतिम दिनों में परमेश्वर ने अपने पुत्र के द्वारा हमसे बात की है। जब तक वह न्याय के समय दोबारा नहीं बोलता, उसके पास कहने के लिए और कुछ नहीं है। वह लोगों को उस वचन से परिचित होने के लिए जिम्मेदार ठहराता है जिसके द्वारा उनका न्याय किया जाएगा।

दो कारणों से न्याय उचित है (12:49-50)। पहला है प्रभु के वचनों का स्रोत (12:49) : “क्योंकि मैं ने अपनी ओर से बातें नहीं कीं; परन्तु पिता जिसने मुझे भेजा है उसी ने मुझे आज्ञा दी है कि क्या क्या कहूँ और क्या क्या बोलूँ?” किसी और के शब्द मानवीय शब्द हैं। वे मानवीय ज्ञान, यहाँ तक कि पतित मनुष्य की धार्मिक सोच के भी दोषपूर्ण विचारों से अधिक कुछ नहीं हैं। वे लाखों लोगों को प्रभावित कर सकते हैं लेकिन उनमें कोई ईश्वरीय अधिकार नहीं है। मनुष्य की धार्मिक सोच का सार “कैन का मार्ग” है, जो अपना भेष बदले हुए है। यह सब हमारे सर्वश्रेष्ठ कार्य और परमेश्वर को अपने प्रयासों का फल अर्पित करना है। यीशु के वचन परमेश्वर के वचन हैं : यह प्रभु का अटल दावा था (14:24; 17:8)। वह परमेश्वर की अभिव्यक्ति का पूर्ण, आधिकारिक और आदर्श माध्यम था। उसके वचन की उपेक्षा करना, वास्तव में परमेश्वर से यह कहना है, “मुझे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है कि आप क्या कहना चाहते हैं।”

न्याय के उचित होने का दूसरा कारण प्रभु के वचनों का सार (12:50) है : “और मैं जानता हूँ कि उसकी आज्ञा अनन्त जीवन है। इसलिये मैं जो कुछ बोलता हूँ, वह जैसा पिता ने मुझ से कहा है वैसा ही बोलता हूँ।” यह यूहन्ना के सुसमाचार में यहूदियों के लिए प्रभु का अंतिम वचन था। अनन्त जीवन उसी में पाया जाता है जो पिता ने उसे कहने के लिए दिया था। यह और कहीं नहीं मिलेगा। उन वचनों से मुँह मोड़ना अनन्त जीवन की सारी आशा से मुँह मोड़ना है।

अब, प्रभु अपने चेलों को व्यक्तिगत और निजी तौर पर गहरे सत्य बताने के लिए उनकी ओर मुड़ता है। यूहन्ना प्रभु के जैतून पहाड़ के सन्देश, फसह के आने, महासभा के साथ यहूदा के नापाक व्यवहार पर ध्यान नहीं देता। वह हमें सीधे ऊपरी कक्ष में ले जाता है।

भाग 3. परमेश्वर के पुत्र के रहस्य

यूहन्ना 13:1-17:26

यूहन्ना हमारे सामने परमेश्वर के पुत्र के चिह्न रख चुका है। अब वह हमारे सामने परमेश्वर के पुत्र के रहस्य रखता है। इस सुसमाचार का पहला प्रमुख भाग सार्वजनिक है, दूसरा निजी है; पहला भाग विवादों से भरा है, दूसरा आत्मविश्वास से भरा है; पहले भाग में प्रभु अपने व्यक्तित्व को प्रकट करता है, दूसरे में वह अपने जोश को प्रकट करता है ।

खंड 1. ऊपरी कक्ष में बातचीत (13:1-14:31)

I. बातचीत की पृष्ठभूमि (13:1-30)

यहाँ हम ऊपरी कक्ष की बात और गतसमनी के मार्ग पर चलने पर विचार करते हैं। प्रभु अपने दिल का बोझ हल्का कर रहा है और अपने मित्रों को शांति दे रहा है। ऊपरी कक्ष की बात में एक पृष्ठभूमि और बोझ है। हम पृष्ठभूमि से शुरू करते हैं। तीन बातें तुरंत नजर आ रही हैं : मेज़, अँगोछा और पकड़वाने वाला।

A. मेज (13:1-3)

1. उसके तथ्य (13:1क)

हम देखते हैं कि हमेशा की तरह कैसे प्रभु के पास अपने सभी तथ्य उपलब्ध थे : “फसह के पर्व से पहले, जब यीशु ने जान लिया कि मेरी वह घड़ी आ पहुँची है कि जगत छोड़कर पिता के पास जाऊँ...” घड़ी आ गई थी। वह दिन तैयारी का दिन था, नीसान का चौदहवाँ दिन (हमारा मंगलवार सूर्यास्त से बुधवार सूर्यास्त तक), क्रूसीकरण का दिन। बहुत सारी चर्चा इस बात पर केन्द्रित रही है कि क्या यीशु ने फसह उचित समय पर खाया या उससे पहले। यूहन्ना स्पष्ट करता है कि पहले खाया। सभी सुसमाचार इस बात से सहमत हैं कि प्रभु को तैयारी के दिन कब्र में रखा गया था (मत्ती 27:62; मरकुस 15:42; लूका 23:54; यूहन्ना 19:31, 42)।

प्रभु यीशु जिसे “मेरी घडी” कहते हैं, वह शुरू से ही उनके विचारों में मौजूद थी। उसने अपनी सार्वजनिक सेवकाई की शुरुआत में अपनी माँ से कहा था, “मेरा समय अभी नहीं आया है” (2:4)। यहूदियों ने कई अवसरों पर उसे गिरफ्तार करने की कोशिश की थी, लेकिन वे नहीं कर पाए, क्योंकि उसका समय अभी नहीं आया था (7:30; 8:20)। यूनानियों के आगमन ने यीशु की प्रार्थना को जन्म दिया : “अब मेरा जी व्याकुल है। इसलिये अब मैं क्या कहूँ? ‘हे पिता, मुझे इस घड़ी से बचा?’ नहीं, क्योंकि मैं इसी कारण इस घड़ी को पहुँचा हूँ” (12:27)।

अब वह भयानक घड़ी आ गई थी। लेकिन यीशु ने अपने बारे में सोचने के बजाय, दूसरों के बारे में सोचा, खासकर अपने चेलों के बारे में। हम उसके चारों ओर हैरान, असमंजस से भरे बारह लोगों को देख सकते हैं, जिसमें से एक को छोड़कर, बाकी सब अपने पूरे दिल से उससे प्यार करने लगे थे।

वह दूर जा रहा था, घर जा रहा था। उसका प्रस्थान दो चरणों में होना था : पहले कलवरी पर, दूसरा, जैतून पर। अगले कुछ दिनों का आघात उसके चेलों के विश्वास को हिला सकता है। उसे उन्हें तैयार करना है, उन्हें चेतावनी देनी है, कि वे हथियार बाँध सकें।

2. उसकी भावनाएँ (13:1ख)

हम उनकी भावनाओं को भी देखते हैं : “जब यीशु ने जान लिया... कि जगत छोड़कर पिता के पास जाऊँ, तो अपने लोगों से जो जगत में थे जैसा प्रेम वह रखता था, अन्त तक वैसा ही प्रेम रखता रहा (13:1ख)। “छोड़कर” शब्द का प्रयोग केवल यहाँ इस संबंध में किया गया है; यहाँ एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में स्थानांतरण की बात हो रही है। मृत्यु उसके अस्तित्व को बाधित नहीं कर सकती; केवल उसका तरीका बदलेगा। वह तो इस जगत से चले जाने वाला था, लेकिन उसके प्रिय लोगों को अब भी जगत में रहना था। इस तथ्य ने उसके हृदय को भावनाओं से भरे दिया। यह जगत बेपर्दा होने वाला था, आख़िरकार अपना असली चेहरा दिखाने वाला था।

उसने उनसे पवित्र प्रेम, अनंत परमेश्वर-समान प्रेम, अगापाओ प्रेम रखा। वह उनसे अंत तक प्रेम करता रहा (एइस टेलोस), पूरी सीमा तक, सम्पूर्ण, समय के संदर्भ में नहीं, बल्कि उन्हें बचाने और उनकी सेवा करने की तत्परता के संदर्भ में।

3. उसका शत्रु (13:2)

यहाँ यूहन्ना उसके शत्रु के बारे में एक टिप्पणी लिखता है : “जब शैतान शमौन के पुत्र यहूदा इस्करियोती के मन में यह डाल चुका था कि उसे पकड़वाए, तो भोजन के समय...” (13:2)। सब भोजन के लिए तैयार थे, मेज बिछी हुई थी और सब अपनी अपनी जगह पर थे। बारहों में से एक ने पहले ही याजकों के साथ एक समझौता कर लिया था

(मत्ती 26:14-16), और उस साजिश के पीछे और भी गहरी साजिश थी। यहूदा का विश्वासघात शैतान के हाथों में पड़ गया। याजकों के साथ उसका अनुबंध "अधोलोक से प्रतिज्ञा" था (यशायाह 28:15, 18), यदि हम मसीही-विरोधी के साथ इस्राएल की आगामी संधि के बारे में भविष्यवक्ता के वर्णनात्मक वाक्यांश के संदर्भ में बात करें तो। यीशु के लिए यह एक अतिरिक्त बोझ था कि वह पकड़वाने वाले को अपने और दूसरों के साथ भोजन के लिए साथ बैठाए, जो एक वफादार चेला होने का दिखावा कर रहा था, लेकिन यीशु हमेशा से उसके दिल को जानता था।

4. उसका भविष्य (13:3)

प्रभु को अपने भविष्य के बारे में भी पता था : "यीशु ने, यह जानकर कि पिता ने सब कुछ मेरे हाथ में कर दिया है और मैं परमेश्वर के पास से आया हूँ और परमेश्वर के पास जाता हूँ..." (13:3)। प्रभु यीशु की उत्पत्ति और नियति के बारे में ये कथन उस सेवा के आश्चर्यजनक अनुग्रह को बढ़ाते हैं जिसके लिए प्रभु ने अब स्वयं को विनम्र किया है। वह अब एक दास जैसी सेवकाई करने वाला था। दूसरे अनुयायियों की तो बात ही छोड़िए, एक भी चेला अपने गुरु को भी ऐसी सेवा देने के लिए तैयार नहीं था।

प्रभु को पूरी तरह से पता था कि वह कौन था। वह जानता था कि ब्रह्मांड पर उसका प्रभुत्व है। प्रकाश के पापरहित पुत्र, चमकते सराप, स्वर्गदूत और प्रधान स्वर्गदूत उसके सामने झुके। वह यह भी जानता था कि वह कहाँ जा रहा है : महिमा के द्वार तक, परमेश्वर के सिंहासन तक। फिर भी उसने "अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया" और एक घरेलू दास का कार्य करने के लिए तैयार हो गया।

B. अँगोछा (13:4-17)

1. नम्रता का प्रदर्शन (13:4-11)

यूहन्ना अब हमें यीशु की सच्ची विनम्रता और सच्ची विनम्रता के बारे में उसकी घोषणा को दिखाता है। पहले उदाहरण, फिर उपदेश; पहले कर्म, फिर सन्देश; काम पहले, बातें बाद में — एक बार कार्य ने विरोध को शांत कर दिया और घमंड को दबा दिया है।

हम राजकीय त्याग से शुरु करते हैं (13:4-5) : "भोजन पर से उठकर अपने ऊपरी कपड़े उतार दिये, और अँगोछा लेकर अपनी कमर बाँधी। तब बरतन में पानी भरकर चेलों के पाँव धोने और जिस अँगोछे से उसकी कमर बन्धी थी उसी से पोंछने लगा।"

वे सब मेज़ के चारों ओर अपना स्थान ले चुके थे। ऐसा लगता है कि ऊपरी कमरे में आने पर मेहमानों के पैर धोने की पारंपरिक सेवा छोड़ दी गई थी। इस सामान्य कार्य को करने के लिए वहाँ कोई दास नहीं था।

प्रभु के इस कार्य के बारे में बहुत विचार-विमर्श किया गया था। उसने अपना बाहरी वस्त्र उतार दिया, जिसे आम तौर पर काम करने के लिए उतारा जाता था और सोते समय इसे ओढ़ने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। उसने एक अँगोछा लपेटा, एक बर्तन लेकर उसे पानी से भर दिया, और पैरों को धोने और दिन भर की धूल-मिट्टी को हटाने के लिए चेलों में से पहले चेले के पास गया।

हम कमरे में अचानक आई खामोशी, शर्मिंदगी से झुकी नज़र और लज्जा की भावना की कल्पना कर सकते हैं। उनके स्वयं के बारे सोचने और बढ़ाने के एकदम विपरीत (लूका 22:24-27)। यहूदा के पैरों को अपने पवित्र हाथों में लेना और उन्हें धोना परमेश्वर के देहधारी पुत्र की कितनी बड़ी विनम्रता है। लेकिन संसार की सारी धुलाई उन

पैरों पर लगे दागों को नहीं धो सकती, जो पहले ही एक अपवित्र कार्य के लिए याजकों के पास चले गए थे और जल्द ही रात में, अगले कदम के लिए निकल पड़ेंगे। (और फिर उस जगह पर चले जाएँगे जहाँ से वे उसे मसीहरहित अनंत काल में ले जाएँगे) हम यहूदा के पैर देखते हैं, उद्धारकर्ता ने उन्हें धोया — और, कुछ अध्यायों के बाद, यीशु के पैरों को देखते हैं, पापी के द्वारा घायल किए गए पैर।

फिर हम एक आवेगपूर्ण प्रतिक्रिया को देखते हैं (13:6-9)। अंत में यीशु पतरस के पास आया और हम पतरस के प्रश्न को देखते हैं (13:6-7) : "जब वह शमौन पतरस के पास आया, तब पतरस ने उससे कहा, हे प्रभु, क्या तू मेरे पाँव धोता है? यीशु ने उसको उत्तर दिया, जो मैं करता हूँ, तू उसे अभी नहीं जानता, परन्तु इसके बाद समझेगा।" तू और मेरे सर्वनाम पर जोर दिया गया है। पतरस इस बात से अचंभित था कि जिसे उसने परमेश्वर का पुत्र स्वीकार किया था, वह उसके पैर धो रहा है। कल्पना से परे! इसमें कोई शक नहीं कि पतरस ने वही व्यक्त किया था, जो दूसरे लोग सोच रहे थे।

प्रभु के उत्तर में भी वही बल देखा जा सकता है : "जो मैं करता हूँ, तू उसे अभी नहीं जानता।" स्पष्ट है कि इसमें केवल पैर धोने से कहीं अधिक गहरा सबक था। आत्मिक क्षेत्र में इसका महत्त्व था, रीती-रिवाज में नहीं। पतरस को इसे समझने से पहले पवित्र आत्मा के आगमन की प्रतीक्षा करनी होगी।

फिर हम पतरस की उलझन को देखते हैं (13:8-9)। प्रभु की इच्छा के आगे झुकने के बजाय, पतरस ने एक अति से दूसरी अति पर जाते हुए तर्क दिया। उसने कहा, "तू मेरे पाँव कभी न धोने पाएगा!" उसने इतने जोरदार तरीके से विरोध किया। प्रभु ने भी इतने ही जोरदार तरीके से कहा, "यदि मैं तुझे न धोऊँ, तो मेरे साथ तेरा कुछ भी साझा नहीं।" पतरस ने यह सोचकर तुरंत हार मान ली कि उसकी विद्रोही भावना उसके प्रिय प्रभु के साथ संगति के टूटने का कारण बन सकती है। उसने पहले की तरह आवेगपूर्वक कहा, "हे प्रभु, तो मेरे पाँव ही नहीं, वरन् हाथ और सिर भी धो दे।" इससे पहले, वह प्रभु को बताना चाहता था कि वह क्या करे है और क्या नहीं। अब वह प्रभु को बताना चाहता था कि काम कैसे किया जाना चाहिए।

इसके बाद हमारे पास एक महत्वपूर्ण प्रकाशन है (13:10-11)। हम देखते हैं कि प्रभु ने क्या चेतावनी दी (13:10)। सबसे पहले बारहों के लिए एक शब्द था (13:10क,ख) : "यीशु ने उससे कहा, जो नहा चुका है उसे पाँव के सिवाय और कुछ धोने की आवश्यकता नहीं, परन्तु वह बिलकुल शुद्ध है।" यह परमेश्वर के पिछले कथन का महत्व बताता है, "परन्तु इसके बाद समझेगा।"

कलवरी इस पर दिन का प्रकाश लेकर आया। मसीह का लहू हमें पापों से हमेशा के लिए, सम्पूर्ण शुद्धीकरण (13:10क) प्रदान करता है — जिसे हम एक पूर्ण स्नान कह सकते हैं। परन्तु इस संसार में प्रतिदिन चलते-चलते हम अशुद्ध हो जाते हैं। इसलिए हमारे पैर, जो संसार के संपर्क में आते हैं, उन्हें साफ होने की जरूरत है। दूसरे शब्दों में, हमें पाप से बार-बार शुद्धीकरण (13:10ख) की आवश्यकता है। अपनी आत्मिक यात्रा के इस चरण में, पतरस और अन्य लोग इन सत्यों को समझने में सक्षम नहीं थे। असल में, उन्होंने प्रभु की आत्मिक, प्रतीकात्मक, चित्रात्मक शिक्षाओं को लगातार गलत समझा, उनके शब्दों को शाब्दिक तौर पर लिया (जैसा कि कई लोग सदियों से करते आ रहे हैं), वे दृष्टान्तों, प्रतीकों और भाषा के अलंकारों के उसके उपयोग को समझने में असफल रहे।

पकड़वाने वाले के लिए भी एक शब्द था (13:10ग) : "तुम शुद्ध हो, परन्तु सब के सब नहीं।" वहाँ एक था जिसके लिए मसीह का खून व्यर्थ बहाया जाएगा। यरूशलेम में जल्द ही एक "अशुद्धता का सोता" खुलने वाला था,

लेकिन यह व्यक्ति कभी उस लाल बहाव में नहीं आने वाला था। प्रभु अन्य लोगों को शुद्ध होते हुए देख सकता था, जो पाप से उस मौलिक शुद्धीकरण के लाभार्थी थे, जिसे उसे इतनी कीमत चुकाने पर प्रदान करना था। लेकिन एक आदमी धर्मत्यागी बन गया था, उसने पापियों के उद्धारकर्ता से मुंह मोड़ लिया था, वह दुष्ट के जाल में फंस गया था, वह पश्चाताप नहीं कर पाएगा, कभी शुद्ध नहीं हो पाएगा। यीशु के पास, उसके लिए एक छिपा हुआ वचन था। दूसरों को शायद पता नहीं था कि प्रभु क्या बात कर रहा था, लेकिन यहूदा को पता था।

यूहन्ना स्पष्ट करने के लिए अपना कथन जोड़ता है। वह बताता है कि प्रभु ने क्या छुपाया (13:11) : "वह तो अपने पकड़वानेवाले को जानता था इसी लिये उसने कहा, तुम सब के सब शुद्ध नहीं।" निस्संदेह उसके शब्द यहूदा के लिए एक और चेतावनी थे। वह कितनी भी दूर क्यों न गया हो, अब तक फिर से बुलाए जाने से परे नहीं गया था। यदि ऐसा है, तो उसे तुरंत उस जीवन रेखा को समझ लेना चाहिए जो उसके पास फेंकी जा रही है; वह पहले से ही एक भयानक ज्वार की चपेट में था जो उसे तेजी से विनाश की ओर ले जा रहा था। प्रभु जानता था कि पकड़वानेवाला कौन था, लेकिन यहूदा के प्रेम में उसने उस ज्ञान को कुछ देर तक छुपाए रखा।

2. नम्रता के बारे में घोषणा (13:12-17)

अपने चेलों के समक्ष विनम्रता को प्रदर्शित करने के बाद, प्रभु ने अब उन्हें विनम्रता के बारे में एक घोषणा दी। सबसे पहले, हम उसे इस विषय पर आते हुए देखते हैं (13:12) : "जब वह उनके पाँव धो चुका, और अपने कपड़े पहिनकर फिर बैठ गया, तो उनसे कहने लगा, क्या तुम समझे कि मैं ने तुम्हारे साथ क्या किया?" वह पतरस और अन्य लोगों को उसके कार्य का अर्थ समझने में मदद करने वाला था। हम कमरे में शांति को महसूस कर सकते हैं, जब यीशु ने अँगोछा उतारा, बाहरी वस्त्र पहना और मेज पर फिर से अपनी जगह बना ली। यहूदा को छोड़कर, सब शर्म की भावना से भर गए। क्या यहूदा शायद अपमान के ऐसे दृश्य को देखकर तिरस्कार से भर गया था, जिसमें प्रभु के इन शब्दों से उत्पन्न चिंता भी शामिल थी," "तुम शुद्ध हो, लेकिन सब नहीं"? मान लीजिए कि उसे बेनकाब किया जाना था। यहूदा यीशु की ईश्वरीय सामर्थ्य को नकार नहीं सका। हम कल्पना कर सकते हैं कि उसने भय के साथ यीशु को देखा। उसके पास चिंता का कोई कारण नहीं था। यीशु उस घड़ी में भी उसे पाप, स्वयं और शैतान से बचाने के लिए तैयार था।

अब विषय को समझने का कार्य आता है (13:13-16)। प्रभु ने अपनी ऊँची उपाधियों और किए गए निम्न कार्यों के बीच के अंतर की समीक्षा के साथ शुरुआत की। "तुम मुझे गुरु और प्रभु कहते हो, और ठीक ही कहते हो, क्योंकि मैं वही हूँ।" "गुरु" के लिए शब्द डिडास्कालोस है, शिक्षक। प्रभु को इस प्रकार इकतीस बार सम्बोधित किया गया है; उसने आठ बार स्वयं का इस प्रकार उल्लेख किया है। प्रभु के दिनों में यह शब्द "रब्बी" के बराबर था, जो छात्रों द्वारा अपने शिक्षकों को दी जाने वाली गरिमा की सामान्य उपाधि थी। "प्रभु" के लिए उपयुक्त यूनानी शब्द 'कुरियोस' (शाब्दिक अर्थ "स्वामी") है, वह शब्द जो अधिकार और प्रभुता को व्यक्त करता है।

इस बिंदु पर विषय में एक सा छोटा बदलाव उचित रहेगा। आज बहुत से लोग सार्वजनिक प्रार्थना में प्रभु को "यीशु," "प्रिय यीशु" और प्रेम की ऐसी ही अभिव्यक्ति के साथ संबोधित करते हैं। यह ध्यान देने योग्य बात है कि सुसमाचार के लेखों में दुष्टात्माओं और जिन्हें उसने चुप कराया था, उन्हें छोड़कर किसी ने भी उसे ऐसे संबोधित नहीं किया। एकमात्र अपवाद बरतिमाई है, और उसने यह शीर्षक जोड़ा, "दाऊद की संतान" (मरकुस 10:47; लूका 18:38)।

“तुम मुझे गुरु और प्रभु कहते हो, और ठीक ही कहते हो, क्योंकि मैं वही हूँ।” इस प्रारंभिक कथन के साथ, हम तीन बातें सीखते हैं। यहाँ व्यवहारिक विनम्रता का एक विवरण है (13:14) : “यदि मैं ने प्रभु और गुरु होकर तुम्हारे पाँव धोए, तो तुम्हें भी एक दूसरे के पाँव धोना चाहिए।” हम यहाँ भाषा के एक अलंकार, उपलक्ष्य अलंकार *(सिनेकडोक)* को देख सकते हैं, जो किसी पूर्ण विचार को बताने के लिए विचार के अंश का इस्तेमाल करता है। पैर धोने का कार्य सभी प्रकार के आत्म-त्यागपूर्ण प्रेम का प्रतीक है। कुछ समूहों ने इसे कलीसिया का संस्कार बना डाला (जैसा कि प्रभु भोज और बपतिस्मा दो संस्कार हैं), लेकिन इसे पत्रियों में इस तरह पेश नहीं किया गया है और न ही ऐसा लगता है कि यीशु मसीह के लगभग चार सौ साल बाद तक इसका अभ्यास किया गया था। 1 तीमुथियुस 5:10 का संदर्भ घरों में आने वाले अतिथि के पैर धोने की प्रथा से संबंधित है। यीशु ने कहा, “तुम्हें भी एक दूसरे के पाँव धोना चाहिए।” यह दूसरों के प्रति प्रेम और देखभाल की बुलाहट है जो किसी भी कार्य को बहुत छोटा, और किसी भी सेवा को बहुत बड़ा नहीं मानती है। सबके प्रति विनम्रता के साथ सेवा करने के हमारे रास्ते में कोई बाधा नहीं आनी चाहिए।

व्यवहारिक विनम्रता का एक उदाहरण (13:15) है : “क्योंकि मैं ने तुम्हें नमूना दिखा दिया है कि जैसा मैं ने तुम्हारे साथ किया है, तुम भी वैसा ही किया करो।” यीशु ने अपनी गरिमा को किनारे रख दिया। उसने सबसे निचला स्थान, एक दास का स्थान लिया। उसने एक ऐसा तुच्छ कार्य किया जिसे अन्य कोई भी स्वीकार करने को तैयार नहीं था। उसने प्रेमवश ऐसा किया। क्या हम अपनी प्रतिष्ठित गरिमा की कीमत पर भी दूसरों की प्रेमपूर्ण सेवा कर सकते हैं?

व्यावहारिक विनम्रता की एक अपेक्षा है (13:16) : “मैं तुम से सच सच कहता हूँ, दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं, और न भेजा हुआ अपने भेजनेवाले से।”

कई वर्षों के बाद पतरस ने उन भयानक दिनों में परमेश्वर के संकट में पड़े लोगों को पत्री लिखी जब नीरो उग्र था, और रोम में नहीं, बल्कि पूरे साम्राज्य में परमेश्वर के लोगों पर अत्याचार और क्रूरता हो रही थी। इस भीषण परीक्षा का सामना करने वालों के लिए पतरस ने कई उपयोगी शब्द लिखे।

मंडली के युवा सदस्यों को उसने लिखा : “प्राचीनों के अधीन रहो.... दीनता से कमर बाँधे रहो...” (1 पतरस 5:5)। “कमर बाँधना” के लिए जो शब्द उसने इस्तेमाल किया वह ‘एग्कोम्बूमाई’ है जिसका अर्थ है “विनम्रता के लिए तत्पर रहो।” यह शब्द उस मूल से आया है जिसका अर्थ है “गांठ बंधा हुआ” या “गांठ बंधे हुए वस्त्र पहनना।” यह संज्ञा एक दास की वेशभूषा को दिखाती है। पतरस ने अपने मन की आंखों से प्रभु यीशु का वही अविस्मरणीय दृश्य देखा होगा कि कैसे वह क्रूस की ओर जाने से पहले अँगोछे को गांठ बाँधकर लपेटता है, उसके पास आता है और कहता है, “अब, हे पतरस, मुझे तेरे पैर धोने दे।” उसने देखा कि प्रभु ने “विनम्रता को पहन रखा” है, जैसा हमें भी करना है।

प्रभु इस विषय को लागू करते हुए समाप्त करता है (13:17) : “तुम ये बातें जानते हो, और यदि उन पर चलो तो धन्य हो।” ऐसे दीन स्थान को ग्रहण करने में संसार को कोई खुशी दिखाई नहीं देती। लेकिन उस समय ऊपरी कमरे में सबसे खुश व्यक्ति कौन था? निश्चित रूप से पतरस नहीं था, जो शायद कमरे में सबसे पहले पहुँचने की कोशिश नहीं करने के लिए खुद को दोषी मान रहा था। न ही यहूदा, जो गलत तरीके से कमाए गए लाभ और इस डर से भरा हुआ था कि कहीं उसका अगला कदम उजागर न हो जाए। निस्संदेह यीशु ही उन सबमें सर्वाधिक प्रसन्न था।

खुशी जानने में नहीं, बल्कि करने में है। तभी आशीष का प्रवाह शुरू होता है और यह आनंद अपने आप आ जाता है।

C. पकड़वानेवाला (13:18-30)

अब भी हमारी रुचि ऊपरी कक्ष में हुई बातचीत की पृष्ठभूमि पर है। यूहन्ना अब पकड़वानेवाले पर ध्यान देता है। घटना के साठ या सत्तर साल बाद के दृष्टिकोण से लिखते हुए, यूहन्ना अब भी यहूदा के खिलाफ आक्रोश में था। जब वह यहूदा के बारे में सोचता और लिखता है तो उसमें नफरत पैदा होने लगती है। उसके सुसमाचार में हम शायद दूसरों की तुलना में अधिक देखते हैं कि यहूदा को उस दयनीय पाखंडी, झूठे, चोर और पकड़वानेवाले के रूप में प्रस्तुत किया गया है जिसके बारे में यूहन्ना अब जानता था कि वह वास्तव में ऐसा ही था।

1. उसके द्वारा पकड़वानेवाले की अपेक्षा की गई थी (13:18-22)

सबसे पहले हम देखते हैं कि मसीह पकड़वाने वाले की अपेक्षा करता है। प्रभु ने पवित्रशास्त्र में कही गई बातों पर ध्यान आकर्षित किया (13:18) : "मैं तुम सब के विषय में नहीं कहता; जिन्हें मैं ने चुन लिया है, उन्हें मैं जानता हूँ; परन्तु यह इसलिये है कि पवित्रशास्त्र का यह वचन पूरा हो, 'जो मेरी रोटी खाता है, उसने मुझ पर लात उठाई।'" वह भजन 41:9 की ओर संकेत करता है। दाऊद के लिए अहीतोपेल था; यीशु के लिए यहूदा। दाऊद के विषय में, दाऊद के सबसे चतुर सलाहकार अहीतोपेल के लिए कुछ बहाना खोजा जा सकता था, जिसने उसे धोखा दिया और अबशालोम के विद्रोह के पीछे की शक्ति और बुराई में अबशालोम का सलाहकार भी बन गया। अहीतोपेल बतशेबा का दादा था, और दाऊद द्वारा अपनी पोती को बहकाने और उसके पति की हत्या करने पर उसकी भावनाओं को समझने के लिए किसी को मानव स्वभाव का बड़ा विद्यार्थी होने की जरूरत नहीं है।

लेकिन यहूदा के पास ऐसा कोई बहाना नहीं था। उसे यीशु मसीह ने चेला बनने के लिए चुना था। वह अपनी मर्जी से चेला बना था। वह अपनी मर्जी से धोखा देनेवाला बना। उसकी अपनी कुंठित महत्वाकांक्षा, लालच और बेईमानी ने उसे मसीह से और भी दूर कर दिया। यूहन्ना ने पकड़वानेवाले के बारे में यीशु की अप्रत्यक्ष और प्रत्यक्ष चेतावनियों को पहले ही दर्शा दिया है (6:71; 12:4; 13:2)। ऊपरी कमरे में, पहले ही प्रभु ने यहूदा की अशुद्धता के बारे में अपनी जानकारी प्रकट कर दी — पर कोई लाभ नहीं हुआ। हालाँकि उसकी चेतावनियाँ स्पष्ट थीं, लेकिन उन्हें अनसुना कर दिया गया।

यह तथ्य कि यहूदा के विश्वासघात का पहले से पता था और भविष्यवाणी भी हुई थी, किसी भी तरह से इस सच्चाई को नहीं नकार सकता कि यहूदा ने इस मामले में अपनी स्वतंत्र इच्छा से काम किया था। यहूदा अपनी पसंद और व्यवहार से पकड़वानेवाला बना था। हमारा ज्ञान बाद का ज्ञान है। हम इस तथ्य को देखते हैं और इसे इसी सरल कारण से जानते हैं कि तथ्य मौजूद है। परमेश्वर का ज्ञान पूर्वज्ञान है। वह इस तथ्य की आशा कर सकता था, लेकिन यहूदा ने स्वयं उस तथ्य को स्थापित किया। यह क्रम बाइबल के सभी भविष्यवाणिय कथनों के लिए बुनियादी है। परमेश्वर का पूर्वज्ञान उन तथ्यों पर आधारित है जिनके बारे में वह भविष्यवाणी करता है कि समय आने पर उसे स्थापित किया जाएगा। वह जानता है कि क्या होने वाला है क्योंकि वह एक दिन में एक समय में घटनाओं के होने से परेशान नहीं होता है।

भजन 41:9 में प्रभु का उद्धरण सशक्त था। मूल इब्री भाव यह है, "उसने मेरे विरुद्ध अपनी एड़ी-चोटी का जोर लगा दिया है," इसका विचार किसी को बुरी तरह से गिराना या किसी का गलत लाभ उठाना है। कितने आश्चर्य की

बात है कि उस समय यहूदा के विचार क्या रहे होंगे जब वह इस परिचित भजन को सुनता है, यह जानते हुए कि वही आंतरिक घेरे में स्वामी को गिराने के लिए अपनी स्थिति का क्रूर लाभ उठा रहा था।

यूहन्ना हमें बताता है कि उद्धारकर्ता ने क्या कहा (13:19-22)। संदर्भ यहूदा का महान अपराध है। उसे ग्रहण करने के बारे में प्रभु को कुछ कहना है (13:19-20) : "अब मैं उसके होने से पहले तुम्हें जताए देता हूँ कि जब यह हो जाए तो तुम विश्वास करो कि मैं वही हूँ।" हम 'वही' शब्द छोड़ सकते हैं। यीशु ने फिर से अपने ईश्वरत्व पर जोर दिया : "तुम विश्वास करो कि मैं हूँ।" उसका पूर्वज्ञान इसका एक और प्रमाण था। शायद, यहूदा की आँखों में देखते हुए, यीशु ने शांति से अपने लिए अवर्णनीय नाम का दावा किया। अंग्रेजी के एक अनुवाद में इसे "मैं जो हूँ सो हूँ" लिखा है।

यहूदा के घृणित विश्वासघात से कुछ अच्छा निकलेगा। प्रभु की स्पष्ट सर्वज्ञता, जब चेले पीछे मुड़कर देखेंगे और उस पर विचार करेंगे, तो यह उसके ईश्वरत्व का प्रमाण होगी।

उसके व्यक्तित्व की विशिष्टता हमारी स्थिति की विशिष्टता से मेल खाती है : "मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जो मेरे भेजे हुए को ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है" (13:20)। इस प्रकार प्रभु स्वयं को, अपने पिता को और अपने अनुयायियों को एक साथ जोड़ता है। प्रभु प्रेरितों को दिए जानेवाले आगामी आदेश की बाट जोह रहा था (20:21)।

किसी प्रतिनिधि की महानता का सीधा संबंध उस व्यक्ति की महानता से होता है जिसका वह प्रतिनिधित्व करता है। इस दुनिया में मसीह के राजदूत किसी छोटी रियासत का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं। हमारी बुलाहट संसार में सबसे गौरवशाली बुलाहट है। हम राजाओं के राजा के राजदूत हैं। हमें ग्रहण करनेवाले, हमें ही नही, बल्कि मसीह को और उसके पिता को भी ग्रहण करते हैं।

उनके बीच का पकड़वानेवाला मसीह और उसके राज्य की उन्नति को उसी प्रकार नहीं रोक सका, जिस प्रकार वह अंतरिक्ष में पृथ्वी की धुरी को नहीं उलट सकता।

प्रभु ने उसके ठुकराए जाने के बारे में भी कुछ तीखी बात कही (13:21-22) : "ये बातें कहकर यीशु आत्मा में व्याकुल हुआ और यह गवाही दी, मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा। चेले संदेह से, कि वह किसके विषय में कहता है, एक दूसरे की ओर देखने लगे।"

वह आत्मा में व्याकुल हो गया। यहाँ भी उसी शब्द का इस्तेमाल किया गया है, जब वह लाज़र की कब्र की ओर जा रहा था (11:33) और फिर तब, जब यूनानी उसके पास आए थे (12:27)। लाज़र की कब्र के पास पहुँचकर वह "व्याकुल हुआ" और फिर रोया। वह भौतिक तौर पर था। जब यूनानी आए और प्रभु ने आने वाले समय की चर्चा की और वह व्याकुल हुआ, तो यह मानसिक पीड़ा थी; यह मन की पीड़ा थी। अब, जब यहूदा उसके साथ मेज पर बैठा था, तो यीशु आत्मा में व्याकुल था।

उसने यहूदा को पश्चाताप करने का हर अवसर दिया। जो होना था, उसे वह अब और स्थगित नहीं कर सकता था। उसके पास अपनों से कहने के लिए कुछ बातें थीं, ऐसी बातें जो तब तक नहीं कही जा सकती थीं जब तक कि यहूदा, और उसकी बुराई और उसका विश्वासघात कमरे में मौजूद थे। अब प्रभु ने उसे बेनकाब करने के लिए सोच-समझकर कदम उठाए। यह देखना दिलचस्प है कि इस अंतिम, अटल और भयानक कार्रवाई ने पापियों के मित्र को कितना परेशान किया।

लेकिन केवल यीशु ही नहीं, उसके चेले भी व्याकुल थे। वे भय से अवाक रह गए, जब सच्चाई उनके सामने आ गई। वे अपने स्वयं के दोषों और असफलताओं को अच्छी तरह से जानते थे, लेकिन पकड़वानेवाला होना, अपने प्रिय प्रभु को दुश्मनों के हाथों धोखे से सौंप देना, अविश्वसनीय था। उन्होंने अपने हृदयों और एक-दूसरे के चेहरों की ओर देखा। वे आश्चर्य से इधर-उधर देखने लगे।

2. वह पकड़वानेवाले को उजागर करता है (13:23-26)

हमें दिखाया गया है कि कैसे यीशु मसीह ने पकडवानेवाले को बेनकाब किया। तीन लोगों को चित्र में लाया गया है। सबसे पहले, हम यूहन्ना को केंद्र में देखते हैं (13:23-24)।

“उसके चेलों में से एक जिससे यीशु प्रेम रखता था, यीशु की छाती की ओर झुका हुआ बैठा था। शमौन पतरस ने उसकी ओर संकेत करके उससे पूछा, बता तो, वह किसके विषय में कहता है?” इस विशेष भोज में चेले, परंपरा के अनुसार, अपनी बाईं भुजाओं के सहारे बैठे थे और दाहिनी भुजाएँ बाहर थीं। प्रिय चेला, जिसे हम इस सुसमाचार के लेखक यूहन्ना के रूप में पहचानते हैं, को सम्मान का स्थान मिला, वह यीशु की दाईं ओर उसके बगल में बैठा हुआ था। ऐसा लगता है कि पतरस कुछ दूर ही था। यहूदा यीशु के बाई ओर रहा होगा। इस बात को नहीं जानने का रहस्य पतरस की सहन शक्ति से बाहर था कि पकड़वानेवाला कौन था। आख़िरकार उसकी नज़र यूहन्ना पर पड़ी और उसने उसे इशारा करते हुए सिर हिलाया कि वह यीशु से इसका बारे में और स्पष्ट रूप से पूछे।

आगे हम यीशु को केंद्र में देखते हैं (13:25-26क)। “तब उसने उसी तरह यीशु की छाती की ओर झुके हुए उससे पूछा, हे प्रभु, वह कौन है? यीशु ने उत्तर दिया, जिसे मैं यह रोटी का टुकड़ा डुबाकर दूँगा वही है।” यूहन्ना ने यीशु से प्रश्न पूछा। आजकल हम किसी सम्मानित अतिथि को सम्मान का एक अलग चिह्न देते हैं। हमारी संस्कृति में, भोजन के दौरान रोटी परोसना या गिलास उठाकर देना सम्मान की परंपरा हो सकती है। यीशु के दिनों में, मेज़बान के द्वारा एक पसंदीदा निवाला सॉस में डुबाकर विशेष व्यक्ति को दिया जाता था। यीशु ने यूहन्ना को संकेत दिया कि वह पकड़वानेवाले की पहचान किस प्रकार करेगा। यह स्पष्ट नहीं है कि दूसरे चेलों ने यह बातचीत सुनी थी या नहीं, क्योंकि निवाला देने के बाद भी उन्हें यहूदा पर संदेह नहीं हुआ। वास्तव में, यीशु द्वारा यहूदा को यह विशेष सम्मान देने ने उसे उनके दिमाग से निकाल दिया।

अंत में हम यहूदा को केंद्र में देखते हैं (13:26ख)। “और उसने टुकड़ा डुबाकर शमौन इस्करियोती के पुत्र यहूदा को दिया।” प्रभु ने यहूदा की अंतरात्मा से बात की थी; अब उसने उसके हृदय से एक आखिरी अनुरोध किया। इस व्यक्ति का अनंतकाल अधर में झूल गया। उस भयानक काम से पहले यह उसका आखिरी मौका था। यहूदा ने प्रभु के मैत्रीपूर्ण भाव की गलत व्याख्या की। उसकी आत्मा में गूंज रही घंटियाँ शांत हो गईं कि उसका रहस्य उजागर हो गया है और अब उसका पर्दाफाश होने वाला है तथा उसे सजा मिलने वाली है। उसे सम्मानित अतिथि की तरह सम्मान दिया जा रहा था। सम्मान के चिह्न से अभिभूत होने के बजाय उसने अपने लिए यह पक्का कर लिया कि यीशु मसीह उसके लिए मसीहा नहीं है। वह स्थिति का फायदा उठाने और जब सब कुछ अच्छा चल रहा हो, वहाँ से निकल जाने की योजना बनाने लगा।

3. पकड़वानेवाले को उसने बाहर निकाला (13:27-30)

हमें दिखाया गया है कि कैसे पकड़वानेवाले को यीशु मसीह ने बाहर निकाला। पवित्र आत्मा की कलात्मकता के द्वारा हमें यहाँ तीन तस्वीरें दिखाई गई हैं। हम यहूदा और शैतान को देखते हैं (13:27)। “टुकड़ा लेते ही शैतान उसमें समा गया। तब यीशु ने उससे कहा, जो तू करता है, तुरन्त कर।” इसका शाब्दिक अनुवाद होगा : “टुकड़ा

लेते ही शैतान उसमें प्रवेश कर गया।" यहाँ ठीक उस क्षण को दिखाया गया है, जब यहूदा ने अंतिम सीमा पार की थी और जहाँ से वापसी संभव नहीं थी, उसी क्षण उसका विनाश तय हो गया था।

प्रभु के अंतिम अनुरोध को अस्वीकार करने से, जिसने उसे विशेष मित्रता और सम्मान प्रदान किया था, यहूदा का हृदय मसीह के प्रति इतना कठोर हो गया कि अब शैतान के लिए उसमें प्रवेश करना और उस व्यक्ति को पूरी तरह से अपने अधीन करना संभव हो गया। इस क्षण तक यहूदा पर बुरा उद्देश्य हावी हो चुका था। अब वह दुष्ट के वश में हो गया था।

प्रभु जानता था कि क्या हुआ था। अब शैतान स्वयं यहूदा की नज़रों से यीशु की ओर देखने लगा। अचानक यीशु ने यहूदा को अपने लोगों की संगति से बर्खास्त कर दिया। उसने उसे अपने भयानक कार्य के बारे में बताया और इसे जल्दी करने के लिए कहा। वह पहली तस्वीर है।

दूसरी तस्वीर में यहूदा और चेलों को दिखाया गया है (13:28-29)। "परन्तु बैठनेवालों में से किसी ने न जाना कि उसने यह बात उससे किस लिये कही। यहूदा के पास थैली रहती थी, इसलिये किसी किसी ने समझा कि यीशु उससे कह रहा है कि जो कुछ हमें पर्व के लिये चाहिए वह मोल ले, या यह कि कंगालों को कुछ दे।" यहूदा की प्रतिष्ठा बहुत बड़ी थी और उसने एक सच्चा चेला होने का ढोंग इतनी अच्छी तरह से किया था कि वह बिना रुकावट के, अंत तक दूसरों को धोखा देता रहा। यहाँ तक कि जब उसे निकाले जाने के शब्द बोले जा रहे थे, तब भी उन्होंने सोचा कि प्रभु यहूदा को किसी काम पर या दान का कार्य करने के लिए भेज रहा था। चाहे जिस पर भी उन्होंने पकड़वनेवाला होने का संदेह किया हो या नहीं किया हो, लेकिन ऐसा लगता है कि उन्होंने यहूदा पर संदेह नहीं किया था। उन्होंने यहूदा को बाहर निकालने के प्रभु के शब्दों की व्याख्या, यहूदा के चरित्र के बारे में अपनी गलत धारणाओं के प्रकाश में की। उन्हें इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि जिस काम के लिए वह अभी गया है, उसका भयानक परिणाम अगला दिन निकलने से पहले ही भुगतना पड़ेगा और वह था, उनके गुरु की हत्या और यहूदा की आत्महत्या।

तीसरी तस्वीर यहूदा और अंधकार की है (13:30)। "अत: वह टुकड़ा लेकर तुरन्त बाहर चला गया; और यह रात्रि का समय था।" भजन 41 के शब्द, जिनसे यीशु ने यहूदा की आत्मा के लिए इस अंतिम संघर्ष की शुरुआत में उद्धरण दिया था, अब वे पूरे हुए : "उसका मन अपने अन्दर अधर्म की बातें संचय करता है; और बाहर जाकर उनकी चर्चा करता है।" यहूदा ने अभी यही किया।

"यह रात्रि का समय था।" पवित्र आत्मा जिसे दूसरी जगह पर "सदाकाल तक घोर अंधकार" कहता है, यहूदा के लिए अब वह आरक्षित था (यहूदा 13)। हम देखते हैं कि यहूदा उस ऊपरी कमरे की रोशनी, परमेश्वर के संतों की संगति, और प्रभु यीशु की उपस्थिति को छोड़ रहा है। हमने उसे दरवाज़ा बंद करते हुए देखते हैं। अँधेरा उसे चारों ओर से घेर लेता है। वह सीढ़ियों से नीचे उतरता है। वह अपनी स्थिति जानने के लिए रुकता है और फिर अपने शापित रास्ते से उस स्थान पर जाता है जहाँ मसीह के शत्रु उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। वह अब दुष्टों की युक्ति पर चल रहा था, पापियों के मार्ग में खड़ा था, ठट्ठा करने वालों की मंडली में बैठा था। अब से उसका नाम विश्वासघात का पर्याय बनने जा रहा था। वह इस जीवन या अनंत काल में फिर कभी खुशी का दूसरा क्षण नहीं जान पाएगा। यह रात्रि का समय था।

ऊपरी कमरे में प्रभु के द्वारा अपने चेलों को कही गई लंबी और दिल से दिल की बातों की पृष्ठभूमि यही थी। आइए अब हम बातचीत के प्रमुख विचारों को देखते हैं।

II. बातचीत के प्रमुख विचार (13:31-14:31)

A. एक और आज्ञा (13:31-35)

ऊपरी कक्ष में हुई बातचीत में चार प्रमुख विचार प्रबल हैं : एक और आज्ञा, एक और आगमन, एक और आदेश, और एक और सहायक। आइए हम पहले से शुरु करते हैं।

1. जीवन का प्रभु (13:31-33)

नई आज्ञा के बारे में प्रभु की शिक्षा को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। वह हमारे सामने सबसे पहले जीवन के प्रभु को रखता है, जिसे यहूदा धोखा देने जा रहा था, जो निराश नहीं था, वह मृत्यु से परे पुनरुत्थान और अनंत जीवन को देख रहा था।

इस संबंध में प्रभु को अपनी महिमा के बारे में कुछ कहना था। (13:31-32) "जब वह बाहर चला गया तो यीशु ने कहा, अब मनुष्य के पुत्र की महिमा हुई है, और परमेश्वर की महिमा उसमें हुई है।"

जब यहूदा ने अंततः अपने पीछे दरवाज़ा बंद किया तो हर कोई प्रभु यीशु की राहत की सांस को लगभग सुन सकता था। "जब वह बाहर चला गया" पर ध्यान देने की आवश्यकता है; यह यहूदा के स्वैच्छिक कार्य को दिखाता है। यह सच है कि यीशु ने यहूदा को बाहर निकाल दिया था लेकिन यह भी उतना ही सच है कि यहूदा ने खुद को बाहर निकाल लिया था। परमेश्वर लोगों को नरक में नहीं भेजता; वे स्वयं जाते हैं। परमेश्वर उनके द्वारा लिए गए निर्णयों का समर्थन करता है।

ऊपरी कमरे का वातावरण अब शुद्ध हो गया था। दुष्ट चला गया था, अपने मानवीय प्रेरक को अपने साथ ले गया, उसे और गहरी रात की ओर, अंधेरे की ओर ले गया। प्रभु अपने चेलों की ओर मुड़ा। "अब," उसने कहा, "अब!" यहूदा के निकल जाने ने एक संकट, परन्तु एक महत्वपूर्ण मोड़ को दर्शाया। उसका जाना प्रभु के क्रूस के दुःख और उससे आगे के कदमों के आखिरी चरण में पहला कदम था।

प्रभु ने अँधेरी घाटी से परे महिमामय चोटियों को देखा। उसने तूफ़ानी बादलों के ऊपर मेघधनुष देखा। गुलगुता अंत नहीं था; महिमा ही लक्ष्य था। उसने कहा, "अब मनुष्य के पुत्र की महिमा हुई है।" पहले मनुष्य, आदम ने पतन के कारण अपनी प्रभुता खो दी। दूसरे मनुष्य, मसीह उसे फिर से प्राप्त करने के लिए पृथ्वी पर आया जो पतन के कारण खो गया था।

यूहन्ना बारह बार मनुष्य का पुत्र नामक शीर्षक का उपयोग करता है। पहली बार नतनएल के साथ बातचीत में किया। और यहाँ यूहन्ना आखिरी बार इसका इस्तेमाल करता है। क्या नतनएल ने यीशु को दोबारा उस नाम का प्रयोग करते हुए सुनकर ऊपर देखा? उसे यीशु के शब्द याद आए होंगे, "... परमेश्वर के स्वर्गदूतों को मनुष्य के पुत्र के ऊपर उतरते और ऊपर जाते देखोगे।"

यहूदा के प्रस्थान ने यीशु के प्रस्थान की शुरुआत की। वह अपने घर जा रहा था। मार्ग अंधकारमय और ऊँचा था। क्रूस रास्ते पर खड़ा था, लेकिन मृत्यु और कब्र पर विजय पाना बाकी था। पाप और शैतान हार गए। मनुष्य के पुत्र को महिमा मिल चुकी थी, यीशु के पापरहित मनुष्यत्व के द्वारा परमेश्वर को महिमा मिल चुकी थी।

यीशु अब उस महिमा की ओर वापस जा रहा था जो संसार से पहले उसके पिता के पास थी, वह महिमा जो उसने पृथ्वी पर आने पर अलग रख दी थी। मनुष्य के पुत्र में परमेश्वर की महिमा हो चुकी थी; अब मनुष्य के पुत्र को

महिमा दी जानी थी जो गतसमनी, गबत्ता, गुलगुता और कब्र के माध्यम से आज्ञाकारिता के मार्ग पर चलकर, महिमा की ओर लौट रहा था, जहाँ उसे परमेश्वर के सिंहासन पर बैठाया जाएगा।

अब प्रभु अपने लक्ष्य के बारे में कुछ कहता है (13:33)। "हे बालको, मैं और थोड़ी देर तुम्हारे पास हूँ : फिर तुम मुझे ढूँढ़ोगे, और जैसा मैं ने यहूदियों से कहा, 'जहाँ मैं जाता हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते,' वैसा ही मैं अब तुम से भी कहता हूँ।" आने वाले संकट केवल उस पर ही नहीं, उसके चेलों पर भी प्रभाव डालने वाले थे। अगले कुछ घंटों में होने जा रही घटनाओं के दौरान उनकी निराशा को वह तस्वीर के रूप में देख पा रहा था। इसके अलावा, उसकी स्वर्गीय महिमा की पूर्ण प्राप्ति के लिए पृथ्वी से उसकी वापसी जरूरी थी। उसका दिल उनके प्रति भर आया।

उसने उन्हें "बालको" कहा। यह शब्द रिश्ते के विचार को ही नहीं दिखाता, बल्कि उन लोगों के लिए गहरे प्रेम और देखभाल का विचार भी बताता है जो अभी तक परिपक्व नहीं हुए हैं। प्रभु का दिल पतरस, याकूब, यूहन्ना, मत्ती, थोमा, फिलिप्पुस, अन्द्रियास, नतनएल और बाकियों के प्रति भर आया। जैसे ही उसने उनसे ये शब्द कहे, "तुम मुझे ढूँढ़ोगे... जहाँ मैं जाता हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते," वह उनके चेहरों पर स्तब्ध भाव देख सकता था। जहाँ तक हम जानते हैं, उसने पहले कभी उन्हें "बालक" कहकर संबोधित नहीं किया था। ये वे शब्द थे जो उसकी माता ने उससे तब कहे थे, जब वह खो गया था और फिर उसे मंदिर में पाया था (लूका 2:48)।

प्रभु ने उन्हें याद दिलाया कि उसने यहूदियों से पहले ही कहा था कि वे उसे ढूँढ़ेंगे। लेकिन उसने यहूदियों के लिए कही गई बातों में से (7:34) दो बातें यहाँ छोड़ दी थीं : वे अपने पापों में मरेंगे, और वे उसे नहीं पाएँगे। अपने चेलों से उसने बस यह पुष्टि की कि अब जो मार्ग उसके सामने खुल रहा है, उस पर उन्हें अकेले ही चलना होगा।

2. प्रेम का नियम (13:34-35)

वह अब प्रेम के नियम और नई आज्ञा पर आता है। उसके आवेग को हम यहाँ देख सकते हैं (13:34) : "मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ कि एक दूसरे से प्रेम रखो; जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो।" पतरस और यूहन्ना, मैं जानता हूँ कि तुम्हारे स्वभाव बहुत भिन्न हैं, लेकिन एक दूसरे से प्रेम करो। शिमोन जलोती और मत्ती, मुझे पता है कि तुम्हारी पृष्ठभूमियाँ अलग हैं, लेकिन एक दूसरे से प्रेम करो। साहसी अन्द्रियास और संदेही थोमा, एक दूसरे से प्रेम करो। "जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है।" उस प्रेम से जो सहनशील है और दयालु है, उस प्रेम से जिसे बहुत सा जल भी नहीं बुझा सकता, उस प्रेम से जो मृत्यु से भी अधिक शक्तिशाली है। मैं जा रहा हूँ, लेकिन तुम अब भी यहाँ रहोगे। तुम्हें एक दूसरे की जरूरत होगी, इसलिए एक दूसरे से प्रेम करो। अपने सभी मतभेदों को प्रेम के विशाल सागर में डुबो दो।

प्रेम एक नवीन नियम है। उस प्रेम की भावना क्या है? यह उसका प्रेम है।

हम यहाँ इसका प्रभाव देखते हैं (13:35) : "यदि आपस में प्रेम रखोगे, तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो।" सच्चे चेलेपन का प्रतीक हमारे सैद्धांतिक कथन नहीं, हमारे गाए जानेवाले भजन और गीत नहीं, पालन की जानेवाली रीतियाँ नहीं, अनुकरण किए जानेवाले संस्कार नहीं नहीं, आत्माओं को जीतनेवाले उत्साह में नहीं, अपनी कलीसियाओं के प्रति हमारी निष्ठा में नहीं, लेकिन उन सबके प्रति हमारा प्रेम है जो प्रभु से प्रेम करते हैं। जब लोग यह देखेंगे, तो वे उसके चेलों में मसीह को पहचानेंगे और उस प्रेम को वास्तव में उसका प्रेम मानेंगे।

पतरस यह सब समझ रहा था। उसने यूहन्ना को यह पता लगाने के लिए संकेत किया था कि पकड़वानेवाला कौन है, लेकिन यीशु ने जो उत्तर दिया था, उसे सुनने के लिए वह बहुत दूर था। उसने यीशु को टुकड़ा डुबाकर यहूदा को

देते हुए देखा था, और शायद उस कार्य ने उसके प्रति उसके मन में जो भी संदेह था, उसे शांत कर दिया था। आखिरकार, यहूदा एक यहूदावासी था और बाकी सभी गलीली थे, इसलिए शायद प्रभु यहूदा को दल के एकमात्र यहूदावासी के रूप में सम्मानित कर रहा था। उसने यहूदा को भोजन से उठते देखा था और जल्दी करने की प्रभु की बात को सुना होगा। पतरस के मन में इन सब बातों में कुछ भी असाधारण नहीं था।

B. एक और आगमन (13:36-14:6)

1. मानवीय हृदय का प्रकट होना (13:36-38)

लेकिन यीशु के द्वारा अचानक उसके दूर चले जाने की बात। पतरस अचानक उठ बैठा और विशेष ध्यान दिया। उसे कुछ कहना था जो उसने कह दिया। हम उसके शब्दों में मानवीय हृदय को प्रकट होते देखते हैं। हम तुरंत, पतरस की घबराहट पर ध्यान देते हैं (13:36-37क) : "शमौन पतरस ने उससे कहा, हे प्रभु, तू कहाँ जाता है?" यीशु ने उत्तर दिया, जहाँ मैं जाता हूँ वहाँ तू अभी मेरे पीछे आ नहीं सकता; परन्तु इसके बाद मेरे पीछे आएगा। पतरस ने उससे कहा, हे प्रभु, अभी मैं तेरे पीछे क्यों नहीं आ सकता?"

प्रभु पिछले छः महीनों से उन्हें बता रहे थे कि वह जा रहा है, कि वह मरने वाला है, और वह फिर से जीवित हो जाएगा। अब उन्हें यह एहसास होने लगा था कि वह वास्तव में मरने वाला है। इस समय, वे इससे आगे बढ़ने में सक्षम नहीं थे, विचारों में भी नहीं।

मृत्यु के बाद के जीवन का पुराने नियम का प्रकाशन किसी भी तरह से इतना उज्ज्वल नहीं था जितनी आशा अब हमें नए नियम से मिलती है। यीशु मसीह के पुनरुत्थान और पवित्र आत्मा के आगमन ने एक महत्वपूर्ण अंतर पैदा किया था। पौलुस हमें याद दिलाता है कि प्रभु यीशु ने "मृत्यु का नाश किया और जीवन और अमरता को उस सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान कर दिया" (2 तीमुथियुस 1:10)। पतरस, इस अहसास से जूझ रहा है कि यीशु जल्द ही मरने वाला है, वह जानना चाहता है कि इसका क्या मतलब है। मृत्यु के पार क्या है? वह पूछता है, "तू कहाँ जाता है?" तू कहाँ होगा? और मैं अब तुम्हारे साथ क्यों नहीं आ सकता?" प्रभु का हृदय अपने मित्र पतरस के प्रति फिर भर आया होगा, जिसकी भावना और प्रीति यहूदा की ठंडी घृणा से रात और दिन के समान भिन्न थी।

अब हम पतरस के अहंकार को देखते हैं (13:37ख) : पतरस ने कहा, "मैं तो तेरे लिये अपना प्राण भी दे दूँगा।" यदि प्रभु मरने वाला था — ऐसा लगता है कि पतरस को यह बात समझ आ गई थी — तो वह उसके लिए मरने को तैयार था।

परन्तु प्रभु पतरस को स्वयं पतरस से भी अधिक जानता था : "यीशु ने उत्तर दिया, क्या तू मेरे लिये अपना प्राण देगा? मैं तुझ से सच सच कहता हूँ कि मुर्ग़ बाँग न देगा जब तक तू तीन बार मेरा इनकार न कर लेगा" (13:38)। प्रभु ने "इनकार" के लिए अपार्नेओमाई नामक शब्द का प्रयोग किया है, जिसका अर्थ है "पूरी तरह से मना कर देना।" मुर्गे की बांग आधी रात और भोर के बीच के चार रोमी पहरों में से तीसरी थी। उस रात, अपने सभी साहसिक शब्दों के बावजूद, पतरस कायरता की गहराइयों में उतरता चला जाएगा। प्रभु के शब्दों का कोई दोष नहीं था। वह तो पतरस के अच्छे इरादे की सराहना कर रहा था, लेकिन वह जानता था कि क्या वह उस पर भरोसा कर सकता है या नहीं। जैसे उसने यहूदा को चेतावनी दी थी, अब उसने पतरस को भी चेतावनी दी। ऐसा लगता है कि पतरस इस भविष्यवाणी से अचंभित हो गया; वह एकदम चुप हो गया। वास्तव में आगे की घटनाओं में उसके पास कहने को और कुछ नहीं था।

2. स्वर्गीय घर का प्रकटीकरण (14:1-3)

अनगिनत बार, सभी युगों में शोक संतप्त परमेश्वर के लोग ने सांत्वना के लिए इन तीन पदों की ओर मुड़े हैं जब उनके घर मृत्यु दस्तक देती है — और यह ठीक भी है। यहाँ हम इस सुसमाचार के एक मुख्य आकर्षण को देखते हैं। यदि यूहन्ना ने ये अद्भुत शब्द न लिखे होते तो हम बेहद दयनीय अवस्था में होते।

वह एक नई शांति के साथ शुरु करता है (14:1) : "तुम्हारा मन व्याकुल न हो; परमेश्वर पर विश्वास रखो और मुझ पर भी विश्वास रखो।" इस बात पर विवाद है कि क्रिया 'विश्वास रखो,' जिसे इस पद में दोहराया गया है, संकेतात्मक होनी चाहिए ("तुम विश्वास रखते हो") या आदेशात्मक ("विश्वास रखो")। यदि हम इन दोनों क्रियाओं को आदेशात्मक रूप में पढ़ते हैं तो इसमें अतिरिक्त बल मिलता है : "परमेश्वर पर विश्वास रखो और मुझ पर विश्वास रखो।"

प्रभु स्वयं को परमेश्वर के समान धार्मिक भरोसे के उचित लक्ष्य के रूप में दर्शाता है। वह कहता है, "परमेश्वर पर भरोसा करो और मुझ पर भी भरोसा करो!"

भरोसा, विश्वास से कहीं अधिक गहरा होता है। विश्वास ठंडा और बौद्धिक हो सकता है; भरोसा भावात्मक और व्यक्तिगत होता है। वह हमें चुनौती देता है कि हम उसे वैसी प्रतिक्रिया दें जैसी हम परमेश्वर को देते हैं। यूनानी भाषा में यह और भी अधिक बलशाली है, जिसके दूसरे खंड में शब्द उलटे हैं। इसमें लिखा है, "भरोसा रखो परमेश्वर पर; मुझ पर भी भरोसा रखो।" यह परमेश्वर और मसीह को जितना संभव हो सके, एक साथ रखता है और शुरुआत एवं अंत में दो समान प्रतिक्रियाएँ देता है। जो कुछ भी हम परमेश्वर को देते हैं, वह सब हमें यीशु को देना है। दोनों में बिल्कुल भी अंतर नहीं है। यीशु परमेश्वर है जैसे परमेश्वर परमेश्वर है। दोनों पर समान रूप से विश्वास किया जा सकता है और किया जाना चाहिए। अन्य धर्म भय, भले कामों, आत्म-त्याग, संस्कार, रीति-रिवाज, पंथ इत्यादि को मुख्य स्थान देते हैं। केवल मसीहियत ही विश्वास की बात करती है। हमारे और परमेश्वर के बीच का सम्बन्ध विश्वास है। हम उस पर भरोसा कर सकते हैं।

अक्सर, नेक इरादेवाले लोग, त्रासदी का सामना कर रहे या खतरे में पड़े या शोक संतप्त पड़ोसी, दोस्त या प्रियजनों को इन शब्दों के साथ सांत्वना देते हैं, "सब कुछ ठीक हो जाएगा।" ऐसा आशावाद अच्छे विचारों पर आधारित होता है। किसी से तब तक यह कहने का कोई फायदा नहीं है कि तुम्हारा दिल परेशान न हो, जब तक हम यह नहीं कहते, "परमेश्वर पर विश्वास करो; यीशु पर भी विश्वास करो।" यह भावना को सर्वसामर्थ्य से जोड़ता है।

अतः पृथ्वी पर एक नई शांति का सूत्रपात होता है। "जब दुःख समुद्री लहरों की तरह आते हैं" तो हमारे पास भागने की एक जगह, "तूफान में एक सहारा" होता है। चेले इस पृथ्वी के इतिहास के सबसे अंधकारमय तीन दिनों का सामना करने वाले थे। हर सहारा और लंगर, हर परिचित मील का पत्थर और मार्गदर्शक चिह्न, बह जाने वाला था। यीशु मृत्यु में शांत और निष्क्रिय रहेगा, उनका शरीर घावों से भरा होगा, उसकी आवाज़ शांत होगी, उसकी उपस्थिति जाती रहेगी, उसका व्यक्तित्व कब्र के दूसरी तरफ कहीं गायब हो जाएगा, उनकी पहुँच से परे। यीशु ने उन्हें तैयार किया। उसने उन्हें एक नई शांति दी : "विश्वास रखो।"

उसने एक नई जगह के बारे में बताया (14:2)। जैसा कि हमने देखा, पुराने नियम में स्वर्ग के बारे में बहुत कम कहा गया है। "स्वर्ग" और "अब्राहम की गोद" ने कुछ संकेत दिए हैं, लेकिन वहां अधिक स्पष्टता नहीं थी। यीशु

कहता है, “मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते तो मैं तुम से कह देता; क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूँ।”

केवल एक और अवसर पर प्रभु ने “मेरे पिता के घर” नामक अभिव्यक्ति का उपयोग किया है और उसने वह पहली बार मंदिर को शुद्ध करते समय कहा था। उसने कहा, “मेरे पिता के घर को व्यापार का घर मत बनाओ।” अपने प्रांगणों और कक्षों, अपने स्तंभों और बरामदों, भक्तों की भीड़ के लिए अपने विस्तृत स्थानों के साथ, मंदिर एक तरह से स्वर्ग में स्थित उस बड़े घर की छाया था।

यह कितना अद्भुत है कि यीशु स्वर्ग का वर्णन घरेलू तरीके से करता है : “मेरे पिता का घर।” मृत्यु हमारी आत्माओं के लिए भय बन सकती है, हमारे विचारों को ठिठुरा सकती है। अक्सर जिस द्वार से मनुष्य इस जीवन से बाहर निकलता है, वह काफी भयानक होता है। उस पार की चीजों से परिचित न होना, हमारे डर को और भी बढ़ा सकता है। वहाँ से कोई वापस नहीं आता। एक शांति, सन्नाटा, दूरी और एक बड़ी खाई तय है, जो हमारे दिलों को भय से भर देती है। यहाँ तक कि जिन लोगों को यह निश्चय है कि उनकी आत्मा के साथ सब कुछ ठीक है, वे भी मृत्यु के समय पीछे हट जाते हैं। कब्र का भय सहज है। लेकिन ये शब्द, “मेरे पिता का घर” अँधेरे में एक चमक प्रदान करते हैं।

हममें से अधिकांश लोग अपने बचपन को याद कर सकते हैं, जब हमारे माता-पिता का घर एक ऐसी जगह था जहाँ हमें प्रेम मिलता था, हमारी देखभाल और हमारी रक्षा होती थी, जहाँ हम स्वाभाविक बन सकते थे, जहाँ हम गर्मजोशी और मेलजोल का आनंद लेते थे और हजारों अनमोल यादें संजोकर रखते थे। उसके पिता का घर भी वैसा ही है। यह घर है।

यदि स्वर्ग कोई अजीब और अपरिचित स्थान होता, तो यीशु ने हमें अवश्य बताया होता। यह कोई अजीब और विचित्रता से भरा हुआ, किसी विज्ञान के लेखक की कथाओं में वर्णित काल्पनिक स्थान नहीं था। “तो मैं तुम से कह देता” यीशु हमें आश्वस्त करता है। हम वहाँ अपने घर जैसा ही महसूस करेंगे। यह एक वास्तविक जगह है। जब पौलुस “उठाया गया” था, तो वह जानता था कि वह कभी अपने शब्दों में इसका वर्णन नहीं कर सकता, फिर भी वह वास्तव में नहीं जानता था कि उसने शरीर के साथ देखा था या शरीर के बिना। यह इतना वास्तविक था, तो शायद “शरीर के साथ” रहा होगा। लेकिन यह एक अलग संसार जैसा, आत्मिक और अलौकिक भी इतना था कि वह “शरीर के बिना” भी हो सकता था। लेकिन यह डरावना नहीं था; बल्कि इतना आकर्षक, संतोषजनक और रोमांचकारी था कि इस दृश्य को देखते ही, उसमें हमेशा यहाँ से प्रस्थान करने और मसीह के साथ रहने की इच्छा उत्पन्न हो गई और उसने कहा, “कहीं बेहतर।”

इससे हमें पता चलता है कि स्वर्ग को स्थानीय बनाया गया है। यह कहीं पर है और महत्वपूर्ण है, क्योंकि यीशु वहाँ रह रहा है। यीशु ने कहा, वहाँ कई भवन, या “रहने के स्थान” हैं। वह स्थान छोटा और संकरा नहीं है।

हम और अधिक जानना चाहते हैं। यूहन्ना प्रकाशितवाक्य में हमें इस आसमानी नगर के बारे में अधिक वर्णन देता है। इन सारी बातों को इस शब्द के साथ संक्षेप में कहा जा सकता है कि यीशु अभी वहीं है, और जब हम वहाँ पहुँचेंगे, तब भी वहीं होगा।

उसने एक नई प्रतिज्ञा के बारे में भी बताया (14:3) : “यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूँ, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा कि जहाँ मैं रहूँ वहाँ तुम भी रहो।” पुनरुत्थान के बाद इस संदेश की पुष्टि की गई, जब चेलों ने जैतून पर्वत पर, उसे महिमा की ओर आकाश में उठा लिए जाते हुए देखा। स्वर्गदूतों ने घोषणा

की, “यही यीशु.... जिस रीति से तुमने उसे स्वर्ग को जाते देखा है, उसी रीति से वह फिर आएगा।” इसे ही पौलुस कलीसिया की “धन्य आशा” कहता है : यीशु फिर आ रहा है। इन्ही शब्दों के इर्द गिर्द, “मैं फिर आऊँगा,” पवित्र आत्मा ने नए नियम की पत्रियों में एक संपूर्ण युगांतशास्त्र को तैयार किया है।

ब्रिटिश साम्राज्य के दिनों में बेंजामिन डिज़रायली ब्रिटिश हाउस ऑफ़ कॉमन्स के सदस्य थे। जब वे संसद के लिए चुने गए तो वे अपने साथियों से अलग दिखे। उसका पहनावा बेतुका था, उसका ढंग विचित्र था। और वह यहूदी था। जब वह अपना पहला भाषण देने के लिए उठा तो उनके साथी सांसदों ने उनका मजाक उड़ाया। हंगामा इतना तेज़ था कि उसे बीच में ही भाषण रोकना पड़ा। उसने विरोध करते हुए कहा, “अभी तो मैं बैठ रहा हूँ, पर आप लोगों को फिर से मुझे सुनना पड़ेगा।” उसने ब्रिटेन को महानता की ओर अग्रसर किया।

यह प्रभु के तिरस्कार का दिन है। यहूदा ने उसे पकड़वाया, पतरस ने उसका इनकार किया, यहूदियों ने उसका मज़ाक उड़ाया, रोमियों ने उसे क्रूस पर चढ़ाया। वह अब घर वापस चला गया है। वह कह रहा है, “अभी तो मैं बैठ रहा हूँ, पर आप लोगों को फिर से मुझे सुनना पड़ेगा।”

वह पृथ्वी पर वापस आ रहा है। यह शुभ समाचार सबसे पहले ऊपरी कक्ष में उसके अपने लोगों को सुनाया गया। यह परमेश्वर के भविष्यवाणीय कार्यक्रम का अगला हिस्सा है। वास्तविक दिन और घंटा वह भेद हैं जिसे ब्रह्मांड में सबसे अच्छे से रखा गया हैं। अभी वह उस अद्भुत स्थान को अंतिम रूप दे रहा है जिसकी तैयारी के लिए वह गया है। उसने हमसे एक प्रतिज्ञा की है, “मैं फिर आऊँगा।” बाइबल उसी बुलंद आवाज़ के साथ समाप्त होती है जो युगों से गूंज रही है, “हाँ, मैं जल्दी आ रहा हूँ,” और कलीसिया की आनन्द से भरी भरी प्रतिक्रिया यह है, “हाँ प्रभु, शीघ्र आ।”

3. बड़े घर का प्रकटीकरण (14:4-6)

सबसे पहले, यह दावा है (14:4) : “जहाँ मैं जाता हूँ तुम वहाँ का मार्ग जानते हो।” चेले इतने आश्वस्त नहीं थे। वह उन्हें बता रहा था कि वह कहाँ जा रहा है : अपने घर। जहाँ तक मार्ग की बात है—कुछ ही देर में, वह उसे भी स्पष्ट कर देगा—वह स्वयं ही मार्ग है। वे उसे ही देख रहे थे।

अफ्रीका में एक शुरुआती मिशनरी बताता है कि कैसे वह सुदूर उत्तर में एक नई जनजाति के पास सुसमाचार ले जा रहा था। अपने साथियों के साथ, वह एक गाँव में पहुँचा, जहाँ से आगे उसके कुलियों ने जाने से इनकार कर दिया। मिशनरी ने स्थानीय मुखिया से विनती की। क्या उसके गाँव में कोई ऐसा व्यक्ति था जो उसे उस जनजाति तक पहुँचा सके? मुखिया ने एक आदमी को बुलाया, लंबा, युद्ध के घाव-चिह्नों से भरा हुआ जिसके पास एक बड़ी कुल्हाड़ी थी। एक सौदा हुआ और अगली सुबह मिशनरी अपने नए मार्गदर्शक के साथ झाड़ियों में से चल पड़ा। रास्ता बहुत कठिन था और अच्छा रास्ता लगभग गायब हो चुका था। कभी-कभी किसी पेड़ पर, कभी-कभी किसी संकरे रास्ते पर निशान लगा हुआ दिख जाता था। अंततः मिशनरी ने यात्रा रोकी। उसने गाइड से पूछा कि क्या उसे सचमुच रास्ता पता है। वह आदमी खीझकर बोला, “गोरे आदमी, तुम्हें मेरे हाथ में यह कुल्हाड़ी दिख रही है? मेरे शरीर पर ये निशान दिख रहे हैं? इस कुल्हाड़ी से मैंने उस आदिवासी गांव का रास्ता बनाया था जहाँ हम जा रहे हैं। मैं वहीं से आया हूँ। ये निशान मुझे तब मिले थे जब मैंने रास्ता बनाया था। और तुम मुझसे पूछते हो कि क्या मुझे रास्ता पता है? मेरे आने से पहले कोई रास्ता नहीं था। मैं ही रास्ता हूँ।”

प्रभु यीशु महिमा से आया था। अब वो क्रूस के माध्यम से महिमा की ओर वापस जा रहा था। उसके आने से पहले कोई रास्ता नहीं था। उसके शरीर पर कलवरी के निशान उस कीमत को दिखाते हैं जो उसने हमें परमेश्वर तक

वापस पहुँचाने के लिए चुकाई थी। वह अपने घावों की ओर इशारा करते हुए कहता है, “मैं ही मार्ग हूँ।” चेले इसे बाद में ही बेहतर समझ पाएँगे। लेकिन यह बात सच थी। वे जानते थे कि वह कहाँ जा रहा है क्योंकि उसने उन्हें बता दिया था। वे रास्ता जानते थे क्योंकि वे उसे जानते थे और वही रास्ता था।

फिर मूल्यांकन आता है (14:5) : थोमा ने उससे कहा, “हे प्रभु, हम नहीं जानते कि तू कहाँ जा रहा है; तो मार्ग कैसे जानें?” थोमा दिखावा करने वाला व्यक्ति नहीं था कि वह उस विश्वास को दिखाए जो उसके पास था ही नहीं। हम थोमा के प्रश्न के लिए उसका धन्यवाद दे सकते हैं। इसी कारण प्रभु को महान “मैं हूँ” कथन कहने का मौका मिला, जिसका सार था “स्वर्ग के लिए परमेश्वर का मार्ग।”

फिर आश्वासन आता है (14:6) : “यीशु ने उससे कहा, मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।” उस शानदार कथन में यीशु ने मानवीय हृदय के तीन सबसे बड़े प्रश्नों का उत्तर दिया।

उसने इस प्रश्न का उत्तर दिया, “मैं उद्धार कैसे पा सकता हूँ?” (14:6क) उसने कहा, “मार्ग... मैं ही हूँ।”

जब मैं बालक था तो मेरे चाची और चाचा, मुझे लंदन के बाहरी इलाके में स्थित हैम्पटन कोर्ट में ले गए, जो कार्डिनल वोल्सी द्वारा बनाया गया एक प्रसिद्ध महल था और हेनरी VIII ने उस पर अधिकार कर लिया था। मैदान में बाड़ों का एक चक्रव्यूह था और एक छोटे से शुल्क के साथ, कोई भी इसमें जा सकता था, घूम सकता था और संभवतः खो भी सकता था। बाड़ें ऊँचीं थीं, गलियाँ संकरी थीं और सभी दिशाओं में घूमती हुई गलियां, एक दूसरे के साथ मिली हुई थीं। भूलभुलैया के बीच में एक खुली जगह पर कुछ कुर्सियां भी लगी हुई थीं, जहाँ पूरी तरह से खो जाने पर एक व्यक्ति बैठ कर आराम कर सकता था। खैर, हमें भी खोने में ज्यादा देर नहीं लगी। कई बार भूलभुलैया के बीच में घूमने के बाद मुझे अहसास हुआ कि अब बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं है। आख़िरकार, पार्क का एक परिचारक प्रकट हुआ। उसने पूछा, “तुम लोग खो गए?” हम वास्तव में खो गए थे। उसने कहा, “मेरे पीछे आओ!” हम उसके पीछे चल दिए। उसने एक मोड़ इस तरफ लिया, एक मोड़ उस तरफ, एक मोड़ इस तरफ और एक मोड़ उस तरफ, और हम बाहर पहुँच गए। फर्क कहाँ पड़ा? अपने प्रयासों को छोड़ना, स्वीकार करना कि हम खो गए थे, उस पर भरोसा करना और उसका अनुसरण करना जो रास्ता जानता था।

मैं कैसे उद्धार पा सकता हूँ? मुझे स्वीकार करना होगा कि मैं खो गया हूँ, मुझे अपने प्रयासों को बंद करना होगा, अपने जीवन में उस व्यक्ति को ग्रहण करना होगा जिसने कहा है, “मैं ही मार्ग हूँ।” जब मैं उसे जानता लेता हूँ, तो मुझे मार्ग का पता चल जाता है। वही मार्ग है, और कोई मार्ग नहीं है। यीशु ने कहा, “बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।” मसीह के पास आने के कई तरीके हैं लेकिन स्वर्ग तक पहुँचने का केवल एक ही मार्ग है : मसीह के द्वारा।

उसने इस प्रश्न का उत्तर दिया, “मैं कैसे आश्वस्त हो सकता हूँ?” (14:6ख) उसने कहा, “सत्य... मैं ही हूँ।” वह उन सबका सारांश प्रस्तुत करता है जो अपने आप में अनंत और परम है।

बुद्ध, यूनानी दार्शनिक, भारतीय रहस्यवादी आए और चले गए। जब यीशु आया तब तक दुनिया को धर्म और दर्शन की सीमाओं और दिवालियापन की खोज करने के लिए पांच हजार साल का समय मिला था। उसने अधिकार के साथ बातें कीं। हमें केवल पहाड़ी उपदेश, यीशु के दृष्टांत और सन्देश, जैतून पहाड़ के सन्देश, चेलों के सामने रखे जा रहे सच को पढ़ने की जरूरत है, ताकि पता चल सके कि प्रभु यीशु अपने आप में उत्कृष्ट है। उसने केवल सत्य की शिक्षा नहीं दी; वह स्वयं सत्य था।

वह सिद्धांतवादी था। उसने कहा, “सत्य... मैं ही हूँ।” प्रत्येक धार्मिक सिद्धांत, दार्शनिक धारणा, वैज्ञानिक सिद्धांत, हर राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक या मनोवैज्ञानिक प्रस्ताव जिसका अंततः कोई केंद्र, योग और सार नहीं होता है, वह सीमित और स्वयं को गलत साबित करने के लिए बाध्य होता है। यीशु के साहसिक सिद्धान्तवाद को हम उसके इस विशिष्ट कथन में देख सकते हैं, जो स्वयं को ‘सत्य’ कहने के महान दावे से जुड़ा है, “बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।”

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कितने अमीर, सफल, धार्मिक, नैतिक, ईमानदार, लोकप्रिय या शक्तिशाली हैं, आप यीशु के द्वारा ही परमेश्वर के पास आ सकते हैं। यह कथन अहंकार से भरा नहीं है, बल्कि सच है।

सच हमेशा सबसे अलग, सिद्धांतवादी, असत्य के प्रति असहिष्णु होता है। अन्यथा यह सच, अनंत और परम नहीं हो सकता। इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि सच, गणितीय है, वैज्ञानिक है, या इसके जैसा आत्मिक है। सत्य सदैव एक अर्थ में संकीर्ण होता है। त्रुटि व्यापक और सबको शामिल करनेवाली होती है।

उदाहरण के लिए, यहाँ एक गणितीय सत्य है : “दो को दो से गुणा करने पर चार होता है।” यह एक संकीर्ण, सैद्धांतिक और असहिष्णु कथन है। त्रुटि कहती है, “दो को दो से गुणा करने पर तीन होता है।” सच ऐसी “सहिष्णुता” नहीं स्वीकार कर सकता। क्योंकि यीशु सत्य है, वह सभी त्रुटियों को दूर करता है, चाहे वह कितनी भी लोकप्रिय, व्यापक, प्राचीन या विश्वसनीय क्यों न हो। वह कहता है, “बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।” यह दुनिया के सभी झूठे मतों को खारिज करता है; यह मांग करता है कि हर जगह का हर व्यक्ति अपने गलत विचारों से पश्चाताप करे और उसके पास आए।

उसने इस प्रश्न का उत्तर दिया, *“मैं कैसे संतुष्ट हो सकता हूँ?”* (14:6ग) उसने कहा, “जीवन... मैं ही हूँ।” यहाँ यूनानी शब्द ज़ो है जो परमेश्वर से उत्पन्न जीवन और जगत के सबसे छोटे प्राणी में मौजूद जीवन को दिखाता है। वह मृत्यु के विपरीत है; यह पुनरुत्थान का जीवन, अनन्त जीवन है। यूहन्ना को प्रभावित करने वाले शब्दों में से एक शब्द है जीवन*;* उसने इसका और इसके रूपों का प्रयोग लगभग छप्पन बार किया। इस शब्द का प्रयोग सबसे पहले प्रभु ने दो द्वारों, दो मार्गों और दो नियतियों के बारे में बात करते समय किया था : “क्योंकि सकेत है वह फाटक और कठिन है वह मार्ग जो जीवन को पहुँचाता है; और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं” (मत्ती 7:14)। प्रभु ने मार्था को आश्वासन देते समय इस शब्द का प्रयोग किया था कि उसका भाई फिर से जीवित हो जाएगा। उसने कहा, “पुनरुत्थान और जीवन मैं हूँ” (11:25)।

हम जीवन से कम किसी भी चीज़ से संतुष्ट नहीं हो सकते हैं — यहाँ पूर्ण, जीवंत और खुशहाल जीवन, वहाँ अनंत जीवन। सुलैमान यही खोज रहा था, जैसा कि सभोपदेशक की पुस्तक में दर्ज है। लेकिन सुलैमान यह नहीं समझ पाया कि “सूर्य के नीचे,” अर्थात् समय और अर्थ के इस संसार में उसे सारे उत्तर नहीं मिल सकते।

सुलैमान के कई दुखद विलापों में से एक था : “उसने सब कुछ ऐसा बनाया कि अपने अपने समय [उचित समय] पर वे सुन्दर होते हैं; फिर उसने मनुष्यों के मन में अनादि–अनन्त काल का ज्ञान उत्पन्न किया है” (सभोपदेशक 3:11)। सुलैमान को मृत्यु का विचार सता रहा था। वह जीवन चाहता था — भरपूर जीवन, हमेशा का जीवन। उसने पाया कि यह दुनिया सुख और सुविधाएं प्रदान कर सकती है लेकिन संतुष्ट नहीं कर सकती, जीवन नहीं प्रदान कर सकती।

जीवन परमेश्वर का एकाधिकार है। यदि हम यहाँ पूर्ण जीवन जीना और वहां “अवर्णनीय आनंद और महिमा से भरपूर” नया एवं अधिक रोमांचक जीवन जीना चाहते हैं, तो हमें मसीह के पास आना जरूरी है।

एकमात्र मार्ग। एकमात्र सत्य। एकमात्र जीवन। यह प्रस्ताव मिलापवाले तम्बू के तीन प्रवेश द्वारों से मेल खाता है। सबसे पहले एक पापी पहले द्वार पर आता है, चौड़ा और खुला द्वार, लोगों को अंदर आने का निमंत्रण देने वाला द्वार। यह मार्ग सीधा वेदी और हौद की ओर जाता था, जहाँ पाप से मुक्ति और परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप है। फिर अगला द्वार है, चौड़ाई में पहले फाटक से आधा और ऊँचाई में उससे दुगुना। बहुत सारे लोग इस द्वार को पार नहीं कर पाए, लेकिन जो लोग कर पाए, वे उस पवित्र स्थान में प्रवेश कर पाए और सत्य की उपस्थिति में खड़े हुए — रौशनी देनेवाला दीपक, संगति देनेवाली भेंट की रोटियों की मेज, मध्यस्थता को दर्शानेदेने वाली सुनहरी वेदी — ये सब ऐसे बड़े सत्य हैं जो उन लोगों की समझ से परे है जो कभी अपने उद्धार पाने के शुरुआती कदम से आगे नहीं बढ़ पाए हैं। इन सबसे परे, एक पर्दा था, जो अतिपवित्र स्थान की ओर ले जाता था, जहाँ बहुत कम लोग प्रवेश कर सकते थे। वहाँ जीवन का रहस्य था, प्रायश्चित्त के सिंहासन पर करूब की छाया थी, हमेशा छिड़के गए लहू से सन्न; मन्ना के बर्तन के साथ सन्दूक, व्यवस्था की पट्टियाएँ, कलियों, फूलों और बादाम के साथ हारून की छड़ी थी जो मसीह की गहरी बातों को और इन सबसे बढ़कर, परमेश्वर की महिमा अथवा बादल को दिखाते हैं; जिसमें परमेश्वर स्वयं वास करता है।

C. अन्य आदेश (14:7-15)

यीशु ने एक और आज्ञा एवं एक और आगमन की बात कही है। अब वह फिलिप्पुस को जवाब देते हुए एक और आदेश की बात करता है। हालाँकि, यीशु के ये चेले, यीशु के अचानक से चले जाने के उसके शब्दों के अर्थ को समझने का संघर्ष कर रहे थे, फिर भी वे इसे समझ नहीं पाए। वे हमारे ही जैसे थे।

1. अनुरोध (14:7-8)

प्रभु ने अभी कहा था, “यदि तुम ने मुझे जाना होता, तो मेरे पिता को भी जानते; और अब उसे जानते हो, और उसे देखा भी है” (14:7)। दूसरे शब्दों में, यदि चेले वास्तव में उसे जानते तो वे प्रभु से यह नहीं पूछते कि वह कहाँ जा रहा है या वहाँ कैसे पहुँचेगा। वह स्वयं पिता का पूर्ण प्रकाशन था।

प्रभु ने कई बार अपने चेलों को अपने पिता के बारे में बताया था। उसे परमेश्वर के लिए इस नए नाम का उपयोग करने में खुशी हुई। पूरे पुराने नियम में, परमेश्वर को पिता के रूप में शायद ही कहा गया है। परमेश्वर के लिए यह प्यारा नाम वास्तव में प्रभु का प्रकाशन था, और यह आश्चर्यजनक रूप से राहतदायक है। परमेश्वर केवल एलोहिम, सृष्टि का अद्भुत परमेश्वर, उद्देश्य में सर्वज्ञानी, शक्ति में सर्वशक्तिमान, व्यक्तित्व में सर्वव्यापी नहीं है; वह केवल यहोवा, वाचा का परमेश्वर, बुद्धिमान और प्रेमी, अपनी मांगों में सख्त नहीं है; न ही वह केवल अडोनाई, आज्ञा का परमेश्वर, संप्रभु परमेश्वर और ब्रह्मांड का मालिक है, जिसका आज्ञापालन करना जरुरी है। वह एक पिता, शांति का परमेश्वर, करूणा का परमेश्वर है, जिसके पास एक घर और एक परिवार है। प्रभु ने इस नाम का उपयोग परमेश्वर के लिए बार-बार किया। यूहन्ना को यह कितनी अच्छी तरह याद था! उसके सुसमाचार में “पिता” या इससे मिलने जुलने वाले शब्द “मेरे पिता” 156 बार आते हैं।

उसने कहा, यीशु ने उनके समक्ष अपने पिता को प्रकट किया। फिलिप्पुस की समझ से परे था यह सब। उसने कहा, “फिलिप्पुस ने उससे कहा, हे प्रभु, पिता को हमें दिखा दे, यही हमारे लिये बहुत है” (14:8)। उसने यह नहीं समझा कि यीशु ने उन्हें पहले से ही पिता को दिखा दिया है।

थोमा परमेश्वर के प्रति केवल आत्मिक दृष्टिकोण से ही संतुष्ट नहीं था — वह नहीं दिखने वाले मार्ग के बजाय, कुछ ऐसा चाहता था जो दिखे या सामने हो। फिलिप्पुस परमेश्वर की केवल आत्मिक समझ से संतुष्ट नहीं था — वह नहीं दिखने वाले व्यक्ति के बजाय, कुछ ऐसा चाहता था जो उसे दिखे या सामने हो।

दिखने या छुए जा सकने वाले के प्रति तृष्णा सब रीतिपूर्ण धर्मों में होती है। मक्का की तीर्थयात्रा, गंगा में स्नान, रोम में पीलातुस की सीढ़ियों पर नंगे घुटनों के बल रेंगना — ये सब दिखनेवाला है; प्रार्थना करने के लिए सामने एक रूप या कुंवारी मरियम की मूरत, या एक क्रूस, या कुछ मोमबत्तियाँ रखना या बड़े समारोह को देखना — ये सब दृश्यमान हैं। पुराने नियम के धर्म का भी यही सार था, जिसे अब मसीह में समाप्त कर दिया गया है। ऐसी सभी लालसाएँ गलत हैं। परमेश्वर ने उनमें से कुछ को पुराने नियम के अनुष्ठानों में, ईश्वरीय प्रकाशन की "छोटी चित्र पुस्तिका" के रूप में शामिल किया। अन्य रीतियों की उसने निंदा की, विशेषकर मूर्तिपूजा की, जिसे दुष्टात्माओं के धर्म की अभिव्यक्ति कहा। पिता के बारे में और प्रकाशन की मांग करने के लिए प्रभु ने तुरंत फिलिप्पुस को फटकार लगाई।

2. उत्तर (14:9-11)

हमें सत्य बताया गया है (14:9) : "यीशु ने उससे कहा, हे फिलिप्पुस, मैं इतने दिन से तुम्हारे साथ हूँ, और क्या तू मुझे नहीं जानता? जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है। तू क्यों कहता है कि पिता को हमें दिखा?" दूसरे शब्दों में, यीशु ने फिलिप्पुस से कहा कि उसके और परमेश्वर के बीच कोई अंतर नहीं है। वह देहधारी परमेश्वर है।

परमेश्वर के बारे में हमारी एकमात्र धारणा यह है कि हम अपने व्यक्तित्व के गुणों को लेते हैं और उन्हें अनंतता का रूप दे देते हैं। उदाहरण के लिए, हम हमारी सोच की क्षमता लेते हैं, उसे अनंतता का रूप देते हैं और परमेश्वर की कल्पना सर्वज्ञानी, सब कुछ जाननेवाले एवं सर्व बुद्धिमान के रूप में करते हैं। हम अपनी महसूस करने और प्यार करने की क्षमता लेते हैं, उसे अनंतता का रूप देते हैं, और परमेश्वर को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखते हैं जो सबसे प्रेम करता है। हम इच्छा करने और उसे पूरा करने की अपनी क्षमता को लेते हैं, उसे अनंतता का रूप देते हैं, और परमेश्वर को सर्वशक्तिमान, सब कुछ कर सकनेवाले, अपनी पूर्ण इच्छा को लागू करने में सक्षम मानते हैं। हम अपने नैतिक स्वभाव को लेते हैं और परमेश्वर को पवित्र मानते हैं। निस्संदेह, इस विषय में समस्या यह है कि हम सब पतित प्राणी हैं। इसलिए, जब हम पतित मनुष्य के व्यक्तित्व को अनंतता का रूप देते हैं, तो हमें परमेश्वर की एक ऐसी धारणा मिलती है, वह भी हमारी तरह टेढ़ा-मेढ़ा हो सकता है।

जब यीशु आया, तो परमेश्वर ने जगत को सिद्ध मनुष्य दिया। हम उसके व्यक्तित्व को अनंतता का रूप दे सकते हैं, और परमेश्वर वैसा ही है। वह यीशु की तरह है। ऐसा कहा जा सकता है कि यीशु ही केंद्रीकृत परमेश्वर है। "हे फिलिप्पुस, मैं इतने दिन से तुम्हारे साथ हूँ, और क्या तू मुझे नहीं जानता?"

यहाँ केवल सत्य को कहा ही नहीं गया, सत्य का समर्थन भी किया गया (14:10-11) : "क्या तू विश्वास नहीं करता कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझमें है? ये बातें जो मैं तुमसे कहता हूँ, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझमें रहकर अपने काम करता है। मेरा विश्वास करो कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझमें है; नहीं तो कामों ही के कारण मेरा विश्वास करो।" यीशु ने फिलिप्पुस से कहा कि उसने जो कहा वह ठीक वही था जो पिता ने कहा था, न उससे अधिक, न कम; उसने जो किया वह ठीक वही था जो पिता ने किया था, न उससे अधिक, न कम; वह जो था वह ठीक वही था जो पिता था। दूसरे शब्दों में, उसके पापरहित एवं पूर्ण मनुष्यत्व के द्वारा चेले परमेश्वर को देख सकते थे। वे पुत्र में पिता के कार्य को देख सकते थे। वे जान सकते थे कि पिता कैसा था क्योंकि वे जानते थे

कि यीशु कैसा है। वे यीशु की हर बात में पिता को सुन सकते थे। वे यीशु के हर काम में पिता को देख सकते थे। वे पिता को जान सके क्योंकि वे पुत्र को जानते थे। यीशु जो था, वही परमेश्वर था। वह पिता में था; पिता उसमें था। यदि उन्हें इस धारणा से कोई परेशानी थी, तो जरुरी था कि उन्हें उसके आचरण से संतुष्ट होना और उसके कार्यों के कारण उस पर विश्वास करना चाहिए। उसके कार्य प्रतिदिन, पल-पल, स्थिति-दर-स्थिति इसी सत्य का प्रदर्शन थे।

3. परिणाम (14:12-15)

प्रभु यह सब अपने और अपने पिता के दायरे तक ही रखना नहीं चाहता था। वह इसे अपने और हमारे दायरे में भी लाना चाहता था। प्रभु यीशु परमेश्वर के रूप में मेरे लिए वैसा ही बनना चाहता है जैसा उसने मनुष्य के रूप में पिता को परमेश्वर के रूप में अपने लिए बनने दिया था। इन अगले कुछ पदों के पीछे यही सच्चाई है।

वह इसे सबसे पहले मसीही जीवन के संदर्भ में समझाता है (14:12-14)। उसमें जो हमारा नया जीवन है वह हमारे प्रभावशाली व्यवहार में दिखाई देगा (14:12) : "मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूँ वह भी करेगा, वरन् इनसे भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ।" प्रेरितों ने इन शब्दों को पिन्तेकुस्त के दिन सच साबित किया, जब तीन हजार लोगों के दिल बदले। प्रभु कभी-कभार ही फ़िलिस्तीन की सीमाओं से बाहर गया, परन्तु वे हर जगह वचन का प्रचार करने गए (प्रेरितों 8:4)। पौलुस रोम की कलीसिया के बारे में कह सकता है, "तुम्हारे विश्वास की चर्चा सारे जगत में हो रही है" (रोमियों 1:8)।

इतना ही नहीं, "बड़े काम" प्रकृति में आत्मिक थे। किसी अंधे व्यक्ति की आँखें खोलना एक चमत्कार है; उसकी पाप से अंधी आत्मा की आँखें खोलना एक बड़ा चमत्कार है ताकि वह यीशु में सुंदरता देख सके। किसी व्यक्ति को कोढ़ से मुक्त करना एक चमत्कार है; किसी पापी को पाप से मुक्त करना उससे भी बड़ा चमत्कार है ताकि उसका हृदय और जीवन दोनों शुद्ध हो जाएँ। बहरे व्यक्ति के कान को चंगा करना एक चमत्कार है; सुसमाचार को नहीं सुन सकनेवाले व्यक्ति का सुसमाचार सुनना और उस पर ध्यान देना बड़ा चमत्कार है। किसी को मरे हुओं में से जिलाना एक चमत्कार है; अपराधों और पापों में मरे किसी व्यक्ति को अनन्त जीवन देना एक बड़ा चमत्कार है।

मसीह में हमारा यह नया जीवन हमारी प्रभावशाली प्रार्थना (14:13-14) में भी दिखाई देता है : "जो कुछ तुम मेरे नाम से माँगोगे, वही मैं करूँगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो। यदि तुम मुझ से मेरे नाम से कुछ माँगोगे, तो मैं उसे करूँगा।" निस्संदेह, शर्तपूर्ण वाक्यांश है, "मेरे नाम से।" हम उसके नाम से मेल न खानेवाली चीजें नहीं मांग सकते, जो उसके नाम का प्रतिनिधित्व नहीं करतीं, और उससे ऐसी मांगें स्वीकार करने की अपेक्षा नहीं कर सकते। यीशु के नाम पर प्रार्थना पिता को महिमा दिलाने के प्रभु के अपरिवर्तनीय उद्देश्य के अनुरूप होनी चाहिए। हमारे आराम और सुविधा के लिए नहीं, बल्कि उसके नाम से की जाने वाली प्रार्थना का उद्देश्य यही होना चाहिए। स्वयं की इच्छाओं से भरी प्रार्थना करना और अंत में "यीशु के नाम में" रूपी फार्मूला जोड़ने से हम प्रभु से सकारात्मक प्रतिक्रिया की उम्मीद नहीं कर सकते। सुसमाचार का अध्ययन करके देखें कि यीशु ने किन चीज़ों के लिए प्रार्थना की। उन कारणों को खोजें कि उसने इन चीज़ों के लिए प्रार्थना क्यों की। तब हमें उसके नाम पर प्रार्थना करने की बेहतर समझ प्राप्त होगी।

इस नई आज्ञा को मसीही प्रेम के संदर्भ में (14:15) भी कहा गया है : "यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।" यीशु की शिक्षा में प्रेम सदैव प्रथम और अंतिम, आरंभ और अंत है। यदि हम उससे प्रेम

करते हैं, तो हम वही करेंगे जो वह कहेगा। हम उसे खुश करना चाहेंगे। उसकी छोटी सी इच्छा भी हमारा कानून होगी। यही प्रेम का सार है। हेनरी ड्रमंड ने दी ग्रेटेस्ट थिंग इन द वर्ल्ड नामक एक प्रसिद्ध लघु-पुस्तिका लिखी जिसमें उसने बताया कि प्रेम क्या करता है। प्रेम छोटी चीज़ों को दूर कर देता है और जिस हृदय में वह रहता है, उसमें सर्वोच्च स्थान प्राप्त करता है।

ऐसे प्रेम का लक्ष्य यीशु है। “यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।” मसीहियत कोई पंथ नहीं है, यह जीवित मसीह है; यह केवल उपदेशों और सिद्धांतों का पालन करना नहीं है, बल्कि यह एक व्यक्ति का पालन करना है; यह मात्र नियम नहीं है, यह सबसे दयालु, सबसे उदार, सबसे शक्तिशाली और सृष्टि के सबसे प्रिय व्यक्ति के लिए प्रेम है। मसीहियत धर्मवैज्ञानिक प्रस्ताव नहीं है, यह यीशु से प्रेम करने का चुनाव है। बाकी सब स्वाभाविक रूप से होता चला जाता है। प्रेम में पड़े एक पुरुष को, एक स्त्री को देखो। सब कुछ प्रियतम पर केन्द्रित है: प्रियतम को कैसे खुश किया जाए, प्रियतम को बेहतर तरीके से कैसे जाना जाए, प्रियतम के बारे में दूसरों को कैसे बताया जाए, प्रियतम के साथ कैसे रहा जाए।

D. एक और सहायक (14:16-31)

प्रभु अब नए नियम की मसीहियत की एक और महान वास्तविकता, एक और सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा की ओर मुड़ता है। पवित्र आत्मा पुराने नियम के महत्वपूर्ण प्रकाशन का विषय है, जिसकी शुरुआत बाइबल के दूसरे पद से होती है। इस सुसमाचार में भी प्रभु यीशु और उसके लोगों के संबंध में पवित्र आत्मा का उल्लेख किया गया है (1:32; 3:5-8; 4:23; 6:63; 7:39)। लेकिन पवित्र आत्मा, उसके व्यक्तित्व और उसके कार्य का पूरा प्रकाशन, अपने चेलों के साथ प्रभु के इन अंतिम संदेशों में दिया गया है (14:15-17, 25-26; 15:26-27; 16:4-11, 13-15)। पृष्ठभूमि यह है कि प्रभु ने उनसे दूर जाने की एक भयंकर घोषणा कर दी है। परंतु चेलों को घबराने की जरूरत नहीं है। एक और सहायक आ रहा है।

1. सहायक की प्रतिज्ञा (14:16)

सबसे पहले हम उद्धारकर्ता की प्रतिज्ञात प्रार्थना (14:16क) देखते हैं : “मैं पिता से विनती करूँगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा” — और उसने ऐसा ही किया। वह ऊपर गया, स्वर्ग में परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा, और दस दिन बाद, पिंतेकुस्त के दिन जो पुराने नियम की भविष्यवाणी के अनुसार पूर्व निर्धारित था, पवित्र आत्मा एक नए और अनोखे तरीके से आया। वह कुछ ऐसा करने आया था जो उसने पहले कभी नहीं किया था। वह मसीह की रहस्मयी देह अर्थात् कलीसिया में विश्वासियों को बपतिस्मा देने आया था। वह एक नए दिन, एक नई शुरुआत, एक नए युग का उद्घाटन करने आया था, जो पिंतेकुस्त से कलीसिया के उठाए जाने तक कार्य करेगा, जिसकी विशेषता परमेश्वर की पवित्र आत्मा का अभूतपूर्व बपतिस्मा होगा।

हम आगे आत्मा की प्रतिज्ञात उपस्थिति पर ध्यान देते हैं (14:16ख) : “एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे।” “सहायक” (पैराक्ललीटोन) नामक यूनानी शब्द का अनुवाद 1 यूहन्ना 2:1 में “वकील” के रूप में किया गया है। इसका अर्थ है सुरक्षा या सलाह के लिए “साथ बुलाया गया व्यक्ति”। यह शब्द यूहन्ना के द्वारा, यूहन्ना 14:26, 15:26, 16:7, और 1 यूहन्ना 2:1 में वर्णित शब्दों में से एक है, जो केवल यहीं पाया जाता है। हम “एक और” (एलोन शब्द पर भी ध्यान देते हैं जिसका अर्थ है “समान प्रकार का दूसरा”)। यीशु एक सहायक था। पवित्र आत्मा एक और सहायक था, उसी प्रकार का एक और।

प्रभु यीशु के साथ सांसारिक संगति समाप्त होने वाली थी। पवित्र आत्मा (प्रभु का दूसरा प्रकार) हमेशा हमारे साथ रहने के लिए आएगा। "रहे" के लिए मेनो शब्द का उपयोग किया गया है, ऐया शब्द जिसका उपयोग प्रभु ने पिता के साथ अपने रिश्ते का वर्णन करने के लिए किया था ("पिता मुझमें रहकर अपने काम करता है," 14:10)। सहायक के रूप में पवित्र आत्मा हमारे साथ स्थायी निवास करता है। पवित्र आत्मा, मसीह के व्यक्तित्व में, उसके चेलों के साथ रहा था; अब उन्हें अपने जीवन में उसकी स्थायी उपस्थिति के प्रति सचेत रहना था।

2. सहायक का व्यक्तित्व (14:17-31)

ये सब प्रारंभिक निर्देश थे। अब प्रभु और विस्तार से बताता है कि उसके कहने का क्या मतलब है। सबसे पहले, वह परमेश्वर के तीसरे व्यक्ति की स्थाई उपस्थिति की वास्तविकता (14:17) का वर्णन करता है।

एक बड़ी असंभावना (14:17क) : "सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है; तुम उसे जानते हो।" संसार का सिद्धांत है, "देखकर विश्वास करना।" यह भौतिकवादी सिद्धांत नया जन्म नहीं पाए हुए व्यक्तियों के लिए परमेश्वर के आत्मा को जानना या प्राप्त करना असंभव बना देता है। वह वास्तविक है, परंतु अदृश्य है।

संसार के प्रति पवित्र आत्मा के कार्य को दूसरी जगह पर भी बताया गया है। वह खोए हुओं के प्रति निरुत्तर करने (16:8-9), नया जन्म देने (3:5-6), रोकने (2 थिस्सलुनीकियों 2:6-7) की सेवकाई भी करता है। लेकिन अधिकांश दुनिया उससे अंजान है। संसार उसे ग्रहण नहीं कर सकता।

एक महान आरोपण (14:17ख,ग) : "तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा।" पिंतेकुस्त पर पवित्र आत्मा ने विश्वास करने वालों को केवल बपतिस्मा देने का कार्य ही शुरू नहीं किया, जिससे विश्वासी मसीह में आता और उसकी देह का अंग बनता है, बल्कि उसने एक निवास का कार्य भी शुरू किया, जिसके द्वारा वह मसीह को विश्वासियों में आकर बसाने लगता है। पवित्र आत्मा एक विश्वासी के दिल और जीवन में स्थाई निवास करने के लिए आता है। इस प्रकार, विश्वासी का शरीर पवित्र आत्मा का मंदिर बन जाता है, जो एक महत्वपूर्ण सच है। जब हम इस सच को केवल एक सिद्धांत के रूप में लेते हैं, तो इसकी विशालता की सराहना नहीं कर पाते हैं। सोचें, त्रिएक परमेश्वर के एक सदस्य ने हमारे हृदयों में निवास करने के लिए स्वयं को सीमित कर दिया! हमारे पास इसके लिए प्रभु का वचन है कि ये हमारे विश्वास का अभिन्न अंग हैं। ये सितारों से भी अधिक स्थाई वास्तविकताएँ हैं।

अब पवित्र आत्मा की स्थाई उपस्थिति के कारण (14:18-31) आते हैं। दो आधारभूत हैं : हमें प्रभु की उपस्थिति प्रदान करना और हमें प्रभु की प्रतिज्ञा प्रदान करना (14:25-31)।

हमें प्रभु की स्थाई उपस्थिति की आवश्यकता है (14:18-24) जिससे हम इस सरल लेकिन उत्कृष्ट कारण को जानते हैं कि मसीहियत ही मसीह है। मसीही जीवन जी सकने वाला एकमात्र व्यक्ति मसीह है। प्रभु हमसे केवल असफलता की ही अपेक्षा रख सकता है। साढ़े तैंतीस सालों तक प्रभु यीशु ने पृथ्वी पर अलौकिक जीवन व्यतीत किया। देहधारी बनकर, उसने अपने पिता को परमेश्वर के रूप में वास करने वाले पवित्र आत्मा के माध्यम से अपना जीवन जीने की अनुमति दी। अब हम नया जीवन पाए स्त्रियों और पुरुषों, लड़कों और लड़कियों के रूप में, उसे परमेश्वर के रूप में वास करने वाले पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे अंदर अपना जीवन जीने की अनुमति देनी है। पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर स्वयं को हमारे लिए उपलब्ध कराता है। यीशु, परमेश्वर के रूप में जो कुछ भी है,

वह सब पवित्र आत्मा के द्वारा उस व्यक्ति के अधीन कर दिया गया है, जो परमेश्वर, पवित्र आत्मा के द्वारा सब कुछ परमेश्वर के रूप में यीशु के अधीन कर देगा। यही मसीही जीवन का सार है।

मसीही जीवन एक अलौकिक जीवन है। यह मसीह का जीवन है जो वास करने वाले पवित्र आत्मा के माध्यम से प्रत्येक विश्वासी में रहता है।

दूसरे शब्दों में, उसका जीवन हमारा जीवन बनना है (14:18-20)। इसे तीन प्रकार से बताया गया है। सबसे पहले, शांति का एक वचन (14:18) : "मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोड़ूँगा; मैं तुम्हारे पास आता हूँ।" "अनाथ" नामक शब्द इस जगह के अलावा केवल याकूब 1:27 में आता है, जहाँ वह सचमुच अनाथों की बात करता है। प्रभु के दूर जाने का समाचार सुनकर चेले दुःखी हुए। वे स्वयं को अनाथ महसूस करने लगे। वे असहाय, निराश, हतप्रभ, भयभीत, हारे हुए महसूस कर रहे थे। यीशु ने कहा, "मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोड़ूँगा ; मैं तुम्हारे पास आता हूँ।" यहाँ "उसके आने की प्रतिज्ञा है जो उसकी अनुपस्थिति की समकालीन है।" सच है कि वह शारीरिक रूप से उनसे दूर जा रहा है, लेकिन आत्मिक रूप से, एक नए तरीके से वह उनके साथ रहेगा।

यहाँ समर्पण का एक वचन है (14:19) : "और थोड़ी देर रह गई है कि फिर संसार मुझे न देखेगा, परन्तु तुम मुझे देखोगे; इसलिये कि मैं जीवित हूँ, तुम भी जीवित रहोगे।" संसार ने उसे आखिरी बार तब देखा, जब वह क्रूस पर चढ़ाया गया और उसकी कब्र को मुहरबंद कर दिया गया। फिर इसने उसे कभी नहीं देखा। चेलों ने उसे पुनरुत्थान के बाद कई अवसरों पर देखा। लेकिन यह अपनों के प्रति प्रभु के समर्पण को समाप्त नहीं करता : "तुम मुझे देखोगे।" वर्तमान काल का प्रयोग निरंतर देखते रहने को दिखाता है; इसलिए इसका अर्थ पुनरुत्थान की उपस्थिति से कहीं अधिक है, जो उसके स्वर्गारोहण के साथ समाप्त हुई। उस पर विश्वास करने वाले लोग, उसे विश्वास की आंखों से तब तक देखते रहेंगे, जब तक, जैसा यूहन्ना एक दूसरी जगह पर कहता है, इस जीवन की अस्थायी यात्रा समाप्त न हो जाए, तब हम "उसका मुँह देखेंगे" (प्रकाशितवाक्य 22:4) ।

उसने आगे कहा, "इसलिये कि मैं जीवित हूँ, तुम भी जीवित रहोगे।" जब मृत्यु उसके सामने खड़ी थी, उसके बाहरी खतरे के प्रति एकदम उदासीन होकर, यीशु ने साहसपूर्वक कहा, "मैं जीवित हूँ।" उसने अमर जीवन का संकेत देते हुए, कालातीत वर्तमान काल का उपयोग किया। मृत्यु उससे वह नहीं छीन सकी। वह मरकर भी जीवित रहा। कोई भी मनुष्य उससे उसका जीवन नहीं छीन सकता। पूरी प्रक्रिया पर उनका पूरा नियंत्रण था। इस संसार से वह व्यवस्थित रूप से बाहर गया और जब उसका अधोलोक में कार्य पूरा हो गया तो वह अपने हाथ में मृत्यु की कुंजियाँ लेकर पुनरुत्थान की सामर्थ्य के साथ वापस आया।

हालाँकि वह क्रूस से कुछ ही दूरी पर खड़ा था, ईश्वरीय आत्मविश्वास में उसने अपने प्रियों को आश्वस्त किया कि वे उसी जीवन का हिस्सा बनने वाले थे जो उसने जीया था। हम जीवित हैं क्योंकि वह जीवित है। जब तक वह जीवित रहेगा, हम जीवित रहेंगे। हम उसी के जीवन को जीते हैं। ये सारा समर्पण हमें पवित्र आत्मा के द्वारा प्रदान किया गया है।

यहाँ समझ का एक शब्द भी है (14:20) : "उस दिन तुम जानोगे कि मैं अपने पिता में हूँ, और तुम मुझमें, और मैं तुममें।" पिन्तेकुस्त के दिन यह रहस्यमय रिश्ता शुरू हुआ। जब ऊपरी कक्ष से ये शब्द बोले गए थे तो चेले इसके सभी पहलुओं को नहीं समझ पाए। पिन्तेकुस्त के दिन वास्तविकता उन पर आ उतरी; बाद में प्रेरित पौलुस ने अपनी पत्रियों, विशेष रूप से इफिसियों, में इसके भेद को प्रकट करना शुरू किया।

प्रभु यीशु अपने पिता में है; हम उसमें हैं; वह हममें है। व्यक्तियों और व्यक्तित्वों का यह अद्भुत अंतर्संबंध पूरी तरह से एक विश्वासी की अनंत सुरक्षा और हमारे जीवन में उसके रहने के द्वारा हमारे जीवन के परिवर्तन की निश्चितता प्रदान करता है।

उसका जीवन हमारा बनना है। इसके अलावा, उसका प्रेम हमारा प्रेम बनना है (14:21) : "जिसके पास मेरी आज्ञाएँ हैं और वह उन्हें मानता है, वही मुझसे प्रेम रखता है; और जो मुझसे प्रेम रखता है उससे मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं उससे प्रेम रखूँगा और अपने आपको उस पर प्रगट करूँगा।" एक रोमांटिक उपन्यासकार की कला हमेशा तनाव पैदा करती है, और यह अक्सर "अनन्त त्रिएक" नामक अभिव्यक्ति के द्वारा उत्पन्न की जाती है। उसके उपन्यास में, या तो एक नायक होता है जिसे दो महिलाएँ चाहती हैं, या एक नायिका होती है जिसे दो पुरुष चाहते हैं। प्रभु हमारा परिचय एक सच्चे अनंत त्रिएक से कराता है, जिसमें कोई तनाव नहीं है, केवल महिमामय एकता है। यीशु के लिए हमारा प्रेम है, हमारे लिए पिता का प्रेम है, और हमारे लिए यीशु का प्रेम है। तीनों प्रेम परस्पर एक दूसरे पर निर्भर हैं और सभी मिलजुल कर काम करते हैं।

प्रेम शीघ्रता से पता लगा लेता है कि उसके प्रिय को क्या पसंद है। प्रभु कहता कि उसकी आज्ञाओं के प्रति हमारा व्यवहार प्रेम की निश्चित परीक्षा है। यह मात्र भावना से बढ़कर है, यह "यीशु, मैं तुझसे प्रेम करता हूँ, तू मेरा है" जैसे गाने से कहीं अधिक है। यह प्रेम चरित्र और आचरण के द्वारा प्रमाणित होता है। इसका स्तर बहुत ऊँचा है : यीशु ने कहा, "जो मुझसे प्रेम रखता है उससे मेरा पिता प्रेम रखेगा।" परमेश्वर का दिल उन लोगों के लिए विशेष रूप से उमड़ता है जो उसके प्रिय पुत्र से प्रेम करते हैं। यीशु कहता है, "मैं उससे प्रेम रखूँगा और अपने आपको उस पर प्रगट करूँगा।" "प्रगट" के लिए उपयुक्त शब्द एम्फानिसो है, जिसमें किसी चीज़ को स्पष्ट अथवा विशिष्ट रूप में प्रस्तुत करने अर्थात् छिपी हुई उपस्थिति को प्रकट करने का विचार मौजूद है। यह शब्द सबसे पहले उन पवित्र लोगों के लिए प्रयोग किया गया है जो यीशु मसीह की मृत्यु के दौरान अपनी कब्रों से बाहर आए और यरूशलेम में कई लोगों के सामने प्रकट हुए (मत्ती 27:53)। प्रभु ने वादा किया है कि वह इस प्रेम के प्रतिफल के रूप में अपना प्रेम देंगे जिसमें वह स्वयं आत्मिक रूप से उनके साथ होंगे और अपनों के सामने प्रकट होंगे। प्रभु ने वादा किया है कि वह अपने इस प्रेम का प्रतिफल देगा, अर्थात् उसका वह प्रेम जो अपनी आत्मिक दृष्टि के साथ उसका अपना प्रकटीकरण है। जैसा कि क्लेयरवॉक्स के बर्नार्ड कहता है :

लेकिन उनका क्या जिन्हें वह मिलता है? ओह, यह
न भाषा, न ही कलम बखान कर सकती है :
यीशु का प्रेम, यह है ऐसा
उसके प्रियों के आलावा, कोई नहीं जानता।

और, उसके जैसी विश्वासयोग्यता हमारे पास भी हो (14:22-24)। यह भारी भरकम बात थी — अपने आत्मिक विकास के इस चरण में, यह सब प्रभु के भ्रमित चेलों की समझ के परे था। वे इन महत्वपूर्ण सत्यों को समझने के लिए संघर्ष कर रहे थे। यूहन्ना को याद था कि कैसे यहूदा ने एक प्रश्न पूछा था (14:22)। वह सावधानी बरतते हुए यह भी जोड़ता है, "जो इस्करियोती न था।" क्या यह यहूदा प्रेरितीय क्रम में निचली श्रेणी का था? उसका उल्लेख हमेशा चार समूहों में से अंतिम में किया जाता है। अलेक्जेंडर मैकलारेन का मानना है कि गुरु के प्रति उनकी आत्मिक निकटता के आधार पर उन्हें सूचीबद्ध किया गया था। (पतरस, याकूब, यूहन्ना और अन्द्रियास

हमेशा पहले समूह में दिखाई देते हैं। यहूदा इस्करियोती हमेशा अंतिम समूह में, सबके अंत में दर्शाया जाता है) यहूदा के लिए यह दुःख का कारण रहा होगा कि उसका नाम पकड़वाने वाले यहूदा के समान है।

उसने कहा, "हे प्रभु, क्या हुआ कि तू अपने आप को हम पर प्रगट करना चाहता है और संसार पर नहीं?" उसने प्रकट होने के बारे कहे गए प्रभु के शब्दों को समझ लिया था। उसने सही निष्कर्ष निकाला कि वह और अन्य लोग प्रभु से इतना प्यार करते थे कि वे वादे के पात्र बन सकें। वह यह भी समझ गया था कि प्रभु ने स्वयं का सार्वजनिक प्रदर्शन नहीं करने के बारे में कहा था और यह बात उसे परेशान कर रही थी। प्रभु के विजयी प्रवेश को कुछ ही दिन हुए थे, कुछ ऐसा जिसने प्रेरितों को यह महसूस कराया होगा कि आखिरकार कार्य सही दिशा में आगे बढ़ने लगे हैं। अब प्रश्न यह था, "इस परिवर्तन को लाने अथवा इसकी गोपनीयता की और वापिस जाने की, बातें छुपाने क्या जरुरत आ गई?"

थोमा, फिलिप्पुस और अब यहूदा का यह प्रश्न, प्रभु की आत्मा पर ठंडे पानी की तरह था। यह उनके साथ, उसकी आखिरी रात थी। कल वह मारा जाएगा। उन्हें बहुत कम बातें समझ आई थीं। वे बस कुछ दिखने वाली चमक या मसीहाई महिमा का प्रदर्शन चाहते थे जो डगमगाती भीड़ को चकाचौंध कर दे और महासभा को होश में ले आए।

प्रभु धीरजवन्त था। उसने यहूदा के प्रश्न का उत्तर दिया, परन्तु सीधे तौर पर नहीं। वह जानता था कि कुछ भी होने से पहले पिन्तेकुस्त का आना अवश्य था। लेकिन यहाँ वह पिन्तेकुस्त के बाद के प्रकाशन की नींव रख सकता था।

इन समस्याओं को हल करने में, प्रभु ने सबसे पहले चेलों के सामने एक महत्वपूर्ण अवधारणा रखी (14:23) : "यीशु ने उसको उत्तर दिया, यदि कोई मुझ से प्रेम रखेगा तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएँगे और उसके साथ वास करेंगे।" यह पवित्रशास्त्र का एक और अनुच्छेद है जो हर शब्द या वाक्यांश पर जोर देने में मदद करता है। (पवित्रशास्त्र के निम्नलिखित उद्धरणों में तिरछे अक्षरों को जोड़ा गया है)।

यीशु कहता है, "हम उसके पास आएँगे और उसके साथ वास करेंगे।" पिता आएगा। पुत्र आएगा। एक पल के लिए सोचें कि इसका क्या मतलब है। हमारे साथ रहना, हमारे करीब रहना, जहाँ हम रहते हैं वहाँ रहना। वे सम्पूर्ण ब्रह्मांड के दो सबसे शक्तिशाली, प्रेमी, बुद्धिमान और अद्भुत व्यक्ति हैं। वे वस्तु, समय और स्थान के सभी कारकों पर नियंत्रण रखते हैं। वे अनंत आराधना, श्रद्धांजलि, सेवा और गीतों के योग्य हैं। फिर भी उन्होंने हमारे साथ अपना निवास करने का निर्णय लिया।

यीशु कहता है, "हम उसके पास आएँगे और उसके साथ वास करेंगे।" संदेह की कोई गुंजाइश नहीं है। यह पिता और पुत्र का दृढ़ निर्णय है, समय की शुरुआत से पहले तैयार की गई एक योजना का हिस्सा — ठीक उसी प्रकार का निर्णय जैसा उन्होंने स्वर्गदूतों, लाखों करोड़ों आकाशगंगाओं को बनाने या नीचे झुककर मिट्टी से आदम को रचने का निर्णय लिया था। हम आएँगे। और जब पिता और पुत्र कहते हैं, "हम आएँगे," तो वे वही कहते हैं जो वे करेंगे और जो वे करेंगे, वे वही कहते हैं। स्वर्ग, पृथ्वी या नरक की कोई भी शक्ति उन्हें वह करने से नहीं रोक सकती जो उन्होंने करने का निश्चय किया है।

यीशु कहता है, "हम उसके पास आएँगे और उसके साथ वास करेंगे।" यह एक प्रकार के चलन को दिखाता है। माना कि परमेश्वर सर्वव्यापी है, लेकिन फिर भी वह हमारे अंतरिक्ष-वस्तु-समय इत्यादि के अनुसार खुद को समायोजित करता है और समय-समय पर अपने सर्वव्यापी स्वाभाव के साथ साथ, किसी भी तरह का बदलाव

किए बिना खुद को एक विशेष स्थान पर रखता है। उसने ऐसा पुराने नियम में किया था जब वह जलती हुई झाड़ी में मूसा से मिला था। वह महिमामय बादल में इस्त्राएलियों के आगे आगे चला। वह पवित्रस्थान में करूबों के बीच प्रायश्चित के ढकने पर रहा। अब, यीशु कहता है, वह और पिता आएँगे और हमारे साथ वास करेंगे। कल्पना करें कि हम हर दिन, हर क्षण यीशु और पिता की संगति में जी रहे हैं।

यीशु कहता है, "हम उसके पास आएँगे और उसके साथ वास करेंगे।" किसके साथ? उस व्यक्ति के साथ जो यीशु से प्रेम करता है। परमेश्वर इस संसार के ऊँचे और ताकतवर लोगों से, राजकुमारों और राष्ट्रपतियों से, अमीरों और प्रसिद्ध लोगों से, विद्वानों और महानों से प्रभावित नहीं होता। हालाँकि, वह उस पुरुष, महिला, लड़के या लड़की की ओर अवश्य आकर्षित होता है जो उससे प्रेम करता है। इस ग्रह पर जितने भी लोग हैं, अगर परमेश्वर चाहे तो उनके साथ वास कर सकता है, लेकिन वह उन लोगों के साथ वास करता है जो यीशु से प्रेम करते हैं। ऐसा करके, वह उन्हें ब्रह्मांड का श्रेष्ठतम वर्ग बनाता है।

यीशु कहता है, "हम उसके पास आएँगे और उसके साथ वास करेंगे।" "वास" के लिए उसी शब्द का उपयोग किया गया है जिसका अनुवाद पद 2 में "रहने के स्थान" के रूप में किया गया है। परमेश्वर ने ख़ुशी से उन सबको, आकाश में उन शानदार इमारतों को, समय और स्थान की पहुँच से परे उन भव्य महलों को खाली कर दिया कि हमारे निवास को अपना बना ले, हमारी झोपड़ियों को अपना रहने का स्थान बना ले और इस प्रकार हमारे स्थानों को अपने भवन का हिस्सा बना ले, जहाँ से वह ब्रह्मांड पर शासन करता है। कहने की जरूरत नहीं है कि यदि पिता परमेश्वर और पुत्र परमेश्वर ने हमें अपना निवास बना लिया है, तो हमें इस मानव जीवन को स्वर्ग की सुगंध के समान बदलना जरुरी है।

यहूदा को दिए गए प्रभु के उत्तर में केवल एक महत्वपूर्ण अवधारणा ही नहीं, बल्कि एक महत्वपूर्ण विरोधाभास भी है (14:24), परमेश्वर का इनकार करनेवाले संसार और परमेश्वर को प्रकट करनेवाले वचन के बीच विपरीतता : "जो मुझ से प्रेम नहीं रखता, वह मेरे वचन नहीं मानता; और जो वचन तुम सुनते हो वह मेरा नहीं वरन् पिता का है, जिसने मुझे भेजा।" इससे सिक्के का दूसरा पहलू पता चलता है। प्रेम नहीं, तो आज्ञाकारिता नहीं। प्रेम ही एकमात्र शक्ति है जो किसी व्यक्ति को प्रभु की आज्ञाओं का पालन करने के लिए आकर्षित कर सकती है; आज्ञाएँ पतित मानव स्वभाव के लिए इतनी अनजान हैं कि प्रेम के बिना पूरी नहीं की जा सकतीं। यही नहीं, प्रभु यीशु के प्रति अनाज्ञाकारिता परमेश्वर के प्रति विद्रोह करना है। यीशु ने कहा, "जो वचन तुम सुनते हो वह मेरा नहीं वरन् पिता का है।" इसलिए यीशु जो कहता है, उसे नहीं करने का अर्थ है कि हम पिता का कहा नहीं कर रहे हैं। यही मसीह का इनकार करने वाले दुनिया के सारे धर्मों को झूठा बनाता है। वे समृद्ध, शक्तिशाली, प्राचीन, दार्शनिक रूप से आकर्षक और संख्या में विशाल हो सकते हैं। परन्तु यदि वे हमारे प्रभु यीशु से, जिसकी आवाज़ परमेश्वर की आवाज़ थी, प्रेम नहीं रखते तो वे धोखेबाज और झूठ हैं।

तो फिर, ये प्रभु की स्थाई उपस्थिति के कारण हैं : हमारा जीवन उसके जैसा हो, हमारा प्रेम उसके जैसा हो, हमारी विश्वासयोग्यता उसके जैसी हो। प्रभु फिर प्रभु की भरपूर प्रतिज्ञा के परिणाम दिखाने के लिए आगे बढ़ता है (14:25-31)। सबसे पहले, वह विश्वास जगाएगा (14:25-26) : "ये बातें मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए तुमसे कहीं" (14:25)। प्रभु ने इन लोगों के सामने कई उल्लेखनीयमहत्वपूर्ण बातें प्रकट की थीं। लेकिन जो प्रश्न वे पूछ रहे थे, उससे यह स्पष्ट था कि वे कितना कम समझ पाए थे। इस स्तर पर, उन्हें और अधिक बताना कितना व्यर्थ होगा। और वह जल्द ही जाने वाला था।

उत्तर था पवित्र आत्मा। जब वह आएगा, तो प्रकाशन को पूरा करेगा और पहले से प्रकट प्रकाशन की पुष्टि करेगा : “परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा” (14:26)। प्रभु यीशु ने, अपनी सांसारिक सेवकाई के दौरान, बार-बार पुराने नियम से वचनों पर ईश्वरीय मुहर लगाई जिसे वह परमेश्वर का वचन मानता है। उसने निरंतर पुराने नियम के सब भागों को उदधृत किया जिसे उसने परमेश्वर का मौखिक प्रेरित वचन माना। उसने नए नियम की पुस्तकों (जो अभी तक लिखी नहीं गई थीं) को अपना आधिकारिक समर्थन दिया।

हम नए नियम के तीन संदर्भों में से पहले को यहाँ देख सकते हैं जिसके बारे में यीशु ने कहा था कि वह उन्हें पवित्र आत्मा की प्रत्यक्ष प्रेरणा के द्वारा दिया जाएगा। इस संदर्भ में, प्रभु ने उस बात का समर्थन किया जो अब हमारे पास सुसमाचारों में हैं (“और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा”)। लंबे जटिल प्रवचनों से भरा और कई वर्षों बाद एक अधेड़ व्यक्ति के द्वारा लिखा गया, यूहन्ना का सुसमाचार इसी का उदाहरण है। पवित्र आत्मा ने यूहन्ना की याददाश्त को ही तेज़ नहीं किया बल्कि उसे यीशु की कहानी और बातों को सटीकता के साथ लिखने में सक्षम बनाया।

इसी सन्दर्भ में, प्रभु ने भी उन बातों का समर्थन किया जो आज हमारे पास पत्रियों के रूप में है (“वह तुम्हें सब कुछ सिखाएगा”)। पवित्र आत्मा ने चेलों को उन बातों की केवल व्याख्या ही नहीं बताई जो यीशु ने कही थीं (जो उस समय उनकी समझ से परे थी), बल्कि उसने सच्चाई के नए पहलुओं को भी प्रकट किया, जो कि प्रभु की शिक्षाओं में केवल सूक्ष्म रूप में विद्यमान थे।

अतः पवित्र आत्मा विश्वास को जगाने और एक पुस्तक लिखने के लिए आ रहा था जो शेष समय के लिए परमेश्वर के लोगों हेतु नए नियम के सत्य का उद्देश्यपूर्ण और अचूक भंडार होगा। इसके अलावा, वह डर को शांत करने के लिए आ रहा था (14:27-31)। सबसे पहले, इस अध्याय के अंतिम पदों में, हमें प्रभु और उसके चेलों का दर्शन मिलता है (14:27-29)। उसने उन्हें चार चीजें प्रदान कीं। उसने उन्हें अपनी शांति दी (14:27क) : “मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूँ, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूँ; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता।” शांति (एईरेनेन) नामक शब्द यूहन्ना के सुसमाचार में छः बार आता है और हमेशा यीशु द्वारा प्रयोग किया जाता है।

उनका संसार बिखरने वाला था। जल्द ही रौंदने वालों का का झुंड आने वाला था; कुछ अविश्वसनीय घटित होने जा रहा था: यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ाया जाएगा। वे अभिभूत हो जाएँगे। यहूदा इस्करियोती पहले से ही वहाँ कहीं अँधेरे में रास्ता बना रहा था। प्रभु ने इन आशंकित लोगों से, जो अब जल्दी घटने जा रहे परिवर्तनों पर लगातार जोर देने के कारण परेशान थे, कहा, “शांति! शांति! मैं अपनी शांति भी, तुम्हें देता हूँ।” उसने तूफानी समुद्र पर उस शांति को क्रियाशील होते देखा था जब वह प्रचंड और गहरी लहरों पर चला और इन्हें शांत किया। उसकी शांति। चाहे उस से कितनी भी बड़ी मांग क्यों न की गई हो, चाहे उसके कितने भी दुर्भावनापूर्ण या शक्तिशाली शत्रु क्यों न हों, वह शांत थी।

“जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता।” दुनिया शांति की बात करती है—और युद्ध की तैयारी करती है। दुनिया में निरस्त्रीकरण के कई सम्मेलन होते हैं — परंतु वह विनाश के नए और अधिक भयानक हथियारों का आविष्कार करती है। दुनिया ऐसी शांति का वादा करती है जो वह नहीं दे सकती।

यीशु ने कहा, “तुम्हें शांति मिले।” शालोम नामक शब्द “हैलो” और “अलविदा” के लिए उपयोग किए जाने वाले पूर्वी देशों का शब्द है। लेकिन उसकी अलविदा एक नए सहायक का हैलो होगी। वह जा रहा था। उसकी शांति बनी रही। यह उसकी प्रतिज्ञा थी।

दूसरा, उसने उन्हें अपनी प्रतिज्ञा दी (14:27ख-28क) : “तुम्हारा मन व्याकुल न हो और न डरे। तुम ने सुना कि मैं ने तुम से कहा, मैं जाता हूँ, और तुम्हारे पास फिर आऊँगा।” तूफ़ान आएँगे। प्राकृतिक भय हमारे दिलों में दहशत के सिंहासन पर बैठने के लिए छटपटाएँगे। हमारा कार्य इस बात की अनुमति देना है कि मसीह की शांति क्रूर शत्रु को बाहर निकाले और स्वयं हमारे अंदर राज करे, चाहे कुछ भी हो। वह अपनी शांति की प्रतिज्ञा करता है, जो उसकी उपस्थिति से प्रबल होती है।

तीसरा, उसने उन्हें अपना दृष्टिकोण दिया (14:28ख) : “यदि तुम मुझ से प्रेम रखते, तो इस बात से आनन्दित होते कि मैं पिता के पास जाता हूँ, क्योंकि पिता मुझ से बड़ा है।”

ईश्वरत्व के भीतर एक कर्म है। तीन व्यक्ति हैं — पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा — लेकिन परमेश्वर एक है। ये तीनों व्यक्ति समान रूप से एवं अनंत परमेश्वर हैं। हम पहले व्यक्ति के रूप में पिता, दूसरे व्यक्ति के रूप में पुत्र और तीसरे व्यक्ति के रूप में पवित्र आत्मा को देखते हैं। उनमें क्रम लेकिन उनके बीच में होड़ नहीं है; स्थिति है, पर कोई श्रेष्ठ या हीन नहीं है। जब यीशु ने कहा, “मेरा पिता मुझसे बड़ा है,” तो वह ईश्वरत्व के अंदर निहित एक संबंध के बारे में बता रहा था। सीमित प्राणी असीमितता अथवा अनंतता को नहीं समझ सकता, इसलिए यदि हमें समझने में परेशानी हो रही है, तो हमें हैरान होने की जरूरत नहीं है।

जब यीशु पृथ्वी पर आया तो पिता ने उसे “भेजा” (यूहन्ना 13:16)। उसने जो कुछ भी किया, वह एक पूर्व-निर्धारित योजना के अनुसार था जिसके तहत ईश्वरत्व में दूसरा, अनिर्मित, स्वयंभू व्यक्ति, स्वेच्छा से मानव बन गया। उसने मानव शरीर धारण किया। मानवीय शर्तों पर जीवन जीया। अनूठे ढंग से स्वयं को पिता के अधीन किया। वह कभी परमेश्वर से कम या नीचा नहीं था।

उसने कहा, “मेरा पिता मुझसे बड़ा है,” इसलिए नहीं कि पिता उससे बड़ा या ऊंचे स्तर का परमेश्वर था, बल्कि इसलिए कि, मनुष्य के रूप में, उसने पिता पर निर्भरता की स्थिति ग्रहण कर ली थी। यीशु पृथ्वी पर परमेश्वर के रूप में जीने या व्यवहार करने नहीं आया था, यद्यपि वह परमेश्वर था, पर वह मनुष्य के रूप में व्यवहार करने आया था, क्योंकि वह मनुष्य था।

यीशु केवल परमेश्वर नहीं था; वह मनुष्य भी था। वह आधा परमेश्वर और आधा मनुष्य भी नहीं था। वह देहधारी परमेश्वर था, मानव और परमेश्वर के व्यक्तित्वों का एक रहस्यमय और पूर्ण मिश्रण था।

जब उसने ऊपरी कक्ष में ये शब्द कहे, तो वह क्रूसीकरण, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के के द्वारा अपने पिता के पास वापस जाने की तैयारी कर रहा था। वह युद्ध में घायल, महिमामय पुनरुत्थान के शरीर को वापस स्वर्ग ले जाने वाला था।

यीशु बातों को इसी दृष्टिकोण से देख रहा था। उसने अपने चेलों से कहा कि यदि वे उससे प्रेम करते हैं तो उन्हें आनन्दित होना चाहिए, क्योंकि वह घर जा रहा है। उसने इस तरह कम ही कम ही बात की थी। यह प्रभु के दुख सहने की एक दुर्लभ झलक है क्योंकि यह सब उसी से संबंधित था। उसने अपने घर जाने की ख़ुशी से आशा की थी। उसका ऊँचा उठाया जाना और आनंद उन लोगों के लिए आनन्द का स्रोत होना चाहिए जो उससे प्रेम करते हैं।

जब उसने उनके उदास चेहरों को देखा, तो वह अपने चेलों को यह कह रहा था, “यदि तुम इसे केवल एक पल के लिए मेरे दृष्टिकोण से देखोगे, तो तुम्हें खुशी होगी क्योंकि मैं घर जा रहा हूँ।”

उन्हें अब तक इसका पता नहीं चल सका। यह उन सत्यों में से एक था जिसे पवित्र आत्मा बाद में उनके सामने प्रकट करेगा। लेकिन इसमें उनके लिए भी कुछ था। एक बार जब वह स्वर्ग चला गया और अपने पिता के सिंहासन पर जा बैठा, तो वह सबका महायाजक, पिता के सामने उनका वकील बन जाएगा। इसलिए, उन्हें उसके लिये और स्वयं के लिये आनन्दित होना चाहिये था।

चौथा, उसने उन्हें अपनी भविष्यवाणी दी (14:29) : “और मैंने अब इसके होने से पहले तुमसे कह दिया है, कि जब वह हो जाए, तो तुम विश्वास करो।” वह जानता था कि आगे कितना विनाशकारी उथल-पुथल होने वाला था — वह शुरू भी हो गया था। वह उनके विश्वास को मजबूत करने के लिए वह सब कर रहा था जो कर सकता था — ताकि, भले ही वे लड़खड़ाएँ, पर बाद में इन घटनाओं को याद करके विश्वास में और भी मजबूत हो सकें। हम निश्चिंत हो सकते हैं कि यूहन्ना ने, एक प्रेरित के रूप में अपने लंबे कार्यकाल में महान आत्मिक लाभ के साथ, यीशु की इन भविष्यवाणियों पर विचार किया था। उसका प्रेम से भरा शब्द “मैंने पहले तुमसे कह दिया है” बाद में आने वाली गंभीर परीक्षाओं में यूहन्ना को कितनी तसल्ली दे रहा होगा।

यूहन्ना आगे, प्रभु और शैतान के बारे में कुछ बताता है (14:30) : “मैं अब तुम्हारे साथ और बहुत बातें न करूँगा, क्योंकि इस संसार का सरदार आता है। मुझ पर उसका कोई अधिकार नहीं।” “इस संसार का सरदार” शैतान के नामों में से एक है। जब आदम ने पाप किया तो इस संसार के राज्य उसके प्रांत बन गये। प्रलोभन में आकर उसने उन्हें एक कीमत पर यीशु को देने का प्रस्ताव दिया। शैतान को यह पता नहीं था, लेकिन उसका अपना पतन और विनाश क्रूस पर था, जिसकी वह प्रभु के लिए तैयारी करने में पूरा व्यस्त था।

शैतान का आना, जो अब यहूदा इस्करियोती की विक्षिप्त आत्मा पर सवार होकर आया था, यीशु की पृथ्वी पर की शिक्षा को बाधित कर देगा, जो कुछ अंशों को छोड़कर कभी फिर आरम्भ नहीं होगी।

शैतान आ रहा था। परमेश्वर के अन्य सभी शत्रु इस महान शत्रु के चंगुल में फंसे हुए और साधन थे। इस संसार में उसके पास अपार शक्ति है। उसने अपने लोगों को पंक्ति में खड़ा किया : यहूदा और भीड़, महासभा और याजक, फरीसी और शास्त्री, हेरोदेस और उसके सैनिक, पिलातुस और उसके साथी। उन्होंने स्पष्ट रूप से सोचा कि वह विजयी होने जा रहा है।

वह गलत था। यीशु ने कहा, “मुझ पर उसका कोई अधिकार नहीं है।” उसने जोर देने के लिए दोहरे नकारात्मक का प्रयोग किया (ऊक उडेन)। उसके जीवन का कोई भी अंश शत्रु को उस पर कब्ज़ा करने की कोई पकड़ नहीं देगा। बाकी सबमें पाप है। शैतान मृत्यु को अपना अधिकार मानता है। यीशु एक स्वैच्छिक बलिदान था। वास्तव में वह “इस संसार का नहीं था” जिस पर शैतान का कब्ज़ा हो सके।

जंगल में प्रभु की परीक्षा के बाद, जिसके बारे में यूहन्ना चुप है, शैतान “कुछ समय के लिए यीशु से दूर चला गया।” गतसमनी में, जिसके बारे में भी यूहन्ना चुप है, वह और भी बड़े प्रलोभन के साथ वापस आया : क्रूस के अलावा कोई और विकल्प चुनने की परीक्षा। शैतान को असफल ही होना था। प्रभु के जीवन का एकमात्र नियम था, “हे पिता, मेरी नहीं, परन्तु तेरी इच्छा पूरी हो।” शैतान के पास उस तरह के कवच को भेदने के लिए कोई हथियार नहीं था।

इसके बाद, यूहन्ना हमारा ध्यान प्रभु और उसके कर्तव्य की ओर आकर्षित करता है (14:31) : "परन्तु यह इसलिये होता है कि संसार जाने कि मैं पिता से प्रेम रखता हूँ, और जैसे पिता ने मुझे आज्ञा दी मैं वैसे ही करता हूँ।" उनके कर्तव्य दो प्रकार के थे। पहला, क्रूस के द्वारा, वह संसार के समक्ष गवाही देगा (14:31क)। दुनिया जान लेगी कि पिता के लिए उसका प्रेम कितना बड़ा था, कि वह "मृत्यु तक, हाँ, क्रूस की मृत्यु तक आज्ञाकारी रहा।" मसीह की मृत्यु के बारे में हमारा दृष्टिकोण, हमारे कई भजनों का विषय, हमारे प्रति उसके प्रेम पर केंद्रित है। पौलुस इसे इस तरीके से कहता है, "उसने मुझसे प्रेम किया और मेरे लिए अपने आप को दे दिया।" क्रूस के बारे में प्रभु का दृष्टिकोण पिता के प्रति उसके प्रेम पर केंद्रित है: "कि संसार जाने कि मैं पिता से प्रेम रखता हूँ।" हम कलवरी को देखते हैं और पापबलि को देखते हैं : क्रूस हमारे लिए क्या लेकर आया। यीशु ने क्रूस को देखा और होमबलि को देखा : क्रूस ने पिता के लिए क्या किया।

क्रूस के द्वारा, प्रभु वचन के प्रति श्रद्धा प्रदान करता है (14:31ख) : "और जैसे पिता ने मुझे आज्ञा दी मैं वैसे ही करता हूँ।" उनकी आज्ञाकारिता बिना किसी शर्त के, बिना किसी प्रश्न के थी। कुछ क्षण पहले, यीशु ने कहा था, "यदि कोई मुझ से प्रेम रखेगा, तो वह मेरे वचन को मानेगा" (14:23)। अब वह वास्तव में कहता है, "मैं जो कहता हूँ, वही करता हूँ।" वह "उन बातों को जानता था जिनसे पिता प्रसन्न होता था" और उसने वही किया।

यह भाग प्रभु और उसके प्रस्थान (14:31ग) के साथ समाप्त होता है : उसने कहा, "उठो, यहाँ से चलें," और ऊपरी कक्ष की बातचीत को अचानक समाप्त कर दिया। ये शब्द शीघ्रता को दर्शाते हैं। स्पष्ट है कि जब वह बोल रहा था तो खड़ा हो गया था, जबकि चेले अब भी मेज के चारों ओर बैठे थे। कुछ करने का समय आ गया था। प्रभु ने बाहर जाने और शत्रु से सीधा मुकाबला करने का निर्णय ले लिया था। उसने मानव जाति के छुटकारे के लिए अपने पिता के उद्देश्य को पूरा करने का संकल्प ले लिया था। इस व्यक्तिगत वार्तालाप की बाकी बातें भोज के घर और गतसमनी के किनारे पर स्थित किद्रोन नाले को पार करने के बीच में कही गई होंगी।

भाग 2. गतसमनी के मार्ग पर चलना (15:1-17:26)

I. प्रभु अपने अनुयायियों से बात करता है (15:1-16:33)

अब जब ऊपरी कक्ष की एकांतता खत्म हो गई थी और पीड़ा सामने थी, तो चलते-चलते यीशु, पहले अपने अनुयायियों से और फिर अपने पिता से बात करता रहा। अनुयायियों के साथ हुई बातचीत में उसने उन्हें पुत्र परमेश्वर, आत्मा परमेश्वर और पिता परमेश्वर के बारे में प्रकाशन दिए।

A. पुत्र-परमेश्वर के बारे में प्रकाशन (15:1-25)

1. प्रभु — उसके अनुयायी और उनका फल (15:1-17)

प्रभु के अनुयायियों को फलदायक बनना है, और जब हम उसमें बने रहने का भेद सीख लेते हैं तो फलदायक होते हैं (15:1-5)। यह पहला भाग प्रभु के दाखलता के प्रसिद्ध रूपक के इर्द-गिर्द रचा गया है।

सबसे पहले हम दाखलता और उसकी पृष्ठभूमि को देखें (15:1) : "सच्ची दाखलता मैं हूँ, और मेरा पिता किसान है।" बाइबल के कुछ विद्यार्थियों का मानना है कि यह संदेश पहाड़ियों पर स्थित दाख की बारियों और विशेष रूप से किद्रोन घाटी में दाखलता की छंटाई के लिए उसे जलाने के कार्य पर आधारित था। दूसरों का मानना है कि यह

संदेश उस सुनहरी लता से प्रेरित था जो मंदिर के आंगन के फाटकों पर लगाई गई थी। लेकिन, प्रभु का यह संदेश किसी अधिक गहरी बात से भी प्रेरित हो सकता है।

दाखलता इस्राएल को दर्शाने वाले तीन पेड़ों में से एक थी। उदाहरण के लिए, भजन 80:8-19 में और यशायाह के दाख की बारी के प्रसिद्ध गीत (यशायाह 5:1-7) में इसका वर्णन इसी रूप में किया गया है। एक दिन पहले, प्रभु ने दाख की बारी और उन दुष्ट किसानों के बारे में दृष्टांत सुनाया था जो अब ईश्वरीय स्वामी के पुत्र की हत्या की साजिश रच रहे थे (मत्ती 21:33-46)। प्रभु ने इस दृष्टांत को इस्राएल राष्ट्र और विशेष रूप से उसके अगुवों पर लागू किया : "इसलिये मैं तुमसे कहता हूँ कि परमेश्वर का राज्य तुमसे ले लिया जाएगा और ऐसी जाति को जो उसका फल लाए, दिया जाएगा" (मत्ती 21:43)। हम पढ़ते हैं : "प्रधान याजक और फरीसी उसके दृष्टान्तों को सुनकर समझ गए कि वह उनके विषय में कहता है। और उन्होंने उसे पकड़ना चाहा, परन्तु लोगों से डर गए क्योंकि वे उसे भविष्यद्वक्ता मानते थे" (मत्ती 21:45-46)।

इसी पृष्ठभूमि में हमें यीशु के इस "मैं हूँ" कथन की व्याख्या करनी चाहिए। इस्राएल परमेश्वर की दाखलता थी। वह इस जाति को मिस्र से निकाल कर लाया, सीनै जंगल को पार कराया, इसे प्रतिज्ञा के देश में रोपा, इसके चारों ओर बाड़ लगाई, और इसे परमेश्वर द्वारा नियुक्त अगुवों और किसानों के हाथ सौंपा। अपने निवेश का लाभ लेने के लिए उसने बार-बार अपने सेवकों को भेजा। लेकिन उस जाति के अगुवों ने उनमें से कुछ सेवकों के साथ दुर्व्यवहार किया और कइयों को मार डाला। अंत में उसने अपने पुत्र को भेजा और वे अब उसकी हत्या करने की तैयारी कर रहे थे।

इसका केवल एक ही परिणाम हो सकता है : सामान्य तौर पर, पूरी इस्राएल जाति पर और विशेषकर, उस जाति के अगुवों पर परमेश्वर के क्रोध का प्रकोप। क्योंकि पृथ्वी पर परमेश्वर के उद्देश्यों की एकमात्र संरक्षक जाति, बिल्कुल भी फल उत्पन्न नहीं कर पाई, इसलिए उससे परमेश्वर का राज्य छीन लिया जाएगा तथा किसी और को दे दिया जाएगा। संक्षेप में, हमारे हाथों में पूरे नए नियम के प्रकाश के साथ, हम देख सकते हैं कि प्रभु कलीसिया की बात कर रहा था। इस वर्तमान युग के लिए, परमेश्वर के उद्देश्य कलीसिया में केंद्रित हैं; इस्राएल जाति स्वर्गीय अनुग्रह में नहीं है। वर्तमान में, इस्राएल अंजीर का पेड़ है (मत्ती 24:32-33)। बादलों पर उठा लिए जाने के बाद, परमेश्वर फिर से इस्राएल जाति के साथ कार्य शुरू करेगा, जो सहस्राब्दी के दौरान जैतून का पेड़ होगा।

जब हम उन्हें व्यक्तिगत मसीही पर लागू करते हैं तो हमें यूहन्ना 15 के इन पदों की व्याख्या बहुत सावधानी से करनी चाहिए; अन्यथा हमें इस सिद्धांत से कठिनाई होगी जो इस विचार का समर्थन करता है कि विश्वासी अपना उद्धार खो सकते हैं। पुराने नियम में, दाखलता एक राष्ट्र के रूप में इस्राएल का प्रतीक थी। नए नियम में सच्ची दाखलता और उसकी डालियाँ सामूहिक रूप से कलीसिया को दिखाती है। क्योंकि इस्राएल अपने मिशन में सफल नहीं हो पाया, इसलिए अब प्रभु ने अपने चेलों की ओर मुड़कर कहा कि वह सच्ची दाखलता है (15:1क)। दुष्ट किसानों के स्थान पर, उसका पिता किसान (गेओर्गोस), ईश्वरीय किसान है (15:1ख)।

यह है इसकी पृष्ठभूमि। इस युग के दौरान अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए परमेश्वर के पास एक नया साधन, एक नया "राष्ट्र" है : मसीह और उसकी कलीसिया। जो लोग इस युग में परमेश्वर के राज्य की भलाई में आना चाहते हैं, उन्हें भेदरूपी कलीसिया में शामिल किया जाना चाहिए, जिसे यहाँ एक फलदायक दाखलता के रूप में दिखाया गया है।

कुछ मायनों में कलीसिया की यह अवधारणा, पौलुस के द्वारा कलीसिया को देह के रूप में बताने की अवधारणा से जुड़ी है। हालाँकि, उस मामले में, विश्वासी देह के सदस्य हैं और मसीह सिर है। सच्ची दाखलता के रूप में मसीह और डालियों के रूप में कलीसिया की तस्वीर, विश्वासी को व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों के रूप में दिखाती है, जबकि कलीसिया स्थानीय और सार्वभौमिक, दोनों पहलुओं में व्यक्तियों से बनती है। परमेश्वर के लोगों की कोई भी स्थानीय कलीसिया उसके सदस्यों अथवा अंगों का झुंड है; इसका सामूहिक आत्मिक जीवन इसके सदस्यों और विशेष रूप से इसके अगुवों की आत्मिकता या शरीरिकता का प्रतिबिंब होता है। इस्राएल राष्ट्र पर भी यही बात लागू होती थी जब वह परमेश्वर की दाखलता था। राष्ट्र के सामूहिक संयुक्त जीवन ने उसके अगुवों और नागरिकों की शक्तियों या कमजोरियों, भक्तिपूर्णता या दुष्टता को दर्शाया।

आइए अब हम दाखलता और उसकी डालियों को देखें (15:2-4)। प्रभु, सबसे पहले, डालियों की छँटाई के बारे में बात करता है (15:2-3)। हम देखते हैं कि वह परमेश्वर के शुद्ध करने के कार्य (15:2) के बारे में क्या कह रहा है। “जो डाली मुझमें है और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है; और जो फलती है, उसे वह छाँटता है ताकि और फले।”

चेले कलीसिया के भ्रूण थे। वे मसीह से ऐसे जुड़े थे जैसे एक डाली दाखलता से जुड़ी होती है। किसान के रूप में पिता, सच्ची डाली और उस डाली की भी देखभाल करता है जिसका दाखलता में कोई स्थान नहीं था। हम देख सकते हैं कि वह हँसुए से मृत, बेकार और अनुत्पादक डालियों को काट रहा है।

प्रभु के निकटतम चेलों की बात करें, तो इसका एक स्पष्ट उदाहरण पकड़वाने वाले यहूदा के रूप में उनके सामने था। उसे काट दिया गया था। ऐसे बहुत से लोग हैं जो केवल विश्वास के झूठे पेशे में लगे हैं। प्रमाण इस परिणाम में निहित है कि दावा करने वाली ये डालियाँ फल देती हैं या नहीं। हम जानते हैं कि आत्मा का फल क्या है : “प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, संयम” (गलातियों 5:22-23), मसीह का हूबहू चरित्र। सामूहिक रूप से, इफिसुस की कलीसिया एक ऐसी कलीसिया की गंभीर दुर्दशा को दर्शाती है, जो सक्रिय होने के बावजूद, सही चीजें करने, सही चीजें कहने पर भी, काट दिए जाने के खतरे में पड़ी थी। “मुझे तेरे विरुद्ध यह कहना है कि तूने अपना पहला–सा प्रेम छोड़ दिया है” (प्रकाशितवाक्य 2:4)। प्रभु ने इस कलीसिया को “गिरी हुई” कहा और मन फिराने की मांग की। “मन फिरा... यदि तू मन न फिराएगा, तो मैं तेरे पास आकर तेरी दीवट को उसके स्थान से हटा दूँगा” (प्रकाशितवाक्य 2:5)।

प्रभु को ऐसी कलीसिया की जरूरत नहीं था जिसने उससे प्रेम करना छोड़ दिया था। अपनी सक्रियता और जोश के बावजूद, यह एक फलरहित डाली बन गई थी। इस कलीसिया में यीशु मसीह के प्रति प्रेम की कमी इसमें शामिल मसीहियों की सांसारिकता और शारीरिकता का प्रतिबिंब थी। संभवतः इसके कई सदस्यों ने उद्धार भी नहीं पाया होगा, हालांकि वे इसके विषयों में जोशीले और मुखर थे।

जब पिता दाखलता की एक डाली को देखता है जो फल ला रही है, तो वह इसकी छंटाई करता है ताकि वह और अधिक फल ला सके। यहाँ प्रयोग किया गया शब्द कथाइरो है, जिसका शाब्दिक अर्थ है “साफ़ करना।” डाली से वह सब कुछ हटा दिया जाता है जो फल पैदा करने की महत्वपूर्ण शक्ति को रोकता है; छोटे छोटे पौधों की लगातार छँटाई नहीं की जाए तो दाखलता पत्तों की ओर बढ़ने लगती है। अच्छा किसान ही जानता है कि किसी व्यक्ति के जीवन या स्थानीय कलीसिया के सामूहिक जीवन में छूरी का प्रयोग कैसे और कहाँ करना है।

फिर, सामूहिक रूप से, इसे स्मुरना की कलीसिया में दिखाया गया है। उस कलीसिया में सताव को सिर उठाने की अनुमति दी गई। स्मुरना की कलीसिया में ऐसे लोग थे जिन्हें प्रभु ईशनिंदक कहता है; वे स्वयं को यहूदी मानते थे परन्तु वे नहीं थे। वे यहूदीवादी, कलीसिया के भीतर व्यवस्थावादी थे। उन्हें "शैतान की सभा" कहा गया है (प्रकाशितवाक्य 2:9)। इन झूठे सदस्यों को बाहर निकालने के लिए, कलीसिया को इस बुराई से मुक्त करने के लिए, प्रभु ने क्लेश आने दिया। ऐतिहासिक रूप से हम जानते हैं कि प्रेरितीय युग (जिसका एक प्रतीक इफिसुस की कलीसिया है) का अंत अनेक प्रकार के झूठे पंथों और धर्मत्याग के उत्थान के साथ हुआ। सताने वाले कैसर इन फलरहित खरपतवारों को काटने के लिए ईश्वरीय किसान के हाथ में छूरी के समान थे।

आगे हमें मसीह के शुद्ध करनेवाले वचन (15:3) के बारे में कुछ बताया गया है : "तुम तो उस वचन के कारण जो मैं ने तुम से कहा है, शुद्ध हो।" अच्छे किसान को, कलीसिया और उसके सदस्यों को शुद्ध करते समय हमेशा छूरी का सहारा नहीं लेना पड़ता है। एक विनम्र तरीका, मसीह के वचन की शुद्ध करने वाली सामर्थ्य है। मसीह के वचन का पालन करने वाले चेलों और स्थानीय कलीसिया को इसकी प्रभावी शक्ति के द्वारा स्वच्छ रखा जाता है। यह आत्मा को निरंतर शुद्ध करने का स्रोत है। यह हमें बुराई से बचाता है। दिखावा करने वालों को दूर भगाता है। मसीह के वचन को सुनना, विश्वास करना और पालन करना, दाखलता में महत्वपूर्ण आत्मिक जीवन के सोते हैं। उदाहरण के लिए, पहाड़ी उपदेश और प्रभु के अंतिम क्षणों के संदेशों पर ध्यान दें। यदि इन्हें किसी व्यक्ति के जीवन में लागू किया जाए तो मृत्यु या झूठ का वहाँ कोई स्थान नहीं रहेगा। इसी प्रकार, स्थानीय कलीसिया के सामूहिक जीवन में, लोग तब तक वहाँ नहीं रहेंगे जहाँ उसके सिद्धांत, उपदेश और व्यवहार जीवन का नियम हैं, जब तक कि वे प्रभु को न जानें और उनसे प्रेम न करें।

डालियों के शुद्धीकरण के बारे में बात करने के बाद प्रभु ने आगे डालियों के स्थान के बारे में बात की (15:4) : "तुम मुझमें बने रहो, और मैं तुममें। जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे तो अपने आपसे नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझमें बने न रहो तो नहीं फल सकते।" डाली का स्थान दाखलता में है। इसका अपना कोई जीवन या फल नहीं है। उसका जीवन और फल, दाखलता के साथ इसके जैविक संबंध से मिलता है। दाखलता के रेशे जड़ से लेकर हर डाली तक फैले होते हैं। यही संबंध हर डाली को जीवन की शक्ति देता है। मूल तने से एक डाली तोड़ दें, तो वह मर जाएगी। दाखलता की डाली तब तक बेजान, बेकार और फलरहित होती है जब तक कि वह दाखलता से जुड़ी हुई न हो। जीवनदायी रस जड़ों में से होकर ऊपर की ओर बहता और डालियों को हरे पत्ते उगाने और अंगूर के गुच्छे पैदा करने में सक्षम बनाता है। अतः डाली दाखलता का एक जैविक हिस्सा है, और दाखलता डालियों के माध्यम से अपना जीवन प्रकट करती है।

यह उदाहरण विश्वासी और स्थानीय कलीसिया को मसीह के साथ जुड़ने और मसीह को उनके द्वारा अपना जीवन प्रकट करने की आवश्यकता को दिखाता है। प्रभु एक दूसरे के निकट, घनिष्ठ संबंध में रहने के विचार को प्रकट करने के लिए 'बने रहो' नामक शब्द का उपयोग करता है। विश्वासी मसीह को और मसीह विश्वासी को अपना निवास स्थान बना लेता है। मसीह का जीवन विश्वासी का जीवन बन जाता है, जो पृथ्वी पर "मसीही जीवन" जीने का अनुग्रह और शक्ति प्रदान करता है। विश्वासी का जीवन एक ऐसा जीवन बन जाता है जिसके द्वारा प्रभु आज अपने जीवन को समय और भाव की दुनिया में प्रकट करता है।

उसके अलावा, कोई आत्मिक जीवन नहीं हो सकता, न आत्मिक फल हो सकता है। किसी भी पुरुष या स्त्री, लड़के या लड़की में मसीही जीवन जीने की योग्यता नहीं है, क्योंकि यह एक अलौकिक जीवन है। इसे जी सकने

वाला एकमात्र व्यक्ति, स्वयं मसीह है। जिस किसी ने भी मसीह से अलग होकर यह जीवन जीने का प्रयास किया है, वह जानता है कि ऐसा करना कितना असंभव है। हर क्षण, हर स्थिति में मसीह में विश्राम करें जिससे उसका जीवन प्रवाहित हो सके और हरी, ताजगी भरी और प्रचुर फलवंतता दिख सके जो पृथ्वी पर उसके जीवन की विशेषता है। यह शिक्षा प्रभु की अपने पिता में निवास करने (14:10) तथा उसके और पवित्र आत्मा के हम में निवास करने की पहले की शिक्षा का विस्तार है।

निस्संदेह, स्थानीय कलीसिया के बारे में भी यही सच है। इसका अपना कोई जीवन नहीं है। यह केवल मसीह के साथ अपना संबंध बनाए रखकर ही फल-फूल सकता है, फल दे सकता है। नकली कलीसियाएँ हैं। मृत कलीसियाएँ हैं। सरदीस की कलीसिया की तरह ऐसी कलीसियाएँ भी हैं जिनके बारे में प्रभु ने कहा, “तू जीवित तो कहलाता है, पर है मरा हुआ” (प्रकाशितवाक्य 3:1)। लेकिन फिलदिलफिया की कलीसिया की तरह मसीह के साथ एकता में रहने वाली कलीसियाएँ भी हैं (प्रकाशितवाक्य 3:7-8)।

दाखलता और उसकी पृष्ठभूमि एवं दाखलता और उसकी डालियों को देखने के बाद, अब हमें दाखलता और उसकी भरपूरी को देखना चाहिए (15:5) : “मैं दाखलता हूँ : तुम डालियाँ हो। जो मुझमें बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझसे अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।”

लंदन के हैम्पटन कोर्ट में एक बड़ा ग्रीनहाउस है जिसमें एक पुरानी और शानदार दाखलता है। इसकी डालियाँ सर्वत्र फैली हुई हैं। इसके पत्ते सुंदर हैं, फल रसीले और भरपूरी में होते हैं। उसी दाखलता के किसी एक कोने में चिपकी एक छोटी टहनी भी मूल तने के साथ अच्छे से जुड़ी हुई है। वह विशाल दाखलता एक जैविक संपूर्ण है। एक डाली दूसरी डाली पर हावी होने या उसे चलाने का प्रयास नहीं करती। प्रत्येक डाली अपने स्रोत से संबंध रखती है। स्वतंत्र होते हुए भी डालियाँ आश्रित हैं। हर डाली ग्रीनहाउस के कोने कोने तक फैली है। हर डाली समग्र वैभव में अपना योगदान देती है। हर डाली अपने पत्ते, फूल और फल उत्पन्न करने में व्यस्त है।

ऐसा ही मसीही जीवन है, फिर चाहे वह हर विश्वासी के जीवन में व्यक्तिगत रूप से व्यक्त हो या स्थानीय कलीसियाओं, शाखाओं के रूप में सामूहिक रूप से, मसीह के जीवन को संसार के सुदूर कोनों तक पहुँचाता हो।

यीशु ने इसी सबक को दोहराते हुए कहा, “मेरे बिना तुम कुछ नहीं कर सकते।” आत्मनिर्भर मसीही जीवन जैसा कुछ नहीं होता है। वचन अथवा बाइबल के सही अर्थ में, मसीह के साथ जैविक आत्मिक संबंध रखने वाला ही मसीही कहला सकता है। बाइबल में ऐसा कुछ नहीं है कि किसी एक संस्था की कलीसिया का संचालन किसी मुख्यालय से हो रहा हो या कोई स्वतंत्र कलीसिया विश्वासियों की अन्य मंडलियों की अनदेखी कर रही हो। ये सारी विभिन्न डालियाँ, मसीह से और उसके द्वारा एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं। यीशु मसीह कलीसिया का सिर है। मसीह दाखलता है। उससे अलग, कोई व्यक्तिगत या सामूहिक जीवन नहीं है, और यदि कोई जीवन है भी तो वह मात्र एक नकल, बेजान और मृत्यु को बोनेवाला है। सम्प्रदाय, परंपरा, कार्यक्रम, या पैसा एक मृत कलीसिया को कुछ समय के लिए गति में बनाए रख सकता है। लेकिन यह केवल सांसारिकता, शारीरिकता, व्यवस्थावाद और मृत्यु को ही उत्पन्न करता है।

उसमें बने रहनेवाले जीवन को भरपूर जीवन बनना है, एक ऐसा जीवन जो मसीह के जीवन का प्रतिबिंब बनकर पिता को महिमा देता हो। एक डाली उसमें ‘बनी’ कैसे रहे? दाखलता में वह अपना स्थान कैसे बनाये रखे? यह क्या करे? कुछ नहीं। वह बस बनी रहे। वहीं रहे, जहाँ वह दाखलता का एक हिस्सा बना है, जिसे परमेश्वर ने वहाँ रखा है, अच्छे मौसम में जड़ से जीवन को पाती रहे और अपने अस्तित्व के नियम को पूरा करती रहे।

काट-छाँट करने की जिम्मेदारी डाली की नहीं होती। यह किसान का कर्तव्य है। डाली का काम दूसरी डालियों की निंदा करना या उनकी काट-छाँट करना नहीं है। किसान उसकी देखभाल करता है। एक डाली केवल बनी रहती और फूलती फलती है।

मसीह में भरपूरी का रहस्य (15:6-17) मसीह के फलदायी होने से संबंधित है (15:6-8)। उसका जीवन हमारा है। उसका फल हमारा है, जो हमें काटे जाने की त्रासदी में ला सकता है (15:6) : "यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह डाली के समान फेंक दिया जाता, और सूख जाता है; और लोग उन्हें बटोरकर आग में झोंक देते हैं, और वे जल जाती हैं।" जो डाली दाखलता से जुड़ी नहीं है, वह बेकार है। दाखलता की लकड़ी का उपयोग लकड़ी का सामान, भवन या रसोई के बर्तन बनाने में नहीं किया जा सकता। यह खूंटी का भी काम नहीं करेगी। जिस दाखलता की डाली पर अंगूर नहीं लगते, वह बिल्कुल बेकार है।

प्रभु दाखलता से कटी हुई डाली के भविष्य का चित्र दिखा रहा है। वह सूख जाती है। उसे आग में डाला जाता है। जला दिया जाता है। हालाँकि, प्रभु यहाँ सर्वनामों के उपयोग में एक उल्लेखनीय परिवर्तन कर रहा है। अब तक, वह प्रथम और द्वितीय पुरुष सर्वनाम का उपयोग करता आ रहा था, "मैं, मुझ, तुम।" अब वह तृतीय पुरुष सर्वनाम का उपयोग कर रहा है, "वह, उन, वे।" यहाँ एक अंतर है। उसने 'तुम' शब्द अपने चेलों और उन लोगों के लिए उपयोग किया जो उसके हैं। 'वह, उन, वे' एक अलग समूह की ओर इशारा करते हैं। यही अंतर 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-5:11 और इब्रानियों 5:12-6:20 में देखा जा सकता है। उन दोनों अनुच्छेदों में, जिन्हे अक्सर गलत समझा जाता है, व्याख्या की कुंजी सर्वनाम के उपयोग में निहित है।

यहाँ कटी हुई डालियों को वास्तविक डालियों से सावधानीपूर्वक अलग किया जाता है। यहूदा एक कटी हुई डाली था। उसे ध्येय से तो लगाव था लेकिन यीशु मसीह से नहीं। उद्देश्य खत्म होते ही उसने मसीह को बेच दिया और एक विधर्मी की मौत मरा। वह उन लोगों का प्रतिनिधि है जो खुद को कलीसिया से जोड़ते हैं लेकिन मसीह से अलग रहते हैं। जो बात ऐसे लोगों पर व्यक्तिगत रूप से लागू होती है, वही सामूहिक रूप से कलीसियाओं पर भी लागू होती है। इनका प्रतीक लौदीकिया की कलीसिया है, जिसे मसीह ने कड़ी चेतावनी दी थी, "मैं तुझे अपने मुँह में से उगलने पर हूँ" (प्रकाशितवाक्य 3:16)।

यहाँ प्रभु की चेतावनी भी उतनी ही अटल है : "लोग उन्हें बटोरकर आग में झोंक देते हैं, और वे जल जाती हैं।" इस बात का कोई सुराग नहीं दिया गया है कि "लोग" कौन हैं या "आग" क्या और कहाँ है। प्रभु इसे ऐसे ही छोड़ देता है, ताकि इसका भेद और भयावहता विवेक को भेदने का अपना काम कर सके। निश्चित रूप से यहूदा, उसका आगे का कार्य, और उसका जल्दी होने वाला विनाश प्रभु के मन में था।

काटे जाने की त्रासदी के विपरीत, आत्मिक होने की विजय है (15:7-8)। बना रहने वाला जीवन ही भरपूर जीवन है। यह परमेश्वर के प्रति हमारे दृष्टिकोण में दिखाया गया है : "यदि तुम मुझमें बने रहो और मेरा वचन तुममें बना रहे, तो जो चाहो माँगो और वह तुम्हारे लिये हो जाएगा" (15:7)। यह शर्तरहित गारंटी नहीं है कि परमेश्वर की कोई भी संतान कुछ भी मांग सकती है और जो कुछ भी वह चाहती है, वह तुरंत परमेश्वर से प्राप्त कर सकती है। परमेश्वर इतना प्रेमी और बुद्धिमान है कि वह अपने खजाने की चाबी सांसारिक अथवा शारीरिक सोच वाले, स्वार्थी विश्वासियों के हाथों में नहीं दे सकता।

प्राप्त करने की कुंजी है 'बने रहो।' यह ज़बरदस्त गारंटी पूरी तरह से सशर्त है। यह एक आश्चर्यजनक प्रतिज्ञा भी है ("तो जो चाहो माँगो" को "मांगो जो आपका है या मिलना है" कहा जा सकता है) परमेश्वर के अक्षय धन की कुंजी उन लोगों को दी गई है जो मसीह में बने रहते हैं और उसका वचन उनमें बना रहता है।

हम जो चाहते हैं, उसे पाने की कुंजी यह है कि वह चाहना है कि वह क्या चाहता है। मसीह के वचनों को हममें "बनाए रखने" का अर्थ केवल उन्हें कंठस्थ करना नहीं है। इसका अर्थ है, उन पर तब तक मनन करना जब तक हमारी चेतन प्रकृति उनसे संतृप्त न हो जाए, जब तक वे हमारा एक महत्वपूर्ण हिस्सा न बन जाएँ, ताकि वे हमारी समझ को प्रबुद्ध करें, भावनाओं को उत्साहित करें और इच्छाओं को सक्रिय करें। जब हमारा आंतरिक मनुष्य प्रभु यीशु के अंतर्निहित, सर्वव्यापी वचनों से प्रभावित होता है, तब हम अपने अधिकार के रूप में मांग कर सकते हैं और वह हमें मिलता है — केवल इसलिए क्योंकि हमारी चाहत और उसकी चाहत में कोई अंतर नहीं होगा।

'बने रहने' वाला जीवन भरपूर जीवन है। इसे हम आगे, हमारे प्रति परमेश्वर की स्वीकृति में देख सकते हैं : "मेरे पिता की महिमा इसी से होती है कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे" (15:8)। उस घड़ी में इन चेलों के व्यवहार से निश्चित रूप से पिता की महिमा नहीं हुई थी : पतरस, याकूब और यूहन्ना गतसमनी में गहरी नींद में सो रहे थे; पतरस ने तलवार से वार किया, उसे कोसा, शपथ खाई और मसीह का इनकार किया; और बाकी सब लोग अपने सिर पर पैर रखकर भाग गए।

उन्होंने ऐसा क्यों किया? क्योंकि उसका वचन उनमें बना हुआ नहीं था। हम ऐसा क्यों करते हैं? क्योंकि उसका वचन हममें बना नहीं रहता। जब उसका वचन हमारे भीतर रहता है तो हम फल उत्पन्न करते हैं और पिता की महिमा होती है।

प्रभु की बातचीत अब दाखलता के दृष्टांत से हट गई है। बहुतायत का भेद अब मसीह की संगति से जुड़ा हुआ दिखाया गया है (15:9-12)। हम उसके हृदय के एक अचंभे से आरंभ करते हैं (15:9क) : "जैसा पिता ने मुझसे प्रेम रखा, वैसा ही मैंने तुमसे प्रेम रखा।" प्रभु यीशु के इन कथनों में से कुछ हमारे लिए इतने परिचित हो गए हैं कि यह हमें आश्चर्यजनक लगते ही नहीं हैं। प्रभु हमसे कितना प्रेम करता है? जितना पिता उससे प्रेम करता है। पिता उससे कितना प्रेम करता है? असीम प्रेम, जिसका न आरंभ है, न अंत।

वहाँ शिमौन खड़ा है जो उसका इनकार करने जा रहा है; थोमा, जो संदेह से भरा हुआ है; फिलिप्पुस, जो हर चीज को अनंत, अमर और अदृश्य देखना चाहता है, जबकि हर समय वह सब कुछ उसके सामने स्पष्ट होता था; याकूब और यूहन्ना, जो "गर्जन के पुत्र" थे; मत्ती, जो कुछ समय पहले एक आम प्रचारक था, और शिमौन जलोती, जो राष्ट्रवादी कट्टरता से बहुत दूर नहीं था। यीशु ने उनकी ओर देखकर कहा, मैं तुम लोगों से प्रेम करता हूँ। मैं तुमसे बहुत ज्यादा प्रेम करता हूँ। मैं तुमसे उतना ही प्रेम करता हूँ, जितना पिता मुझसे प्रेम करता है। मैं तुम्हें अनंत प्रेम से प्रेम करता हूँ, वह प्रेम जो मृत्यु से भी अधिक मजबूत है, वह प्रेम जिसे बहुत सारा जल भी नहीं बुझा सकता, न नदियाँ डुबो सकती हैं। जब वे किद्रोन नाले, जैतूनी ढलान और गतसमनी के किनारे की ओर बढ़ रहे थे, तो अपने चारों ओर उमड़ रही भीड़ को देखकर उसका हृदय भावुक हो उठा।

हम उसके हृदय तक पहुँच बनाने वाले मार्ग के बारे में सोचते हैं। (15:9ख-10) इसे एक विस्मय भरे प्रसंग (15:9ख), एक उपदेश (15:10क), और एक उदाहरण (15:10ख) में सारगर्भित किया गया है : "मेरे प्रेम में बने रहो। यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे; जैसा कि मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूँ।" प्रभु ने अपने लिए पिता के नियम के प्रति पूर्ण और अखंड अनुपालन का दावा

किया और परिणामस्वरूप पिता के प्रेम में पूर्ण और अखंड सहभागिता का दावा किया। यह उस व्यक्ति का दावा था जो पाप से अनजान था।

यदि केवल एक बार, क्षण भर के लिए परमेश्वर की अच्छी, स्वीकार्य और परिपूर्ण इच्छा से थोड़ा-सा भी अलगाव होता, आक्रोश या विद्रोह की थोड़ी-सी भी झलक होती, तो वह संगति टूट गई होती। परमेश्वर के रूप में, उसकी पवित्रता और मनुष्य के रूप में उसकी पापरहितता का उल्लंघन हो गया होगा। परंतु ऐसा कभी नहीं हुआ — चाहे एक शिशु के रूप में या एक लड़के के रूप में, एक युवा के रूप में या एक वयस्क के रूप में, नासरत के घर में, स्कूल में या आराधनालय में, बढ़ई की बेंच पर, प्रतिज्ञा के देश के राजमार्गों और सड़कों पर घूमते हुए, चाहे अकेले या अपने चेलों की संगति में। जब भीड़ धक्का-मुक्की करती या दुश्मन जोर जबरदस्ती करते, हर पल, हर दिन, हर साल, पृथ्वी पर अपने और स्वर्ग में अपने पिता के बीच, व्यवस्था और प्रेम साथ-साथ चले। यीशु ने सदैव वही किया जिससे पिता प्रसन्न होता था।

अब उसने अपने चेलों से कहा, मैंने ऐसे ही जीवन जीया है, और तुम्हें भी ऐसे ही जीना है। पृथ्वी पर मनुष्य के रूप में तुम्हारे और स्वर्ग में परमेश्वर के रूप में मेरे बीच यही प्रेम-नियम का रिश्ता बना रहे, जो पृथ्वी पर मनुष्य के रूप में मेरे और स्वर्ग में परमेश्वर के रूप में मेरे पिता के बीच रहा है। प्रेम केंद्र में राज करता है; नियम बाहरी किनारों पर राज करता है।

इसके बाद उसके हृदय से वचन निकलता है (15:11) : “मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं, कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।” आनंद की रचना स्वर्ग में होती है। यह परमेश्वर का एकाधिकार है। यह खुशी की तरह नहीं है, जो काफी हद तक घटनाओं पर निर्भर करती है। गतसमनी के इतने नजदीक आने के बावजूद, प्रभु का दिल आनन्द से भरा था। अपने सामने रखे आनन्द के लिए ही उसने लज्जा की परवाह किए बिना क्रूस को सह लिया।

आनंद आत्मा का फल है, प्रेम के बाद। वह हमें यह आनंद देता है, आज्ञाकारिता से उत्पन्न आनंद, जिसके एक ओर प्रेम है तथा दूसरी ओर शांति। आनंद हमारे आँसुओं के ऊपर चमकते मेघधनुष की तरह है।

उसके हृदय की इच्छा भी है (15:12) : “मेरी आज्ञा यह है, कि जैसा मैंने तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो।” वह लगातार इस विषय पर आता रहता है। उसका बलिदानी प्रेम एक आदर्श बनना है। चेलों को एक-दूसरे से उतनी ही लगन और ईमानदारी से प्रेम करना है, जितना मसीह ने उनसे प्रेम किया था। गतसमनी के रास्ते में उसने उनमें से प्रत्येक को अपने असीम प्रेम में लपेट लिया। उसके गर्म आलिंगन में अभी भी चमकते हुए उन्होंने उसे यह कहते हुए सुना, एक दूसरे को ऐसे ही प्रेम करो।

भरपूरी का भेद मसीह की मित्रता में (15:13-17) और इसे प्रदर्शित करने के तरीके (15:13) में भी पाया जाता है : “इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना प्राण दे।” प्रभु यहाँ अपनी मृत्यु का वर्णन एक प्रायश्चित के बलिदान के रूप में नहीं कर रहा जिसमें उसने मानवजाति के पापों के लिए, हमारे छुटकारे के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया। वह अपनी मृत्यु को उन लोगों की भलाई और उनके कल्याण के लिए स्वैच्छिक समर्पण के रूप में दर्शा रहा है जिनसे वह प्रेम करता है। किसी मित्र के लिए सबसे बड़ा प्रेम यही है कि वह उसके लिए प्राण दे दे।

तब यीशु की मित्रता की भी घोषणा की गई (15:14-15)। “जो आज्ञा मैं तुम्हें देता हूँ, यदि उसे मानो तो तुम मेरे मित्र हो।” यह शर्त है (15:14)। कोई भी यीशु का मित्र बन सकता है। उससे प्रेम करने के लिए बस यह जरूरी है कि वह जो कहता है, उसे किया जाए।

“अब से मैं तुम्हें दास न कहूँगा, क्योंकि दास नहीं जानता कि उसका स्वामी क्या करता है; परन्तु मैं ने तुम्हें मित्र कहा है, क्योंकि मैं ने जो बातें अपने पिता से सुनीं, वे सब तुम्हें बता दीं।” यह है अवधारणा (15:15)। ऐसा लगता है कि प्रभु उस नए शब्द पर प्रेमपूर्वक विचार कर रहा है जिसे उसने अभी-अभी अपनी बातचीत में शामिल किया है : मित्र। उसके मित्र उसके लिए बहुत कुछ करते हैं। मित्र एक-दूसरे के लिए खुद को सौंप देते हैं। उसके लिए कार्य करते हैं — वह जो भी आदेश देता है, हम करते हैं। वह हमारे लिए कार्य करता है, हमें वे बातें बताता है, जो उसने अपने पिता से सुनी हैं। वह हमारे साथ विश्वास को बांटता है। मित्र यही करते हैं।

प्रभु हमें नहीं बताता कि वह क्या करवाना चाहता है क्योंकि हम उनके दास नहीं हैं (डूलोई, “दास”)। दास वही करता है जो उसे करने के लिए कहा जाता है और अपने स्वामी के आज्ञा पालन में किए जा रहे कार्य में भी संभवतः प्रेम का कोई संबंध नहीं होता, कोई घनिष्ठता नहीं होती जिसके द्वारा स्वामी का मन, हृदय और उद्देश्य का प्रकट हो। दास केवल स्वामी की इच्छा का एक साधन है, जो उसे कहा जाता है, वह तुरंत, बिना किसी प्रश्न के कर दिया जाए। प्रभु हमें अपनी इच्छा बताता क्योंकि हम उसके मित्र हैं। वह हमें अपने विश्वास में लेता है, अपने मन और दिल की बातें हमारे साथ बांटता है। इस लंबे संदेश के दौरान प्रभु यही कर रहा था।

इसके बाद, हम यीशु की मित्रता के दृढ़ निश्चय को देखते हैं (15:16)। यीशु ने कहा, “तुमने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना है।” वह ईश्वरीय पहल थी (15:16क)। प्रभु चाहता था कि वे समझ लें कि पहला कदम उसने ही उठाया था। उसने ही चेलों की खोज की थी। वह हर एक के बारे में सब कुछ जानता था, जैसे-जैसे वे एक-एक करके उसके जीवन की ओर आकर्षित होते गए। उसने उन्हें अमीर या प्रसिद्ध, चतुर या प्रभावशाली, शिक्षित या उच्च सामाजिक प्रतिष्ठा वाले होने के कारण नहीं चुना था। आम तौर पर छात्र स्वयं अपने गुरुओं को चुनते हैं। इस विषय में ऐसा नहीं हुआ। उसने उन्हें चुना। उनके जीवन की घटनाओं को उसने इस तरीके से निर्देशित किया कि वे उसके प्रभाव क्षेत्र में आ जाएँ। और फिर, उद्देश्य और पूर्व निर्धारण के साथ, उसने उन्हें चुना। और, आश्चर्यजनक सत्य यह है कि उसने उन्हें अपना मित्र बनने के लिए चुना।

वह दुनिया के लाखों करोड़ों में से जिसे चाहे उसे चुन सकता था। उसने उन्हें, हमें और उन सबको चुना, जिन्होंने उसके प्रेम की बुलाहट का उत्तर दिया।

“मैंने तुम्हें चुना है और तुम्हें नियुक्त किया कि तुम जाकर फल लाओ और तुम्हारा फल बना रहे।” यही ईश्वरीय उद्देश्य है (15:16ख)। “नियुक्त” के लिए प्रयुक्त शब्द एथेका है, जिसका अर्थ है रखना, भेजना या नियुक्त करना। यहाँ यह शब्द प्रेरितों के रूप में उनके विशेष पद की जिम्मेदारी का वर्णन करता है जो उन्हें उस कलीसिया में दिया जा रहा था और जो पिंतेकुस्त के दिन दुनिया में फूटने जा रहा था। इस विचार के पार, गुलगुता की छाया ही नहीं, बल्कि पिंतेकुस्त की चमकती रोशनी भी है। इन ग्यारह व्यक्तियों को यीशु ने, विशेष रूप से कलीसिया में एक अद्वितीय भूमिका निभाने के लिए चुना और नियुक्त किया। कुछ मशहूर हो जायेंगे, कुछ गुमनाम रह जायेंगे। सबको नियुक्त किया गया। इसी प्रकार, युगों-युगों से प्रभु अपने सेवकों को उस स्थान के लिए नियुक्त कर रहा है, चाहे वह बड़ा हो या छोटा, जिसे उसने उनके लिए अपनी कलीसिया में चुना है।

उनका फल बना रहेगा। शैतान परमेश्वर की दाखलता को उखाड़ नहीं सकता। वह उसके फल को नष्ट नहीं कर सकता। प्रेरितों को "जाना" और फल उत्पन्न करना था। पिन्तेकुस्त के दिन पतरस तीन हज़ार तक पहुँच गया। कुछ साल बाद, वह कैसरिया में एक गैर-यहूदी तक पहुँचा और दुनिया के लिए कलीसिया का दरवाजा खोल दिया। सच्चा फल बना रहता है क्योंकि यह पवित्र आत्मा द्वारा उत्पन्न होता है, मनुष्यों द्वारा नहीं, चाहे वह कितना भी प्रतिभाशाली, प्रमुख या प्रभावशाली क्यों न हो।

"मैंने तुम्हें चुना है... कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से माँगो, वह तुम्हें दे।" यह स्वर्ग की ऊँचाइयों पर पहुँचने के लिए, ईश्वर की उपस्थिति में आने के लिए, हमारी विनतियों को धन्य आश्वासन के साथ प्रस्तुत करने के लिए ईश्वरीय निमंत्रण है (15:16ग) कि यीशु के नाम पर की जाने वाली प्रार्थनाओं को पिता के यहाँ सर्वोच्च प्राथमिकता मिलती है। निस्संदेह, हम उस नाम को स्वार्थी विनतियों, ऐसे आग्रहों से नहीं जोड़ सकते जो उसके स्वभाव, व्यक्ति और व्यक्तित्व के विपरीत हों।

भरपूरी का एक और भेद है और वह मुख्य है। हमारे पास यीशु की दोहराई गई मित्रता है (15:17)। "इन बातों की आज्ञा मैं तुम्हें इसलिये देता हूँ कि तुम एक दूसरे से प्रेम रखो।" मित्र के मित्र भी मित्र होने चाहिए। पहिये की तीलियों का एक उदाहरण दिमाग में आता है। जैसे-जैसे वे तीलियाँ केंद्र के करीब आती हैं, वे एक-दूसरे के करीब आती जाती हैं। यदि हम यीशु के किसी मित्र से कुछ दूर हो जाते हैं, तो यीशु के करीब आ जाएँ। हम जितना उसके करीब आएँगे, उतने ही हम एक-दूसरे के करीब आएँगे।

2. प्रभु — उसके अनुयायी और उनके शत्रु (15:18-25)

हम उसके मित्रों के लिए संसार की घृणा से शुरू करते हैं (15:18-22)। प्रेम का विलोम है घृणा। प्रभु अपने चेलों को एक दूसरे से प्रेम करने की आज्ञा देता रहा है। इस तरह के प्रेम के अनिवार्य होने का एक कारण प्रभु और उसके लोगों के प्रति संसार की घृणा है। इसलिए प्रभु ने अपने लोगों के सामने जो सामंजस्य स्थापित किया है, उसमें यह असंगत बात जोड़ दी है। वे संसार की ओर से घृणा की अपेक्षा कर सकते हैं।

वह घृणा के कारणों से शुरु करता है। (15:18-21) वहाँ दो हैं; पहला है असहिष्णुता (15:18-20)। प्रभु के लोगों के प्रति संसार की असहिष्णुता तार्किक नही है। संसार परमेश्वर के लोगों से घृणा करता है क्योंकि वे अलग हैं (15:18-19)। "यदि संसार तुम से बैर रखता है, तो तुम जानते हो कि उसने तुम से पहले मुझ से बैर रखा। यदि तुम संसार के होते, तो संसार अपनों से प्रेम रखता; परन्तु इस कारण कि तुम संसार के नहीं, वरन् मैं ने तुम्हें संसार में से चुन लिया है, इसी लिये संसार तुम से बैर रखता है।"

प्रभु यीशु दूसरे मनुष्यों से अलग था। वह पापरहित था। उसने कोई ग़लती नहीं की। कभी असफल नहीं हुआ। उसने बिना किसी डर या पक्षपात के सच बोला, वह भी प्रेम के साथ। उसने नैतिक बुराई, सैद्धांतिक त्रुटि, व्यक्तिगत पाखंड से समझौता करने से इनकार किया। उसने अधिकारियों के भ्रष्टाचार और सड़न को प्रकट किया। उसने नियम के अधिकृत विशेषज्ञों की कमजोरियों और मूर्खतापूर्ण गलतियों को प्रकट करते हुए, एक यादगार और निपुण अंदाज में शिक्षा दी — इसलिए वे उससे बैर रखते थे। यदि हम अलग हों जैसे वह अलग था, तो वे हमसे भी बैर रखेंगे।

यीशु ने कहा, "तुम संसार के नहीं।" हम संसार में हैं, पर संसार के नहीं हैं। हमारी नागरिकता दूसरे संसार की है, न कि इस संसार की। यहाँ हम परदेशी, यात्री और अजनबी हैं। प्रभु के चेलों से बैर रखा गया। यूहन्ना को छोड़ वे सब शहीद हो गए, और यूहन्ना ने भी सताव सहा। नीरो से लेकर डायोक्लेशियन तक के तीन सौ वर्षों में,

कलीसिया निरंतर और भारी क्लेश का सामना करती रही। सदियों से कलीसिया का इतिहास शत्रुता का रहा है क्योंकि परमेश्वर के लोग अलग हैं। वे खुद को संसार से अलग करते हैं। वे संसार से चुने गए लोग हैं।

संसार परमेश्वर के लोगों से घृणा करता है क्योंकि वे चेले हैं (15:20)। "जो बात मैं ने तुम से कही थी, दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता,' उसको याद रखो। यदि उन्होंने मुझे सताया, तो तुम्हें भी सताएँगे; यदि उन्होंने मेरी बात मानी, तो तुम्हारी भी मानेंगे।" प्रभु के लोग शत्रुतापूर्ण व्यवहार की उम्मीद कर सकते हैं; प्रभु के प्रति लोगों का दृष्टिकोण ही उसके लोगों के प्रति उनके दृष्टिकोण को निर्धारित करेगा। उनके लिए वह किसी काम का नहीं था, और इनके लिए, हम भी किसी का, के नहीं होंगे।

आज एक तथाकथित "समृद्धि सुसमाचार" प्रचलन में है। यह झूठा सुसमाचार वादा करता है कि परमेश्वर के लोग अगर कुछ शर्तों को पूरा करते हैं, तो वे इस संसार में अमीर, खुश, शक्तिशाली, सफल और स्वस्थ होंगे। हमें "समृद्धि की सोच" रखने और "सकारात्मक सोच की शक्ति" को अपनाने के लिए कहा जाता है। इस प्रकार का "सुसमाचार" प्रभु की सच्ची शिक्षा से बहुत दूर है। जब परमेश्वर किसी को मसीह की ओर आकर्षित करना चाहता है, तो वह इस संसार में मकान और जमीन, धन और स्वास्थ्य, सफलता और सुरक्षा की पेशकश करने वाले आकर्षक विज्ञापन नहीं देता। वह बातों को वैसे ही बताता है, जैसी वे हैं। संसार ने यीशु से बैर रखा और वह उसके लोगों से भी बैर रखेगा।

संसार की घृणा का दूसरा बुनियादी कारण अज्ञानता है (15:21) : "परन्तु यह सब कुछ वे मेरे नाम के कारण तुम्हारे साथ करेंगे, क्योंकि वे मेरे भेजनेवाले को नहीं जानते" (15:21)। याद रखें कि यीशु मसीह और उसकी कलीसिया पर सताव मुख्य रूप से धार्मिक लोगों की ओर से आया था। यह बात मसीही युग के लगभग सभी युगों में सच रही है। लोग धार्मिक हैं, या अपने विश्वासों के प्रति ईमानदार हैं, या अपने विश्वास में सक्रिय हैं, इससे यह साबित नहीं होता कि वे परमेश्वर को जानते हैं। मसीह को ठुकरा देनेवाली सब बातों के पीछे शैतान है, जो प्रकाश के दूत का रूप धरता है, जो झूठ का पिता और शुरु से ही धोखेबाज है।

दुनिया का पहला झूठा धर्म कैन ने स्थापित किया था। यह आत्म-प्रयास, अच्छे शब्द और शैतान द्वारा प्रेरित बलिदान का धर्म था। उस धर्म में लहू, क्रूस, मेमना, मसीह, सत्य कुछ नहीं था। जब कैन को पता चला कि उसके धर्म के नमूने को परमेश्वर ने स्वीकार नहीं किया, जबकि उसके भाई हाबिल को स्वीकार कर लिया है, तो वह क्रोधित हो गया। उसने अपने झूठे धर्म को अपने भाई के खून से बपतिस्मा दिया। इस संसार का धर्म ऐसा ही है।

यीशु ने कहा, "वे मेरे भेजनेवाले को नहीं जानते।" परमेश्वर के प्रति अज्ञानता से सताव की लहरें उठती हैं।

उस घृणा के परिणाम (15:22) शीघ्र ही स्पष्ट हो जाते हैं : "यदि मैं न आता और उनसे बातें न करता, तो वे पापी न ठहरते; परन्तु अब उन्हें उनके पाप के लिये कोई बहाना नहीं।" प्रभु की उपस्थिति और उपदेश ने सभी झूठे धर्मों को उजागर कर दिया। तब भी इसने ऐसा किया; आज भी ऐसा ही करता है।

यह संसार समय और अनंत काल के सम्पूर्ण इतिहास में हुए सबसे बड़े अपराध का दोषी है : परमेश्वर के देहधारी पुत्र से मुँह मोड़ने का अपराध, उसे क्रूस पर चढ़ाने का अपराध, परमेश्वर के वचनों की अनदेखी करके और उसके लोगों पर अत्याचार करके, पीढ़ी दर पीढ़ी उसी अपराध का समर्थन करने का अपराध। इस निरंतर बैर का नतीजा है कि परमेश्वर के सामने संसार के सभी पापों का खुलासा हो गया है।

प्रभु केवल अपने मित्रों के प्रति ही नहीं, बल्कि अपने पिता के प्रति भी संसार की घृणा को प्रकट करता है (15:23-25)। हम देखते हैं कि यह घृणा किस प्रकार केंद्रित है (15:23-24) : "जो मुझ से बैर रखता है, वह मेरे पिता से भी बैर रखता है। यदि मैं उनमें वे काम न करता जो और किसी ने नहीं किए, तो वे पापी नहीं ठहरते; परन्तु अब तो उन्होंने मुझे और मेरे पिता दोनों को देखा और दोनों से बैर किया।"

यीशु मसीह ने न केवल अपने शब्दों में, बल्कि अपने कार्यों में भी गवाही दी थी। वे कौन से काम थे, "जो और किसी ने नहीं किए" और कौन प्रचंड लहर पर चला है और किसने तूफ़ान को शांत किया है? और किसने पानी को दाखरस में बदला है, रोटियों और मछलियों को बढ़ाया है? और किसने कोढ़ी को शुद्ध किया है, अंधों को दृष्टि दी है, या कब्र में सड़ते हुए मनुष्य को जीवित किया है? और किसने अनगिनत चमत्कार किए हैं? और कौन पूरे तीन दिन और रात कब्र में रहने के बाद मृतकों में से जी उठा है? यह केवल यीशु ने किया है। जो लोग स्वयं को उसके शत्रु, और फलस्वरूप उसके पिता के शत्रु मानते हैं, उनके पास कोई बहाना नहीं है।

ऐसा आरोप आम तौर पर उन सबके लिए सच है जिन्हें सुसमाचार की सीमा के अंदर लाया गया है। यह विशेष रूप से यीशु के समय के यहूदियों के लिए सच है। हमें यह भी याद रखना है कि जब प्रभु अपने चेलों को यह सब बता रहा था, तब भी वह गतसमनी की ओर, यहूदा, महासभा, रोमी अधिकारी एवं उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिए आपस में हाथ मिला रहे लोगों की ओर दृढ़ता से बढ़ रहा था। किसी भी पीढ़ी को इससे बड़ा अधिकार नहीं मिला होगा कि उन्होंने यीशु को शिक्षा देते हुए सुना हो, चमत्कार करते हुए देखा हो, और संसार के प्रति प्रेम की चमक से भरे हुए उसके चेहरे को देखा हो। और इसका बदला क्रूस के द्वारा देना, सबसे बड़ा अपराध था। इस तरह के व्यवहार की एकमात्र व्याख्या परमेश्वर के प्रति इस संसार के बैर में पाई जा सकती थी।

इस घृणा की भविष्यवाणी की गई थी (15:25) : "यह इसलिये हुआ कि वह वचन पूरा हो, जो उनकी व्यवस्था में लिखा है, उन्होंने मुझसे व्यर्थ बैर किया।" यह उद्धरण भजन 35:19 या भजन 69:4 से है, जिसने विशेष रूप से यहूदियों के दोष को और अधिक बढ़ा दिया। यह "उनकी व्यवस्था" में लिखा गया था, अर्थात् वह पवित्रशास्त्र जिसे उन्होंने स्वीकार किया था। जिस बाइबल को महासभा और आराधनालयों ने अपना बताया, जिस पर विश्वास करने का दावा किया, तथा जिसकी रक्षा करने और सिखाने का प्रयास किया, उसने उनकी दुष्टता की भविष्यवाणी की। पवित्रशास्त्र का उनके पास होना उन लोगों के अपराध को बढ़ाता है जो मसीह का इनकार करते हैं।

B. आत्मा परमेश्वर के बारे में प्रकाशन (15:26-16:15)

इस युग में पवित्र आत्मा की सेवकाई के बारे में हम जो कुछ भी जानते हैं, उसमें से अधिकांश हम यीशु के इन शब्दों सीखते हैं। उसकी तीन चरणीय सेवकाई है, जो निम्नलिखित है :

1. स्मरण दिलाने वाली सेवकाई (15:26-27)

पवित्र आत्मा यहाँ लोगों को मसीह की याद दिलाने के लिए है। यूहन्ना 14:26 की पूर्णता सुसमाचारों के लिखे जाने में पाई जाती है। यूहन्ना 15:26-27 की पूर्णता प्रेरितों के काम की पुस्तक की घटनाओं और उसके लिखे जाने में है। वहाँ हम पवित्र आत्मा को चेलों के द्वारा कार्य करते हुए देखते हैं, जो उनकी गवाही को सामर्थ्य और समर्थन प्रदान करता है। प्रेरितों के काम की पुस्तक का सामान्य शीर्षक दर्शाता है कि उस पुस्तक में हम "प्रेरितों के काम" देख सकते हैं। इससे भी अधिक उपयुक्त शीर्षक "पवित्र आत्मा के काम" होगा। पुस्तक के पहले बीस अध्यायों में उसका बार-बार उल्लेख किया गया है। उसकी गवाही सदैव मसीह की होती है।

हम यहाँ, पवित्र आत्मा के भेद को देखते हैं (15:26क-ग)। यीशु ने चेलों को बताया कि वह क्यों आएगा (15:26क,ख) : "परन्तु जब वह सहायक आएगा... सत्य का आत्मा..." वह झूठ की दुनिया में सत्य की गवाही देने आएगा। "झूठ का पिता" (8:44), जो इस दुनिया में सक्रिय है, हमारे लिए बहुत चतुर है। परन्तु उसका पवित्र आत्मा से कोई मुकाबला नहीं है। सत्य का आत्मा, शैतान के झूठ और धोखे को, जिनके द्वारा वह भ्रमित पुरुषों, स्त्रियों, लड़कों और लड़कियों के मनों और जीवन में शासन करता है, प्रकट करेगा और लोगों को उस सत्य की याद दिलाएगा (यूहन्ना 14:6) जो मसीह में, केवल मसीह में पाया जाता है। प्रभु यीशु सत्य है; पवित्र आत्मा सत्य है। जैसे ही यीशु जाने के लिए तैयार हुआ, पवित्र आत्मा आने के लिए तैयार हो गया।

इसलिए यीशु ने चेलों को बताया कि वह कहाँ से आएगा (15:26ग) : "परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूँगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है..." यहाँ (यूहन्ना 14:26) में देखते हैं कि पिता ही पवित्र आत्मा को भेजता है; यहाँ (यूहन्ना 15:26) में देखते हैं कि पुत्र उसे भेजता है। अतः आत्मा पिता और पुत्र दोनों से आता है, जो मसीह के ईश्वरत्व का एक स्पष्ट प्रमाण है।

कलीसियाई इतिहास के छात्र जानते हैं कि यह पद एक बड़े विवाद का विषय रहा है। नाइसीन विश्वास कथन पवित्र आत्मा के बारे में कहता है, "वह पिता और पुत्र से आता है," और यह यूहन्ना 14:26 और 15:26 द्वारा प्रमाणित विश्वास का सूत्र है। अतः इस सत्य को अंगीकार किया जाता है कि पवित्र आत्मा स्वयं परमेश्वर है एवं उसकी सामर्थ्य और प्रकृति पिता एवं पुत्र के समान ही है। दोनों अनुच्छेदों में (पवित्र आत्मा को दिखाने के लिए) उपयुक्त शब्द *'एकेनोस'* है, जो उल्लेखनीय है क्योंकि एक पुल्लिंग सर्वनाम को एक नपुंसक लिंग संज्ञा को दर्शाने के लिए बनाया गया है, इस प्रकार पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व पर जोर दिया गया है।

"और पुत्र" नामक भाग (जिसे धर्मविज्ञानियों "फिलिओक भाग" कहा) को 589 ईस्वी में स्पेन में टोलेडो की परिषद के दौरान नाइसीन विश्वास कथन में जोड़ा गया था। "पवित्र आत्मा का दो स्थानों से निकलना," ने एक ऐसे विवाद को जन्म दिया जिसने यूनानी कलीसिया को पश्चिमी कलीसिया से अलग कर दिया।

हालाँकि, असली मतभेद सैद्धान्तिक मुद्दे पर उतना नहीं था जितना कि इस भाग को जोड़ने के तरीके पर था। इफिसुस की परिषद (छठा सत्र, 22 जुलाई, 431 ईस्वी) ने निर्णय लिया था कि नाइसीन फॉर्मूले में बदलाव नहीं किया जाना चाहिए, और किसी अन्य का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। इसलिए, आपत्ति इस बात में इतनी नहीं थी कि फिलिओक भाग को विश्वास-कथन में जोड़ा जाए या नहीं, बल्कि यह थी कि मनमाने तरीके से कलीसिया के एक हिस्से द्वारा शेष कलीसिया की सहमति के बिना सर्वभौमिक विश्वास कथन के शब्दों में परिवर्तन किया गया था।

"वह पिता और पुत्र से आता है" को कई लोग यह समझते हैं कि वह अनंतकाल तक आगे बढ़ता रहता है। इसका महत्व पवित्र आत्मा को पिता और पुत्र के बीच आपसी संबंध का माध्यम बनाने में निहित है और इस प्रकार त्रिएकता एकता पूरी होती है। यदि "भेजना" केवल पिता की ओर से होता, तो सहमति नहीं दिखाने का विचार अधिक स्पष्ट होता — और त्रिएकता के पूर्ण सिद्धांत को आघात पहुँचता। (देखें T. C. Hammond, *The One Hundred Texts*, pp. 269-270.)

यहाँ पवित्र आत्मा का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल किया गया सहायक शब्द बहुत ही सीमित है। वह हमें सुरक्षित रखने के लिए "साथ बुलाया गया" है, जो हमारी सभी आवश्यकताओं को पूरा करता है।

हमारे लेख के दोनों भागों में प्रयुक्त शब्द, 'से' एक सामान्य शब्द एक्क ("में से") नहीं है जो स्त्रोत की ओर इशारा करता है, बल्कि पैरा ("के पास से") है जो स्थिति को दिखाता है।

निकलता है (एकपोरेउओमाई) शब्द अपने आप में किसी स्त्रोत से आने या किसी मिशन पर आगे बढ़ने का वर्णन कर सकता है। यह तर्क आगे रखा गया है कि पहले के अर्थ में उस स्त्रोत को परिभाषित करने के लिए उपसर्ग 'एक्क' की जरूरत होगी; बाद के अर्थ में उपसर्ग 'पैरा' उपयुक्त होगा। इस उपसर्ग का प्रयोग सामान्यतः क्रिया "निकलना" के साथ पुत्र के मिशन को व्यक्त करने के लिए किया जाता है (16:27; 17:8)। यहाँ इस उपसर्ग का उपयोग दृढ़ता से सुझाव देता है कि पवित्र आत्मा के "निकलने" का संदर्भ उसके अस्थायी मिशन से है, न कि अनंत आगमन से।

संभवतः, यहाँ यूहन्ना 15:26 में प्रभु के शब्द मुख्य रूप से "ईश्वरीय प्रकृति की अनंत गहराई" का उल्लेख नहीं करते हैं और न ही उस भेद भरे संबंध का उल्लेख करते हैं जो ईश्वरत्व के तीन व्यक्तियों के बीच मौजूद है। यह संभव है कि यहाँ प्रभु पृथ्वी पर अपने मिशन के लिए पवित्र आत्मा के ऐतिहासिक आगमन का उल्लेख कर रहा है। संभवतः निकलना शब्द का प्रयोग यहां 'भेजना' शब्द (14:26) के विपरीत पवित्र आत्मा के स्वैच्छिक, स्वतंत्र कार्य को दर्शाने के लिए किया गया है, जो न केवल पिता द्वारा भेजा गया है बल्कि पृथ्वी पर अपने काम के लिए अपनी इच्छा से "निकलता" है।

प्रभु पवित्र आत्मा की अभिप्रेरणा का उल्लेख करता है (15:26घ-27)। उसकी सर्वोच्च सेवकाई परमेश्वर के पुत्र की महिमा करना है (15:26घ) : "वह मेरी गवाही देगा।" पृथ्वी पर उसका काम लोगों को यीशु के बारे में याद दिलाना, पुरुषों, स्त्रियों, लड़कों और लड़कियों को यीशु के लिए जीतना है।

उसकी पूरक सेवकाई परमेश्वर के भक्तों में ऊर्जा भरना है (15:27) : "और तुम भी मेरे गवाह हो क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ रहे हो।" प्रेरितों के काम की पुस्तक में यह आंशिक रूप से दर्ज है कि प्रेरितों ने यह कैसे किया। उन्होंने पवित्र आत्मा के बपतिस्मा, भरे जाने और अभिषेक के द्वारा किया। उसके बिना उन्होंने कुछ भी हासिल नहीं किया होता। उसके साथ उन्होंने संसार को उलट-पुलट कर दिया।

तथ्य ये हैं। एक ईश्वरीय व्यक्ति को, जिसका निवास स्थान अनंत काल से पिता के पास रहा है, मसीह द्वारा पृथ्वी पर उसकी गवाही देने, उसका प्रतिनिधि होने, मानो उसका दूसरा स्वरूप होने के लिए भेजा गया है। यह सर्वशक्तिमान, व्यक्तिगत पवित्र आत्मा, मसीह यीशु में विद्यमान सत्य से तैयार होकर, यीशु को महिमा देने, शैतान के कार्यों में बाधा डालने, नरक से आत्माओं को बचाने, विश्वासियों को ऊर्जा देने, तथा उनके सहायक, परामर्शदाता और साथी के रूप में उनके साथ खड़े होकर उन्हें सशक्त बनाने, उनका मार्गदर्शन करने और उनका उपयोग करने के लिए इस पृथ्वी पर आया है।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि ये लोग जो शक्तिहीन, भयभीत और अप्रभावी थे, अचानक से बहादुर, अनंत और सफल हो गए। एक बार जब पवित्र आत्मा आ गया, तो कोई उन्हें रोक नहीं पाया।

2. उसकी निरुत्तर करनेवाली सेवकाई (16:1-11)

पवित्र आत्मा का दूसरा बड़ा कार्य, जैसा कि यीशु ने गतसमनी की ओर जाते हुए सिखाया, मसीह का इनकार करने के कारण इस इस दुष्ट संसार को निरुत्तर करना है। इस भाग में तीन मुख्य विषय हैं। पहला, यहूदी आराधनालय के प्रति बड़ी नापसंदगी (16:1-4क)। आराधनालय फिलिस्तीन और समस्त यहूदी क्षेत्रों में यहूदी

धार्मिक जीवन का स्थानीय केंद्र था। किसी भी समुदाय में जहाँ यहूदी रहते थे, वहाँ यदि दस पुरुष मौजूद हों, तो वे आराधना और धार्मिक शिक्षा के लिए एक आराधनालय बना लेते थे। यूहन्ना व्यवहारिक रूप से, अपने सुसमाचार में आराधनालय की अनदेखी करता है। वैसे भी, जब उसने अपना सुसमाचार लिखा, तब यह सुसमाचार के प्रति शत्रुता का एक संस्थागत केंद्र बन चुका था। प्रभु ने इसकी शत्रुता का स्वाद चखा था। अब वह चेलों को इसके विरुद्ध चेतावनी देता है।

सबसे पहले, उसने चेलों से आराधनालय की शत्रुता से ठोकर न खाने का आग्रह किया (16:1-3) : "ये बातें मैंने तुमसे इसलिये कहीं कि तुम ठोकर न खाओ। वे तुम्हें आराधनालयों में से निकाल देंगे, वरन् वह समय आता है, कि जो कोई तुम्हें मार डालेगा वह समझेगा कि मैं परमेश्वर की सेवा करता हूँ। ऐसा वे इसलिये करेंगे कि उन्होंने न पिता को जाना है और न मुझे जानते हैं।" "ठोकर" के लिए 'स्कैंडालिज़ो' नामक क्रिया का उपयोग किया गया है जिसका शाब्दिक अर्थ है, "बदनाम करना" या "ठोकर खाना।" यूहन्ना ने इसका उपयोग कफरनहूम के लोगों का वर्णन करने में किया जिन्होंने आराधनालय में प्रभु की शिक्षा की कठोरता के कारण ठोकर खाई थी (6:61)। वास्तव में कुछ ही समय बाद, गतसमनी में गिरफ़्तारी के लिए प्रभु के द्वारा दिखाई नम्र अधीनता से उसके चेलों ने "ठोकर खाई" (स्कैंडेलाइज्ड) (मरकुस 14:27)। जन्म से अंधे व्यक्ति को, जिसे यीशु ने चंगा किया था, मसीह के बारे में साहसिक गवाही देने के कारण आराधनालय से निकाल दिया गया था (यूहन्ना 9:22, 34)। मसीह का समर्थन करने के लिए आराधनालय से निकालने का खतरा, पहले से ही लोगों पर मंडरा रहा था, और काफी सफल भी रहा था (12:42)।

शत्रुता बनी रहेगी। आराधनालयों में पौलुस के संदेश का पूरा आशय समझ में आते ही, हर शहर के आराधनालय उसके खिलाफ हो गए। यूहन्ना के दिन तक, आराधनालय की प्रार्थनाओं में नाजीरों पर एक विशेष अभिशाप शामिल कर दिया गया था ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि प्रभु का कोई भी अनुयायी सेवा में भाग न ले पाए। यहूदी महासभा द्वारा अनुमोदित अभिशाप में कहा गया है : "नाजीर और विधर्मी, एक पल में नष्ट हो जाएँ, जीवन की पुस्तक से उनका नाम मिटा दिया जाए और धर्मी लोगों में उनका नाम न लिखा जाए।"

प्रभु कि चेतावनी और आगे बढ़ी। एक ऐसा समय भी आएगा जब मसीहियों को मार डालना परमेश्वर की सेवा करने जैसा, एक सराहनीय कार्य समझा जाएगा। उस दिन के पहुँचने में ज्यादा देर नहीं लगी, जैसा कि स्तिफनुस की शहादत में दिखाया गया है। पौलुस ने स्वयं कबूल किया कि मसीह को जानने से पहले, वह मसीहियों की हत्या और सताव को धार्मिक उत्साह की सच्ची अभिव्यक्ति मानता था (फिलिप्पियों 3:6)।

प्रभु ने अपने चेलों को चेतावनी दी कि उन्हें इन बातों से चौंकने की जरूरत नहीं है (16:4क) : "परन्तु ये बातें मैं ने इसलिये तुम से कहीं, कि जब इनका समय आए तो तुम्हें स्मरण आ जाए कि मैं ने तुम से पहले ही कह दिया था।" चेले थोड़े थे परंतु उनके शत्रु बहुत होंगे। चेले अज्ञानी और अनपढ़ थे, उनके शत्रु विद्वान और शक्तिशाली होंगे; चेले कमजोर थे, उनके शत्रु ताकतवर और राष्ट्र की धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक और सैन्य शक्तियाँ को उनके विरुद्ध उकसाने में काबिल होंगे। और ऐसा युगों से होता हुआ आया है। परंतु यह सब परमेश्वर को पहले से ही पता था और परमेश्वर के गूढ़ उद्देश्य के द्वारा रखा जा चुका है।

हम सूर्य को अंधकारमय होते देखते हैं और इसे सहजता से लेते हैं। पहले भी ऐसा हो चुका है; यह फिर से होगा। यह फिर वैसा ही हो जाएगा; अंधेरा अस्थाई है। सब कुछ नियंत्रण में है। नफरत और सताव से पहले भी, यह संसार रहा है। परमेश्वर की दाहिनी ओर, ऊँचे पर और महिमा में जो बैठा है, उस पर कलवरी के निशान हैं। यहाँ

पृथ्वी पर, हमारे भीतर और हमारे चारों ओर, पवित्र आत्मा है। सताव आएगा। मसीहियत के चरित्र, संसार की दुष्टता और इसके दुष्ट राजकुमार की नफरत को देखा जाए तो निस्संदेह, बड़े और छोटे सताव तो आएँगे ही। परन्तु शैतान जीत नहीं सकता। यह सब परमेश्वर की अनंत योजना में निर्धारित किया गया है। शहीदों का खून कलीसिया का बीज बन जाता है। समय के साथ, परमेश्वर के लोग उभरते हैं, शुद्ध होते हैं और पहले से कहीं अधिक शक्तिशाली बनते हैं।

हमें इस दुनिया की नफरत से चौंकना नहीं है। यह अपेक्षित है। लेकिन इसके बाद एक अनंत काल आ रहा है! गरीब अधेड़ अंकल टॉम ने क्रूर साइमन लेग्री से यही कहा था, जब उसके दुष्ट मालिक ने उसे धीमी आग में भूनने की धमकी दी थी। हैरियट बीचर स्टोव ने चिल्लाकर कहा, “अनंतता!” इस शब्द से मसीही दास की आत्मा को आनंद मिला। यह साइमन लेग्री की आत्मा में भय की एक ऐंठन की तरह दौड़ गया।

आराधनालय का विरोध काफी बुरा था। लेकिन इन मूक चेलों के दृष्टिकोण से, यह उनके लिए सिर मुँड़ाते ही ओले गिरने के सामान था। उद्धारकर्ता भी उन्हें छोड़कर जा रहा था (16:4ख-6)। प्रभु ने इस विषय को इसलिए फिर से बताया कि वह उन बातों को स्पष्ट करे जिन्हें उसने अतीत में गुप्त रखा (16:4ख) : “मैं ने आरम्भ में तुम से ये बातें इसलिये नहीं कहीं क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था।” वह संसार की नफरत का खामियाजा भुगतने के लिए वहां मौजूद था। उन्हे कोई ख़तरा नहीं था। वह उनके और दुश्मन के बीच खड़ा था। क्यों उन्हें बेवजह निराश करना? इससे पहले कि संसार की आने वाली घृणा के बारे में अधिक स्पष्ट रूप से बोलना आवश्यक हो, उनके दिलों को बुरी आशंकाओं से क्यों भरना? वह समय देना चाहता था कि वे उसे बेहतर तरीके से जानें, चीजों के आत्मिक पक्ष को पहचानें और उसके ईश्वरत्व अच्छे से समझ लें।

जब परमेश्वर इस्राएल को मिस्र से बाहर लेकर आया, तो उसने उन्हें विशालकाय मनुष्यों, बड़ी-बड़ी दीवारों से घिरे शहरों और अनाकवंशियों के बारे में पहले से नहीं बताया था। उनके बारे में वे समय आने पर पता लगा लेंगे। लेकिन तब तक उन्होंने मिस्र के विरुद्ध परमेश्वर की शक्ति को प्रकट होते हुए देख रखा था, उन्होंने लाल सागर को पार करने का, जंगल में हुए चमत्कारों का अनुभव किया था। उन्होंने चट्टान की दरार से पानी पीया था और अमालेक के साथ युद्ध और जीत के मीठे स्वाद का अनुभव किया था। उन्होंने सीनै में एक वर्ष बिताया और आज्ञाकारिता के जीवन के सिद्धांतों को सीखा था। तब तक कनान के विशालकाय मनुष्यों को स्वतः ही उनके विश्वास के सामने बौना हो जाना चाहिए था। इसी प्रकार, प्रभु ने मसीही जीवन की कठोर वास्तविकताओं के बारे में बात करना अब तक रोक रखा था।

इसके अलावा, उसने इन बातों के बारे में अपनी वर्तमान स्पष्टता को समझाने के लिए अपने शीघ्र प्रस्थान के विषय को फिर से प्रस्तुत किया (16:5) : “परन्तु अब मैं अपने भेजनेवाले के पास जाता हूँ; और तुममें से कोई मुझसे नहीं पूछता, तू कहाँ जाता है?” निस्संदेह पतरस और थोमा ने प्रभु से उसके प्रस्थान के बारे में प्रश्न पूछे थे; प्रभु स्पष्टतः यह भूला नहीं था। लेकिन उन्होंने उससे यह नहीं पूछा था कि वह यहाँ बताए गए अर्थ में कहाँ जा रहा है। वे अपने स्वयं के तात्कालिक नुकसान और उस हताशा से चिंतित थे जो उनकी आत्माओं में भर गई थी। वे चिंतित थे कि उसके जाने से उन पर क्या प्रभाव पड़ेगा; उन्होंने यह नहीं पूछा था कि इसका उस पर क्या प्रभाव पड़ेगा। वे केवल मेज की खाली जगह के बारे में ही सोच पा रहे थे। उन्हें इस बात का ज़रा सा भी अंदाज़ा नहीं था कि वह किस महिमामय स्थान पर जा रहा है।

वे निश्चित रूप से उससे पूछ सकते थे कि : “इस प्रस्थान का तेरे लिए क्या अर्थ होगा?” अपने स्वार्थ में उन्हें केवल अपना ही दुःख ही नजर आ रहा था। अपने प्रेम में वे शायद इस बात पर चर्चा करते कि उसके जाने से उसे कितनी खुशी मिलेगी। यदि वे थोड़े कम स्वार्थी और थोड़े अधिक प्रेमपूर्ण होते, तो उसके जाने के उनके विचारों में वह महिमा और आनंद भी मिला होता जिसमें वह जा रहा था। इतना ही नहीं, अगर उन्होंने अपने विचारों में स्वर्गारोहित मसीह के बारे में सोचा होता, जो उनके लिए “ऊँचे पर विराजमान” के दाहिने हाथ बैठा है, तो ऐसे विचारों ने उन्हें भी आनंद से भर दिया होगा। यह सोचना कि उनके पास परमेश्वर के दाहिने हाथ एक मित्र होगा, एक महान महायाजक, जो उनकी कमज़ोरियों की भावनाओं को समझता है, पिता के पास एक वकील है, जो सर्वोच्च सामर्थ्य में उनके लिए मध्यस्थता करने में सक्षम है।

इसके बजाय, वे स्वाभाविक परन्तु अनात्मिक दुःख से भर गए : “परन्तु मैं ने जो ये बातें तुम से कहीं हैं, इसलिये तुम्हारा मन शोक से भर गया है” (16:6)। भेड़ों का यह महान चरवाहा कितना कोमल था। उसने उनकी भावनाओं के लिए अपनी भावनाओं को डुबो दिया, इसके बावजूद कि उसका हर कदम उसे गतसमनी के करीब ला रहा था। सच्चे प्रेम के बारे में पौलुस के इन शब्दों से बड़ी कोई टिप्पणी नहीं मिल सकती : “प्रेम धीरजवन्त है, और कृपालु है.... प्रेम बड़ाई नहीं करता.... अपनी भलाई नहीं चाहता.... कभी टलता नहीं” (1 कुरिन्थियों 13:4- 8)। प्रभु उनसे प्रेम करता रहा, उनसे बात करता रहा, उनके टूटे हुए दिलों और भयभीत आत्माओं पर अपनी असीम सहानुभूति और असीमित परवाह का मरहम लगाता रहा।

यह सब किसी और बात की ओर ले जा रहा था : आत्मा का नियुक्त आगमन (16:7-11)। यीशु ने पहले ही उन्हें इस दूसरे सहायक के बारे में बहुत कुछ बता दिया था। अब वह उन्हें और बताता है। यूहन्ना का मन और याददाश्त, उस आत्मा से प्रेरित होकर, उसके शब्दों पर फिर से ध्यान देता है, जो उनके लिए समयोचित था (16:7) : “तौभी मैं तुमसे सच कहता हूँ कि मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊँ तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा; परन्तु यदि मैं जाऊँगा, तो उसे तुम्हारे पास भेजूँगा।”

अपने हृदयों में उन्होंने सोचा होगा कि वे प्रभु के अदृश्य पवित्र आत्मा की अपेक्षा, उसकी शारीरिक उपस्थिति को अधिक पसंद करेंगे। वे अभी तक सीमित शारीरिक उपस्थिति को असीमित सार्वभौमिक उपस्थिति से बदलने के महत्व को समझ नहीं पाए थे। वे अभी तक पवित्र आत्मा को नहीं जानते थे; निस्संदेह वे उसे वैसे नहीं जानते थे जैसे यीशु उसे जानता था।

मान लीजिए कि अपने पुनरुत्थान के बाद यीशु ने अपने चेलों से कहा होता कि उसने अपने स्वर्ग के घर में जाने के बजाय, जाकर पवित्र आत्मा को भेजने के बजाय, स्वयं यहीं रहने का फैसला किया है। मान लीजिए कि उसने यह कहा होता, “सुन पतरस, मैं यहाँ यरूशलेम में अपना मुख्यालय स्थापित करने की सोच रहा हूँ। और फ़िलहाल, वह यही ऊपरी कक्ष होगा। मैं बहुत लंबे समय तक रहने की सोच रहा हूँ। आप नियुक्तियों के प्रभारी हो सकते हो। लोग मुझसे मिलना चाहेंगे। कोई भी साक्षात्कार पन्द्रह मिनट से अधिक नहीं चलेगा। बीच बीच में, मैं दूसरे देशों के दौरे भी करूँगा, लेकिन यरूशलेम मेरा स्थायी निवास स्थान होगा। लोगों के साथ मेरा व्यवहार सख्त और क्रम में होगा। कोई पक्षपात नहीं होगा, किसी भी श्रेणी या विशेषाधिकार के लिए कोई रियायत नहीं होगी। हर व्यक्ति को व्यक्तिगत समय मिलेगा और उन्हें मुझसे बात करने और अपना दिल और मन खोलकर मुझसे विनती करने की अनुमति दी जाएगी।”

हम परिणाम की कल्पना कर सकते हैं। जल्द ही प्रतीक्षा की एक अंतहीन सूची बन जाती। लोग एक छोटे से साक्षात्कार के लिए जीवन भर इंतजार करने को तैयार रहते। बहुत से लोग शायद मिल भी न पाएँ। कुल मिलाकर, वह एक असंतोषजनक व्यवस्था होती। इसके बजाय, यीशु उन सबके लिए उपलब्ध है जो उसका नाम पुकारते हैं। पवित्र आत्मा हमारे हृदयों में उन सभी महान और अत्यंत बहुमूल्य वादों को पूरा करने के लिए यहाँ है जो परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार का हिस्सा हैं। इसलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि यीशु ने कहा, "मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा है।"

यूहन्ना ने वह भी लिखा कि जो पवित्र आत्मा के आगमन के बारे में उन्हें समझाया गया था (16:8-11)। सबसे पहले, पवित्र आत्मा की निरुत्तर करने वाली सेवकाई की घोषणा की गई (16:8)। यह महत्वपूर्ण कार्य हमें संसार में पवित्र आत्मा की एक और सेवकाई के बारे में बताता है। यूहन्ना 3 में हम उसकी नया जीवन देने की सेवकाई के बारे में सीखते हैं। 2 थिस्सलुनिकियों 2 में हम उसकी रोकने की सेवकाई के बारे में सीखते हैं। यहां हम उसकी निरुत्तर करने वाली सेवकाई के बारे में और अधिक सीखते हैं : "वह आकर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर करेगा।" हम सबसे पहले आत्मा की निरुत्तर करने वाली सेवकाई की घोषणा को देखते हैं (16:8)।

परमेश्वर के आत्मा की निरुत्तर करने वाली सेवकाई आत्मा में की जाती है। किसी व्यक्ति की आत्मा में पवित्र आत्मा का पहला कार्य बोध पैदा करना है। एक व्यक्ति को स्वयं को उसी तरह देखना होगा जैसे परमेश्वर उसे देखता है, तथा उसे अपनी खोई हुई स्थिति और अत्यंत आवश्यकता के प्रति सजग होना होगा।

इस प्रकार पवित्र आत्मा पाप की प्रकृति   को "निरुत्तर" करता है (16:8क)। "निरुत्तर" के लिए उपयुक्त शब्द 'एलेग्जेई' है, जिसका अर्थ है "दोषी ठहराना" दोषी होने का फैसला सुनाना। एक व्यक्ति तब तक उद्धार नहीं पा सकता, जब तक कि वह सबसे पहले पवित्र आत्मा के बोध के द्वारा इस जानकारी में न आ जाए कि वह खोया हुआ है।

पवित्र आत्मा, धार्मिकता की जरूरत (16:8ख), परमेश्वर के साथ मेल करने की आवश्यकता के विषय में भी निरुत्तर करता है। एक पापी को मसीह की धार्मिकता धारण कराने का तरीका खोजना जरूरी है। रोमियों की पुस्तक इन बातों के साथ पवित्र आत्मा द्वारा मानवीय विवेक पर अधिकार को दर्शाने के साथ शुरू होती है।

फिर, पवित्र आत्मा न्याय की निकटता   के बारे में भी चेतावनी देता है (16:8ग)। "न्याय" के लिए प्रयुक्त शब्द 'क्रीसिस' है जिसे न्यायिक कार्यवाही में इस्तेमाल किया जाता है और जिसके कई अनुवाद हैं, जैसे कि "विनाश," "दंड," "आरोप" और "न्याय।" रोमियों की शुरुआत एक चेतावनी से होती है कि "परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है" (रोमियों 1:18)। पत्री यह समझाते हुए आगे बढ़ती है कि नया जन्म नहीं पाए हुए मानव व्यवहार में अधर्म और अनैतिकता कैसे प्रकट होती है।

आगे हम, आत्मा की निरुत्तर करने वाली सेवकाई को विस्तृत रूप से देखते हैं (16:9-11)। हमें पाप के अधिकार क्षेत्र के बारे में कुछ बताया गया है (16:9) : "पाप के विषय में इसलिये कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते।" वह पाप है जो नाश करता है और क्षमा नहीं किया जा सकता है। यीशु पर विश्वास करने से इनकार करने के पाप को छोड़कर, परमेश्वर हमारे सभी पापों को माफ कर देगा। इन दोनों पदों में "पाप" के लिए नए नियम में हांमार्टिया शब्द का उपयोग किया गया है जिसका अर्थ है "निशाने से चूकना" और बाइबल में इसका उपयोग हमेशा नैतिक अर्थ में किया जाता है ताकि दोनों प्रकार के, अर्थात् 'चूकना' और 'करना' रूपी पाप का वर्णन किया जा सके। इस

शब्द का प्रयोग पापबलि (इब्रानियों 10:6, 8; 13:11) का वर्णन करने के लिए भी किया जाता है, पुराने नियम की वह भेंट जो सिद्धान्त (पाप के अभ्यास से भिन्न) से संबंधित है — मैं क्या हूँ (एक पापी) जो मैं करता हूँ उससे भिन्न है।

एक व्यक्ति के द्वारा किया जा सकने वाला सबसे बड़ा पाप है कि वह परमेश्वर के प्रिय पुत्र पर विश्वास न करे। यह सबसे बड़ा पाप है, परम पाप है, घोर पाप है। यह उस व्यक्ति के समान है जिसे एक घातक लेकिन इलाज योग्य बीमारी लगी है। वह डॉक्टर के पास जाता है जो उसे एक उपाय बताता है। लेकिन वह व्यक्ति उसे लेने से मना कर देता है। अब यदि वह मरता है तो उसका कारण उसकी बीमारी नहीं, बल्कि इलाज से मना करना है। हम सबकी आत्मा में पाप रुपी घातक वायरस है। लेकिन परमेश्वर ने अपने बेटे में एक अचूक उपाय प्रदान किया है, जो वह हमें विश्वास नामक सरल आधार प्रदान करता है (यूहन्ना 3:16)। पुत्र पर विश्वास नहीं करने वाले, हमेशा हमेशा के लिए खो जाएँगे — इसलिए नहीं कि वे पापी हैं, बल्कि इसलिए कि उन्होंने परमेश्वर के उपाय को स्वीकार करने से मना कर दिया है। जब यीशु किसी के दिल में आता है तो उस पर पाप का अधिकार क्षेत्र समाप्त हो जाता है। पाप का अधिकार क्षेत्र उन लोगों की शापित आत्माओं में अनंतता की पुष्टि करता है जो परमेश्वर के पुत्र से मुंह मोड़ लेते हैं।

जानबूझकर मसीह को इनकार करना या मूर्खतापूर्वक उसकी उपेक्षा करना एक अपमान है जिसे परमेश्वर माफ नहीं करेंगे। सचमुच, वह माफ़ नहीं कर सकते। इसीलिए यीशु, उस पर विश्वास नहीं करने को पाप कहते हैं।

हमें पवित्र लोगों के धर्मी ठहराए जाने के बारे में कुछ बताया गया है (16:10) : "और धार्मिकता के विषय में इसलिये कि मैं पिता के पास जाता हूँ।" यहूदी, अधिकांश लोगों की तरह, केवल नैतिक अपराधों, औपचारिक कानून उल्लंघन और धार्मिक परंपराओं से हटने को ही पाप मानते थे (मत्ती 15:2)। प्रभु यीशु इस संसार का एकमात्र सच्चा धर्मी व्यक्ति था। उसके व्यवहार का मानक परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना था (8:29; इब्रानियों 10:7), एक ऐसी इच्छा जिसका वह हर दिन और हर पल पूरी तरह से पालन करता था। इसलिए अब उसे उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करके सब लोगों को धर्मी बनाया जाना संभव है। परमेश्वर ऐसे व्यक्तियों को "उसी में" में देखता है, "जो हमारे लिए धार्मिकता बना" (1 कुरिन्थियों 1:30; 2 कुरिन्थियों 3:9; 5:21)। रोमियों की पुस्तक के प्रमुख विषयों में से एक विषय यही है, जहाँ मुख्य शब्द धर्मी है।

परन्तु मसीह का कार्य अपने लोगों के लिए होता जा रहा है। "पिता के पास एक वकील, अर्थात् धर्मी यीशु मसीह" हमारे लिए उपस्थित है (1 यूहन्ना 2:1) वह अपने खून से खरीदे हुए लोगों के लिए सेवा करने के लिए वहाँ उपस्थित है, जब तक कि अंततः वह हम सबको सुरक्षित रूप से घर नहीं पहुँचा देता।

अब हमें पापियों के न्याय के बारे में कुछ बताया गया है (16:11) : "न्याय के विषय में इसलिये कि संसार का सरदार दोषी ठहराया गया है।" शैतान, उन सबका स्वामी है जो पापों में जीते हैं, जिनका न्याय हो चुका है (12:31) और जिन्हें सजा सुनाई जा चुकी है। प्रभु यीशु ने अब उस पर और उसकी सभी "प्रधानताओं और अधिकारों" पर विजय प्राप्त कर ली है (कुलुस्सियों 2:15)। क्रूस शैतान का विनाश है। जैसे ही उस प्राचीन सर्प ने कलवरी पर उद्धारकर्ता की एड़ी पर अपने दुष्ट दाँत गड़ाए, उसने महसूस किया कि वही पैर उसके सिर को कुचल रहे हैं (उत्पत्ति 3:14-15)। ऐसा प्रतीत होता है कि उसे अचानक अपनी मूर्खता का एहसास होता है क्योंकि हमने एक बार फिर शैतान की वही पुकार सुनी, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है।" आवाज़ दुष्ट मनुष्यों ने निकाली थी, परन्तु वास्तव में वह पुकार दुष्ट की घातक पुकार थी : "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस पर से उतर आ" (मत्ती

27:40, 42)। शैतान का अंतिम विनाश आग की झील में तय था (प्रकाशितवाक्य 20:10)। उसके साथ सभी पापियों का न्याय किया जाएगा और वे उसके भयानक निवास में उसके साथ रहेंगे (प्रकाशितवाक्य 20:11-15)।

3. उसकी प्रकट करनेवाली सेवकाई (16:12-15)

पवित्र आत्मा की स्मरण दिलाने और निरुत्तर करनेवाली सेवकाई के बारे में बात करने के बाद, प्रभु अब पवित्र आत्मा की प्रकट करनेवाली सेवकाई के बारे में बात करते हैं। वह दो बिल्कुल भिन्न प्रकार के सत्य प्रकट करता है। पहला, जिसे हम कलीसियाई सत्य (16:12-13ख) कह सकते हैं, जिसे हम पत्रियों में पाते हैं। प्रभु ने पिछले अवसरों पर, कलीसिया के आगमन का उल्लेख किया था (मत्ती 16:18; 18:17) लेकिन इसके बारे में बहुत कुछ नहीं बताया। इसका कारण स्वयं चेलों में था। वहाँ एक स्वभाव-संबंधी बाधा थी (16:12) : "मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते।" "सहने" के लिए उपयुक्त शब्द 'बस्टाज़ो' है। इसका प्रयोग स्वयं प्रभु के लिए किया गया है : "वह अपना क्रूस उठाए हुए उस स्थान तक बाहर गया" (19:17)। प्रभु ने इसका उपयोग यहूदी धार्मिक अगुवों की निंदा करने में भी किया है : "हे व्यवस्थापको, तुम पर भी हाय! तुम ऐसे बोझ जिनको उठाना कठिन है, मनुष्यों पर लादते हो परन्तु तुम आप उन बोझों को अपनी एक उँगली से भी नहीं छूते" (लूका 11:46)। यहाँ इस शब्द का अर्थ "सहना" नहीं है, बल्कि 'कुछ उठाना' है। आत्मिक रूप से, चेलों से रोकी गई शिक्षा उनके विकास के इस चरण में, उनकी सहन करने की क्षमता से अधिक थी। यह उस भार की तस्वीर है जिसे उठाने में व्यक्ति असमर्थ है। वजन शायद शुद्ध सोना भी हो, लेकिन यदि वह इसे सहन नहीं कर सकता है, तो यह उसके लिए बहुत भारी होगा। अपने आत्मिक विकास के इस बिंदु पर, यीशु ने कहा, "अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते।" परमेश्वर हम पर कभी हमारे सहन करने से अधिक बोझ हम पर नहीं डालता।

निस्संदेह, एक भाव में प्रभु ने उन्हें पहले ही सब कुछ बता दिया था। उसने उन्हें यह बताकर समाप्त ही किया था : "मैंने जो बातें अपने पिता से सुनीं, वे सब तुम्हें बता दीं" (15:15)। जैसा कि सुसमाचारों में दर्ज है, हम प्रभु की शिक्षा में उन सबका अंश पाते हैं जिसके बारे में पत्रियों में बताया गया है। उसकी प्रायश्चित की मृत्यु, "मसीह में" होना, सर्वभौमिक और स्थानीय कलीसिया, अंत समय की घटनाएँ इत्यादि महान सत्य प्रभु की शिक्षाओं में छुपे हैं। "जैसे बारिश में मेघधनुष छिपा होता है, जैसे कली में फूल होता है," वैसे ही कलीसिया और नए नियम के सारे सत्य का अंकुर मसीह की शिक्षाओं में मौजूद है। बात यह थी कि चेलों के आत्मिक विकास के इस बिंदु पर उनके पूर्ण प्रकटीकरण में एक स्वभावगत बाधा थी। वे पहले से ही उस सच से भ्रमित थे जो वह उन्हें दे रहा था। वह इतना बुद्धिमान था कि उन पर इतना बोझ नहीं लाद सकता था कि वे पूरी तरह डूबने लगें। इसके अलावा कोई जल्दी भी नहीं थी। पवित्र आत्मा नियत समय में इसके शेष भाग को प्रकट करेगा।

आत्मा युगों-संबंधी बाधा को भी तोड़ देगा (16:13क,ख)। पिन्तेकुस्त का दिन युग के बदलाव की शुरुआत करेगा। एक जाति के रूप में इस्राएल का स्थान इस युग में कलीसिया ले लेगी। पवित्र आत्मा मनुष्यजाति के साथ अपने व्यवहार में कुछ ऐसा करेगा जो पहले कभी नहीं किया गया। वह लोगों को कलीसिया, मसीह की भेदरूपी देह में बपतिस्मा देगा (प्रेरितों 1:5; 1 कुरिन्थियों 12:13)। उनकी आत्मिक क्षमताओं का विस्तार किया जाएगा। तब वे ईश्वरीय सत्य को समझ सकेंगे, जो मसीह की भेदपूर्ण शिक्षा में केवल धुंधले रूप में ही समझा जा सकता है।

इसे समझाते हुए, प्रभु ने एक प्रकट करनेवाली प्रक्रिया के बारे में बात की (16:13क) : "परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा।" "बताएगा" के लिए प्रयोग किया गया शब्द

‘होडेगियो’ है, जिसका अर्थ है ‘रास्ता दिखाना।’ यह एक यात्रा, एक प्रक्रिया अथवा आगे बढ़ने को दिखाता है। इथियोपियाई खोजे ने इस शब्द का प्रयोग तब किया जब फिलिप्पुस ने उससे पूछा कि क्या वह यशायाह 53 को समझ सकता है। हैरान खोजे ने कबूल किया, “जब तक कोई मुझे न समझाए तो मैं कैसे समझूँ?... तब फिलिप्पुस ने अपना मुँह खोला, और इसी शास्त्र से आरम्भ करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया” (प्रेरितों 8:31,35)। यही शब्द कलीसिया के उठाए जाने के बाद की अनगिनत भीड़ के लिए प्रयोग हुआ है जो पशु के द्वारा मारे गए थे। पवित्र आत्मा उनके अनंत प्रतिफल पर प्रकाश डालता है : “इसी कारण वे परमेश्वर के सिंहासन के सामने हैं, और.... मेम्ना जो सिंहासन के बीच में है.... उन्हें जीवन रूपी जल के सोतों के पास ले जाया करेगा” (प्रकाशितवाक्य 7:15-17)।

एक-एक करके, पवित्र आत्मा उन सत्यों को प्रकट करता गया जिससे नए नियम की पत्रियाँ बनती गईं जिन्हें हम “कलीसिया का सत्य” कहते हैं। कुछ गहन सत्यों को मौखिक रूप से व्यक्त करने से पहले, प्रेरित पौलुस को बचाने, प्रबुद्ध करने और नया जन्म देने में काफी समय लगा। सत्य के आत्मा ने देहधारी सत्य को लिया (14:6) और इसे लिखित सत्यों में स्थापित किया।

प्रभु ने प्रकट करनेवाले सिद्धांत के बारे में भी बताया (16:13ख) : “क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा।” दूसरे शब्दों में, पवित्र आत्मा ने ईश्वरीय प्रकाशन के उसी सिद्धांत का पालन किया, जिसके अनुरूप यीशु चला। प्रभु ने पहले अपने चेलों से कहा था, “परन्तु मेरा भेजनेवाला सच्चा है, और जो मैं ने उससे सुना है वही जगत से कहता हूँ” (8:26)। इस सदेश में प्रभु ने वही सिद्धांत दोहराया : “जो कुछ मैंने अपने पिता से सुना है, वह सब तुम्हें बता दिया है” (15:15)। पुत्र और पवित्र आत्मा की शिक्षा सत्य के एक ही अचूक स्त्रोत से आती है। पवित्र आत्मा के पास देहधारी वचन में जो कुछ भी है, वही संदेश होगा; वह इसे प्रेरित वचन में स्पष्ट करेगा।

आने वाला पवित्र आत्मा अंत समय के सत्य (16:13ग-15) को भी प्रकट करेगा, वह सत्य जो हमारे पास नए नियम की भविष्यवाणियों में और विशेष रूप से प्रकाशन-संबंधी लेखों में है।

अब हम यह देखने के लिए एक पल के लिए रुकें कि कैसे प्रभु यीशु ने नए नियम पर अपनी ईश्वरीय छाप लगाई जिसने अधिकार के साथ पुराने नियम को, इसके सभी हिस्सों को, परमेश्वर के मौखिक रूप से प्रेरणा-प्राप्त और अचूक वचन के रूप में प्रमाणित किया। पुराने नियम के लेख को प्रेरणा देनेवाले उसी अचूक पवित्र आत्मा ने जिसमें पूर्ण और मौखिक प्रेरणा के सभी लक्षण मौजूद हैं, नए नियम के लेख को भी प्रेरणा प्रदान की :

- सुसमाचार *:* “परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा” (14:26)।
- प्रेरितो के काम *:* “परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूँगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा। और तुम भी मेरे गवाह हो क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ रहे हो” (15:26-27; तुलना करें प्रेरितों के काम 1:8)।
- पत्रियाँ *:* “मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते। परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा” (16:12-13)।

- प्रकाशन-संबंधी लेख *:* “परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा। वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा” (16:13-14)।

अंत समय के प्रकाशन से सम्बंधित प्रभु के वचनों की ओर लौटते हुए, हम ध्यान देते हैं कि पवित्र आत्मा आने वाली बातों को प्रकट करेगा (16:13ग) : “वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।” “बताएगा” (शाब्दिक अर्थ, “घोषणा करेगा”) को 13, 14 और 15वें पद के अंत में गंभीरता से जोर देकर दोहराया गया है। आने वाली चीज़ों से संबंधित सच नए नियम में विभिन्न स्थानों पर पाये जाते हैं : प्रभु के दृष्टांतों में, जैतून पहाड़ के सदेश में, पौलुस की पत्रियों में (विशेष रूप से, थिस्सलुनीकियों की कलीसिया और तीमुथियुस के लिए), पतरस की दूसरी पत्री में, यहूदा में, और प्रकाशितवाक्य में।

आत्मा का प्रकाशन मुख्य रूप से मसीह की बातों को प्रकट करेगा (16:14-15); जैसा कि कहा गया है, पवित्र आत्मा का प्रमुख कार्य मसीह के व्यक्तित्व को महिमा देना है (16:14क) : यीशु ने कहा, “वह मेरी महिमा करेगा।” जल्द ही लोग उसके चेहरे पर थूकेंगे, उसकी आंखों पर पट्टी बांधेंगे, उसे मुक्के मारेंगे, उसे नकली बैंगनी रंग के कपड़े और कांटों का ताज पहनाएँगे। वे उसे कोड़े मारेंगे, क्रूस पर चढ़ाएँगे, उसकी मृत्यु के समय उसका मज़ाक उड़ाएँगे। प्रभु ने इन सबसे परे उस महिमा को देखा जो उसके बाद आने वाली थी। पवित्र आत्मा उस महिमा को नए नियम के कई चमकदार अनुच्छेदों में प्रकट करेगा, लेकिन विशेष रूप से अंत समय के प्रकाशन में, “यीशु मसीह का प्रकाशन [प्रकटीकरण]” (प्रकाशितवाक्य 1:1)।

पवित्र आत्मा का कार्य मसीह की श्रेष्ठता को बढ़ाना भी है (16:14ख-15) : “क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा। जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है; इसलिये मैं ने कहा कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।” प्रभु यीशु पिता की जीवित व्याख्या थे; अब आत्मा को पुत्र की जीवित व्याख्या बनना था। पिता जो कुछ था, उसकी व्याख्या पुत्र ने की थी; पुत्र जो कुछ था, उसकी व्याख्या आत्मा द्वारा की जाएगी। प्रभु यीशु ने अपने चेलों को पिता के बारे में बड़े विचार सोचना सिखाया; पवित्र आत्मा हमें पुत्र के बारे में बड़े विचार सिखाने के लिए यहाँ है। यदि कोई शिक्षा जो मसीही शिक्षा कहलाती है, वह हमारे समक्ष मसीह की स्तुति और महिमा नहीं करती, तो यह पवित्र आत्मा की ओर से नहीं है।

C. पिता परमेश्वर के बारे में प्रकाशन (16:16-33)

इस प्रकार पवित्र आत्मा के बारे में प्रभु की व्यापक शिक्षा समाप्त होती है। वह अब भी रात में गतसमनी की ओर बढ़ रहा था। इस लंबे और जटिल वार्तालाप को समाप्त करते हुए, वह अपने चेलों से एक बार फिर अपने पिता के बारे में बात करता है। वह अपने पिता से प्रेम करता था। वह उसके बारे में उनसे ज्यादा बात नहीं कर सकता। उसका पिता उसके लिए सब कुछ था, और वह चाहता था कि वह हमारे लिए भी सब कुछ हो।

1. जीवन के अद्भुत वचन (16:16-28)

हम जीवन के अद्भुत वचनों को चार बिंदुओं के आसपास सारगर्भित कर सकते हैं : थोड़ी देर (16:16-19), थोड़ा सा रोना, थोड़ा सा वचन, और थोड़ा इंतजार।

इनमें से पहले से शुरुआत करते हुए हम ध्यान देते हैं कि यीशु ने क्या घोषणा की (16:16-18)। उसे एक रहस्य से भरा कथन कहना था। वह कथन चेलों से कहा गया था (16:16) : “थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, और फिर

थोड़ी देर में मुझे देखोगे। तब उसके कुछ चेलों ने आपस में कहा, यह क्या है जो वह हम से कहता है, थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, और फिर थोड़ी देर में मुझे देखोगे? और यह इसलिये कि मैं पिता के पास जाता हूँ?" अंतिम भाग, "इसलिये कि मैं पिता के पास जाता हूँ?" कई लोगों द्वारा लेख-संबंधी आधार पर हटा दिया गया है। जब प्रभु ने कथन दोहराया (16:19) तो उसने इसे इसमें शामिल नहीं किया। यह कुछ ऐसा है जिसे चेलों ने अपनी घबराहट में जोड़ा (16:17)। इसलिए ऐसा लगता है कि पद 16 का यह भाग इसकी प्रति बनानेवाले की गलती के कारण है, जो पद 17 से आया है।

इस कथन ने परमेश्वर के केवल तत्कालीन चेलों को ही उलझन में नहीं डाला, और विभिन्न स्पष्टीकरण दिए गए हैं। उन्होंने कहा, "थोड़ी देर में, और तुम मुझे नहीं देखोगे।" "देखोगे" के लिए शब्द है थियोरियो (शाब्दिक रूप से, "दर्शक बनना"; यह वह शब्द है जिससे हमें थिएटर शब्द मिलता है)। विचार यह है कि उस पर मनन किया जाए, उसे आमने-सामने देखा जाए, उस तरह से देखा जाए जैसे उस समय चेले थे। वह उनकी दृष्टि से ओझल होने वाला था। "थोड़ी देर" वास्तव में बहुत कम समय था। वह पहले से ही कब्र की ओर जा रहा था।

"फिर, थोड़ी देर।" यह संभवतः उसके पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के बीच की अवधि को दर्शाता है, वह रहस्यमय चालीस दिन जब वह प्रकट हुआ और गायब हो गया, जब उन्होंने उसे देखा और फिर उनकी आँखों के सामने से गायब हो गया। यह एक अजीब समय था जब उनके पास न तो उसके साथ वह निकटता थी जिसका उन्होंने उसके देहधारण के दिनों का आनंद लिया था और न ही उसके साथ वह आत्मिक एकता थी जो पिन्तेकुस्त के बाद उनकी होनी थी।

उसने कहा, "तुम मुझे देखोगे।" "देखोगे" वही शब्द नहीं है जिसका अभी प्रयोग किया गया था। वे उसे एक नए तरीके से देखने जा रहे थे, ऐसे जैसे उन्होंने उसे पहले कभी नहीं देखा था। यही वह भाग है जिसमें समस्या है। जब यीशु ने कहा "तुम मुझे देखोगे" तो उसका क्या मतलब था,? यहाँ शब्द ओराओ है, जिसका अर्थ है "समझना।" वे साढ़े तीन साल से उसे देख रहे थे और धीरे-धीरे उन्हें उसकी महिमा और ईश्वरीय व्यक्तित्व का कुछ-कुछ आभास होने लगा था। थोड़ी ही देर में वे सहज रूप से उस सब को समझने वाले थे जो मसीह था। पिन्तेकुस्त से फर्क पड़ेगा। इस प्रकार परमेश्वर का यह कथन विषय का अचानक परिवर्तन नहीं है। पवित्र आत्मा परिवर्तन को प्रभावित करेगा। इस नए दृष्टिकोण की शुरुआत पुनरुत्थान पर हुई थी। उस दर्शन का विस्तार अचानक पिन्तेकुस्त में हुआ। इसकी अंतिम अभिव्यक्ति उत्साह की प्रतीक्षा कर रही है जब हम उसे "आमने-सामने" देखेंगे (1 कुरिन्थियों 13:12)। आज हम उसे विश्वास की दृष्टि से देखते हैं।

यह कथन चेलों को समझ में नहीं आया (16:17-18) : "तब उसके कुछ चेलों ने आपस में कहा, यह क्या है जो वह हम से कहता है, थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, और फिर थोड़ी देर में मुझे देखोगे? और यह इसलिये कि मैं पिता के पास जाता हूँ?" (ऐसा प्रतीत होता है कि यह भाग पद 10 में उसके पिछले कथन से डाला गया है — "मैं पिता के पास जाता हूँ, और तुम मुझे फिर न देखोगे।") "तब उन्होंने कहा, यह 'थोड़ी देर' जो वह कहता है, क्या बात है? हम नहीं जानते कि वह क्या कहता है।"

वे बहुत समय से उसकी बातें सुन रहे थे और उसका अनुसरण करने का भरपूर प्रयास कर रहे थे। वे उसके बार-बार इस बात पर जोर देने से उदास थे कि वह जा रहा है। एक से अधिक बार उन्हें लगा कि वे अपनी गहराई से बाहर हैं। अब उन्हें लगा कि वे पूरी तरह डूब गए हैं। हम उनकी आवाजों में चिड़चिड़ापन और निराशा के स्वर को महसूस कर सकते हैं क्योंकि वे अंततः अपनी घबराहट व्यक्त करते हैं — उसके प्रति नहीं, बल्कि एक-दूसरे के। हम

इसकी सराहना कर सकते हैं। यहाँ तक कि नए नियम के प्रकाशन का पूरा प्रकाश हमारे हाथों में होने, तथा हमारा मार्गदर्शन करने के लिए पवित्र आत्मा के यहाँ होने, तथा हमारी अलमारियों में टीकाओं की भरमार होने के बावजूद, हम अब भी इस ऊपरी कमरे — गतसमनी के मार्ग के वार्तालाप को थोडा सा भी समझने में असफल रहते हैं।

चेले हममें से बाकी लोगों से बहुत अलग नहीं थे। उन्होंने अपने धैर्य को खो दिया। वे अब भी अपनी आत्मिक शिशु अवस्था में थे, उन्हें अब भी दूध की आवश्यकता थी। पर यह कठोर भोजन था जिसे प्रभु उनके सामने रख रहा था। वे यह सब छोड़ देने के लिए लगभग तैयार थे। लेकिन छः सप्ताह के बाद, उनका अधिकांश भ्रम प्रचंड पिन्तेकुस्ती आँधी से दूर हो जाएगा।

ध्यान दें कि यीशु ने क्या परखा (16:19) : "यीशु ने यह जानकर कि वे मुझ से पूछना चाहते हैं, उनसे कहा, क्या तुम आपस में मेरी इस बात के विषय में पूछताछ करते हो, थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, और फिर थोड़ी देर में मुझे देखोगे?" उसने उन्हें एक-दूसरे से बात करते हुए, उलझन में सिर हिलाते हुए देखा। वे स्कूल के उन बच्चों की तरह थे, जिनका शिक्षक ने एक नई गणितीय अवधारणा से परिचय कराया था, जो उनकी वर्तमान शिक्षा के स्तर से ऊँची थी। उनमें से कोई भी इसे समझ नहीं सकता। वे शिक्षक से और अधिक निर्देश माँगने से डरते हैं, इसलिए वे एक-दूसरे से पूछते हैं, "क्या तुम्हें यह समझ में आया? मुझे तो नहीं आया। वह क्या कहना चाहता है?"

प्रभु उनकी चर्चा में शामिल हो गया। उनकी अज्ञानता को और क्यों बढ़ाया जाए? क्यों न उससे ही स्पष्ट करने को कहा जाए?

यदि चेले प्रभु के प्रति अधीर थे भी, फिर भी वह निश्चित रूप से उनके प्रति अधीर नहीं था। वह धीरे से और भी समझाने लगा। "थोड़ी देर!" उन्हें यह समझ नहीं आया? तब शायद उन्हें थोड़ा रोना समझ आएगा (16:20-22)। पहले उसने उन्हें जानकारी दी (16:20) या स्पष्टीकरण : "मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि तुम रोओगे और विलाप करोगे, परन्तु संसार आनन्द करेगा; तुम्हें शोक होगा, परन्तु तुम्हारा शोक आनन्द में बदल जाएगा।" विलाप? हाँ, लेकिन जल्द ही यह हँसी में डूब जाएगा।

प्रभु के इस कथन से अधिक भयावह रूप से इस संसार को प्रकट करनेवाला कुछ भी नहीं है कि, "संसार आनन्द करेगा।" पतरस बाहर जाकर फूट-फूटकर रोने लगेगा। वे सभी अपने प्रिय स्वामी की हत्या पर आँसू बहाएँगे। लेकिन संसार आनंदित होगा। उसका मुखौटा उतर जाएगा, परमेश्वर और उसके पुत्र के प्रति संसार की नफरत प्रकट हो जाएगी। इससे भी बदत्तर, धार्मिक अधिकारी ही थे जिन्होंने यीशु मसीह का मज़ाक उड़ाने का बीड़ा उठाया। जो भी विश्वासी इस संसार से मित्रता करने के लालच में पड़ता है, उसे याद रखना चाहिए कि संसार ने क्रूस के प्रति कैसी प्रतिक्रिया दी थी।

प्रभु ने अपने चेलों को एक उदाहरण दिया (16:21-22) : "प्रसव के समय स्त्री को शोक होता है, क्योंकि उसकी दु:ख की घड़ी आ पहुँची है, परन्तु जब वह बालक को जन्म दे चुकती है, तो इस आनन्द से कि संसार में एक मनुष्य उत्पन्न हुआ, उस संकट को फिर स्मरण नहीं करती। उसी प्रकार तुम्हें भी अब तो शोक है, परन्तु मैं तुम से फिर मिलूँगा और तुम्हारे मन आनन्द से भर जाएँगे; और तुम्हारा आनन्द कोई तुम से छीन न लेगा।" यह एक ऐसा उदाहरण था जिसे कोई भी समझ सकता है। बच्चे का जन्म प्रसव के दर्द को निगल जाता है। अपने पुनरुत्थान के बाद प्रभु यीशु ने प्रकट होकर चेलों के दु:ख को खुशी में बदल दिया। वे अपनी पीड़ा के अंधकारमय तीन दिन और तीन रातें भूल गए। संसार अपनी सारी बुराई, घृणा और संगठित द्वेष के बावजूद उस आनंद को नहीं छीन सका।

अब एक छोटा सा शब्द आता है (16:23-24) : पूछना। ध्यान दें कि हमें किससे पूछना है (16:23) : "उस दिन तुम मुझ से कुछ न पूछोगे। मैं तुम से सच सच कहता हूँ, यदि पिता से कुछ भी माँगोगे, तो वह मेरे नाम से तुम्हें देगा।"

कुछ लोग इस पद में भविष्य के इस्राएल राष्ट्र का संदर्भ देखते हैं। वे इसे प्रभु के उदाहरण (16:21) की प्रसव पीड़ा की स्त्री से जोड़ते हैं और उस स्त्री को प्रकाशितवाक्य 12 की स्त्री से जोड़ते हैं। प्रकाशितवाक्य 12 की स्त्री निस्संदेह इस्राएल है और वह स्वयं आने वाले महाक्लेश का एक पूर्वाभास है जिससे इस्राएल को गुजरना होगा। यूहन्ना 16:21, 23 में इन पदों का यह भविष्यसूचक दृष्टिकोण, पद 21 में निश्चित लेख ("एक स्त्री" के स्थान पर "स्त्री") के प्रयोग तथा इब्रानी भाषा के "उस दिन" से और अधिक सुदृढ़ होता है। यह बाद वाली अभिव्यक्ति एक प्रसिद्ध भविष्यवाणी-संबंधी तरीका है। यह पहली बार यशायाह 2:11 में प्रकट होता है जहाँ इसे "प्रभु के दिन" (यशायाह 2:12) से जोड़ा जाता है, जो एक और महत्वपूर्ण भविष्यवाणी-संबंधी वाक्यांश है, जो वहाँ पहली बार पाया जाता है। यदि प्रभु के वचन "उस दिन" के इस भविष्यसूचक दृष्टिकोण का पालन किया जाता है, तो हमें यहाँ कलीसिया के उठा लिए जाने के बाद इस्राएल की एक झलक मिलती है, जो मदद के लिए सीधे यहोवा से अपील कर रहा है और अभी तक, विनती के आधार के रूप में यीशु नाम का प्रयोग नहीं कर रहा है।

इस दृष्टिकोण में चाहे जो भी खूबियाँ हों, और यह एक दिलचस्प दृष्टिकोण है, फिर भी यह इस पद का प्राथमिक अर्थ प्रतीत नहीं होता। "उस दिन तुम मुझ से कुछ न पूछोगे।" यहाँ "पूछोगे" शब्द पद 5 और 19 की तरह एरोटाओ है। उन दोनों पदों में इसका प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया गया है। चेले एक के बाद एक प्रश्न पूछ रहे थे, अधिकतर प्रश्नों ने उनकी आत्मिक समझ की कमी को दर्शाया।

पतरस ने प्रभु से पूछा था कि वह कहाँ जा रहा है। थोमा ने यह कहते हुए प्रभु का विरोध किया था कि वे नहीं जानते कि वह कहाँ जा रहा है और पूछता है कि फिर वे मार्ग कैसे जान सकते हैं। फिलिप्पुस ने कोई प्रश्न नहीं पूछा था लेकिन वह पिता को देखना चाहता था। यहूदा जानना चाहता था कि प्रभु संसार के बजाय स्वयं को उनके सामने क्यों प्रकट कर रहा था। अब वे एक दूसरे से पूछ रहे थे कि इन बातों से उसका क्या अर्थ है।

उसने बहुत दूर के दिन की ओर इशारा करते हुए कहा, "उस दिन तुम मुझ से कुछ न पूछोगे।" वह दिन जल्द ही आने वाला था जब चेले प्रभु से ऐसे प्रश्न पूछना बंद कर देंगे। हालाँकि वह चला जाएगा, वह दूसरा सहायक, जिसके बारे में वह उन्हें बता रहा था, मौजूद रहेगा। पिन्तेकुस्त ने एक अद्भुत परिवर्तन ला दिया होगा। उस दिन, उनके पास उत्तर होंगे।

इस बिंदु पर प्रभु ने अपना स्वयं का एक तरीका प्रस्तुत किया, जिसे हम यूहन्ना के सुसमाचार में अक्सर देखते हैं : "सच, सच।" इस तरीके को एक समान रूप से लागू करने से यह एक नए विचार का परिचय देता है। प्रभु ने आगे कहा : "मैं तुम से सच सच कहता हूँ, यदि पिता से कुछ भी माँगोगे, तो वह मेरे नाम से तुम्हें देगा।" यहाँ "माँगोगे" के लिए शब्द एइटियो है, कुछ देने के लिए माँगने का शब्द, एक ऐसा शब्द जो आम तौर पर किसी निम्न स्तर के व्यक्ति द्वारा बड़े को संबोधित करने के लिए उपयोग किया जाता है। भविष्य में, प्रभु के लोग सीधे पिता से विनती कर सकेंगे। यह तथ्य कि प्रभु पिता के पास वापस जा रहा था, ने इस परिवर्तन को प्रभावित किया। पिता के पास मसीह की वापसी ने आदम के पाप से टूटे हुए संबंध को पूरी तरह से बहाल कर दिया। पूर्ण संगति बहाल होने से हम निश्चिंत हो सकते हैं कि पिता अपने प्रिय पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर हम जो कुछ भी माँगेंगे वह

हमें देगा। कहने की जरूरत नहीं है कि यह यीशु के चरित्र से मेल न खानेवाली सभी विनतियों को खारिज करता है।

हम यह भी ध्यान देते हैं कि हमें क्यों माँगना है (16:24) : “अब तक तुम ने मेरे नाम से कुछ नहीं माँगा; माँगो, तो पाओगे ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।” प्रभु ने उन्हें पहले ही परमेश्वर के पास आने और “हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है” कहकर उससे प्रार्थना करने की यह क्रांतिकारी अवधारणा सिखा दी थी (मत्ती 6:9; 7:7-11)। परन्तु अब तक उन्होंने यीशु के नाम पर उससे विनती नहीं की थी।

यीशु के नाम पर पिता के पास आने से उनकी आत्माएँ आनंद से भर जाएँगी। हर बार जब उन्होंने ऐसा किया, तो इसने उन्हें उसकी याद दिलाई और इसकी भी वह अब कहाँ है, और उनके पास कितना अच्छा मित्र है।

थोड़ी प्रतीक्षा भी है (16:25-28)। हम अब प्रभु को पिता के बारे में स्पष्ट रूप से बोलते हुए देखते हैं (16:25) : “मैं ने ये बातें तुम से दृष्टान्तों में कहीं हैं, परन्तु वह समय आता है कि मैं तुम से फिर दृष्टान्तों में नहीं कहूँगा, परन्तु खोलकर तुम्हें पिता के विषय में बताऊँगा।” यहाँ से अध्याय के अंत तक हमारे पास वार्तालाप का एक उपसंहार है, जो “दृष्टान्तों” (पैरोइमियाइस, “रूपक” या “कहावतें”) के बिना एक सारांश है। इस वार्तालाप में उसने दाखलता और प्रसव पीड़ा सहनेवाली स्त्री जैसे रूपकों का प्रयोग किया था। अतीत में उसका अधिकांश शिक्षण दृष्टांतों और भाषा के अलंकारों में था। यूहन्ना में प्रभु के कई सन्देश, जो उसके “मैं हूँ” कथनों पर केंद्रित थे, सतही होने तुलना में गहरे अर्थ रखते थे। सत्य की इन खानों में वे ख़ज़ाने थे जिन्हें चेले समझ नहीं पाए थे।

अपने सन्देश के समापन सारांश में प्रभु ने ऐसे सभी तरीकों को छोड़ दिया, आंशिक रूप से भीड़ के व्यवहार के कारण और आंशिक रूप से चेलों की उदासीनता के कारण। हालाँकि, शब्द इससे आगे जाते प्रतीत होते हैं। चौबीस घंटे के भीतर वह मर चुका होगा, लेकिन कब्र उसे चुप नहीं करा पाएगी। वह मृतकों में से जी उठेगा, वह ऊँचे पर चढ़ जाएगा, पवित्र आत्मा आएगा, प्रकाश का उदय होगा, पत्रियाँ सुसमाचार पर नई रोशनी डालेंगी। पवित्र आत्मा पवित्रशास्त्र के नए नियम के कैनन को पूरा करेगा। वह मसीही युग की सभी सदियों के दौरान परमेश्वर के छुड़ाए हुए लोगों को इसके पृष्ठों में निहित ईश्वरीय सत्य के भण्डार से अवगत कराता रहेगा। अतः मसीह स्पष्ट रूप से बोलेगा; उसकी शिक्षा प्रकट होगी, इसके आंतरिक अर्थ स्पष्ट हो जाएँगे।

हमारे सीधे पिता से बात करने के बारे में भी उल्लेख है (16:26-28)। दो कारणों से किसी मध्यस्थ, किसी हस्तक्षेप करनेवाले याजक की आवश्यकता नहीं होगी। पहला, क्योंकि पुत्र का पिता पुत्र के अनुयायियों से प्रेम करता है (16:26-27क) : “उस दिन तुम मेरे नाम से माँगोगे; और मैं तुम से यह नहीं कहता कि मैं तुम्हारे लिये पिता से विनती करूँगा; क्योंकि पिता तो आप ही तुम से प्रेम रखता है।” प्रभु उनकी ओर से पिता से प्रार्थना करने का वादा नहीं करता। यह पिता और उनके बीच दूरी, ठंडेपन का संकेत दे सकता है। उन्हें कभी यह नहीं सोचना चाहिए कि पिता को किसी तरह उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर देने के लिए राजी करना होगा। वह उनसे प्रेम रखता था। वह उन्हें सुनने और उनका उत्तर देने के लिए उत्सुक था।

यह प्रभु की महायाजकीय सेवकाई या हमारी आवश्यकताओं के प्रति उसकी वकालत को रद्द नहीं करता। जब शैतान आरोप लगाने वाले के रूप में आता है, तो प्रभु वहाँ होता है। जब हमारी मानवीय कमज़ोरियों और कमियों, हमारे पापों और पतन और असफलताओं के बारे में कोई प्रश्न उठाया जाता है, तो प्रभु अपने छिदे हुए हाथों को यह संकेत देने के लिए उठाता है कि उसके बहुमूल्य लहू ने अपनी सामर्थ्य को नहीं खोया है। प्रभु यहाँ जो सिखा

रहा है वह यह है कि पिता हमसे उतना ही प्रेम करता है जितना पुत्र हमसे प्रेम करता है, और वह हम तक उतना ही पहुँचता है जितना वह, अर्थात् यीशु, हम तक पहुँचता है।

दूसरा कारण कि हमें किसी मध्यस्थ की जरूरत नहीं है, पुत्र के अनुयायी पुत्र के पिता से प्रेम करते हैं (16:27ख-28) : "पिता तो आप ही तुम से प्रेम रखता है, इसलिये कि तुम ने मुझ से प्रेम रखा है और यह भी विश्वास किया है कि मैं पिता की ओर से आया। मैं पिता की ओर से जगत में आया हूँ; मैं फिर जगत को छोड़कर पिता के पास जाता हूँ।" पिता पूरी तरह से पुत्र के साथ और पुत्र पिता के साथ पहचान स्थापित करता है, कि हमारे लिए मसीह से प्रेम करना पिता से प्रेम करना है।

प्रभु पृथ्वी पर अपने जीवन का सारांश चार शानदार कथनों में देता है : "मैं पिता की ओर से आया हूँ" [उसका देहधारण]। "मैं जगत में आया हूँ" [उसका मिशन]। "मैं जगत को छोड़कर जाता हूँ" [उसका जोश]। "मैं फिर पिता के पास जाता हूँ" [उसका स्वर्गारोहण]। "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए" (3:16)।

यह शुरू से अंत तक प्रेम है। प्रेम ने हमारे छुटकारे योजना की कल्पना की। प्रेम ने इसे गति दी और आगे बढ़ाया। पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के बीच सदैव और अनंत काल तक प्रेम बहता रहता है; प्रेम हमें गले लगाता है, हमें बचाता है, हमें बदलता है, हमें भरता है, मसीह में आत्मा के द्वारा पिता के पास वापस बहता है। प्रेम वह वस्तु है जिससे अनंत काल बना है।

2. प्रेम के चेतावनी भरे शब्द (16:29-33)

प्रभु के चार चरणीय सारांश और उनके आने और जाने की बातें सुनकर चेलों के पैर कांपने लगे। उन्होंने तुरंत प्रतिक्रिया दी। लेकिन उनकी प्रतिक्रिया में उनका अति-आत्मविश्वास प्रकट हुआ (16:29-30)। पहले ध्यान दें कि उन्होंने उसके दृष्टान्तों के बारे में क्या कहा (16:29) : "उसके चेलों ने कहा, देख, अब तो तू खोलकर कहता है, और कोई दृष्टान्त नहीं कहता।" प्रभु का अंतिम कथन एक तेज किरण की तरह था, जो पूरे प्रकाश के केंद्र को एक शक्तिशाली किरण में केंद्रित कर रहा था। यह प्रत्येक हृदय में प्रवेश कर गया और अगले ही क्षण, वे देखने लगे। उन्होंने स्वामी, मिशन, चमत्कार, रहस्य और इन सबकी परम महिमा को देखा। वे उत्साहपूर्वक बोले, "देख, अब तो तू खोलकर कहता है!"

यह भी ध्यान दें कि उन्होंने उसके व्यक्तित्व के बारे में क्या कहा (16:30) : "अब हम जान गए हैं कि तू सब कुछ जानता है, और इसकी आवश्यकता नहीं कि कोई तुझ से कुछ पूछे; इससे हम विश्वास करते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से आया है।" "अब हम जान गए हैं!" उन्होंने कहा, "अब हमें विश्वास हो गया है!" वे ईमानदार थे। मसीह ने उनके अनकहे प्रश्नों का उत्तर दिया था। उसके सर्वज्ञानी होने का इससे अधिक ठोस प्रमाण उनके पास क्या हो सकता था?

फिर से, चेलों ने मसीह के शब्दों की गलत व्याख्या की थी, और जिस तरीके से वह संसार को छोड़कर जाने वाला था, उसका डर उनके मन में प्रवेश करना भी शुरू नहीं हुआ था।

यीशु ने कहा था, "उस दिन तुम मुझसे कुछ न पूछोगे" (16:23)। क्योंकि प्रभु ने उनके प्रश्नों का उत्तर दे दिया था, उनके द्वारा शब्दों में व्यक्त किए बिना ही। चेलों ने उसकी बात का वैसा ही अर्थ निकाला जैसी उसने कही थी : "तुम्हें मुझसे पूछने की जरूरत नहीं होगी क्योंकि मेरी सर्वज्ञता में, मैं तुम्हारी हर घटी को जान लूँगा।" लेकिन प्रभु

का मतलब बिल्कुल अलग था : “तुम मुझसे कुछ नहीं पूछोगे क्योंकि तुम्हारे पास तुम्हें प्रकाशित करने और अगुवाई करने के लिए पवित्र आत्मा होगा।” वह बिल्कुल अलग बात थी।

चेलों ने कहा, “हम विश्वास करते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से आया है।” एक समूह के रूप में, वे नीकुदेमुस से आगे नहीं बढ़े जिसने कहा था, “हम जानते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आया है”, और जिसे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने पीछे छोड़ दिया था जिसने कहा था, “देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत का पाप उठा ले जाता है” (1:29)। उनका अंगीकार नीरसता और समझदारी का दुखद मिश्रण था। प्रभु ने उनके विश्वास के त्रुटिपूर्ण अंगीकार को तुरंत अस्वीकार नहीं किया, लेकिन उसने इसकी अपर्याप्तता को स्पष्ट रूप से देखा। उनके उत्साह को बहुत गंभीर झटके लगने वाले थे, यह भी वह जानता था।

अतः हम देखते हैं कि कैसे उनके अति-आत्मविश्वास को डांटा गया (16:31-33)। उनके विश्वास की परीक्षा होनी थी (16:31-32) : “यह सुन यीशु ने उनसे कहा, क्या तुम अब विश्वास करते हो? देखो, वह घड़ी आती है वरन् आ पहुँची है कि तुम सब तितर–बितर होकर अपना अपना मार्ग लोगे, और मुझे अकेला छोड़ दोगे; तौभी मैं अकेला नहीं क्योंकि पिता मेरे साथ है।”

चेलों ने कहा, “अब हम जान गए हैं।” यीशु ने पूछा, “क्या तुम अब विश्वास करते हो?” प्रभु का अब उनके जैसा नहीं था। उसने उनके नए-नए मिले विश्वास और आनंद पर संदेह नहीं जताया। लेकिन वह जानता था कि यह ज्यादा समय तक नहीं टिकेगा। उसने पूछा, “क्या तुम अब विश्वास करते हो?” यूनानी शब्द संकट का संकेत देता है। और वह अच्छी तरह जानता था कि वह संकट क्या था? सिपाहियों के आगे बढ़ते हुए कदम मंदिर के प्रांगण पर अपनी छोड़ रहे थे। भीड़ की आवाज़ सड़कों पर गूंज रही थी। यहूदा आ रहा था। चेले इन डरावनी आवाजों को नहीं सुन सके और वे अब भी यहूदा के प्रति उदासीन थे। परन्तु यीशु जानता था कि तूफ़ान अगली ही घड़ी टूट पड़ेगा।

उसने चेतावनी दी, “तुम सब तितर–बितर होकर अपना अपना मार्ग लोगे।” यहाँ शब्द ‘ता इडिया’ है, “अपने-अपने घर का मार्ग” (19:27)। उन्हें एक साथ रखनेवाला बंधन टूटने वाला था। प्रत्येक व्यक्ति, केवल अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिंता करते हुए रात में ही जितनी जल्दी हो सके अपने-अपने घर की ओर भाग रहा होगा। उन्हें उस समय की क्षणिक भावनाओं से सावधान रहने की कितनी जरूरत थी।

यीशु ने पूछा, “क्या तुम अब विश्वास करते हो?” प्रश्न के प्रत्येक शब्द पर बारी-बारी से जोर दें। देखें कि आत्म-मूल्यांकन के संदर्भ में यह क्या दर्शाता है। आइये हम अपने विश्वास के अंगीकरण के सोने पर तेजाब डालकर जाँचें और सुनिश्चित करें कि जो हमारे पास है वह असली है।

क्या प्रभु इन लोगों की ओर निराश भाव से रहा था, जब उसने कहा, “तुम... मुझे अकेला छोड़ दोगे”? वे सब उसे छोड़ देंगे, हालांकि बाद में यूहन्ना लौट आएगा, पतरस भी वापस आ जाएगा और दूर से उसका पीछा करेगा, जब उसके इनकार उसे उसके अपने गतसमनी में भय से भर देंगे।

निश्चित रूप से, प्रभु की पीड़ा का एक हिस्सा उसका अकेलापन था। उसने आगे कहा, “तौभी मैं अकेला नहीं क्योंकि पिता मेरे साथ है।” यह अच्छी बात थी कि प्रभु आने वाले भयानक घंटों में उनके समर्थन पर भरोसा नहीं कर रहा था (जकर्याह 13:7)। उसका पिता वहीं होगा। पतरस, याकूब और यूहन्ना सो जाएँगे, भले ही वह उन्हें जगाने की तीन बार कोशिश करेगा, लेकिन पिता वहीं पर होगा। यहूदा और भीड़ आएगी और सभी चेले भाग जाएँगे, लेकिन उसका पिता वहीं रहेगा। काइफा, हेरोदेस और पिलातुस उसे डराएँगे और धमकाएँगे, परन्तु पिता

फिर भी वहीं रहेगा। पतरस शाप देगा, शपथ खाएगा, और फिर आँसू बहाते हुए भाग जाएगा, लेकिन उसका पिता वहीं होगा। उसे घायल किया जाएगा और पीटा जाएगा, उसका उपहास किया जाएगा, कोड़े मारे जाएँगे, लेकिन पिता वहीं होगा। वह अपने क्रूस के नीचे लड़खड़ाकर गिर पड़ेगा, उसी पीड़ा में उसे पेड़ पर कीलों से ठोक दिया जाएगा, रब्बी और भीड़ उसका मज़ाक उड़ाएँगे, लेकिन पिता वहीं पर होगा। उस भयानक क्षण तक, जब परमेश्वर भी उसे त्याग देगा।

लेकिन वह भयानक समय भी बीत जाएगा और उसका पिता वहीं होगा। “मैं अकेला नहीं क्योंकि पिता मेरे साथ है।” यह हमारे प्रभु की एकमात्र तसल्ली थी जब उसने इन लोगों के चेहरों को देखा, जो अचानक जोश से भर गए थे, लेकिन उनका विश्वास क्षणिक था।

उनके विश्वास की परीक्षा होगी, वे असफल होंगे, लेकिन यह अंत नहीं होगा। आख़िरकार उनके विश्वास को ही विजयी होना था (16:33)। उन्हें उसके वचन के द्वारा शांति मिलेगी (16:33क) : “मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कहीं हैं कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले।” हमें सर्वप्रथम, उस अति-महत्वपूर्ण क्षेत्र पर ध्यान देना है जिसमें विश्वासी रहता है। यीशु ने कहा, “मुझ में तुम्हें शांति मिलेगी।”

मसीह का प्रत्येक विश्वासी मसीह में वास करता है। प्रभु के इन वचनों का सर्वोत्तम उदाहरण हमें पुराने नियम में मिलता है। परमेश्वर के क्रोध का तूफ़ान जलप्रलय से पहले की पहाड़ियों और मैदानों पर आने वाला था। उस सभ्यता के नगर बहने वाले थे। जलप्रलय का प्रचंड जल पहाड़ों की चोटियों तक जाने वाला था। बचने का केवल एक ही रास्ता था, सुरक्षा का केवल एक ही स्थान था : जहाज। नूह के लिए जहाज में होने का जो अर्थ था, वही हमारे लिए मसीह में होने का अर्थ है। उस जहाज में, नूह शांति से आराम कर सकता था। कुछ भी क्यों ना होता रहे, मसीह में विश्वासी को शांति मिलती है। प्रभु ने इस बात की प्रतिज्ञा की है।

चेलों की अफलता — सम्पूर्ण असफलता— और उनके पछतावे — वास्तविक पछतावे — के बावजूद अंत में उनके विश्वास की जीत होगी। उनके पास इस संसार में सामर्थ्य होगी (16:33ख) : “संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बाँधो, मैं ने संसार को जीत लिया है।” वह विश्वासी का दूसरा पता है। हममें से हर कोई “मसीह में” है और हम “संसार में” भी हैं। और जब तक हम संसार में हैं जो परमेश्वर और उसके मसीह से घृणा करता है, हम क्लेश की उम्मीद कर सकते हैं। यहाँ प्रयुक्त शब्द ‘थलीप्सिस’ वही शब्द है जिसका उपयोग यीशु ने प्रसव पीड़ा का वर्णन करते समय किया था (16:21)। हमें सावधान रहना है कि हम परमेश्वर के लोगों पर सदियों से चल रहे, विश्वव्यापी सताव को महाक्लेश न समझ बैठें जो विशेष रूप से यहूदियों और कलीसिया के उठाए जाने के बाद के संसार के लिए होगा (मत्ती 24:21,29)। पीड़ा की वह अवधि निर्धारित साढ़े तीन साल तक चलेगी और इसे “याकूब के संकट का समय” कहा गया है (यिर्मयाह 30:7)। यह वह समय भी है जब परमेश्वर इस संसार पर अपना क्रोध प्रकट करेगा।

क्या प्रभु ने मसीही युग की लंबी सदियों को देखा है? क्या वह उन सभी भयानक सतावों को देख रहा था जिनका सामना मसीहियों को करना पड़ा? वह चेलों को चेतावनी देता है कि वे क्या अपेक्षा करें। वह उनका उत्साह बढ़ाता और उन्हें साहस देता है। अगले दिन, उसे स्वयं रोमी क्रूस पर मरना था। वह अपने अटूट साहस को अपने लोगों के लिए विरासत के रूप में छोड़ गया। उसने कहा, “मैं ने संसार को जीत लिया है।” उसने अपने चेलों को (और हमें भी) दिखाया कि यह कैसे किया जाता है : उसने प्रार्थना करना शुरू किया।

II. प्रभु अपने पिता से बात करता है (17:1-26)

प्रभु अब भी गतसमनी मार्ग पर चल रहा है। हम उसे अपने अनुयायियों से बात करते हुए सुन रहे हैं। हम सुनना जारी रखते हैं जब वह अपने पिता से बात करता है। जलती हुई झाड़ी के पास मूसा की तरह, हमें भी अपने पैरों से जूते उतार देने चाहिए। जिस स्थान पर हम अभी खड़े हैं वह पवित्र भूमि है।

इस उल्लेखनीय आदर्श प्रार्थना में ऐसी कोई भी बात नहीं है जो हमारी प्रार्थनाओं में बहुत अधिक स्थान लेती है। इसमें प्रार्थना और स्तुति के सभी विषय आत्मिक प्रकृति के हैं।

हम कल्पना कर सकते हैं कि प्रभु यीशु अब गतसमनी की ओर चलते हुए रुक गया है। चेले एक छोटे से समूह में उसके चारों ओर इकट्ठे हैं।

आर्चबिशप फ्रेंच कहते हैं, “उनका मार्ग उन्हें शहर के एक द्वार से होकर ले गया।”

संभवतः वह जो उस समय सेंट स्टीफन के वर्तमान द्वार के अनुरूप था, नाले की खड़ी ढलानों से नीचे, किद्रोन की घाटी के पार, जो सौ फीट नीचे थी, और उसके आगे हरे और शांत ढलान तक। जो कोई वर्ष के उस मौसम में और रात के उस समय उस दृश्य का दौरा कर चुका है, जिसने शहर की दीवार से इस छोटी सी दूरी पर भी मौन की गंभीर शांति को महसूस किया है, जिसने प्राचीन जैतून के पेड़ों की बड़ी शाखाओं द्वारा फेंकी गई गहरी छाया को देखा है, और उनके चाँदनी जैसे पत्तों के माध्यम से घास पर पड़ने वाले प्रकाश की चेकर को देखा है, उन कुछ गलीलियों पर छाई हुई भय की भावना को महसूस करना अधिक आसान है, जैसे कि लगभग अखंड मौन में, शायद कुछ रहस्य के साथ, और रहस्यमय भय के भार के साथ उनकी आत्माओं पर मंडराते हुए, उन्होंने उसका अनुसरण किया, जो झुके हुए सिर और दुखी हृदय के साथ, उनके आगे अपनी इच्छित मृत्यु की ओर चला गया (Frederick W. Farrar, The Life of Christ, Vol. 2., London: Cassell, Petter and Galpin, n.d., pp. 305-306)।

A. वह संसार जहाँ से वह आया था (17:1-10)

1. उसके सर्वोच्च लक्ष्य (17:1-4)

इस प्रार्थना का पहला भाग इस तथ्य से भरा हुआ है कि वह स्वयं इस पाप से शापित पृथ्वी से अलग किसी अन्य संसार से था। हम देखते हैं कि उसने चार चीजों के बारे में क्या कहा। सबसे पहले, हम उसके सर्वोच्च लक्ष्यों को देखते हैं। उसका सबसे बड़ा लक्ष्य यहाँ अपने पिता के व्यक्तित्व को प्रकट करना था (17:1) : “यीशु ने ये बातें कहीं और अपनी आँखें आकाश की ओर उठाकर कहा, हे पिता, वह घड़ी आ पहुँची है; अपने पुत्र की महिमा कर कि पुत्र भी तेरी महिमा करे।”

पुत्र के रूप में उसके और पिता के रूप में परमेश्वर के बीच एक अटूट रिश्ता था। पिता द्वारा पुत्र को महिमान्वित करना, पुत्र द्वारा पिता को महिमान्वित करना था। यह प्रार्थना कि पिता पुत्र को महिमान्वित करे, एक ऐसी प्रार्थना थी कि पुत्र के सच्चे, ईश्वरीय स्वभाव का पूर्ण प्रदर्शन हो सके।

जब वचन देहधारी हुआ तो बहुत कुछ छिपा हुआ था। जैसा कि उल्लेख किया गया है, जब प्रभु ने मानव शरीर में जन्म लिया था, तब उसने अपने ईश्वरत्व को त्याग नहीं दिया था। बल्कि, उसने अपनी महिमा को अलग रखा था। उसने खुद को मनुष्य के रूप में रहने और व्यवहार करने तक सीमित कर लिया था — ऐसा मनुष्य जैसा कि

परमेश्वर ने हमेशा मनुष्य को बनने के लिए चाहा था। अपने चेलों के आंतरिक समूह को दी गई दुर्लभ झलकियों को छोड़कर, जब लोगों ने यीशु को देखा तो वह एक असाधारण व्यक्ति, एक अद्वितीय रूप से प्रतिभाशाली व्यक्ति था; एक आकर्षक, दयालु और प्रेमपूर्ण व्यक्ति; एक आश्चर्यजनक रूप से अच्छा, परिपूर्ण और पापरहित व्यक्ति — लेकिन एक मनुष्य।

यीशु ने कहा, अब "वह समय आ गया है।" यह समय के इस केन्द्र बिन्दु की ओर था, जहाँ से उसका मार्ग आगे बढ़ा था, जब से पिछले अनंत काल में पिता परमेश्वर, पुत्र परमेश्वर, और पवित्र आत्मा परमेश्वर ने सृष्टि में और परिणामस्वरूप उद्धार में कार्य करने का निर्णय लिया था।

हम मसीह के कष्टों का उल्लेख, उसके बाद आने वाली महिमा के उल्लेख के बिना नहीं करते हैं। इसलिए, जब वह समय आ गया जब उसे धोखा दिया जाना था और पीटा जाना था, लोगों द्वारा आरोपित किया जाना था और परमेश्वर द्वारा शापित किया जाना था, शापित और क्रूस पर चढ़ाया जाना था, उसका मजाक उड़ाया जाना था और उसकी हत्या की जानी थी, तब प्रभु ने प्रार्थना की कि, भले ही लोगों ने उस पर हर तरह का अपमान किया हो और परमेश्वर ने उस पर सभी मानवीय पापों और अपराधों का बोझ डाला हो, फिर भी उसे महिमा मिले। और वास्तव में वह महिमान्वित हुआ। क्रूस — वह रोमी फांसी, जो पीड़ा और शर्म की वस्तु थी — सभी युगों और सभी देशों के लाखों लोगों के लिए आशा का प्रतीक बनने वाला था ।

क्रूस संपूर्ण सच्चे विश्वास के केंद्र में सर्वोच्च स्थान रखता है। यह हजारों भजनों का विषय बन गया है। पौलुस ने कहा, "पर ऐसा न हो कि मैं अन्य किसी बात का घमण्ड करूँ, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का" (गलातियों 6:14)।

यीशु अपने पिता के अधिकार को भी प्रकट करना चाहता था (17:2)। "क्योंकि तू ने उसको सब प्राणियों पर अधिकार दिया, कि जिन्हें तू ने उसको दिया है उन सब को वह अनन्त जीवन दे।" हम पुत्र में निहित अनन्त प्रभुत्व (17:2क) को देखते हैं। उसे "सब प्राणियों पर अधिकार" दिया गया है। उसके पास समुद्र की मछलियों पर अधिकार था । चाहे वे मछलियों के झुंड में हों या व्यक्तिगत रूप से वे उसके आदेश पर जाल में खुद को फेंकती हों या अपने मुँह में सिक्के लाती हों। उसके पास पृथ्वी के जानवरों पर अधिकार था। मरकुस हमें बताता है कि अपनी परीक्षा के दौरान, वह जंगल में जंगली जानवरों के साथ था (मरकुस 1:13)। जब वह विजय के साथ यरूशलेम में आया, तो उसने ऐसा एक निष्कलंक गधे पर सवार होकर किया। उसके पास आकाश के पक्षियों पर अधिकार था। मुर्गे ने एक सेकंड से भी कम समय पहले या एक पल भी देर से बाँग नहीं दी, ठीक उसी महत्वपूर्ण क्षण पर जब पतरस का विवेक जागा और उसका विश्वास फिर से जागृत हुआ।

"सभी प्राणियों पर अधिकार" निस्संदेह मुख्य रूप से सभी मानव प्राणियों, मानव जाति पर उसकी सभी कमज़ोरियों, पापमयता और क्षणभंगुरता को संदर्भित करता है। यह परमेश्वर की योजना थी कि पहले मनुष्य आदम में अपार शक्ति और अधिकार निहित हो और वह इस ग्रह पर और, जहाँ तक हम जानते हैं, अंततः अन्तरिक्ष पर शासन करे। "अधिकार रखो," यह परमेश्वर का मानव जाति के लिए, प्रथम दंपत्ति के लिए ईश्वरीय आदेश था (उत्पत्ति 1:26-28)। आज भी, पतन के कारण हमारी आदिम शक्तियाँ क्षीण और सीमित होने के बावजूद, मानव जाति में अभी भी असाधारण क्षमताएँ और कौशल हैं। हम लोगों को चाँद पर भेज सकते हैं, परमाणु को विभाजित कर सकते हैं, आनुवंशिक कोड के साथ छेड़छाड़ कर सकते हैं। हम इंजीनियरिंग के अद्भुत कारनामे करते हैं; हमारी तकनीक हर तरफ़ देखी जा सकती है। यदि हम पाप में कभी नहीं पड़े होते, तो हम ब्रह्मांड में क्या हासिल कर

सकते थे, यह हम नहीं बता सकते। हमें मसीह के चमत्कारों में भौतिक चीज़ों पर उस तरह की संप्रभुता की कुछ झलकियाँ मिलती हैं, जिसका प्रयोग परमेश्वर ने स्पष्ट रूप से मनुष्यों के लिए किया था।

दुःख की बात है कि मानव जाति इसके बजाय पतन के निशानों को ढो रही है। इस ग्रह पर हमारा इतिहास शत्रुता और युद्ध का रहा है। परमेश्वर ने सारा अधिकार यीशु (इब्रानियों 2), दूसरे मनुष्य को सौंप दिया था। संसार उसकी वापसी का इंतजार कर रहा है। रोमियों 8 हमें बताता है कि सृजित चीजों का संसार "उँगलियों के बल खड़ा है" (जैसा कि जेबी फिलिप्स ने कहा है) परमेश्वर के पुत्रों को अपने अधिकार में आते देखने का इंतजार कर रहा है। जब यीशु वापस लौटता है और शासन करता है और उस "सारे प्राणियों पर अधिकार" का प्रयोग करता है जिसके बारे में उसने यहाँ अपने पिता से बात की थी, तो हम वास्तव में देखेंगे कि मनुष्य इस अद्भुत ग्रह के साथ क्या कर सकते थे जिस पर हम रहते हैं।

प्रभु यीशु की शक्ति का प्रमाण अनंत जीवन (17:2ख) के संदर्भ में भी मिलता है: "कि जिन्हें तू ने उसको दिया है उन सब को वह अनन्त जीवन दे।" यहाँ हम छुटकारे में परमेश्वर की संप्रभुता के उस वस्त्र के किनारे को छूते हैं। ऐसे कथनों को कभी प्रकाशन की संपूर्णता से अलग नहीं किया जाना चाहिए। यह कि परमेश्वर ने आदम की जाति के कुछ सदस्यों को मसीह को दिया है, और मसीह ने उन चुने हुए लोगों को अनंत जीवन दिया है, यह पूरी तरह से स्पष्ट है। लेकिन इस तरह के कथनों को हमेशा पवित्रशास्त्र के उन समान रूप से प्रेरित कथनों द्वारा संतुलित किया जाना चाहिए जो हमें चुनाव की शक्ति, नैतिक जवाबदेही और विश्वास करने की जिम्मेदारी देते हैं। उदाहरण के लिए, इस प्रार्थना में, पद 3 को पद 12 द्वारा स्पष्ट रूप से संशोधित किया गया है। तथ्य यह है कि परमेश्वर ने हमें मसीह में चुना है और मसीह ने हमें अनन्त जीवन दिया है।

उद्धार करने वाले विश्वास की पहचान तुरंत ही सामने आती है: "और अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ एकमात्र सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जानें।" (17:3)। लाखों लोग परमेश्वर को जानने का दावा करते हैं, लेकिन मसीह को नहीं जानते। वे झूठे धर्म के शिकार हैं। परमेश्वर को जानने का दावा करना, लेकिन मसीह के ईश्वरत्व को नकारना एक घातक गलती है। हालाँकि, यहाँ हमारे पास अनन्त जीवन की परिभाषा नहीं है, बल्कि इस कारण का कथन है कि मसीह उस जीवन को क्यों प्रदान करता है — ताकि हम उसके पिता, एकमात्र सच्चे परमेश्वर को जान सकें, जैसा कि मसीह उसे जानता है।

प्रभु के लक्ष्यों में न केवल अपने पिता के व्यक्तित्व और शक्ति को प्रकट करना शामिल है, बल्कि अपने पिता के उद्देश्यों को भी प्रकट करना शामिल है (17:4) : "जो कार्य तू ने मुझे करने को दिया था, उसे पूरा करके मैं ने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है।" इस प्रकार प्रभु ने इस ग्रह पर आने में अपने ईश्वरीय उद्देश्य को अभिव्यक्त किया। देहधारण से स्वर्गारोहण तक, प्रभु यीशु ने अपने पिता को महिमा दी। उन्होंने उन्हें सौंपा गया कार्य पूरा किया। हालाँकि उस कार्य का महत्वपूर्ण हिस्सा अभी भी आगे था, प्रभु ने इसे भूतकाल में रखा। कोई डगमगाहट नहीं होगी, कोई पीछे नहीं हटना होगा, कोई विफलता नहीं होगी। वह क्रूस के कार्य के लिए पूरी तरह से समर्पित था, जैसा कि वह और उसके पिता दोनों जानते थे। बगीचे में पीड़ा इस संकल्प को हिला नहीं पाएगी। गुलगुता के अपमान और अन्याय, गुलगुता की भयावहता और कब्र की खामोशी पूर्वनिधारित तरीके से कदम रखने वाले पत्थर थे। यह कभी संदेहास्पद नहीं था कि प्रभु ईश्वरीय उद्देश्य को पूरा करेगा। उसकी आज्ञाकारिता परीक्षा में खरी उतरेगी। यह लगभग पूरा हो चुका था।

2. उसकी विशेष महिमा (17:5)

"अब हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत की सृष्टि से पहले, मेरी तेरे साथ थी।" (17:5)। इन वचनों को संक्षेप में कहें तो : "अब तक इस संसार ने मुझे केवल देहधारी पुत्र के रूप में देखा है; अब संसार मुझे अनंत के रूप में देखे।"

दोपहर के सूर्य की चमक से परे एक महिमा है, एक महिमा जो आकाश में मेघधनुष से भी अधिक शानदार है, एक ऐसी महिमा जो इस संसार की नहीं है, ईश्वरत्व में निहित है, जिसके आगे चमकने वाले लोग सिकुड़ जाते हैं (यशायाह 6:2), जिसने तरसुस के शाऊल को अंधा कर दिया (प्रेरितों के काम 9:3), जिसने प्रेरित यूहन्ना को दंडवत करा दिया (प्रकाशितवाक्य 1:17)। यह वह महिमा थी जिसे यीशु ने पृथ्वी पर आने के लिए अलग रख दिया था। इसे देखकर सभी चकित हो जाते। रूपांतरण के पर्वत पर चेलों ने जो महिमा देखी वह उसके ईश्वरत्व की महिमा नहीं थी बल्कि उनकी पापरहित मानवता की महिमा थी। प्रभु एक बार फिर से माँग रहा है कि, यद्यपि अब वह मानवीय मिट्टी में लिपटा हुआ है, उनकी प्राचीन महिमा, वह महिमा जिसे उसने संसार को अस्तित्व में लाने से पहले अपने पिता के साथ जोड़ा था, फिर से उसकी हो सकती है। यह अभी उसकी है। यह उसके फिर से आने पर सभी को देखने के लिए प्रदर्शित की जाएगी।

3. उसके आत्मिक वरदान (17:6-8)

जो वरदान उसे दिए गए (17:6-7) वे दो प्रकार के थे। प्रभु को कुछ खास लोग दिए गए (17:6) : "मैं ने तेरा नाम उन मनुष्यों पर प्रगट किया है जिन्हें तू ने जगत में से मुझे दिया। वे तेरे थे और तू ने उन्हें मुझे दिया, और उन्होंने तेरे वचन को मान लिया है।" हम मसीह के होने से पहले परमेश्वर के थे। सभी लोग इस तथ्य के आधार पर परमेश्वर के हैं कि वह सृष्टिकर्त्ता है। कुछ लोग इस तथ्य के आधार पर मसीह के हैं कि वह उद्धारकर्त्ता है और उन्होंने उस पर विश्वास किया है। उन्होंने पिता के बारे में सत्य को स्वीकार किया है जिसे उसका पुत्र प्रकट करने आया था। संसार यीशु को पिता को प्रकट करने वाले के रूप में पहचानने में विफल रहा था, लेकिन इन पुरुषों और महिलाओं (एंथ्रोपोई), इस चुने हुए समूह को, पिता द्वारा अपने पुत्र को आत्मिक वरदान के रूप में मसीह को दिया गया था।

कोई आश्चर्य करता है कि चेलों ने इस सबका क्या मतलब निकाला। क्या उनकी आँखें ऐसे आश्चर्यजनक सत्यों को देखकर आश्चर्यचकित हो गईं? एक बार उन्होंने उससे कहा था, "हमें प्रार्थना करना सिखा।" क्या वे अब कान लगाकर सुन रहे थे, हर वचन पर ध्यान दे रहे थे, हर कीमत्ती वाक्यांश को संजोकर रख रहे थे? जाहिर है यूहन्ना ऐसा कर रहा था। लेकिन बाकी लोगों के बारे में क्या? क्या वे पहले से ही जम्हाई ले रहे थे और इस लंबे और कठिन दिन के बाद अपनी थकान से जूझ रहे थे?

हम एक राजा के लिए उपयुक्त वरदान की बात करते हैं। हम सोचते हैं कि हम उस व्यक्ति को क्या दे सकते हैं जिसके पास सब कुछ है। परमेश्वर के लिए वरदान के बारे में क्या — एक ऐसे व्यक्ति के लिए जिसे केवल बोलना है और असंख्य स्वर्गदूत, उज्ज्वल और चमकदार, सुबह की तरह सुंदर, तेज और मजबूत और प्रतिभाशाली और सेवा करने के लिए उत्सुक दिखाई देते हैं? एक ऐसे व्यक्ति के लिए वरदान के बारे में क्या जिसका वचन आश्चर्यजनक चमत्कारों से भरी सौ मिलियन आकाशगंगाओं का निर्माण कर सकता है जिन्हें गिनने के लिए हमारी मानवीय क्षीण हो जाती हैं, समझने की तो बात ही छोड़िए? परमेश्वर के लिए वरदान के बारे में क्या? परमेश्वर अपने पुत्र को क्या देगा? हमें*!* आश्चर्यों का आश्चर्य! रहस्यों का रहस्य !

प्रभु को कुछ विशेष अधिकार भी दिए गए थे (17:7) : "अब वे जान गए हैं कि जो कुछ तू ने मुझे दिया है वह सब तेरी ओर से है।" सिर्फ़ कुछ लोग ही नहीं, बल्कि कुछ चीज़ें। ये लोग इन चीज़ों में प्रवेश कर चुके थे। उसने इनमें से

कई चीज़ें अविश्वासी जगत को दिखाई थीं। वे पहले ही उन्हें पैरों तले रौंद चुके थे और फिर से उसे फाड़ने के लिए मुड़ रहे थे। लेकिन ये लोग जो अब उसके साथ थे, उन्होंने विश्वास किया था। उन्होंने पहचान लिया था कि जो चीज़ें उसे दी गई थीं, वे उसे पिता ने दी थीं : कोढ़ियों को शुद्ध करने, दुष्टात्माओं से मुक्त करने, अंधे को दृष्टि देने, मृतकों को जीवित करने और "जीवन के अद्भुत वचन" बोलने की शक्ति, जैसा कि पहले कभी किसी ने नहीं कहा था।

इन लोगों की प्रतिक्रिया बहुत ज़्यादा नहीं थी। लेकिन उनके लिए इन चीज़ों के स्रोत को देखना एक आत्मिक चमत्कार था, जो शारीरिक रूप से अंधे पैदा हुए एक व्यक्ति के चमत्कार से कहीं ज़्यादा अद्भुत था, जो पहली बार एक पेड़ के आश्चर्य, सूर्यास्त की महिमा, एक मानवीय चेहरे के गतिशील रहस्य को देख पाया।

प्रभु ने अपने पिता से उसके द्वारा दिए गए उपहारों के बारे में भी बात की (17:8) : "क्योंकि जो वचन तू ने मुझे दिये, मैं ने उन्हें उनको पहुँचा दिये; और उन्होंने उनको ग्रहण किया, और सच सच जान लिया है कि मैं तेरी ओर से आया हूँ, और विश्वास कर लिया है कि तू ही ने मुझे भेजा।" क्या पिलातुस ने इस पर विश्वास किया? या काइफा ने? या हेरोदेस अंतिपास ने? एक पल के लिए भी नहीं। क्या विद्वान रब्बियों ने इस पर विश्वास किया? उदाहरण के लिए, हिलेल के सम्मानित चेले और तरसुस के युवा शाऊल के शिक्षक, गमेलिएल ने इस पर विश्वास किया? क्या अपने सिंहासन पर बैठे कैसर ने इस पर विश्वास किया? या एलेक्जेंड्रिया के प्रसिद्ध शिक्षक फिलो ने इस पर विश्वास किया? क्या एथेंस में मार्स हिल के विद्वानों ने इस पर विश्वास किया? एक पल के लिए भी नहीं। लेकिन यह सच था।

पतरस, याकूब, यूहन्ना और अन्य लोगों ने इस पर विश्वास किया। इस संसार के बंजर अविश्वास के विशाल रेगिस्तान में, इन लोगों का उसके वचनों में विश्वास, जो सीधे परमेश्वर से आते हैं, और उसके परम मूल में पिता से आते हैं, एक शानदार तालाब था जहाँ उद्धारकर्ता की प्यासी आत्मा आनन्दित हो सकती थी और झुककर पी सकती थी। उसने उन्हें ब्रह्मांड में सबसे कीमत्ती वरदान दिया था : वह इस बात का ज्ञान था कि वह क्या है, अर्थात् वह माध्यम जिसके माध्यम से पिता के जीवनदायी वचन मानव जाति तक पहुँच सकते थे; और इसका ज्ञान कि वह कौन था, अर्थात् वह जो पिता के साथ अनन्त रूप से सह-अस्तित्व में था, पिता से मानव रूप धारण करने और कुछ समय के लिए पृथ्वी पर रहने के लिए निकला था।

4. उसका संप्रभु अनुग्रह (17:9-10)

वह पिता से उन लोगों के बारे में बात करता है जो उसकी प्रार्थना से बाहर रह गए (17:9क) : "मैं उनके लिये विनती करता हूँ; संसार के लिये विनती नहीं करता।" इसका यह मतलब नहीं है कि प्रभु को खोए हुए लोगों की परवाह नहीं थी। उसने हर एक व्यक्ति की तरस के साथ परवाह की जो उस क्षण भी उसे कदम दर कदम क्रूस की ओर ले जा रही थी। लेकिन ये वे लोग थे जिन्हें संसार को सुसमाचार देना था और अभी यह ज़्यादा ज़रूरी था कि वह उनके लिए प्रार्थना करे बजाय इसके कि वह संसार के लिए प्रार्थना करे। अब कुछ भी संसार की दिशा नहीं बदल सकता था। कुछ ही घंटों में यह अपना सबसे बुरा रूप ले चुका होता।

वह उनके बारे में बात करता है जिन्हें वह अपनी प्रार्थना में उठाता है (17:9ख-10) : "मैं उनके लिये विनती करता हूँ... जिन्हें तू ने मुझे दिया है, क्योंकि वे तेरे हैं; और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा है, और जो तेरा है वह मेरा है, और इनसे मेरी महिमा प्रगट हुई है।" इन लोगों के बारे में उसके लिए यह कहना कितना आश्चर्यजनक था। वे गंदी शपथें और शाप जिनके साथ वह अपने प्रभु को अस्वीकार करेगा, वे पहले से ही पतरस के हृदय में थे। वे तेज़ पैर

जिनके ज़रिए ये लोग रात में भाग जाएँगे, उसे उसके दुश्मनों के हवाले करके, पहले से ही जूते पहने हुए थे। उनका डर बस पल भर के लिए सो रहा था। यीशु ने कहा "इनसे मेरी महिमा प्रगट हुई है।" "वे तेरे हैं... और मेरे हैं!" — मानो वह स्वर्ग के मुकुट रत्नों के बारे में बात कर रहा हो। जो वह था।

यीशु ने इन लोगों को उस समय नहीं देखा था, जब वे उसके चारों ओर इकट्ठे थे, आधे से ज़्यादा सुन रहे थे, मन भटक रहा था, सवालों और रुकावटों से भरा हुआ था। उसने उन्हें "अपने में पूर्ण" के रूप में देखा। उसने न केवल खुरदरे पत्थर को देखा, बल्कि कटे और चमकते हीरे को भी देखा। उसने इन लोगों को वैसे ही देखा जैसे हम भी आने वाले दिन में उन्हें देखेंगे जब आखिरकार वे (और हम) उसके जैसे होंगे "क्योंकि हम उसे वैसा ही देखेंगे जैसा वह है।"

इस प्रकार प्रभु ने अपने पिता से उस संसार के बारे में बात की जहाँ से वह आया था। उसने अभी-अभी चेलों से कहा था कि वह घर वापस जा रहा है। इस महान प्रार्थना के आरंभिक पद उसके घर के विचारों से भरे हुए हैं। बीच के रास्ते के भय को उस महिमा ने निगल लिया है जो दूसरी तरफ उसका इंतजार कर रही है।

यीशु के लिए स्वर्ग एक वास्तविक स्थान था। उसका हृदय उस अनन्त घर के विचारों से भरा हुआ था। अब उसकी प्रार्थना उस शत्रुतापूर्ण संसार से निपटने के लिए मुड़ गई जिसमें वह अभी भी था।

B. वह संसार जिसमें वह अब था (17:11-23)

एक समय यह संसार उस संसार का उपनगर था जहाँ से वह आया था। लेकिन यह उससे पहले की बात है "एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया" (रोमियों 5:12)। यह संसार अब ब्रह्मांड में एक पराई चौकी, अंतरिक्ष में एक धब्बा बन गई था। यह संसार उसे मारने की तैयारी कर रहा था। क्रूस के लिए लकड़ी पहले से ही कटी हुई थी। उसके हाथों और पैरों के लिए कीलें पहले से ही गढ़ी हुई थीं। उसके हाथों और पैरों को छेदने के लिए भाला पहले से ही बना हुआ था। अंधेरे और भयानक काम के लिए जगह पहले से ही चिह्नित की गई थी, शहर की दीवार के बाहर एक खोपड़ी के आकार की पहाड़ी। अवैध अदालतों, झूठे गवाहों, दुर्भावनापूर्ण अभियोजकों, चीखती भीड़, धमकाने वाले सैनिकों, कायर न्यायाधीश और अवैध सजा की कानूनी मशीनरी पहले से ही ईंधन और तेल से भरकर काम करने के लिए तैयार थी।

यीशु को यह पता था। उसने लगभग एक घंटे पहले किस बारे में प्रार्थना की थी? उसने दूसरों के लिए प्रार्थना की; उसने प्रार्थना की कि इस संसार में उसके पिता की स्तुति हो; उसने प्रार्थना की कि इस संसार में उसके अनुयायियों की रक्षा हो।

1. इस संसार से उसका अलगाव (17:11-13)

इस प्रार्थना का दूसरा विषय दो भागों में है। हम पहले उसके अलगाव (17:11क) पर ध्यान देते हैं: "मैं अब जगत में न रहूँगा।" संसार से उसका अलगाव पूरा हो चुका था। जहाँ तक उसकी शारीरिक उपस्थिति का सवाल था, वह संसार से अलग हो चुका था। वह अपने हृदय और आत्मा से खुद को अपने पिता के साथ मानता था। आने वाले दोपहर के तीन बजे तक वह मर चुका होगा, और संसार उसके साथ खत्म हो जाएगा। उसके बाद, जब तक वह महिमा में फिर से नहीं आता, तब तक स्वर्ग का इस संसार के साथ व्यवहार पवित्र आत्मा के हाथों में होगा। एक

बार जब उसकी शारीरिक सुरक्षा हटा दी गई, तो चेलों (और सदियों से उसके लहू से खरीदे लोगों) को पिता की विशेष सुरक्षा की आवश्यकता होगी।

दूसरा, हमें उसका आग्रह मिलता है (17:11ख-12)। सबसे पहले एक अनुरोध आता है (17:11ख) : "परन्तु ये जगत में रहेंगे, और मैं तेरे पास आता हूँ। हे पवित्र पिता, अपने उस नाम से जो तू ने मुझे दिया है, उनकी रक्षा कर।" जब प्रभु अपने बारे में बोलते हैं तो वह "पिता" कहते हैं; जब वह अपने चेलों के बारे में बात करता है तो "पवित्र पिता" कहता है; जब वह संसार के बारे में बात करता है तो "धर्मी पिता" कहता है।

उनके और उनके पिता के बीच एक सरल रिश्ता था, एक पिता-पुत्र का रिश्ता। किसी विशेषण की आवश्यकता नहीं थी। यह रिश्ता सामंजस्यपूर्ण एकता का था, जो इच्छाओं के टकराव से अप्रभावित था।

चेलों और पिता के बीच एक पवित्र संबंध था। उन्हें याद रखना था कि यद्यपि वह उनका पिता था, फिर भी वह एक पवित्र पिता था। उन्हें अपने पुराने स्वभाव की अंतर्निहित पापपूर्णता, पाप, शारीरिकता और सांसारिकता से सावधान रहना चाहिए। पवित्र चीजों के साथ ऐसी कोई परिचितता न हो जो चंचलता को जन्म देती है।

संसार और पिता के बीच एक गंभीर रिश्ता था। वह धर्मी पिता है। उसके और संसार के बीच वह क्रूस है, जिस पर संसार ने उसके पुत्र की हत्या की थी — और साथ ही कुछ भयानक अधूरे काम भी हैं जो फिलहाल स्थगित रखे गए हैं, क्योंकि जहाँ पाप बहुत होता है, वहाँ अनुग्रह और भी अधिक होता है।

जो संसार उद्धारकर्ता के विरुद्ध हो गया था, वह पवित्रजनों के विरुद्ध हो जाएगा। यीशु ने कहा "मैं तुम्हारे मैं तेरे पास आता हूँ," और निस्संदेह इस विचार से उसका हृदय उछल पड़ा। वह घर जा रहा था। "परन्तु ये जगत में रहेंगे।" उसका हृदय उनके लिए दुखी था। जल्द ही संसार का गुस्सा और उपहास इन लोगों और उनके परिवर्तित लोगों पर युगों-युगों तक चलेगा। संसार नहीं बदलेगा। वह संसार को बदलने नहीं आया था, बल्कि संसार से अपने नाम के लिए लोगों को बुलाने आया था। अंत में संसार को नष्ट होना ही था। इसलिए एक अनुरोध था : "अपने उस नाम से जो तू ने मुझे दिया है, उनकी रक्षा कर।" उनके लिए परमेश्वर के अपने अच्छे नाम की प्रतिज्ञा की गई है।

फिर समीक्षा आती है (17:12)। सबसे पहले, प्रभु अपनी गवाही की समीक्षा करता है (17:12क) : "जब मैं उनके साथ था, तो मैं ने तेरे उस नाम से, जो तू ने मुझे दिया है उनकी रक्षा की।" वह हमेशा उनके और संसार के बीच में खड़ा रहा। जब संसार ने चेलों से पूछा कि यूहन्ना के चेले उपवास क्यों करते हैं, तो वह उनके बचाव में आया, लेकिन उन्होंने उपवास नहीं किया (मत्ती 9:14-15)। वह रूपांतरण के पर्वत के नीचे उनके बचाव में आया, जब शक्तिहीन चेलों का सामना एक व्यथित पिता, एक दुष्टात्मा से ग्रस्त लड़के और एक उपहास करने वाले संसार से हुआ (मत्ती 17:14-21)। वह उनके बचाव में आया जब एक अधिकारी ने उनकी कर स्थिति की जांच की (मत्ती 17:24-27)। वह उसी रात उनके बचाव में आया, जब यहूदा भीड़ के साथ आया (यूहन्ना 18:7-9)।

फिर प्रभु ने एक त्रासदी की समीक्षा की (17:12ख) : "और विनाश के पुत्र को छोड़ उनमें से कोई नष्ट नहीं हुआ, इसलिये कि पवित्रशास्त्र में जो कहा गया वह पूरा हो।" ऐसा ही एक शास्त्र भजन 41:9 था, जिसे यीशु ने पहले ही उद्धृत किया था (यूहन्ना 13:18)। यहाँ प्रभु ने "खोए हुए" के लिए जिस शब्द का इस्तेमाल किया है वह अपोल्लुमी है (यह यूहन्ना में बारह बार आता है), यह शब्द पापी के विनाश के लिए इस्तेमाल किया जाता है, और अंतिम और निराशाजनक विनाश को व्यक्त करने के लिए यूनानी भाषा में सबसे मजबूत शब्दों में से एक है।

"विनाश का पुत्र" शीर्षक का प्रयोग पवित्रशास्त्र में अन्यत्र केवल एक ही स्थान पर किया गया है, और वहाँ यह अधर्मी, पाप के मनुष्य, शैतान के मसीहा (2 थिस्सलुनीकियों 2:3) का शीर्षक है। दोनों ही मामलों में निश्चितता का प्रयोग किया गया है, विनाश का पुत्र। कुछ लोगों ने इसे मसीह विरोधी के साथ यहूदा की सकारात्मक पहचान के रूप में लिया है और उनका मानना है कि मसीह विरोधी मृतकों में से जी उठा यहूदा होगा। यह असंभव है क्योंकि पाप का मनुष्य यहूदी नहीं, बल्कि अन्यजाति का होना चाहिए। वह समुद्र से बाहर आता है (प्रकाशितवाक्य 13) और वह दानिय्येल 7:8 का "छोटा सींग" है, जो आने वाला अन्यजाति का विश्व शासक है। "विनाश" के लिए शब्द अपोलिया है, जो अपोलुमी का एक समानार्थी वचन है — "विनाश के पुत्र को छोड़ उनमें से कोई नष्ट नहीं हुआ," समान शब्दों की गंभीर पुनरावृत्ति कथन की ताकत को बढ़ाती है। यहूदा, उसी क्षण, अपनी सशस्त्र भीड़ के साथ, सीधे विनाश की ओर बढ़ रहा था। इससे पहले कि यीशु अपनी आत्मा को त्यागकर उसके क्रूस की विजय की घोषणा करने के लिए अधोलोक में चला जाता, वह मर चुका होता और शापित हो चुका होता।

फिर हमें उसकी संतुष्टि मिलती है (17:13) : "अब मैं तेरे पास आता हूँ, और ये बातें जगत में कहता हूँ, कि वे मेरा आनन्द अपने में पूरा पाएँ।" प्रभु इसके बारे में बात करते रहते हैं। यह "उस आनन्द के लिए था जो उसके आगे धरा था" कि उसने "अपमान की चिन्ता न करके क्रूस सहा" (इब्रानियों 12:2)। उसने इसे कुछ क्षण पहले ही कहा था (17:11), और वह इसे फिर से कहता है: "मैं तेरे पास आता हूँ।" इसके आगे महिमा थी!

जो आनंद उसकी आत्मा में भरा था, वह उसके पवित्र जनों की आत्माओं में भी फैलना था। यदि उनका प्याला भी भरा न होता, तो उसका आनंद पूरा नहीं हो सकता था। इसलिए उसने प्रार्थना की कि "वे अपने भीतर मेरा पूरा आनंद पाएँ।"

2. इस संसार में उसके चेले (17:14-23)

हमारे प्रभु ने अपने चेलों से पाँचसूत्रीय अनुरोध किया। सबसे पहले, उसने इस संसार में उनकी सुरक्षा के लिए प्रार्थना की *(17:14क) : "*मैं ने तेरा वचन उन्हें पहुँचा दिया है।*"* यह पिता का वचन है जो उन लोगों के प्रति संसार के दृष्टिकोण को निर्धारित करता है जो उस वचन को संजोते हैं। संसार इसे स्वीकार नहीं करेगा। वह वचन संसार के धर्मों को गलत साबित करता है, उसके दर्शन को नकारता है, उसकी बुद्धि की अवहेलना करता है। संसार परमेश्वर के वचन से और उसे घोषित करने वालों से भी घृणा करता है।

यह देखना दिलचस्प है कि इस प्रार्थना में कितनी बार संसार को पिता परमेश्वर के विशेष विरोधी के रूप में देखा गया है। यह पूरे पवित्रशास्त्र में समान रूप से सत्य है। "यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है" (1 यूहन्ना 2:15)। "क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा, और आँखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार की ओर से है" (1 यूहन्ना 2:16)।

इसी तरह, शैतान पुत्र परमेश्वर का विशेष विरोधी है। इस प्रकार हम शैतान को "एक बड़े लाल अजगर" के रूप में देखते हैं जो "उस स्त्री के सामने खड़ा है जो प्रसव के लिए तैयार थी, ताकि उसके बच्चे को जन्म लेते ही निगल जाए" (प्रकाशितवाक्य 12:4, जो इतिहास में मसीह के जन्म के समय हेरोदेस द्वारा पूरा किया गया, मत्ती 2:7-18)। "इसी उद्देश्य से परमेश्वर का पुत्र प्रकट हुआ, कि वह शैतान के कामों को नष्ट कर दे" (1 यूहन्ना 3:8)।

इसी तरह शरीर और पवित्र आत्मा एक दूसरे के विरुद्ध खड़े हैं : “मेरा आत्मा मनुष्य से सदा लों विवाद करता न रहेगा, क्योंकि मनुष्य भी शरीर ही है” (उत्पत्ति 6:3)। “जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है” (यूहन्ना 3:6)। “क्योंकि शरीर आत्मा के विरुद्ध और आत्मा शरीर के विरुद्ध लालसा करती है: और ये एक दूसरे के विरोधी हैं” (गलातियों 5:17)।

परमेश्वर के लोगों के प्रति संसार की दृढ़ शत्रुता इस तथ्य पर केंद्रित है कि परमेश्वर के लोगों के पास एक ऐसी पुस्तक है जिससे संसार नफरत करता है। प्रभु इसे एक और कारण के रूप में आग्रह करता है कि क्यों उसके पिता को उन्हें अपनी सुरक्षा में लेना चाहिए।

प्रभु ने इस संसार में उनकी संभावनाओं के बारे में भी प्रार्थना की (17:14ख, ग) : “और संसार ने उनसे बैर किया, क्योंकि जैसा मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं।” संसार हर चीज़ को अपने औसत दर्जे में लाना पसंद करता है। यह अनुरूपता की मांग करता है। यह हर चीज़ को कमरे के तापमान में लाना पसंद करता है। हमें न तो बहुत ज़्यादा गर्म होना चाहिए और न ही बहुत ज़्यादा ठंडा। हमें नाव को हिलाना नहीं चाहिए। अगर हम ऐसा करेंगे, तो संसार उपद्रवी हो जाएगा।

यीशु ने नाव को हिला दिया; उसने अनुरूप होने से इनकार कर दिया। संसार उसे अपने साँचे में ढाल नहीं सका। वह बहुत अच्छा, बहुत चतुर, बहुत बहादुर, बहुत ईमानदार, बहुत अलग था। इसलिए संसार ने उसे मार डाला। अब वह अपना लहू से सना हुआ हाथ हमारी ओर बढ़ा रहा है। हमसे उम्मीद की जाती है कि हम यीशु के लहू के लिए संसार से हाथ मिलाएँ। लेकिन हम संसार के नहीं हैं, ठीक वैसे ही जैसे वह संसार का नहीं था। हम संसार में हैं, लेकिन हम संसार के नहीं हैं। जल्दी या बाद में संसार हमारे साथ वैसा ही व्यवहार करेगा जैसा उसने उसके साथ किया था, और उन्हीं कारणों से। इस प्रकार संसार ने प्रेरितों को मार डाला और संतों को सताया। इसलिए यीशु ने शैतान द्वारा बंदी बनाए गए संसार में अपने लोगों की संभावनाओं के बारे में प्रार्थना की।

प्रभु ने इस संसार में उनकी शुद्धता के बारे में भी प्रार्थना की (17:15-17)। अपने सुंदर मुखौटे के बावजूद, यह संसार एक गंदा स्थान है। प्रभु ने इस बारे में उनकी सुरक्षा के लिए प्रार्थना की (17:15-16) एक ऐसे संसार में जहाँ हर मार्ग, हर प्रस्ताव, हर चीज़ संभावित रूप से अपवित्र है। इस संसार में उनके लोगों के रूप में, हमारी सुरक्षा दो गुना है। हमें उसकी सर्वशक्तिमान सामर्थ्य को ध्यान में रखना चाहिए (17:15) : “मैं यह विनती नहीं करता कि तू उन्हें जगत से उठा ले; परन्तु यह कि तू उन्हें उस दुष्ट से बचाए रख।” प्रार्थना केवल यह नहीं है कि हम बुराई से दूर रहें, बल्कि यह कि हम दुष्ट से, इस संसार के राजकुमार, इस संसार के ईश्वर से दूर रहें (1 यूहन्ना 5:18-19 में समानांतर वाक्यांश देखें)। यीशु ने प्रार्थना की कि उसके लोगों को एक व्यक्तिगत और वास्तविक शैतान से बचाया जाए। यह संसार उसकी मांद है। जैसे विश्वासी मसीह में घिरा हुआ है, वैसे ही अविश्वासी दुष्ट में घिरा हुआ है। हमारी नागरिकता स्वर्ग की है; अविश्वासी की नागरिकता पृथ्वी की है। “सारा संसार दुष्ट के वश में पड़ा है” (1 यूहन्ना 5:19)।

प्रभु ने यह प्रार्थना नहीं की कि उसके लोग खतरे के दृश्य से तुरंत दूर हो जाएँ; यह संसार भी कर्तव्य का दृश्य है। हम यहाँ उसके राजदूत के रूप में छोड़े गए हैं। प्रभु ने इसके बजाय प्रार्थना की कि पिता अपनी सर्वशक्तिमान भुजा को प्रकट करे और हमें दुष्ट से बचाए। परीक्षा के समय में उसकी सामर्थ्य हमारे लिए उपलब्ध है। दुष्ट पवित्र के सामने कुछ भी नहीं है।

हमें अपनी परदेशी स्थिति (17:16) को भी ध्यान में रखना चाहिए : "जैसे मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं।" हम दूसरे संसार के हैं। जैसा कि पौलुस कहता हैं, हमें "[परमेश्वर के] प्रिय पुत्र के राज्य में स्थानांतरित कर दिया गया है" (कुलुस्सियों 1:13)। दूसरे संसार में नागरिकता के इस दर्शन ने अब्राहम को जकड़ लिया और उसे यहाँ एक अजनबी और प्रवासी बना दिया (इब्रानियों 11:9-10; उत्पत्ति 23:3-4)। जब हम पाप करने के लिए लुभाए जाते हैं तो हमें अपनी नागरिकता का दावा करना चाहिए। हमें कहना चाहिए: "नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैं एक राजा का बच्चा हूँ। परमेश्वर मेरा पिता है; उसका पुत्र मेरा उद्धारकर्ता है; उसका आत्मा मेरा सांत्वना देने वाला और मार्गदर्शक है। मैं अपने परिवार या अपने देश पर इस तरह से अपमान लाने के बारे में नहीं सोचूंगा।"

प्रभु ने अपने पिता से अपने चेलों और इस संसार में उनके पवित्रीकरण (17:17) के बारे में बात की : "सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर : तेरा वचन सत्य है।" परमेश्वर का सत्य अलग करने वाली शक्ति है। आइए हम अपने दिलों में यह बात बिठा लें कि परमेश्वर ने जो कुछ भी कहा है वह सब सत्य है -— पूर्ण रूप से और सापेक्ष रूप से नहीं, पूरी तरह से और आंशिक रूप से नहीं, महत्वपूर्ण रूप से और संयोगवश नहीं। परमेश्वर के सत्य का लक्ष्य ज्ञान नहीं है — जो यूनानियों, दार्शनिकों और इस संसार के विद्वानों का लक्ष्य है — बल्कि पवित्रता है। परमेश्वर के वचन में एक परिवर्तनकारी गुण है।

इसके बाद प्रभु चेलों और इस संसार में उनके कार्यक्रम (17:18-21) के बारे में प्रार्थना करता है। उन्हें इस संसार में उनके भेजे हुए लोगों के रूप में रहना था (17:18) : "जैसे तू ने मुझे जगत में भेजा, वैसे ही मैं ने भी उन्हें जगत में भेजा।" अभिव्यक्ति "जैसा...वैसे ही" एक सटीक समानांतर को दर्शाती है। यीशु ने नीकुदेमुस से कहा, "जैसे मूसा ने जंगल में साँप को ऊपर उठाया, वैसे ही मनुष्य के पुत्र को भी ऊपर उठाया जाना अवश्य है" (यूहन्ना 3:14)। पौलुस ने लिखा, "जैसे मसीह पिता की महिमा से मरे हुओं में से जी उठा, वैसे ही हमें भी जीवन की नवीनता में चलना चाहिए" (रोमियों 6:4)।

प्रभु यीशु इस संसार में इसलिए आया कि वे हमारे भीतर वास करने वाले, बिना शोकित पवित्र आत्मा के द्वारा स्वयं को परमेश्वर के लिए पूरी तरह से उपलब्ध करा सके; क्योंकि पवित्र आत्मा ही वह है जिसके द्वारा मनुष्य स्वयं को परमेश्वर के लिए उपलब्ध कराता है। पवित्र आत्मा ही वह है जिसके द्वारा परमेश्वर स्वयं को हमारे लिए उपलब्ध कराता है।

परमेश्वर होने के रूप में यीशु जो कुछ है, पवित्र आत्मा के द्वारा वह मनुष्यों के रूप में हम सब के लिए उपलब्ध है, जब हम अपने मनुष्य होने के सम्पूर्ण स्वरूप को यीशु-परमेश्वर लिए उपलब्ध कर देते हैं। पवित्र आत्मा ही वह है जिसके माध्यम से हम स्वयं को मसीह के लिए उपलब्ध कराते हैं और जिसके माध्यम से मसीह स्वयं को हमारे लिए उपलब्ध कराता है। इस प्रकार, जैसे प्रभु यीशु पिता का प्रतिनिधित्व करने के लिए पृथ्वी पर रहता था, वैसे ही हम अब मसीह का प्रतिनिधित्व करने के लिए पृथ्वी पर रहते हैं। वह हमारे द्वारा अपने दिनों को बढ़ाता है (यशायाह 53:10) और हमारे द्वारा पृथ्वी पर अपना कार्य करता है।

चेले उसके "भेजे हुए" लोग थे। यह शब्द अपोस्टेलो है, जो कि प्रभु द्वारा स्वयं के लिए इस्तेमाल किया गया शब्द है। प्रभु ने इस प्रार्थना में छः बार कहा कि वह भेजा गया व्यक्ति है और (शब्द पेम्पो के उपयोग के साथ) यूहन्ना के सुसमाचार में कम से कम तैंतालीस बार यह आया है। अपोस्टेलो शब्द हमें हमारा हिंदी शब्द प्रेरित देता है।

चेलों को इस संसार में उसके पवित्र लोगों के रूप में रहना था (17:19) : "और उनके लिये मैं अपने आप को पवित्र करता हूँ, ताकि वे भी सत्य के द्वारा पवित्र किये जाएँ।" यहाँ "पवित्र" शब्द का इस्तेमाल पवित्रीकरण या समर्पण के विचार को दर्शाता है। यह विचार नैतिक चरित्र के संदर्भ में पवित्र बनाने के बारे में नहीं है, बल्कि परमेश्वर के लिए अलग किए जाने के बारे में है, उदाहरण के लिए पुराने नियम के जानवर, जो वेदी के लिए नियत थे, परमेश्वर के लिए अलग किए गए थे। यूहन्ना हमें गतसमनी में प्रभु की पीड़ा और उसके पिता के उद्देश्य के लिए उसके दृढ़ समर्पण को नहीं दिखाता है : "मेरी नहीं, बल्कि तेरी इच्छा पूरी हो।" यहाँ वह हमें "मृत्यु तक, यहाँ तक कि क्रूस की मृत्यु तक आज्ञाकारी रहने" के प्रभु के दृढ़ निश्चय को दिखाता है।

प्रभु का अभिषेक केवल चेलों के लिए उदाहरण नहीं था, बल्कि चेलों के स्वयं के अभिषेक की अभिव्यक्ति भी थी। "उनके लिए मैं अपने आप को पवित्र करता हूँ, ताकि वे भी पवित्र हो जाएँ।" प्रभु को जीवन में परमेश्वर के लिए अलग किया गया था (इब्रानियों 10:5-8) और अब वह मृत्यु में परमेश्वर के लिए अलग किया गया है (इब्रानियों 10:9-10)। इस प्रकार इब्रानियों का लेखक कहता हैं, "हम एक बार यीशु मसीह के शरीर की बलि के द्वारा पवित्र हो गए हैं।" मसीह की मृत्यु स्वचालित रूप से विश्वासी को उस संसार से अलग कर देती है जिसने उस हत्या को अंजाम दिया और विश्वासी को परमेश्वर के लिए अलग कर देती है। "ताकि वे भी सत्य के द्वारा पवित्र हो जाएँ," यीशु ने जोड़ा, या "सत्य में," जैसा कि कुछ लोगों ने इसका अनुवाद किया है – सच में, वास्तव में, केवल नाम या खोखले दावे में नहीं। एक बार जब कलवरी की सच्चाई हमारी आत्माओं को जकड़ लेती है और क्रूस हमारे लिए संसार के किसी भी अक्रष्ण को खत्म कर देगा। इस प्रकार पौलुस क्रूस के बारे में बोलता है : "पर ऐसा न हो कि मैं अन्य किसी बात का घमण्ड करूँ, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का, जिसके द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ" (गलातियों 6:14)। आइए हम इस बात की एक झलक देखें कि संसार ने हमारे प्रभु के साथ क्या किया और यह संसार और उनके प्रति हमारे दृष्टिकोण को बदलने के लिए पर्याप्त होगा। संसार एक साथ युद्ध का मैदान और मिशन का मैदान दोनों बन जाता है।

तब भी चेलों को इस संसार में उसके सफल लोगों के रूप में होना था (17:20-21)। प्रभु का दर्शन और प्रार्थना अब संसार में प्रेरितिक मिशन को शामिल करने के लिए व्यापक हो गई है। कलीसिया अब मसीह द्वारा परिकल्पित है (17:20) : "मैं केवल इन्हीं के लिये विनती नहीं करता, परन्तु उनके लिये भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे।" यूहन्ना के सुसमाचार में कलीसिया का नाम से उल्लेख नहीं किया गया है। हालाँकि, जब तक उसने यह सुसमाचार लिखा, तब तक यह संसार में पहले से ही एक ताकत बन चुकी था। प्रेरितों ने संसार को सुसमाचार सुनाने के लिए यरूशलेम छोड़ दिया। वास्तव में, जब तक यूहन्ना ने लिखा, तब तक रोमियों ने यरूशलेम, मंदिर और "मातृ कलीसिया" के बारे में जो भी मिथक हो सकता था, उसे खत्म कर दिया था ।

यहाँ प्रभु कलीसिया के लिए प्रार्थना करता है। संसार में प्रेरितिक मिशन का उद्देश्य सहस्राब्दि राज्य लाना नहीं था, यहूदी धर्म को सुधारना और पुनर्जीवित करना नहीं था, बल्कि कलीसिया नामक एक नई, ईश्वरीय इकाई को अस्तित्व में लाने, आत्माओं को जीतने, विश्वासियों का निर्माण करने, मसीह की शिक्षाओं को आगे बढ़ाने और नए नियम को लिखने के लिए पवित्र आत्मा का साधन बनना था।

प्रभु की सब कुछ देखने वाली नज़र सदियों से चली आ रही थी। उसने उन सभी को देखा जो पवित्र आत्मा की शक्ति में इन पहले मसीहियों के कामों के परिणामस्वरूप विश्वास करेंगे। उसने उनके लिए प्रार्थना की। उसने हमें देखा। उसने हमारे लिए प्रार्थना की।

प्रभु ने इस नए विचार को जारी रखा। हम देखते हैं कि अब कलीसिया मसीह में समाहित हो गई है (17:21) : "कि वे सब एक हों; जैसा तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हूँ, वैसे ही वे भी हम में हों, जिससे संसार विश्वास करे कि तू ही ने मुझे भेजा है।" यहाँ रहस्यपूर्ण एकता और प्रत्यक्ष एकता दोनों हैं।

आज संसार में जो कुछ है वह एक ऐसी कलीसिया है जो अपने आप में ही विभाजित है, बड़े और छोटे गुटों में बंटा हुई है। रोमी कैथोलिक कलीसिया है, यूनानी ऑर्थोडॉक्स कलीसिया है, कॉप्टिक कलीसिया है। राज्य कलीसियाएँ हैं। विभिन्न गैर-अनुरूपतावादी संप्रदाय कलीसियाएँ हैं। कलीसिया की देह पर पंथ, अर्ध-मसीही कैंसर हैं। उद्धार पाए हुए लोग "कलीसिया" को देखते हैं और बैपटिस्ट और ब्रदरन, मेथोडिस्ट और मॉर्मन, प्रेस्बिटेरियन और पेंटेकोस्टल, कैथोलिक और कांग्रेगेशनलिस्ट देखते हैं। वे ही संदेहवादी और भ्रमित हो जाते हैं।

इनमें से कई कलीसिया बेदारी के समय शुरू हुई, लेकिन वर्षों बीतने के साथ ही वे मरणासन्न, मृत हो गई हैं। कुछ ने उदारवाद, विधिवाद या झूठे सिद्धांत के विरोध में शुरुआत की। कुछ ने बलशाली अगुओं का अनुसरण किया, जो इस, उस या अन्य पर अपना मार्ग बनाने के लिए दृढ़ थे। कुछ को झूठ के पिता ने ही जन्म दिया है। कई कलीसियाएँ, यहाँ तक कि महत्वपूर्ण सत्य को धारण करने वाली कलीसियाओं में भी, विशेष मुद्दों पर विभाजित हैं। बपतिस्मा, अनन्त सुरक्षा, मसीह का दूसरा आगमन, वरदानों की प्रकृति और वैधता, मसीह का व्यक्तित्व, परमेश्वर की संप्रभुता, कलीसिया प्रशासन — सिद्धांत का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र हो जिस पर एक कलीसिया दूसरी कलीसिया से असहमत न हो।

फिर हम एक कैसे हो सकते हैं? गैरसहस्त्रवर्षीयवाद (एमिलियनिस्ट) और युगवादी (डिस्पेंसेशनलिस्ट) के बीच, आर्मिनियन और कैल्विनिस्ट के बीच, कट्टरपंथी और उदारवादी के बीच, शिशु बपतिस्मा को मानने वालों और विश्वासियों के बपतिस्मा को मानने वालों के बीच क्या सहमति हो सकती है? उदारवादी का जवाब समझौता है — एक सार्वभौमिक कलीसिया जिसमें सैद्धांतिक मतभेदों को एक विशाल, संगठित विश्व कलीसिया परिषद के पक्ष में हटा दिया जाता है। उस तरह का समूह निश्चित रूप से वह नहीं है जो मसीह के मन में था जब उसने कलीसिया की एकता के लिए प्रार्थना की थी।

जब विश्वासियों की एकता के लिए हम प्रभु की प्रार्थना पर वापस आते हैं, तो हमें उसकी सर्वज्ञता को पहचानना चाहिए। वह उन विभाजनों को जानता था, जिनमें से कई आवश्यक विभाजन थे, जो आने वाली शताब्दियों के दौरान विकसित होंगे और जो बेहतर शब्द के अभाव में, जिसे हम मसीही जगत कह सकते हैं, उसे जन्म देंगे। तो फिर, हम प्रभु की प्रार्थना को किस तरह से समझ सकते हैं?

सबसे पहले, उन्होंने एक रहस्यमय एकता के लिए प्रार्थना की, और उस प्रार्थना का पूरा उत्तर दिया गया है। मसीह की रहस्यमय कलीसिया एक है, पूर्णरूप से, पूरी तरह से, अविभाज्य रूप से एक। यह पिन्तेकुस्त के दिन और इस वर्तमान युग में पवित्र आत्मा का अनूठा कार्य है। वह मसीह की रहस्यमय देह में व्यक्तिगत विश्वासियों को बपतिस्मा दे रहा है (1 कुरिन्थियों 12:12-27)। मसीह की रहस्यमय देह में कोई फूट नहीं है। वह सिर है; हम सदस्य हैं। प्रत्येक सदस्य उसके लहू में धोया जाता है, वह पवित्र आत्मा द्वारा ऊर्जा प्राप्त करता है, मसीह से जुड़ा हुआ है, उसमें परिपूर्ण और संपूर्ण है। यह अपने सार्वभौमिक पहलू में कलीसिया है, इफिसियों में देखी गयी कलीसिया, बिना दाग या झुर्री या ऐसी किसी भी चीज़ की एक शानदार कलीसिया, बेदाग, समय से अछूती, सभी समय और स्थान में फैली हुई, अनंत काल में निहित, मसीह की दुल्हन।

दूसरा, प्रभु ने स्पष्ट एकता के लिए प्रार्थना की। यह सार्वभौमिक कलीसिया नहीं है, जिसे अभी तक किसी ने नहीं देखा है; यह स्थानीय कलीसिया को संदर्भित करता है — चाहे वह बैपटिस्ट कलीसिया हो या प्रेस्बिटेरियन कलीसिया, या लूथरन कलीसिया या किसी अन्य प्रकार का कलीसिया — विश्वासियों का कोई भी स्थानीय समूह जो प्रभु यीशु से प्रेम करता है, जो उसके अनुग्रह से बचाए गए हैं, जो परमेश्वर के वचन की ज्योति में चलने की कोशिश कर रहे हैं, जो आराधना और संगति और मसीही सेवा के लिए एक साथ खींचे गए हैं, जो मसीह में सत्य को दृढ़ता से थामे हुए हैं। यहाँ प्रभु अपने लोगों की इन स्थानीय मण्डलियों के भीतर एकता और शांति के लिए प्रार्थना कर रहे हैं। फिर जब अधर्मी लोग देखते हैं, या कलीसिया से परिचित होते हैं, तो उन्हें यकीन हो जाता है कि यह परमेश्वर का है। वे अपने लिए मसीह पर विश्वास करते हैं क्योंकि उन्होंने मसीह को उसके लोगों के बीच देखा और महसूस किया है।

प्रभु अपने चेलों के लिए प्रार्थना करना जारी रखता है और इस संसार में उनकी सिद्धता के लिए प्रार्थना करता हैं *(17:22-23)*। उसने इस विशेष अनुरोध में दो चीजें शामिल कीं। उसने प्रार्थना की कि उसकी महिमा उन्हें प्रदान की जाए (17:22क) : "वह महिमा जो तू ने मुझे दी मैं ने उन्हें दी है।" यह उसके ईश्वरत्व की महिमा नहीं है — उसने अपने देहधारण (फिलिप्पियों 2:6-8) के समय उस महिमा को अपने सांसारिक प्रवास की अवधि के लिए अलग रख दिया। यह उसकी परिपूर्ण और पापरहित मानवता की महिमा है : "परमेश्वर देह में प्रकट हुआ," अर्थात् परमेश्वर का प्रभु यीशु के महिमामय व्यक्तित्व में देखा, ज्ञात होना, सुना और छुआ जाना।

प्रभु ने अब मशाल हमें सौंप दी है। जैसे उसने खुद को अपने पिता के लिए उपलब्ध कराया, वैसे ही हमें भी खुद को मसीह के लिए उपलब्ध कराना है। जिस हद तक हम अपने अंदर निवास करनेवाले पवित्र आत्मा के द्वारा खुद को मसीह के लिए उपलब्ध कराते हैं, उसी हद तक मसीह भी खुद को हमारे लिए उपलब्ध कराता है। जितना अधिक हम उसके लिए उपलब्ध होंगे, उतनी ही अधिक उसकी महिमा हम में दिखाई देगी। हम परमेश्वर के सभी पित्र जनों को जानते हैं जो यीशु की सुंदरता को बिखेरते हैं।

उसने प्रार्थना की कि उनके द्वारा उसके लक्ष्य लागू किए जा सकें (17:22ख-23), ताकि उनमें एक चरित्र परिवर्तन हो सके (17:22ख-23क) : "कि वे वैसे ही एक हों जैसे कि हम एक हैं, मैं उन में और तू मुझ में कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएँ।" अपने लोगों के लिए परमेश्वर का अंतिम लक्ष्य यह है कि उन्हें उसके साथ पूर्ण एकता में लाया जाए, और इसमें चरित्र का परिवर्तन शामिल है। उन्हें सिद्ध होना चाहिए। शब्द है टेलेओ, वही शब्द जिसका पहले "पूरा" के रूप में अनुवाद किया गया था – "मैंने वह काम पूरा कर लिया है जो तूने मुझे करने के लिए दिया था" (17:4)।

हमारी स्थिति के दृष्टिकोण से, यह मसीह में पहले ही पूरा हो चुका है। परमेश्वर हमें मसीह में परिपूर्ण और संपूर्ण देखता है। यही हमारी स्थिति है। हमारी स्थिति के दृष्टिकोण से, कार्य अभी भी चल रहा है। हमारे अंदर निवास करनेवाला पवित्र आत्मा सिद्ध बनाने की प्रक्रिया जारी रखता है। मसीही जीवन के रोजमर्रा के अभ्यास में हम अभी भी सिद्ध नहीं हैं। यही हमारी स्थिति है। स्वर्गारोहण के समय "हम सब बदल जाएँगे, एक पल में, पलक झपकते ही, आखिरी तुरही फूँकते ही" (1 कुरिन्थियों 15:51-52)। "हम उसके समान हो जाएँगे, क्योंकि हम उसे वैसा ही देखेंगे जैसा वह है" (1 यूहन्ना 3:2)। हमारी स्थिति तुरंत और अनंतकाल के लिए हमारी पहचान के अनुरूप हो जाएगी।

उसने यह भी प्रार्थना करी कि ठोस गवाही हो (17:23ख) : "और संसार जाने कि तू ही ने मुझे भेजा, और जैसा तू ने मुझ से प्रेम रखा वैसा ही उनसे प्रेम रखा।" यही वह है जिसे देखने के लिए संसार प्रतीक्षा कर रहा है : क्रियाशील ईश्वरीय प्रेम। यीशु के बारे में सबसे विशिष्ट बात थी अपने पिता, परिवार, मित्रों, अनुयायियों, शत्रुओं के प्रति उसका प्रेम। वह यहूदा से उतना ही प्रेम करता था जितना यूहन्ना से करता था; वह यूहन्ना से उतना ही प्रेम रखता था जितना अन्द्रियास से करता था; वह पिलातुस से उतना ही प्रेम रखता था जितना पतरस से करता था। वह मरते हुए दो चोरों से प्रेम रखता था। वह उस रोमी सैनिक से प्रेम रखता था जिसका भाला उसके पंजर में घुस गया था। वह उस व्यक्ति से प्रेम रखता था जिसने उसके चेहरे पर घूंसा मारा था, वह व्यक्ति जिसने उसके गालों से दाढ़ी नोंच ली थी, वह व्यक्ति जिसने उसे काँटों का ताज पहनाया था, वह व्यक्ति जिसने उसे बहुत कोड़े लगाए थे, वह व्यक्ति जिसने उसके चेहरे पर थूका था।

प्रभु यीशु ने पृथ्वी पर अपना जीवन अपने पिता के प्रेम में नहाकर जिया। हमें पृथ्वी पर अपना जीवन उनके प्रेम में नहाकर जीना है। यीशु ने कहा, तब संसार "जानेगा" । सूबेदार और सैनिकों ने जान लिया। उन्होंने कहा, "यह परमेश्वर का पुत्र था।" "जानने" के लिए यूनानी शब्द गिनोस्को है। इसका अर्थ है अनुभव से जानना, परिचित होकर जानना, सीखना, अनुभव करना; यह आभारी होकर पहचान का ज्ञान है।

C. संसार और वह कौन था (17:24-26)

फिर, प्रभु ने उस संसार के बारे में प्रार्थना की जिसमें वह था। अब वह अंतिम वाक्यों पर आता है। ये वाक्य मुख्य रूप से प्रभु के व्यक्तित्व से संबंधित हैं — वह कौन था और इस ज्ञान का उस पर क्या प्रभाव पड़ना चाहिए।

1. उस संसार में उसका पूर्व-अस्तित्व (17:24)

हम उसकी इच्छा (17:24क) पर गौर करते हैं: "हे पिता, मैं चाहता हूँ कि जिन्हें तू ने मुझे दिया है, जहाँ मैं हूँ वहाँ वे भी मेरे साथ हों।" वह हमें चाहता है। वह चाहता है कि हम वहाँ रहे, जहाँ वह है। उसके बिना स्वर्ग हमारे लिए अधूरा होगा। इस बात पर हमें पूरा यकीन है। मकान की इमारत घर नहीं बनाती। वहाँ रहने वाले प्रियजन उसे घर बनाते हैं। लेकिन इसका विपरीत भी उतना ही सच है, और यह आश्चर्यजनक है कि ऐसा होना चाहिए। हमारे बिना स्वर्ग उसके लिए अधूरा है।

वहाँ गतसमनी के रास्ते पर अंधेरे में, वह ऐसे लोगों के समूह से घिरा हुआ था, जिनकी ओर इस संसार के महान लोग भी दो बार नहीं देखेंगे। "अशिक्षित और अज्ञानी लोग," यही उनके बारे में उनका तिरस्कारपूर्ण आकलन था (प्रेरितों 4:13)। वे सामाजिक उच्च वर्ग के सभ्य सदस्य नहीं थे। वे व्यापारिक क्षेत्रों को नियंत्रित करने वाले सफल वित्तपोषक नहीं थे। वे उस समय के बुद्धिजीवी नहीं थे। वे कुलीन वंश के वंशज नहीं थे। वे सत्ताधारी समूह के शक्तिशाली सदस्य नहीं थे। वे घर के बुने हुए किसानी वाले कपड़े पहनते थे। वे उत्तर से आए मछुआरे थे, जो मोटे देहाती लहजे के साथ देशी अरामी भाषा बोलते थे। वे एक विविधतापूर्ण समूह थे, जो सदियों से उन लोगों में से थे जिन्होंने अपना हृदय मसीह को समर्पित कर दिया था। उसने जो कुछ भी कहा था, उसे वे मुश्किल से समझ पाए थे। वे गंभीर संकट के पहले संकेत पर भाग जाते थे। उनकी तुलना एक पल के लिए भी उन चमकते हुए लोगों से नहीं की जा सकती थी जो ऊँचे सिंहासन के चारों ओर थे। सृष्टि के मूल क्रम में वे स्वर्गदूतों से कम थे। संदेशवाहक स्वर्गदूत जिब्राईल या सैन्य स्वर्गदूत मीकाएल आदम की प्रजाति के किसी भी सदस्य से कहीं अधिक महान और अधिक प्रतिभाशाली थे, इस विशेष समूह की तो बात ही छोड़िए। फिर भी यीशु ने प्रार्थना की, "हे

पिता, मैं चाहता हूँ कि... जहाँ मैं हूँ वहाँ वे भी मेरे साथ हों।" और न केवल वे, बल्कि हम भी। यही उसकी इच्छा थी, इस प्रार्थना में उसकी अंतिम इच्छा "मैं चाहता हूँ" थी

हम उसके ईश्वरत्व पर भी ध्यान देते हैं (17:24ख) : "कि वे मेरी उस महिमा को देखें जो तू ने मुझे दी है, क्योंकि तू ने जगत की उत्पत्ति से पहले मुझ से प्रेम रखा।" वह चाहता था कि वे सभी उसके ईश्वरत्व की महिमा को देखें, वह महिमा जो समय की शुरुआत से बहुत पहले से ही उसकी थी। वह चाहता था कि ये लोग जो उससे प्रेम करते थे और उस पर भरोसा करते थे, चाहे कितने भी अपूर्ण तरीके से, उसे वैसा ही देखें जैसा वह वास्तव में था। वह उन्हें, जो स्वयं महिमावान थे, उस क्षेत्र में लाना चाहता था जहाँ वे "उसकी महिमा का प्रकाश" देख सकें (इब्रानियों 1:3)।

2. इस संसार में उसकी उपस्थिति (17:25-26)

फिर से उसके विचार इस संसार के अंधे बहुमत की ओर जाते हैं (17:25क) : "हे धार्मिक पिता, संसार ने मुझे नहीं जाना।" यह उसका अंतिम, दुखद विलाप है। वह पिता को ज्ञात कराने के लिए आया था। उसने इस तरह से जीवन जिया, सिखाया और व्यवहार किया कि पिता को ज्ञात करा दिया गया। यह प्रदर्शन तैंतीस साल से अधिक समय तक चला, उनमें से अंतिम तीन सार्वजनिक मंच पर सभी की आँखों के सामने हुए। इस संसार पर यह कैसा अभियोग है — और संसार फिर भी उसे नहीं जानता।

उसके विचार इस संसार के विश्वासी अल्पसंख्यकों (17:25ख-26) के साथ समाप्त होते हैं। उसकी ज्योति उनकी ज्योति है (17:25ख-26क) : "संसार ने मुझे नहीं जाना, परन्तु मैं ने तुझे जाना; और इन्होंने भी जाना कि तू ही ने मुझे भेजा है। मैं ने तेरा नाम उनको बताया और बताता रहूँगा।" परमेश्वर पुत्र से बेहतर कोई भी परमेश्वर पिता को नहीं जानता। कोई भी उसे इतने लंबे समय से नहीं जानता। इससे पहले कि किसी स्वर्गदूत के पंख की सरसराहट अनंतकाल के सन्नाटे को हिलाती, परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र, और परमेश्वर पवित्र आत्मा अस्तित्व के रहस्य में मौजूद थे, जो हमारी कल्पना या सोच से परे था। वे आपसी प्रेम, आनंद और सद्भाव में, एक दूसरे के साथ मधुर संगति और संवाद में, अस्तित्व की गहराई और आयामों में एक साथ रहते थे जो पूरी तरह से संतुष्टि देनेवाले और मिलनसार थे।

पृथ्वी पर मनुष्य के रूप में अपनी प्रार्थना को समाप्त करते हुए, प्रभु यीशु अब देहधारी परमेश्वर के रूप में, कह सकता था, "संसार ने तुझे नहीं जाना: लेकिन मैंने तुझे जाना है।" फिर, इन भ्रमित चेलों को अपने प्रेम के गर्म आलिंगन में समेटते हुए, उसने कहा, "और इन्होंने भी जाना कि तू ही ने मुझे भेजा है।" यह परमेश्वर की प्रकृति का अंतिम प्रकाशन था। ब्रह्मांड का परमेश्वर एक ऐसा परमेश्वर था जिसका एकलौता और प्रिय पुत्र था, एक ऐसा पुत्र जिसे वह उस संसार में भेजना चाहता था जो उसे जानना नहीं चाहता था, और उसे क्रूस पर चढ़ाकर उसके अन्य अपराधों और अभिमानों को समाप्त कर देगा। वह उस पुत्र को इसलिए भेजेगा ताकि खोई हुई मनुष्यजाति के लिए उद्धार का मार्ग प्रदान किया जा सके।

उसने आगे कहा, "मैं ने तेरा नाम उनको बताया और बताता रहूँगा।" प्रभु यीशु ने हमें परमेश्वर के नाम का अंतिम प्रकाशन दिया। उसने पुराने नियम के समय में अपने प्राथमिक नामों — एलोहिम, यहोवा, अडोनाई — और अनेक संयोजक नामों के द्वारा खुद को प्रकट किया था : यहोवा यिरै, यहोवा त्सिदकेनु, यहोवा शालोम, एल एलयोन, एल शद्दाई, इत्यादि। लेकिन यह यीशु ही था जो पृथ्वी पर परमेश्वर का सबसे महान नाम लेकर : पिता। यीशु ने अपने चेलों पर ये बातें प्रकट की थीं, इसलिए अब उसकी ज्योति उनकी ज्योति बन गई थी।

अंततः, उसका प्रेम उनका प्रेम है (17:26ख) : "कि जो प्रेम तुझ को मुझ से था वह उनमें रहे, और मैं उनमें रहूँ।" सुसमाचार का महान शब्द प्रेम है। यह यूहन्ना के पसंदीदा वचनों में से एक है। वह संज्ञा अगापे का सात बार और उसकी क्रिया का सैंतीस बार प्रयोग करता है। वह फिलियो शब्द का तेरह बार प्रयोग करता है, इस तरह लगभग सत्तावन बार वह प्रेम के बारे में बात करता है। प्रेम ही वह है जिसके बारे में सब कुछ है, चाहे समय में हो या अनंत काल में, चाहे पृथ्वी पर हो या स्वर्ग में।

यीशु ने अपनी प्रार्थना का समापन प्रेम के इस स्वर पर किया। ऐसा हो चेले बाकी सब कुछ भूल जाएँ।

क्या हम स्याही से सागर भर सकते हैं,
यदि पृथ्वी पर प्रत्येक डंठल एक कलम होता,
यदि सम्पूर्ण आकाश एक कागज सा होता,
और हर आदमी पेशे से एक लेखक होता,
और वह स्वर्ग के परमेश्वर का प्रेम लिखता
वह समुद्र को सुखा देता
पर कागज में सब कुछ न समा पाता
चाहे वह पूरे आकाश में फैला हुआ होता।

प्रेम की वह सम्पदा जो परमेश्वर पिता ने अपने पुत्र के व्यक्तित्व में निवेश की थी, अब उसने हम में भी निवेश की है। प्रेम की यही प्रकृति है। यह फैलता है। यह देता है। जितना अधिक इसे दिया जाता है, उतना ही अधिक बचता है। यह कभी समाप्त नहीं होता। यह "वह प्रेम है जिसके द्वारा तूने मुझसे प्रेम किया है... उनमें।"

लेकिन यह अंतिम शब्द नहीं है। अगर कोई अभी भी प्रेम को अमूर्त रूप में या प्रेम को एक भावना या अनुभूति के रूप में सोचता है, तो यीशु ने कहा, "और मैं उनमें रहूँ।" प्रेम, परमेश्वर के अस्तित्व का सार, यीशु में निहित था। यीशु इस पृथ्वी पर प्रेम के एक जीवित, गतिशील, सांस लेनेवाले, त्रि-आयामी, बहु-आयामी ध्वनि, दृश्य, पूर्ण देहधारण के रूप में चला-फिरा। प्रेम उसके संपूर्ण अस्तित्त्व और कथनों और कार्यों में झलकता था।

यीशु ने इस प्रार्थना को समाप्त करते हुए कहा, "अब, हे पिता, हमारे इन लोगों को भी इसी तरह से प्रेम करना चाहिए। मेरा प्रेम उनका प्रेम होना चाहिए। लेकिन मैं इन लोगों को जानता हूँ। उनका इरादा अच्छा है, लेकिन उनके पास वह नहीं है जो इसके लिए चाहिए। इसलिए, मैं उनमें रहूँगा, और फिर मेरा प्रेम उनका प्रेम होगा।" प्रार्थना समाप्त हो गई। दुःखभोग अब आने वाला था।

भाग 4. परमेश्वर के पुत्र के दुःख

यूहन्ना 18:1-20:31

यूहन्ना अब इतिहास के सबसे बड़े अपराध की याद दिलाता है, जो कि मनुष्य के पुत्रों द्वारा परमेश्वर के पुत्र की हत्या है। वह इस दृश्य को तीन भागों में दर्शाता है : दोषी ठहराना, क्रूस पर चढ़ना, और विजेता।

खंड 1. उसे झूठे रूप में दोषी ठहराया जाता है (18:1-19:15)

I. यीशु को गिरफ्तार किया गया (18:1-12)

A. उसका प्रस्थान (18:1)

"यीशु ये बातें कहकर अपने चेलों के साथ किद्रोन नाले के पार गया। वहाँ एक बारी थी, जिसमें वह और उसके चेले गए।" किद्रोन घाटी यरूशलेम की स्थलाकृति की एक प्रमुख विशेषता है। यह मृत सागर तक एक घुमावदार मार्ग से होकर जाती है। आने वाले युग में सहस्राब्दी मंदिर में एक गुप्त स्रोत से एक नदी इस घाटी से होकर बहेगी (यहेजकेल 47:1; जकर्याह 14:8)। यीशु के दिनों में घाटी का तल, जैसा कि यह मंदिर के पास से होकर गुजरता था, बाहरी प्रांगण के फ़र्श से दो सौ फीट नीचे था। जैतून का पहाड़ घाटी के पूर्व में है और इसकी निचली ढलानों पर गतसमनी का बगीचा था।

यूहन्ना वाटिका में प्रभु की पीड़ा के बारे में चुप है। वह बहुत सी बातों के बारे में चुप है। वह प्रभु के इस दावे के बारे में नहीं बताता कि उसके पास स्वर्ग की सेनाओं को अपनी सहायता के लिए बुलाने की शक्ति है। वह गद्दार के चुम्बन के बारे में, सभी चेलों द्वारा प्रभु को त्यागने के बारे में, झूठे गवाहों के बारे में, शपथ, महान स्वीकारोक्ति के बारे में, हेरोदेस के सामने परीक्षा के बारे में, पिलातुस की पत्नी के संदेश के बारे में, पिलातुस के हाथ धोने के बारे में, यहूदियों के अपने ऊपर लगाए गए अभिशाप के बारे में, शमौन को क्रूस उठाने के लिए मजबूर करने के बारे में, कलवरी पर उपहास के बारे में, अंधकार के बारे में, अनाथों के भयानक क्रन्दन के बारे में, भूकंप के बारे में, पर्दे के फटने के बारे में, सूबेदार के अंगीकार के बारे में, चोरों में से एक के पश्चाताप के बारे में चुप है।

हालाँकि यूहन्ना उन चीज़ों के बारे में कई किताबें लिख सकता था (20:30; 21:25), लेकिन उसने उन्हें छोड़ दिया। मत्ती, मरकुस और लूका ने उनके बारे में जो कुछ भी ज़रूरी था, वह पहले ही कह दिया था। यूहन्ना ने कभी अपने सुसमाचार को अन्य सुसमाचारों का सिर्फ़ एक ऐतिहासिक पूरक नहीं बनाया। उसकी चिंता मसीह के व्यक्तित्व और ख़ास तौर पर उन चिह्नों पर ज़ोर देने की थी जो उसके ईश्वरत्व को दर्शाते हैं।

B. उसका ईश्वरत्व (18:2-9)

1. यहूदा का आगमन (18:2-3)

"उसका पकड़वानेवाला यहूदा भी वह जगह जानता था, क्योंकि यीशु अपने चेलों के साथ वहाँ जाया करता था।" (18:2)। प्रभु को वह शांत बगीचा बहुत पसंद था जहाँ उसके चारों ओर उस रचनात्मक प्रतिभा की याद दिलाती थी जो उसने बहुत साल पहले अदन की वाटिका बनाते समय दिखाई थी। यीशु अक्सर अपने चेलों से इस जगह पर मिलता था, और यहूदा इसे अच्छी तरह से जानता था।

अब जब उसकी मध्यस्थता की प्रार्थना समाप्त हो गई थी, तो यीशु ने अपने शत्रुओं से छिपने का कोई प्रयास नहीं किया। इसके विपरीत वह जानबूझकर ऐसी जगह गया जहाँ यहूदा उसे ढूँढ़ सकता था। हालाँकि चारों सुसमाचार लेखकों ने यहूदा के विश्वासघात का वर्णन किया है, लेकिन यूहन्ना ने विशेष रूप से उसकी दुष्टता और भयावहता पर ध्यान केंद्रित किया है।

यहूदा अकेले बगीचे में नहीं आया था : "तब यहूदा, सैनिकों के एक दल को और प्रधान याजकों और फरीसियों की ओर से प्यादों को लेकर, दीपकों और मशालों और हथियारों को लिये हुए वहाँ आया।" यूहन्ना में पवित्रतम स्थान से दुष्टों के इस ततैया के घोंसले तक का परिवर्तन चौंकाने वाला है। हालाँकि यीशु ने इस बारे में बात की थी और प्रार्थना की थी कि जल्द ही क्या होने वाला है, फिर भी यह अभी भी दूरगामी प्रतीत होता है। अब अचानक, यहूदा और मुख्य याजकों और फरीसियों के इस उल्लेख के साथ, बुराई के संसार ने घुसपैठ कर ली है।

यहूदा ने सुनिश्चित किया कि उसके पास अपने बुरे इरादे को अंजाम देने के लिए पर्याप्त लोग हों। उसके पास "सैनिकों का एक दल" था, शाब्दिक रूप से, एक सैन्य टुकड़ी जिसमें एक हज़ार पैदल और घुड़सवार सैनिक थे। यहूदा के साथ निकट के गढ़ (एंटोनिया किले) से रोमी सैनिकों की एक टुकड़ी थी, साथ ही पूरे गढ़ का मुख्य सेनापति भी था (18:12)। उसके पास महासभा द्वारा प्रदान की गई कुछ मंदिर पुलिस भी थी। इसलिए यहूदी और अन्यजाति लोग यहूदा के नेतृत्व में इस नापाक अभियान में शामिल हो गए।

जाहिर है कि अधिकारी इस बात से निश्चिन्त नहीं थे कि यीशु और उसके चेले क्या कोई प्रतिक्रिया करेंगे। शायद वह गिरफ़्तारी का विरोध करेंगे, और बल प्रयोग की आवश्यकता होगी। इसके अलावा, यहूदी अधिकारी मसीह की चमत्कारिक शक्ति से काफी भयभीत थे। हालाँकि, यीशु का गिरफ़्तारी का विरोध करने का कोई इरादा नहीं था।

2. यीशु की समझ (18:4-9)

यीशु को पूरी तरह से पता था कि क्या हो रहा था; उसकी अंतर्दृष्टि अलौकिक थी (18:4-6)। उसने सैनिकों की आती हुई आवाजें, अधिकारियों की ऊँची आवाजें सुनीं। हिलती हुई लालटेनें और रोशनी और हथियारों की चमक लंबे समय से अपेक्षित थी। यूहन्ना उसकी सर्वज्ञता को दर्शाता है (18:4) : "तब यीशु, उन सब बातों को जो उस पर आनेवाली थीं जानकर, निकला और उनसे कहा, किसे ढूँढ़ते हो?" उसने अपने चेलों की रक्षा के लिए ऐसा किया। उसने खुद को उनके और खतरे के बीच में रखा, घुसपैठियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। उसने शांत अधिकार के साथ बात की जो अचूक थी।

यूहन्ना उसकी सर्वसामर्थ्य को दर्शाता है (18:5-6)। हम सबसे पहले देखते हैं, यीशु ने अपने शत्रुओं का सामना कैसे किया (18:5) : "उन्होंने उसको उत्तर दिया, यीशु नासरी को। यीशु ने उनसे कहा, मैं हूँ। उसका पकड़वानेवाला यहूदा भी उनके साथ खड़ा था।" उनके उत्तर में तिरस्कार की भावना झलक रही थी : "यीशु नासरी।" यहूदियों की नज़र में गलीली होना बुरा था, लेकिन नासरी होना उससे भी बुरा था! उसे नासरी कहना अपमान के तौर पर था।

यीशु ने फिर से उत्तर दिया 'मैं हूँ।' यूनानी में इसका अर्थ है एगो एमी। यह वचन यूहन्ना में नौ बार इस्तेमाल हुआ है (यूहन्ना 4:26; 6:20; 8:24, 28, 58; 13:19; 18:5, 6, 8)। प्रभु ने स्पष्ट रूप से ईश्वरीय, अकथनीय नाम पर पूर्ण दावा किया। उन्होंने कहा, "हम यीशु नासरी को खोज रहे हैं।" दूसरे शब्दों में, यीशु ने कहा, "मैं हूँ — यानी, मैं यहोवा हूँ।"

यूहन्ना ने यह भी कहा, “उसका पकड़वानेवाला यहूदा भी उनके साथ खड़ा था।” वह गलत लोगों के साथ गिना गया था। वह उनके साथ था, एक गद्दार के लिए उपयुक्त संगति। उसने अपना चुनाव कर लिया था। अब वह महान ‘मैं हूँ’ के शत्रुओं के साथ खड़ा था।

यूहन्ना हमें तुरंत बताता है कि यीशु ने अपने शत्रुओं को कैसे चकित किया (18:6) : “उसके यह कहते ही, “मैं हूँ,” वे पीछे हटकर भूमि पर गिर पड़े।” स्थिति पूरी तरह से उसके नियंत्रण में थी। यह बिना किसी आधार के नहीं था कि अधिकारी उसे गिरफ़्तार कर सकते थे या नहीं। उनके रोमी दल ने व्यर्थ प्रयास किया। यदि कैसर ने अपने साम्राज्य की सबसे दूर की चौकियों से अपनी सारी सेनाएँ बुलाई होतीं और उन्हें लोहे की पंक्तियों में उस “नासरी” के विरुद्ध खड़ा दिया होता, तो परिणाम वही होता। वे पीछे हट जाते और भूमि पर गिर पड़ते। प्रभु ने पहले ही घोषणा कर दी थी, “कोई उसे [मेरा जीवन] मुझ से छीनता नहीं, वरन् मैं उसे आप ही देता हूँ” (10:18)। अब उसने उस दावे को सच साबित कर दिया। यदि वह चाहता, तो वह पहले की तरह उनसे दूर जा सकता था। स्वर्गदूतों की बारह सेनाएँ स्वर्ग की सीमा पर उसकी सहायता के लिए तैयार खड़ी थीं। लेकिन उसे सहायता की क्या आवश्यकता थी? जैसा कि हुआ, वह बस उन्हें दिखाना चाहता था कि वे — तलवारें और डंडे और भाले और सैनिक और सब कुछ सहित — कितने असहाय थे।

यूहन्ना हमें पवित्रशास्त्र (18:7-9) के बारे में भी बताता है। हमेशा की तरह, प्रभु ने जो कुछ भी किया, उसमें परमेश्वर के निर्देशों का पालन किया। अब तक उसके शत्रु फिर से अपने पैरों पर खड़े हो चुके थे। वे चकित लग रहे थे। अपने सामने उन्होंने एक निहत्थे व्यक्ति को देखा। वे झिझकते हुए खड़े रहे। उसने फिर से प्रश्न किया, लेकिन इस बार यह अधिक सशक्त था। उसने उनसे पूछा (एपेरोटाओ), “तुम किसको ढूँढ़ते हो।” ऐसा लग रहा था कि वे अभी भी उसके भय से पीछे हटे हुए थे और वह उन्हें उनके कर्तव्य की याद दिला रहा था। उन्होंने वही उत्तर दिया, “यीशु नासरी को।” क्या अब उन्हें इतना यकीन नहीं था कि यह वही व्यक्ति था जिसकी उन्हें तलाश थी? वे यहूदी मसीहा के भेष में एक गलीली किसान की तलाश में आए थे। उन्हें एक ऐसा व्यक्ति मिला जो परमेश्वर होने का दावा करता था और जिसके शब्द उन्हें पीछे की ओर लड़खड़ाते हुए जमीन पर गिराने के लिए पर्याप्त थे।

अब तक प्रभु के चेले उसके चारों ओर एकत्र हो चुके थे। किसी तरह उन्होंने हिम्मत जुटाई। फिर भी, प्रभु का इरादा एक ऐसे टकराव को रोकना था जो उनके लिए विनाशकारी हो सकता था। उसने फिर से खुद की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए अपने शत्रुओं को उत्तर दिया : “मैं तो तुम से कह चुका हूँ कि मैं हूँ, यदि मुझे ढूँढ़ते हो तो इन्हें जाने दो” (18:8)। वह गिरफ्तार होने के लिए बगीचे में आया था, लेकिन वह नहीं चाहता था कि चेलों को गिरफ्तार किया जाए। एक वचन पूरा होना था, जैसा कि उसने उन्हें याद दिलाया था (17:12)। “यह इसलिये हुआ कि वह वचन पूरा हो जो उसने कहा था : जिन्हें तू ने मुझे दिया उनमें से मैं ने एक को भी न खोया” (18:9)।

C. उसका रक्षक (18:10-12)

1. पतरस का उत्साह (18:10)

पतरस में अचानक उत्तेजना भर गई। उसका उतावला स्वभाव भड़क उठा। वह तलवार लेकर चल रहा था और अब उसने प्रभु की रक्षा करने का विचित्र प्रयास किया। अकुशलता से तलवार से वार करते हुए उसने मलखुस नामक व्यक्ति का दाहिना कान काट दिया, जो महायाजक का दास था। सभी सुसमाचार प्रचारक (लेखक) इस घटना के बारे में बताते हैं, लेकिन केवल यूहन्ना ने पतरस और मलखुस का नाम लिया है। जब तक यूहन्ना ने लिखा, तब तक पतरस मर चुका था, मलखुस गुमनामी में खो चुका था, यरूशलेम अब नहीं रहा। अब इससे कोई फर्क नहीं

पड़ता कि यदि सब लोग उनके नाम जान लें। चारों सुसमाचार लेखकों द्वारा निश्चित उल्लेख (महायाजक का दास*)* के उपयोग से ऐसा प्रतीत होता है कि मलखुस प्रभु को गिरफ्तार करने के लिए आगे बढ़ा। उसकी इस कार्रवाई ने स्पष्ट रूप से पतरस के हमले को प्रेरित किया।

2. पतरस की असफलता (18:11-12)

लेकिन पतरस की हरकत ने अब खुद को और दूसरे चेलों को खतरे में डाल दिया। प्रभु ने आगे बढ़कर पतरस से अपनी तलवार रखने को कहा, और समझाया : "जो कटोरा पिता ने मुझे दिया है, क्या मैं उसे न पीऊँ?" (18:11)। अगर पतरस गतसमनी में जागता रहता तो उसे यह पता चल जाता (मत्ती 26:38-45)। लूका हमें बताता है कि यीशु ने मलखुस को चंगा किया (लूका 22:50-51), एक ऐसा कार्य जिसने निस्संदेह स्थिति को शांत करने में मदद की।

पतरस के बल प्रदर्शन ने रोमी सैनिकों को हरकत में ला दिया : "तब सैनिकों और उनके सूबेदार और यहूदियों के प्यादों ने यीशु को पकड़कर बाँध लिया" (18:12)। इस पर स्वर्गीय सेनाओं ने अपनी तलवारें खींच ली होंगी। लेकिन जिस वचन का वे इंतज़ार कर रहे थे वह कभी नहीं आया। "जैसे भेड़ अपने ऊन कतरने वालों के सामने चुप रहती है, वैसे ही उसने अपना मुँह नहीं खोला" (यशायाह 53:7)।

II. यीशु को दोषी ठहराया गया (18:13-19:15)

A. याजकों के सामने (18:13-27)

अपने विवरण में, यूहन्ना ने हेरोदेस के सामने पेश होने की बात को नज़रअंदाज़ किया और दोनों मुकदमों पर ध्यान केंद्रित किया। यहूदी महासभा के सामने मुकदमा अवैध था। मिशना के अनुसार :

- मृत्युदंड के मामलों में तेईस सदस्यों की संख्या के आधार पर मुकदमा चलाया जा सकता था। लेकिन झूठे भविष्यवक्ता से संबंधित मामले को इकहत्तर सदस्यों वाली पूरी महासभा के सामने लाया जाना था। न्यायाधीशों को अर्धवृत्ताकार में बैठना था और अध्यक्ष बीच में होना था, ताकि प्रत्येक न्यायाधीश का चेहरा दूसरे न्यायाधीशों को दिखाई दे।
- गवाहों को अलग-अलग रखा जाना था और उनसे व्यक्तिगत रूप से पूछताछ की जानी थी। अगर दो लोगों की गवाही एक जैसी होती है, तो उसे वैध माना जाता है। जब मामला मृत्यु-दंड से जुड़ा होता है, तो गवाहों को उनकी गवाही के परिणामों के बारे में चेतावनी दी जाती है। उन्हें कार्यवाही में अपने अनुमान या सुनी-सुनाई बातों को शामिल करने की अनुमति नहीं थी।
- मृत्युदंड के मामलों में आरोपी को लाभ या संदेह देने के लिए सब कुछ किया जाता था। सबसे पहले बरी करने के लिए वोट लिया जाना था।
- हालाँकि नागरिक मामलों की सुनवाई रात में की जा सकती थी, लेकिन निर्णय दिन में ही सुनाए जाने थे। मृत्युदंड के मामलों की सुनवाई सिर्फ़ दिन में ही की जा सकती थी। बरी होने का फ़ैसला उसी दिन सुनाया जा सकता था जिस दिन फ़ैसला लिया जाता था, लेकिन मृत्युदंड दिए जाने से पहले अगले दिन तक फैसला नहीं सुनाया जा सकता था, ताकि मन बदलने का समय मिल सके। मृत्युदंड के मामलों की सुनवाई सब्त या किसी पर्व की पूर्व संध्या पर नहीं की जा सकती थी।

- ईशनिंदा के मामलों में गवाहों से सख्ती से पूछताछ की जाती थी ताकि यह पता लगाया जा सके कि अभियुक्त ने क्या शब्द इस्तेमाल किए थे। अगर ईशनिंदा की पुष्टि हो जाती थी, तो न्यायधीश खड़े होकर अपने कपड़े फाड़ लेते थे।
- फांसी चढ़ाए के रास्ते में, कैदी की बेगुनाही साबित करने के लिए और प्रयास किए जाते थे। चार या पाँच बार दोषी को नए तर्क पेश करने का मौका दिया जाता था, जिससे उसे दोषमुक्त किया जा सके। जुलूस के आगे एक अग्रदूत कैदी का नाम, उसके पिता का नाम, उसके अपराध की प्रकृति और उन गवाहों के नाम लेता हुआ चलता था, जिनकी गवाही पर उसे दोषी ठहराया गया था। अग्रदूत किसी से भी आग्रह करता था कि जो उसकी बेगुनाही साबित कर सके, वह आगे आए।
- ईशनिंदा करनेवाले पर पथराव किया जाता था। जिन गवाहों की गवाही पर उसे दोषी ठहराया जाता था, उन्हें पहले पत्थर मारने होते थे। पथराव के बाद, ईशनिंदा करनेवाले की लाश को एक सूली पर लटका दिया जाता था, उसी रात उसे उतार लिया जाना था, और एक आम कब्र में दफना दिया जाता था।

1. न्यायाधिकरण (18:13-14)

यूहन्ना सबसे पहले याजकों के सामने चल रहे मुकदमे की ओर ध्यान आकर्षित करता है। "और पहले उसे हन्ना के पास ले गए, क्योंकि वह उस वर्ष के महायाजक काइफा का ससुर था। यह वही काइफा था, जिसने यहूदियों को सलाह दी थी कि हमारे लोगों के लिये एक पुरुष का मरना अच्छा है" (18:13-14)। हमें इन दो दुष्ट लोगों को देखने की ज़रूरत है जिनके कंधों पर यहूदी मुकदमे के तमाशे की पूरी ज़िम्मेदारी है। साथ मिलकर उन्होंने पिलातुस पर इतना दबाव डाला कि उसने उनकी माँगों के आगे घुटने टेक दिए।

हन्ना को सीरिया के गवर्नर क्विरिनियस ने 6 ईस्वी में महायाजक के पद पर नियुक्त किया था, लगभग उसी समय यहूदिया एक छोटे प्रांत के रूप में रोमी साम्राज्य में शामिल किया गया था। हन्ना को 15 ईस्वी में यहूदिया के राज्यपाल वालेरियस ग्राटस ने हटा दिया था। एक कुशल जुगाड़बाज के रूप में, उसने तब अपने परिवार के सदस्यों के द्वारा सत्ता का प्रयोग किया और यह वह था जिसने वास्तव में सदूकी दल के प्रमुख के रूप में महायाजक का पद चलाया। उसके पाँच बेटे, एक पोता और एक दामाद (काइफा) उस पद पर थे। कहा जाता है कि उस समय उसकी आयु लगभग साठ वर्ष थी। प्रभु को सबसे पहले उसके पास लाया गया क्योंकि व्यवस्था में उसका अनुभव उसे उसके विरुद्ध बेहतर आरोप तैयार करने में सक्षम बनाता।

उसका दामाद, यूसुफ काइफा, वर्तमान में महायाजक था, जिसे 18 ईस्वी में वेलेरियस ग्रेटस द्वारा इस पद पर नियुक्त किया गया था। काइफा अठारह वर्षों तक महायाजक रहा, जो कि नए नियम के समय में किसी और से अधिक समय था। जब ग्रेटस की जगह पुन्तिस पिलातुस ने ले ली, तो काइफा को पद पर बने रहने की अनुमति दी गई। यह संभावना है कि काइफा ने उसे कुछ समय के लिए नहीं हटाना सही समझा, या तो रिश्वत के माध्यम से या किसी अन्य समझौते पर आकर। यहूदिया पर शासन करना किसी भी रोमी के लिए आसान काम नहीं था। काइफा के साथ एक समझौता जो उनके पारस्परिक लाभ के लिए काम करेगा, पिलातुस को पसंद आया होगा। सीरिया के राज्यपाल लुसियस विटेलियस ने 36 ईस्वी में उन दोनों को हटा दिया।

यूहन्ना हमें याद दिलाता है कि यह काइफा ही था जिसने यीशु के बारे में यह व्यंग्यात्मक टिप्पणी की थी कि एक व्यक्ति का लोगों के लिए मरना बेहतर होगा बजाय इसके कि पूरी जाति नष्ट हो जाए (11:51)। यूहन्ना अपने

पाठकों को यह याद दिलाने के लिए इसे दोहराता है कि यीशु की परीक्षा उन लोगों द्वारा होने वाली थी जिन्होंने पहले ही उसकी मृत्यु का निर्णय ले लिया था।

2. मुकदमा (18:15-27)

हम सबसे पहले चेलों को देखते हैं (18:15-18)। यहाँ, पहचान से जुड़ी दो समस्याएँ अक्सर चर्चा का विषय रही हैं। इन पदों में उल्लिखित महायाजक कौन है, और वह चेले कौन है जिसका प्रभाव इतना था कि पतरस को आधिकारिक निवास के परिसर में प्रवेश मिल गया?

ऐसा लगता है कि शुरुआती घबराहट और भागने के बाद कुछ चेलों ने हिम्मत जुटाई (मत्ती 26:56, 58) और वापस आ गए, खास तौर पर यूहन्ना और पतरस। रात में यीशु के साथ चल रहे जुलूस के पीछे हम पतरस को देख सकते हैं। वह आखिरकार खुद को महायाजक के महल के बाहर पाता है, संभवतः काइफा के, पर हो सकता है कि हन्ना के भी वहाँ कमरे थे। जब वह द्वार के निकट पहुँचा, तो पतरस को रोक दिया गया। यूहन्ना कहता है, "एक अन्य चेला भी यीशु के पीछे हो" लिया (18:15)।

इस दूसरे चेले का महायाजक और उसके कर्मचारियों दोनों पर कुछ न कुछ प्रभाव था। पद में कहा गया है कि वह महायाजक का "जाना-पहचाना" था। इस्तेमाल किया गया शब्द ग्नोस्टोस है, जो थोड़ी बहुत पहचान से कहीं अधिक का संकेत देता है। कुछ टिप्पणीकारों का कहना है कि उसकी जान-पहचान नीकुदेमुस या अरिमतिया के यूसुफ जैसे काफ़ी प्रभावशाली लोगों से होगी, जो दोनों ही महासभा के सदस्य थे। दूसरी ओर, हमें यूहन्ना को खारिज़ करने में बहुत जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिए। पाठ्य विद्वान बीएफ़ वेस्टकॉट टिप्पणी करते हैं, "पाठक चेले को संत यूहन्ना के साथ पहचानने में चूक नहीं सकते।" हालाँकि हम नहीं जानते कि यूहन्ना के परिवार का यरूशलेम में क्या संबंध था, लेकिन निश्चित रूप से वह आगे जो कुछ हुआ उसके लगभग प्रत्यक्षदर्शी के रूप में लिखता है। लेकिन दूसरा चेला जो भी था, वह बिना किसी चुनौती के प्रवेश करने में सक्षम था और, शायद, पतरस को द्वार पर उदास खड़ा देखकर, वह वापस बाहर गया, द्वार की द्वारपालिन से बात की और पतरस का प्रवेश सुनिश्चित किया।

यूहन्ना हमें पतरस के झूठे अंगीकार के बारे में बताता है (18:17) : "उस दासी ने जो द्वारपालिन थी, पतरस से कहा, कहीं तू भी इस मनुष्य के चेलों में से तो नहीं है? उसने कहा, मैं नहीं हूँ।" जिस तरह से उससे सवाल पूछा गया, वह नकारात्मक था, जिससे आश्चर्य व्यक्त हुआ कि वह वहाँ कैसे आया। इसमें तिरस्कार का भाव भी था : "कहीं तू इस मनुष्य का चेला तो नहीं है?" अचानक असुरक्षित महसूस करते हुए पतरस ने तुरंत हार मान ली। उसने कहा, "मैं नहीं हूँ।"

अब हमें पतरस की झूठी स्थिति दिखाई गई है (18:18) : "दास और प्यादे जाड़े के कारण कोयले धधकाकर खड़े आग ताप रहे थे, और पतरस भी उनके साथ खड़ा आग ताप रहा था।" "पतरस भी उनके साथ खड़ा... था।" हम पहले भी इन वचनों को सुन चुके हैं। हमें यह बताने के ठीक बाद कि कैसे यीशु ने गिरफ़्तार करने वाले अधिकारियों और उनके आदमियों के सामने खुद को 'मैं हूँ' के रूप में दर्शाया, यूहन्ना कहता है, "और यहूदा... उनके साथ खड़ा था" (18:5)। अब हम पढ़ते हैं : "पतरस उनके साथ खड़ा था।" यह एक चेले के लिए अपमानजनक स्थिति थी। प्रभु के लोगों के लिए खुद को समझौता करनेवाली स्थिति में रखना हमेशा खतरनाक होता है, खड़े होकर संसार की आग पर अपने हाथों को तापना हमेशा खतरनाक होता है।

उस कोयले की आग का उल्लेख यह दर्शाता है कि यहाँ हमारे पास दुखद घटना के प्रत्यक्षदर्शी की कहानी है। यूहन्ना से अधिक संभावना किसकी है? वह कोयले की आग केवल आकस्मिक थी , लेकिन इसने स्पष्ट रूप से किसी पर प्रभाव डाला। ऐसा लगता है कि रोमी सैनिक अपने बैरकों में वापस चले गए थे। पतरस सबसे अधिक शत्रुतापूर्ण लोगों से घिरा हुआ था : महायाजक के सेवक और अधिकारी। वहाँ यीशु उसे कुछ समय के लिए छोड़ देता है, अपने हाथों को गर्म करते हुए, भयानक आत्मिक खतरे में, उस प्रभु के वचनों से सुरक्षित, जिसका उसने पहले ही इनकार कर दिया था : "मैंने तेरे लिए प्रार्थना की है।"

अब बचाव की बारी आती है (18:19-24)। सवाल पूछा गया (18:19) : "तब महायाजक ने यीशु से उसके चेलों के विषय में और उसके उपदेश के विषय में पूछताछ की।" इस बारे में राय विभाजित है कि सवाल हन्ना ने पूछा था या काइफा ने। अगर हम इसे पद 24 से जोड़ते हैं, तो यह हन्ना था। संभवतः यह एक निजी, अनौपचारिक पूछताछ थी जिसके दौरान काइफा मौजूद था , लेकिन हन्ना ने पहल की। हन्ना किसी ऐसी चीज की तलाश में था जिस पर मामला बनाया जा सके। पूरी कार्यवाही अवैध थी।

प्रश्न का पहला भाग प्रभु के चेलों से संबंधित था। महायाजक उनके बारे में क्या जानना चाहता था? कितने लोग थे? वे किस तरह का खतरा पैदा कर रहे थे? प्रभु ने प्रश्न को अनदेखा कर दिया, वह उन्हें बचाने के लिए दृढ़ संकल्पित था। वे उनके के लिए कोई खतरा नहीं थे। वे, अधिकांशतः, पूरी तरह से अव्यवस्थित और हतोत्साहित थे। उनमें से एक बार-बार बाहर आंगन में ही उसका इनकार कर रहा था। महायाजक के पास पहले से ही यहूदा था। कोई साजिश नहीं थी।

यीशु के सिद्धांत के बारे में, उसके बारे में कोई रहस्य नहीं था। उसने (जोरदार सर्वनामों का उपयोग करते हुए) कहा : "मैं ने संसार से खुलकर बातें कीं; मैं ने आराधनालयों और मन्दिर में, जहाँ सब यहूदी इकट्ठे हुआ करते हैं, सदा उपदेश किया और गुप्त में कुछ भी नहीं कहा। तू मुझ से क्यों पूछता है? सुननेवालों से पूछ कि मैं ने उनसे क्या कहा। देख, वे जानते हैं कि मैं ने क्या क्या कहा।" इस प्रकार प्रश्न का उत्तर दिया गया (18:20-24), और खंडन (18:20-21) साहसिक और सटीक था। प्रभु की शिक्षाएँ खुली थीं। पिछले सप्ताह के दौरान वह मंदिर में शिक्षा दे रहा था। पूरे देश में आराधनालयों में उसकी शिक्षाएँ प्रसिद्ध थीं। उसकी शिक्षाओं का खुलापन हन्ना, काइफा और बाकी लोगों की गुप्त साजिशों के विपरीत था। जहाँ तक प्रभु द्वारा ऊपरी कमरे में अपने चेलों को दिए गए निजी निर्देश की बात है, तो अधिकारियों को इसके बारे में बताने की कोई आवश्यकता नहीं थी। उसने वहाँ जो कुछ कहा था, वह विनाशकारी नहीं था, उसने किसी कानून का उल्लंघन नहीं किया था, और यदि उसने इसे याजकों के सामने दोहराया भी होता, तो न तो वे इसे समझ पाते और न ही इसे सुनने का धैर्य रखते।

प्रतिक्रिया (18:22) तीव्र थी : "जब उसने यह कहा, तो प्यादों में से एक ने जो पास खड़ा था, यीशु को थप्पड़ मारकर कहा, क्या तू महायाजक को इस प्रकार उत्तर देता है?" ऐसा करनेवाला व्यक्ति एक यहूदी था, मंदिर के सिपाहियों में से एक। उसे यह पता नहीं था, लेकिन उसने अपने रचनाकार को मारा था। अगर उसने बाद में कभी पश्चाताप नहीं किया, तो एक दिन, महान श्वेत सिंहासन पर, वह इसी के सामने खड़ा होगा , व्यर्थ ही उस काम को छिपाने की कोशिश करेगा। या अगर पुनरुत्थान और पिन्तेकुस्त के बाद, वह अंततः पश्चाताप में यीशु के पास पहुँच जाता है, तो एक दिन यीशु उसका घर में स्वागत करेगा। लेकिन जब तक वह जीवित रहेगा, वह अपने साथ एक हाथ रखेगा जिसे एक बार परमेश्वर के देहधारण के गाल पर हिंसक रूप से रखा गया था।

यूहन्ना उत्तर को दर्शाता है (18:23-24) : “यीशु ने उसे उत्तर दिया, यदि मैं ने बुरा कहा, तो उस बुराई की गवाही दे; परन्तु यदि भला कहा, तो मुझे क्यों मारता है? हन्ना ने उसे बन्धे हुए काइफा महायाजक के पास भेज दिया।” यीशु ने उस व्यक्ति की ओर मुड़कर कहा जिसने उसके साथ दुर्व्यवहार किया था, उसे चुनौती दी कि वह उसके विरुद्ध कानूनी तरीके से आरोप लगाए और इस प्रकार बल प्रयोग करने के बजाय उसके विरुद्ध उचित गवाही दे। “मारता है” के लिए शब्द डेरो है, जो पंद्रह बार आता है, और अन्य स्थानों पर हमेशा इसका अनुवाद “पीटना” के भाव में किया गया है।

यह कि महायाजक ने अधिकारी को डांटा नहीं, उसके बारे में भी कुछ कहता है। इस थप्पड़ ने कार्यवाही के इस भाग को समाप्त कर दिया। इस निजी पूछताछ से जिसमें काइफा मौजूद था, उससे कुछ हासिल नहीं हुआ, इसलिए हन्ना ने यीशु को वापस बुलाया और कार्यवाही को आधिकारिक रूप से कानूनी महायाजक काइफा को सौंपने की औपचारिकता पूरी की।

यूहन्ना काइफा के सामने हुए मुकदमे का वर्णन नहीं करता। इसके बजाय वह हमें पतरस के पास ले जाता है, जो अब भी आँगन में है और लोगों के एक शत्रुतापूर्ण समूह के साथ है।

अब हमारे सामने इनकार (18:25-27) है। हम फिर से देखते हैं कि पतरस कहाँ खड़ा था (18:25क) : “शमौन पतरस खड़ा हुआ आग ताप रहा था।” उसे इब्रानी भजनों की पुस्तक का भजन याद रखना चाहिए था : “धन्य है वह पुरुष जो... पापियों के मार्ग में खड़ा नहीं होता।” उसे भजन 2 याद रखना चाहिए था क्योंकि वह अपने प्रभु के बारे में सोच रहा था, जो अपने शत्रुओं से घिरा हुआ था : “पृथ्वी के राजा इकट्ठे हुए हैं, और शासक आपस में मिलकर यहोवा और उसके अभिषिक्त के विरुद्ध सम्मति कर रहे हैं” (भजन 2:2)। तब उसे या तो अपने प्रभु के लिए साहसपूर्वक खड़ा होना चाहिए था, या खुद को अलग करके घर चले जाना चाहिए था।

लेकिन हममें से थोड़े ही होंगे जिन्होंने कभी न कभी अपनी गवाही के साथ बुरी तरह से समझौता नहीं किया होगा, जैसा कि पतरस ने किया था, और इसी तरह के कारणों से। संसार की आग ने पतरस को कुछ राहत दी, लेकिन वह बुरी तरह से जलने वाला था।

हम देखते हैं कि पतरस ने क्या कहा (18:25ख) : “तब उन्होंने उससे कहा, कहीं तू भी उसके चेलों में से तो नहीं है? उसने इन्कार करके कहा, मैं नहीं हूँ।” घर के कर्मचारियों और मंदिर के कुछ सिपाहियों ने महिला द्वारपाल की बातों को दोहराया। अब तक पतरस पूरी तरह से डर गया था। उसने फिर से प्रभु के चेलों में से एक होने से साफ इनकार कर दिया।

हम देखते हैं कि पतरस ने किसे देखा (18:26) : “महायाजक के दासों में से एक, जो उसके कुटुम्ब में से था जिसका कान पतरस ने काट डाला था, बोला, क्या मैं ने तुझे उसके साथ बारी में नहीं देखा था?” पतरस ने अब एक व्यक्ति को देखा जो उसे विशेष ध्यान से देख रहा था, और यूहन्ना एक विवरण जोड़ता है जो घर के कर्मचारियों के बारे में विशेष बात बताता है। वह व्यक्ति मलखुस का रिश्तेदार था, जिसका कान पतरस ने कुछ समय पहले ही काट दिया था। वह सोच विचार कर रहा था, और अब उसे समझ में आ गया। उसने सोचा, “मैं तुझे जानता हूँ। तू वही है जिसके पास तलवार थी। तुमने मेरे रिश्तेदार मलखुस का कान काट दिया था।” उसने जोर से कहा : उसने पूछा, “क्या मैं ने तुझे उसके साथ बारी में नहीं देखा था? तू उसके साथ था, है न?”

तभी पतरस ने पाप किया (18:27) : “पतरस फिर इन्कार कर गया, और तुरन्त मुर्ग़ ने बाँग दी।” यह विनाश की घंटी थी। मुर्गे की बांग की जानी-पहचानी आवाज़ ने पतरस की आत्मा को दुःख और निराशा से भर दिया।

B. राज्यपाल के समक्ष (18:28-19:15)

यूहन्ना ने यहूदिया के रोमी राज्यपाल पिलातुस के समक्ष प्रभु के मुकदमे का तुलनात्मक रूप से बहुत अधिक विवरण किया है। हम इस महत्वपूर्ण भाग को चार भागों में विभाजित कर सकते हैं।

1. आरोप (18:28-32)

आरोप का विवरण देते हुए, यूहन्ना हमें सबसे पहले याजकों की शंकाओं के बारे में बताता है (18:28)। हम उनके आत्मिक बंधन पर ध्यान देते हैं (18:28क) : "तब वे यीशु को काइफा के पास से किले को ले गए, और भोर का समय था, परन्तु वे आप किले के भीतर नहीं गए ताकि अशुद्ध न हों परन्तु फसह खा सकें।" यूहन्ना ने मत्ती (मत्ती 26:58-27:2) और समानांतर अनुच्छेदों में दर्ज महासभा के समक्ष औपचारिक मुकदमें को छोड़ दिया है।

इस अन्यजातीय मुकदमे के लिए चुने गए स्थान को "न्यायालय" या प्रेटोरियम कहा जाता है। आम तौर पर यहूदिया के रोमी राज्यपाल रोमी शहर कैसरिया में अदालत लगाते थे, जहाँ हेरोदेस महान ने अपने लिए जो महल बनवाया था, उसे मुख्यालय के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। जब घटनाओं के दबाव ने राज्यपाल को यरूशलेम में ला खड़ा किया, तो जहाँ भी उसने निवास किया, वह उसका अस्थायी न्यायालय बन गया। इस समय यह मंदिर क्षेत्र के उत्तर-पश्चिमी छोर पर स्थित एंटोनिया का किला प्रतीत होता है। इसे हेरोदेस महान ने पहले के हसमोनियन किले के स्थान पर फिर से बनवाया था और इसका नाम हेरोदेस के मित्र मार्क एंटनी के नाम पर रखा गया था।

यीशु को मृत्युदंड की सजा सुनाने के बाद, यहूदी अधिकारी अब उसे पिलातुस के पास ले गए ताकि रोमी राज्यपाल उसकी जांच कर सके और उनकी सजा को मंजूरी दे सके। यह फसह का समय था। यहूदियों ने अपने बलि के मेमने तैयार कर लिए थे। उन्होंने अपने घरों से खमीर निकाल दिया था। उन्होंने अनुष्ठान किए थे ताकि वे औपचारिक रूप से शुद्ध हो सकें। उन्हें उसी दोपहर अपने फसह के मेमने को मारना था और सूर्यास्त के तुरंत बाद पर्व मनाना था। उनका इरादा अन्यजातीय निवास स्थान में प्रवेश करके औपचारिक अशुद्धता का जोखिम उठाने का नहीं था, जहाँ खमीर होगा।

इसके अलावा, न्यायालय रोमी संरक्षक देवताओं के संरक्षण में होगा और, हालाँकि यह संभावना नहीं है कि पिलातुस उन्हें यरूशलेम में खुलेआम प्रदर्शित करने का जोखिम उठाएगा, फिर भी याजक कोई जोखिम नहीं उठा रहे थे। उनका धार्मिक अपवित्रता का शिकार होने का कोई इरादा नहीं था। उनके धर्म ने अपने धार्मिक कर्तव्यों की मांग की और याजक इनका पालन करने के लिए ईमानदार थे, यहाँ तक कि निर्दयी हत्या की साजिश रचते हुए भी। हम यूहन्ना के व्यंग्य के स्पर्श को महसूस कर सकते हैं जिस तरह से वह इन चीजों को दर्ज करता है।

वह न केवल एक मृत धर्म के रूपों और अनुष्ठानों के प्रति उनके बंधन का उल्लेख करता है, बल्कि उनके आत्मिक अंधेपन का भी उल्लेख करता है (18:28ख)। वे अनुष्ठानों के बारे में बहुत सावधान थे, वह कहता है, "ताकि वे फसह खा सकें।" उन्हें इस बात का बिलकुल भी पता नहीं था कि मसीह ही सच्चा फसह का मेमना था, और वे उसे उसी रूप में मारने वाले थे।

अब यूहन्ना हमें याजकों के व्यंग्य के बारे में बताता है (18:29-30)। "तब पिलातुस उनके पास बाहर निकल आया।" राज्यपाल ने कड़वे अनुभव से सीखा था कि यहूदी अपने धार्मिक नियमों के उल्लंघन के किसी भी प्रकार

का कितना कड़ा विरोध करते हैं। इसलिए, उनकी रीतियों की खातिर, वह उनके पास गया। पिलातुस इस बात पर उनसे झगड़ा करने वाला नहीं था, कम से कम इस अवसर पर तो नहीं।

मुकदमे के बारे में यूहन्ना के वर्णन में हम पिलातुस को बार-बार अन्दर-बाहर जाते हुए देखते हैं। हम उसे देखते हैं:

- बाहर (18:28-32) यहूदियों को उनकी मृत्युदंड की सज़ा की पुष्टि की मांग करते हुए सुनने के लिए
- अंदर (18:33-38a) मसीह की अपनी राजसत्ता की गवाही सुनने के लिए
- बाहर (18:38ख-40) मसीह की निर्दोषता की पहली घोषणा करने और उन्हें यीशु और बरअब्बा के बीच चुनाव करने का प्रस्ताव देने के लिए
- अंदर (19:1-3) यीशु को कोड़े मारने और उसका उपहास करने के लिए
- बाहर (19:4-7) मसीह की निर्दोषता की दूसरी घोषणा के लिए : “देखो, यह पुरुष!”
- अंदर (19:8-11) यहूदियों के इस भयावह आरोप के बारे में यीशु की जांच करने के लिए कि यह व्यक्ति परमेश्वर का पुत्र होने का दावा करता है
- बाहर (19:12-16) यहूदियों के सामने अंतिम आत्मसमर्पण और न्याय की शर्मनाक विफलता के लिए

इसलिए, आगे-पीछे की यात्राओं की श्रृंखला के पहले दौर में, पिलातुस “उनके पास बाहर निकल आया और कहा, तुम इस मनुष्य पर किस बात का आरोप लगाते हो?” उनके उत्तर में व्यंग्य की बू आ रही थी : “यदि वह कुकर्मी न होता तो हम उसे तेरे हाथ न सौंपते।” कुकर्मी। परमेश्वर के पुत्र के लिए कैसा नाम। यह शब्द काकोपोइओस है, एक दुष्ट, एक अपराधी। यह बुराई में सक्रिय रूप से लगे हुए व्यक्ति का विचार रखता है। बाद में पतरस ने कहा, “[वह] भलाई करता फिरा” (प्रेरितों 10:38)। बदनामी भयानक थी। यीशु ने बीमारों को चंगा किया था, अंधे को दृष्टि दी थी, दुष्टात्माओं को निकाला था, भूखे लोगों को खाना खिलाया था, मृतकों को जीवित किया था। उसने परमेश्वर के बारे में सत्य को यादगार तरीकों से सिखाया था। उन्होंने उसके जीवन में कमियाँ ढूँढ़ी थीं और उन्हें कोई कमी नहीं मिली थी। अंत में उन्हें उसके खिलाफ झूठे गवाहों को नियुक्त करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

जब पिलातुस ने यीशु के खिलाफ़ उनके आरोप के बारे में पूछा तो वे आश्चर्यचकित हो गए। जाहिर है कि उन्होंने सोचा था कि पिलातुस उनकी बात पर यकीन कर लेगा कि यह कैदी मृत्युदंड के लायक है। पिलातुस की हिचकिचाहट ने उन्हें परेशान कर दिया और हम उनके जवाब में चिड़चिड़ाहट को सुनते हैं।

इसके बाद हम याजकों की योजना पर गौर करते हैं (18:31-32)। वे चाहते थे कि इस व्यक्ति को मृत्युदंड दिया जाए और वे चाहते थे कि उसे क्रूस पर चढ़ाकर मार दिया जाए। वे चाहते थे कि जो व्यक्ति खुद के परमेश्वर होने का दावा करता है, वह परमेश्वर के अभिशाप के तहत मर जाए (गलातियों 3:13)। पिलातुस ने कहा, “तुम ही इसे ले जाकर अपनी व्यवस्था के अनुसार उसका न्याय करो।” वह जानता था कि वे उसके पास मृत्युदंड का मामला ला रहे हैं , लेकिन उसने मूकदर्शक बनकर मामले को वापस उनकी अदालत में भेज दिया। उसने कहा, “अगर वह एक कुकर्मी है, तो तुम ही इसे देखो।” इससे उन्हें मजबूर होना पड़ा। उन्होंने कहा, “हमें अधिकार नहीं कि किसी का प्राण लें।” जब उन्हें यह उचित लगता था, तो वे रोमी कानून का हवाला देते थे। मृत्युदंड देने का अधिकार रोमी राज्यपाल के सभी विशेषाधिकारों में सबसे अधिक सुरक्षित था।

यहूदी एक महत्वपूर्ण भविष्यवाणी भूल गए थे जिसे वे अब पूरा करने में मदद कर रहे थे : “यह इसलिये हुआ कि यीशु की वह बात पूरी हो जो उसने यह संकेत देते हुए कही थी कि उसकी मृत्यु कैसी होगी।” (18:32)। वे उसे एक सच्चा भविष्यवक्ता साबित कर रहे थे (12:33)। यदि यहूदियों ने यीशु को मार डाला होता, तो वे उसे पत्थर मारकर मारते, न कि क्रूस पर चढ़ाकर। पूरी घटना को परमेश्वर ने संप्रभुतापूर्वक खारिज कर दिया था। उसकी मृत्यु के तरीके के बारे में प्रभु की भविष्यवाणी की पुष्टि पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं (भजन 22:16; जकर्याह 12:10) द्वारा की गई थी।

2. परीक्षा (18:33-40)

पिलातुस द्वारा यीशु की औपचारिक परीक्षा पाँच प्रश्नों के इर्द-गिर्द घूमत्ती है। जब हम इस भयानक मामले के बारे में यूहन्ना के विवरण का अध्ययन करते हैं, तो हमें लगता है कि यीशु के बजाय पिलातुस पर मुकदमा चल रहा था। निश्चित रूप से उसने अपने जीवन में यीशु जैसा कोई व्यक्ति कभी नहीं देखा था और, इससे पहले कि वह अपना काम पूरा करे, वह उससे डर गया था।

पहले मुख्य प्रश्न आता है (18:33-34), जहाँ तक पिलातुस का सवाल है, शुरू करने के लिए मुख्य प्रश्न : “तब पिलातुस फिर किले के भीतर गया, और यीशु को बुलाकर उससे पूछा, क्या तू यहूदियों का राजा है? यीशु ने उत्तर दिया, क्या तू यह बात अपनी ओर से कहता है या दूसरों ने मेरे विषय में तुझ से यह कहा है?” पिलातुस किले में वापस गया और यीशु को अपने सामने बुलाया। अब तक प्रभु के दुर्भावनापूर्ण शत्रुओं ने एक ऐसा आरोप सोच लिया था जिसे कोई भी रोमी राज्यपाल अनदेखा नहीं कर सकता था। यीशु ने राजा होने का दावा किया था — यहूदियों का राजा, कोई कम नहीं। सभी चार सुसमाचारों में पिलातुस द्वारा यीशु से कहे गए पहले शब्द एक जैसे हैं : “क्या तू यहूदियों का राजा है?” प्रश्न में आश्चर्य का तत्व निहित था। यीशु के बारे में कुछ भी ऐसा नहीं था जो राजसी होने का संकेत देता हो। वह स्पष्ट रूप से गरीब था। वह पूरी रात जागता रहा था और उसने न केवल बगीचे में पीड़ा सहन की थी, बल्कि उसे महासभा द्वारा धमकाया गया था और मंदिर के सिपाहियों द्वारा पीटा गया था। न ही यीशु ने कोई उग्र गुण या कट्टर देशभक्ति दिखाई जो रोमी लोग अन्य यहूदी उपद्रवियों और विद्रोहियों में देखते थे। अगर यह आदमी राजा था, यहूदियों का राजा, तो वह निश्चित रूप से पिलातुस की अपेक्षा से अलग तरह का राजा था। प्रभु के उत्तर ने इस बात को पुष्ट किया।

यीशु ने कहा, “तुझे यह किसने बताया? क्या यह तू ने खुद ही अनुमान लगाया है? या किसी और ने तेरे मन में यह विचार डाला है?” प्रभु चाहता था कि पिलातुस इस आरोप के निहितार्थ पर विचार करे।

यह माना जा सकता है कि पिलातुस को यीशु की हाल की गतिविधियों के बारे में अच्छी जानकारी थी। लोगों के होसन्ना के नारों के बीच यरूशलेम में उसकी सवारी, अगर कुछ और नहीं तो, उच्चतम सरकारी स्तर पर तत्काल जांच की मांग करती। लेकिन खबरें अगर पूरी तरह से मनोरंजक नहीं, तो स्पष्ट रूप से काफी हल्की थीं — यह नया “मसीहा” सामान्य लोगों के जय-जयकार के साथ गधे पर सवार होकर यरूशलेम में आया था! यहूदी अधिकारियों, शास्त्रियों और फरीसियों, महासभा ने पूरे मामले पर नाराजगी जताई थी।

निस्संदेह उस घटना ने इस “मसीहा” के भाषणों और गतिविधियों की व्यापक जांच को उकसाया था। फिर से वहाँ कुछ भी नहीं था। मेहनती पूछताछ से जो कुछ भी पता चला वह हानिरहित था। वह एक नया धार्मिक शिक्षक लग रहा था जो यहूदी धार्मिक अवधारणाओं को एक नई ज्योति में रखने में विशेष रूप से कुशल था, और अच्छे काम करने के लिए प्रसिद्ध था।

इसलिए यीशु ने उससे सवाल किया। तुझे यह किसने बताया? अगर मैं राजा हूँ, तो मैं किस तरह का राजा हूँ? तुम एक रोमी हो — क्या मैं रोम के लिए कोई खतरा हूँ? क्या तुम वाकई समझते हो कि “यहूदियों का राजा” की उपाधि का क्या मतलब है? क्या तुम इसके गहरे, आत्मिक महत्व को जानने की इच्छा रखते हो, या तुम वचनों के सतही अर्थ को स्वीकार करने से संतुष्ट हो? एक अस्पष्ट आरोप से संतुष्ट हो जाना?

अचानक ही स्थिति बदल गई। एक प्रश्न के साथ यीशु ने पिलातुस को कटघरे में खड़ा कर दिया। पिलातुस को यह पसंद नहीं आया। उसने तिरस्कारपूर्ण प्रश्न के साथ जवाब दिया *(18:35क) :* “पिलातुस ने उत्तर दिया, “क्या मैं यहूदी हूँ? तेरी ही जाति और प्रधान याजकों ने तुझे मेरे हाथ सौंपा है।” पिलातुस के प्रश्न में यहूदियों के प्रति रोमी पक्षपात, यहूदी समाज और धार्मिक विचारों के प्रति उनका तिरस्कार झलकता था। यह एक गर्वित रोमी, कैसर का दामाद , सेना का सेनापति, एक ऐसे साम्राज्य का कानूनी प्रतिनिधि का उत्तर था जिसने संसार को अपने वश में कर रखा था।

“तेरी अपनी ही जाति ने तुझे धोखा दिया है।” पिलातुस के लिए, इसमें कुछ अविश्वसनीय था। आम तौर पर यहूदी, रोम के प्रति अपनी कटु और अछूती नफरत में, किसी भी ऐसे व्यक्ति को प्रोत्साहित करने के लिए तैयार रहते थे, चाहे उसके दावे कितने भी बेतुके क्यों न हों, जो राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए उनकी लालसा को बढ़ावा देता और उकसा देता हो।

पिलातुस को लगा कि उसे चालाक काइफा द्वारा इस्तेमाल किया जा रहा है। उसे यकीन नहीं था कि यहूदी अगुवे क्या कर रहे थे, और वह उन पर शक कर रहा था। लेकिन साथ ही वह एक और बात से हैरान था : वे इस आदमी के खिलाफ़ इतने द्वेष से क्यों भरे हुए थे? उसने यीशु से सवाल किया : “तूने क्या किया है?”

तेरे अपने लोग तेरे इतने कटु विरोधी क्यों हैं? यह गंभीर प्रश्न था (18:35ख-36)। प्रभु यीशु ने इसका उत्तर तुरन्त दिया। यही मुख्य बात थी। वह उस तरह का राजा नहीं था जिसकी यहूदी अपेक्षा करते थे या चाहते थे: “यीशु ने उत्तर दिया, मेरा राज्य इस संसार का नहीं; यदि मेरा राज्य इस संसार का होता, तो मेरे सेवक लड़ते कि मैं यहूदियों के हाथ सौंपा न जाता : परन्तु मेरा राज्य यहाँ का नहीं।” (18:36)।

राज्य के बारे में प्रभु की शिक्षा यूहन्ना के सुसमाचार की तुलना में मत्ती के सुसमाचार का अधिक विषय है। प्रभु ने पिलातुस को अपने राज्य के आत्मिक या सहस्राब्दी पहलुओं के बारे में विस्तार से नहीं बताया। पिलातुस को राज्य में कोई चिंता या रुचि नहीं थी, सिवाय इसके कि वह राज्य रोम के खिलाफ किसी तरह की सैन्य कार्रवाई कर सकता था। फिर भी यीशु ने पिलातुस को बताया कि वह उतना असहाय नहीं था जितना वह दिखता था। उसके पास उसके सेवक थे — स्वर्ग में उसकी बारह सेनाएँ, जिनमें से कोई भी एक सदस्य पूरी रोमी सेना का सफाया कर सकता था।

शायद पिलातुस को पहले ही सैन्य दल (18:12) की खबर मिल गई थी, जो यीशु की गिरफ़्तारी के प्रभारी थे। अगर ऐसा है, तो हो सकता है कि उसने इस व्यक्ति के एक शब्द से गिरफ़्तारी दल के असाधारण प्रतिक्रिया के बारे में सुना हो, जिसने फिर भी उसके बाद विनम्रतापूर्वक अधिकारियों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया था। यह संभव नहीं है कि उस दल ने अपनी खबर में इस घटना को दबाया होगा — बहुत से लोग इसके बारे में जानते थे। अगर पिलातुस को यह खबर मिली थी, तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि उसने मुकदमे के इस चरण में यीशु के साथ बहुत नरमी बरती।

यीशु ने पिलातुस से यह तथ्य छिपाने का कोई प्रयास नहीं किया कि वह एक राजा था, लेकिन उसका राज्य एक आत्मिक राज्य था। वह इसे बलपूर्वक स्थापित करने नहीं आया था। इसने अपनी शक्ति दूसरे संसार से प्राप्त की। यह सांसारिक ताकतों के समर्थन पर निर्भर नहीं था, न ही इसे सैन्य शक्ति से उखाड़ फेंका जा सकता था। यहूदियों के लिए, उसने स्वेच्छा से खुद को उनके हाथों में सौंप दिया था। यहूदी एक उग्र मसीहा की तलाश में थे, जो उन्हें रोम और संसार पर विजय दिलाए, जो यरूशलेम को एक नए साम्राज्य की राजधानी बनाए। वे उसका तिरस्कार करते थे क्योंकि वह एक नम्र मसीहा था। उन्होंने बहुत पहले ही उसे और उसके दावों को अस्वीकार कर दिया था।

फिर संयत कर देनेवाला सवाल आया (18:37) : “पिलातुस ने उससे कहा, तो क्या तू राजा है? यीशु ने उत्तर दिया, तू कहता है कि मैं राजा हूँ। मैं ने इसलिये जन्म लिया और इसलिये संसार में आया हूँ कि सत्य की गवाही दूँ। जो कोई सत्य का है, वह मेरा शब्द सुनता है।” पिलातुस ने राजा शब्द पर ध्यान दिया। यह एक ऐसा शब्द था जिसे वह समझ सकता था। एक व्यक्ति जो स्पष्ट रूप से गरीब है, एक व्यक्ति जो बंधा हुआ है और एक कैदी है — एक राजा?

यीशु ने उसे उसके शब्द वापस दिए : “तू कहता है कि मैं राजा हूँ।” पिलातुस ही वह व्यक्ति था जो इस शब्द के साथ खेल रहा था। यीशु ने मामले को दूसरे स्तर पर रखा। उसने प्रभावी रूप से कहा, “मेरा राज्य सत्य का है। मैं राजा बनने के लिए पैदा हुआ था। इसी कारण से मैं जगत में आया हूँ।” हम दोहरा जोर देखते हैं : “मैं ने जन्म लिया; मैं आया।” मनुष्य के पुत्र के रूप में वह यहूदियों के राजा के रूप में पैदा हुआ (मत्ती 2:1-6)। परमेश्वर के पुत्र के रूप में वह दूसरे संसार से, दूसरे अस्तित्व के दूसरे रूप से आया।

उसने पिलातुस से कहा कि वह “सत्य की गवाही देने” के लिए आया था। वह खुद को देहधारी वचन (यूहन्ना 1:14) होने का दावा कर रहा था, जिसने व्यक्तिगत रूप से सत्य को मूर्त रूप दिया था। सत्य से प्रेम करने वाले सभी लोगों ने उसे पहचाना कि वह क्या था और उसे राजा का ताज पहनाया।

लेकिन अब चीजें इतनी करीब आ रही थीं कि सहजता से दूर हो रही थीं। पिलातुस को इन सब के व्यक्तिगत निहितार्थों का सामना करने की कोई इच्छा नहीं थी। उसने अटकलबाज़ी वाला सवाल (18:38क) पूछा : “पिलातुस ने उससे कहा, सत्य क्या है?” यह इस अर्थ में एक तुच्छ सवाल था कि पिलातुस ने उत्तर की प्रतीक्षा नहीं की। संसार के धर्म और दर्शन सदियों से इस सवाल पर बहस करते रहे हैं। आजकल यह विचार प्रचलित है कि सत्य सापेक्ष है। यीशु उस सवाल के जवाब के रूप में पिलातुस के सामने खड़ा था। वह सत्य था (14:6), पूर्ण, परिपूर्ण, मांस और रक्त में सभी को देखने के लिए तैयार। तब और वहीं पिलातुस अपने संदेहों को मार सकता था, अपने डर को दूर कर सकता था, मसीह को गले लगा सकता था, और सत्य में प्रवेश कर सकता था । लेकिन वह गंभीर नहीं था। थोड़ी सी निराशा के साथ उसने जादुई पल को नज़रअंदाज़ कर दिया। जहाँ तक हम जानते हैं, यह फिर कभी नहीं आया। उसने बस प्रभु के कथन को खारिज कर दिया। वह इस गलीली व्यक्ति के साथ सत्य की प्रकृति पर चर्चा नहीं करने वाला था। वह अचानक किले में चला गया।

अब आता है विवादास्पद प्रश्न (18:38ख-40)। फिलहाल, पिलातुस ने अपना ढुलमुल मन बना लिया था। वह इस कैदी से प्रभावित था, नासरत के इस यीशु ने जो कुछ भी कहा या किया था, जो कुछ भी उसने दावा किया था, वह स्पष्ट रूप से रोम के लिए कोई खतरा नहीं था। उसने रोमी कानून के विरुद्ध कोई अपराध नहीं किया था, जैसा कि पिलातुस उस कानून को समझता था। उसने ऐसा कहा : “यह कह कर वह फिर यहूदियों के पास निकल गया

और उनसे कहा, मैं तो उसमें कुछ दोष नहीं पाता।" (18:38ख)। उसे उसको दोषमुक्त करके मुक्त कर देना चाहिए था। यह रोमी न्याय की शान में एक मुकुट होता। पिलातुस इतिहास में आदर्श न्यायाधीश के रूप में जाना जाता।

लेकिन पिलातुस यहीं नहीं रुका। वह आगे बढ़ता गया — अपनी बर्बादी की ओर। वह यहूदियों के साथ टकराव से बचना चाहता था, ठीक उसी तरह जैसे वह यीशु के साथ टकराव से बचना चाहता था। क्योंकि उनकी भौंहें और गुस्से से भरी बड़बड़ाहट पहले से ही एक बहुत ही भयानक तूफ़ान की धमकी दे रही थी, उसने एक अपमानजनक सवाल पूछा : "पर तुम्हारी यह रीति है कि मैं फसह में तुम्हारे लिये एक व्यक्ति को छोड़ दूँ। अत: क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये यहूदियों के राजा को छोड़ दूँ?" (18:39)।

चारों सुसमाचार इस दुखद कहानी को बताते हैं। यीशु को उनकी बेगुनाही के स्थापित आधार के बजाय इस प्रथा के आधार पर रिहा करने की पेशकश करना पिलातुस की ओर से पूरी तरह से सिद्धांतहीन कार्य था। इसके अलावा, पिलातुस को इस कदम से जो भी हासिल होने की उम्मीद थी — और निस्संदेह उसे उम्मीद थी कि यहूदी एक अच्छे इंसान यीशु को, एक हिंसक व्यक्ति बरअब्बा के बजाय स्वीकार करेंगे — उसने जिस तरह से प्रस्ताव को वचनों में व्यक्त किया, उससे उसका उद्देश्य पूरा नहीं हुआ। वह यहूदियों को भड़काने के प्रलोभन का विरोध नहीं कर सका। उसने यीशु को "यहूदियों का राजा" कहकर उन्हें और अधिक परेशान किया, एक ऐसा शीर्षक जिसका यहूदी अधिकारियों ने हिंसक विरोध किया।

उसे इस क्रूर राजनीतिक चाल के प्रति उनकी प्रतिक्रिया का इंतज़ार करने में ज़्यादा नहीं समय लगा: "तब उन्होंने फिर चिल्लाकर कहा, इसे नहीं, परन्तु हमारे लिये बरअब्बा को छोड़ दे।" और बरअब्बा डाकू था।" (18:40)। वह एक डाकू था, एक राजमार्ग डाकू। यूहन्ना की उस संक्षिप्त टिप्पणी में भयानक करुणा का एक विवरण है। यहूदियों ने एक डाकू को चुना — और उनके इतिहास में, उस दिन से लेकर आज तक, उन्हें लूटा ही गया है।

यीशु अब भी पिलातुस के हाथों में था। इसके अलावा, यहूदी अधिकारी अब जानते थे कि पिलातुस उनके हाथों में मिट्टी का टुकड़ा था।

3. सताव (19:1-3)

यह संक्षिप्त खंड पिलातुस की शर्मिंदगी को और बढ़ाता है। वह फिर से किले में चला गया, अब भी बिना कोई निर्णय लिए। उसने जुआ खेला था और हार गया। इसके बाद उसने एक असहाय व्यक्ति से पूछताछ करते समय एक विशिष्ट रोमी उपाय का सहारा लिया, जो शक्तिशाली मित्रों या रोमी नागरिकता द्वारा संरक्षित नहीं था। हमें अब कोड़े मारने के बारे में बताया गया है (19:1) : "इस पर पिलातुस ने यीशु को कोड़े लगवाए।" शायद कोड़ों की मार से यह निराश करने वाला अपराधी कुछ ऐसा कह दे जिसका इस्तेमाल उसके खिलाफ किया जा सके।

कोड़े मारने की सजा एक भयानक परीक्षा थी। पीड़ित को एक खंभे से बांध दिया जाता था। एक सैनिक कई पट्टों वाला कोड़ा लेता था जिसमें धातु या हड्डी के बुने हुए टुकड़े होते थे। वह अपने हाथ की पूरी ताकत से पीड़ित की पीठ पर कोड़े को मारता था। पहले वार से शरीर की सारी साँस निकल जाती थी। दूसरे वार से त्वचा खुल जाती थी। जैसे-जैसे सज़ा आगे बढ़ती गई, हड्डियों से मांस उखड़ता गया। कभी-कभी महत्वपूर्ण अंग उजागर हो जाते थे। कई लोग कोड़ों की मार से मर जाते थे। अक्सर जो बच जाते थे वे जीवन भर के लिए अपंग हो जाते थे। पिलातुस ने बेरहमी से एक ऐसे व्यक्ति को इस व्यवस्थित यातना के हवाले कर दिया जिसे उसने अभी-अभी निर्दोष घोषित किया था।

यह प्रभु यीशु की भव्य देह के बारे में कुछ कहता है कि वह उस कठिन परीक्षा से बच गया। लेकिन इतना काफी नहीं था। उसके होठों से शिकायत का एक शब्द भी नहीं निकला, किसी भी तरह का एक भी शब्द नहीं जिसे अखाड़े के दृश्यों और ध्वनियों के साथ पला बढ़ा निर्दयी रोमी अधिकारी फैसले को बदलने के बहाने के रूप में इस्तेमाल कर सके। इसलिए उसने घायल और लहू से लथपथ उस आदमी को सैनिकों को सौंप दिया। शायद उनके उग्र उपद्रव के तहत उसे कुछ शत्रुतापूर्ण टिप्पणी करने के लिए उकसाया जा सकता था, शायद रोम के खिलाफ कुछ शापित बातों को कहने के लिए।

इसलिए उपहास की बात आती है (19:2-3)। हम देखते हैं कि ने यीशु किस तरह के कपड़े पहने हुए थे (19:2) : "सिपाहियों ने काँटों का मुकुट गूँथकर उसके सिर पर रखा, और उसे बैंजनी वस्त्र पहिनाया।" इन सैनिकों के लिए यीशु के राजा होने के बारे में कुछ बहुत ही हास्यास्पद था, खासकर यहूदियों का राजा। औसत रोमी को औसत यहूदी से बहुत कम प्यार था। कि यहूदियों का एक राजा होना चाहिए और कि यह नम्र व्यक्ति ही वह होना चाहिए! यह शब्दों से परे हास्यास्पद था।

एक शरारती आदमी को, जो अपने साथियों से अधिक खोजी दिमाग वाला था, बाहर एक काँटेदार झाड़ी याद आ गई। ऐसा माना जाता है कि काँटे खजूर के पेड़ के थे। वे अपने आप में भयानक थे, लेकिन जब उन्हें एक मुकुट के रूप में मोड़कर उसके सिर पर मारा गया, तो बहुत दर्द हुआ। काँटे शाप का प्रतीक हैं (उत्पत्ति 3:18)।

यीशु को काँटों का मुकुट पहने वहाँ खड़े देखकर एक और विचार आया। किसी ने एक सैन्य लबादा उठाया और उसे उसके कंधों पर डाल दिया। देखो! अब वह एक असली राजा की तरह लग रहा था। उन्होंने उसका मज़ाक उड़ाया। उन्होंने कहा, "यहूदियों के राजा, जय हो!" हम उनकी गंदी हँसी, भद्दे मज़ाक और गंदी भाषा की कल्पना कर सकते हैं।

यह देखकर कि उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं की, उनमें से कुछ ने और अधिक हिंसा का सहारा लिया और "उसे थप्पड़ मारे।" यह शब्द 18:22 में इस्तेमाल किया गया है। हम देखते हैं कि यीशु पर कैसे हमला किया गया (19:3)। उन्होंने उसे पीटा। फिर भी वह वहीं खड़ा रहा, दूसरा गाल आगे करके, और उन्हें अपने चेहरे पर इस तरह से प्रहार करने दिया कि पुराने नियम का भविष्यवक्ता यह घोषणा कर सके : "उसका रूप यहाँ तक बिगड़ा हुआ था कि मनुष्य का सा न जान पड़ता था" (यशायाह 52:14)।

4. दण्ड की आज्ञा (19:4-15)

यूहन्ना द्वारा दर्ज किए गए वचनों के अनुसार पिलातुस द्वारा यीशु को तीन चरणों में दोषी ठहराया गया। सबसे पहले उसे मनुष्य के पुत्र के रूप में अस्वीकार किया गया (19:4-6), फिर परमेश्वर के पुत्र के रूप में, और अंत में दाऊद के पुत्र के रूप में। हम देखते हैं कि पिलातुस यहूदियों के साथ एक हारी हुई लड़ाई लड़ रहा था, कदम दर कदम पीछे हटने को मजबूर हो रहा था, जब तक कि अंत में उसने हार नहीं मान ली — वह अपने ही कायरतापूर्ण समझौते का शिकार हो गया।

जब सैनिकों ने कैदी का मौखिक और हिंसक मजाक बनाना समाप्त कर दिया और वे उससे कुछ भी नहीं निकलवा पाए, तो उसे एक बार फिर पिलातुस ने अपने नियंत्रण में ले लिया। उसने उसे किले से बाहर निकाला और मसीह को प्रदर्शित किया (19:4-5)। अब तक उसे पहचानना मुश्किल हो गया था। यह आश्चर्य की बात है कि वह अब भी अपने पैरों पर खड़ा था। शायद पिलातुस ने अडिग याजकों में कुछ दया जगाने की उम्मीद की थी।

पिलातुस ने पूरी तरह से निर्दोष होने की घोषणा के साथ शुरुआत की (19:4) : "तब पिलातुस ने फिर बाहर निकलकर लोगों से कहा, "देखो, मैं उसे तुम्हारे पास फिर बाहर लाता हूँ; ताकि तुम जानो कि मैं उसमें कुछ भी दोष नहीं पाता।" न्याय की उनकी भावना के लिए यह अपील बहरे कानों पर पड़ी। वे न्याय में नहीं, बल्कि दोषारोपण और शीघ्र मृत्युदंड में रुचि रखते थे।

पिलातुस यीशु के बाहर आने से पहले ही किले से निकल चुका था। अब वह आया और पिलातुस ने उनके सामने कायरतापूर्ण अन्याय का प्रदर्शन किया (19:5) : "तब यीशु काँटों का मुकुट और बैंजनी वस्त्र पहिने हुए बाहर निकला; और पिलातुस ने उनसे कहा, "देखो, यह पुरुष!" अगर पिलातुस को उम्मीद थी कि कोड़े मारे गए और पीटे गए व्यक्ति को देखकर उनकी मानवता की भावना जागृत होगी तो वह गलत था। हालाँकि उसने उसे निर्दोष घोषित किया था, लेकिन उसने उसे कोड़े मारे थे। उसने सैनिकों द्वारा उसे क्रूरता से मारने की अनुमति दी थी। उसने उनके सामने अपनी कायरता का सबूत पेश किया। ऐसा लगता है कि उसे उम्मीद थी कि कैदी की बेगुनाही की उसकी नई पुष्टि, उसकी पहले से ही भयानक पीड़ा के साथ मिलकर, उन्हें उसके लिए राजी कर लेगी।

वह गलत था। काँटों का वह मुकुट और बैंजनी वस्त्र देखकर वे और भी अधिक क्रोधित हो गए। यह सोचकर कि नासरत का यह यीशु उनकी मसीहाई अपेक्षाओं और रोम से राष्ट्रीय, संप्रभु आजादी के उनके दावों पर इतना तिरस्कार और उपहास ला सकता है, उनके क्रोध की कोई सीमा नहीं रही।

इस बिंदु पर पिलातुस ने एक कथन दिया जो प्रसिद्ध हो गया। यह सदियों से गूंजता रहा है : इके होमो*!* "देखो, यह पुरुष!" वह ऐसा मनुष्य था जैसा परमेश्वर ने मनुष्य से चाहा था : ऐसा मनुष्य जिसमें परमेश्वर का वास था।

और देखो कि पतित मनुष्य ने उस पापरहित के साथ क्या किया। यहाँ पाप अपनी सारी कुरूपता में पवित्रता से उसकी सारी सुन्दरता में मिला।

"देखो, यह पुरुष!" पिलातुस ऐसे इशारे से चिल्लाया जिससे उसकी करतूत का पता चल गया। प्रधान याजकों, ने उसे, काइफा और उसकी भीड़ को देखा। मंदिर के अधिकारियों ने उसे देखा। और इन धार्मिक लोगों के होठों से, जो पिलातुस के न्याय कक्ष में प्रवेश करने में बहुत सावधान थे, एक नारकीय चीख निकली : "उसे क्रूस पर चढ़ा, क्रूस पर!"

हम सब इस समयहीन चुनौती का सामना करते हैं और किसी न किसी तरह से प्रत्युत्तर देते हैं। हम या तो चिल्लाते हैं "उसे क्रूस पर चढ़ाओ" या "उसे ताज पहनाओ।" कोई बीच का मार्ग नहीं है, जैसा कि पिलातुस को जल्द ही पता चल गया।

इसलिए हम देखते हैं कि मसीह को अपमानित किया गया (19:6)। अब याजक का क्रोध अभियोजक के प्रत्युत्तर में बदल गया : "पिलातुस ने उनसे कहा, तुम ही उसे लेकर क्रूस पर चढ़ाओ, क्योंकि मैं उसमें कोई दोष नहीं पाता।" यह तीसरी बार था जब उसने कैदी की बेगुनाही की घोषणा की। उसने कहा, "तुम ही उसे लेकर क्रूस पर चढ़ाओ" — मानो वह अपने कंधों से जिम्मेदारी उनके कंधों पर डाल सकता था।

कोई भी ऐसा नहीं कर सकता। जब बात यीशु की आती है, तो हममें से हर कोई अपना फैसला खुद लेता है और अपनी प्रतिक्रिया के लिए खुद ही जिम्मेदार होता है।

अब एक नया आयाम सामने आया। उसने यीशु पर एक मनुष्य के रूप में मुकदमा चलाया था और इससे यहूदी संतुष्ट नहीं हुए। अब बात यह नहीं थी कि वह मनुष्य का पुत्र था, जिससे वे क्रोधित हुए थे। बात यह थी कि उसने परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया था (19:7-12)।

एक बार फिर, हमें दुखी रोमी राज्यपाल की दृष्टि से अचानक इस दांव को देखना चाहिए। हम देखते हैं कि पिलातुस में कैसे डर भर दिया गया था (19:7-9)। उसने अचानक एक खोज की (19:7) : "यहूदियों ने उसको उत्तर दिया, हमारी भी व्यवस्था है और उस व्यवस्था के अनुसार वह मारे जाने के योग्य है, क्योंकि उसने अपने आप को परमेश्वर का पुत्र बनाया।" उसने ऐसा कुछ नहीं किया! उसने अपने आप को परमेश्वर का पुत्र नहीं बनाया। वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र था। यहूदियों ने जिस नियम का उल्लेख किया वह लैव्यव्यवस्था 24:16 में था। उस नियम के लिए उनकी अपील छल से भरी थी क्योंकि यीशु न केवल परमेश्वर का पुत्र था, जैसा कि उसने दावा किया था, बल्कि उसने बार-बार यह साबित भी किया था कि वह परमेश्वर का पुत्र था।

यहूदियों को इस बात में कोई संदेह नहीं था कि यीशु ने पूर्ण और समग्र अर्थ में परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया था। अब उन्होंने इस जानकारी को पिलातुस पर डाल दिया, जो तुरंत डर गया (19:8-9)। यदि यहूदियों ने सोचा था कि ईशनिंदा के आरोप से उसे तत्काल मृत्युदंड मिल जाएगा, तो वे गलत थे। पिलातुस को यीशु से छुटकारा पाने के उनके धार्मिक कारणों में इतनी दिलचस्पी नहीं थी, जितना कि इस संभावना से भयभीत था कि उसके बारे में जो कुछ भी कहा गया था वह सच हो सकता है। पिलातुस पहले से ही अपने असामान्य कैदी से आधा डरा हुआ था। इससे पहले कभी किसी व्यक्ति ने उसे इतनी स्पष्ट और ईमानदार आँखों से नहीं देखा था। इससे पहले कभी कोई व्यक्ति इतना शांत, संयमित, मौन, निडर नहीं था। इससे पहले कभी किसी व्यक्ति ने इतनी गरिमा के साथ कोड़े और उपहास को सहन नहीं किया था। यह केवल धैर्य नहीं था। यह पूर्ण विजय थी। और सबसे आश्चर्यजनक बात यह थी कि उसने इस व्यक्ति के चेहरे पर जो देखा, जो उसके अद्भुत चेहरे से चमक रहा था, वह प्रेम था। प्रेम जो घृणा से परे था।

वह अपने विचारों को सुलझाने और इस परेशान करनेवाले कैदी से एक बार फिर बात करने के लिए जल्दी से किले में वापस चला गया। उसे अपने परमेश्वर के पुत्र होने के इस दावे के बारे में और अधिक पता लगाना होगा। क्या होगा अगर यह सच हो? पिलातुस, जितना कठोर था, उतना ही अंधविश्वासी भी था — और ये अंधविश्वास उसे अपनी पत्नी से मिले एक ज़रूरी संदेश से और भी बढ़ गए थे (मत्ती 27:9)।

"जब पिलातुस ने यह बात सुनी तो और भी डर गया, और फिर किले के भीतर गया और यीशु से कहा, तू कहाँ का है? परन्तु यीशु ने उसे कुछ भी उत्तर न दिया" (19:9)।

पिलातुस के हृदय में एक भयानक आशंका जड़ जमा रही थी। शायद उसे अपने जासूसों से इस आदमी द्वारा किए गए चमत्कारों के बारे में सुनी गई कहानियाँ याद आ गईं, जो इतने ज़्यादा और विविधतापूर्ण थे कि उन्हें अनदेखा नहीं किया जा सकता था। लेकिन उसने उन्हें अनदेखा कर दिया था — अब तक। अब उसने अपनी बेचैनी को शेखी बघार कर छिपाने की कोशिश की : उसने पूछा, "आखिर तू कहाँ से आया है?" यीशु ने इस सवाल का जवाब पूरी तरह से खामोशी से दिया जिसने पिलातुस को किसी भी जवाब से ज़्यादा परेशान कर दिया।

यीशु क्या उत्तर दे सकता था? देहधारी परमेश्वर के बारे में पिलातुस की धारणाएँ माउंट ओलिंपस और रोमी मूर्तिपूजा की अवधारणाओं से प्रभावित रही होंगी। यीशु इस व्यक्ति को, जिसने खुद को सत्य के साथ खिलवाड़ करने वाला साबित किया था, स्वर्ग में अपने पिता के परमेश्वर और पृथ्वी पर अपने पुत्र होने की बात कैसे समझा

सकता था? पिलातुस इस सत्य के साथ क्या करता? उसने पहले ही दिखा दिया था कि वह मसीह की निर्दोषता के सत्य के साथ क्या करने को तैयार था। उसे उस सत्य पर कार्य करने दें; तब वह और अधिक सत्य प्राप्त करने में सक्षम होगा — वह सत्य जो वर्तमान में उसकी समझ से परे था। इस अवस्था में पिलातुस को यीशु के देहधारी परमेश्वर होने के बारे में पूर्ण सत्य बताना, पिलातुस के अपराध और निंदा को और अधिक बढ़ा देता।

पिलातुस के सामने प्रश्न न्याय का था, कैदी की निर्दोषता का था, तथा उन अधिकारों का था जिनका पहले ही भयंकर उल्लंघन किया जा चुका था।

हम देखते हैं कि कैसे पिलातुस में डर को बढ़ाया गया था (19:10-12), सबसे पहले, उस व्यक्ति की गरिमा से (19:10-11)। उसके धमकाने वाले दावे पर ध्यान दें (19:10) : "इस पर पिलातुस ने उससे कहा, मुझ से क्यों नहीं बोलता? क्या तू नहीं जानता कि तुझे छोड़ देने का अधिकार मुझे है और तुझे क्रूस पर चढ़ाने का भी मुझे अधिकार है?" यह सबसे बड़ा खोखला दावा था। उसने पहले ही तीन बार कैदी की बेगुनाही की पुष्टि की थी, फिर भी उसने उसे रिहा नहीं किया था। वह खुद एक कैदी था, यहूदियों के प्रति अपने डर और रोम के साथ उसके लिए परेशानी खड़ी करने की उनकी क्षमता का कैदी। रोमी साम्राज्य में ऐसा कोई अधिकारी नहीं था जो यह नहीं जानता था कि कट्टर और अप्रत्याशित यहूदियों के साथ बड़ा संवेदनशील होकर व्यवहार करना जरूरी था।

यीशु की चुप्पी ने पिलातुस के विवेक को इतना झकझोर दिया जितना किसी और चीज ने नहीं। इस बार हम उसकी धौंस को देखते हैं (19:11) : "यीशु ने उत्तर दिया, यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता, तो तेरा मुझ पर कुछ अधिकार न होता।" पूरी बाइबल में यह तथ्य स्थापित है कि मानवीय प्रशासन परमेश्वर द्वारा नियुक्त की गई है और अधिकार के पदों पर बैठे लोग, चाहे वे इसे पहचानें या न पहचानें, अंततः अपने पद के आचरण के लिए परमेश्वर के प्रति उत्तरदाई होते हैं (नीतिवचन 8:15; रोमियों 13:1-7)। पिलातुस का अधिकार (एग्जूसिया) कैसर से प्राप्त हुआ था; पिलातुस और कैसर दोनों को परमेश्वर से अधिकार मिला था। पिलातुस अपनी मर्जी से काम करने जा रहा था। यीशु ने उसे याद दिलाया कि उसके अधिकार का मनमाना, अन्यायपूर्ण और अवैध दुरुपयोग अनदेखा नहीं किया जाएगा। उसे अपना अधिकार "ऊपर से" (अनोथेन, वह शब्द जो स्वर्ग से दर्शाता है जैसा कि यूहन्ना 3:3, 7, 31 में है) प्राप्त हुआ था और वह अपने किए के लिए जवाबदेह होगा। इस चेतावनी की पिलातुस को तत्काल आवश्यकता थी, क्योंकि उसने पहले ही एक ऐसे व्यक्ति को कोड़े मारने की अनुमति दे दी थी जिसे वह जानता था कि वह निर्दोष है, तथा वह इससे भी बुरी सजा देने वाला था।

लेकिन प्रभु ने अभी तक अपना काम पूरा नहीं किया था। उसने पिलातुस के पाप को कम नहीं किया — और यह प्रभु की ईमानदारी और साहस का एक उल्लेखनीय उदाहरण है कि उसने अपने न्यायाधीश से अपने व्यक्तिगत पाप के बारे में बात की — लेकिन एक ऐसा व्यक्ति था जो पिलातुस से भी बड़ा पापी था : यीशु ने आगे कहा, "जिसने मुझे तेरे हाथ पकड़वाया है उसका पाप अधिक है।" यूनानी में एक व्यक्ति का उल्लेख है, निस्संदेह दुष्ट महायाजक काइफा। यहाँ "पकड़वाया" के लिए क्रिया पैराडिडोमी है। यह यूहन्ना के सुसमाचार में पंद्रह बार आता है। नौ बार इसका अनुवाद "धोखा देने" के रूप में किया गया है, जो यीशु को महासभा को सौंपने के यहूदा के पाप के संबंध में है। यूहन्ना ने पहले ही दो बार इस शब्द का इस्तेमाल महासभा द्वारा यीशु को पिलातुस को सौंपने की कार्रवाई का वर्णन करने में किया है। यहाँ प्रभु ने विशेष रूप से महायाजक के लिए इस शब्द का इस्तेमाल किया है।

काइफा का पद, परमेश्वर की दृष्टि में, रोम के सम्राट के पद से कहीं अधिक ऊँचा था। महायाजक का पद सर्वोच्च और पवित्रतम कार्य करता है। उस पद को राजनीतिक रूप से सक्रिय, आत्मिक रूप से असंवेदनशील,

सांसारिक सोच वाले, स्वार्थी अवसरवादियों के उत्तराधिकार द्वारा अपमानित किया गया था। काइफा, एक परमेश्वरविहीन और सिद्धांतहीन व्यक्ति, वर्तमान महायाजक था। यदि पिलातुस द्वारा उसके पद का दुरुपयोग बहुत बड़ा था और एक दिन परमेश्वर द्वारा उसे जवाबदेह ठहराया जाता, तो काइफा द्वारा उसके पवित्र पद का दुरुपयोग कितना बुरा था?

यह महत्वपूर्ण है कि पवित्र आत्मा ने काइफा के कार्य का वर्णन करने के लिए उसी शब्द का उपयोग किया जो उसने यहूदा के कार्य का वर्णन करने के लिए किया था। यहूदा ने यीशु को काइफा के हाथ पकड़वाया था और काइफा ने यीशु को पिलातुस के हाथ पकड़वाया था। अपने कैदी के साथ असंवैधानिक व्यवहार करके पिलातुस का पाप बहुत बड़ा था। काइफा का पाप तो और भी बड़ा था। इन सब बातों ने पिलातुस पर गहरा प्रभाव डाला, जिसने मानवीय अधिकार के प्रयोग की नैतिकता और ईश्वरीय गतिशीलता पर इस उल्लेखनीय कथन को बिना किसी चुनौती के स्वीकार कर लिया।

लेकिन अगर पिलातुस के मन में अपने कैदी के साथ सही काम करने का अचानक संकल्प उमड़ आया तो वह जल्द ही शांत हो गया। उसका डर, जो यीशु की गरिमा से बढ़ गया था, वह भीड़ की मांग से और भी बढ़ गया (19:12) : "इस पर पिलातुस ने उसे छोड़ देना चाहा, परन्तु यहूदियों ने चिल्ला–चिल्लाकर कहा, यदि तू इस को छोड़ देगा, तो तेरी भक्ति कैसर की ओर नहीं। जो कोई अपने आप को राजा बनाता है वह कैसर का सामना करता है।"

यहूदियों ने अब अपनी रणनीति बदल ली थी। उन्हें उसका इरादा पता चल गया था। उन्होंने धार्मिक आरोप के बजाय राजनीतिक आरोप लगाया। कैसर राजद्रोह या यहाँ तक कि राजद्रोह के संदेह को भी बर्दाश्त नहीं करता था। किसी भी प्रांतीय राज्यपाल के लिए धिक्कार है जो विद्रोहियों के साथ नरमी बरतता है। राजा होने का दावा करनेवाले किसी भी व्यक्ति के लिए, कैसर को उम्मीद थी कि उसे तुरंत दंड मिलेगा।

पिलातुस ने पहले ही यीशु को कैसर के प्रतिद्वंद्वी होने के आरोप से बरी कर दिया था। लेकिन अब तक यहूदी अगुवों ने भीड़ को संगठित कर लिया था। यूहन्ना कहता है कि भीड़ ने "चिल्ला–चिल्लाकर कहा"। वे जोर से चिल्लाए। इस अभिव्यक्ति के पीछे का विचार एक जोरदार, एकीकृत चीख की बजाय असंगत शोर का है। यह एक जोरदार, निर्णायक और दृढ़ मांग थी, जैसा कि 19:6, 15 और 18:40 में है। पिलातुस यीशु से कहीं अधिक कैसर से डरता था, वह इस अजनबी का मित्र बनने के बजाय "कैसर का मित्र" बनने के बारे में ज़्यादा चिंतित था, जिसका भाग्य, जैसा कि उसने सोचा था, उसके हाथों में था। यहूदा ने पैसे के लिए मसीह को बेच दिया। काइफा ने उसे धार्मिक पूर्वाग्रह के कारण बेच दिया। पिलातुस ने अपनी नौकरी को बचाए रखने के लिए उसे बेच दिया। लोग अभी भी उसे भौतिक लाभ के लिए, गलत भक्ति के लिए, भक्तिहीन मित्रता के लिए बेचते हैं — थोड़ी सी चमक या तालियों की गड़गड़ाहट के लिए।

यीशु को मनुष्य के पुत्र और परमेश्वर के पुत्र के रूप में अस्वीकार किया गया है। अब हम उसे दाऊद के पुत्र के रूप में अस्वीकार होते हुए देखते हैं (19:13-15)।

अब हम मुकदमे के चरमोत्कर्ष पर आते हैं (19:13) : "ये बातें सुनकर पिलातुस यीशु को बाहर लाया और उस जगह एक चबूतरा था जो इब्रानी में 'गब्बता' कहलाता है, और वहाँ न्याय–आसन पर बैठा।" राज्यपाल अब और देरी नहीं कर सकता था। एक बार और हमेशा के लिए अपना मन बनाने का समय आ गया था। इसलिए वह न्यायासन (बेमा) पर बैठ गया। यह किले के सामने खुले प्रांगण में एक आसन के साथ एक ऊंचा मंच था। इसे

“चबूतरा” (लिथोस्ट्रोटोस) कहा जाता था; इसका शाब्दिक अर्थ है “पत्थर से भरा हुआ” और यह किसी प्रकार पच्चीकारी को दर्शाता है। यहूदियों की स्थानीय भाषा में, इब्रानी (अरामी) में, इसे गब्बता (“उभार”) कहा जाता था। इस स्थान की पहचान आम तौर पर शानदार रोमी फ़र्श से की जाती है जिसे इक्के होमो आर्क के नीचे खोदा गया है। इसका माप लगभग तीन हज़ार वर्ग गज था और इसे एंटोनिया किले का वास्तविक प्रांगण माना जाता है। यूहन्ना ने यह विवरण स्थान और अवसर दोनों की गंभीरता के कारण दिया है। वह जो एक दिन अपने सिंहासन पर बैठेगा (रोमियों 14:10; 2 कुरिन्थियों 5:10) और जो एक दिन सभी दुष्ट मृतकों का न्याय करेगा (प्रकाशितवाक्य 20:11-15), उस पर यहूदी और अन्यजाति दोनों ही समान रूप से निर्णय सुनाने वाले थे।

अब मुकदमे का सार आया (19:14-15)। यहूदी अब यीशु को दाऊद के पुत्र, इस्राएल के सिंहासन के असली उत्तराधिकारी, यहूदा के गोत्र के शक्तिशाली सिंह के रूप में औपचारिक रूप से और घातक रूप से अस्वीकार कर देंगे।

हम पहले राजा को इस्राएल के सामने प्रस्तुत होते हुए देखते हैं (19:14-15क) और हम पिलातुस के अनजाने उद्धरण (19:14) पर ध्यान देते हैं : “यह फसह की तैयारी का दिन था, और छठे घंटे के लगभग था। तब उसने यहूदियों से कहा, देखो तुम्हारा राजा!”

फिर से हम देखते हैं कि यूहन्ना ने स्थान और समय दोनों का उल्लेख करते हुए जानबूझकर और परिश्रमपूर्वक सटीकता दिखाई। यह “छठे घंटे” के लगभग था। यदि यह इब्रानी समय था, तो यह आधी रात थी। यदि यूहन्ना ने रोमी समय का उपयोग किया, तो यह सुबह के छः बजे थे। यह “फसह की तैयारी” का समय था, तैयारी का दिन (सभी चार सुसमाचार प्रमाणित करते हैं कि प्रभु इसी दिन गाड़ा गया था), जिस दिन यहूदियों ने अपने फसह के मेमने को मारा था।

पिलातुस बैठ गया। उसने यीशु को भेड़ियों के सामने फेंकने का मन बना लिया था, लेकिन उसकी आत्मा यहूदियों के प्रति कटुता से भरी हुई थी, जिन्होंने उसे मात दे दी थी। वह उनकी जीत को यथासंभव अप्रिय बनाने के लिए हर संभव प्रयास करेगा। उसने यीशु को सामने बुलाया। वह वहाँ खड़ा था, उसका चेहरा घावों से भरा था, उसके सिर पर काँटों का ताज था, उसकी पीठ पर बैंजनी रंग का लबादा था। वह पूरी रात जागता रहा था। वह बगीचे में तड़पता रहा। उसे महासभा ने धमकाया था और उनके सिपाहियों ने उसके साथ दुर्व्यवहार किया था। उसे यहाँ-वहाँ, और पूरे शहर में घुमाया गया था। वह थक गया था और दर्द से तड़प रहा था। पिलातुस ने उसकी ओर इशारा किया। उसने काइफा और उसके स्व-धर्मी पाखंडियों के समूह को देखा। उसने कहा, “देखो, तुम्हारा राजा!”

हालाँकि उसे यह नहीं पता था, लेकिन उसने मसीही भविष्यवाणियों में से एक को छुआ था। यरूशलेम में मसीह के विजयी प्रवेश की भविष्यवाणी करते हुए, आखिरी भविष्यवक्ताओं में से एक ने उन्हीं वचनों का इस्तेमाल किया था। यहूदियों ने उसे अब कितने गुस्से से सुना! उनमें से कौन इस विडंबनापूर्ण संबंध को बनाने से छूट सकता था : “हे सिय्योन बहुत ही मगन हो! हे यरूशलेम, जयजयकार कर! क्योंकि तेरा राजा तेरे पास आएगा; वह धर्मी और उद्धार पाया हुआ है, वह दीन है, और गदहे पर वरन् गदही के बच्चे पर चढ़ा हुआ आएगा” (जकर्याह 9:9)।

वह दाऊद के सिंहासन का अंतिम वैध दावेदार था — वह दो वंशों में सीधे दाऊद का वंशज था, जैसा कि मंदिर के अभिलेखों से स्पष्ट रूप से पता चलता है। वहाँ वह खड़ा था — उनका राजा। यहूदियों ने उस राजा की ओर देखा जिसे उन्होंने अस्वीकार कर दिया था, उस उपहास करने वाले रोमी की ओर जिससे वे घृणा करते थे, और फिर उस दयनीय व्यक्ति की ओर देखा जो चुपचाप खड़ा था, जो अपनी ही महिमा से शोभायमान था।

लेकिन पिलातुस ने अभी तक अपनी बात पूरी नहीं की थी। अनजाने में दिए गए उद्धरण के बाद एक स्पष्ट प्रश्न आया (19:15क) : उसने पूछा, “क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ाऊँ?” क्या उसे उम्मीद थी कि इस अंतिम क्षण में भी यहूदी नरम पड़ जाएँगे? अगर ऐसा था, तो वह जल्दी ही निराश हो गया। पिलातुस, जो कि निंदक था, वह भी उसे मिले उत्तर पर आश्चर्यचकित हुए बिना नहीं रह सका : “प्रधान याजकों ने उत्तर दिया, कैसर को छोड़ हमारा और कोई राजा नहीं।” कैसर इस्राएल द्वारा पसंद किया जाने वाला राजा था (19:15ख)।

यहूदी रोम से नफरत करते थे, उसकी सेना से नफरत करते थे, उसके राज्यपाल से नफरत करते थे, उसकी संस्थाओं से नफरत करते थे, कैसर से नफरत करते थे। चालीस साल से भी कम समय में वे कैसर से छुटकारा पाने के लिए इतिहास के सबसे भयंकर युद्धों में से एक लड़ेंगे। उसके साठ साल बाद, वे एक और युद्ध लड़ेंगे। उन्हें यह कहते हुए सुनना कि “कैसर को छोड़ हमारा और कोई राजा नहीं” शायद पहली बार हुआ होगा।

ध्यान दें कि यह किसने कहा : प्रधान याजकों ने। भीड़ ने नहीं, रब्बियों ने नहीं, बल्कि राष्ट्र के शासकों ने, यहूदी धर्म के आधिकारिक संरक्षकों ने। उन्होंने सार्वजनिक रूप से घोषणा की कि वे यीशु के राजा होने की अपेक्षा कैसर को राजा बनाना पसंद करेंगे; वे यीशु के राजा होने की अपेक्षा रोमी शासन और अन्यजाति के शासन को पसंद करेंगे। वे यीशु के साथ ये सब पाने की अपेक्षा बिना मसीहा, बिना सहस्राब्दी के रहना पसंद करेंगे। यह उस विश्वास का भयानक परित्याग था जिसमें वह राष्ट्र जी रहा था।

यह राष्ट्र की मसीही आशा का औपचारिक त्याग था, और परमेश्वर ने उनकी बात मान ली। मसीही युग के अधिकांश भाग में यहूदी अन्य जाति देशों में परदेशी रहे हैं। उन्होंने कैसर के अलावा किसी राजा को नहीं जाना। उन्हें उस दिन स्वर्ग में उठाया गया कड़वा प्याला पीने के लिए मजबूर किया गया। अब वे अपने पैतृक घर की ओर लौटने लगे हैं। लेकिन अभी भी एक कैसर उनके राजा के रूप में उभरने वाला है, एक रोमी मसीह विरोधी जो इस प्याले से उनके लिए कल्पना से भी अधिक निचोड़ लेगा (प्रकाशितवाक्य 13) जब तक कि वे “उसे नहीं देखते जिसे उन्होंने छेदा था" और उसे वास्तव में राजा नहीं मानते।

खंड 2. अंततः उसे क्रूस पर चढ़ाया गया (19:16-42)

लंबी परीक्षा समाप्त हो गई थी। पासा पलट चुका था। इस भयानक नाटक के अंतिम दृश्यों के लिए मंच तैयार था। जब हम श्रद्धापूर्वक कलवरी की ओर बढ़ते हैं तो हम चार मुख्य दृश्य देखते हैं।

I. प्रशासन का एक कार्य (19:16-24)

A. दंड की आज्ञा (19:16-18)

इनमें से पहला कार्य तीन भागों में है। हमारा ध्यान दंड की ओर ले जाया गया है। पिलातुस ने इस मामले से अपने हाथ धो लिए थे (या ऐसा उसने सोचा था) (मत्ती 27:24)। अब उसने यीशु को प्रधान याजकों को सौंप दिया, निस्संदेह हस्ताक्षर किए गए मृत्युदंड के पत्र और वास्तविक दंड को अंजाम देने के लिए रोमी सैनिकों की एक टुकड़ी के साथ। जहाँ तक पिलातुस का सवाल है, वह पूरे मामले से निपट चुका था। अब यह यहूदियों का मामला था। “तब उसने उसे उनके [प्रधान याजकों के] हाथ सौंप दिया ताकि वह क्रूस पर चढ़ाया जाए” (19:16क)।

“और वह अपना क्रूस उठाए हुए उस स्थान तक बाहर गया, जो ‘खोपड़ी का स्थान’ कहलाता है और इब्रानी में ‘गुलगुता’” (19:7)। यूहन्ना हमें यह नहीं बताता कि कुरेनी के शमौन को किस तरह से मसीह के लिए क्रूस उठाने

के लिए मजबूर होना पड़ा, कम से कम कलवरी तक के रास्ते के एक हिस्से तक (मरकुस 15:21)। ऐसा लगता है कि आखिरकार प्रभु का मजबूत शरीर भी क्षीण हो गया।

“खोपड़ी का स्थान” — खोपड़ी कितनी बदसूरत चीज़ है, जिसमें खाली आँखें और उभरे हुए दाँत हैं। जीवन का कितना उपहास किया गया है। मृत्यु का कितना उपयुक्त प्रतीक है। मानव सिर की कितनी नकल है, जिसमें लहराते हुए बाल और नाचती हुई आँखें और चलते हुए होंठ और बदलते हुए भाव और अद्भुत मस्तिष्क है।

वे जीवन के प्रभु को मृत्यु के स्थान पर ले गए, “वहाँ उन्होंने उसे और उसके साथ और दो मनुष्यों को क्रूस पर चढ़ाया, एक को इधर और एक को उधर, और बीच में यीशु को” (19:18)। उसे दो अपराधियों के बीच लटका दिया गया। यूहन्ना अन्य सुसमाचार लेखकों का अनुसरण करते हुए वास्तविक क्रूस पर चढ़ाए जाने के भयानक विवरणों पर से पर्दा उठाता है। मनुष्यों द्वारा इससे अधिक क्रूर मृत्यु कभी नहीं दी गई। रोमी काल में क्रूस पर चढ़ाए जाने के बारे में कुछ भी असामान्य नहीं था। निर्दयी रोमियों ने हज़ारों लोगों को क्रूस पर चढ़ाया था। क्रूस पर चढ़ाए जाने के बारे में सब कुछ भयानक था। असहनीय दर्द, अप्राकृतिक स्थिति, लंबे समय तक चलनेवाली पीड़ा, कभी-कभी कई दिनों तक खिंचना, गर्मी, प्यास, मक्खियाँ, नंगापन, शर्म। और मनुष्यों ने अपने सृष्टिकर्ता के साथ ऐसा ही किया।

फिर भी, मृत्यु में भी उसने अपना उचित स्थान ग्रहण किया, “बीच में।” उसने क्रूस की ओर अपनी सचेत यात्रा “उपदेशकों के बीच” शुरु की (लूका 2:46)। यहाँ वह अपराधियों के बीच में है। बाद में हम उसे कब्र के पुनरुत्थान पक्ष पर ऊपरी कमरे में चेलों के बीच में देखते हैं (यूहन्ना 20:19)। बाद में भी वह सात स्वर्ण दीवटों के “बीच में” अपना स्थान ग्रहण करता है (प्रकाशितवाक्य 1:13)। हम उसे महिमा में “सिंहासन के बीच” देखते हैं (प्रकाशितवाक्य 4:6)। आज जहाँ कहीं भी उसके लहू से लथपथ लोग उसके नाम पर इकट्ठे होते हैं, वहाँ वह उनके “बीच में” होता है (मत्ती 18:20)।

B. दोष-पत्र (19:19-22)

इसके बाद यूहन्ना हमारा ध्यान उपरी दोष-पत्र की ओर आकर्षित करता है। इसमें जो घोषणा की गई थी, उसके बारे में कोई संदेह नहीं हो सकता था (19:19-20) : “पिलातुस ने एक दोष–पत्र लिखकर क्रूस पर लगा दिया, और उसमें यह लिखा हुआ था, यीशु नासरी, यहूदियों का राजा। यह दोष–पत्र बहुत से यहूदियों ने पढ़ा, क्योंकि वह स्थान जहाँ यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया था नगर के पास था; और पत्र इब्रानी और लतीनी और यूनानी में लिखा हुआ था।” यदि पिलातुस यहूदी अगुवों को परेशान करना चाहता था, तो वह शायद ही इससे अधिक प्रभावी तरीका नहीं चुन सकता था। क्रूस पर चढ़ाया जाना ऐसी जगह पर हुआ था जहाँ बड़ी संख्या में लोग आते-जाते थे, संसार के सबसे प्रसिद्ध शहरों में से एक के पास। दोष-पत्र देश की तीन आधिकारिक भाषाओं में लिखा गया था। जो घोषणा की गई थी वह स्पष्ट, अलंकृत और सच थी — एक ऐसा सच जिसे यहूदी धार्मिक समूह ने जोरदार तरीके से नकार दिया था। हम पिलातुस के चेहरे पर विजयी मुस्कान की कल्पना कर सकते हैं जब उसने दोष-पत्र को आधिकारिक रूप दिया। संभवतः यह एकमात्र संतुष्टि थी जो उसे पूरे मामले से मिली।

यूहन्ना इस उपाधि पर विचार करता है और उस पर भी जिसे इसने भड़काया (19:21-22) : “तब यहूदियों के प्रधान याजकों ने पिलातुस से कहा, ‘यहूदियों का राजा’ मत लिख परन्तु यह कि उसने कहा, मैं यहूदियों का राजा हूँ” (19:21)। पिलातुस को पता था कि उसने उनकी नस पकड़ ली थी। उसका उत्तर प्रसिद्ध हो गया है : “पिलातुस ने उत्तर दिया, मैं ने जो लिख दिया, वह लिख दिया।” (19:22)। इस प्रकार प्रभु के दो शत्रुओं ने अपनी शत्रुता के

बावजूद उसके बारे में सत्य की घोषणा की। महायाजक काइफा ने उसे उद्धारकर्ता घोषित किया (यूहन्ना 11:49-52) और अन्यजाति के शासक पिलातुस ने उसे संप्रभु घोषित किया। दोनों में से कोई भी नहीं जानता था कि वह क्या कर रहा है। इस प्रकार परमेश्वर ने ऐसा किया कि "मनुष्य जलजलाहट" उसकी स्तुति का कारण हो गई (भजन 76:10)।

C. सैनिक (19:23-24)

"जब सैनिक यीशु को क्रूस पर चढ़ा चुके, तो उसके कपड़े लेकर चार भाग किए, हर सैनिक के लिए एक भाग, और कुरता भी लिया, परन्तु कुरता बिन सीअन ऊपर से नीचे तक बुना हुआ था" (19:23)। सैनिकों ने अपना भयानक काम कर दिया था। अब उनके पास अपने हितों की ओर मुड़ने का समय था। वे उद्धारकर्ता की तुलना में लूट में कहीं अधिक रुचि रखते थे।

ऐसा लगता है कि वे चार थे। उनका असली लूट का सामान मरने वाले व्यक्ति के कपड़े थे। दो मुख्य वस्त्र थे : कुरता या बाहरी वस्त्र और अंगरखा या आंतरिक वस्त्र। उन्होंने कुरते को जल्दी-जल्दी फाड़ दिया, बस इसे सीअन के साथ चार भागों में फाड़ दिया। इस प्रकार प्रत्येक के पास कपड़े का एक उपयोगी टुकड़ा होता था जिसे अन्य कार्यों के लिए इस्तेमाल किया जा सकता था।

लेकिन अंगरखा अलग था। यह एक बिना सीअन वाला चोगा था, जाहिर तौर पर एक मूल्यवान वस्त्र था, शायद गुरु के किसी चेले या उनकी माँ या बहनों द्वारा उनके लिए बुना गया हो। अपनी बिना सीअन वाली पूर्णता में यह महायाजक के लबादे जैसा था; और यह प्रभु के आंतरिक जीवन जैसा था — दोषरहित, परिपूर्ण। यह उचित था कि इस्राएल के दुष्ट महायाजक ने अपना चोगा फाड़ दिया (मत्ती 26:65)। वह एक दुष्ट व्यक्ति था और उसने अपने पद को अपमानित किया था। हालाँकि वह यह नहीं जानता था, उसने अपने पद को फाड़ने का सचित्र वर्णन किया, जो कलवरी के द्वारा ख़ारिज कर दिया गया। परमेश्वर ने मंदिर के पर्दे को फाड़कर (मत्ती 27:51) इस कार्य का समर्थन किया, जिससे यहूदी धर्म को अमान्य घोषित कर दिया गया। लेकिन संसार के पापरहित उद्धारकर्ता द्वारा पहने गए आंतरिक अंगरखे में ऐसी किसी बात की अनुमति नहीं दी गई।

एक नीच उद्देश्य, अधिकतम सांसारिक लाभ की इच्छा, और चिट्ठी डालने का सहारा लेकर, सैनिकों ने एक प्राचीन भविष्यवाणी को पूरा किया। यूहन्ना वहाँ था और उसने पूरी घटना देखी। उसका विवरण एक प्रत्यक्षदर्शी विवरण है। उसने इसके बारे में अक्सर सोचा था। यूहन्ना ने यह सब लिखा : "इसलिये उन्होंने आपस में कहा, हम इसको न फाड़ें, परन्तु इस पर चिट्ठी डालें कि यह किसका होगा। यह इसलिये हुआ कि पवित्रशास्त्र में जो कहा गया वह पूरा हो, उन्होंने मेरे कपड़े आपस में बाँट लिये और मेरे वस्त्र पर चिट्ठी डाली। अत: सैनिकों ने ऐसा ही किया" (19:24)। यूहन्ना को कोई संदेह नहीं था कि इस अवसर पर रोमी सैनिकों का व्यवहार भजन 22:18 की सटीक पूर्णता थी।

II. अनुग्रह का कार्य (19:25-27)

अब यूहन्ना एक घिनौने दृश्य से एक दुखद दृश्य की ओर मुड़ता है, प्रभु के शत्रुओं से दूर उसके मित्रों की ओर, लालच के दृश्य से दूर दुःख के दृश्य की ओर, सैनिकों से दूर पीड़ितों की ओर। क्योंकि वहाँ अन्य लोग भी थे जो कलवरी पर आए थे। "यीशु के क्रूस के पास उसकी माता, और उसकी माता की बहिन, क्लोपास की पत्नी मरियम, और मरियम मगदलीनी खड़ी थीं" (19:25)।

A. जो लोग क्रूस के पास खड़े थे (19:25)

यह अनिश्चित है कि यूहन्ना ने तीन महिलाओं का उल्लेख किया है या चार का। यदि हम विभिन्न विवरणों की तुलना करें तो लगता है कि बात निम्नलिखित है। यहाँ, मत्ती 27:56 और मरकुस 15:40 में क्रूस के पास खड़ी स्त्रियों का उल्लेख किया गया है। विवरणों की तुलना करने पर हम देखते हैं कि :

- केवल यूहन्ना यीशु की माता मरियम का उल्लेख करता है
- तीनों में मरियम मगदलीनी का उल्लेख है
- मत्ती और मरकुस याकूब और यूसुफ की माता मरियम का उल्लेख करते हैं, वह स्त्री जिसे यूहन्ना क्लोपास की पत्नी बताता है। मरकुस यह जोड़ता है कि उसके पुत्र याकूब को छोटे याकूब के नाम से जाना जाता था (उसे जब्दी के पुत्र याकूब से अलग करने के लिए)
- मत्ती "जब्दी के पुत्रों की माता" का उल्लेख करता है, मरकुस सलोमी का उल्लेख करता है, और यूहन्ना "यीशु की माता की बहनों" का उल्लेख करता है। स्पष्ट है कि वे सब एक ही स्त्री का उल्लेख कर रहे हैं (इस प्रकार सलोमी मरियम की बहन थी, प्रभु यीशु की मौसी थी, और उसके बेटे याकूब और यूहन्ना उसके चचेरे भाई थे)

यूहन्ना के अलावा, यीशु के प्रियजन जो क्रूस के पास थे वे केवल स्त्रियाँ थीं।

इन चार स्त्रियों की पीड़ा और दुःख का वर्णन करना असंभव है। उसकी माता के पास उसके बारे में लाखों यादें थीं, वे सभी अनमोल थीं। मरियम मगदलीनी को उसके द्वारा एक भयानक दुष्टात्मा से मुक्त किया गया था और वह उसके लिए आग और बाढ़ से गुजर सकती थी। क्लोपास की पत्नी मरियम के पुत्र और सलोमी उनके अनुयायियों में से थे। यह आम तौर पर स्वीकार किया जाता है कि प्रभु की माता मरियम के पति यूसुफ की मृत्यु हो गई थी और वह अब विधवा थी। उसके अन्य बच्चों ने अब तक विश्वास नहीं किया था।

प्रभु ने अपने क्रूस से नीचे दृष्टि करके इस निराश छोटे समूह को देखा, खासकर अपनी माता को। यह जगह उसके लिए नहीं थी। उसने प्रेम और अनुग्रह से काम लिया। वह उसे उसके प्राकृतिक घर वापस नहीं भेजेगा जहाँ उसे अपने अविश्वासी परिवार से ऐसी बातें सुननी पड़ेंगी जो उसके दुःख को और बढ़ा देंगी। वह उसे यूहन्ना के साथ घर भेज देगा। "जब यीशु ने अपनी माता, और उस चेले को जिससे वह प्रेम रखता था पास खड़े देखा तो अपनी माता से कहा, हे नारी, देख, यह तेरा पुत्र है। तब उसने चेले से कहा, यह तेरी माता है। और उसी समय से वह चेला उसे अपने घर ले गया" (19:26-27)।

B. वे लोग जिन्हें क्रूस से भेजा गया था (19:26-27)

यह पीड़ित उद्धारकर्ता की ओर से करुणा भरा कार्य था, जिसने अपनी माता के लिए यह प्रेमपूर्ण इंतजाम किया। लेकिन इसमें उससे कुछ अधिक था। फिर से हम देखते हैं कि यीशु ने उसे कैसे संबोधित किया : उसने कहा, "हे नारी, देख, यह तेरा पुत्र है।" (पद 2:4 से तुलना करें)। उसने उसे "माता" कहकर संबोधित नहीं किया। सांसारिक रिश्ते खत्म हो रहे थे। माता-पिता की उपाधि को सम्मान की अधिक सामान्य उपाधि से बदल दिया गया।

हम बाद के इतिहास से समझते हैं कि यह कितना दूरदर्शी था। रोमी कलीसिया ने मरियम को मूर्तिपूजा के स्तर तक बढ़ा दिया है। कुछ साल पहले मैं फ्रांस के विची में था, और मरियम द हीलर की कलीसिया में गया था। कलीसिया के गुंबद में मरियम और यीशु का एक भित्तिचित्र देखा जा सकता है, जिसमें मरियम प्रमुख है। गुंबद के आधार के चारों ओर दो संदेश हैं, एक यीशु की प्रशंसा करता है, दूसरा मरियम की प्रशंसा करता है। एक संदेश

यूहन्ना 3:16 से एक उद्धरण है, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया।" दूसरा उद्धरण सेंट बर्नार्ड से है : "यह परमेश्वर की इच्छा है कि हम मरियम के माध्यम से सब कुछ प्राप्त करें।" पहला उद्धरण सत्य है; दूसरा गलत है।

रोम में मरियम की पूजा के लिए समर्पित एक कलीसिया है। यह शहर की प्रमुख कलीसियाओं में से एक है, मरियम मागिओर की कलीसिया। यह रोमी कैथोलिक कलीसिया में मरियम की उपासना का केंद्र है। इस कलीसिया के प्रांगण में एक लंबा क्रूस है। इस क्रूस के एक ओर, ऊँची और ऊपर उठी हुई, मसीह की आकृति है। इस क्रूस के दूसरी ओर, उसकी पीठ से पीठ सटाकर, उसके साथ क्रूस पर कीलों से ठोंकी हुई, कुंवारी मरियम की आकृति है। यह मरियम के प्रति किसी कलाकार के अति उत्साह की अभिव्यक्ति मात्र नहीं है। आधिकारिक रोमी कैथोलिक शिक्षा न केवल "धन्य कुंवारी मरियम" के पवित्र गर्भाधान और स्वर्ग में उसकी शारीरिक (भौतिक) उपस्थिति को सिखाती है, न केवल यह कि लोगों को उसकी मूर्तियों के सामने दंडवत करना चाहिए, उसके लिए मोमबत्तियाँ जलानी चाहिए, और उससे प्रार्थना करनी चाहिए, बल्कि वे उसे "सह-मुक्तिदाता" भी कहते हैं। इससे रोम की कलीसिया का मतलब है कि मरियम उतनी ही हमारी मुक्तिदाता है जितना कि मसीह। कोई आश्चर्य नहीं कि यीशु ने उसे क्रूस से दूर भेज दिया!

III. महानता का कार्य (19:28-30)

यूहन्ना ने दोपहर से लेकर दोपहर बाद के तीन बजे तक के अंधकार के तीन घंटों को चुपचाप निकाला। जबकि वह क्रूस पर लटका हुआ है, वह हमारा ध्यान प्रभु की महानता की ओर आकर्षित करता है।

A. प्रभु ने जानबूझकर स्पंज लिया (19:28-29)

"इसके बाद यीशु ने यह जानकर कि अब सब कुछ पूरा हो चुका, इसलिये कि पवित्रशास्त्र में जो कहा गया वह पूरा हो, कहा, मैं प्यासा हूँ।" "पूरा हो चुका" के लिए शब्द टेलिओओ है। प्रभु एक के बाद एक पवित्रशास्त्र की पूर्ति को देख रहा था, जिसमें उसके दुःख के विभिन्न पहलुओं की भविष्यवाणी की गई थी। उसे क्रूस पर चढ़ाया गया था, और उसके हाथ और पैर छेद दिए गए थे (भजन 22:16)। उसके शत्रुओं ने भजनकार के वचनों का उपयोग करके उसका मज़ाक उड़ाया था (भजन 22:8)। सैनिकों ने उसके वस्त्र के लिए जुआ खेला था (भजन 22:18)। उसे परमेश्वर ने त्याग दिया था और उसने जोर से पुकारा था (भजन 22:1)।

1. अनुरोध (19:28)

लेकिन एक शास्त्र अभी तक पूरा नहीं हुआ था, भजन 69:21 की भविष्यवाणी। तब उसकी मृत्यु के बारे में संपूर्ण भविष्यवाणी पूरी हो जाएगी। इसलिए उसने कहा, "मैं प्यासा हूँ।"

2. प्रत्युत्तर (19:29)

तुरन्त ही आस-पास खड़े लोगों ने भविष्यवाणी के वचनों को पूरा किया : "वहाँ सिरके से भरा हुआ एक बरतन रखा था, अत: उन्होंने सिरके में भिगोए हुए स्पंज को जूफे पर रखकर उसके मुँह से लगाया।" संभवतः यह दृश्य देखकर अचंभित हुए सैनिकों ने ही यीशु के लिए यह अंतिम सेवा की थी। सिरके में भिगोया हुआ स्पंज जूफे (शायद केपर का पौधा, जिसके तने लंबे होते हैं) पर लगाया गया था और यीशु के सूखे होठों तक पहुँचाया गया था।

B. प्रभु ने जानबूझकर अपनी आत्मा को छोड़ा (19:30)

“जब यीशु ने वह सिरका लिया, तो कहा, पूरा हुआ; और सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए।” वह पूरी तरह नियंत्रण में था। टेटेलेस्टाई। पूरा हो गया। व्यवस्था का हर एक अक्षर और हर एक वचन, हर एक काम, वह सब जो उसे पृथ्वी पर रहते हुए करने के लिए दिया गया था — पूरा हो गया। फिर, अब भी स्थिति पर अपना संप्रभु अधिकार रखते हुए, उसने अपना सिर झुकाया और अपनी आत्मा को छोड़ दिया। इस प्रकार किसी भी व्यक्ति ने उससे उसका जीवन नहीं छीना। उसने इसे खुद ही त्याग दिया (10:17-18)।

वह विजयी शब्द सदियों से गूंजता रहा है। जो कार्य उद्धार देता है वह पूरा हो चुका है। कोई भी पूरा हो चुके काम में कुछ नहीं जोड़ सकता। हम मसीह के उद्धार के काम में कुछ भी नहीं जोड़ सकते।

IV. परमेश्वर का एक कार्य (19:31-42)

A. प्रभु की हड्डियों के लिए ईश्वरीय सुरक्षा (19:31-37)

मुख्य याजकों की दुर्भावना अभी भी स्पष्ट थी। शायद उन्होंने प्रभु के शरीर को किसी आम अपराधी की कब्र में फेंक दिया होता या गेहेन्ना के कूड़े के गड्ढे की आग में फेंक दिया होता। उन्हें इसे छूने का भी मौका नहीं दिया गया।

1. सब्त (19:31क)

“इसलिये कि वह तैयारी का दिन था, यहूदियों ने पिलातुस से विनती की कि उनकी टाँगें तोड़ दी जाएँ और वे उतारे जाएँ।”

यह सब्त सामान्य साप्ताहिक सब्त नहीं था, बल्कि “महा-सब्त” थी, जो फसह के पर्व का पहला दिन था (15वाँ निसान; हमारे बुधवार सूर्यास्त से गुरुवार सूर्यास्त तक)। यहूदियों के लिए यह अकल्पनीय था कि इस महा-सब्त के दिन पीड़ितों को पास की पहाड़ी गुलगुता पर लटकता हुआ और मरता हुआ छोड़कर अपवित्र किया जाए (यह व्यवस्थाविवरण 21:23 का उल्लंघन था)।

2. महासभा (19:31ख)

पिलातुस से ऐसा अनुरोध करना क्रूरता ही थी। सच है, क्रूस पर चढ़ाए गए व्यक्ति के पैर तोड़ना रोमियों की एक आम प्रथा थी। लेकिन यह कि इस्राएल के याजक और धार्मिक अगुवे औपचारिक रूप से ऐसा करने का अनुरोध करें, यह उनकी घृणा की अधिकता है। वे नहीं जानते थे कि यीशु पहले ही मर चुका था।

क्रूस पर लटके हुए व्यक्ति के पैर टूटने से पीड़ित को बहुत तेज़ दर्द होता था। शरीर का पूरा वजन, अब पैरों के सहारे नहीं रहने के कारण नीचे गिर गया था, जिसने वक्षीय पिंजरे को इस तरह से जकड़ दिया कि फेफड़े अब साँस में ली गई हवा को बाहर नहीं निकाल सकते थे। दम घुटने से मृत्यु जल्दी हो जाती थी। इस तरह ये लोग सब्त की पवित्रता को बनाए रख सकते थे।

3. सैनिक (19:32)

“अत: सैनिकों ने आकर उन मनुष्यों में से पहले की टाँगें तोड़ीं तब दूसरे की भी, जो उसके साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे” (19:32)। जब महासभा का अनुरोध आया, तो रोमी राज्यपाल ने सैनिकों को आदेश जारी किया कि वे अपना अमानवीय कार्य जारी रखें। जहाँ तक दो अपराधियों का सवाल है, उन्होंने आदेशों का पालन तत्परता से किया।

संभवतः सैनिकों ने दोनों तरफ से काम किया, और बीच के क्रूस पर पहुँचने से पहले दोनों चोरों को खत्म कर दिया।

4. उद्धारकर्ता (19:33)

"परन्तु जब यीशु के पास आकर देखा कि वह मर चुका है, तो उसकी टाँगें न तोड़ीं।" आदेश था कि मृत्यु को जल्दी से जल्दी लाया जाए। यह तरीका भयानक था लेकिन परिणाम बहुत जल्दी आए। जब वे मसीह के क्रूस के नीचे पहुँचे, तो मृत्यु पहले ही अपना काम कर चुकी थी। उसकी टाँगें तोड़ने की कोई ज़रूरत नहीं थी। समझदारी से, सैनिक (जिन्हें शायद अपने काम का यह पहलू पसंद नहीं आया) रुक गए। इस आदमी ने उन सभी पर गहरा प्रभाव डाला था (मत्ती 27:54)। इसलिए वे एक मरे हुए आदमी, खासकर इस मरे हुए आदमी की टाँगें तोड़ने से रुक गए। उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ होगा कि वह पहले ही मर चुका था। क्रूस पर चढ़ाए जाने से मृत्यु कभी छः घंटे में नहीं होती।

5. बरछा (19:34)

"परन्तु सैनिकों में से एक ने बरछे से उसका पंजर बेधा, और उसमें से तुरन्त लहू और पानी निकला।" यह सुनिश्चित करने के लिए कि यीशु वास्तव में मर चुका है, सैनिकों में से एक ने बरछे से उसकी पसली में छेद कर दिया। इसके बाद जो लहू और पानी निकला, उससे सैनिकों को संतुष्टि हुई। इसमें कोई संदेह नहीं था कि वह मर चुका है।

उद्धारकर्ता के छेदे हुए भाग से बहने वाले लहू और पानी पर काफी चर्चा हुई है। यह तर्क दिया गया है कि यह घटना मसीह की मृत्यु के तत्काल कारण को दर्शाती है, वह है हृदय का फटना जिसके बाद हृदयावरण में लहू का एक बड़ा प्रवाह होता है। सिद्धांत यह है कि यह लहू जल्दी से अपने ठोस और तरल भागों में अलग हो गया, जो तब एक मिश्रित धारा में बह गया जब सैनिक के बरछे ने नीचे से हृदयावरण में प्रवेश किया गया।

बहुत से लोग इस व्याख्या के बारे में संशय में हैं। मसीह की मृत्यु के बारे में सब कुछ अलौकिक है। प्रभु ने अपनी आत्मा को छोड़ दिया। वह हृदय के फटने से नहीं मरा। हमें बहे लहू और पानी के बारे में किसी प्राकृतिक व्याख्या की आवश्यकता नहीं है जिसे यूहन्ना ने स्पष्ट रूप से एक चमत्कारी चिह्न माना था।

6. वाक्य (19:35)

"जिसने यह देखा, उसने गवाही दी है, और उसकी गवाही सच्ची है; और वह जानता है कि वह सच कहता है कि तुम भी विश्वास करो।" सबसे गंभीर तरीके में, यूहन्ना इस तथ्य की गवाही देता है कि उसने अभी जो लिखा है वह एक प्रत्यक्षदर्शी की सटीक और विश्वसनीय गवाही है। यूहन्ना अपनी पहली पत्री (1 यूहन्ना 5:6-8) में पानी और लहू के बारे में विस्तार से बताता है। यह नीकुदेमुस को प्रभु के अपने कहे वचनों की प्रतिध्वनि भी हो सकती है (यूहन्ना 3:5)। पुराने नियम में, ऐसा ही एक सत्य मिलापवाले तम्बू में पाया जाता था, जहाँ परमेश्वर ने पापी और अपने बीच पीतल की वेदी (लहू) और पीतल की हौदी (पानी) रखी थी।

7. पवित्रशास्त्र (19:36-37)

"ये बातें इसलिये हुईं कि पवित्रशास्त्र में जो कहा गया वह पूरा हो, उसकी कोई हड्डी तोड़ी न जाएगी। फिर एक और स्थान पर यह लिखा है, जिसे उन्होंने बेधा है, उस पर वे दृष्टि करेंगे।" ये उल्लेख निर्गमन 12:46, गिनती 9:12, और भजन संहिता 34:20 के हैं, जो सभी पूरे हुए। प्रभु सचमुच फसह के मेमने का प्रतिरूप था। जब यूहन्ना हमें "एक और स्थान" का संदर्भ देता है, तो वह हेटेरोस शब्द का उपयोग करता है, जिसका अर्थ है एक

अलग तरह का दूसरा। यह जकर्याह 12:10 को दर्शाता है, जो क्रूस पर केवल आंशिक रूप से पूरा हुआ था। यह इसलिए पूरा हुआ क्योंकि जो लोग कलवरी पर थे, वे उसके काम को देख पाए और उसके छेदे हुए हाथ और पैर देख पाए। लेकिन यह पद भविष्य के एक दिन, प्रभु के पुनरागमन पर अंतिम और पूरी पूर्णता की प्रतीक्षा कर रहा है, जब मन फिराया हुआ इस्राएल वास्तव में उसे देखेगा जिसे उन्होंने बेधा था।

B. प्रभु की देह के लिए ईश्वरीय इंतजाम (19:38-42)

लेकिन परमेश्वर का एक और कार्य था। पहले कार्य ने प्रभु की हड्डियों को उसके शत्रुओं की शक्ति और द्वेष के बावजूद टूटने से बचाया। दूसरा कार्य प्रभु की देह से संबंधित था। अब से, केवल प्रेमपूर्ण हाथ ही इसे छू सकेंगे।

1. मध्यस्थ (19:38-39)

“इन बातों के बाद अरिमतिया के यूसुफ ने जो यीशु का चेला था, परन्तु यहूदियों के डर से इस बात को छिपाए रखता था, पिलातुस से विनती की कि क्या वह यीशु का शव ले जा सकता है। पिलातुस ने उसकी विनती सुनी, और वह आकर उसका शव ले गया” (19:38)। चारों सुसमाचार अरिमतिया के यूसुफ के बारे में बताते हैं। वह एक अमीर व्यक्ति (मत्ती 27:57), एक सम्माननीय सलाहकार, अर्थात् महासभा का सदस्य (मरकुस 15:43), एक अच्छा और न्यायी व्यक्ति (लूका 23:50) था। यह भविष्यवाणी की एक और पूर्णता थी कि यीशु को एक धनी व्यक्ति द्वारा गाड़ा जाना था (यशायाह 53:9)।

यूहन्ना में इतना साहस हो सकता था कि वह पिलातुस से मुलाक़ात करके यीशु का शव मांग सके, लेकिन इसमें संदेह है कि वह राज्यपाल के सामने भी जा पाता। अरिमतिया का यूसुफ, जो महासभा का एक प्रभावशाली सदस्य था, पिलातुस तक जा भी सकता था और विनती के साथ अपनी उपस्थिति दर्ज करवा सकता था। रोमियों के लिए यह प्रथा थी कि वे देशद्रोह के मामलों को छोड़कर, मारे गए अपराधियों के रिश्तेदारों को शव लेने की अनुमति देते थे। लेकिन पिलातुस निश्चित रूप से जानता था कि यीशु कोई गद्दार नहीं था।

इसके अलावा, यूसुफ के पास अपनी दलील का समर्थन करने के लिए एक और प्रभावशाली व्यक्ति था : नीकुदेमुस, जो यरूशलेम के तीन सबसे अमीर लोगों में से एक माना जाता था। “नीकुदेमुस भी, जो पहले यीशु के पास रात को गया था, पचास सेर के लगभग मिला हुआ गन्धरस और एलवा ले आया” (19:39)।

अब तक ये दोनों व्यक्ति गुप्त चेले थे, लेकिन अब नहीं। कलवरी ने अंतर पैदा किया। बाद में पौलुस ने क्रूस और उसके द्वारा उसके जीवन में किए गए अंतर के बारे में लिखा : “पर ऐसा न हो कि मैं अन्य किसी बात का घमण्ड करूँ, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का, जिसके द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ” (गलातियों 6:14)। संसार ने यीशु के साथ जो किया, उसके बाद इन दोनों विश्वासियों के लिए अब कोई समझौता नहीं हो सकता था।

नीकुदेमुस ने यीशु की देह पर अपना धन लुटा दिया। उसका इरादा था कि यीशु को राजा की तरह दफनाया जाए। वह सौ पाउंड के महंगे मिश्रित मसाले और सनी के कपड़े की पट्टियाँ लाया, जो एक और महंगी वस्तु थी। मसाले कपडे पर फैलाए गए और सनी की पट्टियाँ शरीर के चारों ओर लपेटी गईं।

2. गाड़ा जाना (19:40-42)

“तब उन्होंने यीशु का शव लिया, और यहूदियों के गाड़ने की रीति के अनुसार उसे सुगन्ध द्रव्य के साथ कफन में लपेटा” (19:40)। यीशु के शरीर को कोमलता से नीचे उतारा गया और शव को लेप लगाने के लिए क्रूस पर

चढ़ाए जाने के स्थान से हटा दिया गया (19:40)। इसे गाड़े के लिए उसे पूरी देखभाल और सुरक्षा के साथ तैयार किया गया था जो प्रेम से मिल सकती थी या जो धन से प्राप्त हो सकती थी। हम निश्चित हो सकते हैं कि उन भयानक घावों पर बहुत सारे आँसू बहाए गए थे जो उसके प्यारे शरीर को ढँक रहे थे। आखिरकार यह हो गया। रब्बियों के अनुसार अपराधियों पर इस्तेमाल किए जाने वाले पुराने चिथड़ों की बजाय, महंगे कपड़ों ने यातनाग्रस्त शरीर को नश्वर आँखों से छिपा दिया। मसालों की खुशबू हवा में भर गई। अभी के लिए इतना काफी था। सब्त खत्म होने के बाद और भी कुछ किया जा सकता है।

फिर कब्र में गाड़ा गया (19:41-42) : "उस स्थान पर जहाँ यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया था, एक बारी थी, और उस बारी में एक नई कब्र थी जिसमें कभी कोई न रखा गया था। इसलिये यहूदियों की तैयारी के दिन के कारण उन्होंने यीशु को उसी में रखा, क्योंकि वह कब्र निकट थी।" एक बारी, एक नई कब्र, मृत्यु के अपमान को कम करने के लिए प्रेम जो कुछ भी कर सकता था, वह यीशु के लिए किया गया। जल्दबाजी में? हाँ, समय और दिन के कारण कुछ हद तक जल्दबाजी थी। लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं छोड़ा गया जो किया जाना था।

यीशु की मृत्यु दोपहर तीन बजे हुई। सूर्यास्त के साथ ही काम खत्म हो गया। यह परमेश्वर द्वारा पहले से किया गया इंतजाम था कि यूसुफ की कब्र क्रूस पर चढ़ाए जाने की जगह के बहुत करीब होनी चाहिए।

इसलिए एक साफ-सुथरी नई कब्र में, जिसमें पहले किसी को नहीं रखा गया था, सनी के कपड़े पहने हुए और सुगंध से घिरे हुए, ठंडे अंधेरे अंदरूनी हिस्से में, उस संसार के शोरगुल और आवाजों से दूर, जिसने उसे इतनी शर्मनाक तरीके से इस्तेमाल किया था, उद्धारकर्ता का शरीर आराम कर रहा था। संसार अपने काम में लग गया।

हम कल्पना कर सकते हैं कि सब कुछ कैसा रहा होगा। पिलातुस रात के खाने के लिए घर गया और अपनी पत्नी को दिन की घटनाओं के बारे में बताया। हन्ना और काइफा ने अपने-अपने फसह के पर्व की अध्यक्षता की। पतरस अकेले में रोया। यहूदा का शव भूला बिसरा पड़ा था। यूहन्ना ने अपनी नई माता को सांत्वना देने की कोशिश की। अन्य चेलों ने खुद को लोगों की नज़रों से छिपा लिया। हेरोदेस और उसके योद्धाओं ने मज़ाक उड़ाया। क्या बैतनिय्या की मरियम के हृदय में अपेक्षा का भाव था? क्या एक रोमी सैनिक ने अपना नया वस्त्र पहनने की कोशिश की, और दूसरे ने अपने बरछे से परमेश्वर के पुत्र के लहू को धोने की कोशिश की?

संसार गोल-गोल घूम गया। स्वर्गदूतों ने देखा कि उनमें से कुछ नए दिन की सुबह की तैयारी के लिए पृथ्वी पर उतरे।

खंड 3. वह पूरी तरह से विजेता है (20:1-31)

कलवरी कहानी का अंत नहीं था। कब्र केवल उस कहानी में एक विराम चिह्न थी जो संसार की नींव रखने से पहले शुरू हुई थी। मसीह का पुनरुत्थान कहानी का एक महत्वपूर्ण आकर्षण था।

I. खाली कब्र पर प्रकाशन (20:1-18)

यूहन्ना द्वारा दर्ज किए गए पुनरुत्थान की चुनौती चार पंक्तियों में आगे बढ़ती है। अध्याय 20 में चुनौती सबसे पहले पतरस और यूहन्ना के मामले में बुद्धि को दी गई है, फिर मरियम मगदलीनी के मामले में भावनाओं को, फिर थोमा के मामले में इच्छाशक्ति को। अध्याय 21 में शमौन पतरस के मामले में विवेक को चुनौती दी गई है।

यीशु का पुनरुत्थान मन को संतुष्ट करता है, हृदय को झकझोरता है, इच्छाशक्ति को जकड़ लेता है, और विवेक को झकझोर देता है। कोई आश्चर्य नहीं कि यह प्रेरितिक प्रचार का प्रमुख विषय था।

A. आश्चर्यचकित चेले (20:1-10)

1. समाचार की प्राप्ति (20:1-2)

पुनरुत्थान की कहानी एक स्त्री से शुरू हुई, जिसका यीशु के प्रति प्रेम उसके जीवन में, पूरे संसार में सबसे महत्वपूर्ण बात थी। उसने उसे सोने नहीं दिया। यह उसे उस स्थान पर ले गया जहाँ उसकी देह को गाड़ा गया था। हम पहले देखते हैं कि मरियम मगदलीनी ने क्या पाया (20:1) : "सप्ताह के पहले दिन मरियम मगदलीनी भोर को अंधेरा रहते ही कब्र पर आई, और पत्थर को कब्र से हटा हुआ देखा।" एक साहसी स्त्री, वह अंधेरे से नहीं डरती थी, वह अंधेरे में कब्रिस्तान से नहीं डरती थी, पहरेदारों से नहीं डरती थी। शायद "सिद्ध प्रेम" ने जो "डर को दूर भगाता है" उसके हृदय को इतना भर दिया कि किसी और विचार के लिए कोई जगह नहीं थी (1 यूहन्ना 4:18 से तुलना करें)।

उसने जो देखा, उससे वह पहले तो आश्चर्य से भर गई होगी, फिर आशंका से। कब्र अब बंद नहीं थी। वह पूरी तरह खुली हुई थी। सैनिक जा चुके थे। पत्थर लुढ़का हुआ था।

इसके बाद हम देखते हैं कि मरियम मगदलीनी ने क्या निर्णय लिया (20:2) : "तब वह दौड़ी और शमौन पतरस और उस दूसरे चेले के पास जिससे यीशु प्रेम रखता था, आकर कहा, वे प्रभु को कब्र में से निकाल ले गए हैं, और हम नहीं जानतीं कि उसे कहाँ रख दिया है।" वह जानती थी कि शहर में यूहन्ना कहाँ रह रहा था। स्पष्ट है कि अब तक पतरस ने यूहन्ना को खोज लिया था, या शायद यूहन्ना ने उसे खोज लिया था। वे कई सालों से मित्र थे। पतरस ने अपनी निर्बलता और पाप से पश्चाताप कर लिया था और वह अभी भी एक स्वाभाविक अगुवा था। जब तक वह घर पहुँची, मरियम ने तय कर लिया था कि क्या हुआ था। अधिकारियों ने, जिन्होंने दफनाने के समय कब्र को बंद कर दिया था, उसे खोलने और शव को निकालने का आदेश दिया होगा। शायद वे इसे संभाल कर रखना चाहते थे, ताकि पुनरुत्थान की अफ़वाहें फैलने पर वे इसे दिखा सकें। शायद वे इसे एक आम कब्र में फेंकना चाहते थे। वह बस इतना जानती थी कि कब्र अब खुली हुई थी, और इसके अलावा और क्या स्पष्टीकरण हो सकता था?

2. समाचार पर प्रतिक्रिया (20:3-10)

उस समाचार के प्रति पहली प्रतिक्रिया (20:3-7) कार्रवाई की थी। पतरस ने अगुवाई की। यह दृश्य अभी भी वृद्ध यूहन्ना के मन में जीवंत था। जब उसने लिखा, तो एक बहुत ही बुजुर्ग व्यक्ति के रूप में, उसे इसके पूरे रोमांच और उत्साह की याद आई। "तब पतरस और वह दूसरा चेला निकलकर कब्र की ओर चले। वे दोनों साथ–साथ दौड़ रहे थे, परन्तु दूसरा चेला पतरस से आगे बढ़कर कब्र पर पहले पहुँचा।" हम उन दोनों को उस स्थान की ओर दौड़ते हुए देख सकते हैं। जैसे ही वे पास पहुँचे, तो यूहन्ना, जो छोटा था, और तेज़ दौड़ा और कब्र पर पहले पहुँच गया।

"और झुककर कपड़े पड़े देखे, तौभी वह भीतर न गया।" (20:5)। यहाँ कुछ अजीब था। यूहन्ना की पहली नज़र सबूतों पर पड़ी, लेकिन अभी तक सच्चाई उसके सामने नहीं आई थी। अधिकारियों ने शव को खोलने की जहमत क्यों उठाई? उसे कब्र के कपड़ों और बाकी वस्तुओं के साथ क्यों नहीं उठाया? उसकी घबराहट और स्थिति की अजीबता ने उसे रुकने पर मजबूर कर दिया। पतरस भी आ गया और, निश्चित रूप से, मरियम मगदलीनी सही

थी। कब्र खुली थी। वह अंदर गया, यूहन्ना से आगे बढ़ा जो अब भी दृश्य को समझने की कोशिश कर रहा था। "तब शमौन पतरस उसके पीछे–पीछे पहुँचा, और कब्र के भीतर गया और कपड़े पड़े देखे; और वह अंगोछा जो उसके सिर से बन्धा हुआ था, कपड़ों के साथ पड़ा हुआ नहीं, परन्तु अलग एक जगह लपेट कर रखा हुआ देखा" (20:6-7)। वहाँ रहस्य को सुलझाने के सभी प्रमाण और सुराग थे। अब केवल तथ्यों से सही निष्कर्ष निकालना जरूरी था।

शव गायब था; इसमें कोई संदेह नहीं था। जल्दबाजी या तोड़फोड़ का कोई सबूत नहीं था। सब कुछ व्यवस्थित और अपनी जगह पर था, कब्र के कपड़े, बस अंगोछा बाकी सब से थोड़ा अलग रखा था। ऐसा लग रहा था जैसे किसी मृत व्यक्ति का आकार बनाया गया हो, लेकिन शरीर गायब था। इसे कौन समझ सकता था? कौन इतना कष्ट उठाएगा?

इस समाचार के प्रतिआगे की प्रतिक्रिया अधिक गहन थी (20:8-9)। "तब दूसरा चेला भी जो कब्र पर पहले पहुँचा था, भीतर गया और देखकर विश्वास किया। वे तो अब तक पवित्रशास्त्र की वह बात न समझे थे कि उसे मरे हुओं में से जी उठना होगा।" यूहन्ना ने पतरस का पीछा करते हुए खाली कब्र में प्रवेश किया। उसने भी उन सभी वस्तुओं को देखा जो अविश्वसनीय लेकिन निश्चित निष्कर्ष की ओर इशारा कर रही थीं। यीशु मरे हुओं में से जी उठा था। वह कब्र के कपड़ों में से होकर जी उठा था। निस्संदेह! सभी सुराग उस निष्कर्ष की ओर इशारा कर रहे थे। तुरंत और वहीं उसने विश्वास किया। यह अविश्वसनीय, महिमामय रूप से सच था। यीशु जीवित था!

इस बिंदु पर, यूहन्ना अपने विवरण में रुकता है और उन दिनों चेलों की भयानक मंदबुद्धि की ओर संकेत करता है। वह कहता है, "वे तो अब तक पवित्रशास्त्र की वह बात न समझे थे।" वास्तव में इसके लिए कोई बहाना नहीं था। भले ही वे भजन 16:10 की सच्चाई को समझने में असमर्थ थे, लेकिन प्रभु की मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान की बार-बार की गई भविष्यवाणियों के बारे में क्या? बैतनिय्याह की मरियम ने विश्वास किया था। खुद यूहन्ना ने तीन पुनरुत्थान देखे थे। वे "भविष्यद्वक्ताओं की सब बातों पर विश्वास करने में मन्दमति" थे, जैसा कि प्रभु ने कुछ ही समय बाद इम्माऊस मार्ग पर उनमें से दो से कहा (लूका 24:25)। और निश्चित रूप से हमें उनकी बहुत आलोचना करनी चाहिए। लेकिन अंत में वे शानदार विश्वासी बन गए जो संसार को उलट-पुलट करने निकल पड़े।

फिर अंतिम प्रतिक्रिया आई (20:10) : "तब ये चेले अपने घर लौट गए।" ऐसा करके, वे एक आशीष से चूक गए। हम कल्पना कर सकते हैं कि उन्होंने घर पर क्या हलचल मचाई होगी। उन्होंने बार-बार तथ्यों पर विचार किया होगा। यूहन्ना ने कहा होगा, "मैं तुमसे कहता हूँ, वह जीवित है! उन तथ्यों का कोई और अर्थ नहीं है।"

आज भी कोई और अर्थ नहीं है। अविश्वासियों ने वैकल्पिक सिद्धांतों का आविष्कार किया है — मसीह वास्तव में मरा ही नहीं, वह केवल क्रूस पर बेहोश हो गया और कब्र में होश में आया, रात में भाग गया, और बाद में खुद को जीवित दिखाया; चेलों ने उसकी देह को चुरा लिया और फिर खाली कब्र के तथ्य के आधार पर मसीह के पुनरुत्थान के बारे में झूठ गढ़ा; कब्र पर आनेवाली स्त्रियों को पुनरुत्थान की आधी उम्मीद थी और इसलिए उन्हें भ्रम हुआ।

एक ओर, ये व्याख्याएँ परमेश्वरहीन लोगों द्वारा इस तथ्य से बचने के हताश प्रयास हैं कि यीशु जीवित है। परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जीवित किया। दूसरी ओर, मृतकों में से मसीह के निश्चित, शारीरिक पुनरुत्थान को नकारने के अविश्वासी संसार के अनाड़ी प्रयास तथ्यों के सामने विफल हो जाते हैं।

अब यह पुनरुत्थान की कहानी सबसे पहले मन को आकर्षित करती है। यह हमें तथ्यों से रूबरू कराती है। यह हमें शुरुआती सबूत, प्रमाण प्रदान करती है। इसके बाद कई और सबूत आए, लेकिन ये यूहन्ना को आश्वस्त करने के लिए पर्याप्त थे।

B. रोता हुआ चेला (20:11-18)

इसके बाद यूहन्ना मरियम मगदलीनी के कब्र पर हुए अविस्मरणीय अनुभव का वर्णन करता है।

1. मरियम और महान संदेशवाहक (20:11-14)

इस बिंदु पर घटनाओं का संभावित क्रम जानना हमारे लिए सहायक होगा (वेस्टकॉट , पृष्ठ 288)।

- लगभग प्रातः 5:00 बजे मरियम मगदलीनी, याकूब की माता मरियम और सलोमी (और शायद कुछ अन्य) के साथ कब्र की ओर गई। अभी भी अंधेरा था, लेकिन भोर होने वाली थी। मरियम मगदलीनी दूसरों से पहले जल्दी से आगे बढ़ी, कब्र को खुला पाया, और पतरस और यूहन्ना को बताने के लिए दौड़ी।
- लगभग प्रातः 5:30 बजे अन्य स्त्रियाँ वहाँ पहुँचीं। इस समय तक सूरज उग चुका था (मरकुस 16:2 व आगे)। उन्होंने एक स्वर्गदूत को देखा जिसने चेलों को संदेश भेजा (मत्ती 28:5 व आगे; मरकुस 16:5 व आगे)।
- लगभग प्रातः 6:00 बजे एक और समूह कब्र पर पहुँचा (लूका 24:1 व आगे; मरकुस 16:1 व आगे)। उन्होंने देखा कि उन्हें "दो पुरुष" दिखाई दिए जो उन्हें सांत्वना और निर्देश के वचन दे रहे थे (लूका 24:4 व आगे)।
- लगभग प्रातः 6:30 बजे पतरस और यूहन्ना कब्र पर आए। जाहिर है कि मरियम मगदलीनी उनके पीछे-पीछे आई, लेकिन जब वे घर गए तो वह वापस नहीं गई। उसने दो स्वर्गदूतों को देखा। लगभग उसी समय अन्य स्त्रियों ने अन्य चेलों को अपनी अद्भुत खबर सुनाई (लूका 24:10 व आगे)।
- लगभग प्रातः 7:00 बजे प्रभु ने स्वयं को मरियम मगदलीनी के सामने प्रकट किया (यूहन्ना 20:14-18; मरकुस 16:9)। कुछ ही समय बाद, ऐसा लगता है कि उसने स्वयं को उन स्त्रियों के समूह के सामने प्रकट किया जो इस समय कब्र पर लौट रही थीं। प्रभु ने उन्हें अपने चेलों के लिए संदेश दिया कि वे उससे गलील में मिलें (मत्ती 28:9 व आगे)।

बाद में, इस महिमामय दिन की शाम को, प्रभु कई बार और भी प्रकट हुआ।

यूहन्ना हमें मरियम की व्यथा के बारे में बताता है (20:11) : "परन्तु मरियम रोती हुई कब्र के पास ही बाहर खड़ी रही, और रोते–रोते कब्र की ओर झुककर" देखने लगी। "रोने" के लिए शब्द क्लाइयो है, बैतनिय्याह की मरियम के लिए भी यही शब्द इस्तेमाल किया गया था जब वह लाज़र की कब्र पर यीशु से मिलने गई थी (11:31)। इसका शाब्दिक अर्थ है "विलाप करना।" मरियम मगदलीनी का दिल टूट गया था। अब वह कब्र के बाहर खड़ी हो गई और उसने ठीक वही किया जो यूहन्ना ने किया था (20:5); वह "झुककर" अंदर देखने लगी। शब्द वही है, जिसका अर्थ है कि वह और स्पष्ट रूप से देखना चाहती थी कि अंदर क्या है।

फिर मरियम की खोज आती है (20:12-13)। “दो स्वर्गदूतों को उज्ज्वल कपड़े पहिने हुए एक को सिरहाने और दूसरे को पैताने बैठे देखा, जहाँ यीशु का शव रखा गया था।” चट्टान के दोनों छोर पर दो स्वर्गदूत बैठे थे, जिस पर यीशु का की देह को रखा था। प्रभु का पुनरुत्थान ब्रह्मांड के इतिहास में इतनी महत्वपूर्ण घटना थी कि इन शक्तिशाली प्राणियों की उपस्थिति आवश्यक थी। संसार को अपनी श्रद्धांजलि के साथ वहाँ होना चाहिए था — कैसर को रोम से आना चाहिए था, एथेंस के बुद्धिमान लोगों को वहाँ होना चाहिए था। काइफा और हन्ना और महासभा को वहाँ होना चाहिए था। दूर-दराज के यहूदी प्रवासियों के लोगों को वहाँ होना चाहिए था, साथ ही हेरोदेस और उसके योद्धाओं को भी। पिलातुस और उसकी पत्नी को वहाँ होना चाहिए था। एक उत्सुक, स्वागत करनेवाले समूह, चेलों को वहाँ होना चाहिए था। यरूशलेम की सड़कें तीर्थयात्रियों से भरी होनी चाहिए थीं। पूरा यरूशलेम खजूर की विजयी शाखाओं के साथ आना चाहिए था।

इसके बजाय संसार दूर रहा और उसकी जगह प्रकाशमान दूत आए। उन प्रकाशमान दूतों ने जो भी सोचा होगा? कुछ स्त्रियाँ आती हैं, और उनमें से एक चौंककर देखने के अलावा कुछ और किए बिना ही चली जाती है। दो पुरुष आते हैं, उनमें से एक थोड़ी सी गलती करता है, दूसरे को लगता है कि उसे समझ आ गया है, लेकिन वे चले जाते हैं। अब यह महिला वापस आई है, वह खुशी से चिल्लाने के बजाय सिसकियाँ भर रही है। उन्होंने उसे अपने पास आने दिया।

“उन्होंने उससे कहा, हे नारी, तू क्यों रोती है? उसने उनसे कहा, वे मेरे प्रभु को उठा ले गए और मैं नहीं जानती कि उसे कहाँ रखा है” (20:13)। हमें यह नहीं बताया गया है कि उन्होंने उसके उत्तर के बारे में क्या सोचा। यह स्पष्ट था कि उनका प्रिय उसका भी प्रिय था, उनका प्रभु उसका भी प्रभु था। उन्होंने उसकी उलझन को दूर करने का कोई प्रयास नहीं किया। उसने उन्हें अवसर ही नहीं दिया, न ही उसकी कोई आवश्यकता थी। वे वह देख सकते थे जो वह नहीं देख सकती थी : उसके पीछे वह खड़ा था जिसे वह खोज रही थी।

हम मरियम की उदासीनता को भी देखते हैं (20:14) : “यह कहकर वह पीछे मुड़ी और यीशु को खड़े देखा, पर न पहचाना कि यह यीशु है।” जब वह उनसे हटी, तो उसने वहाँ एक और आकृति खड़ी देखी। वह दुखद विचारों और अपनी अवर्णनीय हानि से इतनी ग्रस्त थी कि उसने उसे देखा लेकिन नहीं पहचाना। एक पल के लिए भी उसे नहीं लगा कि यह वही है। उसने इस अनाम आगंतुक में उतनी दिलचस्पी नहीं दिखाई जितनी कि स्वर्गदूतों में दिखाई थी। वह बस यीशु को चाहती थी।

2. मरियम और उसका जीवित स्वामी (20:15-17)

हम उसकी निराशा को देखते हैं (20:15) : “यीशु ने उससे कहा, हे नारी, तू क्यों रोती है? किसको ढूँढ़ती है? उसने माली समझकर उससे कहा, हे महाराज, यदि तू ने उसे उठा लिया है तो मुझे बता कि उसे कहाँ रखा है, और मैं उसे ले जाऊँगी।”

उसने उसे उसी तरह संबोधित किया जैसे स्वर्गदूत करते थे : “हे नारी, तू क्यों रोती है?” उन आँसुओं और सिसकियों ने उसके हृदय को छू लिया था। स्वर्गदूतों के लिए यह शायद शैक्षणिक रुचि का विषय था, एक नश्वर प्राणी का रोना? लेकिन यीशु के पास एक मानवीय हृदय था। वह इस निराश स्त्री से प्यार करता था। वह उसके आँसुओं की कीमत और मूल्य को जानता था। एक पल में वह उसे उसकी दृढ़ता और उसके प्रेम के लिए बहुत बड़ा इनाम देगा जो मृत्यु से भी अधिक मजबूत था। इसके अलावा, इस भक्ति में उसका व्यक्तिगत हित था। इसलिए उसने पूछा, “किसको ढूँढ़ती है?”

यीशु के पुनरुत्थान के बाद उसके ये पहले शब्द कितने अद्भुत हैं। उसने उसे याद दिलाया कि वह केवल किसी वस्तु की तलाश नहीं कर रही थी, बल्कि किसी को ढूँढ़ रही थी। लेकिन वह अब भी अपने दुःख में डूबी हुई थी। निराशा के साहस के साथ उसने सब कुछ कह दिया। उसने मान लिया, भले ही यह माली ही क्यों न हो, जैसा कि उसने सोचा था, वह एक मित्र था। यदि वह प्रभु का शत्रु तो उसने उसे परिसर से बाहर जाने का कठोर आदेश दे दिया होता। अगर इस मित्र जैसे माली ने शव को हटाया होता, तो शायद वह उसे बता देता कि वह कहाँ है। तब वह दौड़कर उसे ले जा सकती थी।

प्रभु अब खुद को रोक नहीं पाया। यहाँ वास्तव में ऐसा प्रेम था जिसे बहुत पानी भी नहीं बुझा सकता था और न ही बाढ़ इसे डुबा सकती थी। एक शब्द, और उसकी निराशा उसकी खुशी में बदल गई (20:16-17)। "यीशु ने उससे कहा, मरियम! उसने पीछे मुड़कर उससे इब्रानी में कहा, रब्बूनी! अर्थात् हे गुरु।" (20:16)। प्रेम की भाषा ऐसी ही होती है। प्रत्येक ने केवल एक शब्द बोला, और प्रत्येक ने बहुत कुछ कह दिया। उसने कहा, "मरियम।" उसने कहा, "गुरु।" हमारे लिए इससे अधिक कहना अशिष्टता होगी।

"यीशु ने उससे कहा, मुझे मत छू, क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया, परन्तु मेरे भाइयों के पास जाकर उनसे कह दे, कि मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता, और अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूँ" (20:17)। ऐसा लगता है कि जिस क्षण मरियम मगदलीनी ने यीशु को पहचाना, उसने अपनी बाँहें उसके चारों ओर लपेट लीं, मानो उसे थामना चाहती हो और उसे कभी जाने नहीं देना चाहती हो। प्रभु के वचनों का निहितार्थ यह है कि जब वह बोल रहा था, तब भी वह उससे लिपटी हुई थी।

प्रभु ने इस मानवीय स्नेह के प्रदर्शन को रोका, और उससे कहा कि उसे जाने दे। सभी रिश्ते बदलने थे, और उसका स्वर्गारोहण एक नई स्थिति को लेकर आएगा। उसके अनुयायी अब उसे पहले की तरह देख, सुन और छू नहीं पाएँगे। एक नया और अधिक स्थायी आत्मिक संबंध बनने वाला था। उसका पिता उनका पिता होना था; उसका परमेश्वर उनका परमेश्वर होना था। प्रभु यहाँ जिस स्वर्गारोहण का उल्लेख कर रहा है, वह पाँच या छः सप्ताह बाद जैतून पहाड़ से सार्वजनिक रूप से होने वाले स्वर्गारोहण से अलग हो सकता है। ऐसा लगता है कि यह एक निजी स्वर्गारोहण था।

यह सब्त के बाद का दिन था। इस्राएल के वार्षिक धार्मिक कैलेंडर के अनुसार, इस दिन महायाजक को व्यवस्था के अनुसार पहले फलों का पूला लेना था और उसे प्रभु के सामने लहराना था (लैव्यव्यवस्था 23:10-11)। यह सुझाव दिया गया है कि प्रभु का स्वर्गारोहण होने वाला था और मृतकों में से पहले फलों के रूप में (1 कुरिन्थियों 15:23), वह स्वयं को पिता के सामने प्रस्तुत करने वाला था। यदि ऐसा है, तो संभवतः पुराने नियम के पवित्र लोग, जिनके पुनरुत्थान के बारे में मत्ती ने बताया है (मत्ती27:52-53), इस समय उसके साथ उठाए गए होंगे।

3. मरियम और उसके प्रभु के लोग (20:18)

"मरियम मगदलीनी ने जाकर चेलों को बताया, मैं ने प्रभु को देखा, और उसने मुझ से ये बातें कहीं।" हमें यूहन्ना द्वारा यह नहीं बताया गया है कि चेलों ने उसकी गवाही को कैसे लिया (मरकुस 16:9-11 से तुलना करें)। इस प्रकार, मरियम मगदलीनी, एक स्त्री, पुनर्जीवित मसीह को देखने वाली पहली थी, उसकी आवाज़ सुनने वाली पहली थी, उसे छूने वाली पहली थी, उसके द्वारा नियुक्त की जाने वाली पहली थी, और दूसरों को सुसमाचार सुनाने वाली पहली थी।

II. ऊपरी कमरे में प्रकाशन (20:19-31)

A. सभी कष्ट दूर हो गए (20:19-23)

सुबह के प्रकाशन अब शाम के प्रकाशन में बदल जाते हैं। यह कितना उतर-चढ़ाव वाला दिन था। प्रभु के शत्रुओं के बीच कितनी घबराहट थी। हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि महासभा में नीकुदेमुस और अरिमतिया के यूसुफ के दलबदल पर बहुत नाराजगी व्यक्त की गई थी। कुछ दिनों तक शांति रही, हर कोई पर्वों की रस्मों और परंपराओं में व्यस्त रहा । लेकिन आज भोर को ही एक पहरेदार स्वर्गदूतों और एक हिलते हुए पत्थर और एक खाली कब्र की कहानियों से भयभीत होकर आया था।

किले में, पिलातुस शायद ही कम परेशान रहा होगा। उसे सूबेदार की रिपोर्ट मिली थी, जो गुलगुता की अजीबोगरीब घटनाओं के बारे में थी, जिसमें यीशु की असाधारण मृत्यु सबसे कम महत्वपूर्ण बात नहीं होगी। शायद, पूछताछ के दौरान, सूबेदार ने अपनी व्यक्तिगत धारणा व्यक्त की होगी कि यीशु परमेश्वर का पुत्र था, यह नहीं जानते हुए कि कैसे यह बात पिलातुस के डर को फिर से जगा देगी। अब, आज सुबह, कब्र की मुहर टूटने और कब्र के खुलने की खबर आई, साथ ही मुख्य याजकों की कुछ बेहद संदिग्ध कहानी भी आई कि चेलों ने शव चुरा लिया है।

चेलों से क्या उम्मीदें थीं? कुछ लोग निश्चित थे, कुछ संशय में थे, लेकिन उनमें से अधिकांश शाम को एक साथ थे। यह माना जा सकता है कि वे ऊपरी कमरे में थे (मरकुस 14:15; लूका 22:12; प्रेरितों के काम 1:13)। अचानक, वह वहाँ आ गया! और वह शांति लाने के लिए आया था।

1. उसकी शांति—सभी परिस्थितियों में विजयी (20:19-20)

हम समय (20:19क) पर ध्यान देते हैं: "उसी दिन जो सप्ताह का पहला दिन था।" वह दिन हमारा रविवार था। समय शायद आठ बजे से पहले का नहीं था, क्योंकि लूका के अनुसार, इम्माऊस के मार्ग पर प्रभु से मिले दो चेलों के पास यरूशलेम वापस जाने का समय था (लूका 24:13-36)। हम उस शाम की बातचीत, उत्साहित बातचीत की कल्पना कर सकते हैं। कुछ लोग अब भी संशय में थे; मरकुस हमें बताता है कि उन्होंने भी उस पर विश्वास नहीं किया (मरकुस 16:12-13)। कुछ लोग आश्वस्त थे। प्रभु मरियम मगदलीनी को दिखाई दिया था और वह कुछ अन्य स्त्रियों को भी दिखाई दिया था — लेकिन स्त्रियों की गवाही को गंभीरता से नहीं लिया गया था। लेकिन तब से वह पतरस को निजी तौर पर दिखाई दिया था (लूका 24:34) और अब ऐसा लगा कि वह इम्माऊस के मार्ग पर चलनेवाले चेलों को दिखाई दिया था।

हम भय को भी देखते हैं (20:19ख) : "जब वहाँ के द्वार जहाँ चेले थे, यहूदियों के डर के मारे बन्द थे।" चेले स्वाभाविक रूप से डरे हुए थे कि महासभा किसी भी समय उनके खिलाफ कार्यवाही शुरू कर सकती है। शायद उन्होंने सुना था कि उन पर पहले से ही देह को चुराने का आरोप लगाया जा रहा है। जिन लोगों को अपने स्वामी की हत्या करने में हिचकिचाहट नहीं हुई, उन्हें उन पर हमला करने में हिचकिचाहट नहीं होगी, यदि उन्हें लगता है कि यह उचित है। इसलिए दरवाजा मजबूती से बंद कर दिया गया था। इससे कम से कम उन्हें सुरक्षा का कुछ एहसास हुआ।

फिर परिवर्तन हुआ (20:19ग-20) : "तब यीशु आया और उनके बीच में खड़ा होकर उनसे कहा, तुम्हें शान्ति मिले। और यह कहकर उसने अपना हाथ और अपना पंजर उनको दिखाए। तब चेले प्रभु को देखकर आनन्दित

हुए।" एक क्षण वह वहाँ नहीं था; अगले ही क्षण, वह वहाँ था। बंद दरवाजे का संदर्भ हमें यह विश्वास दिलाता है कि वह कमरे में पारंपरिक तरीके से नहीं आया था।

उसने उनका यहूदी रीति से अभिवादन किया, "तुम्हें शांति मिले।" उन्हें उस परिचित शब्द की आवश्यकता थी, जो अब एक नए आत्मिक अर्थ से भरा था। स्वाभाविक रूप से, उन्हें लगा कि वे एक भूत को देख रहे हैं (लूका 24:37-39)। प्रभु ने उन्हें अपने पुनर्जीवित शरीर के ठोस सबूत अर्थात् अपने हाथ और अपनी पसली दिखाकर ऐसी किसी भी धारणा को तुरंत खारिज कर दिया। यह वास्तव में और सच में उनका प्रभु था। उसने मृत्यु पर विजय प्राप्त की थी। वह जीवित था। वह ठोस था। वह वास्तव में था।

परिवर्तन बहुत तेजी से हुआ : "तब चेले प्रभु को देखकर आनन्दित हुए।" अचानक ही पूरी स्थिति बदल गई। अब सदूकियों, महासभा, पिलातुस, किले से डरने का क्या कारण था? चाहे कुछ भी हो जाए, यीशु जीवित था।

2. उसकी शांति—सभी सेवाओं के लिए विजयी (20:21-23)

हम उनकी भर्ती पर ध्यान देते हैं (20:21) : "यीशु ने फिर उनसे कहा, तुम्हें शान्ति मिले; जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ।" चेले अब उसके "भेजे हुए लोग" बन गए, जिन्हें उसके पिता ने नियुक्त किया था। उन्हें उस काम को आगे बढ़ाना था जो उसने शुरू किया था। एक विशाल संसार अब भी दुष्ट की गोद में पड़ा था और सुसमाचार सुनाए जाने की प्रतीक्षा कर रहा था। कीलों से छिदे हाथों का शक्तिशाली अभिषेक उन्हें मिल गया था।

हम उनके सशक्तिकरण (20:22) पर ध्यान देते हैं : "यह कहकर उसने उन पर फूँका और उनसे कहा, "पवित्र आत्मा लो।" "फूँका" के लिए शब्द एम्फुसाओ है, वही शब्द सेप्टुआजेंट में उत्पत्ति 2:7 में इस्तेमाल किया गया है। यहोवा एलोहिम के रूप में प्रभु ने आदम के नथुनों में जीवन की सांस फूँकी ताकि वह एक जीवित आत्मा बन जाए। इस शब्द का अर्थ है "बल के साथ फूँकना।" अब पुनर्जीवित प्रभु के रूप में उसने प्रेरितों पर फूँका ताकि वे पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व में ईश्वरीय सामर्थ्य प्राप्त कर सकें। उनके सामने जो कार्य था वह मानवीय रूप से असंभव था : परमेश्वर से घृणा करने वाले, मसीह को अस्वीकार करने वाले आत्मिक रूप से मृत लोगों के संसार के सामने सुसमाचार प्रचार करना, जो अपराधों और पापों में मरे हुए थे, और एक शैतानी रूप से सक्रिय प्रणाली और समाज में संगठित थे। वे यह कैसे कर सकते थे? पवित्र आत्मा के द्वारा जो अब उनके नश्वर शरीर में निवास कर रहा था। पुत्र ने अपने मिशन के लिए पवित्र आत्मा को प्राप्त किया था (यूहन्ना 1:32-34; 3:34) और अब उसने उन्हें उनके मिशन के लिए पवित्र आत्मा दे दिया।

हम उनके ऊँचे उठाए जाने (20:23) पर भी ध्यान देते हैं : "जिनके पाप तुम क्षमा करो, वे उनके लिये क्षमा किए गए हैं; जिनके तुम रखो, वे रखे गए हैं।" यह पापों को क्षमा करने या न करने की लगभग ईश्वरीय शक्ति प्रतीत होगी। इसका जो भी अर्थ हो, हम निश्चिंत हो सकते हैं कि इसका अर्थ यह नहीं है कि हम अपने अधिकार से या किसी पद के आधार पर, अन्य मनुष्यों के पापों को रद्द या पुष्टि करने का दावा कर सकते हैं। शास्त्री यह सुनकर हैरान रहने में सही थे, जब यीशु ने कफरनहूम के लकवाग्रस्त व्यक्ति से कहा, "हे पुत्र, तेरे पाप क्षमा हुए... परमेश्वर को छोड़ और कौन पाप क्षमा कर सकता है?" (मरकुस 2:5-7, 10-11)। उनके तर्क में दोष इस तथ्य में था कि यीशु परमेश्वर था, एक तथ्य जिसे वे समझ नहीं पाए।

हम उस मरती हुई स्त्री की कहानी याद करते हैं, जिसका पालन-पोषण रोमी कैथोलिक के रूप में हुआ था, लेकिन वह कई वर्षों से मसीह को अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में जानती थी और उसने बहुत पहले ही कन्फेशन

करना, प्रायश्चित करना और उस कलीसिया में जाना छोड़ दिया था। इसके बजाय उसने अपनी बाइबल का अध्ययन किया और समान विश्वास वाले लोगों के साथ इकट्ठा हुई। जब वह अपनी मृत्युशैया पर थी, तो कुछ नेकहृदय रिश्तेदारों ने पैरिश पादरी को उससे मिलने के लिए भेजा। उसने उससे कन्फेशन कराने और उसे क्षमा प्रदान करने की पेशकश की। उस स्त्री ने पादरी से कहा, "मुझे अपने हाथ दिखाओ।" पादरी ने अपने हाथ आगे बढ़ाए और उस स्त्री ने उन्हें जाँचा। फिर वह पादरी की ओर मुड़ी और बोली, "आप बहरूपिये हैं, श्रीमान। जो मेरे पापों को क्षमा करता है, उसके हाथों में तो कीलों के निशान हैं।"

इस संदर्भ में हमारे पास यही है। प्रभु ने अभी-अभी अपने चेलों को अपने हाथों में कीलों के निशान दिखाए थे। अब उन्होंने उनसे पापों को क्षमा करने और न करने के बारे में बात की। यह विशेषाधिकार केवल उसका है। लेकिन स्वर्ग के शाही परिवार में उसके द्वारा लाए जाने के कारण हमारी महानता इतनी बड़ी है कि हम उसके नाम पर क्षमा करने या रखने को कम और सीमित तरीके से व्यक्त कर सकते हैं।

प्रभु के इस कथन में सर्वनाम बल के साथ नहीं हैं। पाठ या संदर्भ में ऐसा कुछ भी नहीं है जो यह संकेत दे कि यह अधिकार केवल कुछ विशेष समूह जैसे कि प्रेरितों या याजकों के किसी नियुक्त आदेश की संपत्ति थी। यह पूरी कलीसिया और उन सभी पर लागू होता है जो प्रभु के आत्मा की शक्ति में उसकी सेवा करते हैं, चाहे उनका स्थान कितना भी ऊँचा या कितना भी छोटा क्यों न हो।

कलीसिया मसीह की रहस्यमय देह है। वह सिर है, और लहू से खरीदा हुआ हर विश्वासी उसका सदस्य है। यह हमारे अर्थात् उसकी देह के सदस्यों के माध्यम से है, कि प्रभु यीशु की पहुँच आज संसार तक है। यह पवित्र आत्मा है जो कार्य करता है। संसार में कलीसिया का कार्य वह साधन बनना है जिसके माध्यम से पवित्र आत्मा लोगों से पाप, धार्मिकता और न्याय के बारे में व्यवहार करता है। यह हमारे अर्थात् इस रहस्यमय देह के सदस्यों के माध्यम से है, कि वह लोगों को मसीह के पास लाता है, जिसके लहू से ही पाप साफ होते हैं। जब लोग सुसमाचार का जवाब देते हैं और मसीह में अपना विश्वास रखते हैं, तो हम उन्हें परमेश्वर के वचन की ओर मोड़ सकते हैं और उन्हें आश्वस्त कर सकते हैं कि उनके पाप क्षमा कर दिए गए हैं। जब वे सुसमाचार को अस्वीकार करते हैं, तो हम उन्हें बता सकते हैं कि वे अपने पापों को बरकरार रखते हैं और जब तक वे पश्चाताप नहीं करते, वे अपने पापों में मर जाएँगे। ऐसे कई विषय भी हैं जब परमेश्वर की संतान, जिसमें परमेश्वर के वचन के अनुसार परमेश्वर के आत्मा का वास है, भटक सकती है। पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि "हुमिनयुस और सिकन्दर हैं, जिन्हें मैं ने शैतान को सौंप दिया है कि वे परमेश्वर की निन्दा करना न सीखें" (1 तीमुथियुस 1:19-20)। ऐसा लगता है कि ये लोग अधर्मी थे। कलीसिया के भीतर ही इस अधिकार का अनूठा बल प्रतीत होता है। कलीसिया को खुद को साफ रखने और इस उद्देश्य के लिए अनुशासन का पालन करने का आदेश दिया गया है। अनुशासनात्मक कार्रवाई के कई उदाहरण नए नियम में पाए जाते हैं। हनन्याह और सफीरा के विषय ने न केवल कलीसिया में बल्कि संसार में भी अच्छे परिणाम दिए (प्रेरितों के काम 5:1-14)। शमौन जादूगर के मामले में, पतरस ने चेतावनी दी लेकिन मारा नहीं (प्रेरितों के काम 8:18-24)। ऐसा लगता है कि 1 कुरिन्थियों 5:12 का सिद्धांत इन सभी पर लागू होता है। कलीसिया के अनुशासन के तहत रहना एक गंभीर बात है, जिसका उद्देश्य हमेशा बहिष्कृत व्यक्ति की बहाली करना होता है (1 कुरिन्थियों 5:1-5; 2 कुरिन्थियों 2:6-8)। याकूब 5:14-20 में बताया गया व्यक्ति कलीसिया के अनुशासन के अधीन प्रतीत होता है।

B. सभी संदेह दूर हो गए (20:24-31)

यूहन्ना के विषय में, मसीह के पुनरुत्थान ने बुद्धि से संबंधित एक मांग की; मरियम मगदलीनी के विषय में, हृदय के संबंध में; अब, थोमा के विषय में, यह इच्छा के संबंध में एक मांग करता है। थोमा की समस्या संदेह थी, लेकिन संदेह हठ और इच्छा के द्वारा दृढ़ हुआ। इस खंड में सभी संदेह दूर हो जाते हैं।

1. बिल्कुल तभी और उसी समय (20:24-29)

सबसे पहले हम थोमा और उसके दृढ़ अविश्वास पर नजर डालते हैं।

हम थोमा द्वारा व्यक्त किए गए संदेहों पर ध्यान देते हैं (20:24-25)। यूहन्ना हमें बताता है कि थोमा ने क्या खोया (20:24) : "परन्तु बारहों में से एक, अर्थात् थोमा जो दिदुमुस कहलाता है, जब यीशु आया तो उनके साथ न था।" थोमा हमें उन सभी विश्वासियों की याद दिलाता है जो किसी न किसी कारण से परमेश्वर के लोगों की सभाओं से अनुपस्थित रहते हैं। ऊपरी कमरे में इस सभा से अनुपस्थित रहने वाला एकमात्र अन्य व्यक्ति यहूदा था। वास्तव में, पवित्र आत्मा "बारहों में से एक" वाक्यांश का उपयोग करके इस ओर अप्रत्यक्ष रूप से ध्यान आकर्षित करता है। सुसमाचार में एकमात्र अन्य स्थान पर यह यहूदा के संबंध में आता है। थोमा इस सभा से दूर क्यों रहा? लोग परमेश्वर के लोगों की सभा की सभाओं से दूर क्यों रहते हैं? क्या उसने कहा, "मैं बहुत व्यस्त हूँ," या "मैं आज रात थका हुआ हूँ; मुझे लगता है कि मुझे घर पर ही रहना चाहिए," या "जाना खतरनाक है; मुझे लगता है कि इस समय राजनीतिक और धार्मिक माहौल को देखते हुए समूहों में इकट्ठा होना मुसीबत को आमंत्रित करना है," या "मैं घर पर रहकर और अपनी बाइबल पढ़कर और उस पर विचार करके उस बैठक में जाने की अपेक्षा अधिक लाभ उठा सकता हूँ," या "यदि पतरस वहाँ होगा, तो मैं नहीं जाऊँगा — उसने जो किया उसके बाद तो बिल्कुल नहीं; मैं उसे जानता हूँ, वह सामने होगा, डटा हुआ," या "उस सभा में प्रभु की उपस्थिति का कोई आभास नहीं होगा; यह नीरस और उदासीन होगी, इसलिए वहाँ जाने की क्या आवश्यकता है?" या "मुझे लगता है कि बारिश होने वाली है" (एक जाना-पहचाना बहाना, मौसम), या "मैं यहाँ रहकर जानना चाहता हूँ कि महासभा में क्या हो रहा है?" या — खैर, हम सभी ये बहाने जानते हैं।

लेकिन थोमा ने क्या खोया! यूहन्ना इसके बारे में स्पष्ट है : "परन्तु" (और बाइबल के सभी "परन्तु" बहुत महत्वपूर्ण हैं) "थोमा... जब यीशु आया तो उनके साथ न था।" वह चूक गया था। उस रात वह और जो कुछ भी कर रहा था, वह इसके जितना महत्वपूर्ण नहीं था। वह यीशु के साथ एक मुलाकात से चूक गया था। और ऐसा हमेशा होता है। मत्ती 18:20 के बल पर, हम सकारात्मक रूप से पुष्टि कर सकते हैं कि जो लोग कलीसिया की सभाओं से अनुपस्थित रहते हैं वे हमेशा प्रभु के साथ एक मुलाकात और स्वयं के एक नए प्रकाशन से चूक जाते हैं।

फिर यूहन्ना हमें बताता है कि थोमा ने क्या प्रकट किया (20:25) : "जब अन्य चेले उससे कहने लगे, हम ने प्रभु को देखा है, तब उसने उनसे कहा, जब तक मैं उसके हाथों में कीलों के छेद न देख लूँ, और कीलों के छेदों में अपनी उँगली न डाल लूँ, और उसके पंजर में अपना हाथ न डाल लूँ, तब तक मैं विश्वास नहीं करूँगा।" यह कठोर भाषा थी। थोमा ने वास्तव में यीशु के मृत शरीर को देखा था या नहीं, हमें नहीं पता, लेकिन उसके मन में उस शरीर पर लगे भयानक घावों की एक स्पष्ट तस्वीर ज़रूर थी।

थोमा ने जो मांगा वह ठोस सबूत था। अगर दूसरों ने सोचा कि उनकी एकजुट गवाही — "हम ने प्रभु को देखा है" — थोमा को विश्वास दिला देगी, तो वे गलत थे। वह केवल घावों के बारे में सोच सकता था। किसी सभा में प्रभु की उपस्थिति की वास्तविकता के बारे में प्रभु के लोगों की सामूहिक गवाही अनुपस्थित व्यक्ति को विशेष रूप से ठंडा छोड़ देती है। वह इससे बिल्कुल भी आश्वस्त नहीं होता।

जब थोमा ने कहा कि वह अपनी ऊँगली कीलों के छेदों में डालना चाहता है और भाले के घाव में अपना हाथ डालना चाहता है, तो उसने दोनों बार एक ही शब्द का इस्तेमाल किया। शब्द है बालो और इसका आम तौर पर अनुवाद "डालना" होता है। यह एक बलपूर्ण हरकत का संकेत देता है। इस शब्द का इस्तेमाल सैनिकों द्वारा चिट्ठी डालने के लिए किया गया था (19:24)।

"छेद" शब्द भी दिलचस्प है। यह थिस्सलुनीकियों के बारे में पौलुस के शब्द में आता है : "मकिदुनिया और अखया के सब विश्वासियों के लिये तुम आदर्श बने" (1 थिस्सलुनीकियों 1:7)। शब्द है टुपोन। थोमा के लिए कील का छेद जो था, ये थिस्सलुनीकी लोग मसीही जगत के लिए वही थे। उन पर कलवरी के निशान थे। उन्हें दागा गया था, उनके ऊपर क्रूस के निशान थे। संसार के पास हमसे यह कहने का पूरा अधिकार है, "जब तक हम तुम पर क्रूस के निशान नहीं देखते, हम विश्वास नहीं करेंगे।" संसार को हमारे सिद्धांत में कोई दिलचस्पी नहीं है, जीवन के बारे में हमारे विचारों में कोई दिलचस्पी नहीं है, हमारे विश्वास में कोई दिलचस्पी नहीं है। क्या हमारे बारे में ऐसा कुछ है जो उन्हें याद दिलाए कि यीशु मरा और फिर से जी उठा?

थोमा ने कहा, "मैं विश्वास नहीं करूँगा।" यहीं पर लड़ाई शुरू हुई — इच्छाशक्ति के साथ। वह अधिकांश संशयवादियों से अधिक ईमानदार था। अधिकांश अज्ञेयवादी कहते हैं, "मैं विश्वास नहीं कर सकता।" थोमा ने कहा, "मैं विश्वास नहीं करूँगा।" चेलों की सामूहिक गवाही यह थी : "हमने प्रभु को देखा है।" थोमा ने इसे नकार दिया। उसने कहा, "जब तक मैं स्वयं इसका प्रमाण नहीं देख लेता, मैं विश्वास नहीं करूँगा।"

इसके बाद हम थोमा के संदेहों पर हुई चर्चा को देखते हैं (20:26-27)। सबसे पहले बैठक को देखें (20:26क) : "आठ दिन के बाद उसके चेले फिर घर के भीतर थे, और थोमा उनके साथ था।" आठ दिन निश्चित रूप से सम्मिलित हैं। पर्व अब समाप्त हो चुके थे और चेले वापस गलील जाने की तैयारी कर रहे थे। यह शायद जाने से पहले अंतिम बैठक थी। हमें नहीं पता कि चेलों ने इस पूरे सप्ताह क्या किया — वे कहाँ गए, उन्होंने क्या किया, उन्होंने किससे बात की, उन्होंने क्या कहा। एक सप्ताह बाद, उस दिन, नए पुनरुत्थान युग के दूसरे रविवार को, चेले ऊपरी कमरे में वापस आ गए थे। और थोमा ने जो कुछ भी कहा हो, वह इस बार वहाँ था।

अब स्वामी आता है (20:26ख) : "तब यीशु आया और उनके बीच में खड़े होकर कहा, तुम्हें शान्ति मिले।" द्वार पहले की तरह बंद थे, हालाँकि इस बार यहूदियों के किसी डर का कोई संदर्भ नहीं है। जीवित मसीह की वास्तविकता ने इसका ध्यान रखा था। शायद थोमा ने पहले की तरह ही उसी भौतिक व्यवस्था पर जोर दिया।

और फिर, अचानक जी उठा यीशु मसीह कमरे में, बीच में, फिर से उपस्थित हुआ, अपना चिरपरिचित अभिवादन दोहराते हुए, "तुम्हें शांति मिले।"

प्रभु तुरन्त एक संदेश के साथ थोमा की ओर मुड़ा (20:27) : "तब उसने थोमा से कहा, अपनी उँगली यहाँ लाकर मेरे हाथों को देख और अपना हाथ लाकर मेरे पंजर में डाल, और अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो।" "नहीं" का अनुवाद "नहीं बन" के रूप में किया जा सकता है। न तो विश्वास और न ही अविश्वास स्थिर रहता है; दोनों या तो कम हो जाते हैं या बढ़ जाते हैं। थोमा एक कठोर अविश्वासी बनने के खतरे में था।

प्रभु स्पष्ट रूप से जानता था कि थोमा ने पिछले सप्ताह उस कमरे में क्या कहा था। वह उस बातचीत का एक मूक, अदृश्य श्रोता था। प्रभु की सर्वज्ञता ने थोमा पर उतना गहरा प्रभाव डाला जितना कि प्रभु के चमत्कारी प्रकटीकरण के स्पष्ट प्रमाण तथा कीलों से जख्मी हाथों और घायल पंजर के प्रमाण ने डाला था। उस जगह पर मौजूद हर आँख थोमा और प्रभु पर टिकी हुई थी कि आगे क्या होने वाला है। लेकिन थोमा पहले ही कायल हो

चुका था। उसकी आँखों का दृश्य, उसके कानों का प्रमाण, पर्याप्त था। उसे स्पर्श के भाव को जोड़ने की आवश्यकता नहीं थी। वह आश्वस्त था ।

इस प्रकार हमथोमा के संदेहों को दूर होते देखते हैं (20:28-29)। सबसे पहले महान अंगीकरण आता है (20:28) : “यह सुन थोमा ने उत्तर दिया, हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!” यहाँ हमें मसीह के ईश्वरत्व के बारे में पुनरुत्थान के बाद का पहला अंगीकरण मिलता है। उसने कहा, “मेरे प्रभु।” इस बात ने यीशु को उसके हृदय के सिंहासन पर बिठा दिया। उसने कहा, “मेरे परमेश्वर।” इस बात ने यीशु को सृष्टि के सिंहासन पर बिठा दिया।

फिर एक बड़ा विरोधाभास आता है (20:29) : “यीशु ने उससे कहा, तू ने मुझे देखा है, क्या इसलिये विश्वास किया है? धन्य वे हैं जिन्होंने बिना देखे विश्वास किया।” थोमा अपने अविश्वास की अभिव्यक्ति में अधिक मुखर और उग्र रहा होगा, लेकिन वास्तव में उनमें से कोई भी उसकी आलोचना करने की स्थिति में नहीं था। उनमें से किसी ने भी तब तक विश्वास नहीं किया जब तक उन्होंने देख नहीं लिया। यहाँ तक कि प्रिय यूहन्ना, हालाँकि वह कब्र के कपड़ों के दृश्य प्रमाण के द्वारा आश्वस्त होने के कारण दूसरों से आगे था और उसे यीशु के वास्तविक जीवन में प्रकट होने का इंतज़ार करने की जरूरत नहीं थी, फिर भी उसने “देखकर विश्वास किया” (20:8)।

जब तक यूहन्ना ने यह सुसमाचार लिखा, तब तक प्रेरितों का युग समाप्त हो चुका था। प्रभु के प्रत्यक्ष दर्शन बहुत पहले ही समाप्त हो चुके थे। देखने के स्थान पर विश्वास को आना था। “चिह्नरूपी चमत्कार” समाप्त हो चुके थे। तब से ऐसा ही है। प्रभु हमें एक विशेष आशीष प्रदान करता हैं : “धन्य वे हैं जिन्होंने बिना देखे विश्वास किया।”

आज जो लोग चमत्कारों और चिह्नों की लालसा करते हैं, वे प्रभु के तरीके से दूर हैं, क्योंकि इस युग में लोगों का विश्वास केवल परमेश्वर के वचन पर आधारित होना है। जैसा कि पौलुस ने कहा, “विश्वास सुनने से आता है, और सुनना परमेश्वर के वचन से होता है” (रोमियों 10:17)। जो लोग चिह्नों, चमत्कारों और अद्भुत कार्यों पर जोर देते हैं, वे उन्हें पा सकते हैं — एक कीमत चुकाकर। शैतान इस बात के लिए इच्छुक नहीं है। कलीसिया युग के बाद जब परमेश्वर एक बार फिर से इस्राएल राष्ट्र के साथ सीधा व्यवहार करना शुरू कर देगा, तो चिह्न और चमत्कार फिर से शुरू हो जाएँगे। पिन्तेकुस्त योएल 2:28-31 की केवल आंशिक पूर्णता थी। प्रकाशितवाक्य में हम परमेश्वर के “दो गवाहों” को चमत्कार के बाद चमत्कार करते हुए देखते हैं (प्रकाशित 11:3-6)। नकली, शैतानी चमत्कारों द्वारा उनका विरोध किया जाएगा (2 थिस्सलुनीकियों 2:1-10)। वह चमत्कारों का युग होगा। लेकिन कलीसिया का युग विश्वास का है, दृष्टि का नहीं। इसलिए हमारे लिए प्रभु की विशेष आशीष है।

2. यहीं और अभी (20:30-31)

संदेह भी यहीं और अभी समाप्त हो जाते हैं। यूहन्ना प्रभु के आनंद के लिए अपनी प्रेरणापूर्ण टिप्पणी जोड़ता है : “यीशु ने और भी बहुत से चिह्न चेलों के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए; परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।”

यूहन्ना का मन पीछे चला गया। वह बहुत बूढ़ा आदमी था, और बूढ़े लोग सपने देखते हैं। उसे एक के बाद एक चमत्कार याद आने लगे जो उसने यीशु को करते हुए देखे थे — और वे उससे अधिक थे जितने वह गिन सकता था। सुसमाचारों में केवल छत्तीस दर्ज हैं (विश्वास के आधार के रूप में चमत्कारों पर जोर न देने के लिए कुल योग के संबंध में इतने कम), लेकिन यूहन्ना को इनसे कहीं अधिक के बारे में पता था। अपने उस खजाने में से उसने केवल आठ चुने थे — अपने उद्देश्य को पूरा करने में मदद के लिए विशेष चिह्न।

यूहन्ना के समय में मसीह के व्यक्तित्व के विरुद्ध दोहरा हमला हो रहा था। कुछ लोग थे जो उसके मनुष्यत्व को ताक पर रखकर उसके ईश्वरत्व पर जोर दे रहे थे। कुछ लोग थे जो उसके ईश्वरत्व को ताक पर रखकर उसके मनुष्यत्व पर जोर दे रहे थे। उन झूठी शिक्षाओं का मुकाबला करने के लिए यूहन्ना ने दो पुस्तकें लिखीं : अपना सुसमाचार और अपनी पहली पत्री। अपने सुसमाचार में यूहन्ना दिखाता है कि इतिहास का यीशु एक साधारण मनुष्य से बढ़कर था, वह परमेश्वर का पुत्र था (केवल "शारीरिक" के विपरीत)। अपनी पहली पत्री में वह दिखाता है कि परमेश्वर का पुत्र एक सच्चा मनुष्य था (केवल "आत्मिक" के विपरीत)।

थोमा ने अभी-अभी यीशु को परमेश्वर के रूप में स्वीकार किया था — पूर्ण रूप से, बिना किसी शर्त के, निर्विवाद रूप से परमेश्वर। यूहन्ना कहता है, "सच है।" और ऐसे अनगिनत चिह्न हैं कि नासरत का यीशु, मसीह, परमेश्वर का अभिषिक्त, इस्राएल का प्रतिज्ञा किया हुआ मसीहा, और सबका परमेश्वर, सदा के लिए धन्य था। इस बात पर विश्वास करना "उसके नाम से जीवन" पाने का आधार है। यहाँ उसका नाम, "परमेश्वर का पुत्र, मसीह," उसकी दोहरे प्रकृति को प्रकट करता है।

भाग 5. उपसंहार

यूहन्ना 21:1-25

यूहन्ना के सुसमाचार का उपसंहार प्रस्तावना के अनुरूप चलता है। हम एक ही विषय पर बात करते हैं, हम एक ही ध्वज को सलामी देते हैं : जीवन, प्रेम और ज्योति।

I. वही सामर्थी जीवन (21:1-14)

यह उसी सामर्थी जीवन से शुरू होता है। परंतु यहाँ सब कुछ पतरस और पतरस की भयानक विफलता पर केंद्रित है। यह मसीह के पुनरुत्थान की चौथी विशेषता है। यह न केवल मन, हृदय और इच्छा से बात करता है; यह विवेक से भी बात करता है।

A. एक दुस्साहसपूर्ण कदम (21:1-3)

1. स्थान (21:1)

"इन बातों के बाद यीशु ने अपने आप को तिबिरियास झील के किनारे चेलों पर प्रगट किया, और इस रीति से प्रगट किया।" थोमा को दर्शन देने के बाद, ऐसा लगता है कि चेले अपना सामान बांधकर गलील वापस अपने घर चले गए। अखमीरी रोटी का पर्व समाप्त हो चुका था। यरूशलेम में रहने का कोई मतलब नहीं था, जहाँ उनकी उपस्थिति ने अधिकारियों को आगे की कार्रवाई करने के लिए प्रेरित किया, हालाँकि अधिकारियों को खाली कब्र के डरावने तथ्य और पुनरुत्थान की अफवाहों के कारण कुछ समय के लिए शांत कर दिया गया था।

वैसे भी, प्रभु ने पहले ही उनसे कहा था कि वह उनसे गलील में मिलेगा। वे सभी कुछ सप्ताह बाद पिन्तेकुस्त के पर्व के लिए यरूशलेम वापस आएँगे। इस प्रकार हम उन्हें गलील झील के किनारे उनके पुराने परिचित ठिकानों पर पाते हैं।

समय बीतता गया और कुछ नहीं हुआ। पतरस ने एक निर्णय लिया। वह कुछ काम न होने से ऊब चुका था। वह कुछ करने जा रहा था और जो काम वह सबसे अच्छी रीति से जानता था वह था मछली पकड़ना।

2. सहभागी (21:2)

"शमौन पतरस, और थोमा जो दिदुमुस कहलाता है, और गलील के काना नगर का नतनएल, और जब्दी के पुत्र, और उसके चेलों में से दो और जन इकट्ठे थे।" वे सब एक ही मोहल्ले के प्रतीत होते थे ।

बेशक, हमें आश्चर्य है कि बाकी दो कौन थे। नतनएल उनमें से एक था, इसलिए संभव है कि उसका अच्छा दोस्त फिलिप्पुस उनमें से एक था (1:43-51)। पतरस वहाँ था, इसलिए उसका भाई अन्द्रियास दूसरा हो सकता है (1:41)। लेकिन फिर भी सच्चाई यह है कि दो को पवित्र आत्मा द्वारा गुमनाम छोड़ दिया गया है — शायद इसलिए कि आप और मैं नाव में उनकी जगह पर स्वयं को रख सकें!

3. प्रस्ताव (21:3)

"शमौन पतरस ने उनसे कहा, मैं मछली पकड़ने जा रहा हूँ। उन्होंने उससे कहा, हम भी तेरे साथ चलते हैं। अत: वे निकलकर नाव पर चढ़े, परन्तु उस रात कुछ न पकड़ा।" कई साल पहले, पतरस ने "सब कुछ छोड़कर" यीशु का

अनुसरण किया था (लूका 5:11)। कोई बात नहीं। वह फिर से मछली पकड़ने में अपना हाथ आजमाने जा रहा था। यहाँ जिस नाव की बात हो रही है, वह शायद जब्दी के परिवार की रही होगी (मत्ती 4:21)। शायद पतरस पहले से ही फिर से उस व्यवसाय में जाने के बारे में सोच रहा था। अगर ऐसा था, तो उस रात के प्रयासों के परिणाम उत्साहजनक नहीं थे। मछलियाँ पतरस के जाल से बहुत दूर रहीं, और पतरस अपनी सारी कुशलता के बावजूद उन्हें अपने निकट नहीं ला सका। ऐसा कोई भी व्यक्ति जिसने कोशिश की है, जानता है कि घंटों तक मछली पकड़ने और कुछ भी न पकड़ने से अधिक निराशाजनक कुछ भी नहीं हो सकता। प्रभु पतरस को मछली पकड़ने के व्यवसाय में वापस नहीं ला रहा था।

लगभग पंद्रह वर्षों तक पूर्णकालिक मसीही सेवा में रहने के बाद, तो मेरे सामने ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हुईं कि मुझे एक विशेष मसीही संगठन के साथ और आगे सहभागिता रखने से इस्तीफा देना पड़ा। स्थिति सुखद नहीं थी, इसलिए, हतोत्साहित और कुछ हद तक निराश होने के कारण, मैं सांसारिक नौकरी में वापस चला गया। मैंने एक बड़े व्यवसाय के लिए काम किया, जिसका मालिक मेरा एक बहुत अच्छा मित्र था। काम दिलचस्प था, मेरा मित्र बहुत साथ देनेवाला था, उस व्यवसाय में मेरे कुछ अच्छे मित्र थे, मेरा तात्कालिक बॉस मेरा बहुत करीबी मित्र था, वेतन आकर्षक था, संभावनाएँ बड़ी थीं। मैं वहाँ रहकर खुद को यह विश्वास दिलाने की कोशिश कर रहा था कि मैं पूर्णकालिक मसीही कार्य से हमेशा के लिए दूर हो गया हूँ। और मैं बहुत दुखी था। पतरस की तरह मैंने "सारी रात मेहनत की" पर "कुछ न पकड़ा"

एक रात मेरा एक सहकर्मी मेरे पास आया, जब मैं उसके घर के पास की एक स्थानीय कलीसिया में प्रचार कर रहा था। उसने कहा, "अगर मैं इस तरह प्रचार कर सकता, तो मैं निश्चित रूप से ट्रकों की कंपनी के लिए काम करके अपना समय बर्बाद नहीं करता, भले ही उसका मालिक मेरा मित्र ही क्यों न होता।" प्रभु ने मुझे एक साल तक उस नौकरी में कड़ी मेहनत करने की अनुमति दी, जिससे मैं अपने निर्णय से और अधिक असंतुष्ट होता गया। फिर एक दिन मेरा एक मसीही मित्र मुझे दोपहर के भोजन के लिए बाहर ले गया। वह एक सेवानिवृत्त और सफल व्यवसायी, एक बुद्धिमान व्यक्ति था, वह उन कलीसियाओं में से एक में प्राचीन था, जहाँ मैं सप्ताहांत में सेवा करता था। वह इस बारे में स्पष्ट था। उसने मुझसे साफ-साफ कहा, "जॉन, तुम अपना समय बर्बाद कर रहे हो।" मुझे पता था कि वह सही था। एक महीने के भीतर मैं पूर्णकालिक मसीही सेवा में वापस आ गया। प्रभु मेरे सांसारिक कार्य में वापस जाने के निर्णय में उतना ही शामिल नहीं था जितना कि वह पतरस के फिर से मछली पकड़ने को जाने के निर्णय में था।

B. एक धैर्यवान स्वामी (21:4-14)

1. स्वामी की उपस्थिति (21:4-7)

यीशु जानता था कि वे कहाँ थे और वे क्या करने वाले थे। वह जानता था कि पतरस हार मानकर फिर से उसी व्यवसाय में लग जाने के बारे में सोच रहा था और दूसरे लोग भी फिर वैसा ही करेंगे। उसने उन्हें पूरी रात निराशा में बिताने की अनुमति दी। फिर सुबह वह किनारे पर दिखा और वह उनके लिए तैयार था (21:4-6)। "भोर होते ही यीशु किनारे पर आ खड़ा हुआ; तौभी चेलों ने नहीं पहचाना कि यह यीशु है। तब यीशु ने उन से कहा, हे बालको, क्या तुम्हारे पास कुछ मछलियाँ हैं? उन्होंने उत्तर दिया, नहीं।"

निराश चेले नाव को किनारे की ओर खींच रहे थे, तभी झील के शांत जल के पार से एक आवाज़ उन्हें सुनाई दी। दिन निकल रहा था। किनारे पर एक व्यक्ति था। उसने उन्हें "बालको" कहा। यह शब्द पाईडोन है, जो पाइस का

छोटा रूप है, जो शब्द एक बच्चे के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इसका इस्तेमाल कानून में, बेटे या बेटी के लिए किया जाता था; इसका इस्तेमाल लड़के या लड़की की उम्र के संदर्भ में किया जाता था; इसका इस्तेमाल सेवक की स्थिति के संदर्भ में किया जाता था। अतः यह फ्रेंच शब्द गार्सन जैसा था। छोटे शब्द का इस्तेमाल स्नेह के रूप में भी किया जाता था। एफ.एफ. ब्रूस इसका अनुवाद "लड़कों" के रूप में करते हैं।

यूहन्ना याद करता है कि चेलों ने किनारे पर खड़े व्यक्ति को अपने प्रिय प्रभु के रूप में नहीं पहचाना (20:14; लूका 24:31 के साथ तुलना करें)। उन्होंने अजनबी के सवाल का जवाब एक ही शब्द 'नहीं' में दिया।

"उसने उनसे कहा, नाव की दाहिनी ओर जाल डालो तो पाओगे। अत: उन्होंने जाल डाला, और अब मछलियों की बहुतायत के कारण उसे खींच न सके" (21:6)। प्रभु जानता था कि मछलियाँ कहाँ थीं। उन्होंने अपनी विफलता स्वीकार कर ली थी, और इसलिए उन्हें बहुत सारी मछलियाँ दे देना सुरक्षित था। कुछ ही मिनटों में उन्हें हमेशा के लिए ऐसी संभावना से परे कर दिया जाना था कि वे जीवन के पुराने तरीके में वापस जा सकें।

अब वे उसे पहचान गए (21:7)। जब उनका जाल फटने तक भर गया, तो उन्होंने अपने भरे जाल को खींचना शुरू किया। तब यूहन्ना को एहसास हुआ कि किनारे पर खड़ा अजनबी कौन था। शायद उसे कुछ साल पहले इस झील पर एक ऐसा ही अवसर याद आ गया था (लूका 5:1-11)। यह वह अवसर था, जब "वे सब कुछ छोड़कर उसके पीछे हो लिए।"

यूहन्ना के बोलते ही पतरस को उसकी कही बात की सच्चाई समझ में आ गई। "तब उस चेले ने जिससे यीशु प्रेम रखता था, पतरस से कहा, यह तो प्रभु है! शमौन पतरस ने यह सुनकर कि वह प्रभु है, कमर में अंगरखा कस लिया, क्योंकि वह नंगा था, और झील में कूद पड़ा" (21:7)। हमेशा की तरह आवेगपूर्ण, पतरस को याद आया कि वह अपने प्रभु के सामने आने की स्थिति में नहीं था। उसने जल्दी से अपना अंगरखा पकड़ा, अपने चारों ओर लपेटा, और झील में कूद गया। नाव की गति उसके लिए बहुत धीमी थी।

2. स्वामी का प्रबन्ध (21:8-14)

हम पहले देखते हैं कि प्रभु ने उन्हें कैसे शामिल किया (21:8-11)। अन्य चेले पतरस की तुलना में अधिक व्यवस्थित थे : "परन्तु दूसरे चेले डोंगी पर मछलियों से भरा हुआ जाल खींचते हुए आए, क्योंकि वे किनारे से अधिक दूर नहीं, पर कोई दो सौ हाथ पर थे।" वे तट से केवल सौ कदम की दूरी पर थे। हम उस दृश्य की कल्पना कर सकते हैं जब छोटी नाव उथले पानी में आई और अन्य आधा दर्जन चेले किनारे से निकलकर भारी जाल को खींचते हुए किनारे पर आ गए, जिसमें संघर्षरत मछलियाँ निकल रही थीं। यह सब इतना स्वाभाविक था, फिर भी अलौकिकता से भरा हुआ था।

किनारे पर प्रभु ने आग जलाई थी : "जब वे किनारे पर उतरे, तो उन्होंने कोयले की आग और उस पर मछली रखी हुई, और रोटी देखी।" ये पहली चीज़ें थीं जिन्हें पतरस के विवेक की जाँच करने के लिए बनाया गया था। यह लकड़ी के कोयले की आग थी, उसी आग के समान जिस पर पतरस ने उस रात अपने हाथ सेके थे जब उसने प्रभु को अस्वीकार किया था। शब्द वही है, एंथ्राकिया, और नए नियम में केवल इन्हीं स्थानों पर आता है (18:18 के साथ तुलना करें)। मछली और रोटी ने शायद पतरस को उस भोजन की याद दिलाई जो प्रभु ने भीड़ को खिलाने के लिए प्रदान की थी। वह वही प्रभु था, जो अपने लोगों के लिए एक मेज़ लगाने में सक्षम था। लकड़ी के कोयले की आग पर भुननेवाली मछली के लिए इस्तेमाल किया गया शब्द (ऑप्सेरियन) केवल यूहन्ना के सुसमाचार में पाया

जाता है। यूहन्ना ने इसका इस्तेमाल पाँच हज़ार लोगों को भोजन खिलाने में इस्तेमाल की गई दो मछलियों का वर्णन करने के लिए किया (6:9, 11)।

इससे पहले कि कुछ और किया जा सके, प्रभु ने उन्हें पकड़ी गई मछलियों में से कुछ लाने का आदेश दिया : "यीशु ने उनसे कहा, जो मछलियाँ तुम ने अभी पकड़ी हैं, उनमें से कुछ लाओ। तो शमौन पतरस ने डोंगी पर चढ़कर एक सौ तिरपन बड़ी मछलियों से भरा हुआ जाल किनारे पर खींचा, और इतनी मछलियाँ होने पर भी जाल न फटा" (21:10-11)। पतरस, जो उठकर काम करने में प्रसन्न था, जल्दी से वहाँ गया जहाँ अन्य लोगों ने जाल को पानी में ही छोड़ दिया था, और अकेले ही उसे खींचकर अंदर ले आया, जो उसके शारीरिक बल को दर्शाता है। पतरस कोई कमज़ोर व्यक्ति नहीं था। न फटे जाल में उसके लिए भी एक संदेश था, जो पहले की विफलता का था (लूका 5:4-6)। 153 मछलियों के महत्व को समझाने के लिए कई तरह के सुझाव दिए गए हैं। यह संभवतः सुसमाचार के आगोश में आईं और सुरक्षित रूप से किनारे पर लाई गईं मछलियों की, आखिरी मछली तक की पूर्णता का प्रतीक है। एक सरल दृष्टिकोण (जिसे एलेक्जेंड्रिया के सिरिल से जोड़ा जाता है) संख्या को इसके तीन सरल तत्वों (100 + 50 + 3) में विभाजित करता है। कहा जाता है कि संख्या 100 गैर-यहूदियों (10 x 10) की पूर्णता को दर्शाती है, इस संख्या का प्रयोग प्रभु के झुंड का वर्णन करने के लिए किया जाता है (मत्ती 18:12); संख्या 50 को चुनाव के अनुसार इस्राएल के बचे हुए लोगों को दर्शाने के रूप में माना जाता है; संख्या 3 को त्रिएकता का दर्शाने के लिए किया जाता है जिनकी महिमा के लिए सभी एकत्र होते हैं। परंतु यह संख्या केवल उस सावधानी का संकेत है जिसके साथ चेलों ने अपनी पकड़ी गई मछलियों को गिना था। संभवतः इसका बाजार मूल्य काफी था। मछलियों की सटीक संख्या पाने के बाद, वे इसे आपस में बराबर-बराबर बाँटने में सक्षम थे।

फिर हम देखते हैं कि प्रभु ने उन्हें कैसे आमंत्रित किया (21:12क) : "यीशु ने उनसे कहा, आओ, भोजन करो।" जहाँ तक यूहन्ना का सवाल है, यह सब ठीक इसी तरह से शुरू हुआ था, ठीक इसी झील के पास। वह और अन्द्रियास बपतिस्मा देनेवाले यूहन्ना की बात सुन रहे थे, जिसने उन्हें यीशु के बारे में बताया था। वे यूहन्ना को छोड़कर यीशु के पीछे हो लिए थे। उन्होंने उससे उसके बारे में पूछा था कि वह कहाँ रहता है। उसने कहा था, "आओ और देखो" (1:35-39)। अब उसने कहा, "आओ, भोजन करो।" इस बीच जो कुछ भी हुआ, उसके बारे में अनगिनत किताबें लिखी जा सकती हैं।

"आओ!" यह सुसमाचार में सबसे भव्य शब्द है। परमेश्वर ने पहली बार उत्पत्ति में इस शब्द का इस्तेमाल किया, और नूह को जहाज़ में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया (उत्पत्ति 7:11)। वह इसी शब्द का इस्तेमाल करता रहता है और इसका दो बार इस्तेमाल करके बाइबल को समाप्त करता है (प्रकाशितवाक्य 22:17)। यह दूरी को खत्म करता है। यह पवित्र और पापी दोनों को उसके पास लाता है जो पाप और उदासी को दूर करता है और उनकी जगह खुशी और आनंद लाता है।

उसने उनकी ज़रूरतों का अनुमान लगाया था और उनके लिए इंतजाम किया था। शाब्दिक रूप से उसने कहा, "आओ और नाश्ता करो।" "भोजन करो" के लिए शब्द अरिस्टाओ है, जो सुबह के भोजन को दर्शाता है। नए नियम में यह केवल लूका 11:37 में ही एक और बार आता है।

हम यह भी देखते हैं कि प्रभु ने उन्हें कैसे डराया (21:12ख-14)। "चेलों में से किसी को साहस न हुआ कि उससे पूछे, तू कौन है?" क्योंकि वे जानते थे कि यह प्रभु ही है" (21:12ख)। ऐसा लगता है कि प्रभु उनसे कुछ दूरी पर खड़ा था। हालाँकि वे जानते थे कि वह प्रभु ही है, फिर भी वे पीछे हट गए। वे उससे विस्मित थे। वे उसे जानते थे,

लेकिन वे उसे नहीं जानते थे, ऐसा कहा जा सकता है। उन्हें लगा कि उन्हें उससे पूछना चाहिए कि वह कौन है, लेकिन वे पहले से ही जानते थे कि वह कौन है। वह वही था — लेकिन वह अलग था। वे उससे प्यार करते थे, लेकिन अब उससे पुराने दिनों की तरह परिचित नहीं हो सकते थे। पहले, वे हमेशा उसके ईश्वरत्व की तुलना में उसके मनुष्यत्व के बारे में अधिक जागरूक थे। अब वे उसके मनुष्यत्व की तुलना में उसके ईश्वरत्व के बारे में अधिक सचेत थे।

लेकिन ऐसा कभी नहीं होगा। प्रभु ने पहल की : "यीशु आया और रोटी लेकर उन्हें दी, और वैसे ही मछली भी।" (21:13)। उस संस्कृति में किसी के यहाँ भोजन करने से मित्रता का रिश्ता बनता था। यूहन्ना ने लिखा : "यह तीसरी बार है कि यीशु मरे हुओं में से जी उठने के बाद चेलों को दिखाई दिया" (21:14)। ऐसा लगता है कि यूहन्ना के मन में चेलों के समूह के सामने प्रभु के प्रकट होने की बात है ।

इस महत्वपूर्ण घटना में अब तक जो कुछ भी हुआ, वह मंच तैयार करने के लिए था। प्रभु को अब सीधे पतरस के विवेक से बात करनी थी। उसने पहले ही कोयले की आग जलाकर उस विवेक को जगा दिया था। यह एक बहुत आम बात थी, एक साधारण, रोज़मर्रा की बात, लेकिन इसने दर्दनाक यादें जगा दी होंगी।

हम जानते हैं कि यह कैसा है। एक बार एक जगह थी, जहाँ कुछ हुआ था, जिसके लिए हम अब शर्मिंदा हैं, जिसका हमें पूरे हृदय से पछतावा है, जिसे पहले जैसा करने के लिए हम कुछ भी देने को तैयार हैं। हम चाहते हैं कि हम वापस जाकर उस घटना को फिर से जी सकें, बस इस बार इसे अलग तरीके से करें। हम उस जगह से बचते हैं। इसे देखने से विवेक की पीड़ा जाग उठती है। फिर भी, यह हमें सताती है। हम यादों को मिटा नहीं सकते। और अगर हम उस जगह से गुज़रते हैं, तो हमारा पश्चाताप फिर से जाग उठता है। या हो सकता है कि जो चीज़ विवेक को जगाती है वह कोई जगह नहीं बल्कि कोई चीज़ है, या कोई आवाज़, या कोई तस्वीर, कोई भूला हुआ पत्र, कोई संयोगवश मुलाकात।

पतरस को उसके विवेक ने सताया था। मुझे अपने विवेक ने सताया है, आपको आपके विवेक ने। यहाँ प्रभु विवेक और उसके पीड़ादायक डंक से निपटता है। हमारे लिए उस दूरी पर पुकारना बेकार है जो अब हमें हमारे पाप के उस दृश्य से अलग करती है और उसके होने के बाद के कई सालों में : "मुझे खेद है! मुझे माफ़ कर दो! इस पाप को मेरे ऊपर मत लगाओ!" पीड़ित पक्ष सुन नहीं सकता। जिस व्यक्ति के साथ इतना बुरा हुआ है वह मर चुका होगा, या निश्चित रूप से हमारे लिए मर चुका होगा। काश ऐसा न होता। यहाँ महान चिकित्सक हमें दिखाता है कि वह विवेक से कैसे निपटता है, कैसे वह हमारे अतीत की लगातार आनेवाली बुरी यादों को भी शांत करता है।

II. वही दृढ़ प्रेम (21:15-17)

A. पतरस की असफलता को याद करना (21:15)

"भोजन करने के बाद यीशु ने शमौन पतरस से कहा, हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू इन से बढ़कर मुझ से प्रेम रखता है? उसने उससे कहा, हाँ, प्रभु; तू तो जानता है कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूँ।"

1. पुराना नाम (21:15क)

प्रभु ने पतरस के उस नाम का इस्तेमाल किया जो उसका उद्धार पाने से पहले, उद्धारकर्ता से मिलने से पहले था : शमौन, यूहन्ना का पुत्र। विश्वासघात की रात को, पतरस ने झूठ बोला था और यहाँ तक कि अपने पुराने स्वभाव की असभ्य भाषा का भी इस्तेमाल किया था। इसलिए यीशु ने उसे उसके पुराने नाम से पुकारा।

इससे पतरस के विवेक को ठेस पहुँची। जब पतरस पहली बार प्रभु से मिला था, तो यीशु ने उससे कहा था : "तू यूहन्ना का पुत्र शमौन है : तू कैफा अर्थात् पतरस कहलाएगा" (1:42)। जब पतरस ने अपना बड़ा अंगीकरण किया, तो प्रभु ने इसकी फिर से पुष्टि की थी : "हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है... और मैं भी तुझ से कहता हूँ कि तू पतरस है" (मत्ती 16:17-18)। लेकिन अब उसके प्रभु पुराने नाम पर वापस चला गया और इसे वहीं छोड़ दिया। अपराध की गंभीरता को कम करना या उस पुराने बुरे स्वभाव में स्रोत को छिपाना, जहाँ से यह आया था, दोषी विवेक को ठीक करने का कोई हिस्सा नहीं है। अपराध की गंभीरता को कम करना, या उस पुराने बुरे स्वभाव में उसके स्रोत को छिपाना, जहाँ से वह आया था, दोषी विवेक को ठीक करने का कोई हिस्सा नहीं है।

"क्या तू इन से बढ़कर मुझ से प्रेम रखता है?" प्रभु का शब्द था अगापाओ, जो सर्वोच्च प्रकार के प्रेम को दर्शाता है, यह परमेश्वर के प्रेम के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है , वह प्रेम जो उदात्त, आत्मिक, शुद्ध है। यह निश्चित नहीं है कि यीशु का "इन से बढ़कर" से क्या मतलब था। क्या पतरस मछलियों से अधिक यीशु से प्रेम करता था? आखिरकार, उसने पहल की थी, उसने दूसरों को मछली पकड़ने के व्यवसाय में वापस जाने के लिए प्रभावित किया था। यदि वह मछलियों से संतुष्ट होना चाहता था, तो ठीक है, वे बहुत सी थीं। पतरस जाकर उन्हें बेच सकता था और व्यवसाय में अच्छी शुरुआत कर सकता था।

अधिक संभावना है कि "इन से बढ़कर" का अर्थ चेलों से है। पतरस ने दावा किया था, "यदि सब तेरे विषय में ठोकर खाएँ तो खाएँ, परन्तु मैं कभी भी ठोकर न खाऊँगा... यदि मुझे तेरे साथ मरना भी पड़े, तौभी मैं तुझसे कभी न मुकरूँगा" (मत्ती 26:33, 35)। उसने यह बात प्रभु की इस भविष्यवाणी के सामने कही कि वह तीन बार उसका इनकार करेगा (मत्ती 26:34)। "पतरस, क्या तू इन अन्य चेलों से अधिक प्रेम मुझसे करता है?" क्या प्रभु का यह अर्थ था? जैसा भी हो, प्रभु पतरस के विवेक को जाँच रहा था।

2. पुराना दावा (21:15ख)

पतरस का उत्तर तुरंत आया, लेकिन सावधानीपूर्वक "हाँ, प्रभु; तू तो जानता है कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूँ।" पतरस ने फिलियो शब्द का इस्तेमाल किया, जिसका अर्थ है भाईचारे का प्रेम। पतरस ने कहा, "तू जानता है प्रभु, मुझे तुझसे से गहरा लगाव है।"

"उसने उससे कहा, मेरे मेमनों को चरा।" "मेमनों" के लिए शब्द अर्नियन है, जो एक छोटा शब्द है। यह केवल यहाँ और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में आता है, जहाँ इसका उपयोग मसीह के लिए अट्ठाईस बार किया गया है। "मेमने" के लिए दूसरा शब्द केवल मसीह के लिए उपयोग किया जाता है (1:29, 36; प्रेरितों के काम 8:32; 1 पतरस 1:19)। प्रभु ने पतरस के प्रेम के सच्चे अंगीकार को स्वीकार किया और उसे एक बार और हमेशा के लिए सांसारिक से आत्मिक, मछली पकड़ने के व्यवसाय से परमेश्वर के मेमनों के चरवाहे के काम की ओर निर्देशित किया।

B. पतरस का जोश फिर से जगाना (21:16-17)

प्रभु ने अपना प्रश्न दोहराया। पतरस ने प्रेम के लिए एक कमजोर शब्द इस्तेमाल किया था। प्रभु ने पतरस से वही प्रश्न पूछा। वह उसे ऊँचाई पर उठाना चाहता था।

1. क्या तू मुझसे ज्वलंत प्रेम करता है? (12:16)

हम पढ़ते हैं : "उसने फिर दूसरी बार उससे कहा, हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझ से प्रेम रखता है? उसने उससे कहा, हाँ, प्रभु; तू जानता है कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूँ। उसने उससे कहा, मेरी भेड़ों की रखवाली कर।" इस बार यीशु ने पतरस से अपने प्रेम को तुलनात्मक रूप से ("इन से बढ़कर") बताने को नहीं कहा, चाहे वह उसके व्यवसाय या उसके भाइयों के संदर्भ में हो। उसने उससे अपने प्रेम को पूरी तरह से बताने को कहा। "क्या तू मुझ से प्रेम रखता है?" पतरस ने पहले की तरह ही उत्तर दिया। "प्रभु; तू जानता है कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूँ।"

प्रभु ने उत्तर दिया, "मेरी भेड़ों की रखवाली कर।" इस बार उसने एक अलग शब्दों का इस्तेमाल किया। पहली बार शब्द बोस्को था, जिसमें झुंड को भोजन प्रदान करने का विचार है (21:15)। इस बार शब्द पोइमाइनो है, जिसका अर्थ है झुंड की "देखभाल करना" या "चरवाही करना"। "भेड़ों" के लिए शब्द प्रोबेटिया है। उसने पतरस के आदेश में जोड़ा। मेमनों को खिलाने की जरूरत है : भेड़ों को अगुवाई की जरूरत है।

2. क्या तू मुझसे भाईचारे की प्रीति रखता है? (21:17)

क्योंकि पतरस ने दो बार भाईचारे की प्रीति वाले शब्द का इस्तेमाल किया था, इसलिए प्रभु ने सवाल बदल दिया। उसने उससे पूछा, "क्या तू मुझ से प्रीति रखता है?" हम पढ़ते हैं : "उसने तीसरी बार उससे कहा, हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझ से प्रीति रखता है? पतरस उदास हुआ कि उसने उससे तीसरी बार ऐसा कहा, क्या तू मुझ से प्रीति रखता है? और उससे कहा, हे प्रभु, तू तो सब कुछ जानता है; तू यह जानता है कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूँ" (21:17)। इस बार यीशु ने पतरस के ही शब्द का इस्तेमाल किया था। उसने कहा, "क्या तेरा मुझसे व्यक्तिगत लगाव है?" इससे पतरस पूरी तरह टूट गया।

त्रिरूपी प्रश्न त्रिरूपी इनकार आता है। पतरस ने जब तीसरी बार प्रभु को अस्वीकार किया था, तब वह बहुत उग्र था; अब वह काफी भावुक है। "तू जानता है कि मैं तुझसे व्यक्तिगत लगाव रखता हूँ। तू मुझे पूरी तरह से जानता है। तू सब कुछ जानता है। तू जानता है कि मैंने क्या कहा और क्या किया और मैं क्या हूँ। तू मुझे मुझसे बेहतर जानता है। प्रभु, मेरे बारे में तेरे सारे ज्ञान से तू जानता है कि मैं तुझसे भाईचारे का प्रेम रखता हूँ। आप जानते हैं कि मैं तुझसे प्रीति रखता हूँ (फिलियो) और मैं जानता हूँ कि मैं तुझसे कभी वैसा प्रेम नहीं रख सकता जैसा प्रेम तू मुझसे रखता है (अगापे)।" यह एक ऐसे व्यक्ति का अंगीकरण था जिसे उसके विवेक ने पस्त कर दिया था और जो अब प्रभु के सामने टूटा हुआ, अपनी कमज़ोरी से परिचित, अपनी सीमाओं के प्रति संवेदनशील, और फिर कभी घमंड करने से सहमा हुआ खड़ा था।

यीशु ने कहा, "मेरी भेड़ों को चरा।" इस बार "चरा" के लिए शब्द बोस्को है, वही जो मेमनों के लिए इस्तेमाल किया गया शब्द है (21:15)। भेड़ों को न केवल अगुवाई करने की आवश्यकता है, बल्कि उन्हें खिलाने की भी आवश्यकता है। इसलिए पतरस को एक उप-चरवाहे के पद पर नियुक्त किया गया, जो अब परमेश्वर के झुंड की देखभाल करने के अपनी बुलाहट के बारे में जागरूक था। परमेश्वर के झुंड को दो चीजों की आवश्यकता होती है : अच्छी रखवाली और अनुग्रहपूर्ण चरवाही। अब से पतरस को ये दोनों प्रदान करना था। उसने अपने कर्तव्य को कैसे पूरा किया, यह हम प्रेरितों के काम की पुस्तक और उसकी दो पत्रियों से सीखते हैं।

III. वही विवेकशील ज्योति (21:18-25)

A. प्रकाशन का वचन (21:18-19)

अब उपसंहार के अंतिम शब्द आते हैं : "मैं तुझ से सच सच कहता हूँ, जब तू जवान था तो अपनी कमर बाँधकर जहाँ चाहता था वहाँ फिरता था; परन्तु जब तू बूढ़ा होगा तो अपने हाथ फैलाएगा, और दूसरा तेरी कमर बाँधकर जहाँ तू न चाहेगा वहाँ तुझे ले जाएगा। उसने इन बातों से संकेत दिया कि पतरस कैसी मृत्यु से परमेश्वर की महिमा करेगा।"

"जवान" के रूप में अनूदित शब्द नियोटेरोस है, जिसका शाब्दिक अर्थ है "कम आयु का।" यूहन्ना 20:4 के साथ मिलाकर देखें तो यह पद दर्शाता है कि पतरस एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति था। जब यूहन्ना ने ये वचन लिखे, तब तक पतरस नीरो का शिकार और विश्वास के लिए शहीद होकर मर चुका था। उसे मेघारोहण के समय उठाए जाने की कोई धन्य आशा नहीं थी। पौलुस को आखिर में पता था कि उसे शहीद ही होना था (2 तीमुथियुस 4:6), लेकिन पतरस ने अपना शेष जीवन क्रूस की छाया में बिताया। प्रभु ने पतरस से वादा किया था कि अपनी पिछली गलतियों और कमियों के बावजूद, वह अपनी मृत्यु में परमेश्वर की महिमा करेगा।

प्रभु ने एक चुनौती भी दी, "मेरे पीछे हो ले।" प्रभु उनके आगे गया था। उसने लज्जा की परवाह न करते हुए, अपने सामने रखे आनंद के लिए क्रूस को सहा था। उसने कहा, "पतरस, बस मेरे पीछे हो ले।"

B. डांट का शब्द (21:20-23)

"पतरस ने मुड़कर उस चेले को पीछे आते देखा, जिससे यीशु प्रेम रखता था, और जिसने भोजन के समय उसकी छाती की ओर झुककर पूछा था, हे प्रभु, तेरा पकड़वानेवाला कौन है? उसे देखकर पतरस ने यीशु से कहा, हे प्रभु, इसका क्या हाल होगा? यीशु ने उससे कहा, यदि मैं चाहूँ कि वह मेरे आने तक ठहरा रहे, तो तुझे इससे क्या? तू मेरे पीछे हो ले" (21:20-22)। हो सकता है कि प्रभु और पतरस झील के किनारे टहलने गए हों, जिससे पतरस के साथ उपरोक्त बातचीत निजी हो। यदि ऐसा है, तो इस समय वे समूह में फिर से शामिल होने के लिए वापस मुड़े होंगे। ऐसा लगता है कि यूहन्ना समूह से अलग हो गया था और पतरस और प्रभु के पीछे आ रहा था। अतः, जब वे वापस जाने को मुड़े, तो पतरस ने यूहन्ना को देखा।

यूहन्ना ने खुद का वर्णन हमेशा की तरह किया और यह भी कहा कि वह वही था जो "भोजन के समय उसकी छाती की ओर झुककर" बैठा था, यह ऊपरी कमरे में उस समय का संदर्भ है जब पतरस ने यूहन्ना को इशारा किया था कि वह यीशु से पकड़वाने वाले का नाम पूछे। आश्चर्य होता है कि यूहन्ना ने इस घटना का परिचय यहाँ क्यों दिया। क्या ऐसा हो सकता है कि पतरस, शायद थोड़ा ही, या अनजाने में, यूहन्ना की यीशु के साथ खास निकटता से ईर्ष्या करता था? क्या इसीलिए पतरस ने यूहन्ना के भविष्य के बारे में यह सवाल पूछा?

प्रभु ने उसे अपने काम से मतलब रखने को कहा। यदि पतरस को मेघारोहण के समय जीवित रहने की कोई "धन्य आशा" नहीं रखनी थी, तो यह उसके लिए प्रभु की इच्छा थी। यदि यूहन्ना मेघारोहण के समय तक जीवित रहे, तो इससे पतरस का कोई सरोकार नहीं था। किसी और के भविष्य में झाँकने की परवाह किए बिना ही पतरस प्रभु का अनुसरण करके ही अपना सब कुछ कर सकता था।

इस घटना से एक अफवाह फैल गई : "इसलिये भाइयों में यह बात फैल गई कि वह चेला न मरेगा; तौभी यीशु ने उससे यह नहीं कहा कि वह न मरेगा, परन्तु यह कि यदि मैं चाहूँ कि वह मेरे आने तक ठहरा रहे, तो तुझे इससे क्या?" यह असाधारण है कि कैसे अफवाहें शुरू होती हैं, कैसे वे रंग बदलती हैं, और कितनी गहरी जड़ें जमाती हैं। जल्द ही यह बात फैल गई कि यूहन्ना मरेगा नहीं, हालाँकि यीशु ने ऐसा नहीं कहा था।

जब यूहन्ना ने यह सुसमाचार लिखा, तब आधी सदी से भी ज़्यादा समय बीत चुका था और वह अफ़वाह अब तक फ़ैल रही थी। यूहन्ना की बड़ी उम्र ने निस्संदेह इसे और भी विश्वसनीय बना दिया। इफिसुस में उसकी मृत्यु और गाड़े जाने के बाद भी यह कहानी बनी रही (यह दावा किया गया कि यूहन्ना अब भी अपनी कब्र में जीवित था)।

C. पुनः आश्वासन का वचन (21:24-25)

सुसमाचार दो गवाही के वचनों के साथ समाप्त होता है।

1. यूहन्ना के कथनों की त्रुटिरहितता (21:24)

"यह वही चेला है जो इन बातों की गवाही देता है और जिसने इन बातों को लिखा है, और हम जानते हैं कि उसकी गवाही सच्ची है" (21:24)। यूहन्ना एक विश्वसनीय गवाह था। वह यीशु की सार्वजनिक सेवा की शुरुआत से ही उसके साथ था। वह उसके करीब था। उसके चचेरे भाई के रूप में, वह उसे सालों से जानता था। वह शुरू से अंत तक एक विश्वासयोग्य चेला था, मानव शरीर में परमेश्वर के प्रकट होने के शानदार कार्य का प्रत्यक्षदर्शी था। उसने यीशु के गहरे कथनों को अपनी गहरी स्मृति में संजोकर रखा था। वह कलीसिया की शुरुआत में शामिल था, इसकी प्रगति के साथ-साथ रहा था, इसके कारण उसने दुःख उठाया था, इसके सिद्धांतों को मजबूत किया था। वह इसके लगभग सभी प्रमुख किरदारों को जानता था। उसने अपने आधे से अधिक जीवन में इस कहानी पर बहुत विचार किया था। अब एक परिपक्व विश्वासी के रूप में उसकी याददाश्त तेज हो गई और उसकी कलम ने आत्मा की अगुवाई पाई, उसने एक सुसमाचार लिखने का बीड़ा उठाया। यह सच था। उसने जो लिखा वह त्रुटिरहित था, "परमेश्वर की प्रेरणा" से रचे पवित्रशास्त्र का हिस्सा था जिसका परम लेखक पवित्र आत्मा था (2 तीमुथियुस 3:16)।

2. यीशु की कहानी की व्यापकता (21:25)

"और भी बहुत से काम हैं, जो यीशु ने किए; यदि वे एक एक करके लिखे जाते, तो मैं समझता हूँ कि पुस्तकें जो लिखी जातीं वे संसार में भी न समातीं।" एक बूढ़े व्यक्ति की याददाश्त बहुत अच्छी होती है। निस्संदेह यूहन्ना ने मत्ती का राजकीय मसीहा का विवरण, मरकुस का परमेश्वर के सिद्ध सेवक का विवरण, और लूका का यीशु के महिमामय मनुष्यत्व का अच्छी तरह से शोध किया हुआ सुसमाचार पढ़ रखा होगा। जो कुछ भी लिखा गया था, उसका कुल योग उस महिमामय जीवन का एक अंशमात्र था।

जब शेबा की रानी सुलैमान से मिलने आई तो वह उसकी बुद्धि और धन-संपदा को देखकर अभिभूत हो गई। उसने कहा, "इसका आधा भी मुझे न बताया गया था।" कलम हाथ में लिए हुए यूहन्ना ने चकित होकर कहा, उस जीवन के बारे में लिखी जा सकने वाली सारी पुस्तकें संसार में समा नहीं सकतीं। यीशु के मानवीय जीवन का पूरा विवरण, यदि कोई इसे लिख भी पाए, तो भी असीमित होगा।

हमारे पास आनंद के साथ आगे देखने के लिए बहुत कुछ है। जब हम स्वर्ग पहुँचेंगे और अपनी पुनरुत्थान की देहों को प्राप्त करेंगे, जब हम उसे वैसे देखेंगे जैसा वह है, उसके चरणों में बैठेंगे और उसकी आवाज़ को सुनेंगे, जब हम

आमने-सामने वैसे ही जानेंगे जैसे हम पहचाने गए हैं (1 कुरिन्थियों 13:12), तब हम उससे कहेंगे, “प्रभु, इसका आधा भी मुझे न बताया गया था।”

शायद, तब वह हमें कहानी का बाकी हिस्सा बताएगा।

संपूर्ण रूपरेखा

भाग 1. प्रस्तावना (यूहन्ना 1:1-18)

1. सार रूप में ईश्वरीय जीवन (1:1-5)
    1. प्रभु का अवर्णनीय व्यक्तित्व (1:1-2)
        1. यीशु अनन्त काल का परमेश्वर है (1:1क)
        2. यीशु समान रूप से परमेश्वर है (1:1ख)
        3. यीशु मूलतः परमेश्वर है (1:1ग-2)
    2. प्रभु का अनन्त सामर्थ्य (1:3-5)
       निम्न बातों में यीशु के जैसा कोई नहीं है :
        1. सृष्टि की रचना की उसकी सामर्थ्य (1:3)
        2. सम्प्रेषण की उसकी सामर्थ्य (1:4-5)
            1. जीवन की बातें करना (1:4)
            2. ज्योति की बातें करना (1:5)
2. प्रमाण में ईश्वरीय ज्योति (1:6-13)
    1. गवाही और ज्योति (1:6-8)
        1. संदेशवाहक (1:6)
        2. उद्देश्य (1:7)
        3. विधि (1:8)
    2. जगत और ज्योति (1:9-13)
        1. ज्योति प्रकट हुई (1:9)
        2. ज्योति का विरोध (1:10-11)
            1. उसके अपने बनाए लोगों द्वारा (1:10)
            2. उसके अपने ही देशवासियों द्वारा (1:11)
        3. ज्योति को ग्रहण किया गया (1:12-13)

            1. परमेश्वर की सन्तान का आत्मिक जन्म (1:12)
            2. परमेश्वर के मसीह का अलौकिक जन्म (1:13)
                1. मनुष्य के वंश से नहीं (1:13क)
                2. मनुष्य की इच्छा से नहीं (1:13ख)
                3. मनुष्य की रीति से नहीं (1:13ग)
3. अनुभव में ईश्वरीय प्रेम (1:14-18)
    1. देहधारण (1:14)
    2. पहचान (1:15)
        1. उसका व्यक्तित्व (1:15क)
        2. उसकी श्रेष्ठता (1:15ख)
        3. उसका पूर्व-अस्तित्व (1:15ग)
    3. प्रशंसनीय दावा (1:16)
    4. अनुप्रयोग (1:17)
    5. प्रकाशन (1:18)

भाग 2. परमेश्वर के पुत्र के चिह्न (यूहन्ना 1:19-12:50)

खंड 1. उसका ईश्वरत्व प्रकट हुआ (1:19-4:54)

1. यूहन्ना की गवाही (__यूहन्ना__1:19-51)
    1. उसकी गवाही की विश्वासयोग्यता (1:19-34)
        1. प्रश्न पूछे गए (1:19-28)
            1. यूहन्ना की पहचान के बारे में (1:19-23)
                1. धर्म के अगुवे (1:19)
                2. इनकार (1:20-21)
                3. माँग (1:22-23)
            2. यूहन्ना की विचारधारा के बारे में (1:24-28)
                1. फरीसी उसके बपतिस्मा पर हमला करते हैं (1:24-25)
                2. उनके अंधेपन पर यूहन्ना का हमला (1:26-28)
        2. प्रश्नों के उत्तर दिए गए (1:29-34)
            1. यीशु का आगमन (1:29क)

        2. यूहन्ना की घोषणा (__यूहन्ना__1:29ख-34)
            1. एक प्रचार (1:29ख-30)
            2. एक समस्या (1:31-34)
                1. समस्या बताई गई (1:31)
                2. समस्या का समाधान (1:32-34)
    2. उसकी गवाही की फलदायकता (1:35-51)
        1. यूहन्ना के चेलों पर नजर (1:35-39)
            1. वे प्रभु से कैसे मिले (1:35-37)
            2. वे कैसे प्रभु के पीछे चलने लगे (1:38-39)
        2. यीशु के चेलों पर नजर (1:40-51)
            1. कैसे पतरस यीशु की ओर आकर्षित हुआ (1:40-42)
            2. कैसे यीशु ने फिलिप्पुस को खोजा (1:43-51)
                1. फिलिप्पुस की बुलाहट (1:43-44)
                2. फिलिप्पुस की चिंता (1:45-51)
                    1. नतनएल का परिचय यीशु से कराया गया (1:45-46)
                    2. नतनएल की यीशु में रुचि थी (1:47-48)
                    3. नतनएल यीशु से प्रेरित था (1:49-51)
                        1. मसीह के विषय में उसका अंगीकार (1:49)
                        2. मसीह के विषय में उसकी समझ (1:50-51)
2. यीशु का विजयी होना (2:1-4:54)
    1. विवाह में दाखरस (2:1-12)
    जीवन में अचानक आई निराशाओं पर जय पाना
        1. यीशु और विवाह (2:1-2)
        2. यीशु और उसकी माता (2:3-5)
            1. मानवजाति की समस्या (2:3क)
            2. मरियम का प्रस्ताव (2:3ख)
            3. मसीह का विशेषाधिकार (2:4-5)
        3. यीशु और आश्चर्यकर्म (2:6-11)

        1. उसका प्रारम्भिक उद्देश्य (2:6-10)
        2. इसका प्राथमिक उद्देश्य (2:11)
    4. यीशु और उसका आगे बढ़ना (2:12)
2. मंदिर और वहाँ की भीड़ (2:13-25)
   सांसारिक मूल्यों की गिरावट पर जीत
    1. यीशु और भवन (2:13-17)
    2. यीशु और उसकी देह (2:18-22)
    3. यीशु और विश्वास करनेवाले (2:23-25)
        1. विश्वास की नींव (2:23)
        2. विश्वास में दोष (2:24-25)
3. नीकुदेमुस के साथ रात को भेंट (3:1-21)
   जीवन के आत्मिक अविश्वास पर जय पाना
    1. संसार की सबसे बड़ी त्रासदी (3:1-10)
        1. नीकुदेमुस और उसका विश्वास (3:1-2)
        2. नीकुदेमुस और उसका अंधापन (3:3-8)
            1. उस पर नए जन्म की आवश्यकता व्यक्त की गई (3:3-5)
            2. उसे नए जन्म की आवश्यकता समझाई गई (3:6-8)
                1. अलग-अलग संसार (3:6-7)
                2. अलग-अलग हवाएँ (3:8)
        3. नीकुदेमुस और उसकी घबराहट (3:9-10)
    2. संसार की महान सच्चाइयाँ (3:11-15)
        1. उद्धार का रहस्य (3:11-12)
            1. महान सत्य प्रकट किए गए (3:11)
            2. महान विश्वास की आवश्यकता है (3:12)
        2. उद्धार का स्त्रोत (3:13)
        3. उद्धार की सरलता (3:14-15)
    3. संसार का सबसे महान पद (3:16)
    4. संसार की सबसे बड़ी परख (3:17-21)

        1. यीशु क्यों आया (3:17)
        2. यीशु किसे दंड की आज्ञा देता है (3:18-19)
        3. यीशु किस्से तुलना करता है (3:20-21)
            1. जो ज्योति से बैर रखते हैं (3:20)
            2. जो ज्योति से प्रेम रखते हैं (3:21)

4. यहूदी और यूहन्ना (__यूहन्ना__3:22-36)
   जीवन में दुःख से उत्पन्न चिंताओं पर जीत
    1. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की गवाही (3:22-30)
        1. यूहन्ना और उसका बपतिस्मा (3:22-27)
            1. यीशु का बपतिस्मा (3:22)
            2. यूहन्ना का बपतिस्मा (__यूहन्ना__3:23-24)
        2. यूहन्ना और दूल्हा (3:28-30)
            1. सकारात्मक इनकार (3:28)
            2. व्यक्तिगत प्रसन्नता (3:29)
            3. प्रमुख इच्छा (3:30)
    2. प्रिय यूहन्ना की गवाही (3:31-36)
        1. परमेश्वर की गवाही (3:31-33)
            1. पर्याप्त रूप से बताई गई (3:31)
            2. वास्तव में इस पर विश्वास नहीं किया गया (3:32)
            3. सचमुच माननेयोग्य (3:33)
        2. परमेश्वर की सच्चाई (3:34-36)
            1. परमेश्वर का आत्मा (3:34)
            2. परमेश्वर का पुत्र (3:35)
            3. परमेश्वर का उद्धार (3:36)

5. कुएँ पर स्त्री (4:1-42)
   जीवन के घृणित पापों पर जय पाना
    1. मार्ग से होकर जाना (4:1-8)
        1. एक आवश्यक मार्ग (4:1-6)

        2. एक जरूरतमंद स्त्री (4:7-8)
2. चर्चा (4:9-30)
    1. क्रोध की बात (4:9-10)
    2. समझ से परे की बात (4:11-14)
        1. स्त्री की सहज विचारशीलता (4:11-12)
        2. स्त्री की आन्तरिक प्यास (4:13-14)
    3. जानने योग्य बात (4:15)
    4. जोखिम उठाने की बात (4:16-18)
        1. परेशान करनेवाला दृश्य (4:16)
        2. एक रक्षात्मक प्रतिक्रिया (4:17क)
        3. एक हानिकारक प्रकाशन (4:17ख-18)
    5. प्रेरणा का एक भाव (4:19-24)
        1. उल्लेखनीय सम्मान (4:19-20)
        2. उल्लेखनीय सत्य (4:21-24)
            1. भविष्य के बारे में एक बात (4:21)
            2. विश्वास के विषय में एक बात (4:22)
            3. पिता के विषय में एक बात (4:23-24)
                1. उसका उत्साह (4:23)
                2. उसका व्यक्तित्व (4:24)
    6. उपदेश की बात (4:25-27)
    7. निमंत्रण (4:28-30)
3. चेले (4:31-42)
    1. उनका भोजन (4:31-34)
    2. उनका मिशन (4:35-42)
        1. कटनी का समय (4:35-38)
            1. काटनेवालों की आवश्यकता (4:35)
            2. परिश्रम का फल (4:36-38)
        2. कटनी का फल (4:39-42)

6. पिता का विश्वास (4:43-54)
   जीवन की दुःखद घटनाओं पर जय पाना
    1. काना में लौट आना (4:43-46क)
    2. कफरनहूम से आई विनती (4:46ख-54)
        1. उसकी दुर्दशा (4:46ख)
        2. उसकी विनती (4:47-49)
        3. उसका मार्ग (4:50)
        4. उसका प्रमाण (4:51-54)

खंड 2. उसके ईश्वरत्व पर विवाद (5:1-10:42)

1. उसके जीवन का प्रभाव (5:1-6:71)
    1. यरूशलेम के शहरी क्षेत्र में (5:1-47)
        1. बीमार मनुष्य को चुनौती (5:1-15)
            1. भीड़ (5:1-4)
            2. मनुष्य (5:5)
            3. गुरु (5:6-15)
                1. स्थिति (5:6-9क)
                2. सब्त का दिन (5:9b-15)
                    1. उस मनुष्य की बुद्धिमानी (5:9b-11)
                    2. उस मनुष्य की अज्ञानता (5:12-13)
                    3. उस मनुष्य का भोलापन (5:14-15)
        2. दोष लगानेवालों को चुनौती (5:16-47)
            1. विरुद्ध लगाया गया दोष (5:16)
            2. दोष का खंडन किया गया (5:17-38)
                1. उसके पिता की गवाही (5:17-32)
                    1. पिता और विश्राम दिन (5:17-18)
                    2. पिता और पुत्र (5:19-24)
                        1. प्रभु का अधिकार क्षेत्र (5:19-21)
                            1. उसकी विश्वासयोग्यता का प्रश्न (5:19)

                2. उसके प्रेम का प्रश्न (5:20)
                3. उसके जीवन का प्रश्न (5:21)
            2. प्रभु का न्याय (5:22-24)
                1. उसका पूर्ण एकाधिकार (5:22-23)
                2. प्रभु की अत्यंत दया (5:24)
        3. पिता और कब्र (5:25-32)
            1. दो क्षेत्र (5:25-26)
                1. कब्र पर पुत्र का अंतर्निहित अधिकार (5:25)
                2. परमेश्वरत्व में पुत्र का अंतर्निहित जीवन (5:26)
            2. दो पुनरुत्थान (5:27-32)
                1. पुत्र का विजयी शब्द (5:27-29)
                2. पुत्र की पूर्ण पुष्टि (5:30-32)
                    1. आत्मकथात्मक गवाही (5:30)
                    2. एक और गवाही (5:31-32)
    2. उसके अग्रदूत की गवाही (5:33-35)
    3. उसके कामों की गवाही (5:36-38)
        1. उसके कामों का पर्याप्त दायरा (5:36)
        2. उसके कामों का गुप्त स्रोत (5:37-38)
3. दोष पलट दिया गया (5:39-47)
    1. प्रभु का विरोध (5:39-42)
        1. पवित्रशास्त्र में ढूँढो (5:39)
        2. अपनी आत्मा में ढूँढें (5:40-42)
    2. प्रभु की भविष्यद्वाणी (5:43-44)
    3. प्रभु का प्रचार (5:45-47)
        1. मूसा का उन पर दोष लगाना (5:45)
        2. मूसा की उसके विषय में मान्यता (5:46-47)

2. गलील के ग्रामीण क्षेत्र में (6:1-71)

1. मसीह के दावे प्रकट हुए (6:1-40)
    1. उसकी सामर्थ्य में (6:1-21)
        1. सार्वजनिक रूप से : रोटी का तोडा जाना (6:1-15)
            1. भीड़ (6:1-9)
                1. उसके पीछे हो ली (6:1-4)
                2. साथ-साथ चलती रही (6:5-9)
                    1. समस्या का दायरा (6:5ख-7)
                    2. भोजन वस्तु की कम मात्रा (6:8-9)
            2. रोचक घटना (6:10-13)
            3. राजा बनाना (6:14-15)
        2. निजी रूप से : लहरों पर चलना (6:16-21)
            1. निर्देश (6:16-17क)
            2. अंधकार (6:17ख, ग)
            3. भय (6:18-20)
                1. वह आँधी जिससे वे डर गए (6:18)
                2. वह डर जिससे वे घबरा गए (6:19)
                3. वह कोमलता जो उन पर छा गई (6:20)
            4. दूरी (6:21)
    2. उसके उपदेश में (6:22-40)
        1. भीड़ का अचम्भा करना (6:22-25)
            1. मसीह का वहाँ न होना (6:22-24क)
            2. असमंजस में पड़ी भीड़ (6:24ख-25)
        2. गुरु का मूल्यांकन (6:26-29)
            1. उनका शारीरिक स्वभाव (6:26)
            2. उनकी जरूरतें (6:27-29)
        3. मन्ना की बात (6:30-31)
        4. रहस्य की घोषणा (6:32-40)
            1. उनकी गलती प्रकट हुई (6:32-34)

    2. उनका मसीहा प्रकट हुआ (6:35-40)
        1. जीवन की रोटी (6:35-36)
            1. एक व्यक्तिगत प्रक्रिया की आवश्यकता थी (6:35)
            2. व्यक्तिगत प्रतिक्रिया को अनदेखा कर दिया गया (6:36)
        2. जीवन का आधार (6:37-40)
            1. संप्रभुता (6:37)
            2. सुरक्षा (6:38-40)
                1. उद्धारकर्ता के लिए पिता की इच्छा (6:39)
                2. उद्धार पाए हुए लोगों के लिए पिता की इच्छा (6:40)

2. मसीह के दावों का विरोध किया गया (6:41-71)
    1. प्रभु के बैरियों की अप्रसन्नता (6:41-59)
        1. उनका कुड़कुड़ाना (6:41-51)
            1. प्रारम्भिक कारण (6:41-42)
            2. बड़ा कारण (6:43-51)
                1. उसके पिता का विषय (6:43-46)
                    1. परमेश्वर की इच्छा (6:44)
                    2. परमेश्वर का वचन (6:45-46)
                2. उसकी सच्चाइयों का विषय (6:47-50)
                    1. मूल सच (6:47)
                    2. व्यापक सच (6:48-50)
                3. उसके शरीर का विषय (6:51)
        2. उनकी गलतफहमी (6:52-59)
            1. समस्या (6:52)
            2. उपदेश (6:53-58)
            3. स्थान (6:59)

2. प्रभु के अनुयायियों की अप्रस्न्ना (6:60-71)
    1. उसके चेलों के बीच मतभेद (6:60-65)
        1. उसने क्या उजागर किया (6:60-61)
        2. उसने क्या समझाया (6:62-63)
            1. अलौकिक (6:62)
            2. आत्मिक (6:63)
        3. उसने क्या अपेक्षा की (6:64)
        4. उसने किस बात का विस्तार किया (6:65)
    2. उसके चेलों का उलटा फिरना (6:66-71)
        1. यीशु की पुकार (6:66-69)
        2. यहूदा का अपराध (6:70-71)

2. उसके जीवन के निहितार्थ (7:1-10:42)
    1. उसके द्वारा परमेश्वर के वचन को प्रकट करना (7:1-8:1)
        1. उसके परिवार का विरोध (7:1-10)
            1. तिथि (7:1-2)
            2. वाद-विवाद (7:3-8)
                1. उसके भाइयों की सलाह (7:3-5)
                2. उसके भाइयों से चेतावनी (7:6-8)
            3. विदा होना (7:9-10)
        2. यहूदियों के तर्क-वितर्क (7:11-29)
            1. उसके बारे में तर्क-वितर्क (7:11-13)
            2. उस पर आश्चर्य (7:14-19)
                1. उसका अचानक प्रकट होना (7:14-15)
                2. उसकी आवश्यक विनती (7:16-18)
                3. उसका निराशाजनक मूल्यांकन (7:19-20)
            3. उस पर क्रोध (7:21-24)
            4. उसके प्रति दुविधा (7:25-29)
            5. पहचान का प्रश्न (7:25-27)

            6. देहधारण का प्रश्न (7:28-29)
    3. हाकिमों का विरोध (7:30-8:1)
        1. आने वाला खतरा (7:30-36)
            1. बलपूर्वक प्रयास (7:30-31)
            2. औपचारिक प्रयास (7:32-36)
                1. पृथ्वी पर उसकी अवधि (7:33)
                2. पृथ्वी से उसका प्रस्थान (7:34-36)
        2. अंतिम दिन (7:37-39)
        3. जीवंत वाद-विवाद (7:40-44)
            1. जिन्होंने समाचार पर ध्यान दिया (7:40-41a)
            2. जिन्होंने समाचार में बाधा डाली (7:41b-43)
            3. जिन्होंने समाचार से बैर रखा (7:44)
        4. कानूनी बचाव (7:45-52)
            1. सिपाहियों की गवाही (7:45-49)
            2. अधिकारी की गवाही (7:50-52)
        5. एकाकी प्रस्थान (7:53-8:1)
2. उसका मनुष्यों की दुष्टता को सामने लाना (8:2-9:41)
    1. उन्हें दोषी ठहराना (8:2-11)
        1. समय (8:2क)
        2. मन्दिर (8:2ख)
        3. उपदेशक (8:2ग)
        4. जाल (8:3-6)
            1. शास्त्री (8:3क)
            2. पापी (8:3ख)
            3. कहानी (8:4)
            4. पवित्रशास्त्र (8:5-6a)
            5. उद्धारकर्ता (8:6b)
        5. सत्य (8:7-9)

        6. शर्तें (8:10-11)
            1. उसने उसका सामना किया (8:10)
            2. उसने उसे क्षमा किया (8:11)
                1. एक नया प्रभु (8:11क)
                2. एक नया जीवन (8:11ख, ग)
    2. उनका विरोध करना (8:12-59)
        1. गवाही (8:12-19)
            1. जगत की ज्योति (8:12)
            2. संसार का झूठ (8:13-19)
                1. प्रभु की गवाही (8:14-16)
                2. व्यवस्था की गवाही (8:17-18)
        2. उसका संसार (8:20-24)
            1. उसके संसार का द्वार (8:20क, ख)
            2. उसके संसार की सुरक्षा (8:20ग)
            3. उसके संसार के मार्ग (8:21-22)
                1. इसकी ईश्वरीय दिशा (8:21क)
                2. इसका बड़ा विभाजन (8:21ख-22)
            4. उसके संसार के लिए अनुमति पात्र (8:23-24)
                1. आवश्यकता (8:23)
                2. प्रकृति (8:24)
        3. उसका वचन (8:25-45)
            1. अपने स्वर्गीय पिता के साथ उसकी पहचान (8:25-32)
                1. जिन्होंने उसे परखा (8:25-29)
                    1. उसके पिता के विषय में एक शब्द (8:25-27)
                        1. उसकी पिछली गवाही (8:25ख)
                        2. उसकी वर्तमान गवाही (8:26-27)
                            1. बातें जिन्हें वह प्रकट नहीं कर सका (8:26)

                2. बातें जिन्हें वे समझ नहीं सके (8:27)
            2. उसके भविष्य के बारे में शब्द (8:28-29)
                1. क्रूस क्या प्रकट करता है (8:28क)
                2. मसीह क्या प्रकट करता है (8:28ख-29)
                    1. पुत्र की अपने पिता पर पूर्ण निर्भरता (8:28ख)
                    2. पुत्र में पिता की अत्यंत प्रसन्नता (8:29)
        2. जो उस पर भरोसा करते थे (8:30-32)
            1. विश्वास का आसान अंगीकरण (8:30)
            2. विश्वास का एक आवश्यक प्रमाण (8:31)
            3. विश्वास का एक मुक्तिदायक कार्य (8:32)
    2. अपने पिता अब्राहम के साथ पहचान (8:33-45)
        1. उनका घमंड (8:33)
        2. उनकी बंधुआई (8:34-36)
        3. उनका अंधापन (8:37-41क)
            1. आंशिक रूप से स्वीकार किया गया (8:37)
            2. संभावित रूप से विश्लेषण किया गया (8:38-41क)
        4. उनकी निंदा (8:41ख-43)
            1. उनका भयानक दोष (8:41ख, ग)
            2. उनका भयानक उत्तरदायित्व (8:42-43)
        5. उनका जन्मचिह्न (8:44-45)
            1. भयानक सत्य उजागर किया गया (8:44a)
            2. भयानक सत्य का विस्तार किया गया (8:44ख, ग)
            3. भयानक सत्य समझाया गया (8:45)
4. उसका चाल-चलन (8:46-59)
    1. उसकी अनिवार्य पापरहितता (8:46-50)

            1. चुनौती (8:46-47)
                1. उसके चाल-चलन की पूर्ण पारदर्शिता (8:46क)
                2. उसके वचन की पूर्णतः विश्वसनीयता (8:46ख-47)
            2. दोष (8:48-50)
        2. उसका अनंत पुत्रत्व (8:51-59)
            1. कब्र पर विजय (8:51-55)
                1. कितनी बुरी तरह से अविश्वास किया (8:52a)
                2. कैसे पूरी तरह से अविश्वास किया (8:52ख-55)
                    1. जो तर्क उन्होंने दिया (8:52ख-53)
                    2. जो उत्तर उन्हें मिला (8:54-55)
                        1. परमेश्वर की अचूकता (8:54क, ख)
                        2. उनकी अज्ञानता (8:54ग-55क)
                        3. उसकी विश्वसनीयता (8:55ख)
            2. सदा का जय पाया हुआ (8:56-59)
                1. इब्री कुलपिता का आनंद (8:56)
                2. इब्री लोगों की प्रतिक्रिया (8:57)
                3. इब्री भविष्यवक्ता का प्रकाशन (8:58-59)
                    1. उसके ईश्वरत्व का स्पष्ट प्रकट होना (8:53)
                    2. उसके ईश्वरत्व का स्पष्ट इनकार (8:59क)
                    3. उसके परमेश्वर होने का स्पष्ट प्रदर्शन (8:59ख)
3. उन्हें भ्रमित करना (9:1-41)
    1. अंधे मनुष्य को चंगा करना (9:1-34)
        1. घटना (9:1-5)
            1. कठिन (9:1)
            2. विवादास्पद (9:2-3क)
            3. जानबूझकर (9:3ख-5)

        1. परमेश्वर के स्पर्श को प्रकट करना (9:3ख)
        2. परमेश्वर के समय को प्रकट करना (9:4)
        3. परमेश्वर की सच्चाई को प्रकट करना (9:5)
2. चंगाई (9:6-12)
    1. वह मनुष्य चंगा हुआ (9:6-7)
        1. मिट्टी (9:6)
        2. आदेश (9:7)
    2. उस व्यक्ति की सुनी गई (9:8-12)
        1. भीड़ ने क्या कहा (9:8-10)
        2. उस मनुष्य ने क्या कहा (9:11-12)
3. संघर्ष (9:13-29)
    1. उस मनुष्य के विश्वास पर हमला किया (9:13-17)
        1. उनका प्रश्न (9:13-15)
        2. उनका विरोध (9:16)
        3. उनकी दुविधा (9:17)
    2. उस मनुष्य के परिवार पर हमला किया (9:18-23)
    3. उस मनुष्य के मित्र पर हमला किया (9:24-29)
        1. मांग (9:24)
        2. साहस के साथ घोषणा (9:25-27)
        3. उपहास (9:28-29)
4. संकेत (9:30-34)
    1. चंगे हुए मनुष्य का प्रेरित तर्क (9:30-33)
        1. उसका आश्चर्य (9:30)
        2. उसका आकलन (9:31)
        3. उसका आश्वासन (9:32-33)
            1. उसका अकेला विषय (9:32)
            2. उसका ठोस निष्कर्ष (9:33)
    2. इब्रानी गुरुओं का क्रोध से भरा व्यवहार (9:34)

            1. उन्होंने उसे क्या कहा (9:34क)
            2. उन्होंने उसे शाप क्यों दिया (9:34ख)
            3. उन्होंने उसे कहाँ निकाला (9:34ग)
    2. अंधे मनुष्य का बचाव करना (9:35-41)
        1. कैसे यीशु ने अपने उस जन को दोषमुक्त किया (9:35-38)
        2. कैसे यीशु ने अपने आलोचकों को उजागर किया (9:39-41)
            1. एक बड़ा विभाजन (9:39)
            2. एक बड़ा भ्रम (9:40-41)

3. जीवन के मार्ग की उसकी व्याख्या (10:1-42)
    1. उसकी मृत्यु पर ध्यान (10:1-21)
        1. चरवाहा और बाड़ा (10:1-15)
            1. भेड़ों का द्वार (10:1-7)
                1. डाकू से डरती हैं (10:1)
                2. सच्चे चरवाहे के पीछे हो लेती हैं (10:2-4)
                    1. बाड़े तक उसकी पहुँच (10:3)
                    2. झुंड के द्वारा उसकी स्वीकृति (10:3ख-4)
                3. परायों से दूर भागती हैं (10:5)
            2. भेड़ों का रक्षक (10:8-15)
                1. झूठा चरवाहा (10:8-10)
                    1. सच्चा चरवाहा बचाता है (10:9)
                    2. सच्चा चरवाहा सुरक्षा प्रदान करता है (10:10क)
                    3. सच्चा चरवाहा संतुष्टि देता है (10:10ख)
                2. डरपोक चरवाहा (10:11-13)
                    1. स्वर्गीय चरवाहा (10:11)
                    2. भाड़े का चरवाहा (10:12-13)
                        1. समर्पण की कमी (10:12)
                        2. परवाह की कमी (10:13)
                3. विश्वासयोग्य चरवाहा (10:14-15)

                1. उसकी समझ (10:14-15क)
                    1. अपने झुंड के प्रति (10:14)
                    2. पिता के प्रति (10:15क)
                2. उसका समर्पण (10:15ख)
    2. चरवाहा और झुंड (10:16-21)
        1. उसका भविष्य (10:16-18)
            1. एक महान सत्य (10:16)
            2. एक बड़ी विजय (10:17-18)
                1. उसके उत्कृष्ट प्रेम में (10:17)
                2. उसके उत्कृष्ट जीवन में (10:18)
        2. उसके साथी (10:19-21)
            1. उनकी फूट का कारण (10:19)
            2. उनकी फूट की पूर्णता (10:20-21)
2. उसके ईश्वरत्व पर केंद्र (10:22-42)
    1. उनकी चुनौती के प्रति उसकी प्रतिक्रिया (10:22-30)
        1. अवसर (10:22-23)
        2. घटना (10:24-30)
            1. उसके कार्यों की गवाही (10:25-29)
                1. क्यों (10:25-26)
                2. क्या (10:27-29)
                    1. स्पष्ट संकेत (10:27)
                    2. अनंत सुरक्षा (10:28-29)
            2. उसके वचन की गवाही (10:30)
    2. उसकी चुनौती के प्रति उनकी प्रतिक्रिया (10:31-42)
        1. उनका दृढ़ संकल्प (10:31-39)
            1. उनकी पहली चाल (10:31-38)
                1. उन्होंने क्या प्रयास किया (10:31-33)
                2. उसने क्या प्रयास किया (10:34-38)

            2. अगला कदम (10:39)
        2. उसका प्रस्थान (10:40-42)
            1. वह कहाँ गया (10:40)
            2. वह क्यों गया (10:41-42)
                1. बपतिस्मा देनेवाले पर केंद्रित कारण (10:41)
                2. विश्वासी पर केंद्रित कारण (10:42)

खंड 3. उसके ईश्वरत्व का अनादर (11:1-12:50)

1. उसके तिरस्कार के कुछ उदाहरण (11:1-12:36)
    1. अपनी सामर्थ्य के बड़े कामों के बावजूद अस्वीकृत (11:1-12:11)
        1. एक अद्भुत पुनरुत्थान (11:1-46)
            1. बुलावे (11:1-16)
                1. प्रभु और उसके मित्र (11:1-6)
                    1. एक विशेष परिवार (11:1-2)
                    2. अचानक से आया भय (11:3)
                    3. एक स्पष्ट विफलता (11:4-6)
                        1. प्रभु का तर्क (11:4)
                        2. प्रभु का प्रेम (11:5)
                        3. प्रभु का मार्गदर्शन (11:6)
                2. प्रभु और उसके अनुयायी (11:7-16)
                    1. निर्णय (11:7-10)
                    2. बातचीत (11:11-15)
                        1. यीशु ने क्या कहा (11:11-13)
                        2. यीशु ने क्या समझाया (11:14-15)
                    3. चेले (11:16)
            2. दुःख (11:17-37)
                1. बहनों का दुःख (11:17-32)
                    1. मार्था की प्रतिक्रिया (11:17-27)
                        1. प्रभु का आगमन (11:17-20)

                2. प्रभु की टिप्पणी (11:21-27)
                    1. मार्था का व्यक्त विश्वास (11:21-24)
                        1. उसकी निर्भीकता (11:21-22)
                        2. उसका विश्वास (11:23-24)
                    2. मार्था का विश्वास बढ़ाया गया (11:25-27)
            2. मरियम की प्रतिक्रिया (11:28-32)
        2. उद्धारकर्ता का दुःख (11:33-37)
            1. एक रोता हुआ मसीह (11:33-35)
                1. उसने क्या देखा (11:33क)
                2. उसने क्या सहा (11:33ख)
                3. उसने क्या कहा (11:34)
                4. उसने क्या दिखाया (11:35)
            2. एक चकित भीड़ (11:36-37)
                1. उसकी भावना का प्रबल प्रदर्शन (11:36)
                2. विफलता का उसका स्पष्ट प्रदर्शन (11:37)
    3. कब्र (11:38-44)
        1. कब्र का सामना किया गया (11:38-40)
            1. एक टिप्पणी (11:38)
                1. उद्धारकर्ता की भावनाएँ (11:38क)
                2. कब्र की पूर्णता (11:38ख)
            2. एक आज्ञा (11:39-40)
        2. कब्र पर वीके पाई गई (11:41-44)
            1. साहसी कदम (11:41क)
            2. ईश्वरीय मध्यस्थ (11:41ख-42)
                1. परमेश्वर पर उसका विश्वास (11:41ख)
                2. मनुष्यों के बीच उसकी गवाही (11:42)
            3. नाटकीय चमत्कार (11:43-44)

            4. चिह्न (11:45-46)
                1. जिन्होंने विश्वास किया (11:45)
                2. जिन्होंने धोखा दिया (11:46)
2. एक अद्भुत प्रतिक्रिया (11:47-12:11)
    1. कथाओं का अंतराल (11:47-57)
        1. यहूदी याजक (11:47-54)
            1. उसके साथी (11:47-48)
            2. उसकी सलाह (11:49-52)
                1. उसका व्यक्तित्व (11:49क)
                2. उसका गौरव (11:49b)
                3. उसकी नीति (11:50)
                4. उसकी भविष्यवाणी (11:51-52)
            3. उसका अपराध (11:53-54)
                1. प्रस्ताव पारित किया गया (11:53)
                2. हत्या स्थगित कर दी गई (11:54)
        2. यहूदी फसह (11:55-57)
            1. धार्मिक यात्रा (11:55)
            2. लोग (11:56)
            3. याजक (11:57)
    2. शांति का अंतराल (12:1-11)
        1. प्रभु की बैतनिय्याह यात्रा का समय (12:1)
        2. प्रभु की बैतनिय्याह यात्रा का विवरण (12:2-11)
            1. एक सेवादार (12:2)
            2. एक आराधक (12:3-8)
                1. उसकी आराधना व्यक्त की गई (12:3)
                2. उसकी आराधना को परखा गया (12:4-6)
            3. एक गवाह (12:9-11)
                1. जबरदस्त वास्तविकता (12:9)

            2. भयानक प्रतिक्रिया (12:10-11)

2. भविष्यवाणी की पूर्णता के बावजूद ठुकराया गया (12:12-19)
    1. धार्मिक यात्री (12:12-13क)
        1. उस दिन का महत्व (12:12)
        2. कार्य के निहितार्थ (12:13क)
    2. स्तुति (12:13ख)
    3. जुलुस (12:14क)
    4. भविष्यवाणी (12:14ख-16)
    5. लोग (12:17-18)
    6. धारणा (12:19)
3. प्रार्थना में अपने उत्साह के बावजूद ठुकराया गया (12:20-36)
    1. यूनानियों का दौरा (12:20-26)
        1. एक विनती (12:20-24)
            1. एक सहज अनुरोध (12:20-22)
            2. एक विशिष्ट उत्तर (12:23-24)
                1. प्रभु को महिमा मिलना (12:23)
                2. प्रभु का क्रूस पर चढ़ाया जाना (12:24क)
                3. प्रभु का कई गुणा बढ़ना (12:24ख)
        2. एक विरोधाभास (12:25)
        3. एक सिद्धांत (12:26)
            1. प्रभु के अनुयायी (12:26क, ख)
            2. प्रभु का पिता (12:26ग)
    2. परमेश्वर की आवाज़ (12:27-36)
        1. प्रभु की व्यथा (12:27)
        2. प्रभु की इच्छा (12:28-30)
        3. प्रभु की घोषणा (12:31)
        4. प्रभु की मृत्यु (12:32-34)
            1. वर्णन किया गया (12:32-33)

                2. चर्चा की गई (12:34)
            5. प्रभु की समझ (12:35-36क)
            6. प्रभु का प्रस्थान (12:36ख)
2. उसके तिरस्कार के कुछ स्पष्टीकरण (12:37-50)
    1. एक प्राचीन भविष्यवाणी (12:37-43)
        1. ठोस अविश्वास (12:37-41)
            1. जानबूझकर बढ़ावा दिया गया (12:37)
            2. ईश्वरीय रूप से भविष्यवाणी की गई (12:38-41)
        2. गुप्त चेले (12:42-43)
            1. उनके बोध (12:42क)
            2. उनकी कायरता (12:42ख)
            3. उनके समझौते (12:43)
    2. एक स्थाई सिद्धांत (12:44-50)
        1. एक महान सच्चाई (12:44-46)
            1. ईश्वरत्व के बारे में (12:44-45)
            2. अन्धकार के बारे में (12:46)
        2. एक गंभीर भविष्य (12:47-50)
            1. न्याय का आदेश दिया जा चुका है (12:47-48)
            2. न्याय उचित है (12:49-50)
                1. स्रोत (12:49)
                2. सार (12:50)

भाग 3. परमेश्वर के पुत्र के रहस्य (यूहन्ना 13:1-17:26)

खंड 1. ऊपरी कक्ष में बातचीत (13:1-14:31)

1. बातचीत की पृष्ठभूमि (13:1-30)
    1. मेज (13:1-3)
        1. उसके तथ्य (13:1क)
        2. उसकी भावनाएँ (13:1ख)

        3. उसका शत्रु (13:2)
        4. उसका भविष्य (13:3)
2. अँगोछा (13:4-17)
    1. नम्रता का प्रदर्शन (13:4-11)
        1. राजकीय त्याग (13:4-5)
        2. आवेगपूर्ण प्रतिक्रिया (13:6-9)
            1. पतरस का प्रश्न (13:6-7)
            2. पतरस की उलझन (13:8-9)
        3. एक महत्वपूर्ण प्रकाशन (13:10-11)
            1. प्रभु ने क्या चेतावनी दी (13:10)
                1. बारहों को (13:10क, ख)
                    1. संपूर्ण शुद्धीकरण (13:10क)
                    2. बार-बार शुद्धीकरण (13:10ख)
                2. पकड़वानेवाले को (13:10ग)
            2. प्रभु ने क्या छुपाया (13:11)
    2. नम्रता के बारे में घोषणा (13:12-17)
        1. विषय पर आना (13:12)
        2. विषय को समझना (13:13-16)
            1. एक विवरण (13:14)
            2. एक उदहारण (13:15)
            3. एक अपेक्षा (13:16)
        3. विषय को लागू करना (13:17)
3. पकड़वानेवाला (13:18-30)
    1. उसके द्वारा पकड़वानेवाले की अपेक्षा की गई (13:18-22)
        1. पवित्रशास्त्र ने क्या कहा (13:18)
        2. उद्धारकर्ता ने क्या कहा (13:19-22)
            1. उसे ग्रहण करना (13:19-20)
            2. उसे ठुकराना (13:21-22)

            2. उसने पकड़वानेवाले को उजागर किया (13:23-26)
                1. केंद्र में यूहन्ना (13:23-24)
                2. केंद्र में यीशु (13:25-26क)
                3. केंद्र में यहूदा (13:26ख)
            3. उसने पकड़वानेवाले को बाहर निकाला (13:27-30)
                1. यहूदा और शैतान (13:27)
                2. यहूदा और चेले (13:28-29)
                3. यहूदा और अंधकार (13:30)
2. बातचीत के प्रमुख विचार (13:31-14:31)
    1. एक और आज्ञा (13:31-35)
        1. जीवन का प्रभु (13:31-33)
            1. उसकी महिमा (13:31-32)
            2. उसका लक्ष्य (13:33)
        2. प्रेम का नियम (13:34-35)
            1. इसका आवेग (13:34)
            2. इसका प्रभाव (13:35)
    2. एक और आगमन (13:36-14:6)
        1. मानवीय हृदय का प्रकट होना (13:36-38)
            1. पतरस की घबराहट (13:36-37क)
            2. पतरस का अहंकार (13:37ख-38)
        2. स्वर्गीय घर का प्रकटीकरण (14:1-3)
            1. एक नई शांति (14:1)
            2. एक नई जगह (14:2)
            3. एक नई प्रतिज्ञा (14:3)
        3. बड़े घर का प्रकटीकरण (14:4-6)
            1. दावा (14:4)
            2. मूल्यांकन (14:5)
            3. आश्वासन (14:6)

            1. मैं उद्धार कैसे पा सकता हूँ (14:6क)
            2. मैं कैसे आश्वस्त हो सकता हूँ? (14:6ख)
            3. मैं कैसे संतुष्ट हो सकता हूँ? (14:6ग)
3. अन्य आदेश (14:7-15)
    1. अनुरोध (14:7-8)
    2. उत्तर (14:9-11)
        1. सत्य बताया गया (14:9)
        2. सत्य का समर्थन किया गया (14:10-11)
    3. परिणाम (14:12-15)
        1. मसीही जीवन के संदर्भ में (14:12-14)
            1. हमारा प्रभावशाली व्यवहार (14:12)
            2. हमारी प्रभावशाली प्रार्थना (14:13-14)
        2. मसीही प्रेम के संदर्भ में (14:15)
4. एक और सहायक (14:16-31)
    1. सहायक की प्रतिज्ञा (14:16)
        1. उद्धारकर्ता की प्रतिज्ञात प्रार्थना (14:16क)
        2. आत्मा की प्रतिज्ञात उपस्थिति (14:16ख)
    2. सहायक का व्यक्तित्व (14:17-31)
        1. वास्तविकता (14:17)
            1. एक बड़ी संभावना (14:17क)
            2. एक महान आरोपण (14:17ख, ग)
        2. कारण (14:18-31)
            1. प्रभु की स्थाई उपस्थिति (14:18-24)
                1. उसका जीवन हमारा जीवन बनना है (14:18-20)
                    1. शांति का एक वचन (14:18)
                    2. समर्पण का एक वचन (14:19)
                    3. समझ का एक शब्द (14:20)
                2. उसका प्रेम हमारा बनना है (14:21)

                        3. उसके जैसी विश्वासयोग्यता हमारे पास भी हो (14:22-24)
                            1. एक महत्वपूर्ण अवधारणा (14:23)
                            2. एक महत्वपूर्ण विरोधाभास (14:24)
                    2. प्रभु की भरपूर प्रतिज्ञा (14:25-31)
                        1. विश्वास जगाएगा (14:25-26)
                        2. डर को शांत करेगा (14:27-31)
                            1. प्रभु और उसके चेले (14:27-29)
                                1. उसकी शांति (14:27क)
                                2. उसकी प्रतिज्ञा (14:27ख-28क)
                                3. उसका दृष्टिकोण (14:28ख)
                                4. उसकी भविष्यवाणी (14:29)
                            2. प्रभु और शैतान (14:30)
                            3. प्रभु और उसका कर्त्तव्य (14:31)
                                1. संसार के समक्ष गवाही (14:31क)
                                2. वचन के प्रति श्रद्धा (14:31ख)
                            4. प्रभु और उसका प्रस्थान (14:31ग)

खंड 2. गतसमनी के मार्ग पर चलना (15:1-17:26)

1. प्रभु अपने अनुयायियों से बात करता है (15:1-16:33)
    1. पुत्र-परमेश्वर के बारे में प्रकाशन (15:1-25)
        1. प्रभु—उसके अनुयायी और उनका फल (15:1-17)
            1. बने रहने का भेद (15:1-5)
                1. दाखलता और उसकी पृष्ठभूमि (15:1)
                2. दाखलता और उसकी डालियाँ (15:2-4)
                    1. डालियों की छँटाई (15:2-3)
                        1. शुद्ध करने का कार्य (15:2)
                        2. शुद्ध करनेवाला वचन (15:3)
                    2. डालियों का स्थान (15:4)
                3. दाखलता और उसकी भरपूरी (15:5)

2. भरपूरी का रहस्य (15:6-17)
    1. मसीह की फलदायकता (15:6-8)
        1. काटे जाने की त्रासदी (15:6)
        2. आत्मिक होने की विजय (15:7-8)
    2. मसीह की संगति (15:9-12)
        1. उसके हृदय का अचंभा (15:9क)
        2. उसके हृदय तक का मार्ग (15:9ख-10)
            1. एक विस्मय (15:9ख)
            2. एक उपदेश (15:10क)
            3. एक उदाहरण (15:10ख)
        3. उसके हृदय से निकला वचन (15:11)
        4. उसके हृदय की इच्छा (15:12)
    3. मसीह की मित्रता (15:13-17)
        1. प्रदर्शित की गई (15:13)
        2. घोषणा की गई (15:14-15)
            1. शर्त (15:14)
            2. अवधारणा (15:15)
        3. दृढ़ निश्चय किया गया (15:16)
            1. ईश्वरीय पहल (15:16क)
            2. ईश्वरीय उद्देश्य (15:16ख)
            3. ईश्वरीय निमंत्रण (15:16ग)
        4. दोहराई गई (15:17)

2. प्रभु—उसके अनुयायी और उनके शत्रु (15:18-25)
    1. उसके मित्रों के लिए संसार की घृणा (15:18-22)
        1. उस घृणा के कारण (15:18-21)
            1. असहिष्णुता (15:18-20)
                1. वे अलग हैं (15:18-19)
                2. वे चेले हैं (15:20)

            2. अज्ञानता (15:21)
        2. उस घृणा के परिणाम (15:22)
    2. उसके पिता के प्रति संसार की घृणा (15:23-25)
        1. यह घृणा केंद्रित हैं (15:23-24)
        2. इस घृणा की भविष्यवाणी की गई थी (15:25)
2. आत्मा परमेश्वर के बारे में प्रकाशन (15:26-16:15)
    1. उसकी स्मरण दिलाने वाली सेवकाई (15:26-27)
        1. पवित्र आत्मा का भेद (15:26क-ग)
            1. वह क्यों आएगा (15:26क, ख)
            2. वह कहाँ से आएगा (15:26ग
        2. पवित्र आत्मा की अभिप्रेरणा (15:26घ-27)
            1. उसकी सर्वोच्च सेवकाई परमेश्वर के पुत्र की महिमा करना है (15:26घ)
            2. उसकी पूरक सेवकाई परमेश्वर के भक्तों में ऊर्जा भरना है (15:27)
    2. उसकी निरुत्तर करनेवाली सेवकाई (16:1-11)
        1. आराधनालय के प्रति बड़ी नापसंदगी (16:1-4क)
            1. ठोकर खाया (16:1-3)
            2. चौंक गया (16:4क)
        2. उद्धारकर्ता भी उन्हें छोड़कर जा रहा था (16:4ख-6)
            1. इन बातों को उसने अतीत में गुप्त रखा (16:4ख)
            2. इन बातों के बारे में उसकी वर्तमान स्पष्टता (16:5-6)
        3. आत्मा का नियुक्त आगमन (16:7-11)
            1. जो उनके लिए समयोचित था (16:7)
            2. जो उन्हें समझाया गया था (16:8-11)
                1. आत्मा की निरुत्तर करने वाली सेवकाई (16:8)
                    1. पाप की प्रकृति (16:8क)
                    2. धार्मिकता की जरूरत (16:8ख)
                    3. न्याय की निकट (16:8ग)

                2. आत्मा की निरुत्तर करने वाली सेवकाई का विस्तृत रूप (16:9-11)
                    1. पाप का अधिकार क्षेत्र (16:9)
                    2. पवित्र लोगों का धर्मी ठहराया जाना (16:10)
                    3. पापियों का न्याय (16:11)
    3. उसकी प्रकट करनेवाली सेवकाई (16:12-15)
        1. कलीसियाई सत्य (16:12-13b)
            1. स्वभाव-संबंधी बाधा (16:12)
            2. युगों-संबंधी बाधा (16:13क, ख)
                1. एक प्रकट करनेवाली प्रक्रिया (16:13क)
                2. एक प्रकट करनेवाला सिद्धांत (16:13ख)
        2. अंत समय का सत्य (16:13ग-15)
            1. आने वाली बातों (16:13ग)
            2. मसीह की बातों (16:14-15)
                1. मसीह का व्यक्तित्व (16:14क)
                2. मसीह की श्रेष्ठता (16:14ख-15)
3. पिता परमेश्वर के बारे में प्रकाशन (16:16-33)
    1. जीवन के अद्भुत वचन (16:16-28)
        1. थोड़ी देर (16:16-19)
            1. यीशु ने क्या घोषणा की (16:16-18)
                1. चेलों से कहा (16:16)
                2. चेलों को समझ में नहीं आया (16:17-18)
            2. यीशु ने क्या परखा (16:19)
        2. थोड़ा रोना (16:20-22)
            1. जानकारी का शब्द (16:20)
            2. एक उदाहरण (16:21-22)
        3. एक छोटा सा शब्द (16:23-24)
            1. हम किससे पूछना है (16:23)

            2. हमें क्यों माँगना है (16:24)
        4. थोड़ी प्रतीक्षा (16:25-28)
            1. पिता के बारे में स्पष्ट रूप से बोलना (16:25)
            2. सीधे पिता से बात करना (16:26-28)
                1. पुत्र का पिता पुत्र के अनुयायियों से प्रेम करता है (16:26-27क)
                2. पुत्र के अनुयायी पुत्र के पिता से प्रेम करते हैं (16:27ख-28)
    2. प्रेम के चेतावनी भरे शब्द (16:29-33)
        1. उनका अति-आत्मविश्वास प्रकट हुआ (16:29-30)
            1. उसके दृष्टांत (16:29)
            2. उसका व्यक्तित्व (16:30)
        2. उनके अति-आत्मविश्वास को डांटा गया (16:31-33)
            1. परीक्षा होनी है (16:31-32)
            2. विजयी होना है (16:33)
                1. उसके वचन के द्वारा शांति (16:33क)
                2. इस संसार में सामर्थ्य (16:33ख)
2. प्रभु अपने पिता से बात करता है (17:1-26)
    1. वह संसार जहाँ से वह आया था (17:1-10)
        1. उसके सर्वोच्च लक्ष्य (17:1-4)
            1. उसके पिता का व्यक्तित्व (17:1)
            2. उसके पिता का अधिकार (17:2)
                1. अनंत प्रभुत्व (17:2क)
                2. अनंत जीवन (17:2ख)
            3. उसके पिता के उद्देश्य (17:4)
        2. उसकी विशेष महिमा (17:5)
        3. उसके आत्मिक वरदान (17:6-8)
            1. उसे दिए गए (17:6-7)
                1. कुछ खास लोग (17:6)

        2. कुछ विशेष अधिकार (17:7)
    2. उसके द्वारा दिए गए (17:8)
  4. उसका संप्रभु अनुग्रह (17:9-10)
    1. जो उसकी प्रार्थना से बाहर रह गए (17:9क)
    2. जिन्हें वह अपनी प्रार्थना में उठाता है (17:9ख-10)
2. वह संसार जिसमें वह अब था (17:11-23)
  1. इस संसार से उसका अलगाव (17:11-13)
    1. उसका अलगाव (17:11क)
    2. उसका आग्रह (17:11ख-12)
      1. एक अनुरोध (17:11b)
      2. एक समीक्षा (17:12)
        1. गवाही (17:12a)
        2. त्रासदी (17:12b)
    3. उसकी संतुष्टि (17:13)
  2. इस संसार में उसके चेले (17:14-23)
    1. उनकी सुरक्षा (17:14क)
    2. उनकी संभावनाएँ (17:14ख, ग)
    3. उनकी शुद्धता (17:15-17)
      1. उनकी सुरक्षा (17:15-16)
        1. सर्वशक्तिमान सामर्थ्य (17:15)
        2. हमारी परदेशी स्थिति (17:16)
      2. उनका पवित्रीकरण (17:17)
  3. उनका कार्यक्रम (17:18-21)
    1. उनके भेजे हुए लोग (17:18)
    2. उसके पवित्र लोग (17:19)
    3. उसके सफल लोग (17:20-21)
      1. मसीह द्वारा परिकल्पित (17:20)
      2. मसीह में समाहित (17:21)

        4. उनकी सिद्धता (17:22-23)
            1. उसकी महिमा उन्हें प्रदान की जाए (17:22क)
            2. उनके द्वारा उसके लक्ष्य लागू किए जा सकें (17:22ख-23)
                1. एक चरित्र (17:22ख-23क)
                2. एक ठोस गवाही (17:23ख)
    3. संसार और वह कौन था (17:24-26)
        1. उस संसार में उसका पूर्व-अस्तित्व (17:24)
            1. उसकी इच्छा (17:24क)
            2. उसका ईश्वरत्व (17:24ख)
        2. इस संसार में उसकी उपस्थिति (17:25-26)
            1. अंधा बहुमत (17:25a)
            2. विश्वासी अल्पसंख्यक (17:25b-26)
                1. उसकी ज्योति उनकी ज्योति है (17:25ख-26क)
                2. उसका प्रेम उनका प्रेम है (17:26ख)

भाग 4. परमेश्वर के पुत्र के दुःख (यूहन्ना 18:1-20:31)

खंड 1. उसे झूठे रूप में दोषी ठहराया जाता है (18:1-19:15)

1. यीशु को गिरफ्तार किया गया (18:1-12)
    1. उसका प्रस्थान (18:1)
    2. उसका ईश्वरत्व (18:2-9)
        1. यहूदा का आगमन (18:2-3)
        2. यीशु की समझ (18:4-9)
            1. अलौकिक (18:4-6)
                1. उसकी सर्वज्ञता (18:4)
                2. उसकी सर्वसामर्थ्य (18:5-6)
                    1. यीशु ने अपने शत्रुओं का सामना कैसे किया (18:5)
                    2. यीशु ने अपने शत्रुओं को कैसे चकित किया (18:6)
            2. पवित्रशास्त्र-संबंधी (18:7-9)
    3. उसका रक्षक (18:10-12)

            1. पतरस का उत्साह (18:10)
            2. पतरस की असफलता (18:11-12)
2. यीशु को दोषी ठहराया गया (18:13-19:15)
    1. याजकों के सामने (18:13-27)
        1. न्यायाधिकरण (18:13-14)
        2. मुकदमा (18:15-27)
            1. चेले (18:15-18)
                1. पतरस का झूठा अंगीकरण (18:17)
                2. पतरस की झूठी स्थिति (18:18)
            2. बचाव (18:19-24)
                1. पूछा गया (18:19)
                2. उत्तर दिया गया (18:20-24)
                    1. खंडन (18:20-21)
                    2. प्रतिक्रिया (18:22)
                    3. प्रत्युत्तर (18:23-24)
            3. इनकार (18:25-27)
                1. पतरस जहाँ खड़ा था (18:25क)
                2. पतरस ने जो कहा (18:25b)
                3. पतरस ने जिसे देखा (18:26)
                4. जब पतरस ने पाप किया (18:27)
    2. राज्यपाल के समक्ष (18:28-19:15)
        1. आरोप (18:28-32)
            1. याजकों की शंकाएँ (18:28)
                1. उनका आत्मिक बंधन (18:28क)
                2. उनका आत्मिक अंधापन (18:28ख)
            2. याजकों के व्यंग्य (18:29-30)
            3. याजकों की योजना (18:31-32)
        2. परीक्षा (18:33-40)

        1. मुख्य प्रश्न (18:33-34)
        2. तिरस्कारपूर्ण प्रश्न (18:35क)
        3. गंभीर प्रश्न (18:35ख-36)
        4. संयत कर देनेवाला प्रश्न (18:37)
        5. अटकलबाज़ी वाला प्रश्न (18:38क)
        6. विवादास्पद प्रश्न (18:38ख-40)
    3. सताव (19:1-3)
        1. कोड़े मारना (19:1)
        2. उपहास (19:2-3)
            1. यीशु ने किस तरह के कपड़े पहने हुए थे (19:2)
            2. यीशु पर कैसे हमला किया गया (19:3)
    4. दण्ड की आज्ञा (19:4-15)
        1. मनुष्य के पुत्र के रूप में (19:4-6)
            1. मसीह को प्रदर्शित किया (19:4-5)
                1. पूरी तरह से निर्दोष होने की घोषणा (19:4)
                2. कायरतापूर्ण अन्याय का प्रदर्शन (19:5)
            2. मसीह को अपमानित किया गया (19:6)
        2. परमेश्वर के पुत्र के रूप में (19:7-12)
            1. पिलातुस में डर भर दिया गया (19:7-9)
                1. खोज (19:7)
                2. डर (19:8-9)
            2. पिलातुस में डर को बढ़ाया गया (19:10-12)
                1. उस व्यक्ति की गरिमा (19:10-11)
                    1. उसका धमकाने वाला दावा (19:10)
                    2. उसकी धौंस (19:11)
                2. भीड़ की मांग (19:12)
        3. दाऊद के पुत्र के रूप में (19:13-15)
            1. मुकदमे का चरमोत्कर्ष (19:13)

            2. मुकदमे का सार (19:14-15)
                1. राजा इस्राएल के सामने प्रस्तुत होते हुए (19:14-15क)
                    1. अनजाना उद्धरण (19:14)
                    2. एक स्पष्ट प्रश्न (19:15क)
                2. इस्राएल द्वारा पसंद किया जाने वाला राजा (19:15ख)

खंड 2. अंततः उसे क्रूस पर चढ़ाया गया (19:16-24)

1. प्रशासन का एक कार्य (19:16-24)
    1. दंड की आज्ञा (19:16-18)
    2. दोष-पत्र (19:19-22)
        1. इसमें जो घोषणा की गई (19:19-20)
        2. जिसे इसने भड़काया (19:21-22)
    3. सैनिक (19:23-24)
2. अनुग्रह का कार्य (19:25-27)
    1. जो लोग क्रूस के पास खड़े थे (19:25)
    2. वे लोग जिन्हें क्रूस से भेजा गया (19:26-27)
3. महानता का कार्य (19:28-30)
    1. प्रभु ने जानबूझकर स्पंज लिया (19:28-29)
        1. अनुरोध (19:28)
        2. प्रत्युत्तर (19:29)
    2. प्रभु ने जानबूझकर अपनी आत्मा को छोड़ा (19:30)
4. परमेश्वर का एक कार्य (19:31-42)
    1. प्रभु की हड्डियों के लिए ईश्वरीय सुरक्षा (19:31-37)
        1. सब्त (19:31क)
        2. महासभा (19:31ख)
        3. सैनिक (19:32)
        4. उद्धारकर्ता (19:33)
        5. बरछा (19:34)
        6. वाक्य (19:35)

            7. पवित्रशास्त्र (19:36-37)
        2. प्रभु की देह के लिए ईश्वरीय इंतजाम (19:38-42)
            1. मध्यस्थ (19:38-39)
            2. गाड़ा जाना (19:40-42)
                1. लेप लगाना (19:40)
                2. गाड़ा गया (19:41-42)

खंड 3. वह पूरी तरह से विजेता है (20:1-31)

1. खाली कब्र पर प्रकाशन (20:1-18)
    1. आश्चर्यचकित चेले (20:1-10)
        1. समाचार की प्राप्ति (20:1-2)
            1. मरियम मगदलीनी ने क्या पाया (20:1)
            2. मरियम मगदलीनी ने क्या निर्णय लिया (20:2)
        2. समाचार पर प्रतिक्रिया (20:3-10)
            1. पहली प्रतिक्रिया (20:3-7)
            2. आगे की प्रतिक्रिया (20:8-9)
            3. अंतिम प्रतिक्रिया (20:10)
    2. रोता हुआ चेला (20:11-18)
        1. मरियम और महान संदेशवाहक (20:11-14)
            1. मरियम की उदासीनता (20:11)
            2. मरियम की खोज (20:12-13)
            3. मरियम की उदासीनता (20:14)
        2. मरियम और उसका जीवित स्वामी (20:15-17)
            1. उसकी निराशा (20:15)
            2. उसकी खुशी (20:16-17)
        3. मरियम और उसके प्रभु के लोग (20:18)
2. ऊपरी कमरे में प्रकाशन (20:19-31)
    1. सभी कष्ट दूर हो गए (20:19-23)
        1. उसकी शांति—सभी परिस्थितियों में विजयी (20:19-20)

   1. समय (20:19क)
   2. भय (20:19b)
   3. परिवर्तन (20:19c-20)
2. उसकी शांति—सभी सेवाओं के लिए विजयी (20:21-23)
   1. उनकी भर्ती (20:21)
   2. उनका सशक्तिकरण (20:22)
   3. उनका ऊँचा उठाया जाना (20:23)

2. सभी संदेह दूर हो गए (20:24-31)
   1. तभी और उसी समय (20:24-29)
      1. थोमा द्वारा व्यक्त किए गए संदेह (20:24-25)
         1. थोमा ने क्या खोया (20:24)
         2. थोमा ने क्या प्रकट किया (20:25)
      2. थोमा के संदेहों पर हुई चर्चा (20:26-27)
         1. बैठक (20:26a)
         2. स्वामी (20:26b)
         3. संदेश (20:27)
      3. थोमा के संदेह दूर होते हैं (20:28-29)
         1. महान अंगीकरण (20:28)
         2. बड़ा विरोधाभास (20:29)
   2. यहाँ और अभी (20:30-31)

भाग 5. उपसंहार (यूहन्ना 21:1-25)

1. वही सामर्थी जीवन (21:1-14)
   1. एक दुस्साहसपूर्ण कदम (21:1-3)
      1. स्थान (21:1)
      2. सहभागी (21:2)
      3. प्रस्ताव (21:3)
   2. एक धैर्यवान स्वामी (21:4-14)
      1. स्वामी की उपस्थिति (21:4-7)

         1. उनके लिए तैयार (21:4-6)
         2. वे उसे पहचान गए (21:7)
      2. स्वामी का प्रबन्ध (21:8-14)
         1. प्रभु ने उन्हें शामिल किया (21:8-11)
         2. प्रभु ने उन्हें आमंत्रित किया (21:12क)
         3. प्रभु ने उन्हें डराया (21:12ख-14)
2. वही दृढ़ प्रेम (21:15-17)
   1. पतरस की असफलता को याद करना (21:15)
      1. पुराना नाम (21:15क)
      2. पुराना दावा (21:15ख)
   2. पतरस का जोश फिर से जगाना (21:16-17)
      1. क्या तू मुझसे ज्वलंत प्रेम करता है? (21:16)
      2. क्या तू मुझसे भाईचारे की प्रीति रखता है? (21:17)
3. वही विवेकशील ज्योति (21:18-25)
   1. प्रकाशन का वचन (21:18-19)
   2. डांट का शब्द (21:20-23)
   3. पुनः आश्वासन का वचन (21:24-25)
      1. यूहन्ना के कथनों की त्रुटिरहितता (__यूहन्ना__21:24)
      2. यीशु की कहानी की व्यापकता (21:25)